Exam technique

www.examtechnique.in

Join now Telegram- https://t.me/joinchat/K_BU1RmI1BmxazJOsruF7g

Subscribe Youtube-
https://www.youtube.com/channel/UC7HEJ54ia2cU-rS20LHpHtg

3500+ भूगोल के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर question and answer महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ E-BOOK pdf - हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/3500-bhugol-k-sabse-mahatvpurn-one-liner-question-answer-mahatvpurn-tables-and-facts-k-sath-e-book-pdf-hindi-mai

3500+ Most Important One Liner Geography Question and answer with Important Tables and Facts E-BOOK PDF - in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/3500-most-important-one-liner-geography-question-and-answer-with-important-tables-and-facts-e-book-pdf-in-english

2100+ इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर Q & A, महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ - हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2100-history-k-sabse-mahatvpurn-one-liner-question-and-answer-important-tables-and-facts-k-sath-hindi-mai

2100+ Most Important One Liner History Question and answer with Important Tables and Facts E-BOOK PDF in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2100-most-important-one-liner-history-question-and-answer-with-important-tables-and-facts-e-book-pdf-in-english

विविध भाग -1+भाग -2(Static GK), सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ E-BOOK PDF - हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/vividh-bhag1bhag2-sabhi-pratyogi-prakshyon-k-lia-mahatvpurn-table-and-facts-k-sath-e-book-pdf-in-hindi

Miscellany Part-1+ Part-2(Static GK) with imp. Table and Facts for all Govt. Competitive Exams E-Book pdf in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/miscellany-part-1-part-2-with-imp.-table-and-facts-for-all-govt.-competitive-exams-e-book-pdf-in-english

2500+ भारतीय राजनीति के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर Q&A, सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तालिका और तथ्यों के साथ E-BOOK PDF-हिंदी में

Exam technique Publication

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2500-most-imp.-one-liner-indian-polity-qanda-with-imp.-table-and-facts-in-hindi

2500+ Most Imp. One Liner Indian Polity Q&A with Imp. Table and Facts for all Govt. competitive Exams E-book in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2500-most-imp.-one-liner-indian-polity-qanda-with-imp.-table-and-facts-in-english

2000+ Most Important One Liner Chemistry Q&A with Imp. Tables and Facts E-BOOK PDF in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2000-most-important-one-liner-chemistry-qanda-with-imp.-tables-and-facts-e-book-pdf-in-english

2000+ रसायन विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर Q & A, महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ -हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2000-chemistry-k-sabse-mahatvpurn-one-liner-question-and-answer-with-important-tables-and-facts-in-hindi

2000+ भौतिक विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर Q & A, महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ E-BOOK PDF -हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2000-physics-k-sabse-mahatvpurn-one-liner-question-and-answer-with-important-tables-and-facts

2000+ Most Important One Liner Physics Q&A with Imp. Tables and Facts E-BOOK PDF in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2000-most-important-one-liner--physics-qanda-with-imp.-tables-and-facts-e-book-pdf-in-english

2800+ जीव विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण वन लाइनर Q & A, महत्वपूर्ण तालिका और तथ्यों के साथ -हिंदी में

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2800-jeev-vigyan-k-sabse-mahatvpurn-one-liner-question-and-answer-mahatvpurn-tables-aur-facts-k-sath-hindi-mai

2800+ Most Important One Liner Biology Q&A with Imp. Tables and Facts for all Govt. Competitive Exams E-Book PDF in English

CLICK HERE- https://examtechnique.in/2800-most-important-one-liner-biology-qanda-with-imp.-table-and-facts-for-all-govt.-competitive-exams-e-book-pdf-in-english

Exam technique Publication

सम-सामयिक

घटना चक्र

अतिरिक्तांक

Website : http//www.ssgcp.com/

https://www.facebook.com/ssgcpl

https://www.facebook.com/ssghatnachakra

https://plus.google.com./+Ssgcpssgcp

https://twitter.com/SamsamyikGhatna

2019

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उ.प्र. लोक सेवा आयोग एवं अन्य परीक्षा संस्थाओं द्वारा आयोजित

TGT/PGT/GIC/ LT Grade/NET/JRF

परीक्षा प्रश्न पत्रों के अध्यायवार विभाजित

हल प्रश्न पत्र

की पुस्तक

हिन्दी

वर्ष 2000 से अद्यतन परीक्षा तक संपन्न

TGT/PGT/GIC/LT Grade/NET/JRF

के कुल 63 प्रश्न पत्र शामिल

हिन्दी

NET/JRF परीक्षा

चयनित विषय आधारित प्रश्न

जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक सम्पन्न

34 प्रश्न-पत्र

तथ्यात्मक प्रस्तुति

अनुक्रमणिका

हिन्दी

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	5-11
2.	आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	12-25
3.	भक्तिकाल (सन्तकाव्य, सूफीकाव्य, रामभक्ति काव्य, कृष्णभक्ति काव्य)	26-50
4.	रीतिकाल (रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध)	51-62
5.	आधुनिक काल (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता)	63-93
6.	हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास (निबन्ध, नाटक एवं एकांकी, कहानी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण एवं रेखाचित्र, रिपोर्ताज, इण्टरव्यू, यात्रावृत्त, गद्य काव्य एवं व्यंग्य)	94-154
7.	रचना एवं रचनाकार	155-196
8.	काव्यशास्त्र (काव्यगुण, काव्यदोष, शब्दशक्तियाँ)	197-208
9.	रस	209-217
10.	छन्द	218-224
11.	अलंकार (अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, भ्रान्तिमान विभावना, असंगति, दृष्टान्त, व्यतिरेक, अतिशयोक्ति, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, अतियुक्ति, काकु वक्रोक्ति, अक्रमातिशयोक्ति, मानवीकरण, काव्यलिंग प्रतीप, अपह्नुति, उदाहरण, स्मरण एवं तद्‌गुण)	225-234
12.	भाषा विज्ञान (हिन्दी की बोलियाँ, हिन्दी की उपभाषाएँ, हिन्दी की ध्वनियाँ, देवनागरी लिपि, देवनागरी लिपि का विकास एवं विशेषता, लिपि त्रुटियाँ सुधार के प्रयत्न)	235-256
13.	व्याकरण (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण एवं विशेष्य, वर्तनी, सन्धि, समास, लिंग, कारक, विराम चिह्न, अव्यय काल, वाच्य, प्रत्यय, उपसर्ग, पर्यायवाची, विलोम, श्रुति समभिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थक शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे, शब्दरूप, वाक्य शुद्धि, वाक्य रचना, वचन)	257-338
14.	पत्र-पत्रिकाएँ	339-350
15.	गद्यांश	350-352
16.	पद्यांश	353-354
17.	विविध	355-391
18.	संस्कृत साहित्य	392-427
19.	UGC/NET हल प्रश्न-पत्र	428-512

© प्रकाशकाधीन :
संस्करण- चतुर्थ
संस्करण वर्ष- 2019
ले.- SSGC
मूल्य : 300/-
ISBN No.: 978-93-88616-41-6
मुद्रक- प्रिया ऑफसेट प्रिन्टर्स
मुद्रण क्रम : प्रथम

संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद)- 211002
Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुन: प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-
- **पंकज कुमार राय**
- **सुरेन्द्र कुमार**
- **मनोज विश्वकर्मा**
- **अभिषेक कुमार**
- **विनय कुमार द्विवेदी**
- **शशिचन्द्र उपाध्याय**
- **बृजेश कुमार पटेल**

समारंभ

अध्यायवार विभाजित प्रश्नों की शृंखला सर्वप्रथम सम-सामयिक घटना चक्र ने प्रारंभ की थी। प्रश्नों को अध्यायवार विभाजित स्वरूप में प्रस्तुत करने की शैली ने परीक्षा में सफलता की दृष्टि से अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (T.G.T.) परीक्षा के प्रतियोगी भी लगातार इस परीक्षा के प्रश्नों को अध्यायवार विभाजित शैली में प्रस्तुत करने के लिए आग्रह कर रहे थे। इस विचार को क्रियान्वित करने के क्रम में हमने इस बात पर भी विमर्श किया कि क्यों न T.G.T. के साथ ही P.G.T. के प्रश्नों को भी शामिल किया जाए? वास्तव में T.G.T. एवं P.G.T. के पाठ्यक्रम में अत्यधिक साम्यता है। दोनों ही परीक्षा-प्रश्न-पत्रों का अवलोकन कर परीक्षार्थी स्वयं जान सकते हैं। दोनों परीक्षाओं में से किसी एक परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थियों के लिए भी यह जरूरी है कि दोनों परीक्षाओं के प्रश्नों से अवगत हो लें, क्योंकि दोनों ही परीक्षाओं के मध्य परस्पर दुहराव की प्रवृत्ति तीव्र रही है। परीक्षा-प्रवृत्ति का अवलोकन करके हमने प्रस्तुत संकलन में उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित G.I.C., डायट प्रवक्ता एवं आश्रम पद्धति (प्रवक्ता), एल.टी. ग्रेड तथा अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं का संयुक्त अध्यायवार विभाजित हल प्रश्न प्रस्तुत किया है। हल प्रश्न-पत्र में प्राय: वर्ष 2000 से अद्यतन परीक्षा तक के प्रश्न-पत्र शामिल किए गए हैं। जो प्रश्न हूबहू दुहराए गए हैं उनके नीचे परीक्षा वर्ष एवं परीक्षा का नाम अंकित करके दर्शा दिया गया है। वर्ष 2013 की T.G.T./P.G.T. परीक्षा में एक बात यह द्रष्टव्य रही है कि इसमें बहुत अधिक प्रश्न UGC की नेट परीक्षा से हूबहू उठा लिए गए थे। अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए पुस्तक के अंत में हमने UGC नेट परीक्षा के जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक के 34 प्रश्न-पत्रों के प्रश्नों को तथ्यात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। इन प्रश्नों के उत्तरों को UGC/NET द्वारा जारी संशोधित उत्तर-पत्रक से मिलान करके प्रस्तुत किया गया है। उत्तर-पत्रक के अनुसार उत्तर जहां भी गलत प्रतीत हुए हैं, वहां प्रमाण सहित विस्तृत स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया है, ताकि परीक्षार्थियों को कोई संशय न रहे। वर्ष 2011 एवं 2013 के T.G.T./P.G.T. प्रश्न-पत्रों को उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा जारी उत्तर-पत्रक से मिलान किया गया है। गलत प्रतीत हो रहे प्रश्नों पर स्पष्टीकरण भी हमने प्रस्तुत किया है।

❑ हल प्रश्न-पत्र भी, मार्गदर्शक भी

प्रस्तुत संकलन केवल हल प्रश्न-पत्र की पुस्तक नहीं है। प्रत्येक प्रश्न के हल हेतु प्रस्तुत व्याख्या में ढेरों तथ्य संजोए गए हैं। साथ ही 'अन्य महत्वपूर्ण तथ्य' शीर्षक के अंतर्गत महत्वपूर्ण संभावित तथ्यों को संकलित कर दिया गया है। यह संकलन परीक्षार्थियों के लिए उत्तम मार्गदर्शक सिद्ध होगा। इस संकलन के अध्ययन से एक लाभ तो यह होगा कि दुहराव वाले प्रश्नों को हल करने में परीक्षार्थी सक्षम हो सकेंगे, दूसरा फायदा यह होगा कि कम पृष्ठों के अध्ययन द्वारा ही अत्यधिक संभावित अध्ययन सामग्री को आत्मसात कर सकेंगे। हल प्रश्नों की प्रस्तुति में हमारी प्रामाणिकता सिद्ध रही है। पूर्वावलोकन के तहत सिविल सेवा परीक्षा-प्रश्नों के आठ खंड एवं रेलवे, एस.एस.सी. तथा सिविल जज के संकलन इसके प्रमाण हैं। इस संकलन में भी प्रामाणिकता के उसी स्तर को स्पर्श किया गया है। प्रत्येक प्रश्न की व्याख्या को इंटरनेट से जांच के उपरांत विषय-विशेषज्ञों की कसौटी पर भी परखा गया है। इसके बावजूद यदि किसी भी प्रश्न के प्रति रंचमात्र भी शंका उत्पन्न हो, तो परीक्षार्थी दूरभाष संख्या 9335140296 पर हमसे संपर्क करें। हम अवश्य ही संदेह का निवारण करेंगे।

प्रश्न पत्र-विश्लेषण

इस संकलन में T.G.T., P.G.T., G.I.C., L.T. Grade एवं अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं के क्रमशः हिन्दी T.G.T. एवं P.G.T. विषय के वस्तुनिष्ठ 29 प्रश्न-पत्रों तथा UGC/ NET के 34 प्रश्न-पत्रों को शामिल किया गया है। इन प्रश्न-पत्रों में शामिल प्रश्नों का विवरण इस प्रकार है–

क्रमांक	विषय/परीक्षा नाम	परीक्षा वर्ष	कुल प्रश्न संख्या
1.	हिन्दी/T.G.T.	2001	85
2.	हिन्दी/T.G.T.	2002	85
3.	हिन्दी/T.G.T.	2003	85
4.	हिन्दी/T.G.T.	2004	125
5.	हिन्दी/T.G.T. (पुनर्परीक्षा)	2004	125
6.	हिन्दी/T.G.T.	2005	125
7.	हिन्दी/T.G.T.	2009	125
8.	हिन्दी/T.G.T.	2010	125
9.	हिन्दी/T.G.T.	2011	125
10.	हिन्दी/T.G.T.	2013	125
11.	हिन्दी/P.G.T.	2000	100
12.	हिन्दी/P.G.T.	2002	85
13.	हिन्दी/P.G.T.	2003	85
14.	हिन्दी/P.G.T.	2004	125
15.	हिन्दी/P.G.T.	2005	125
16.	हिन्दी/P.G.T.	2009	125
17.	हिन्दी/P.G.T.	2010	125
18.	हिन्दी/P.G.T.	2011	125
19.	हिन्दी/P.G.T.	2013	125
20.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2012	120
21.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2015	120
22.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2017	120
23.	हिन्दी/एल.टी. ग्रेड (सहायक अध्यापक)	2018	120
24.	हिन्दी/ आश्रम पद्धति (प्रवक्ता)	2009	120
25.	हिन्दी/ आश्रम पद्धति (प्रवक्ता)	2012	120
26.	हिन्दी/डायट (प्रवक्ता)	2014	90
27.	हिन्दी/केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता)	2014	120
28.	हिन्दी/नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता)	2014	100
29.	हिन्दी/दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता)	2015	200
	कुल प्रश्न		**3380**

T.G.T./P.G.T. श्रृंखला के तहत सप्तम खण्ड में हिन्दी के प्रश्नों को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठ्यक्रम के अनुसार रचित इस खण्ड के लिए हिन्दी विषय T.G.T., P.G.T., G.I.C., L.T. Grade एवं अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं के कुल 29 वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्रों से कुल 3380 प्रश्न लिए गए जिनमें से दुहराव वाले 80 प्रश्नों को अलग कर 3300 प्रश्नों को इस खण्ड में समाहित किया गया है। दुहराव वाले प्रश्नों का परीक्षा नाम मूल प्रश्नों के परीक्षा नाम के नीचे जोड़ दिया गया है, ताकि परीक्षार्थी प्रश्नों के दुहराव की प्रकृति को समझ सकें। इसके अतिरिक्त के UGC/NET के 34 प्रश्न-पत्रों के 1896 प्रश्नों का हल संक्षिप्त रूप (वन लाइनर) में दिया गया है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किसने किया?

(a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) गार्सा-द-तासी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) मिश्रबन्धु

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात 'गार्सा-द-तासी' ने किया, जिन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्तवार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' ग्रन्थ लिखा, इसमें हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णक्रमानुसार दिया गया है। इसका प्रथम भाग सन् 1839 में तथा द्वितीय भाग सन् 1847 में प्रकाशित हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सन् 1888 में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की पत्रिका के विशेषांक के रूप में जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का प्रकाशन हुआ, जो नाम से 'इतिहास' न होते हुए भी सच्चे अर्थ में हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास कहा जा सकता है।

2. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन का सर्वप्रथम प्रयास किसने किया था?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) ग्रियर्सन
(c) गार्सा-द-तासी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखन सर्वप्रथम किस भाषा में हुआ?

(a) अंग्रेजी (b) फ्रेंच
(c) जर्मनी (d) उर्दू

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले प्रथम लेखक का नाम है—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गार्सा-द-तासी
(c) शिवसिंह सेंगर (d) मिश्रबन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. कालक्रमानुसार लिखा गया हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रन्थ है-

(a) शिवसिंह सरोज
(b) इस्तवार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी
(c) तसकिराए शुअरा हिन्दी
(d) द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'इस्तवार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथ के लेखक का नाम है-

(a) गार्सा-द-तासी (b) जॉर्ज ग्रियर्सन
(c) शेक्सपियर (d) विलियम वर्ड्सवर्थ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास लिखा गया था-

(a) संस्कृत भाषा में (b) जर्मन भाषा में
(c) फ्रेंच भाषा में (d) अंग्रेजी भाषा में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. हिन्दी का प्रथम व्याकरण लिखने वाले विद्वान हैं-

(a) जोशुआ केटलर (b) किशोरीदास बाजपेयी
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) कामता प्रसाद गुरु

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

हिन्दी का प्रथम व्याकरण लिखने वाले विद्वान जोहन जोशुआ केटलर, डच (पुर्तगाल) ईस्ट इंडिया कम्पनी के राजदूत बनकर भारत आये थे। उन्होंने अपने देशवासियों को भारत में व्यावसायिक सुविधा की दृष्टि से हिन्दी का सामान्य ज्ञान कराने के लिए व्याकरण की पुस्तक 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' लिखी थी, जो सन् 1715 के आस-पास प्रकाशित हुई। इस ग्रामर की रचना डच भाषा में की गई थी। डॉ. ग्रियर्सन ने अपने ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' (Linguistic Survey of India) में इस पुस्तक का तथा उसके लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया है। सन् 1943 में पं. किशोरीदास बाजपेयी का 'ब्रजभाषा व्याकरण' प्रकाशित हुआ और इसी के साथ व्याकरण लेखन में नई चेतना का संचार हुआ। इसके बाद बाजपेयी जी की अच्छी हिन्दी का नमूना (1948), ब्रजभाषा का प्रथम व्याकरण (1949), हिन्दी निरुक्त (1949) तथा हिन्दी शब्दानुशासन (1958) प्रकाशित हुआ।

9. **हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय किसको है?**

(a) शिवसिंह सेंगर (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) मिश्रबन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। इन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) लिखा, जो मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द-सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था तथा जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतन्त्र पुस्तक का रूप दे दिया गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'शिवसिंह सरोज' (1883) में लगभग एक सहस्र भाषा-कवियों का जीवन चरित्र उनकी कविताओं के उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, यह शिवसिंह सेंगर कृत है।

10. **रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मूलतः किस कृति की भूमिका के रूप में लिखा गया था?** हिन्दी हिन्दी

(a) हिन्दी कोविद रत्नमाला (b) हिन्दी शब्दसागर
(c) हिन्दी विश्वकोश (d) धर्मशास्त्र का इतिहास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

11. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' का प्रकाशन वर्ष है—**

(a) 1917 (b) 1918
(c) 1919 (d) 1929

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **इनमें से वह कौन-सी रचना है, जिसे मूलतः 'हिन्दी शब्द-सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था, किन्तु बाद में उसे स्वतन्त्र ग्रन्थ भी बना दिया गया?**

(a) रामकुमार वर्मा कृत 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास'
(b) गणपतिचन्द्र गुप्त कृत 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'
(c) रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
(d) शिवसिंह सेगर कृत 'शिवसिंह सरोज'

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **आंग्ल भाषा में लिखा गया हिन्दी साहित्य का इतिहास 'स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक हैं-**

(a) पादरी एफ.ई.के. (b) पादरी एडसिन ग्रीब्ज
(c) गार्सा-द-तासी (d) जॉर्ज ग्रियर्सन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आंग्ल भाषा में लिखा गया हिन्दी साहित्य का इतिहास 'स्केच ऑफ लिटरेचर' के लेखक पादरी एडसिन ग्रीब्ज हैं।पादरी एफ.ई.के. द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य का इतिहास 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' नाम से प्रकाशित हुआ था। 'दि मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' के लेखक जॉर्ज ग्रियर्सन हैं।

14. **ग्रियर्सन कृत 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का हिन्दी अनुवाद किसने किया?**

(a) डॉ. किशोरी लाल गुप्त (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (d) डॉ. जगदीश गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का हिन्दी अनुवाद डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के नाम से किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ किशोरी लाल गुप्त का जन्म वर्ष 1916 में भदोही (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। ये पण्डित विश्वनथ प्रसाद मिश्र के प्रमुख शिष्यों में से एक थे।

➲ गुप्त जी को 'विन्ध गौरव' से सम्मानित किया गया था। गुप्त जी की कृति 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी से प्रकाशित हुई थी।

➲ किशोरी लाल गुप्त की अन्तिम प्रकाशित कृति सूरसागर की टीका चार खण्डों में है।

15. **'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ के लेखक का नाम है—**

(a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) गार्सा-द-तासी
(c) विलियम वर्ड्सवर्थ (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. **''द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान'' का लेखक है—**

(a) गार्सा-द-तासी (b) गिलक्राइस्ट
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) मैक्समुल्लर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. डॉ किशोरी लाल गुप्त ने इनमें से किस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' शीर्षक से किया है?

(a) 'इस्तवार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी'

(b) 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान'

(c) 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर'

(d) 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. इनमें से किस साहित्येतिहास ग्रंथ को किशोरीलाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से अनुवाद करके प्रकाशित कराया?

(a) 'इस्तवार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई-ए-एदुस्तानी' को

(b) 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' को

(c) 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' को

(d) 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' को

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. किस लेखक के इतिहास ग्रन्थ में सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य का काल विभाजन मिलता है?

(a) शिवसिंह सेंगर (b) महेशदत्त शुक्ल

(c) मौलवी करीमुद्दीन (d) जॉर्ज ग्रियर्सन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करने वाले प्रथम इतिहासकार डॉ.जॉर्ज ग्रियर्सन हैं। उन्होंने आदिकाल की अंतिम सीमा 1400 ई. तक मानी है।

20. किस साहित्येतिहास के लेखक ने काल विभाजन में कवियों के नाम का सर्वाधिक उपयोग किया है?

(a) मिश्रबन्धु (b) ग्रियर्सन

(c) हरिऔध (d) श्यामसुन्दर दास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी साहित्येतिहास की परम्परा में मिश्रबन्धुओं ने अपनी कृति 'मिश्रबन्धु विनोद' में लगभग 5000 कवियों को स्थान दिया, जिसे आठ से भी अधिक काल-खंडों में विभक्त किया है। इस प्रकार मिश्रबन्धुओं ने काल विभाजन में सर्वाधिक कवियों के नाम का उल्लेख किया है।

21. 'मिश्रबन्धु विनोद' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों के नाम हैं-

(a) श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र

(b) गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र

(c) गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र

(d) गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'मिश्रबन्धु विनोद' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों के नाम गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र एवं शुकदेव बिहारी मिश्र हैं। 'मिश्रबन्धु विनोद' के चार भाग थे। प्रथम तीन भागों का प्रकाशन सन् 1913 में किया गया, जबकि चौथा भाग सन् 1934 में प्रकाशित हुआ। मिश्रबन्धुओं ने मिश्रबन्धु विनोद के प्रथम तीन भागों को 'हिन्दी नवरत्न' के नाम से प्रकाशित कराया।

22. 'मिश्रबन्धु विनोद' का चौथा भाग कब प्रकाशित हुआ?

(a) 1934 ई. में (b) 1913 ई. में

(c) 1910 ई. में (d) 1900 ई. में

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'मिश्रबन्धुविनोद' कितने भागों में प्रकाशित हुआ है?

(a) तीन भाग (b) चार भाग

(c) एक भाग (d) दो भाग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. मिश्रबन्धुओं ने 'परिवर्तन काल' की समय सीमा निर्धारित की है—

(a) संवत् 1890 वि.-संवत् 1925 वि.

(b) संवत् 1791 वि.-संवत् 1889 वि.

(c) संवत् 1890 ई.-संवत् 1925 वि.

(d) संवत् 1791 ई.-संवत् 1889 वि.

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

मिश्रबन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' में काल विभाजन का प्रयास किया, जो इस प्रकार है-(1) प्रारम्भिक काल 700 से 1440 वि. तक, (2) माध्यमिक काल 1445 से 1680 वि. तक, (3) अलंकृत काल 1681 से 1889 वि. तक, (4) परिवर्तन काल 1890 से 1925 वि. तक तथा (5) वर्तमान काल 1926 वि. से अब तक।

25. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम उत्थान का समय कब-से-कब तक निर्धारित किया है?

(a) 1850 से1885 ई. (b) 1857 से1900 ई.
(c) 1868 से1893 ई. (d) 1800 से1850 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम उत्थान का समय 1868-1893 ई. (संवत् 1925-1950) तक तथा द्वितीय उत्थान का समय 1893 -1918 ई. (संवत् 1950-1975) तक तय किया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार हिन्दी गद्य को परिमार्जित करके उसे बहुत ही सरल, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया, उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गये।

26. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के 'आधुनिक गद्य साहित्य परम्परा का प्रवर्तन' के अन्तर्गत 'प्रथम उत्थान' की कालावधि निर्धारित की है।

(a) सं 1900 से 1950 विक्रमी तक
(b) सं 1925 से 1950 विक्रमी तक
(c) सं 1925 से 1975 विक्रमी तक
(d) सं 1900 से 1925 विक्रमी तक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने द्वितीय उत्थान का समय कब-से-कब तक तय किया है?

(a) 1893 से1918 ई. (b) 1900 से1920 ई.
(c) 1885 से1918 ई. (d) 1903 से1920 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना कब हुई थी?

(a) 1867 ई. में (b) 1850 ई. में
(c) 1885 ई. में (d) 1893 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1893 ई. में श्याम सुन्दर दास जी ने की थी। नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति एवं प्रचार और प्रसार करने वाली भारत की अग्रणी संस्था है। हिन्दी साहित्य के नियमन, नियंत्रण और संचालन में इस सभा का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ से 'हिन्दी शब्दसागर' का प्रकाशन किया गया। इस शब्दकोश के लेखक श्याम सुन्दर दास थे।

29. काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई थी-

(a) 1895 ई.में (b) 1893 ई.में
(c) 1898 ई.में (d) 1890 ई.में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई थी-

(a) 1910 (b) 1893
(c) 1800 (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'हिन्दी शब्दसागर' का प्रकाशन किस संस्था ने किया था?

(a) हिन्दी साहित्य सम्मेलन
(b) नागरी प्रचारिणी सभा
(c) इंडियन प्रेस
(d) राष्ट्रभाषा परिषद्

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संस्थापकों में कौन नहीं थे?

(a) बाबू श्याम सुन्दर दास
(b) पं. रामनारायण मिश्र
(c) रामचन्द्र वर्मा
(d) ठाकुर शिव कुमार सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 16 जुलाई, 1893 को वाराणसी में हुई, जिसकी स्थापना में बाबू श्याम सुन्दर दास, पं. रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिव कुमार सिंह जैसी प्रभृतियों का मुख्य योगदान रहा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आचार्य रामचन्द्र वर्मा हिन्दी के साहित्यकार एवं कोशकार रहे हैं। ये हिन्दी शब्द सागर के सम्पादक मंडल के प्रमुख सदस्य थे। इन्होंने आचार्य किशोरीलाल बाजपेयी के साथ मिलकर 'अच्छी हिन्दी' का आन्दोलन चलाया और हिन्दी का मानकीकरण हुआ। इन्होंने सन् 1919 में 'महात्मा गाँधी' नामक पुस्तक लिखी।

33. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किस वर्ष में हुई थी?

(a) वि.सं.1800 में (b) 1800 ई.में
(c) 1798 ई. में (d) 1802 ई. में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वेलेजली ने जॉन गिलक्राइस्ट की अध्यक्षता में 'ओरियंटल सैमिनरी' की स्थापना की। बाद में यही संस्था 'फोर्ट विलियम कॉलेज' के रूप में परिवर्तित हुई। फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना टीपू सुल्तान पर ब्रिटेन की निर्णायक विजय की स्मृति में 10 जुलाई, 1800 को 'मॉर्कस ऑफ वेलेजली' ने की थी और गिलक्राइस्ट उसके हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उन्होंने हिन्दी के शिक्षण के लिए दो भाषा पण्डितों लल्लू लाल एवं सदल मिश्र की नियुक्ति की।

34. 'फोर्ट विलियम कालेज' की स्थापना कब हुई?

(a) 1800 ई. में (b) 1805 ई. में
(c) 1809 ई. में (d) 1810 ई. में

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना कब हुई थी?

(a) सन् 1800 ई. (b) सन् 1857 ई.
(c) सन् 1885 ई. (d) सन् 1900 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. कलकत्ता में स्थापित 'फोर्ट विलियम कॉलेज' के संस्थापक थे—

(a) जॉन गिलक्राइस्ट (b) सदल मिश्र
(c) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (d) रवीन्द्रनाथ टैगोर

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. सदल मिश्र की भाषा की विशेषता है-

(a) पूरबीपन (b) उर्दू की प्रमुखता
(c) सहज एवं प्रवाहमयी भाषा (d) किस्सागोई

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सदल मिश्र बिहार प्रान्त के शाहाबाद जिले के ध्रुवडीहा गाँव के रहने वाले शाकद्वीपीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नन्दमणि मिश्र था। यह कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग में अध्यापक थे। सदल मिश्र का प्रारम्भिक खड़ी बोली गद्य लेखकों में विशेष महत्व है। इनके शब्द संघटन और वाक्य विन्यास दोनों में ही ब्रजभाषा, पूरबीपन और बांग्ला इन तीनों का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आधुनिक काल में जिस भाषा में हिन्दी गद्य लिखा जा रहा है, वह खड़ी बोली गद्य ही है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भ अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' से माना है।
- सदल मिश्र हिन्दी के पहले गद्यकार हैं। सदल मिश्र की दो गद्य कृतियाँ प्रसिद्ध हैं- 1. नासिकेतोपाख्यान या चन्द्रावती (1803), 2. रामचरित (1806)।
- रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, सदल मिश्र ने व्यावहारोपयोगी भाषा लिखने का प्रयत्न किया है।
- श्यामसुन्दर दास ने तत्कालीन गद्य लेखकों में इंशाअल्ला खाँ के बाद दूसरा स्थान सदल मिश्र का ही स्वीकार किया है।
- लल्लू लाल की रचना 'प्रेम सागर' में ब्रजभाषा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा शैली आख्यात्मक है।
- मुंशी सदासुख लाल की रचना 'सुखसागर' एक धार्मिक ग्रन्थ है। इसकी भाषा पर पण्डिताऊपन एवं फारसी का प्रभाव है। इंशाअल्ला खाँ की रचना 'रानी केतकी की कहानी' है, जिसे 'उदयभान चरित' भी कहा जाता है। इसकी भाषा पर उर्दू, अरबी एवं फारसी का प्रभाव है।
- फोर्ट विलियम कॉलेज में जॉन गिलक्राइस्ट हिन्दी-उर्दू के अध्यापक थे। इन्होंने आगरा के 'लल्लू लाल' और आरा के 'सदल मिश्र' को भाषा मुंशी के रूप में नियुक्त किया।
- सदल मिश्र की अन्य कृतियाँ हैं—फूलन्ह के बिछाने, सोनम के थम्भ, चहुँदिसि, बरते थे, बाजने लगा, काँदती है आदि।

38. लल्लू जी लाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है—

(a) शकुन्तला नाटक
(b) प्रेमसागर
(c) सिंहासन बत्तीसी
(d) बैताल पच्चीसी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?

(a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) नासिकेतोपाख्यान

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं-
(a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदासुख लाल

T.G.T. परीक्षा, 2011
P.G.T. परीक्षा, 2004
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'रानी केतकी की कहानी' के रचनाकार हैं—
(a) लल्लू लाल
(b) सदल मिश्र
(c) इंशाअल्ला खाँ
(d) राजा लक्ष्मण सिंह 'सितारे हिन्द'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. निम्नलिखित में से कौन फोर्ट विलियम कॉलेज (कलकत्ता) में हिन्दी के अध्यापक थे?
(a) इंशाअल्ला खाँ (b) सदल मिश्र
(c) राजा लक्ष्मण सिंह (d) सदासुखलाल

P.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. इनमें से कौन कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज से सम्बद्ध थे?
(a) लल्लू लाल
(b) इंशाअल्ला खाँ
(c) सदासुख लाल
(d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं-
(a) सदल मिश्र (b) इंशाअल्ला खाँ
(c) लल्लू लाल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं-
(a) लल्लू लाल (b) सदासुख लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदल मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. इनमें से 'सदल मिश्र' की रचना कौन-सी है?
(a) रानी केतकी की कहानी (b) प्रेमसागर
(c) सुखसागर (d) नासिकेतोपाख्यान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. उदयमान चरित के लेखक हैं-
(a) लल्लू लाल (b) सदल मिश्र
(c) सदासुख लाल (d) इंशाअल्ला खाँ

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'सुखसागर' की रचना किसने की?
(a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदासुख लाल

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'सुखसागर' का विषय है-
(a) शिव पुराण के प्रेरक प्रसंग
(b) गीता के प्रेरक प्रसंग
(c) विष्णु पुराण के उपदेशात्मक प्रसंग
(d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

डॉ. नगेन्द्र अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि मुंशी सदासुखराय निसार (नियाज नहीं), जिनके नाम से 'सुखसागर' शीर्षक ग्रंथ का उल्लेख प्रायः सभी इतिहास पुस्तकों में किया गया है, 'सुखसागर' शीर्षक किसी ग्रंथ के रचयिता नहीं हैं, अपितु 'सुखसागर' इनका उपनाम था। 'विष्णु पुराण' या 'भागवत' का मुंशी जी ने पद्यानुवाद किया था। इनकी अन्य दो गद्य-रचनाएँ अवश्य प्राप्त हैं- 'सुरासुर-निर्णय' (निबन्धात्मक रचना, सज्जन-दुर्जन का विवेचन) और 'वार्तिक' (बाबा दयालुदास के ध्रुवपदों का भाष्य)।

50. **'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक हैं—**

(a) रामप्रसाद बिस्मिल (b) रमाशंकर वाजपेयी
(c) रामप्रसाद निरंजनी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक रामप्रसाद निरंजनी हैं। यह ग्रन्थ संवत् 1768 में लिखा गया। इसे रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली में लिखा गया बहुत साफ-सुथरा ग्रन्थ बताया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अब तक पायी गयी पुस्तकों में 'भाषा योगवाशिष्ठ' सबसे पुरानी है जिसमें गद्य अपने परिष्कृत रूप में दिखाई पड़ता है।
- इसे रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली का प्रथम ग्रन्थ माना है।
- इसकी भाषा गुरुमुखी लिपि से मिलती-जुलती है।

51. **'योगवाशिष्ठ' के लेखक हैं-**

(a) राजा शिवप्रसाद सिंह
(b) रामप्रसाद निरंजनी
(c) राजा राममोहन राय
(d) सदल मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. **खड़ी बोली की पहली रचना है?**

(a) प्रेमसागर
(b) नासिकेतोपाख्यान
(c) ढोला मारू रा दूहा
(d) आशिय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अपनी वेबसाइट पर 'हिन्दी का उद्भव' शीर्षक के अन्तर्गत खड़ी बोली गद्य की पहली पुस्तक 1623 ई. में जटमल कृत 'गोरा बादल की कथा' का उल्लेख किया है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अनुसार, आधुनिक प्रथम गद्यकारों में सदल मिश्र एवं लल्लू लाल दोनों शामिल हैं, जो फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता में एक साथ गये। वहाँ सदल मिश्र ने 1803 ई. में नासिकेतोपाख्यान की रचना की तथा 1805 ई. में लल्लू लाल प्रणीत 'प्रेम सागर' (श्री मद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध का खड़ी बोली गद्य रूपान्तर) का प्रकाशन हुआ। अतः आधुनिक गद्यकारों में नासिकेतोपाख्यान खड़ी बोली की पहली रचना है। उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में विकल्प (b) को सही माना है।

53. **'खड़ी बोली' में जो 'खड़ी' शब्द है, उसका सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया था?**

(a) सदल मिश्र (b) भोलानाथ तिवारी
(c) लल्लू लाल (d) हरदेव बाहरी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

नरेन्द्र कोहली ने अपनी पुस्तक 'व्यंग्य गाथा' में लिखा है कि पं. लल्लू लाल जी ने खड़ी बोली में गद्य का लेखन किया। फोर्ट विलियम कॉलेज में ही खड़ी बोली का नामकरण हुआ। खड़ी बोली के नामकरण का श्रेय गिलक्राइस्ट एवं सदल मिश्र को दिया जाता है। 1803 ई. में खड़ी बोली का प्रयोग भाषा के रूप में पहली बार हुआ।

54. **'खड़ी बोली' का पहला प्रयोग किसके द्वारा किया गया है?**

(a) बल्देव (b) लल्लू लाल
(c) जॉन गिलक्राइस्ट (d) सुनीति कुमार चटर्जी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'राजा द्वय' के नाम से विख्यात दो रचनाकार हैं-**

(a) राजा लक्ष्मण सिंह और राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह
(b) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह
(c) राजा लक्ष्मण सिंह और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द
(d) इनमें से कोई भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

फारसी पढ़े-लिखे लोगों ने जनभाषा को फारसी शब्दों से बोझिल कर दिया। इस खेमे का नेतृत्व कर रहे थे राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द। इसकी प्रतिक्रिया में कुछ लोगों ने भाषा में संस्कृत शब्दों की भर-मार कर दी। इस वर्ग के नेता थे राजा लक्ष्मण सिंह। 'राजा द्वय' की प्रतिद्वन्द्विता भारतेन्दु के उदय काल तक चलती रही।

56. **हिन्दी के प्रथम गद्यकार हैं-**

(a) बाल कृष्ण भट्ट
(b) लल्लू लाल
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(d) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

दिये गये विकल्पों में हिन्दी के प्रथम गद्यकार लल्लू लाल हैं।

सम-सामयिक घटना चक्र

आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. किस विद्वान ने हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया?

(a) जॉर्ज ग्रियर्सन ने (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) राहुल सांकृत्यायन ने (d) डॉ. रामकुमार वर्मा ने

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के विभिन्न विद्वानों ने प्रारम्भिक काल का भिन्न-भिन्न नामों से वर्गीकरण किया है, जो इस प्रकार हैं—
1. डॉ. ग्रियर्सन-चारण काल
2. मिश्रबन्धु-प्रारम्भिक काल
3. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त- प्रारम्भिक काल
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-वीरगाथा काल
5. राहुल सांकृत्यायन-सिद्ध-सामंत काल
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी-बीजवपन काल
7. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र-वीरकाल
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी-आदिकाल
9. डॉ. रामकुमार वर्मा-चारण काल या सन्धिकाल।

2. आदिकाल के नामकरण से सम्बन्धित कौन-सा युग्म अशुद्ध है?

(a) बीजवपन काल - मिश्रबन्धु
(b) सिद्ध-सामंत युग - राहुल सांकृत्यायन
(c) सन्धिकाल एवं चारण काल - डॉ. रामकुमार वर्मा
(d) वीरगाथा काल - रामचन्द्र शुक्ल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को वीरकाल किसने कहा है?

(a) मिश्रबन्धु (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी के प्रारम्भिक काल को 'वीरगाथा काल' का नाम किसने दिया?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) मिश्रबंधु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आदिकाल को वीरगाथा काल किसने कहा है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के लिए 'सिद्ध-सामंत युग' नाम इनके द्वारा दिया गया है—

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल
(c) डॉ. शिवप्रसाद सिंह (d) राहुल सांकृत्यायन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'आदिकाल' को 'सिद्ध-सामंत युग' कहा है—

(a) राहुल सांकृत्यायन ने (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा ने (d) जॉर्ज ग्रियर्सन ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. हिन्दी साहित्य के आदिकाल को 'सिद्ध-सामंत युग' नाम किसने दिया है?

(a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) मिश्रबंधु

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. आदिकालीन हिन्दी साहित्य को 'सिद्ध-सामंत काल' कहने वाले विद्वान का नाम है-

(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) रामकुमार वर्मा
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. आदिकाल को 'बीजवपन काल' नाम किसने दिया?

(a) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(c) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(d) आचार्य भगीरथ मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'आदिकाल' के लिए 'बीजवपन काल' नामकरण किसने किया है?

(a) राहुल सांकृत्यायन (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. आदिकाल को 'बीजवपन काल' कहा है-

(a) ग्रियर्सन (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(c) मिश्रबन्धु (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. आदिकाल का 'वीरकाल' नामकरण किसने किया है?

(a) मिश्रबन्धु (b) रामचन्द्र शुक्ल

(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) रामकुमार वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को आदिकाल नाम किसने दिया है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल ने (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

(c) राहुल सांकृत्यायन ने (d) वासुदेवशरण अग्रवाल ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में कौन-सा नाम 'आदिकाल' का नहीं है?

(a) वीरगाथा काल (b) गद्य काल

(c) चारण काल (d) सिद्ध-सामंत काल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. आदिकाल को 'प्रारम्भिक काल' नाम किसने दिया?

(a) डॉ. ग्रियर्सन (b) मिश्रबन्धु

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। चूंकि मिश्रबन्धु तथा डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त दोनों ने आदिकाल को प्रारम्भिक काल माना है और विकल्प में केवल मिश्रबन्धु ही है। अतः प्रश्न का उत्तर सही है।

17. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I (इतिहासकार)	**सूची-II (नामकरण)**
(A) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	**(i) प्रारम्भिक काल**
(B) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	**(ii) वीरगाथा काल**
(C) राहुल सांकृत्यायन	**(iii) सिद्ध-सामंत काल**
(D) मिश्रबन्धु	**(iv) आदिकाल**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I (इतिहासकार)	**सूची-II (नामकरण)**
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	वीरगाथा काल
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	आदिकाल
राहुल सांकृत्यायन	सिद्ध-सामंत काल
मिश्रबन्धु	प्रारम्भिक काल

18. इनमें से किस साहित्येतिहासकार ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्य साहित्य को 'गद्य का आविर्भाव', 'गद्य का प्रावर्तन, 'गद्य का प्रसार' और 'गद्य की वर्तमान गति' नामक खंडों में विभक्त करके विवेचित किया है?

(a) बच्चन सिंह (b) शिवसिंह सेंगर

(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्य साहित्य को इस प्रकार विभक्त किया है-
(i) गद्य का आविर्भाव
(संवत् 1900-1925)
(ii) आधुनिक गद्य साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन (प्रथम उत्थान)
(संवत् 1925-1950)
(iii) गद्य साहित्य का प्रसार (द्वितीय उत्थान) (संवत् 1950-1975)
(iv) गद्य साहित्य की वर्तमान गति (तृतीय उत्थान) (संवत् 1975 से)

19. बौद्ध धर्म से जुड़े हुए साहित्य की भाषा है-

(a) लौकिक संस्कृत (b) वैदिक संस्कृत
(c) प्राकृत (d) पालि

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

प्राकृत भाषा के विविध रूप हैं, उनमें पालि (प्राकृत) का सम्बन्ध बौद्ध धर्म के ग्रन्थों से है और अर्द्धमागधी का सम्बन्ध जैन धर्म के ग्रन्थों से। जहाँ-जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, वहाँ-वहाँ पालि भाषा पहुँची है और जैन धर्म के साथ अर्द्धमागधी। प्राकृत भाषा को साहित्यिक महत्व, पूर्व की तुलना में पश्चिम से अधिक प्राप्त हुआ है और उसमें भी विशेष रूप से महाराष्ट्री प्राकृत का प्रधान रूप है।

20. निम्नांकित में से अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी रचना कौन-सी है?

(a) खुमाण रासो (b) ढोला मारू रा दूहा
(c) भरतेश्वर बाहुबली रास (d) जयमयंक-जसचन्द्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अपभ्रंश में रास नामक पहली सरस कृति 'भरतेश्वर बाहुबली रास' (1184 ई.) है, जिसे विद्वानों ने रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ घोषित किया है, क्योंकि रास काव्य की सभी प्रवृत्तियों के बीज इसमें प्राप्त हो जाते हैं। साथ ही हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से इस ग्रन्थ का बहुत महत्व है। 'खुमाण रासो' के 43 छन्द प्राप्त हुए हैं। इस काव्य के कवि का नाम तो अज्ञात है, परन्तु एक स्थल पर 'दलपति विजय' शब्द देखकर आलोचकों ने अनुमान लगा लिया है कि दलपति विजय ही 'खुमाण रासो' का कवि था। 'ढोला मारू रा दूहा' के कवि कल्लोल हैं। 'ढोला मारू रा दूहा' अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। यह लोक काव्य दोहाबद्ध था और मौखिक परम्परा में सुना, गाया जाता था।

21. अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी-रचना कौन-सी है?

(a) भरतेश्वर बाहुबली रास (b) चन्दनबाला रास
(c) नेमिनाथ रास (d) वसन्त-विलास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. ग्यारहवीं शताब्दी में रचित लोकभाषा-काव्य है?

(a) जयमयंक-जसचन्द्रिका (b) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण
(c) राउलवेल (d) ढोला-मारू रा दूहा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'ढोला-मारू रा दूहा' ग्यारहवीं शताब्दी में रचित एक लोक भाषा काव्य है। 'दूहा घणां पुराणां अछइ' पंक्ति इसकी प्राचीनता की ओर संकेत करती है। मूलतः दोहों में रचित इस लोककाव्य को सत्रहवीं शताब्दी में कुशलराय वाचक के कुछ चौपाइयाँ जोड़कर विस्तार दिया गया।

23. शालिभद्र सूरि की रचना का नाम है—

(a) नेमिनाथ रास (b) भरतेश्वर बाहुबली रास
(c) सुमितिगण रास (d) जयमयंक-जसचन्द्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शालिभद्र सूरि की रचना का नाम भरतेश्वर बाहुबली रास है। मुनि जिनविजय ने इस ग्रन्थ को जैन साहित्य की रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना है। इसकी रचना 1184 ई. में शालिभद्र सूरि ने की थी। ये अपने समय के प्रसिद्ध जैन आचार्य तथा अच्छे कवि थे। इस ग्रन्थ में भरतेश्वर तथा बाहुबली के चरित का वर्णन है।

24. 'पंच पांडव चरित रास' के रचयिता हैं-

(a) शालिभद्र सूरि (b) आसगु
(c) नरपति नाल्ह (d) दलपति विजय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'पंच पांडव चरित रास' के रचयिता शालिभद्र सूरि नामक प्रसिद्ध जैन आचार्य एवं उच्चकोटि के कवि हैं। 'भारतेश्वर बाहुबली रास' नामक ग्रन्थ इनकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना है, जिसे रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

25. अपभ्रंश शब्द का सबसे पहले उल्लेख किसने किया है?

(a) पाणिनी (b) नागार्जुन
(c) पतंजलि (d) सरहपा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अपभ्रंश शब्द का सबसे पहले उल्लेख महाभाष्यकार पतंजलि ने किया, जिससे पता चलता है कि संस्कृत या साधु शब्द के लोकप्रचलित विविध रूप अपभ्रंश कहलाते थे।

26. 'अवहट्ट' भाषा से तात्पर्य है-

(a) ग्रामीण अपभ्रंश (b) परिनिष्ठित अपभ्रंश
(c) ग्रामीण प्राकृत (d) परिनिष्ठित प्राकृत

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

अवहट्ट 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप है। इसे 'अपभ्रंश का अपभ्रंश' या परवर्ती अपभ्रंश कह सकते हैं। 'अवहट्ट' अपभ्रंश आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की संक्रमणकालीन/संक्रान्तिकालीन भाषा है। इसका कालखण्ड 900 ई. से 1100 ई. तक निर्धारित किया जाता है। अवहट्ट को अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी (ग्रामीण अपभ्रंश) के बीच की कड़ी माना जाता है। अवहट्ट भाषा के प्रमुख रचनाकार-अद्दहमाण/अब्दुल रहमान (संदेश रासय/संदेश रासक), दामोदर पंडित (उक्ति-व्यक्ति प्रकरण), ज्योतिरीश्वर ठाकुर (वर्ण रत्नाकर), विद्यापति (कीर्तिलता) आदि हैं।

27. अवहट्ट में शिक्षा शब्द के लिए कौन-सा रूप मिलता है?

(a) सिच्छा (b) सिषा
(c) सिक्खा (d) सिख्खा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अपभ्रंश के परवर्ती रूप को अवहट्ट नाम दिया गया। अवहट्ट में शिक्षा शब्द के लिए 'सिक्खा' रूप मिलता है।

28. अधिकांश साहित्येतिहासकारों के अनुसार, हिन्दी के प्रथम कवि हैं—

(a) कबीर (b) सूरदास
(c) सरहपाद (d) विद्यापति

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

अधिकांश साहित्येतिहासकारों के अनुसार, हिन्दी के प्रथम कवि का नाम 'सरहपाद' है। राहुल सांकृत्यायन ने सातवीं शताब्दी ईसवी के 'सरहपाद' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। उनका मूल नाम 'राहुलभद्र' था और उनके सरहपा, सरोजवज्र, पद्म तथा पद्मवज्र नाम भी मिलते हैं। वे बौद्धधर्म की वज्रयान और सहजयान के प्रवर्तक तथा 84 सिद्धों में से एक थे। उनकी कविता में अपभ्रंश का साहित्यिक रूप छूट गया है तथा बोलचाल की भाषा जो आरम्भिक हिन्दी है, प्रयुक्त हुई है। सरहपाद की रचनाओं का सम्पादन राहुल सांकृत्यायन ने 'दोहाकोश' नाम से किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त ने 'शालिभद्र सूरि' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
➲ डॉ. रामकुमार वर्मा 'स्वयंभू' को हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार करते हैं।

29. हिन्दी के किस इतिहासकार के मतानुसार 'शालिभद्र सूरि' हिन्दी के प्रथम कवि हैं?

(a) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (b) डॉ. नगेंद्र
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) डॉ. धीरेंद्र वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. सिद्धों का प्रथम कवि-

(a) सरहपा (b) कण्हपा
(c) गुंडरीपा (d) शेरपा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'सरहपाद' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है-

(a) रामकुमार वर्मा
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) पं. राहुल सांकृत्यायन

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. राहुल जी ने हिन्दी भाषा का प्रथम कवि किसे स्वीकार किया है?

(a) पुष्पदन्त को (b) हेमचन्द्र को
(c) सरहपा को (d) विद्यापति को

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. हिन्दी का प्रथम कवि कौन है?

(a) सरहपा (b) शबरपा
(c) देवसेन (d) कबीर

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'स्वयंभू' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है—

(a) रामकुमार वर्मा ने (b) रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने (d) राहुल सांकृत्यायन ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. सहजयान के प्रवर्तक हैं—

(a) सरहपा (b) शबरपा
(c) लइपा (d) कण्हपा

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'अपभ्रंश' को क्या कहा है?

(a) पुरानी हिन्दी (b) प्राकृताभास अपभ्रंश
(c) साहित्यिक अपभ्रंश (d) परिनिष्ठित अपभ्रंश

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपभ्रंश और हिन्दी के सम्बन्ध में यह मत व्यक्त किया है- ''इस प्रकार दसवीं से चौदहवीं शताब्दी का काल, जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं, भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढ़ाव है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुल लोग पुरानी हिन्दी। बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती थी, यद्यपि उसमें नये तत्सम शब्दों का आगमन शुरू हो गया था।'' इस प्रकार वे अपभ्रंश को हिन्दी से अलग रखना चाहते हैं, फिर भी उन्होंने अपभ्रंश के उत्तरकालीन साहित्य को आदिकाल की सामग्री मानकर उसका विवेचन किया है। रामचन्द्र शुक्ल ने 'पुरानी हिन्दी' को ही 'प्राकृताभास हिन्दी' या 'अपभ्रंश' कहा है।

37. दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के साहित्य को किस विद्वान ने 'आदिकाल' के अन्तर्गत रखा है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) मिश्र बन्धु
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पुरानी हिन्दी' नामकरण किसने किया?

(a) चतुरसेन शास्त्री (b) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) रामकुमार वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' पहले विद्वान हैं, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की थी कि 'उत्तर अपभ्रंश' ही 'पुरानी हिन्दी' है। उन्होंने 'राजा मुंज' को पुरानी हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गुलेरी जी के लेख के आधार पर अपने इतिहास में आदिकाल के अन्तर्गत 'उत्तर अपभ्रंश' की रचनाओं को यह मानते हुए भी स्थान दिया कि उनके आधार पर उस काल की कोई विशेष प्रवृत्ति निर्धारित नहीं की जा सकती ।

39. पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने किसको 'पुरानी हिन्दी' का प्रथम कवि स्वीकार किया है?

(a) सरहपाद (b) स्वयंभू
(c) राजा मुंज (d) पुष्पदन्त

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' किसे कहा जाता है?

(a) पुष्पदन्त को (b) धनपाल को
(c) शालिभद्र सूरि को (d) स्वयंभू को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

स्वयंभू देव (आठवीं शताब्दी) निर्विवाद रूप से अपभ्रंश के सर्वश्रेष्ठ कवि माने गये हैं। स्वयंभू देव कृत 'पउम चरिउ' पाँच काण्ड और 83 संधियों (सर्गों) वाला विशाल महाकाव्य है। यह अपभ्रंश का आदिकाव्य माना गया है। अतः स्वयंभू को 'अपभ्रंश का प्रथम महाकवि', 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' इत्यादि कहा जाता है।

41. निम्न में से किस कवि को 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' कहा जाता है?

(a) सरहपा (b) पुष्पदन्त
(c) स्वयंभू (d) हेमचन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. अपभ्रंश के प्रथम महाकवि कौन थे?

(a) हेमचन्द्र (b) स्वयंभू
(c) रामचन्द्र (d) दत्त

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. स्वयंभू की कृति का नाम है-

(a) पद्मपुराण (b) महापुराण
(c) पाहुड़ दोहा (d) पउम चरिउ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. **'पउम चरिउ' किसकी रचना है?**

(a) अब्दुल रहमान (b) विद्यापति

(c) स्वयंभू (d) चन्दबरदाई

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. **इनमें से किस ग्रन्थ में लिखा है कि अग्नि परीक्षा के बाद सीता जैन धर्म में दीक्षित हो जाती हैं?**

(a) महापुराण (b) परमात्मा प्रकाश

(c) भविस्सयत्तकहा (d) पउम चरिउ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

पउम चरिउ स्वयंभू कृत चरित काव्य है। यह पाँच काण्डों में विभक्त है- विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। स्वयंभू ने नारी के प्रति व्यवहार का वर्णन इस काव्य में किया है। नारी के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण उस युग में कैसा था, यह काव्य में वर्णित अग्नि परीक्षा वाले प्रसंग में स्पष्ट हो जाता है। लंका विजय के पश्चात सीता को पुष्पक विमान पर चढ़ाकर कोशलनगरी लाया जाता है। सीता के आगमन का एक ओर भव्य वातावरण और दूसरी ओर उस वातावरण में राम का ओछा व्यवहार। अग्नि परीक्षा से पूर्व सीता, राम से कहती हैं कि आज मैं अपनी सतीत्व की पताका फहराऊंगी। आग यदि समर्थ हो तो मुझे जलाए। जब मेरा मन शुद्ध है, तो इस दिव्य शक्ति का क्या होगा। इस ग्रन्थ में वर्णन है कि अग्नि परीक्षा के बाद सीता जैन धर्म में दीक्षित हो जाती हैं।

46. **इनमें से कौन-सा ग्रंथ लौकिक चरितकाव्य माना जाता है?**

(a) भविसयत्त कहा (b) योगसार

(c) परमात्मप्रकाश (d) पाहुड़दोहा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

लोकप्रिय व्यक्तियों के चरित पर आधारित काव्यों के अतिरिक्त कई ऐसे चरितकाव्य भी रचे गए, जिनमें कथानायक या तो काल्पनिक होता था अथवा किसी लोककथा से लिया जाता था। इस श्रेणी में धनपाल द्वारा रचित 'भविसयत्त कहा' का नाम उल्लेखनीय है।

47. **अपभ्रंश का भवभूति किसे माना जाता है?**

(a) शालिभद्र सूरि (b) पुष्पदन्त

(c) कनकामर (d) धनपाल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

अपभ्रंश का भवभूति पुष्पदन्त को माना जाता है।

48. **निम्नलिखित में से कौन-सी रचना पुष्पदन्त की नहीं है?**

(a) महापुराण (b) जयकुमार चरिउ

(c) जसहर चरिउ (d) पउम चरिउ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'पउम चरिउ' पुष्पदन्त की रचना नहीं, बल्कि कवि स्वयंभू की रचना है। इनकी दो अन्य रचनाएँ रिट्ठणेमि चरिउ तथा स्वयंभू छन्द हैं। पुष्पदन्त की तीन रचनाएँ मिलती हैं-महापुराण, जयकुमार चरिउ तथा जसहर चरिउ।

49. **कौन-सी रचना स्वयंभू कवि की नहीं है?**

(a) पउम-चरिउ (b) रिट्ठणेमि चरिउ

(c) स्वयंभू छन्द (d) महापुराण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. **खड़ी बोली में सबसे पहले काव्य-सृजन करने वाले कवि हैं—**

(a) अमीर खुसरो (b) सूरदास

(c) तुलसीदास (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

खड़ी बोली में सबसे पहले काव्य-सृजन करने वाले कवि अमीर खुसरो हैं। इस भाषा का इस नाम (हिन्दवी) से उल्लेख सबसे पहले उन्हीं की रचनाओं में मिलता है। हालांकि वे फारसी के भी अपने समय के सबसे बड़े भारतीय कवि थे। मुकरी लिखने का सर्वप्रथम प्रयास उन्होंने ही किया था। अमीर खुसरो की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं-खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने तथा गजल इत्यादि।

51. **खड़ी बोली हिन्दी में सर्वप्रथम रचना करने वाले कवि का नाम है-**

(a) जायसी (b) अमीर खुसरो

(c) विद्यापति (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. **'मुकरी' लिखने का सर्वप्रथम प्रयास किस कवि ने किया था?**

(a) स्वयंभू (b) जगनिक

(c) अमीर खुसरो (d) कुम्भनदास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. अमीर खुसरो की पहेलियों तथा मुकरियों का क्या उद्देश्य है?

(a) पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन करना।

(b) अलाउद्दीन और हम्मीर के युद्धों का वर्णन।

(c) मनोरंजन के माध्यम से लोक व्यवहार की शिक्षा।

(d) कोई उद्देश्य नहीं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अमीर खुसरो के बारे में कहा जाता है कि वे बड़े विनोदी और सहृदय व्यक्ति थे। जनजीवन के साथ घुलमिल कर काव्य रचना करने वाले कवियों में खुसरो का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखी थी। आदिकाल में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या सौ बताई जाती है, जिनमें अब 20-21 ही उपलब्ध हैं।

54. निम्न में से कौन शिलांकित कृति है?

(a) पाहुडदोहा (b) राउलवेल

(c) प्राकृतपैंगलम (d) वर्णरत्नाकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शिलांकित कृति 'राउलवेल' है। यह गद्य-पद्य मिश्रित चम्पूकाव्य की प्राचीनतम हिन्दी कृति है। इसकी रचना 'राउल' नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रसंग में हुई। आरम्भ में कवि ने राउल के सौन्दर्य का वर्णन पद्य में किया और फिर गद्य का प्रयोग किया गया है। इस कृति का रचयिता रोडा नामक कवि माना जाता है। 'राउलवेल' से हिन्दी में नख-शिख वर्णन की श्रृंगार परम्परा आरम्भ होती है। इसकी भाषा में हिन्दी की सात बोलियों के शब्द मिलते हैं, जिनमें राजस्थानी प्रधान है।

55. 'राउल बेल' किस तरह की रचना है?

(a) गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू (b) शुद्ध काव्य

(c) नाटक (d) प्रेमाख्यात्नक प्रबंधकाव्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. निम्नलिखित में से कौन व्याकरण ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है?

(a) राउलवेल (b) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण

(c) वर्णरत्नाकर (d) कुवलयमाला

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' व्याकरण के रूप में प्रतिष्ठित है। महाराज गोविन्द चन्द्र के सभा-पण्डित दामोदर शर्मा ने बारहवीं शताब्दी में इस पुस्तक की रचना की थी। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''उक्ति-व्यक्ति प्रकरण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है...''। हिन्दी व्याकरण की ओर उस समय ध्यान दिया जाने लगा था, यह भी इस पुस्तक से सिद्ध होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की पुस्तक 'वर्णरत्नाकर' डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी और पण्डित बबुआ मिश्र के सम्पादन में बंगाल एशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित हुई।

57. ''उक्ति-व्यक्ति'' यह ग्रन्थ है-

(a) महाकाव्य (b) गद्यकाव्य

(c) छन्द (d) व्याकरण

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. निम्न में से कौन-सी रचना व्याकरण ग्रन्थ है?

(a) कीर्तिपताका (b) चर्यपद

(c) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण (d) वर्णरत्नाकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. इनमें से कौन-सी भाषा 'आदिकाल' की है?

(a) ब्रज भाषा (b) खड़ी बोली

(c) डिंगल-पिंगल (d) अवधी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि काव्यरचना की दो अन्य महत्वपूर्ण शैलियों का भी आदिकाल में विकास हुआ था, जिन्हें कुछ विद्वानों ने भाषा के नाम से ही अभिहित कर एक भ्रम पैदा कर दिया है। ये शैलियाँ हैं—डिंगल तथा पिंगल। आदिकालीन हिन्दी साहित्य में वीर रस की रचनाओं में डिंगल शैली का प्रयोग होता था तथा कोमल भावों की अभिव्यंजना पिंगल शैली में की जाती थी। जब कवि डिंगल शैली का प्रयोग करता था, तो वह हिन्दी बोलियों के कर्कश शब्दों को अपनाता था, किन्तु पिंगल शैली के प्रयोग में धीरे-धीरे कोमल शब्दावली का विकास हो रहा था। डिंगल की कर्कश शब्दावली सीमित थी, अतः इस शैली के साहित्य का अधिक विस्तार न हो सका। पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गयी और उसका ब्रज भाषा में विगलन हो गया। जो लोग 'डिंगल' को राजस्थानी भाषा का पर्याय मानते हैं, वे भूल करते हैं। वस्तुतः राजस्थान के आदिकालीन साहित्य की भाषा 'हिन्दी' की ये दोनों ही शैलियाँ चारणों, भाटों द्वारा प्रयुक्त होती थीं तथा भक्तिकाल और रीतिकाल में भी उनके प्रयोग की वह क्षीण परम्परा चलती रही। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदिकाल की भाषा ब्रज भाषा है। खड़ी बोली आधुनिक काल की तथा अवधी मध्यकाल की भाषा है।

60. 'रासो' ग्रन्थ किस भाषा में लिखे गए थे?

(a) खड़ी बोली (b) ब्रज भाषा
(c) अवधी (d) डिंगल-पिंगल

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'रासो' ग्रन्थ डिंगल-पिंगल शैलियों में लिखे गए थे।

61. 'चारण-साहित्य' किस साहित्य का दूसरा नाम है?

(a) सिद्ध साहित्य का (b) नाथ साहित्य का
(c) जैन साहित्य का (d) रासो साहित्य का

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

डॉ. ग्रियर्सन एवं रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को चारण काल नाम दिया। इस काल में राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरित्रों या गाथाओं का वर्णन करते थे। यही प्रबन्ध परम्परा रासो के नाम से जानी जाती है, जिसे लक्ष्य करके इस काल को वीरगाथा काल भी कहा गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस काल की बारह रचनाओं का उल्लेख किया है, जो रासो साहित्य के नाम से भी जानी जाती हैं। इनमें प्रमुख हैं- विजयपाल रासो (नल्ल सिंह कृत), हम्मीर रासो (शारंगधर कृत), खुमाण रासो (दलपति विजय कृत), बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह कृत), पृथ्वीराज रासो (चन्दबरदाई कृत), परमाल रासो (जगनिक कृत)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सिद्ध साहित्य के इतिहास में चौरासी सिद्धों का उल्लेख मिलता है। सरहपा, शबरपा, लुइपा, विरूपा, डोम्भिपा, कण्हपा, कुक्कुरिपा आदि सिद्ध कवि हैं।
- नाथपन्थी योगी अलख जगाते हैं। नाथपन्थी जिन ग्रन्थों को प्रमाण मानते हैं, उनमें सबसे प्राचीन हठयोग सम्बन्धी ग्रन्थ 'घेरण्ड संहिता' और 'शिव संहिता' है।
- गोरखनाथ द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ हठयोग, गोरक्षनाथ ज्ञानामृत, गोरक्षकल्प आदि हैं।
- जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। जैन साहित्य के लेखक अगरचन्द्र नाहटा थे। जैन साहित्य जिसे 'आगम' कहा जाता है, इनकी संख्या 12 बतायी जाती है।

62. निम्नलिखित में से कौन चौरासी सिद्धों में नहीं है?

(a) विरूपा (b) कण्हपा
(c) शारंगधर (d) कुक्कुरिपा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

63. आदिकाल में किस प्रकार का साहित्य लिखा जा रहा था?

(a) जन-जीवन से हटकर राजाओं की वीरता का अतिरंजित वर्णन
(b) कृष्ण-भक्ति पर आधारित काव्य
(c) निर्गुण की उपासना
(d) उपर्युक्त किसी प्रकार का नहीं

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. वीरगाथाकालीन 'रासो' काव्यों में निम्नलिखित में से किस विषय का वर्णन नहीं है?

(a) आश्रयदाताओं का अतिरंजनापूर्ण वर्णन
(b) इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण
(c) कृष्ण-लीला का प्रतिपादन
(d) युद्धों का सजीव एवं गत्यात्मक वर्णन

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

वीरगाथाकालीन 'रासो' काव्यों में कृष्ण लीला का प्रतिपादन नहीं किया जाता था। इन काव्यों में आश्रयदाताओं का अतिरंजनापूर्ण वर्णन, इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण तथा युद्धों का सजीव एवं गत्यात्मक वर्णन पाया जाता है।

65. हिन्दी साहित्य के 700 से 1400 ई. के काल खण्ड को ग्रियर्सन ने क्या नाम दिया है?

(a) संधिकाल (b) प्रारम्भिक काल
(c) चारण काल (d) अपभ्रंश काल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य के 700 से 1400 ई. के काल खण्ड को सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने चारण काल नाम दिया है। वे इसका प्रारम्भ 640 ई. के आस-पास स्वीकार करते हैं।

नोट-अधिकतर विद्वानों की कृतियों में ग्रियर्सन द्वारा काल विभाजन 700 ई. से 1300 ई. उद्धृत मिला है, जिसे उन्होंने चारण काल कहा है। उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 700 ई. से 1400 ई. कहा गया है।

66. बीसलदेव रासो में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(a) श्रृंगारिक (b) आख्यान
(c) गेय (d) प्रबन्ध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'बीसलदेव रासो' मूलतः गेय काव्य था, अतः इसके रूप में परिवर्तन होता रहा है। यह प्रेम एवं शृंगार से परिपूर्ण काव्य है, जिसमें भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तृतीय के विवाह , वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ की रचना नरपति नाल्ह ने 1155 ई. में की थी। 'बीसलदेव रासो' आदिकाल की एक श्रेष्ठ काव्य कृति है। 'बीसलदेव रासो' की शृंगार-परम्परा का आदिकाल में ही अन्त नहीं हो जाता है। विद्यापति से होती हुई यह परम्परा भक्तिकाल में प्रेमाख्यानक काव्यों तक पहुँची, कृष्ण भक्तों को भी प्रभावित किया और रीतिकाल में जाकर इसका सरस शृंगार काव्य के रूप में चरम विकास हुआ। बीसलदेव रासो में हिन्दी काव्य में प्रयुक्त होने वाला बारहमासा वर्णन सबसे पहले मिलता है।

67. 'बीसलदेव रासो' के रचयिता हैं—

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) नरपति नाल्ह (d) स्वयंभू

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

68. बीसलदेव रासो के रचयिता कौन हैं?

(a) जगनिक (b) नरपति नाल्ह
(c) भट्ट केदार (d) चन्दबरदाई

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. निम्नलिखित रासो-ग्रन्थों में कौन-सा काव्य एक प्रेम काव्य या शृंगार काव्य है?

(a) बीसलदेव रासो (b) परमाल रासो
(c) पृथ्वीराज रासो (d) जयमयंक-जसचन्द्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

70. निम्नलिखित में से किस रासो काव्य का मूल वर्ण्य विषय वीर रस न होकर शृंगार रस है?

(a) खुमाण रासो (b) पृथ्वीराज रासो
(c) बीसलदेव रासो (d) परमाल रासो

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

71. राजमती से रूठकर बीसलदेव कहाँ गया था?

(a) कर्नाटक (b) उड़ीसा
(c) तमिलनाडु (d) आंध्र

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'बीसलदेव रासो' में राजा भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तृतीय के विवाह, वियोग और पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है। इसमें वर्णित है कि राजमती की बातों से रुष्ट होकर स्वाभिमानी राजा (बीसलदेव) उड़ीसा (अब ओडिशा) चला गया था। बारह वर्ष तक राजमती उसके विरह से दु:खी रहती है। वह राजभवन की दीवारों को कोसती हुई वन में रहने की कामना करती है। सामंती जीवन के प्रति गहरी अरुचि का सजीव चित्र इस काव्य में मिलता है।

72. किस रासो ग्रन्थ को 'आल्हा खण्ड' के नाम से जाना जाता है?

(a) चन्दबरदाई का पृथ्वीराज रासो
(b) नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो
(c) जगनिक का परमाल रासो
(d) दलपति विजय का खुमाण रासो

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

जगनिक के 'परमाल रासो' ग्रन्थ को 'आल्हा खण्ड' के नाम से जाना जाता है। इसमें महोबा (उ.प्र.) के वीर आल्हा और ऊदल की वीरता की गाथा, उत्तर प्रदेश के अवध और मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड की सर्वाधिक लोकप्रिय वीर गाथा है। 1865 ई. में चार्ल्स इलियट ने जिस 'आल्हा खण्ड' का प्रकाशन कराया था, वह मौखिक परम्परा पर ही आधारित है। इसी प्रति के आधार पर डॉ. श्यामसुन्दर दास ने 'परमाल रासो' का पाठ निर्धारण किया और उसे नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित कराया।

73. उत्तर प्रदेश में 'आल्हा खण्ड' के नाम से कौन-सा काव्य प्रचलित है?

(a) हम्मीर रासो
(b) परमाल रासो
(c) पृथ्वीराज रासो
(d) खुमाण रासो

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

74. 'आल्हा और 'ऊदल' के चरित्र को वीरगीतात्मक काव्य के रूप में रचने वाले कवि हैं—

(a) भट्ट केदार (b) श्रीधर
(c) जगनिक (d) चन्दबरदाई

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

75. 'आल्हा खण्ड' नामक काव्य-ग्रन्थ का दूसरा नाम है-

(a) खुमाण रासो (b) विजयपाल रासो
(c) हम्मीर रासो (d) परमाल रासो

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. 'आल्हा खण्ड' का दूसरा नाम है-

(a) परमाल रासो (b) बीसलदेव रासो
(c) खुमाण रासो (d) हम्मीर रासो

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. 'परमाल रासो' काव्य कृति के कवि का नाम है-

(a) नल्हसिंह भट्ट (b) जगनिक
(c) हेमचन्द्र (d) शारंगधर

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन मिलता है-

(a) परमाल रासो में (b) पृथ्वीराज रासो में
(c) खुमाण रासो में (d) हम्मीर रासो में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. कवि जगनिक की रचना का नाम है-

(a) खुमाण रासो (b) मृगावती
(c) आल्हा खण्ड (d) पद्मावती

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

80. 'परमाल रासो' के लेखक हैं-

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) नरपति नाल्ह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

81. ''बारह बरिस लै कूकर जीऐं, औ तेरह लै जिऐं सियार।
बरिस अठारह छत्री जीऐं, आगे जीवन को धिक्कार।।''
किस विधा की रचना है?

(a) सोहर (b) कजली
(c) बिरहा (d) आल्हा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्ति जगनिक रचित 'परमाल रासो' से ली गई है। इसमें आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन है। इसमें वीर-भावना का जितना प्रौढ़ रूप मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। युद्धों के अत्यन्त प्रभावशाली वर्णनों की इस काव्य में भरमार है। इसकी रचना लोकगाथा के रूप में न होकर शुद्ध काव्य के रूप में हुई है। यह आल्हा विधा है।

82. 'वीरगाथा काल' के प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य का क्या नाम है?

(a) पद्मावत (b) पृथ्वीराज रासो
(c) कामायनी (d) रामचरितमानस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'वीरगाथा काल' का प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य 'पृथ्वीराज रासो' है, जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का प्रथम महाकाव्य तथा इसके रचयिता चन्दबरदाई को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। 'पृथ्वीराज रासो' के चार संस्करण प्रसिद्ध हैं। सबसे बड़े संस्करण का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से हुआ है। इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। सभा ने 1585 ई. में लिखित प्रति के आधार पर 'रासो' का सम्पादन कराया था। इस संस्करण में 69 समय (खण्ड) तथा 16306 छन्द हैं। द्वितीय रूप में उपलब्ध 'पृथ्वीराज रासो' 7000 छन्दों का काव्य माना जाता है। इसका प्रकाशन नहीं हुआ, किन्तु अबोहर एवं बीकानेर में इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं, जो सत्रहवीं शताब्दी ईसवी में लिखी गयी हैं। तीसरा लघु संस्करण 3500 छन्दों का है, जिसमें 19 समय (खण्ड) हैं। इस संस्करण की हस्तलिखित प्रतियाँ भी बीकानेर में सुरक्षित हैं। चौथा संस्करण सबसे छोटा है, जिसमें केवल 1300 छन्द हैं। इसी को डॉ. दशरथ शर्मा सहित कुछ विद्वान मूल रासो मानते हैं। चन्दबरदाई, महाराज पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे। इनकी भाषा को भाषा-शास्त्रियों ने पिंगल कहा है। इसमें महाराज पृथ्वीराज व उनकी प्रेमिका संयोगिता के परिणय तथा युद्ध का वर्णन है। चन्दबरदाई, पृथ्वीराज के राजकवि ही नहीं, उनके सखा और सामंत भी थे तथा षड्भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छन्दशास्त्र, ज्योतिष, पुराण, नाटक आदि अनेक विधाओं में पारंगत थे।

83. 'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य के रचयिता हैं-

(a) हेमचन्द (b) चन्दबरदाई
(c) परमाल (d) अमीर खुसरो

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता कौन हैं?

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) मधुकर (d) नरपति नाल्ह

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता का नाम बताइये?

(a) चन्दबरदाई (b) अमीर खुसरो
(c) जगनिक (d) नरपति नाल्ह

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

86. चन्दबरदाई किसके दरबारी कवि थे?

(a) महाराज हम्मीर के (b) महाराज बीसलदेव के
(c) महाराणा प्रताप के (d) महाराज पृथ्वीराज चौहान के

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. 'पृथ्वीराज रासो' किस कवि की रचना है?

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) मुल्ला दाऊद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. हिन्दी का प्रथम महाकाव्य किस रचना को माना जाता है?

(a) कामायनी (b) साकेत
(c) रामचरितमानस (d) पृथ्वीराज रासो

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

89. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(A) बीसलदेव रासो	(i) जगनिक
(B) पृथ्वीराज रासो	(ii) नरपति नाल्ह
(C) परमाल रासो	(iii) दलपति विजय
(D) खुमाण रासो	(iv) चन्दबरदाई

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(b)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
पृथ्वीराज रासो	चन्दबरदाई
परमाल रासो	जगनिक
खुमाण रासो	दलपति विजय

90. 'खुमाण रासो' के रचयिता कौन हैं?

(a) दलपति विजय (b) जगनिक
(c) चन्दबरदाई (d) विद्यापति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

91. आदिकालीन हिन्दी काव्यधारा में उपलब्ध नहीं है-

(a) जैन साहित्य (b) सिद्ध साहित्य
(c) सिक्ख साहित्य (d) नाथ साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य के आदिकाल (सं. 1050 से सं.1375 तक) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथा काल का नाम दिया है। इसका चारण-काल, सिद्ध-सामंत काल और अन्य नामों से भी उल्लेख किया जाता है। इस समय का साहित्य मुख्यतः इन रूपों में मिलता है— सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, चारणी साहित्य, प्रकीर्णक साहित्य। सिक्ख साहित्य का उल्लेख इस काल में नहीं मिलता।

सम-सामयिक घटना चक्र

92. संवत् 1050-1375 की कालावधि में लिखे गए हिन्दी साहित्य का 'वीरगाथा काल' के रूप में नामकरण किसने किया था?

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

93. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, हिन्दी साहित्य के आदिकाल की समय सीमा है—

(a) वि.सं. 1050 से वि.सं. 1375 तक

(b) सन् 1050 से सन् 1375 तक

(c) वि.सं. 1375 से वि.सं.1700 तक

(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

94. निम्नलिखित में से कौन वीरगाथा काल की रचना नहीं है?

(a) संदेश रासक (b) जयमयंक-जसचन्द्रिका

(c) आल्हा खण्ड (d) भक्तमाल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

नाभादास भक्तिकाल के कवि थे। इनकी रचना भक्तमाल है। प्रियादास की 'भक्तमाल' की टीका 1712 ई. में लिखी गई थी। इसमें 200 भक्तों का चरित 316 छप्पयों में वर्णित हैं। भक्तमाल में तुलसीदास जी को 'भक्तमाल का सुमेरू' कहा गया है। 'संदेश रासक' अब्दुल रहमान की रचना है। 'जयमयंक-जसचन्द्रिका' मधुकर भट्ट की रचना है।

95. इनमें से कौन-सा कवि आदिकाल का नहीं है?

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक

(c) नाभादास (d) दलपति विजय

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

नाभादास भक्तिकाल (सगुण भक्ति काव्यधारा) के कवि थे। ये अग्रदास जी के शिष्य थे। इन्होंने अष्टयाम की रचना शृंगार भक्ति अथवा रसिक भावना को लेकर की है। ये तुलसीदास के समकालीन थे। विकल्प में दिये गये अन्य कवि आदिकाल के हैं।

96. इनमें से कौन-सी रचना आदिकाल की है?

(a) सूरसागर (b) विद्यापति पदावली

(c) बीजक (d) भ्रमरगीत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'पदावली' आदिकाल की रचना है, जो विद्यापति द्वारा रचित कृष्णभक्ति शृंगार से परिपूर्ण है। इसमें राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं का वर्णन किया गया है। सूरसागर, बीजक तथा भ्रमरगीत भक्तिकाल की रचना है।

97. आदिकालीन साहित्य का प्रमुख रस है-

(a) शान्त (b) हास्य

(c) करुण (d) वीर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आदिकालीन साहित्य का प्रमुख रस 'वीर रस' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का नाम वीरगाथा काल रखा है। इस नामकरण का आधार स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं....... ''आदिकाल की इस दीर्घ परम्परा के बीच प्रथम डेढ़ सौ वर्ष के भीतर तो रचना की किसी विशेष प्रवृत्ति का निश्चय नहीं होता-धर्म, नीति, शृंगार, वीर सब प्रकार की रचनाएँ दोहों में मिलती हैं।''

➲ राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण गाथाओं का वर्णन करते थे। इस काल की प्रधान प्रवृत्ति वीरता की थी अर्थात् इस काल में वीरगाथात्मक ग्रन्थों की प्रधानता रही है।

98. विद्यापति ने कुल कितने ग्रन्थों की रचना की है?

(a) 10 (b) 12

(c) 16 (d) 14

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

विद्यापति की अधिकांश रचनाएँ संस्कृत एवं अवहट्ट में हैं। कीर्तिलता और कीर्तिपताका इनकी अवहट्ट रचनाएँ हैं। इनकी तीसरी रचना 'पदावली' है। जिसकी भाषा, ब्रज भाषा मिश्रित मैथिली है। इनमें कीर्तिपताका अभी तक सम्पादित होकर प्रकाशित नहीं हुई है। कीर्तिलता ऐतिहासिक महत्व का छोटा-सा प्रबन्ध काव्य है। इसकी भाषा अवहट्ट है। विद्यापति ने इसे 'कहाणी' कहा है। पदावली, विद्यापति के यश का आधार है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं-भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, लिखनावली, शैव-सर्वस्व-सार, गंगा वाक्यावलि, दान वाक्यावलि, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, विभाग-सार, वर्ष कृत्य और गया-पतन। गोरक्ष-विजय इनका प्रसिद्ध नाटक है। इस प्रकार इनके कुल ग्रन्थों की संख्या 14 है।

99. विद्यापति के पद किस भाषा में रचित हैं?

(a) पहाड़ी (b) मैथिली

(c) अवधी (d) पिंगल

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. विद्यापति की कौन-सी रचना अभी तक सम्पादित होकर प्रकाशित नहीं हुई है?

(a) कीर्तिलता (b) कीर्तिपताका

(c) पदावली (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. विद्यापति इनमें से किस रचना के आधार पर 'मैथिल कोकिल' कहलाए?

(a) पदावली (b) कीर्तिपताका

(c) कीर्तिलता (d) उपर्युक्त सभी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि विद्यापति जिसकी रचना के कारण ये 'मैथिल कोकिल' कहलाए, वह इनकी पदावली है। इन्होंने अपने समय की प्रचलित मैथिली भाषा का व्यवहार किया है। विद्यापति के पद अधिकतर शृंगार के ही हैं, जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण हैं।

102. 'देसिल बअना सबजन मिट्ठा' यह प्रसिद्ध उक्ति किसने कही?

(a) विद्यापति (b) अमीर खुसरो

(c) अब्दुर्रहमान (d) कवि गंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत उक्ति विद्यापति की है जिसका अर्थ है– ''अपना देश या अपनी भाषा सबको मीठी लगती है। यही जानकर मैंने इसकी रचना की है।'' 'कवि कोकिल विद्यापति' का पूरा नाम विद्यापति ठाकुर था।

103. इनमें से कौन-सा कवि 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित है?

(a) विद्यापति (b) सूरदास

(c) नन्ददास (d) कुम्भनदास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

विद्यापति ने ओइनवार राजवंश के विभिन्न आश्रयदाताओं के संरक्षण में गीत रचे। इनके गीतों के भाव वैशिष्ट्य एवं माधुर्य गुण से प्रभावित होकर ओइनवार कुलशिरोमणि महाराजा शिवसिंह ने विद्यापति को 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया।

104. किस कवि को 'अभिनव जयदेव' नाम से जाना जाता है?

(a) विद्यापति (b) भवभूति

(c) नरसी मेहता (d) रविदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

105. निम्नलिखित में से कौन-सा नाम, नाथ-पंथी साधकों में शामिल नहीं है?

(a) जलन्ध्रीपाव (b) भरथरी

(c) कण्हपा (d) चुणकरनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कण्हपा, शबरपा (सरहपा), लुइपा, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा आदि सिद्ध साहित्य के कवि हैं। नाथ-साहित्य के विकास में जिन कवियों ने योगदान दिया उनमें चौरंगीनाथ, गोपीचन्द, चुणकरनाथ, भरथरी, जलन्ध्रीपाव आदि प्रसिद्ध हैं।

106. निम्नलिखित में से किसका संबंध सिद्ध साहित्य में नहीं है?

(a) सरहपा (b) कुक्कुरिया

(c) शबरपा (d) गोपीचंद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. 'सरहपा' का सम्बन्ध निम्न में से किससे है?

(a) सिद्ध साहित्य (b) रासो काव्य

(c) नाथ साहित्य (d) जैन साहित्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सम-सामयिक घटना चक्र

108. नाथपन्थ के प्रणेता कौन थे?

(a) आदि नाथ (b) मछन्दरनाथ

(c) गोरखनाथ (d) चुणकरनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

नाथपन्थ के प्रणेता आदिनाथ थे। यौगिक क्रियाओं के उद्धार के लिए नाथ सम्प्रदाय का उदय हुआ। नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक आदिनाथ को भगवान शंकर का अवतार माना जाता है। इस सम्प्रदाय में नौनाथ गोरक्षनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणनाथ, गहिनीनाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भार्तृनाथ और गोपीचन्द्रनाथ को मुख्य माना जाता है।

109. गोरखनाथ के गुरु का नाम बतायें?

(a) मत्स्येन्द्रनाथ (b) गोपीचन्द

(c) चौरंगीनाथ (d) चुणकरनाथ

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

नाथपन्थ को चलाने का श्रेय मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोरखनाथ को है। गोरखनाथ, नाथ-साहित्य के प्रारम्भकर्ता थे। गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ थे।

110. नाथ संप्रदाय में 'हठयोग' का क्या अर्थ है?

(a) कठिन साधना

(b) अडिग योग साधना

(c) हठपूर्वक योग

(d) 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्र, दोनों का योग

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया था। हठयोगियों के 'सिद्ध-सामंत-पद्धति' ग्रंथ के अनुसार, 'ह' का अर्थ है सूर्य और 'ठ' का अर्थ है चन्द्र। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते हैं। गोरखनाथ ने ही षट्चक्रों वाला योगमार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया था।

111. सिद्धों की साधना में 'शून्य' का पूरक तत्व था-

(a) वज्र (b) अग्नि

(c) चित्र (d) ज्ञान

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

तांत्रिक सिद्धों का मूलाधार लोकायतिक एवं भौतिकवादी था, किन्तु सामंतीय व्यवस्था की सत्ताधारी विचारधारा ने उनको भी अपनी कालाग्नि में लपेट लिया और वे भी पंचमहाभूतों को समस्त भव (संसार) का बीज मानने एवं काया से मन की उत्पत्ति मानने के बजाय चित्त को ही भव तथा निर्वाण का बीज मानकर 'चिन्तकारणवादी' बन बैठे। इंद्रियों तथा उनके विषयों को तो उन्होंने पंचभूतों पर आश्रित रखा, लेकिन छठीं इंद्रिय अर्थात् मन के केन्द्र से वे उलट कर अर्द्ध-अध्यात्मवादी और दिग्भ्रमित लोकायतवादी हो गये। इस प्रतिस्थापन का सूक्ष्म केन्द्र मन हुआ। मन आदि रूप में निर्मल तथा सहज स्वभाव वाला हुआ। यह संकल्पनिवेषित चित्त है। यही प्रज्ञा एवं उपाय के समागम से समन्वित होकर 'बोधिचित्त' है, जिसमें शून्यता एवं करुणा की अद्वैतता है। इसी चित्त को प्राण द्वारा कमल में आसीन किया जाता है। तब यह वज्ररूप होता है। राग ही वज्र है, उपाय है और मुद्रा के आगे महामुद्रा-साधना का पूरक है। अतः करुणाभूषित राग ही महामुद्रा से समागम करने पर 'महाराग' होता है, जो मोक्ष का हेतु है। यह करुणाभूषित राग अर्थात् महाराग शून्यता से समागम करने की प्रवृत्ति के कारण वज्रराग है। अतः स्पष्ट है कि सिद्धों की साधना में 'शून्य' का पूरक तत्व वज्र है।

112. सिद्ध कवियों द्वारा प्रयुक्त भाषा को कहा जाता है-

(a) डिंगल (b) अपभ्रंश

(c) अवहट्ठ (d) संधा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

सिद्ध कवियों के द्वारा प्रयुक्त भाषा को संधा या साध्या कहा जाता है। इन्होंने संधा भाषा-शैली में रचनाएँ की हैं। संधा भाषा वस्तुतः अंतस्साधनात्मक अनुभूतियों का संकेत करने वाली प्रतीक भाषा है। इस भाषा-शैली का उपयोग नाथों ने भी किया।

113. निम्नलिखित में से सिद्ध-साहित्य के विषय में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) सिद्ध साहित्य का झुकाव सहज साधना की ओर है

(b) सिद्ध साहित्य के प्रथम कवि सरहपा हैं

(c) सिद्ध साहित्य की रचना चर्यापदों तथा दोहों में हुई है

(d) सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में हुआ है

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

डॉ. तोसीतोरी अपनी पुस्तक 'पुरानी राजस्थानी' में गुजरात और राजस्थान के पश्चिमी भाग की भाषा को पुरानी पश्चिमी राजस्थानी एवं शूरसेन तथा राजस्थान के पूर्व भाग की भाषा को पिंगल अपभ्रंश नाम देते हैं। सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में नहीं हुआ। अतः विकल्प (d) असत्य है।

भक्तिकाल

1. **समग्र भक्तिकालीन काव्य पर कौन-सी विशेषता लागू होती है?**
   (a) अवतार में विश्वास (b) जाति-प्रथा का निषेध
   (c) अहंकार का त्याग (d) ईश्वरीय लाला गायन
   दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

भक्तिकालीन कवियों ने ब्रह्म प्राप्ति में अहंकार को बाधक माना। इसलिए उन्होंने सर्वप्रथम अहंकार के त्याग पर बल दिया। अतः समग्र भक्तिकालीन काव्य पर 'अहंकार का त्याग' की विशेषता लागू होती है।

2. **भक्तिकाल की समय सीमा क्या है?**
   (a) संवत् 1275 से संवत् 1700 तक
   (b) संवत् 1275 से संवत् 1800 तक
   (c) संवत् 1375 से संवत् 1850 तक
   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
   P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल का समय वि.संवत् 1375 से वि.संवत् 1700 तक माना जाता है। भक्तिकाल को ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा, कृष्णाश्रयी शाखा तथा रामाश्रयी शाखा में विभक्त किया जाता है। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे–कबीरदास, रैदास और मलूकदास। प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे–मलिक मुहम्मद जायसी। कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे–सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, गोविन्दस्वामी, मीराबाई, नरोत्तमदास, रहीम और रसखान। रामाश्रयी शाखा में प्रमुख सन्त तुलसीदास थे।

3. **संवत् 1375-1700 तक के साहित्य में कौन-सी भावधारा परिलक्षित होती है?**
   (a) शृंगारिकता (b) वीरता
   (c) रीति (d) भक्ति
   K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **भक्ति के स्रोत को दक्षिण से उत्तर भारत में प्रसारित होने के सिद्धान्त का समर्थन करने वाले विद्वान हैं-**
   (a) ग्रियर्सन (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   (c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद
   T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, ''भक्ति का जो स्रोत दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था, उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।'' शुक्ल जी की स्थापना का खंडन करते हुए द्विवेदी जी का ये कथन सही है कि-नैतिक सांस्कृतिक जिजीविषा और आध्यात्मिक सम्पन्नता का उद्घोष करने वाला भक्ति साहित्य 'हतपर्द पराजित जाति' की सम्पत्ति नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ग्रियर्सन, वेबर, कीथ, विल्सन इत्यादि विदेशी विद्वानों के मत हैं कि भक्ति के उद्गम में ईसाइयों का प्रभाव है। आज इस मत को प्रायः अमान्य सिद्ध किया जा चुका है।
- बालगंगाधर तिलक, कृष्णास्वामी अयंगार, डॉ.एच.रायचौधरी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि विद्वानों ने तथ्यात्मक साक्ष्यों और प्रबल तर्कों के सहारे ऐसी भ्रांत धारणाओं का खण्डन करते हुए भक्ति का उद्गम प्राचीन भारतीय स्रोतों में सिद्ध किया है।
- कुछ लोगों ने तात्कालिक रूप से परिस्थितिगत प्रेरणा के रूप में मुस्लिम आक्रमण और राज्य स्थापना से भक्ति आन्दोलन को जोड़ा है, जिसमें रामचन्द्र शुक्ल प्रमुख हैं।

5. **'हिन्दी का भक्ति काल बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है'-यह कथन निम्नलिखित में से किस विद्वान का है?**
   (a) ग्रियर्सन (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   (c) रामचन्द्र शुक्ल (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
   G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

'ग्रियर्सन, रामचन्द्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी भक्ति के उदय की व्याख्या तीन भिन्न-भिन्न रूपों में करते हैं। ग्रियर्सन के लिए वह एक बाह्य प्रभाव है, रामचन्द्र शुक्ल के लिए, वह बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है और हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे महज भारतीय परम्परा का अपना स्वतः स्फूर्त विकास मानते हैं। ये क्रमशः विदेशी, देशी और लोक पक्ष को महत्व देने की अलग-अलग परिणतियाँ हैं।

6. **रामानुजाचार्य ने किस दर्शन का प्रतिपादन किया?**
   (a) अद्वैतवाद (b) शुद्धाद्वैतवाद
   (c) विशिष्टाद्वैतवाद (d) द्वैतवाद
   T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

'विशिष्टाद्वैतवाद' सम्प्रदाय के प्रवर्तक रामानुजाचार्य हैं। इनका मत है कि ईश्वर (ब्रह्म) स्वतन्त्र तत्व है, परन्तु जीव भी सत्य है, मिथ्या नहीं। ये जीव ईश्वर के साथ सम्बद्ध हैं। उनका यह सम्बन्ध भी अज्ञान के कारण नहीं है, वह वास्तविक है। मोक्ष होने पर ही जीव की स्वतन्त्र सत्ता रहती है। भौतिक जगत और जीव अलग-अलग रूप से सत्य हैं, परन्तु ईश्वर की सत्यता इनकी सत्यता से विलक्षण है। ब्रह्म पूर्ण है, जगत जड़ है, जीव अज्ञान और दु:ख से घिरा है। ये तीनों मिलकर एकाकार हो जाते हैं, क्योंकि जगत् और जीव ब्रह्म के शरीर हैं और ब्रह्म इनकी आत्मा तथा नियंता है। ब्रह्म से पृथक् इनका अस्तित्व नहीं है, ये ब्रह्म की सेवा के लिए ही हैं।

7. 'विशिष्टाद्वैतवाद' के प्रतिपादक कौन थे?

(a) रामानन्द (b) रामानुजाचार्य

(c) मध्वाचार्य (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. आलवार भक्तों की संख्या कितनी मानी गई है?

(a) 9 (b) 20

(c) 12 (d) 15

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

वैष्णवभक्ति के विकास क्रम में रामभक्ति सर्वप्रथम दक्षिण के आलवार संतों की वाणी के माध्यम से प्रस्फुटित हुई और तदोपरांत उत्तरी भारत में उसका विकास हुआ। ये आलवार संख्या में 12 थे। इनमें से काठकोप अथवा नक्मालवार 'राम की पादुका के अवतार' माने जाते हैं। सर्वप्रथम इनकी रचना 'तिरुवायमोलि' में अनन्य रामभक्ति का वर्णन मिलता है। इनकी अन्य तीन प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—तिरुविरुतम, तिरुवर्गशरियेम तथा पेरिय तिरुवन्दादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सातवें आलवार केरल के चेरवंशी राजा कुलशेखर भी अनन्य रामभक्त थे। 'प्रेरुमाल तिरुभोवि' में इनके रामभक्ति विषयक सरस गीत संकलित हैं।
- श्रीसम्प्रदाय के प्रथम आचार्य रंगनाथ मुनि (824-924 ई.) ने आलवार संतों के लोकप्रचलित पदों को 'प्रबंधम्' शीर्षक से चार भागों में संकलित किया।
- नाथ मुनि के परवर्ती श्रीसम्प्रदाय के पुंडरीकाक्ष, राम मिश्र, यामुनाचार्य आदि आचार्यों ने भी अपनी वाणी के द्वारा रामभक्ति को अधिकाधिक पल्लवित किया।
- आचार्य रामानुज शेष अथवा 'लक्ष्मण के अवतार' माने जाते हैं।
- ब्रह्म सम्प्रदाय की भक्ति परम्परा में मध्वाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है।
- उत्तरी भारत में रामभक्ति का प्रवर्तन आचार्य रामानुज की परम्परा में राघवानन्द द्वारा प्रारम्भ हुआ और उनके शिष्य रामानन्द ने उसे युगानुकूल भावभूमि प्रदान की।
- आचार्य रामानन्द ने ही सर्वप्रथम संकुचित रूढ़ियों में आबद्ध और बाह्य आक्रमणों से संत्रस्त, समसामयिक हिन्दू समाज को रामभक्ति का अभेद कवच प्रदान किया।
- भक्तिभावना को ऊँच-नीच एवं बाह्य आडम्बरों से मुक्त करने का श्रेय भी आचार्य रामानन्द को ही प्राप्त है।

9. आलवार वैष्णवों की संख्या है-

(a) 9 (b) 10

(c) 11 (d) 12

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रामानन्द..........की शिष्य परम्परा में आते हैं।

(a) रंगाचार्य (b) नाथमुनि

(c) रामानुजाचार्य (d) पुंडरीकाक्ष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. निम्नलिखित में से कौन 'रामानन्द' की शिष्य परम्परा में नहीं है?

(a) कबीरदास (b) नरहरिदास

(c) मलूकदास (d) रैदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आदि गुरु स्वामी रामानन्द जी के बारह प्रमुख शिष्य थे, जो द्वादश महाभागवत के नाम से जाने जाते थे। वे हैं- अनन्तानन्द, सुखानन्द, योगानन्द, सुरसुरानन्द, गालवानन्द, नरहरिनन्द, भावानन्द, कबीरदास, पीपा, रैदास, धन्ना जाट, सेन भक्त। मलूकदास जी का जन्म इलाहाबाद के कड़ा ग्राम में हुआ था। ये स्वामी रामानन्द के शिष्यों में से नहीं थे। इन्होंने 'ज्ञानबोध', रतनखान' भक्ति विवेक आदि ग्रंथों की रचना की। इनकी काव्य रचना ध्रुवचरित है।

11. निम्नलिखित में से कौन स्वामी रामानंद का शिष्य नहीं था?

(a) अनन्तानन्द (b) सुखानन्द

(c) नरहर्यानन्द (d) रैदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्णयुग सर्वप्रथम किसने कहा?**

(a) ग्रियर्सन (b) मिश्रबन्धु
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2010
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्णयुग सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने कहा।

13. **हिन्दी के किस काल को स्वर्ण-युग कहा जाता है?**

(a) छायावाद (b) रीतिकाल
(c) भक्तिकाल (d) आदिकाल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल को स्वर्ण-युग माना जाता है। इस युग में ऐसे महान् कवियों का जन्म हुआ, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को एक गौरवशाली स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि ये कवि भक्त थे, किन्तु उस भक्ति काव्य में जीवन-दायिनी शक्ति के साथ-साथ काव्यात्मकता और सौन्दर्य की भी महत्वपूर्ण रचना है। इस काल में कबीर, सूर, तुलसी, नानक, जायसी, नन्ददास, मीराबाई आदि अनेक महान् विभूतियों का प्रादुर्भाव हुआ।

14. **भक्तिकाल का नाम 'पूर्व मध्यकाल' किस आचार्य ने दिया?**

(a) डॉ. नगेन्द्र ने
(b) डॉ.रामकुमार वर्मा ने
(c) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने
(d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास में काल विभाजन का क्रम इस प्रकार है- 1. आदिकाल, 2. मध्यकाल
(क) पूर्व मध्यकाल अथवा भक्तिकाल
(ख) उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल
3. आधुनिक काल
(क) पुनर्जागरण काल अथवा भारतेन्दु युग
(ख) जागरण सुधार काल अथवा द्विवेदी युग
(ग) छायावाद युग
(घ) छायावादोत्तर युग

15. **नाभादास कृत 'भक्तमाल' की भाषा है-**

(a) अवधी (b) ब्रज भाषा
(c) हिन्दी खड़ी बोली (d) मैथिली

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

नाभादास कृत 'भक्तमाल' की भाषा ब्रज भाषा है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भक्तमाल' संवत् 1642 के बाद लिखा गया और संवत् 1769 में प्रियादास जी ने उसकी टीका लिखी। ब्रज भाषा पर इनका अच्छा अधिकार था और पद्य रचना में अच्छी निपुणता थी। नाभादास ने ब्रज भाषा में 'अष्टयाम' की रचना शृंगार भक्ति अथवा रसिक भावना को लेकर की है। इसमें कवि की शैली परिमार्जित, प्रांजल और भावपूर्ण है। इनके गुरु 'अग्रदास' थे, जो रामभक्त थे। ये तुलसीदास के समकालीन थे।

16. **'भक्तमाल' के रचनाकार हैं-**

(a) रैदास (b) नाभादास
(c) धरमदास (d) जीवादास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. **नाभादास द्वारा लिखित 'अष्टयाम' किस भाषा में लिखी गयी है?**

(a) छत्तीसगढ़ी (b) अवधी
(c) ब्रज भाषा (d) मालवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. **'अष्टयाम' के रचयिता कौन हैं?**

(a) सूरदास (b) गोकुलनाथ
(c) नाभादास (d) वल्लभाचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. **'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास के गुरु का नाम था—**

(a) नरहरिदास (b) बल्लभाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) अग्रदास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ सन्तकाव्य

1. **सन्त-साधना का साहित्यिक रूप प्रारम्भ हुआ-**

(a) काशी (b) प्रयाग
(c) पंढरपुर (d) उज्जैन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अधिकतर सन्त कवि महाराष्ट्र से हुए हैं। सन्त-साधना का साहित्यिक रूप भी महाराष्ट्र (पंढरपुर) से प्रारम्भ हुआ है।

2. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं-

(a) रैदास (b) कबीरदास
(c) गुरु नानक (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

भक्तिकाल को दो शाखाओं में विभाजित किया गया है- निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। निर्गुण शाखा की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा सगुण शाखा की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में नानक, सन्त रैदास (रविदास), दादूदयाल, मलूकदास, धर्मदास तथा सुन्दरदास हैं।

3. इनमें से 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं :

(a) धर्मदास (b) अग्रदास
(c) दादूदयाल (d) कबीरदास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख सन्त कवि का क्या नाम है?

(a) सूरदास (b) चन्दबरदाई
(c) कबीरदास (d) विद्यापति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित में से 'सन्त काव्य परम्परा' के अन्तर्गत न आने वाले कवि का नाम है-

(a) कबीर (b) दादूदयाल
(c) नानक (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. निर्गुण सन्त कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित थे-

(a) रज्जब (b) सुन्दरदास
(c) धर्मदास (d) दादूदयाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

निर्गुण सन्त कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित सुन्दरदास थे। कहते हैं कि अपने नाम के अनुरूप अत्यन्त सुन्दर थे, सुशिक्षित होने के कारण उनकी कविता कलात्मकता से युक्त और भाषा परिमार्जित है। निर्गुण सन्तों ने गेय पद और दोहे ही लिखे हैं। सुन्दरदास ने कवित्त और सवैये भी रचे हैं। उनकी काव्य भाषा में अलंकारों का प्रयोग खूब है। उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुन्दर विलास' है। रज्जब, धर्मदास एवं दादूदयाल निर्गुण सन्त कवि हैं।

7. निम्नलिखित सन्त कवियों में से कौन सन्त कवि पढ़ा-लिखा था?

(a) दादूदयाल (b) रैदास
(c) कबीर (d) सुन्दरदास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. इनमें से कौन-सा कवि सन्त कवि नहीं है?

(a) कबीरदास (b) रैदास
(c) गुरुनानक (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

कबीरदास, रैदास, गुरुनानक, नाम्देव, दादूदयाल, सुन्दरदास, मलूकदास आदि सन्त कवि हैं, जबकि तुलसीदास भक्तिकाल के रामभक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं।

9. 'हरडेवाणी' एवं 'अंगवधू' किसकी वाणी के संकलन हैं?

(a) सुन्दरदास (b) दादूदयाल
(c) मलूकदास (d) कबीरदास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'हरडेवाणी' एवं 'अंगवधू' दादूदयाल की वाणी के संकलन हैं। दादू की वाणी को संकलित करने का कार्य सर्वप्रथम इनके शिष्यों सन्तदास एवं जगन्नाथ ने किया जिसका नाम इन्होंने 'हरडेवाणी' रखा। रज्जब ने दादूदयाल की वाणी को 'अंगवधू' के नाम से संकलन किया।

10. निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा का दूसरा नाम है-

(a) राम भक्ति शाखा (b) कृष्ण भक्ति शाखा
(c) सन्त साहित्य (d) सूफी साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निर्गुण सन्त काव्य धारा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा नाम दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे निर्गुण भक्ति साहित्य कहते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा केवल सन्त काव्य से सम्बोधित करते हैं। अतः निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा का दूसरा नाम सन्त साहित्य है। इस वर्ग के कवियों को सन्त कवि नाम से पुकारा जाता है। इस शाखा के प्रवर्तक कवि कबीरदास हैं। रैदास (रविदास), गुरु नानक, नामदेव, दादूदयाल, सुन्दरदास, मलूकदास आदि ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं।

सम-सामयिक घटना चक्र

11. **कबीरदास किस काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं?**

(a) सन्त काव्य (b) सूफी काव्य
(c) राम काव्य (d) कृष्ण काव्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **'ज्ञानमार्गी शाखा' के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है?**

(a) सिद्ध कवि (b) नाथपंथी कवि
(c) भक्त कवि (d) सन्त कवि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **सन्तकाव्य नाम किसने दिया है?**

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) रामकुमार वर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **निम्नलिखित विकल्पों में से जो सन्त-काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छाँटिए:-**

(a) बाह्याडम्बरों का खंडन (b) गुरु का महत्व-प्रतिपादन
(c) सगुण ईश्वर की उपासना (d) जाति-पाँति का विरोध

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

सगुण ईश्वर की उपासना सन्त-काव्य की विशेषता नहीं है। सभी सन्त मूर्ति पूजा एवं अवतारवाद के विरोधी थे, परन्तु जाने-अनजाने रूप में इनमें से कुछ की रचनाओं में सगुण तत्वों का समावेश हो गया है। कबीर जैसे अद्वैतवादी और निर्गुण दर्शन के सबल प्रतिपादक कवि के काव्य में भी कहीं-कहीं सगुण तत्व के दर्शन होते हैं। शेष विशेषताएँ सन्त-काव्य की हैं।

15. **निर्गुण काव्यधारा की प्रवृत्ति है?**

(a) वात्सल्य रस की प्रधानता
(b) प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप
(c) रूढ़ियों एवं बाह्याडम्बरों का विरोध
(d) आश्रयदाता की प्रशंसा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

निर्गुण काव्यधारा की प्रवृत्ति में बौद्धों के समान अवतारवाद, मूर्ति, तीर्थ, व्रत माला आदि सभी बाह्याडम्बरों एवं रूढ़ियों का विरोध किया गया है।

16. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल के निम्नलिखित कवियों में से किसे सबसे कम महत्व प्रदान किया था?**

(a) तुलसी (b) सूरदास
(c) कबीर (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

किसी कवि को साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाने वाले आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे, लेकिन उन्होंने जहाँ तुलसीदास, सूरदास और जायसी पर स्वतन्त्र रूप से विस्तृत समीक्षाएँ लिखीं, वहीं कबीर को इस योग्य नहीं समझा। उनके लिए कबीर का महत्व 'इतिहास' तक सीमित रहा और 'इतिहास' में भी कबीर के प्रति सम्मान या सहानुभूति का भाव नहीं दिखता। उनकी दृष्टि में कबीर की भाषा तो पंचमेल है ही, विचार भी पंचमेल हैं, प्रतिभा उनमें जरूर बड़ी प्रखर थी और उनकी उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार भी है, लेकिन कवित्व भी है-यह रामचन्द्र शुक्ल ने कहीं नहीं कहा है।

17. **'भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रखर थी इसमें संदेह नहीं'- पंक्तियों के लेखक हैं-**

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. **सधुक्कड़ी भाषा से आशय है—**

(a) जिसमें कटूक्तियों का प्रयोग हो
(b) जिसमें अक्खड़पन की झलक हो
(c) जिसमें अनेक प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो
(d) जिसमें साधु-सन्तों की गुप्त बातों के संकेतांक हों

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सधुक्कड़ी भाषा से आशय है, जिसमें अनेक प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो। सन्तजन भ्रमणशील प्राणी थे, अतः उनकी रचनाओं में उन विभिन्न प्रदेशों की बोलियों के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जहाँ उन्होंने भ्रमण किया। इन सन्तों के काव्यों में ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी तथा राजस्थानी का प्रयोग हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' तथा श्यामसुन्दर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

19. 'अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम' किसने कहा है?

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) रैदास (d) मलूकदास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

निकम्मेपन तथा आलसियों के बारे में मलूकदास ने यह दोहा रचा—
अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।।

20. 'ज्ञानबोध' किसकी रचना है?

(a) सुन्दरदास (b) मलूकदास
(c) रज्जब जी (d) इनमें में कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2003
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'ज्ञानबोध' मलूकदास की रचना है। मलूकदास के अन्य प्रामाणिक ग्रन्थ हैं- रतनखान, भक्तवच्छावली, भक्ति विवेक, ज्ञानपरोछि, बारहखड़ी, रामअवतार लीला, ब्रजलीला, ध्रुवचरित, विभवविभूति, सुखसागर तथा स्फुट पद इत्यादि।

21. 'भक्ति विवेक' निम्नलिखित में से किसकी रचना है?

(a) मलूकदास (b) सुन्दरदास
(c) नाभादास (d) दादूदयाल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. रज्जब अली खाँ के गुरु थे-

(a) नानक (b) दादूदयाल
(c) मलूकदास (d) धन्ना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

रज्जब अली खाँ के गुरु दादूदयाल थे। दादूदयाल के अन्य शिष्य थे- सुन्दरदास, प्रागदास, जनगोपाल, जगजीवन, प्रभृति आदि। राघोदास ने अपने 'भक्तमाल' में दादू के प्रमुख बावन शिष्यों का उल्लेख किया है जिनमें रज्जब और सुन्दरदास प्रमुख थे।

23. कबीरदास के गुरु कौन थे?

(a) रामचन्द्र (b) राघवानन्द
(c) दयानन्द (d) मायानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

कबीरदास के गुरु रामानन्द थे। रामानन्द के शिष्यों में रैदास, धन्ना तथा पीपा भी शामिल थे। रामानन्द ने वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य राघवानन्द से दीक्षा ग्रहण की थी। उपर्युक्त विकल्पों में कोई भी उत्तर सही नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

24. कबीर के गुरु का नाम क्या है?

(a) रामानन्द सागर (b) रैदास
(c) रविदास (d) रामानन्द

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे'-यह अभिमत किस आलोचक का है?

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. परशुराम चतुर्वेदी
(c) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' यह अभिमत डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का है। कबीर साहसपूर्वक जनबोली के शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में करते हैं। बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा जाता है।

26. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे', कथन के लेखक हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गोविन्द त्रिगुणायत
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामचन्द्र तिवारी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. कबीरदास को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा था?

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. नगेन्द्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' किसे कहा था?

(a) कबीर (b) रैदास
(c) दादू (d) नानक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. ''कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्व लिया और अपना 'निर्गुण' धूमधाम से निकाला।'' यह कथन किसका है?

(a) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) नामवर सिंह
(c) पुरुषोत्तम अग्रवाल (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है-''कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्व लिया और अपना 'निर्गुणपंथ' धूमधाम से निकाला। बात यह थी कि भारतीय भक्तिमार्ग साकार और सगुण रूप को लेकर चला था, निर्गुण और निराकार ब्रह्म भक्ति या प्रेम का विषय नहीं माना जाता।''

30. 'तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म-विचार'- किसने कहा है?

(a) कबीर (b) रैदास
(c) सूरदास (d) तुलसीदास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

कबीर भावना की अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, जीवन का संवेदनशील संस्पर्श करने वाले और मर्यादा के रक्षक कवि थे। उन्होंने स्वत: कहा है- ''तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म-विचार।'' पथभ्रष्ट समाज को उचित मार्ग पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है।

31. 'मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ' किसके विषय में कहा गया है?

(a) नानक (b) रैदास
(c) कबीर (d) दादू

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

अक्षर ब्रह्म के परम साधक कबीरदास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है ''मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ।'' अत: यह बात निर्विवाद है कि उन्होंने स्वत: किसी ग्रन्थ को लिपिबद्ध नहीं किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कबीरदास की कुछ उक्तियाँ इस प्रकार हैं—
- ''तुम जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म विचार।''
- ''मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।''
- ''दुलहिन गावहुँ मंगलाचार।''
- ''तंत्र न जानूँ मंत्र न जानूँ, जानूँ सुन्दर काया।''

32. कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' कहलाता है, इसके कितने भाग हैं?

(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' कहलाता है, इसके तीन भाग हैं- साखी, सबद और रमैनी। कबीरदास भक्तिकाल के एकमात्र ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडम्बरों पर कुठाराघात करते रहे।

❑ सूफीकाव्य

1. हिन्दी का प्रथम सूफी कवि है-

(a) मुल्ला दाऊद (b) जायसी
(c) मुल्ला वजही (d) कुतुबन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

हिन्दी का प्रथम सूफी कवि की मान्यता पर विद्वानों में मतभेद है, किन्तु अधिकतर विद्वान इस पर सहमत हैं कि मुल्ला दाऊद कृत 'चन्दायन' सम्भवत: हिन्दी का प्रथम सूफी प्रेम काव्य है। इसमें नायक लोरिक एवं नायिका चन्दा के प्रेम कथा का वर्णन किया गया है। यह अवधी भाषा में लिखी गयी है। इस आधार पर मुल्ला दाऊद को हिन्दी का प्रथम सूफी कवि माना जा सकता है।

2. सूफी काव्य पद्धति का अन्तिम ग्रन्थ कौन-सा है?

(a) यूसुफ जुलेखा (b) पद्मावत
(c) मृगावती (d) इन्द्रावती

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

सूफी काव्य पद्धति का अन्तिम ग्रन्थ यूसुफ जुलेखा है, जिसकी रचना 1790 ई. में नवाब शेख निसार ने किया था। कासिमशाह कृत 'हंस जवाहर' की पद्धति पर इन्होंने भी अपने प्रेमाख्यान का नाम 'यूसुफ जुलेखा' रखा, जिसमें प्रेमी यूसुफ का नाम पहले और प्रेमिका जुलेखा का नाम बाद में है। इस काव्य के नायक-नायिका काल्पनिक नहीं हैं। यूसुफ का वृत्तांत 'कुरान' में आया है। 'कुरान' का बारहवाँ सूरा 'सूरा यूसुफ' के नाम से पुकारा जाता है। 'कुरान शरीफ' के उसी यूसुफ नामक व्यक्ति की प्रेमकथा शेख निसार ने अपने काव्य 'यूसुफ जुलेखा' में लिखी है। मनसवी शैली में लिखित इस कृति में आसफुद्दौला की प्रशंसा भी की गयी है, क्योंकि उन दिनों वही शाहेवक्त थे। 'यूसुफ जुलेखा' की भाषा जनपदीय अवधी है और कथानक में अलौकिकता की भरमार है। पद्मावत 1540 ई. में मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा, मृगावती 1503 ई. में कुतुबन द्वारा तथा इन्द्रावती 1744 ई. में नूर मुहम्मद द्वारा लिखी गई है।

3. **सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं की भाषा कौन-सी है?**

(a) अवधी (b) ब्रज
(c) बुन्देली (d) खड़ी बोली

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं की भाषा अवधी है। प्रेमाश्रयी शाखा के मुस्लिम सूफी कवियों की काव्यधारा को 'प्रेममार्गी' माना गया, क्योंकि प्रेम से ही प्रभु मिलते हैं, ऐसी उनकी मान्यता है। ईश्वर की तरह प्रेम भी सर्वव्यापी है और ईश्वर का जीव के साथ प्रेम का ही सम्बन्ध हो सकता है, यही उनकी रचनाओं का मूल तत्व है। उन्होंने प्रेम गाथाएँ लिखी हैं। ये प्रेम गाथाएँ फारसी की मनस कवियों की शैली पर रची गई हैं। इन गाथाओं की भाषा अवधी है और इनमें दोहा, चौपाई छन्दों का प्रयोग किया गया है।

4. **सूफी कवियों का सबसे प्रिय अलंकार -**

(a) वक्रोक्ति (b) समासोक्ति
(c) अनुप्रास (d) श्लेष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सूफी कवियों ने अन्योक्ति, समासोयेक्ति, रूपक, प्रतीक, उपमा, उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति अलंकारों की प्रयोग किया है। अतः विकल्प के आधार पर समासोक्ति सही है।

5. **इनमें से सूफी काव्यधारा के कवि कौन नहीं हैं?**

(a) मुल्ला दाऊद (b) जायसी
(c) नामदास (d) कुतुबन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

मुल्ला दाऊद, जायसी, कुतुबन, मंझन, उसमान, शेख नबी, आसिमशाह, नूर मुहम्मद आदि सूफी सन्त हैं, जबकि गुरु नामदास सिख सन्त थे।

6. **प्रेममार्गी कवि नहीं हैं-**

(a) सूरदास (b) मलिक मुहम्मद जायसी
(c) मुल्ला दाऊद (d) मंझन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सूरदास प्रेममार्गी शाखा के कवि नहीं, बल्कि भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्ति धारा के कवि हैं। इनकी रचनाएँ-सूरसागर साहित्य लहरी एवं सूर सारावली हैं।

7. **प्रेमाख्यान काव्य-परम्परा (सूफी कवियों) का मुख्य दर्शन है–**

(a) तसव्वुफ (b) हनफी
(c) अहले हदीस (d) अहमदिया

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

सूफी दर्शन को 'तसव्वुफ' कहा जाता है। सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर बहुत से मत हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि सूफी शब्द 'सफा' से निकला है, जिसका अर्थ है विशुद्धता, मन-विचार और कर्म की विशुद्धता। जिन लोगों के बारे में यह शब्द बोला जाता है, उनका चित्त शुद्ध होता है और खुदा की मुहब्बत के साथ-साथ उनके दिल में उसके बन्दों के लिए भी मुहब्बत पायी जाती है। सूफियों ने दुनिया को प्यार और अमन की तालीम दी है। सूफी मतों में प्रसिद्ध चार सिलसिलों के नाम इस प्रकार हैं—1. चिश्तिया सिलसिला, 2. कादरिया सिलसिला, 3. नक्शबंदिया सिलसिला, 4. सुहरावर्दिया सिलसिला।

8. **अनलहक (मैं ही ब्रह्म हूँ).....की घोषणा है।**

(a) जायसी (b) मंसूर
(c) अमीर खुसरो (d) कबीर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अरब में अलहिलाज मंसूर अथवा मंसूर हल्लाज नामक सूफी सन्त को जब ज्ञान प्राप्त हुआ, तो वह 'अनलहक' अर्थात् 'मैं सत्य हूँ' की घोषणा करने लगा। उसके गुरु जुवैद थे। उन्होंने 'अनलहक' (मैं ही ब्रह्म हूँ) का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने 'किताबे-तवासीफ' नामक सूफीमत का एक ग्रन्थ भी लिखा था, जिसमें इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं। 'अनलहक का सिद्धान्त' भारतीय 'अद्वैतवाद के दर्शन' 'अहंब्रह्मास्मि' से प्रेरित है।

9. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेमाख्यान परम्परा का हिन्दी में प्रवर्तक/प्रथम कवि किसे माना है?**

(a) कुतुबन (b) ईश्वरदास
(c) मुल्ला दाऊद (d) असाइत

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

आचार्य शुक्ल ने मृगावती (1503 ई.) के रचयिता कुतुबन को प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम कवि माना है। कुतुबन-कृत मृगावती में नायक रामकुमार तथा नायिका मृगावती के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम का निरूपण अत्यन्त भावात्मक शैली में हुआ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भक्तिकालीन की प्रेमाख्यान परम्परा के ग्रन्थ हैं- मृगावती, पद्मावत, मधुमालती, चित्रावली और रतनसार आदि।
- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ईश्वर दास की 'सत्यवती कथा' (1500 ई.) को प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना है।
- डॉ. रामकुमार वर्मा ने मुल्ला दाऊद के 'चन्दायन' (1379) को इस परम्परा का प्रवर्तक माना है।

10. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना किसे मानते हैं?**

(a) सत्यवती कथा (b) चन्द्रायन
(c) मृगावती (d) हंसावली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना 'मृगावती' (1501 ई.) को मानते हैं, जिसके रचनाकार कुतुबन हैं।

11. **कुतुबन के गुरु कौन थे?**

(a) दादू (b) शेख सलीम
(c) शेख बुढ़न (d) सुन्दरदास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कुतुबन के गुरु चिश्ती वंश के शेख बुरहान को बताया है। सम्भवतः वर्तनी त्रुटि के कारण उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

12. **कुतुबन के गुरु का नाम-**

(a) सैयद अशरफ (b) दामो
(c) मेंहदी बुरहान (d) शेख बुरहान

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **'मृगावती' के लेखक हैं-**

(a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) नूर मुहम्मद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'मृगावती' के लेखक कुतुबन हैं। इसकी रचना 909 हिजरी अर्थात् 1503-04 ई. में हुई थी। मृगावती में नायक मृगी-रूपी नायिका पर मोहित हो जाता और उसकी खोज में निकल पड़ता है। पं. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, ये जौनपुर के बादशाह हुसैन शाह के आश्रित थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ जायसी की तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं-अखरावट, आखिरी कलाम और पद्मावत।
➲ 'पद्मावत' प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबन्ध काव्य है। यह दोहे-चौपाई में निबद्ध 'मनसवी' शैली में लिखा गया है।
➲ मंझन ने 1545 में मधुमालती की रचना की थी। ये जायसी के परवर्ती थे।

14. **कुतुबन की रचना कौन-सी है?**

(a) मृगावती (b) चन्दायन
(c) सत्यवती कथा (d) पद्मावत

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **मुल्ला दाऊद की भाषा है-**

(a) पश्चिमी परम्परा से संपृक्त शैली (b) साहित्यिक अवधी
(c) पहाड़ी मिश्रित अवधी (d) ठेठ अवधी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

मुल्ला दाऊद की भाषा ठेठ अवधी है। मुल्ला दाऊद की काव्य कृतियों में बैसवाड़ी अवधी का प्रभाव स्पष्ट है। इनकी रचनाओं में ठेठ पूर्वी अवधी एवं अपभ्रंश का प्रयोग अधिक है। मुल्ला दाऊद अवधी के प्रथम कवि हैं। मुल्ला दाऊद ने सन् 1379 में चन्दायन सूफी काव्य की रचना की। चन्दायन को मुल्ला दाऊद ने प्रेम गाथात्मक काव्य बनाया और यह प्रेमगाथात्मक काव्य पूरी तरह से चन्दायन की रचना योजना से भिन्न सूफी काव्य परम्परा का ग्रन्थ बन गया है।

16. **इनमें से जायसी की कौन-सी रचना नहीं है?**

(a) आखिरी कलाम (b) अखरावट
(c) पद्मावत (d) चित्रावली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

चित्रावली उस्मान की रचना है, जबकि आखिरी कलाम, अखरावट तथा पद्मावत जायसी की रचनाएँ हैं।

17. **कौन-सी रचना जायसी कृत नहीं है?**

(a) मधुमालती (b) पद्मावत
(c) अखरावट (d) आखिरी कलाम

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. **'मधुमालती' के रचनाकार हैं-**

(a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) मुल्ला दाऊद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

मधुमालती (1545 ई.) के रचनाकार मंझन हैं। इसमें अवधी भाषा एवं दोहा-चौपाई का प्रयोग हुआ है तथा नायक-नायिका के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम के साथ-साथ पूर्व जन्म के प्रणय-संस्कारों की महत्ता दिखायी गयी है।

19. **'मधुमालती' की रचना किसने की?**
(a) दाऊद (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) जायसी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. **सूफी मत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीकत, मारिफत, हकीकत-की भारतीय भक्तिमार्ग के साथ सही क्रम में संगति होगी-**
(a) आचरण, उपासना, सिद्धावस्था, सत्यबोध
(b) सत्यबोध, आचरण, उपासना, सिद्धावस्था
(c) आचरण, उपासना, सत्यबोध, सिद्धावस्था
(d) सत्यबोध, उपासना, आचरण, सिद्धावस्था

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(a)

सूफीमत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीकत, मारिफत और हकीकत की भारतीय भक्तिमार्ग के साथ सही क्रम है-आचरण, उपासना, सिद्धावस्था और सत्यबोध। सूफीमत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं का अर्थ इस प्रकार है–**1. शरीयत-**इसमें साधक को कर्मकाण्ड का अनुसरण करना होता है। **2. तरीकत-**इसमें साधक उपासना में लीन हो जाता है। **3. मारिफत-**इसमें साधक आरिफ बन जाता है। **4. हकीकत-**इसमें साधक को परमतत्व की उपलब्धि हो जाती है।

21. **साधना की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीक्त, मारिफत और हकीकत का सम्बन्ध है-**
(a) ज्ञान मार्गी साधना से (b) सूफी साधना से
(c) इस्लाम धर्म साधना से (d) रीतिमुक्त काव्य से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. **भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा की विशेषताओं के संदर्भ निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस गलत विशेषता को चुनिए-**
(a) इस काव्यधारा के सभी कवि मुसलमान थे
(b) इस काव्यधारा के सभी कवियों ने हिन्दू प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रेम-कथा का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया
(c) इस काव्यधारा के कवियों ने अवधी एवं ब्रजभाषा में रचनाएँ कीं
(d) इस काव्यधारा के कवियों ने सिर्फ प्रबन्ध काव्य ही लिखे

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(*)

सूफी सन्तों को इस्लाम प्रचारक कहा जाता है। उन्हें केवल इस्लाम का प्रचारक कहना ठीक नहीं है, जबकि वे लोग अत्यन्त उदार दृष्टिकोण के सन्त थे। लोग उनसे प्रभावित होकर मुसलमान हो जाते थे। इस काव्यधारा के सभी कवि मुसलमान थे। सूफियों ने जिन प्रेम कहानियों की रचना की वे सब प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत आती हैं। इस काव्यधारा के सभी कवियों ने हिन्दू प्रेमी-प्रेमिकाओं के प्रेम-कथा का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसमें प्रेम के वियोग पक्ष को ही अधिक महत्ता प्रदान की गई है। इनकी भाषा अवधी है। किसी-किसी कवि पर भोजपुरी और ब्रजभाषा का प्रभाव भी प्राप्त होता है। अतः दिए गए सभी विकल्प सही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि थे–जायसी, कुतुबन, मंझन, उस्मान, शेख नबी, कासिमशाह, नूर मुहम्मद आदि।
- सूफी काव्यधारा को 'प्रेमाख्यानक काव्यधारा' भी कहा जाता है।
- सूफी धारा के काव्य फारसी की मनसवी शैली में लिखे गये हैं। सूफी मत के अनुसार, ईश्वर एक है, आत्मा (बन्दा) उसी का अंश है। यद्यपि कवियों का ज्ञान स्वाध्याय द्वारा अर्जित न होकर, सुना-सुनाया अधिक है। सूफी कवियों का मुख्य केन्द्र अवध था।

23. **'जायसी' किस धारा के कवि हैं?**
(a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा
(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रसक काव्यधारा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. **सूफी मुक्तक काव्य का प्रथम रचयिता इनमें से कौन-सा कवि था?**
(a) मुल्ला दाऊद (b) अमीर खुसरो
(c) शेख फरीद (d) कुतुबन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

सूफियों ने विशेषतः तो प्रबन्ध काव्यों की ही रचना की है, किन्तु कभी-कभी मुक्तक शैली पर भी कुछ रचनाएँ लिखी गई हैं। मुक्तक शैली में लिखने वालों में अमीर खुसरो का नाम सबसे पहले आता है।

25. **मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायसी' कहा जाता है, क्योंकि वे-**
(a) जायस गोत्र में पैदा हुए थे
(b) जायस मत के मानने वाले थे
(c) जायस नामक स्थान के निवासी थे
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

मलिक मुहम्मद जायसी का वास्तविक नाम मुहम्मद था। 'मलिक' इनका पूर्वजों से चला आया 'उपनाम' था, जिसका फारसी भाषा में अर्थ होता है-अमीर और बड़ा व्यापारी, जो मूलतः अरबी भाषा का शब्द है। मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म 900 हिजरी में (सन् 1492 के लगभग) हुआ माना जाता है, जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है-

या अवतार मोर नवीं सदी।
तीस बरस उपर कवि वदी।।

जायसी के जन्म स्थान के बारे में मतभेद है कि जायस ही उनका जन्म स्थान था या वह कहीं और से आकर जायस में बस गये थे। जायसी ने स्वयं कहा है-

जायस नगर मोर अस्थानू।
नगर को नवां आदि उदयानू।।
तहां देवस दस पहुँचे आएउं।
या बेराग बहुत सुख पाय।।

जायस वालों और स्वयं जायसी के कथनानुसार, वह जायस के ही रहने वाले थे। पं. सूर्यकान्त शास्त्री ने लिखा है कि उनका जन्म जायस शहर के 'कंचाना मुहल्ला' में हुआ था। डॉ. वासुदेव अग्रवाल के कथन व शोधानुसार-जायसी का जन्म जायस नगर में हुआ था और वहीं पर उन्हें वैराग्य हो गया तथा सुख मिला। कुछ विद्वानों ने इनके जन्म स्थान को गाजीपुर भी बताया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ मलिक मुहम्मद जायसी की प्रमुख रचनाएँ हैं—अखरावट, पद्मावत, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरनामा तथा मसला।
➲ 'पद्मावत' जायसी का प्रबन्धकाव्य है जो शब्द, अर्थ और अलंकृत तीनों दृष्टियों से अनूठा है। यह जायसी का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है।
➲ आखिरी कलाम में कयामत का वर्णन है।
➲ हिन्दी में सूफी काव्य परम्परा के श्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित काव्य कवि के यश का आधार है पद्मावत।

26. पद्मावत की विधा है-
(a) प्रबन्ध काव्य (b) खण्ड काव्य
(c) मुक्तक काव्य (d) महाकाव्य

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'कहरनामा' किसकी रचना है?
(a) मुल्ला दाऊद (b) सूरजदास
(c) कुतुबन (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. कयामत का वर्णन जायसी द्वारा रचित काव्य में हुआ है-
(a) अखरावट में (b) आखिरी कलाम में
(c) पद्मावत में (d) किसी में नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध प्रबन्धकाव्य का क्या नाम है?
(a) मृगावती (b) पद्मावत
(c) मधुमालती (d) परमाल रासो

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'पद्मावत' के रचनाकार का नाम है-
(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुल रहमान
(c) मुहम्मद इकबाल (d) मलिक मुहम्मद जायसी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'अखरावट' काव्य कृति के रचयिता कौन हैं?
(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) उसमान

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. जायसी के सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ का नाम है-
(a) आखिरी कलाम (b) अखरावट
(c) मधुमालती (d) पद्मावत

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'पद्मावत' है-
(a) एक त्रासदी (b) मुक्तक काव्य
(c) गेय काव्य (d) आत्म वक्तव्य

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा पद्मावत की रचना 1540 ई. में की गई थी। पद्मावत अवधी भाषा में लिखा गया है। चूंकि पद्मावत एक प्रेमाख्यान प्रबन्ध काव्य है, जिसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन तथा सिंहल की राजकुमारी पद्मावती के विवाह एवं विवाहेत्तर जीवन का चित्रण मार्मिक रूप से हुआ है, इसलिए इसे एक त्रासदी माना जाता है। पद्मावत को एक रूपक काव्य भी माना जाता है। इसे खण्डों में विभक्त किया गया है। इसके नायकों/नायिकाओं एवं प्रतीकों का रूप इस प्रकार है–

नायक/नायिका		**प्रतीक**
पद्मावती	-	बुद्धि/परमात्मा का प्रतीक
चित्तौड़	-	शरीर का प्रतीक
रत्नसेन	-	मन का प्रतीक
सिंहल द्वीप	-	हृदय का प्रतीक
राघव चेतन	-	शैतान का प्रतीक
अलाउद्दीन	-	माया का प्रतीक
नागमती	-	संसार का प्रतीक
हीरामन तोता	-	गुरु का प्रतीक

34. 'पद्मावत' के रचयिता कौन हैं?

(a) मुल्ला दाउद (b) जायसी
(c) कुतुबन (d) मंझन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है?

(a) अवधी (b) ब्रज भाषा
(c) खड़ी बोली (d) फारसी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है?

(a) ब्रज (b) मैथिली
(c) अवधी (d) अपभ्रंश

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. 'पद्मावत' के अनुच्छेदों का नाम है-

(a) सर्ग (b) काण्ड
(c) खण्ड (d) अंक

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पद्मावत' में रत्नसेन किसका प्रतीक है?

(a) मन (b) बुद्धि
(c) अहंकार (d) हृदय

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'पद्मावत' में पद्मिनी प्रतीक है-

(a) साधक का (b) शैतान की
(c) परम सत्ता की (d) प्रकृति की

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. इनमें से कौन-सी कृति जायसी की 'अक्षय कीर्ति' के आधार पर रची गयी है?

(a) पद्मावत (b) अखरावट
(c) आखिरी कलाम (d) उपर्युक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

जायसी ने तीन पुस्तकें लिखी हैं-पद्मावट, अखरावट, आखिरी कलाम। अखरावट में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धान्त सम्बन्धी तत्वों से भरी चौपाइयाँ कही गयी हैं। इस पुस्तक में ईश्वर, सृष्टि, जीव, ईश्वर प्रेम आदि विषयों पर विचार प्रकट किए गए हैं। 'आखिरी कलाम' में कयामत का वर्णन है। अक्षय कीर्ति का आधार है 'पद्मावत, जिसके पढ़ने से यह प्रकट हो जाता है कि जायसी का हृदय कैसा कोमल और 'प्रेम की पीर' से भरा हुआ था।

41. 'पद्मावत' को समासोक्ति किसने कहा है?

(a) गणपतिचन्द्र गुप्त (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) माताप्रसाद गुप्त (d) रामकुमार वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, पद्मावत का प्रेम लौकिक तथा कथा समासोक्ति है और यह भी कहना ठीक ही है कि पद्मावत का पूर्वराग असंगत है–कारण-न वह रूपदर्शन-जन्म है और न ही साहचर्य जन्म। शुक्ल जी भक्ति को हृदय की प्राकृत वृत्ति ही मानते हैं और रहस्यमय ढंग से उपासनोपयोगी निरूपित करते हैं, उनकी दृष्टि में लौकिक कथा ही प्रमुख है और लौकिक राग ही वर्ण्य।

42. ''छार उठाय लीन्ह एक मूँठी। दीन्ह उड़ाई पिरथिमी झूठी।'' यह पंक्ति किस ग्रंथ से ली गई है?

(a) पद्मावत (b) चंदायन
(c) आखिरी कलाम (d) रामचरितमानस

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्ति मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत से ली गई है। जब अलाउद्दीन की सेना कुंभलनेर के दुर्ग पर आक्रमण करती है, तो अलाउद्दीन को केवल निराशा ही हाथ लगती है और वह कह उठता है कि यह संसार झूठा है।

43. निम्नलिखित में से किस कवि ने सिर्फ अवधी भाषा में ही रचना की?

(a) कबीर (b) सूरदास
(c) तुलसी (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है और पूरबी हिन्दी के अन्तर्गत है। इसीलिए जायसी ने अपनी रचनाएँ सिर्फ अवधी भाषा में की हैं। जायसी भक्तिकाल की निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा के कवि हैं।

44. 'चित्रावली' किसकी रचना है?

(a) उस्मान (b) शेख नबी
(c) कासिमशाह (d) नूर मुहम्मद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'चित्रावली' के रचनाकार उस्मान हैं। उन्होंने इसकी रचना 1613 ई. में की थी, ये गाजीपुर के निवासी थे। चित्रावली में चौपाई की सात-सात अर्द्धालियों (चौपाई के दो चरणों को अर्द्धाली कहते हैं) के पश्चात एक-एक दोहे का प्रयोग किया गया है। शेख नबी की रचना ज्ञानद्वीप है।

45. ''हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ,
का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउँ''
यह उक्ति किस रचना और रचनाकार से सम्बन्धित है?

(a) नूर मुहम्मद - इन्द्रावती
(b) उस्मान - चित्रावली
(c) नूर मुहम्मद - अनुराग बाँसुरी
(d) कासिमशाह - हँस जवाहिर

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

नूर मुहम्मद दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के समकालीन थे और 'सबरहद' नामक स्थान के रहने वाले थे, जो जौनपुर-आजमगढ़ की सरहद पर है। इन्होंने 1157 हिजरी (संवत् 1801) में 'इन्द्रावती' नामक एक सुन्दर आख्यान काव्य लिखा, जिसमें कालिंजर के राजकुमार राजकुँवर और आगमपुर की राजकुमारी इन्द्रावती की प्रेम कहानी है। 'इन्द्रावती' की रचना करने पर शायद नूर मुहम्मद को समय-समय पर यह उपालम्भ सुनने को मिलता था कि तुम मुसलमान होकर हिन्दी भाषा की रचना करने क्यों गये? इसी से 'अनुराग बाँसुरी' के आरम्भ में इन्हें यह सफाई देने की जरूरत पड़ी।

हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ।
का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउँ।।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ नूर मुहम्मद फारसी के अच्छे आलिम थे। फारसी में इन्होंने एक दिवान के अतिरिक्त 'शैजतुल हकायक' इत्यादि बहुत-सी पुस्तकें लिखी थीं।

➲ अनुराग बाँसुरी की रचना काल 1178 हिजरी अर्थात् 1821 ई. है।

46. हिन्दी भाषा में रचना करने पर किस सूफी कवि को मुसलमानों का उपालम्भ सुनने को मिला था?

(a) जायसी (b) उस्मान
(c) शेख नबी (d) नूर मुहम्मद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. सूफी काव्य-परम्परा का एक ग्रन्थ है 'इन्द्रावती'। इसके रचनाकार थे—

(a) जायसी (b) कासिम शाह
(c) मंझन (d) नूर मुहम्मद

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ रामभक्ति काव्य

1. स्वामी अग्रदास किस काव्यधारा के कवि हैं?

(a) निर्गुण सन्त-काव्यधारा (b) प्रेमाश्रयी-काव्यधारा
(c) रामभक्ति-काव्यधारा (d) कृष्ण भक्ति-काव्यधारा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

स्वामी अग्रदास रामभक्ति-शाखा के प्रमुख कवि थे। इस शाखा के प्रमुख कवि हैं-रामानन्द, तुलसीदास, नाभादास, प्राणचंद चौहान, केशवदास आदि। स्वामी अग्रदास, कृष्णदास पयहारी के शिष्य थे। इनकी रचनाएँ हैं-हितोपदेश उपखाणां बावनी, ध्यान मंजरी, रामध्यान मंजूरी तथा कुंडलियाँ।

2. गोस्वामी जी के पिता का नाम था—

(a) गंगाराम (b) आत्माराम
(c) देवतादीन (d) इनमें से कोई नहीं है।

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

जनश्रुति के अनुसार, गोस्वामी जी के पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया तथा ज्ञान-भक्ति की शिक्षा-दीक्षा भी दी। गोस्वामी जी का विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था।

3. ''गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।'' यह पंक्ति इनमें से किस कवि की है?

(a) प्राणचन्द्र चौहान (b) नाभादास
(c) नरोत्तमदास (d) रहीम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दू अवतार पुरुषों के प्रति रहीमदास जी बहुत आदर की भावना रखते थे। इसीलिए तुलसीदास और रहीम जी के बीच परस्पर अवतारवाद पर भी चर्चा होती रहती थी। दोनों के बीच पत्र व्यवहार भी होता रहता था। एक समय एक ब्राह्मण अपनी कन्या के विवाह हेतु धन की याचना करने गोस्वामी तुलसीदास जी के पास आया। उन्होंने दोहे की एक पंक्ति लिखकर उसके हाथ रहीम के पास भिजवा दिया।
सुरतिय, नरतिय, नागतिय, यह चाहत सब कोय।
रहीम ने ब्राह्मण को वांछित धन दिया और दोहे की पूर्ति कर उसे वापस तुलसीदास के पास भेज दिया, जो इस प्रकार है- गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।

4. ''गोद लिए हुलसी फिरैं तुलसी सो सुत होय।'' पंक्ति का लेखक कौन-सा भक्त कवि है?

(a) सूरदास (b) रसखान
(c) रहीम (d) नरहरिदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. तुलसी की भक्ति का स्वरूप क्या था?

(a) दास्य (b) सख्य
(c) वात्सल्य (d) मातृ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

तुलसी की भक्ति दास्य भाव से ओत-प्रोत है। यही कारण है कि तुलसी राम के सम्मुख विनम्र रहे हैं।

6. अवधी भाषा के सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य का नाम है-

(a) पद्मावत (b) मधुमालती
(c) मृगावती (d) रामचरितमानस

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'रामचरितमानस' अवधी भाषा का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। यह रामकथा पर आधारित है, जिसकी रचना काशी, चित्रकूट और अयोध्या में हुई। इसकी रचना संवत् 1631 वि. (1574 ई.) में तुलसीदास ने की। इसे पूर्ण होने में लगभग 2 वर्ष 7 माह 26 दिन लगा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रामचरितमानस दोहा-चौपाई शैली में लिखा गया महाकाव्य है, जिसमें सात काण्ड हैं-बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

7. 'रामचरितमानस' किस भाषा में लिखी गयी रचना है?

(a) राजस्थानी (b) भोजपुरी
(c) अवधी (d) ब्रजभाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. राम-कथा पर आधारित तुलसीदास के महाकाव्य का क्या नाम है?

(a) भरत मिलाप (b) रामचरितमानस
(c) रामरक्षा स्तोत्र (d) रामचन्द्रिका

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रामचरितमानस की भाषा है—

(a) अवधी (b) ब्रज
(c) मैथिली (d) खड़ी बोली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना किस संवत् में की थी?

(a) संवत् 1631 (b) संवत् 1637

(c) संवत् 1649 (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. रामचरितमानस में कुल कितने काण्ड हैं?

(a) 15 (b) 10

(c) 7 (d) 8

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. रामचरितमानस में कुल कितने काण्ड हैं?

(a) 10 (b) 7

(c) 12 (d) 15

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'रामचरितमानस' में वीभत्स रस का प्रयोग किन काण्डों में मिलता है?

(a) अरण्यकाण्ड और लंकाकाण्ड

(b) सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड

(c) बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड

(d) उपर्युक्त सभी काण्डों में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'रामचरितमानस' के 'अरण्यकाण्ड' में करुण तथा वीभत्स एवं 'लंकाकाण्ड' में वीर, भयानक तथा वीभत्स रस का प्रयोग मिलता है।

14. इनमें से कौन-सा महाकाव्य अवधी में लिखा गया है?

(a) प्रियप्रवास (b) साकेत

(c) रामचरितमानस (d) रामचन्द्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'रामचरितमानस' अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। प्रियप्रवास तथा साकेत खड़ी बोली के महाकाव्य हैं, जबकि रामचन्द्रिका की रचना ब्रजभाषा में हुई है। इसमें छन्दों एवं अलंकारों का वर्णन है।

15. 'अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद, यह बरदानु न आन।।'
'रामचरितमानस' में यह आकांक्षा निम्नलिखित में से किसकी है?

(a) भरत (b) शबरी

(c) सुग्रीव (d) हनुमान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से भरत कहते हैं कि मुझे न अर्थ की रुचि (इच्छा) है, न धर्म की, न काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ। जन्म-जन्म में मेरा श्रीराम जी के चरणों में प्रेम हो, बस यही वरदान माँगता हूँ, दूसरा कुछ नहीं।

16. अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना करने वाले कवि हैं-

(a) सूरदास (b) तुलसीदास

(c) घनानन्द (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना करने वाले कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। उन्हें 'हिन्दी का जातीय कवि' कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी क्षेत्र की मध्यकाल में प्रचलित दोनों काव्य भाषाओं में ब्रजभाषा और अवधी में समान अधिकार से रचना की। वस्तुतः तुलसी ने गीतावली, कवितावली आदि में मुक्तक में कथा कही।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ तुलसीदास द्वारा रचित बारह ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं-वैराग्य संदीपनी, रामललानहछू, रामाज्ञा प्रश्न, बरवै रामायण, जानकी मंगल, श्रीकृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, गीतावली, दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका, रामचरितमानस।

➲ 'रामाज्ञा प्रश्न' में सात सर्ग हैं, प्रत्येक सर्ग में सात कोष्ठक हैं और प्रत्येक कोष्ठक में सात दोहे हैं। तुलसीदास ने रामाज्ञा प्रश्न की रचना मात्र छह घंटे में की थी।

17. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना तुलसीदास की नहीं हैं?

(a) रामचन्द्रिका (b) कवितावली

(c) गीतावली (d) विनयपत्रिका

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. **इनमें से कौन-सी रचना तुलसीदास की नहीं है?**

(a) रामचरितमानस (b) कवितावली

(c) गीतावली (d) साकेत

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. **भक्तिकाल के किस कवि को जातीय कवि कहा जाता है?**

(a) सूरदास (b) तुलसीदास

(c) नाभादास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. **'वैराग्य संदीपनी' किस कवि की रचना है?**

(a) तुलसीदास (b) सूरदास

(c) कबीरदास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. **'वैराग्य संदीपनी' के रचनाकार हैं-**

(a) सूरदास (b) रहीम

(c) तुलसीदास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. **इनमें से कौन-सा कथन असत्य है?**

(a) ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार की उपासना करते हैं।

(b) कबीर सन्त कवि हैं।

(c) 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' रैदास की पंक्ति है।

(d) सन्त तुलसीदास ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार की उपासना करते हैं। कबीर सन्त कवि हैं। 'प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी' रैदास की पंक्ति है। सन्त तुलसीदास रामाश्रयी शाखा के कवि हैं। अतः स्पष्ट है कि विकल्प (d) असत्य है।

23. **भक्तिकाल की रामाश्रयी शाखा के निम्न में से कौन-से कवि हैं?**

(a) सूरदास (b) मीराबाई

(c) जायसी (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. **निम्नलिखित विकल्पों में से जो रामभक्ति काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छाँटिए-**

(a) विष्णु के अवतार-रूप में राम का वर्णन

(b) लोकमंगल एवं समन्वय भावना का प्रतिपादन

(c) असद् पर सद्वृत्तियों की विजय

(d) कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन रामभक्ति काव्य की विशेषता नहीं है बल्कि, यह कृष्णभक्ति काव्य की विशेषता है। शेष रामभक्ति काव्य की विशेषताएँ हैं।

25. **तुलसीदास कृत 'विनय पत्रिका' रचित है—**

(a) ब्रजभाषा में (b) अवधी में

(c) खड़ी बोली में (d) वैदिक संस्कृत में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय पत्रिका' की रचना ब्रजभाषा में है। इसमें स्वामी की सेवा में करुणतम शब्दों में अपनी दीनता का निवेदन किया गया है। विनय पत्रिका का अर्थ है- 'अर्जी प्रस्तुत की है'। इसमें दरबारी शिष्टाचार का पूर्ण निर्वाह हुआ है।

26. **विनय पत्रिका की भाषा है-**

(a) अवधी (b) ब्रजभाषा

(c) ब्रज मिश्रित अवधी (d) खड़ीबोली

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. **विनय पत्रिका की भाषा है-**

(a) ब्रज (b) अवधी

(c) भोजपुरी (d) मैथिली

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. **'विनय पत्रिका' नामक ग्रन्थ की रचना की है-**

(a) मलूकदास (b) गोस्वामी तुलसीदास

(c) विक्रमादित्य (d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. **'कृष्णगीतावली' ग्रन्थ के रचनाकार हैं-**

(a) सूरदास (b) तुलसीदास

(c) नन्ददास (d) मीराबाई

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कृष्णगीतावली' गोस्वामी तुलसीदास का ब्रजभाषा में रचित अत्यन्त मधुर व रसमय गीतिकाव्य है। इसमें कृष्ण की बाल्यावस्था और 'गोपी-उद्धव' संवाद के प्रसंग कवित्व शैली में हैं। कृष्णगीतावली में कुल 61 पद हैं। इसके कुछ पद 'सूरसागर' में भी पाए जाते हैं।

30. **'कृष्णगीतावली' नामक काव्य-ग्रन्थ के रचयिता हैं-**

(a) तुलसीदास (b) सूरदास

(c) रैदास (d) केशवदास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. **'कृष्णगीतावली' के रचनाकार हैं—**

(a) तुलसी (b) सूरदास

(c) कबीर (d) रामानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. **'कृष्णगीतावली' नामक काव्य कृति के रचनाकार हैं-**

(a) सूरदास (b) मीराबाई

(c) नरोत्तमदास (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. **'कृष्णगीतावली' नामक काव्य कृति के रचयिता हैं-**

(a) कबीर (b) तुलसी

(c) सूर (d) मीराबाई

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. **इनमें से कौन-सा ग्रन्थ तुलसी द्वारा रचित नहीं है?**

(a) गीतावली (b) दोहावली

(c) विनय पत्रिका (d) रसमंजरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

रसमंजरी, नन्ददास की रचना है। यह नायिकाभेद की पुस्तक है, जो भानुदत्त की रसमंजरी के आधार पर रचित है। शेष रचनाएँ तुलसीदास द्वारा रचित हैं।

35. **तुलसीदास जी ने भी 'भ्रमरगीत-परम्परा' के अन्तर्गत 'भ्रमरगीत' की रचना की है, जो संकलित है-**

(a) जानकी मंगल में (b) कृष्णगीतावली में

(c) गीतावली में (d) कवितावली में

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

तुलसीदास जी की समस्त रचनाओं में 'कृष्ण विषयक' केवल एक रचना 'कृष्णगीतावली' ही उपलब्ध होती है। जिस प्रकार इनके द्वारा रचित 'गीतावली' में राम सम्बन्धी पद संग्रहीत हैं, उसी प्रकार 'कृष्णगीतावली' में कृष्ण सम्बन्धी 61 पद संग्रहीत हैं। इन पदों में कृष्ण की बाललीला एवं भ्रमरगीत प्रसंग का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। कृष्णगीतावली के भ्रमरगीत सम्बन्धी पदों में 'भ्रमर' का स्पष्ट उल्लेख न होकर उद्धव के लिए 'मधुकर', 'मधुप' आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन पदों में गोपियों के मर्यादा मण्डित रूप का परिचय मिलता है। सूर की गोपियों की-सी प्रगल्भता के दर्शन तुलसी की गोपियों में नहीं होते। नन्ददास की गोपियों के समान वाक्पटु और तर्कशील भी नहीं हैं। इनमें आद्यान्त भावुकता, दीनता, विनयशीलता, झिझक और शालीनता के दर्शन होते हैं। वे सरल स्वभाव की विश्वासमयी भक्त नारियाँ हैं। इनमें प्रेम-लक्षणा भक्ति के प्रति दृढ़ आस्था एवं विश्वास है। उनका एकमात्र लक्ष्य अपने प्रियतम का साक्षात्कार है।

36. **भक्तिकाल के किस कवि ने संस्कृत को छोड़कर भी संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा का निर्वहन किया है?**

(a) जायसी (b) सूरदास

(c) तुलसीदास (d) नन्ददास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तुलसीदास ने अवधी में लेखन के साथ संस्कृत की परम्परा को अक्षुण्ण रखा। तुलसीदास ने अपने काव्य में छन्द का समुचित निर्वाह किया है।

37. 'गीतावली' है-

(a) मुक्तक काव्य (b) अतुकांत काव्य
(c) प्रबन्ध काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'गीतावली' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित मुक्तक काव्य है। तुलसी जिस प्रकार ब्रजभाषा और अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं, उसी प्रकार प्रबन्ध और मुक्तक दोनों की रचना में भी कुशल हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने गीतावली और कवितावली आदि में मुक्तक कथा कही है।

38. 'रामचरितमानस' का ज्ञानदीपक प्रसंग किस काण्ड में वर्णित है?

(a) उत्तरकाण्ड (b) अयोध्याकाण्ड
(c) बालकाण्ड (d) अरण्यकाण्ड

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने उत्तरकाण्ड में श्री राम-वशिष्ठ संवाद, नारद जी का अयोध्या आकर रामचन्द्र जी की स्तुति करना, शिव-पार्वती संवाद, गरुड़ मोह तथा गरुड़ जी का काकभुशुण्डि जी से रामकथा एवं राम-महिमा सुनना, काकभुशुण्डि जी के पूर्वजन्म की कथा, ज्ञान-भक्ति निरूपण, ज्ञानदीपक और भक्ति की महान महिमा, गरुड़ के सात प्रश्न और काकभुशुण्डि जी के उत्तर आदि विषयों का विस्तृत वर्णन किया है।

39. 'रामचरितमानस' से किस संवाद का सम्बन्ध नहीं है?

(a) शिव-पार्वती संवाद (b) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद
(c) राम-सीता संवाद (d) काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

रामचरितमानस का सम्बन्ध विकल्प में दिये गये सभी संवादों से है।

40. नीचे दो वाक्य दिये गये हैं, इनमें एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) की संज्ञा दी गई है

कथन (A) : राम काव्य का प्रतिपाद्य विषय धार्मिक और भक्ति प्रधान है, इसीलिए कवियों ने भगवान राम की प्रतिष्ठा में संस्कृत शब्दावली को अधिक स्वीकार किया है।

कारण (R) : जहाँ धर्म और दर्शन का प्रसंग हो तथा उच्च काव्य सौष्ठव दिखाना हो, वहाँ तत्सम की प्रधानता स्वाभाविक है।

उपर्युक्त वक्तव्यों (A) और (R) सन्दर्भ में इनमें से कौन-सा सही है?

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।
(b) (A) गलत और (R) सही है तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

राम काव्य का प्रतिपाद्य विषय धार्मिक और भक्ति प्रधान है, इसलिए कवियों ने भगवान राम की प्रतिष्ठा में संस्कृत शब्दावली को अधिक स्वीकार किया है, यह कथन सही नहीं है। जहाँ धर्म और दर्शन का प्रसंग हो तथा उच्च काव्य सौष्ठव दिखाना हो, वहाँ तत्सम की प्रधानता स्वाभाविक है। अतः (A) गलत है और (R) सही है तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

❑ कृष्णभक्ति काव्य

1. सूरदास के विषय में कौन-सा कथन गलत है?

(a) सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।
(b) सूरदास, श्रीनाथ मंदिर, वृन्दावन में कीर्तन करते थे।
(c) सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
(d) ''प्रभु हौं सब पतितन को राजा।
परनिंदा मुख पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा।।''
पंक्तियाँ सूरदास द्वारा लिखित हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

''भाव प्रकाश'' (हरिराय कृत), ''निजवार्ता'' (गोकुलनाथ कृत) के आधार पर सूरदास अंधे माने गए हैं, किंतु राधा-कृष्ण के रूप सौंदर्य का सजीव चित्रण, नाना रंगों का वर्णन, सूक्ष्म पर्यवेक्षणशीलता आदि गुणों के कारण अधिकतर विद्वान सूरदास को जन्मांध स्वीकार नहीं करते। श्यामसुंदर दास ने लिखा है, ''सूर वास्तव में जन्मांध नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार तथा रंग-रूपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है, वैसा कोई जन्मांध नहीं कर सकता।'' हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, ''सूरसागर के कुछ पदों में यह ध्वनि अवश्य निकलती है कि सूरदास अपने को जन्म का अन्धा और कर्म का अभागी कहते हैं, पर सब समय इनके अक्षरार्थ को ही प्रधान नहीं मानना चाहिए। ''अन्य कथन सही हैं।

2. सूरदास किस काल के कवि थे?

(a) रीतिकाल (b) भक्तिकाल

(c) आधुनिक काल (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

भक्तिकालीन के कृष्णभक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख कवि हैं-सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, मीराबाई, रसखान, ध्रुवदास तथा चैतन्य महाप्रभु आदि।

3. सूरदास कौन-सी धारा के प्रतिनिधि कवि हैं?

(a) कृष्ण काव्यधारा (b) राम काव्यधारा

(c) सन्त काव्यधारा (d) सूफी काव्यधारा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. सूरदास ने किस कृति को नहीं लिखा?

(a) सूरसारावली (b) दोहावली

(c) साहित्य लहरी (d) सूरसागर

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सूरदास ने 'दोहावली' नहीं लिखा, बल्कि यह रचना तुलसीदास की है। डॉ. दीनदयाल गुप्त ने सूरदास द्वारा रचित पच्चीस पुस्तकों की सूचना दी है, जिनमें प्रमुख हैं-सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूरपचीसी, सूररामायण, सूरसाठी और राधा रसकेलि।

5. इनमें से सूरदास की कृति कौन-सी है?

(a) कवितावली (b) साहित्य लहरी

(c) गीतावली (d) गंगालहरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'सूरसागर' किस भाषा की कृति है?

(a) खड़ी बोली (b) ब्रजभाषा

(c) अवधी (d) पंजाबी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रमाणों के अभाव में सूरसागर को ब्रजभाषा की पहली रचना मानते हैं।

7. इनमें से सूर की रचना कौन-सी नहीं है?

(a) सूरसागर (b) सूरसारावली

(c) साहित्य लहरी (d) रासपंचाध्यायी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

रासपंचाध्यायी की रचना नन्ददास ने की है। शेष रचनाएँ सूरदास की हैं।

8. सूरदास किस रस का कोना-कोना झाँक आये हैं?

(a) शान्त (b) करुण

(c) मैत्री (d) वात्सल्य

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

वात्सल्य भाव अत्यन्त कोमल और शाश्वत भाव है। जब तक सृष्टि रहेगी, इस भाव की वर्तमानता भी रहेगी। सूरदास के लिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा था कि वे वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँक आये हैं।

9. 'सैय्यद इब्राहीम' का कविनाम है-

(a) जान कवि (b) आलम

(c) रसखान (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

रसखान का वास्तविक नाम सैय्यद इब्राहीम था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं-सुजान रसखान और प्रेमवाटिका इत्यादि। रसखान का वृत्तांत दो सौ वैष्णवन की वार्ता में मिलता है और उससे ज्ञात होता है कि लौकिक प्रेम से कृष्ण-प्रेम की ओर उन्मुख हुए। इनकी प्रसिद्ध कृति प्रेमवाटिका का रचनाकाल 1614 ई. है। ये गोसाई विट्ठलनाथ के शिष्य थे। रसखान को सवैया छन्द सिद्ध था। जितने सरस, सहज, प्रवाहमय सवैये रसखान के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य कवि के हों। रसखान ने सूफियों का हृदय लेकर कृष्ण की लीला पर काव्य रचे हैं।

10. 'प्रेमवाटिका' नामक ग्रन्थ रचित है-

(a) रसखान द्वारा (b) रहीम द्वारा

(c) नन्ददास द्वारा (d) मीराबाई द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. भक्तिकाल के किस कवि को 'जड़िया' विशेषण से विभूषित किया जाता है?

(a) नन्ददास (b) परमानन्ददास

(c) सूरदास (d) चतुर्भुजदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

नन्ददास 16वीं शती के अन्तिम चरण के कवि थे। ये भक्तिकालीन कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि थे। ये हिन्दी के अष्टछाप के प्रमुख कवियों में सूरदास के बाद सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए। इनके काव्य के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है-'और कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया'। इससे प्रकट होता है कि इनके काव्य का कला-पक्ष महत्वपूर्ण है। इनकी रचना बड़ी सरस और मधुर है। इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'रासपंचाध्यायी' है, जो रोला छन्द में लिखी गयी है। नन्ददास की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- भागवत दशमस्कन्ध, रुक्मिणीमंगल, सिद्धान्त पंचाध्यायी, रूपमंजरी, मानमंजरी, विरहमंजरी, दानलीला, मानलीला, सुदामाचरित, भँवरगीत आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अनेकार्थमंजरी' एक प्रकार का पर्याय-कोश ग्रन्थ है।
- 'मानमंजरी' में भी 'अमरकोश' के आधार पर शब्दों के पर्यायवाची ही लिखे गये हैं।
- रूपमंजरी नन्ददास का लघु आख्यान काव्य है।
- भँवरगीत का मूल उद्देश्य निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना का खण्डन करते हुए सगुण साकार कृष्ण की भक्ति की स्थापना करना है।
- सिद्धान्त पंचाध्यायी कृष्ण की रासलीला से सम्बन्धित रचना है।
- नन्ददास का भँवरगीत सूर के भ्रमरगीत के समरूप ही माना जाता है, परन्तु दोनों में बड़ा अन्तर यह है कि जहाँ भ्रमरगीत में उद्धव, नन्द, यशोदा और साथ ही गोपियों के कृष्ण विरहजनित संताप को शान्त करने जाते हैं, वहीं नन्ददास के भँवरगीत में उद्धव के आने का प्रयोजन केवल गोपियों को समझाना है।

12. 'नन्ददास' किस काव्यधारा से सम्बन्धित हैं?

(a) सन्त काव्यधारा (b) सूफी काव्यधारा
(c) कृष्ण काव्यधारा (d) रामभक्ति काव्यधारा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. सुदामाचरित के लेखक हैं-

(a) सूरदास (b) नन्ददास
(c) रत्नाकर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. भ्रमरगीत परम्परा में 'भँवरगीत' की रचना की है-

(a) नन्ददास (b) सूरदास
(c) रत्नाकर (d) ब्रजवासीदास

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'रासपंचाध्यायी' के लेखक हैं-

(a) नन्ददास (b) सूरदास
(c) रहीम (d) कबीर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a&c)

नन्ददास ने रासपंचाध्यायी की रचना की है। इसी नाम से रहीम ने भी एक काव्य की रचना की है।

16. 'मीराबाई का मलार' किसकी कृति है?

(a) मीराबाई (b) नन्ददास
(c) छीतस्वामी (d) गोविन्दस्वामी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'मीराबाई का मलार' मीराबाई की कृति है। भक्तिकालीन साहित्य में मीराबाई ने कुल चार ग्रन्थों की रचना की थी—नरसी का मायरा,गीत गोविन्द टीका,रागगोविन्द,राग सोरठा आदि। इसके अतिरिक्त उनके गीतों का संकलन, 'मीराबाई की पदावली' नामक ग्रन्थ में किया गया है, जिसमें प्रमुख खण्ड हैं-नरसी जी का मायरा,मीराबाई मलार या मलार राग, गर्बा गीता य मीरा की गरबी, रुक्मिणीमंगल, नरसिंह मेहता की हुंडी, चरित आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मीराबाई रविदास (रैदास) की शिष्या थीं।
- मीराबाई ने चित्तौड़गढ़ में 'रविदास छत्तरी' का निर्माण कराया।

17. मीराबाई के गुरु कौन थे?

(a) सूरदास (b) रैदास
(c) मलूकदास (d) कबीरदास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. इनमें से पुष्टिमार्गी कवि कौन हैं?

(a) सूर (b) कबीर
(c) जायसी (d) तुलसी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

वल्लभाचार्य ने ब्रजमण्डल में जिस कृष्णभक्ति को प्रतिष्ठित किया, उसका दार्शनिक आधार शुद्धाद्वैत दर्शन है। साधना और व्यवहार-क्षेत्र में शुद्धाद्वैत दर्शन के साथ जिस भक्ति को स्थान दिया गया, उसका आधार उन्होंने 'पुष्टिमार्ग' को बनाया। भगवान के अनुग्रह या कृपा का नाम ही पोषण है, यही पुष्टि है और इसी पुष्टि पर पुष्टिमार्ग की भक्ति पद्धति अवलम्बित है। वल्लभाचार्य के अनुसार, पुष्टिमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। उन्होंने भक्तों के चार भेद किये हैं—प्रवाहीपुष्ट भक्त, मर्यादापुष्टि भक्त, पुष्टिपुष्ट भक्त तथा शुद्धपुष्ट भक्त। जो भगवान के अनुग्रह पर निर्भर होकर भी मर्यादानुसार कर्म करते हैं, वे 'मर्यादापुष्ट' तथा जो केवल अनुग्रह (कृपा) का अवलम्बन लेते हैं, वे 'शुद्धपुष्ट भक्त हैं। वल्लभाचार्य ने जिस पुष्टिमार्गीय भक्ति-सम्प्रदाय की स्थापना की थी, उसका जिन हिन्दी भक्त कवियों द्वारा पल्लवन किया गया, उन्हें 'अष्टछाप' के कवि कहा जाता है। इन 'अष्टछाप' कवियों में सूरदास भी शामिल थे। अत: वे पुष्टिमार्गी कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम 'अणुभाष्य' है। इनके अन्य ग्रन्थ भागवत की 'सुबोधिनी' टीका, भागवत तत्वदीप निबन्ध, पूर्व मीमांसा भाष्य, गयत्री भाष्य, श्रृंगाररसमण्डन, विद्वन्मण्डन, पत्रावलंबन, पुरुषोत्तम सहस्रनाम आदि हैं।
- भागवत पुराण के अनुसार, भगवान का अनुग्रह ही पोषण या पुष्टि है। आचार्य वल्लभ ने इसी भाव के आधार पर अपना पुष्टिमार्ग चलाया। इसका मूल सूत्र उपनिषदों में पाया जाता है।
- कठोपनिषद में कहा गया है कि परमात्मा जिस पर अनुग्रह करता है, उसी को अपना साक्षात्कार कराता है।

19. श्रीमद् वल्लभाचार्य ने जिस कृष्णभक्ति को प्रतिष्ठित किया उसका दार्शनिक आधार है-

(a) अद्वैत दर्शन (b) द्वैत दर्शन
(c) शुद्धाद्वैत दर्शन (d) द्वैताद्वैत दर्शन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'तत्वदीप निबन्ध' किसकी रचना है?

(a) वल्लभाचार्य (b) निम्बाकाचार्य
(c) नाभादास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. निम्नलिखित में से किसने पुष्टिमार्ग की स्थापना की?

(a) चैतन्य महाप्रभु (b) वल्लभाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) सूरदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम है-

(a) सिद्धान्त संग्रह (b) अध्यात्म रामायण
(c) महाभाष्य (d) अणुभाष्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कृष्ण काव्यधारा के प्रवर्तक हैं-

(a) सूरदास (b) स्वामी वल्लभाचार्य
(c) नाभादास (d) चैतन्य महाप्रभु

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. इनमें से कृष्णभक्त कवि कौन-सा नहीं है?

(a) सूरदास (b) रसखान
(c) कृष्णादास (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

सूरदास, रसखान तथा कृष्णदास कृष्णभक्त कवि हैं, जबकि तुलसीदास रामभक्त कवि हैं।

25. कई चिन्तन एवं कलाधाराओं का योगदान मिलता है-

(a) कृष्णभक्ति धारा में (b) प्रेममार्गी धारा में
(c) भारतेन्दु युगीन धारा में (d) रीतिकाव्य धारा में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

कई चिन्तन और कलाधाराओं का योगदान कृष्णभक्ति धारा में मिलता है। ये हैं- 1. वल्लभ सम्प्रदाय-वल्लभाचार्य, 2. निम्बार्क सम्प्रदाय-निम्बार्काचार्य 3. राधावल्लभ सम्प्रदाय-हितहरिवंश, 4. हरिदासी सम्प्रदाय-स्वामी हरिदास (सखी सम्प्रदाय) एवं 5. गौड़ीय सम्प्रदाय-चैतन्यमहाप्रभु (चैतन्य सम्प्रदाय)।

26. **'रुद्र सम्प्रदाय' की स्थापना किसने की?**

(a) रुद्र स्वामी (b) श्रीस्वामी
(c) विष्णुस्वामी (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रुद्र सम्प्रदाय की स्थापना विष्णुस्वामी ने किया था, जबकि वास्तव में रुद्र सम्प्रदाय वल्लभाचार्य के प्रवर्तित सम्प्रदाय के रूप में जीवित है। इसलिए रुद्र सम्प्रदाय का संस्थापक वल्लभाचार्य को माना जाता है।

27. **'राधावल्लभ सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किसने किया?**

(a) वल्लभाचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) हितहरिवंश (d) सूरदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन हितहरिवंश ने किया था। इनको 'कृष्ण की वंशी का अवतार' कहा जाता है। ये राधा को स्वतन्त्र अधिष्ठात्री देवी मानते हैं, जबकि वल्लभाचार्य रुद्र सम्प्रदाय, मध्वाचार्य द्वैतवाद ब्रह्म सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सहचरी सुख, रसिक दास, हिय अनूप जी और हित वृन्दावन दास राधावल्लभ सम्प्रदाय के कवि थे।
➲ सहचरी सुख ने रंग माल, रसिक दास ने चूड़ामणि हिय, अनूप जी ने माधुर्य विलास तथा हित वृन्दावन दास ने फुटकल कविताओं की रचना किया है।

28. **कृष्ण के साथ राधा की महानता ...... सम्प्रदाय की विशेषता है।**

(a) श्री (b) रुद्र
(c) ब्रह्म (d) सनकादि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

निम्बार्क- सम्प्रदाय कृष्ण भक्ति से सम्बन्ध रखने वाला ब्रजमंडल का प्रमुख वैष्णव-सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के आदि उपदेष्टा श्री हंस भगवान हैं। उनसे सनत् सनकादि को उपदेश मिला। इसलिए इस सम्प्रदाय को सनकादि सम्प्रदाय भी कहते हैं। नारद मुनि ने इस उपदेश को ग्रहण कर इसे आचार्य निम्बार्क को दिया। इस सम्प्रदाय में ईश्वर को सगुण अवतारी श्रीकृष्ण के रूप में स्वीकार किया जाता है। कृष्ण भक्ति में राधा-कृष्ण का युगल भाव स्वीकृत है, वाम भाग में वृषभानुजा राधा के साथ विराजमान श्रीकृष्ण ही उपास्य हैं, कृष्ण लीलावतारी हैं, अतः श्री तथा लक्ष्मी दोनों रूपों में वे कृष्ण के साथ प्रकट होती हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय में राधा का स्वकीया रूप स्वीकार किया गया है और भक्ति के पाँच रूपों में उज्ज्वल भक्ति का दाम्पत्य भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ निम्बार्क को भगवान कृष्ण के 'सुदर्शन चक्र का अवतार' माना जाता है।
➲ कुछ विद्वानों का मत है कि अत्यन्त सुन्दर होने के कारण इनको शैशवकाल में 'सुदर्शन' कहते थे।
➲ निम्बार्काचार्य ने अपने सिद्धान्तों की स्थापना के लिए पाँच ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनमें 'वेदान्त-पारिजात-सौरभ' ब्रह्मसूत्र पद स्वल्पकाय वृत्ति है, 'दशश्लोकी' भक्ति सिद्धान्त प्रतिपादक दस श्लोकों की सुप्रसिद्ध रचना है तथा 'श्रीकृष्णस्तवराज', मंत्ररहस्यषोडशी' और 'प्रपन्न-कल्पवल्ली' इनकी अन्य कृतियाँ हैं। निम्बार्क का दार्शनिक सिद्धान्त 'द्वैताद्वैतवाद है।

29. **निम्नलिखित में से कौन श्रीकृष्णभक्ति का सम्प्रदाय नहीं है?**

(a) श्रीवल्लभ सम्प्रदाय (b) हरिदासी सम्प्रदाय
(c) तत्सुखी सम्प्रदाय (d) गौड़ी सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

महात्मा जीवाराम (1800-1857) ने 'सखी-भाव' की भक्ति को और पल्लवित किया तथा 'तत्सुखी शाखा' की स्थापना की। इस सम्प्रदाय के भक्त स्वयं स्त्री-वेश धारण कर राम की उपासना करते थे और सीता को सपत्नी मानते थे। शेष सम्प्रदाय कृष्णभक्ति सम्प्रदाय के हैं।

30. **'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से है?**

(a) सखी सम्प्रदाय (b) रामानुज सम्प्रदाय
(c) श्री सम्प्रदाय (d) वल्लभ सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का सम्बन्ध वल्लभ सम्प्रदाय से है, जबकि सखी सम्प्रदाय राधाकृष्ण की युगल उपासना, रामानुज सम्प्रदाय विशिष्टाद्वैत के अन्तर्गत वैष्णव धर्म और श्री सम्प्रदाय महालक्ष्मी की उपासना से सम्बन्धित है।

31. **'अष्टयाम' नामक पुस्तक में किसकी दिनचर्या का वर्णन है?**

(a) कृष्ण (b) राम
(c) विष्णु (d) शंकर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

'अष्टयाम' नामक पुस्तक में कृष्ण की दिनचर्या का वर्णन है। मध्यकालीन गौड़ीय वैष्णवों और हितवंशी कृष्णोपासकों ने राधा-कृष्ण के अष्टयाम को ही अपना वर्ण्य विषय बनाया। राधा-कृष्ण की क्रीड़ा की अखण्ड स्मरण भावन रागानुराग भक्ति का मूल तत्व है। 'अष्टयाम' की परम्परा पद्म पुराण के पाताल खण्ड में भी दिखायी पड़ती है। 'अष्टयाम' की रचना कई लोगों द्वारा की गई है। जीवाराम ने अपनी अष्टयाम रचना में 'सीताराम' की अष्टयाम लीला का वर्णन किया है। कुछ ने अपनी रचना में 'राम' की लीला का वर्णन किया है। यही कारण है कि उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु तृतीय संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

32. छीतस्वामी किस धारा के कवि हैं?

(a) रामभक्ति धारा (b) अष्टछाप धारा
(c) प्रेममार्गी धारा (d) निर्गुणमार्गी धारा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

छीतस्वामी, अष्टछाप धारा के कवि थे। छीतस्वामी मथुरा के निवासी थे। इनका प्रारम्भिक जीवन अत्यधिक उच्छृंखल और उद्दण्डतापूर्ण था। ये कविता और संगीत दोनों में निपुण थे। उनके द्वारा रचित पदों की संख्या 64 बतायी जाती है। 'छीतस्वामी' शीर्षक से उनके पदों का संकलन प्रकाशित है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई. में गोस्वामी विट्ठलनाथ ने की।
- इन आठ भक्त कवियों में वल्लभाचार्य के चार शिष्य थे-सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास और कृष्णदास।
- गोस्वामी विट्ठलनाथ के चार शिष्य थे—गोविन्द स्वामी, नन्ददास, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास।
- ये आठों भक्त श्रीनाथ जी की नित्य-लीला में अन्तरंग सखाओं के रूप में सदैव उनके साथ-साथ रहते थे, इसी मान्यता के आधार पर इन्हें 'अष्टसखा' कहते हैं।
- वल्लभ सम्प्रदाय में सेवाविधि का बहुत ही सांगोपांग वर्णन है और अष्टयाम की सेवा—मंगलाचरण, शृंगार, ग्वाल, राजयोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती और शयन को इस सम्प्रदाय में बड़े समारोह से स्वीकार किया गया है।

33. अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में किसने की थी?

(a) गोकुलनाथ (b) विट्ठलनाथ
(c) वल्लभाचार्य (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'अष्टछाप' की स्थापना किसने की?

(a) वल्लभाचार्य (b) विट्ठलनाथ
(c) सूरदास (d) नाभादास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. अष्टछाप के संस्थापक हैं—

(a) विट्ठलनाथ (b) वल्लभाचार्य
(c) सूरदास (d) गोविन्द स्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'अष्टछाप' की स्थापना का श्रेय किस आचार्य को है?

(a) वल्लभाचार्य
(b) विट्ठलनाथ
(c) हितहरिवंश
(d) कुम्भननाथ

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. अष्टछाप के संस्थापक थे-

(a) रामानन्द (b) वल्लभाचार्य
(c) रामानुज (d) विट्ठलनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. अष्टछाप में कौन सम्मिलित नहीं है?

(a) कुम्भनदास (b) छीतस्वामी
(c) केशवदास (d) नन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'सूरदास' किसके शिष्य थे?

(a) वल्लभाचार्य (b) गोकुलनाथ
(c) विट्ठलनाथ (d) नाभादास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. नीचे दिए गए नामों में से कौन-से कवि वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं हैं?

(a) चतुर्भुजदास (b) सूरदास
(c) कुम्भनदास (d) परमानन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. निम्न में से कौन विट्ठलनाथ का शिष्य था?

(a) सूरदास (b) चतुर्भुजदास
(c) परमानन्ददास (d) कृष्णदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. इनमें से एक कवि 'अष्टछाप' में नहीं है—

(a) कृष्णदास (b) चतुर्भुजदास
(c) छीतस्वामी (d) गोविन्ददास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि 'नन्ददास' किसके शिष्य थे?

(a) वल्लभाचार्य (b) विट्ठलनाथ
(c) रामानन्द (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि 'नन्ददास' किसके शिष्य थे?

(a) वल्लभाचार्य (b) रामानन्द
(c) विट्ठलनाथ (d) विनोवाचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं हैं-

(a) कुम्भनदास (b) चतुर्भुजदास
(c) सूरदास (d) परमानन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. निम्नलिखित में से अष्टछाप के कवि नहीं हैं-

(a) सूरदास (b) मलूकदास
(c) नन्ददास (d) छीतस्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

मलूकदास अष्टछाप के कवि नहीं, बल्कि भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि थे। इनका जन्म कौशाम्बी के कड़ा ग्राम में हुआ। इन्होंने ज्ञान बोध, रतनखान, भक्ति विवेक आदि अनेक ग्रन्थ रचे। इनका काव्य ध्रुवचरित भी प्रसिद्ध है। इनकी रचना दोहे-चौपाइयों में तथा भाषा अवधी है।

47. निम्नलिखित में से 'अष्टछाप' के अन्तर्गत न पड़ने वाले कवि का नाम है-

(a) कुम्भनदास (b) सुन्दरदास
(c) नन्ददास (d) परमानन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सुन्दरदास अष्टछाप के कवि नहीं हैं। सूर, तुलसी व कबीर की तरह ही सन्त कवि सुन्दरदास भक्तिकाल के प्रमुख पथ प्रदर्शक के रूप में उभरे। सन्त सुन्दरदास ने 48 आध्यात्मिक अनुभूति ग्रन्थों की रचना की। सन्त सुन्दरदास ने काशी जाकर संस्कृत, हिन्दी, पुराण व वेदान्त का गहन अध्ययन कर ज्ञान अर्जित किया। भक्तिकाल के सन्त कवियों के मुकाबले सन्त सुन्दरदास सर्वाधिक ज्ञानी, शिक्षित व भाषा साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे। सन्त सुन्दरदास द्वारा रचित ग्रन्थों में 'ज्ञान समुद्र' एवं 'सुन्दर विलास' लोकप्रिय ग्रन्थ हैं। 'ज्ञान समुद्र' सुन्दरदास का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि 'अष्टछाप' का कवि नहीं था?

(a) नन्ददास (b) परमानन्ददास
(c) छीतस्वामी (d) हरिव्यास देव

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

हरिव्यास देव 'अष्टछाप' के कवि नहीं, बल्कि निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय के कवि हैं। नाभादास द्वारा दी गई सूचनानुसार श्रीभट्ट के सुयोग्य शिष्य हरिव्यास हैं। हरिव्यास देव का निम्बाई सम्प्रदाय में वही स्थान है, जो वल्लभीय सम्प्रदाय में सूरदास का है। हरिव्यास देव ने निम्बार्क सम्प्रदाय का संगठन नए सिरे से किया। अपने सम्प्रदाय में उन्होंने 'रसिक-सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया। इस शाखा को 'हरिव्यासी' भी कहा जाता है। वे मधुर भाव के उपासक थे। कविता में वे अपना नाम 'हरिप्रिया' रखते थे। हरिव्यास देव ने कई शाक्तों को वैष्णव बनाया और उनमें भक्ति का संचार किया।

49. **निम्नांकित में कौन अष्टछाप का कवि नहीं है?**

(a) कुम्भनदास (b) स्वामी हरिदास

(c) परमानन्ददास (d) छीतस्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

स्वामी हरिदास अष्टछाप कवि नहीं है। इन्हीं के नाम से हरिदासी सम्प्रदाय का नामकरण हुआ है। सखी भाव प्रधान सम्प्रदाय होने के कारण इस सम्प्रदाय को 'सखी सम्प्रदाय' भी कहा जाता है। प्रभुदयाल मीतल के अनुसार, इनका समय सोलहवीं-सत्रहवीं शती है। स्वामी हरिदास संगीत कला के मर्मज्ञ थे, किन्तु ये एक मात्र भगवान को रिझाने के लिए गाते थे और अकबरी दरबार के विख्यात गायक तानसेन इन्हीं के शिष्य थे। रससिद्ध भक्त कवि हरिदास जी ने ध्रुपद शैली में शृंगार-भक्ति के गेय पदों की रचना की है। इनमें से 108 पद केलिमाल के नाम से प्रसिद्ध हैं।

50. **'हरिदास सम्प्रदाय' को अन्य नाम से भी पुकारा जाता है। यह नाम है—**

(a) अष्टछाप सम्प्रदाय (b) राधावल्लभ सम्प्रदाय

(c) सखी सम्प्रदाय (d) चिंत्याचिंत्य सम्प्रदाय

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. **'जुगलमान चरित्र' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं-**

(a) नन्ददास (b) कृष्णदास

(c) चतुर्भुजदास (d) छीतस्वामी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

सूरदास और नन्ददास के पश्चात कृष्णदास अष्टछाप कवियों में तीसरे स्थान पर आते हैं। वल्लभाचार्य ने इन्हें पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया। इनके द्वारा रचित तीन रचनाएँ हैं-भ्रमरगीत, प्रेमतत्व तथा जुगलमान चरित्र। जुगलमान चरित्र में राधा-कृष्ण का प्रेम वर्णित है और शृंगारिकता के कारण यह अधिक प्रसिद्ध हुआ।

52. **भ्रमरगीत प्रसंग का मूल स्रोत है-**

(a) श्रीमद्भागवत का पंचम स्कन्ध

(b) श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध

(c) श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध

(d) श्रीमद्भागवत का नवम स्कन्ध

P.G.T. परीक्षा, 2009, 2004

उत्तर—(b)

'भ्रमरगीत प्रसंग' सूरसागर का एक भाग है, जिसका मूल स्रोत 'श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का 46 व 47 वां अध्याय है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सूरदास का जन्म 1478 ई. तथा मृत्यु 1583 ई. में हुई।
- ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
- सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है।
- सूर के भाव चित्रण में वात्सल्य को श्रेष्ठ माना गया है।
- सूर की भक्ति पद्धति पुष्टिमार्गीय भक्ति है।
- भागवत में गोपियाँ उद्धव से मिलने पर कृष्ण की स्वार्थ मैत्री पर थोड़ा आक्षेप करती हैं और शीघ्र ही भ्रमर का प्रवेश हो जाता है।
- भँवरगीत में कुशल प्रश्न के पश्चात निर्गुण-सगुण पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है, जो 22 छन्द तक चलता है।

53. **'खेट कौतुकम' किसकी रचना है?**

(a) रहीम

(b) रसखान

(c) कवि गंग

(d) दादूदयाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'खेट कौतुकम' के रचनाकार 'रहीम' हैं।' इनकी अन्य कृतियाँ हैं-रहीम दोहावली, (रहीम सतसई) बरवै नायिका भेद, नगर-शोभा, मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी, शृंगार सोरठ।

54. **'बरवै नायिका भेद' के रचनाकार हैं—**

(a) केशवदास (b) भिखारीदास

(c) रहीम (d) बिहारी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **रहीम कृत 'मदनाष्टक' की भाषा है-**

(a) खड़ी बोली (b) अवधी

(c) ब्रज (d) राजस्थानी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रहीम कृत 'मदनाष्टक' की भाषा खड़ी बोली है। रहीम का ब्रजभाषा और अवधी पर समान अधिकार था। रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनकी गणना कृष्ण भक्त कवियों में की जा सकती है।

रीतिकाल

1. निम्नलिखित विकल्पों में से रीतिकालीन कवि कौन से हैं?

(a) नन्ददास, सूरदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी

(b) बिहारी, मतिराम, घनानन्द, भूषण

(c) मैथिलीशरण, दिनकर, श्रीधर पाठक, सोहनलाल द्विवेदी

(d) जायसी, मंझन, विद्यापति, चन्दबरदाई

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

बिहारी, मतिराम, घनानन्द, भूषण, रसनिधि, बोधा, आलम, ठाकुर इत्यादि रीतिकालीन कवि हैं। अन्य विकल्प सही नहीं हैं।

2. निम्नांकित कवियों का जन्म-काल के अनुसार क्रम निर्धारण कीजिए—

(a) घनानन्द, ठाकुर, रसलीन, रहीम

(b) रहीम, घनानन्द, रसलीन, ठाकुर

(c) रहीम, रसलीन, ठाकुर, घनानन्द

(d) रहीम, ठाकुर, रसलीन, घनानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम 'खानखाना' था। इनका जन्म 17 दिसम्बर, 1556 को लाहौर में हुआ। रहीम के पिता का नाम बैरम खान तथा माता का नाम सुल्ताना था। रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि घनानन्द का जन्म 1673 ई. में बुलन्दशहर के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। वे दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुंशी थे। 1760 ई. में इनकी हत्या कर दी गई। रसलीन का पूरा नाम सैयद गुलाब नबी था। ये 'रसलीन' उपनाम से कविता लिखते थे। इनके पिता का नाम सैयद मुहम्मद बाकर था। रसलीन का जन्म 1689 ई. में माना जाता है। इनकी मृत्यु 1750 ई. में हुई थी। ठाकुर का पूरा नाम लाला ठाकुर दास था। इनका जन्म 1766 ई. में ओरछा में हुआ था। इनके पिता का नाम गुलाबराय था। अतः जन्म-काल के अनुसार, क्रम निर्धारण का विकल्प (b) सही उत्तर है।

3. रीतिकाल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति -

(a) नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन

(b) अलंकार विवेचन

(c) छन्द विवेचन

(d) शब्द शक्ति और काव्य गुण-दोष विवेचन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

रीतिकाल में रस विवेचन के संदर्भ में नायक-नायिका भेद का विवेचन मतिराम, तोष, रसलीन प्रभृति (इत्यादि) अनेक कवियों ने किया है। इस काल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन रहा।

4. 'रीतिकाल' की विशेषताओं के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस विशेषता का चयन कीजिये-

(a) रीतिकाल में अलंकरण की प्रधानता है

(b) रीतिकाल की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है

(c) रीतिकाल में प्रकृति का आलम्बन-रूप में वर्णन हुआ है

(d) रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों की प्रमुखता है

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

रीतिकाल में स्वतन्त्र और आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण बहुत कम हुआ है। रीतिकाल की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—लक्षण ग्रन्थों का निर्माण, शृंगार चित्रण, वीर और भक्ति काव्य, नीतिकाव्य, ब्रज भाषा का उत्कर्ष, आलंकारिता तथा काव्य रूप।

5. रीतिकालीन कवियों की काव्यभाषा क्या थी?

(a) अवधी (b) खड़ी बोली

(c) ब्रजभाषा (d) बुन्देली

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

रीतिकालीन कवियों की काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास में घनानन्द, बिहारी, मतिराम, पद्माकर, देव, भिखारीदास का नाम उल्लेखनीय है। भिखारीदास ने तो यह मिथ तोड़ा कि ब्रजभाषा में रचना के लिए ब्रज में रहना अनिवार्य है।

ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानों,
ऐसे-ऐसे कविन की बानी हूँ सो जानयो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ पद्माकर की भाषा में सब प्रकार की भाषिक शक्तियों पर कवि का अधिकार दिखाई पड़ता है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में ''कहीं तो इनकी भाषा स्निग्ध मधुर पदावली द्वारा एक सजीव भावभरी प्रेममूर्ति खड़ी करती है, कहीं भाव या रस की धारा बहती है, कहीं अनुप्रासों की झंकार उत्पन्न करती है, कहीं वीरदर्प से क्षुब्ध वाहिनी के समान अकड़ती और कड़कती हुई चलती है और कहीं प्रशान्त सरोवर के समान स्थिर और गम्भीर होकर मनुष्य-जीवन की विभ्रान्ति की छाया दिखाती है। सारांश यह कि इनकी भाषा में वह अनेकरूपता है, जो एक बड़े कवि में होनी चाहिए। भाषा की ऐसी अनेकरूपता गोस्वामी तुलसीदास में दिखाई पड़ती है।''

6. **रीतियुगीन कवियों का सर्वाधिक प्रिय छन्द रहा—**
(a) सवैय्या (b) दोहा
(c) चौपाई (d) छप्पय
दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

रीतियुगीन कवियों ने परम्परागत छन्दों का प्रयोग बहुलता से किया है, जिनमें कवित्त, सवैया, दोहा इत्यादि था, किन्तु सर्वाधिक रूप से इस युग के कवियों का सर्वाधिक प्रिय छन्द सवैया रहा, जिसका प्रयोग उन्होंने शृंगार रस से किया है।

7. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल का 'प्रवर्तक आचार्य' किसे माना है?**
(a) आचार्य केशवदास को (b) मतिराम को
(c) चिन्तामणि को (d) बिहारी को
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि को रीतिकाव्य परम्परा का प्रवर्तक माना है, चिन्तामणि के उपरान्त रीतिकाव्य परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ डॉ. भगीरथी मिश्र ने रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य केशवदास को माना है।
➲ आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने हिन्दी रीतिकाल का प्रवर्तक केशवदास को माना।
➲ चिन्तामणि ने रीति को 'काव्य का स्वभाव' कहा है।
➲ देव ने रीति को 'काव्य का द्वार' कहा है।

8. **''हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिए।'' यह कथन किसका है?**
(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) मिश्रबंधु (d) रामकुमार वर्मा
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

''हिन्दी रीतिग्रंथों की परंपरा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिए। उन्होंने संवत् 1700 के कुछ आगे पीछे 'काव्यविवेक', 'कविकुलकल्पतरु' और 'काव्यप्रकाश' ये तीन ग्रंथ लिखकर काव्य के सब अंगों का पूरा निरूपण किया और पिंगल या छंदशास्त्र पर भी एक पुस्तक लिखी।''

9. **रीतिकाल का समय था-**
(a) 1050 से 1375 वि. स. तक (b) 1700 से 1900 वि. स. तक
(c) 1373 से 1700 वि. स. तक (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल की सीमावधि 200 वर्ष मानते हुए, उसकी सीमा 1700 से 1900 वि.स.अर्थात 1643 से 1843 ई. ही माना है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, डॉ. मोहन अवस्थी, डॉ. रामरतन भटनागर, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', डॉ. रामखेलावन पाण्डेय आदि रीतिकाल का आरम्भ 1600 ई. से ही मानते हैं।

10. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'उत्तरमध्यकाल' को क्या नाम दिया?**
(a) शृंगारकाल (b) अलंकृतकाल
(c) रीतिकाल (d) मध्यकाल
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य का 'उत्तरमध्यकाल' (लगभग 1643-1843 ई.) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल कहा है।

11. **रीतिकाल को 'शृंगार काल' कहा है-**
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (b) आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने
(c) मिश्रबन्धु ने (d) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

रीतिकाल के नामकरण को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस युग में रीतिग्रन्थों की बहुलता देखकर ही इसे 'रीतिकाल' का नाम दिया। मिश्रबन्धुओं ने इसे 'अलंकृत काल' की संज्ञा दी है और डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने इसे 'कला-काल' तथा आदि काल को 'जय काल' कहकर सम्बोधित किया है। इस काल का सबसे अधिक सार्थक नाम आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. राजनाथ शर्मा और डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेवाल 'प्रभृति' की दृष्टि में 'शृंगार काल' है।

12. **हिन्दी साहित्य में रीतिकाल को 'शृंगार काल' कहा है-**
(a) मिश्रबन्धुओं ने
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(d) डॉ. गुलाब राय ने
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **'रीतिकाल' को 'कला-काल' किसने कहा?**
(a) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
(c) मिश्रबन्धु
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **'रीतिकाल' को 'अलंकृत काल' कहा है-**
(a) मिश्रबन्धु ने (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (d) डॉ. रामकुमार वर्मा ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **रीतिकाल को 'अलंकृत काल' किस इतिहासकार ने कहा है?**
(a) मिश्रबंधु (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. **रीतिकाल को 'अलंकृत काल' नाम किसने दिया?**
(a) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' (b) विश्वनाथ मिश्र
(c) मिश्रबन्धु (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. **इनमें से किसने आदिकाल को 'जय काल' तथा रीतिकाल को 'कला काल' कहा है?**
(a) डॉ. ग्रियर्सन (b) डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'
(c) डॉ. इन्द्रनाथ मदान (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेई

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ रीतिबद्ध

1. **किस रचना को 'छन्दों का अजायबघर' कहा जा सकता है?**
(a) रामचरितमानस (b) चन्द छन्द बरनन की महिमा
(c) रामचन्द्रिका (d) पृथ्वीराज रासो

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

केशव रीति काव्य के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इन्हें हिन्दी तथा संस्कृत का बहुत अच्छा ज्ञान था। ये संगीत, धर्मशास्त्र, ज्योतिष एवं राजनीति के भी ज्ञाता थे। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं-रसिक प्रिया, रत्न बावनी, वीरसिंहदेवचरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाला, कविप्रिया, विज्ञानगीता तथा रामचन्द्रिका। 'रामचन्द्रिका' को 'छन्दों का अजायबघर' कहा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रसिकप्रिया, कविप्रिया और छन्दमाला रीतिग्रन्थ हैं, जिनमें क्रमशः नौ रस, अलंकारों और छन्दों का निरूपण किया गया है।
➲ रामचन्द्रिका में रामकथा का प्रबन्धात्मक वर्णन है, जबकि रतन बावनी, वीरसिंहदेवचरित और जहाँगीर-जस-चन्द्रिका आश्रयदाताओं की प्रशस्तिविषयक हैं।
➲ विज्ञानगीता में आध्यात्मिक विषय को प्रस्तुत किया गया है तथा 'नखशिख' में परम्परागत उपमानों की सहायता से राधा के विभिन्न अंगों का वर्णन हुआ है।
➲ 'रसिकप्रिया' एवं 'कविप्रिया' में सोलह प्रकाश हैं।
➲ विज्ञानगीता, वीरसिंहदेवचरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका, रतन बावनी, रामचन्द्रिका प्रबन्ध काव्य हैं, जबकि रसिकप्रिया, कविप्रिया तथा नखशिख मुक्तक काव्य हैं।
➲ रामचन्द्रिका में महाकाव्य की शैली अपनायी गयी है।

2. **'कविप्रिया' के रचनाकार का नाम बताइये?**
(a) देव (b) केशव
(c) पद्माकर (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **'रामचन्द्रिका' किस कवि की कृति है?**
(a) पद्माकर (b) देव
(c) केशव (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **हिन्दी की 'रसरीति' परम्परा का प्रस्थान ग्रन्थ है—**
(a) रसिकप्रिया (केशवदास)
(b) हिततरंगिणी (कृपाराम)
(c) रस पीयूष निधि (सोमनाथ)
(d) रस रत्नाकर (सुरति मिश्र)

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'विज्ञानगीता' के लेखक हैं—
(a) सेनापति (b) चिन्तामणि
(c) केशवदास (d) भिखारीदास
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'विज्ञानगीता' की रचना किसने की?
(a) व्यास जी (b) बालगंगाधर तिलक
(c) केशवदास (d) चिन्तामणि
T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. विज्ञान गीता............की कृति है।
(a) केशवदास (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) बिहारी
दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'जहाँगीर-जस-चन्द्रिका' के रचनाकार हैं—
(a) रहीम (b) आचार्य केशवदास
(c) रसखान (d) मलिक मुहम्मद जायसी
P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. इनमें से कौन-सा ग्रन्थ केशव का नहीं है?
(a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) विज्ञानगीता (d) भाषा-भूषण
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भाषा-भूषण जसवंत सिंह का ग्रन्थ है। यह एक अलंकार विषयक ग्रन्थ है। शेष रचनाएँ केशवदास की हैं। 'भाषा-भूषण' चन्द्रालोक-शैली में लिखा हुआ 212 दोहों का ग्रन्थ है, जिसे पाँच प्रकाशों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है।

10. 'भाषा बोल न जानई जिनके कुल के दास'।
यह कथन किस कवि का है?
(a) तुलसीदास (b) केशवदास
(c) विद्यापति (d) जायसी
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

भाषा बोल न जानई, जिनके कुल के दास।
तेहि भाषा कविता करी, जड़मति केशवदास।।
इन पंक्तियों का सम्बन्ध 'केशवदास' से है, जिसके माध्यम से वे यह व्यक्त करते हैं कि उनके परिवार में बोलचाल की भाषा संस्कृत ही प्रयुक्त होती है, लोकभाषा (हिन्दी) में तो कोई बातचीत तक नहीं करता है। उसी लोकभाषा में केशवदास कविता की रचना करता है।

11. हिन्दी साहित्य में निम्नलिखित पंक्तियाँ किसके द्वारा लिखी गई?
जदपि सुजाति सुलक्षणी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।।
(a) कबीरदास (b) केशवदास
(c) रहीमदास (d) तुलसीदास
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ केशवदास जी की हैं। उन्होंने काव्य में अलंकारों को प्रतिपादित करते हुए ये पंक्तियाँ प्रस्तुत की हैं।

12. ''जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।।''
कविता की यह परिभाषा किसकी है?
(a) बिहारी (b) मतिराम
(c) केशवदास (d) देव
P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'भूषण बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त'। यह कथन किसका है?
(a) तुलसीदास (b) भिखारीदास
(c) केशवदास (d) मतिराम
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. आचार्य भिखारीदास कृत प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है-
(a) काव्यप्रकाश (b) काव्य निर्णय
(c) काव्यांगप्रकाश (d) रस-सारांश
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b&d)

भिखारीदास रीतिकाल के रीतिबद्ध धारा के श्रेष्ठ हिन्दी कवि थे। इनका जन्म प्रतापगढ़ के निकट टेंउगा में तथा मृत्यु बिहार में आरा के निकट भभुआ नामक स्थान पर हुई थी। ये प्रतापगढ़ नरेश के भाई हिंदूपति सिंह के आश्रय में रहे। इन्होंने काव्यशास्त्र पर कई ग्रन्थ लिखे जिनमें 'काव्य निर्णय' श्रेष्ठ है। भिखारीदास द्वारा लिखी गई अन्य रचनाएँ हैं- रस-सारांश, शृंगार निर्णय, छन्दोर्णव पिंगल, अमरकोश या शब्दनाम प्रकाश, विष्णु पुराण भाषा और शतरंजशतिका। रस-सारांश में नायक-नायिका भेद तथा शृंगार निर्णय में शृंगारिक वर्णन हैं। अतः विकल्प में दो उत्तर (b) तथा (d) सही हैं।

15. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भिखारीदास की नहीं है?
(a) रस सारांश (b) काव्यनिर्णय
(c) शृंगार निर्णय (d) भाषाभूषण

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से कौन रीतिबद्ध कवि है?
(a) घनानन्द (b) ठाकुर
(c) भिखारीदास (d) गोविन्द स्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'शतरंजशतिका' कृति के रचनाकार हैं—
(a) भिखारीदास (b) देव
(c) रसनिधि (d) चिन्तामणि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. भिखारीदास की रचना है—
(a) काव्य निर्णय (b) काव्य सिन्धु
(c) चिन्तामणि (d) रस विवेक

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(a) रीतिबद्ध धारा के कवियों ने लक्षण ग्रन्थों की रचना की है।
(b) रीतिबद्ध धारा के कवियों को आचार्य कवि कहा जाता है।
(c) बिहारी रीतिसिद्ध धारा के प्रतिनिधि कवि हैं।
(d) केशव रीतिमुक्त धारा के कवि हैं।

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

केशव रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कवि हैं। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त विकल्प में (d) असत्य है। रीतिबद्ध धारा के कवियों ने अलंकार, नायिका भेद आदि के लक्षण बताकर उनके उदाहरणस्वरूप काव्य रचा है। जैसे-केशव, पद्माकर, मतिराम आदि। वस्तुतः ये मूलतः कवि थे। केशव हिन्दी के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। वे काव्य में अलंकार को अधिक महत्व देते हैं।

20. भूषण को 'कवि भूषण' की उपाधि किसने प्रदान की थी?
(a) शिवाजी (b) छत्रसाल
(c) सोलंकी राजा रुद्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

भूषण हिन्दी रीतिकाल के अन्तर्गत, उसकी परम्परा का अनुसरण करते हुए वीर-काव्य तथा वीर-रस की रचना करने वाले प्रसिद्ध कवि हैं। इनका वास्तविक नाम घनश्याम था। चित्रकूटपति हृदयराम के पुत्र रुद्र सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था। भूषण 1627 से 1680 ई. तक महाराजा शिवाजी के आश्रय में रहे। इनके छत्रसाल बुन्देला के आश्रय में रहने का भी उल्लेख मिलता है। ये रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। 'शिवराज भूषण','शिवा बावनी' और 'छत्रसाल दशक' नामक तीन ग्रन्थ ही इनके लिखे छः ग्रन्थों में से उपलब्ध हैं।

21. 'शिवराज भूषण' के रचयिता कवि कौन हैं?
(a) घनानन्द (b) बिहारी
(c) पद्माकर (d) भूषण

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं—
(a) रत्नाकर (b) भूषण
(c) ठाकुर (d) आलम

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. रीतिकाल के उस कवि का नाम बताइये जिसने वीर रस में कविता लिखी है?
(a) पद्माकर (b) भूषण
(c) बिहारी (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. रीतिकाल का कौन-सा कवि वीर रस की काव्य रचना के लिए प्रसिद्ध है?
(a) मतिराम (b) भूषण
(c) चिन्तामणि (d) घनानन्द

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. **भूषण दो राजाओं के दरबारी कवि थे। इनमें से पहले थे शिवाजी, दूसरे थे-**

(a) महाराणा प्रताप (b) राणा सांगा
(c) छत्रसाल (d) शम्भाजी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. **भूषण रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?**

(a) रीतिबद्ध काव्यधारा (b) रीतिमुक्त काव्यधारा
(c) रीतिसिद्ध काव्यधारा (d) आश्रयवादी काव्यधारा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. **भूषण का वास्तविक नाम था—**

(a) घनश्याम (b) रासबिहारी
(c) कृष्णदास (d) चन्द्रभूषण

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. **महाकवि भूषण की रचना है?**

(a) रेणुका (b) चिदम्बरा
(c) दीपशिखा (d) छत्रशाल दशक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. **'शिवराज भूषण' ग्रन्थ में किसका विवेचन मिलता है?**

(a) रस (b) ध्वनि
(c) अलंकार (d) औचित्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'शिवराज भूषण', भूषण के आचार्यत्व को सिद्ध करने वाला एक अलंकार-ग्रन्थ है और एक सुसम्बद्ध योजना के साथ लिखा गया है। इसका एक भूमिका-भाग है, जिसके प्रारम्भ में गणेश, शक्ति और सूर्य की वन्दना है। अलंकार निरूपण वाले भाग में पहले दोहों में अलंकारों के लक्षण दिये हैं। फिर कविता, सवैया, छप्पय अथवा दोहे में उसके उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। ये उदाहरण शिवाजी के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित हैं। आलोचकों ने भूषण के अलंकार-विवेचन में अनेक प्रकार के दोष निकाले हैं। 'शिवराज भूषण' में भूषण ने 105 अलंकार दिये हैं और कहीं-कहीं एक अलंकार के एक से अधिक उदाहरण मिलते हैं। कुछ अलंकारों जैसे-उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, अतिशयोक्ति एवं अपह्नुति के भेदों की ओर भी इन्होंने पूरा ध्यान दिया है।

30. **भूषण के ग्रन्थों में अलंकार निरूपक है-**

(a) शिवा बावनी (b) शिवराज भूषण
(c) छत्रसाल दशक (d) दूषण उल्लास

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. **रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में इनमें से किस कवि को 'हिन्दू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है?**

(a) भूषण (b) सूदन
(c) लाल कवि (d) रहीम

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में लिखा है कि शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं। इन दो वीरों का जिस उत्साह के साथ सारी हिंदू जनता स्मरण करती है, उसी की व्यंजना भूषण ने की है। वे हिंदू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।

32. **'गंग' कवि का जन्म स्थान है-**

(a) आगरा (b) प्रयाग
(c) इटावा (d) गंगापुर नगर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

गंग (1538-1625 ई.) रीतिकालीन काव्य परम्परा के प्रथम कवि थे। ये इटावा जिले के एकनार गाँव के निवासी थे। इनका मूलनाम गंगाधर था। गंग के मुख्य ग्रन्थ हैं-गंगपदावली, गंग पचीसी तथा गंग रत्नावली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गंग जाति के ब्राह्मण थे तथा अकबर के दरबारी कवि थे। इसके अतिरिक्त ये रहीम, बीरबल, मानसिंह तथा टोडरमल के भी प्रिय थे।
- कहा जाता है कि अपनी स्पष्टवादिता के कारण ये जहाँगीर के कोपभाजन का शिकार हुए और उसने इन्हें हाथी से कुचलवा दिया।
- भिखारीदास जी ने इनके विषय में कहा है-तुलसी गंग दोऊ भये, सुकविन में सरदार।

33. **'तुलसी गंग दोऊ भये, सुकविन के सरदार' उक्ति के रचनाकार हैं-**

(a) भिखारीदास (b) केशवदास
(c) रहीम (d) गंगकवि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'नैन नचाय कह्यौ मुसुकाई, लला फिर आइयो खेलन होरी।' पंक्ति के कवि हैं-

(a) सेनापति (b) घनानन्द
(c) पद्माकर (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति पद्माकर की है। यह होली विषयक सवैया है। पद्माकर का जन्म संवत् 1880 में बाँदा में हुआ था। इनके पिता का नाम मोहन लाल भट्ट था। पद्माकर को रीतिकाल के कवियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। कविराज शिरोमणि की पदवी और अच्छी जागीर मिली। अन्तिम समय निकट जान कर पद्माकर जी कानपुर (गंगा तट) चले आये और वहीं अपने जीवन के शेष सात वर्ष पूरे किये। अपनी प्रसिद्ध रचना 'गंगा लहरी' इन्होंने इसी समय के बीच रची थी। पद्माकर का 'जगद्विनोद' काव्य रसिकों और अभ्यासियों दोनों का कण्ठहार रहा है।

35. 'नैन नचाई कह्यौ मुसकाई,
लला फिर आइयो, खेलन होरी।'
-ये पंक्तियां किसकी हैं?

(a) बिहारी (b) मतिराम
(c) पद्माकर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'गंगा लहरी' किसकी रचना है?

(a) मतिराम (b) पद्माकर
(c) ठाकुर (d) बोधा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

पद्माकर द्वारा रचित सात मौलिक ग्रन्थ मिलते हैं- हिम्मतबहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, प्रबोधपचासा, गंगा लहरी, प्रतापसाहि विरुदावली, कलिपच्चीसी आदि। कहा जाता है कि वाल्मीकि रामायण, हितोपदेश आदि संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद भी इन्होंने किया था। मौलिक ग्रन्थों में पद्माभरण और जगद्विनोद ही रीतिग्रन्थ हैं।

37. 'प्रबोधपचासा' ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं?

(a) रामानन्द (b) कबीर
(c) मतिराम (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. पद्माकर द्वारा रचित अलंकार-ग्रन्थ कौन-सा है?

(a) भाषा भूषण (b) रामचन्द्राभरण
(c) काव्यालंकार (d) पद्माभरण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'पद्माभरण' और जगद्विनोद' पद्माकर के रीतिग्रन्थ हैं। इन रीतिग्रन्थों में क्रमशः अलंकार और नवरस विवेचन किया गया है। 'पद्माभरण' 1810 ई. में रचा गया बताया जाता है। 'जगद्विनोद' की रचना 1803 और 1821 ई. के बीच महाराज जगत सिंह के आश्रय में उनकी आज्ञा से हुई।।

39. 'काव्य रसायन' किसकी रचना है?

(a) भूषण (b) देव
(c) बोधा (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'देव' कवि का जन्म 1673 ई. में इटावा जिले के घौसरिया ब्राह्मण परिवार में हुआ था। अपने जीवनकाल में अनेक राजाओं, नवाबों तथा रईसों के आश्रय में रहे। इनमें प्रमुख थे—आजमशाह, फफूंद रियासत के राजा कुशलसिंह, सेठ भोगीलाल, इटावा के निकटवर्ती इयोड़िया खेरा के राजा उद्योत सिंह, दिल्ली के रईस पातीराम के पुत्र सुजानमणि, पिहानी के अधिपति अली अकबर खाँ। इनकी मृत्यु 1767 ई. के लगभग हुई। देव की प्रमुख रचनाएँ हैं- काव्य रसायन, भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, सुजानविनोद, प्रेमतरंग, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचन्द्रिका, जातिविलास, रसविलास, सुखसागर तरंग, वृक्षविलास, पावसविलास, ब्रह्मदर्शन पचीसी, तत्वदर्शन पचीसी, आत्मदर्शन पचीसी, जगदर्शन पचीसी, रसानन्द लहरी, प्रेमदीपिका, नखशिख, प्रेमदर्शन आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सोमनाथ अथवा शशिनाथ ने रसपीयूषनिधि, शृंगारविलास, कृष्णलीलावती, पंचाध्यायी, सुजान विलास और माधव विनोद नामक ग्रन्थों की रचना की।
➲ माना जाता है कि 'देव' ने 'भावविलास' की रचना 16 वर्ष की अवस्था में की थी।

40. 'देव' कवि किस जिले के थे?

(a) मैनपुरी (b) बनारस
(c) गोरखपुर (d) इटावा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'सुजानविनोद' के रचनाकार हैं-

(a) घनानन्द (b) देव
(c) पद्माकर (d) मतिराम

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. **'जातिविलास' के रचयिता हैं—**

(a) भिखारीदास (b) देव

(c) मतिराम (d) भूषण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. **'अष्टयाम' किसकी रचना है?**

(a) सेनापति (b) देव

(c) भूषण (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. **रीतिबद्ध कवि देव हैं—**

(a) अलंकारवादी (b) रीतिवादी

(c) वक्रोक्तिवादी (d) रसवादी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

रसवादी विवेचना एक शास्त्रीय विवेचना थी, जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी के अनेक कवियों में पाई जाती है। देव, मतिराम, घनानन्द, ठाकुर आदि कवियों की रचनाएँ इसी कड़ी में हैं।

45. **देव किस प्रकार के कवि हैं?**

(a) अलंकारवादी (b) रीतिवादी

(c) रसवादी (d) वक्रोक्तिवादी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. **'भूलि कहत नव रस सुकवि सकल मूल सिंगार'। यह उक्ति किस आचार्य की है?**

(a) देव (b) चिन्तामणि त्रिपाठी

(c) सोमनाथ (d) कुलपति मिश्र

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'भूलि कहत नव रस सुकवि सकल मूल सिंगार।' यह उक्ति आचार्य देव की है। कवि ने अपने ग्रंथों में श्रृंगार का वर्णन अत्यंत प्रभावोत्पादक ढंग से किया है। देव ने संयोगानुभूति की अभिव्यंजना करते हुए नायक एवं नायिका के पारस्परिक मिलन का निरूपण अत्यंत गंभीरता और तीव्रता के साथ किया है।

47. **''अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार।**
जियत मरत झुकि-झुकि परत, जिहिं चितवत इकबार।।''
इस प्रसिद्ध दोहे के रचयिता हैं-

(a) बिहारी (b) भूषण

(c) घनानन्द (d) रसलीन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त दोहा रसलीन का है, किन्तु भ्रमवश कुछ लोग इस दोहे को बिहारी का दोहा मान लेते हैं। रसलीन रीतिकाल के महत्वपूर्ण कवि हैं। इनका जन्म 1669 ई. में उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के ऐतिहासिक गाँव बिलग्राम में हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रसलीन का वास्तविक नाम 'मीर गुलाम नबी' था। वे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज और अवधी के साथ-साथ अरबी और फारसी भाषा के भी विद्वान थे। अन्य कवियों की भाँति इन्होंने भी अपने नाम के साथ 'रसलीन' उपनाम जोड़ लिया था। उस युग के प्रसिद्ध बिलग्रामी कवि मुहम्मद उनके बारे में लिखते हैं-

मीर गुलाम नबी हुतौ सकल गुनन को धाम।
बहुरि धरयौ रसलीन निज, कविताई को नाम।।

48. **मतिराम की भाषा है -**

(a) बोलचाल की ब्रजभाषा

(b) साहित्यिक ब्रजभाषा

(c) साहित्यिक अवधी

(d) साहित्यिक राजस्थानी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ब्रजभाषा में साहित्य की विशाल और समृद्ध परम्परा रही है। हिन्दी की अन्य बोलियों की तुलना में सबसे बढ़कर और सबसे अधिक साहित्य ब्रजभाषा में हैं। खड़ी बोली के साहित्य भाषा बनने के पूर्व ब्रजभाषा ही सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र की साहित्य भाषा रही है। मतिराम की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है।

❑ रीतिमुक्त

1. **'घनानन्द' रीतिकाव्य की किस काल के कवि हैं?**

(a) रीतिबद्ध (b) रीतिमुक्त

(c) रीतिसिद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रीति परम्परा के साहित्यिक बन्धनों एवं रूढ़ियों से मुक्त इस काल की स्वच्छन्द काव्यधारा को रीतिमुक्त काव्य कहा जाता है। आन्तरिक अनुभूति भावावेग, व्यक्तिपरक अभिव्यंजना की सांकेतिक काव्य-रूढ़ियों से मुक्त कल्पना की प्रचुरता आदि इसकी विशेषताएँ हैं। इस धारा के प्रमुख कवि घनानन्द हैं। इनकी काव्य शैली बड़ी भावनात्मक तथा मार्मिक है। इस धारा के कवियों की लगभग सारी विशेषताएँ इनके काव्य में एक-साथ प्राप्त हो जाती हैं। इस धारा के अन्य प्रमुख कवि हैं- आलम, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव। घनानन्द का समस्त काव्य 'प्रेम की पीर' का परम रूप है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रीतिकाल को अध्ययन की सुविधा के अनुसार, तीन भागों में बाँटा गया है– 1. रीतिबद्ध 2. रीतिमुक्त 3. रीतिसिद्ध। रीतिसिद्ध के प्रमुख कवि बिहारीलाल हैं। रीतिबद्ध काव्य धारा के प्रमुख कवि चिन्तामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, आचार्य कुलपति मिश्र आदि हैं।

2. घनानन्द किस वर्ग के कवि हैं?

(a) रीतिबद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिसिद्ध (d) छायावाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. इनमें से कौन-सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

(a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2011
नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. इनमें से कौन-सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

(a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. ''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।'' रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के संबंध में है?

(a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) भारतेन्दु हरिश्चंद (d) घनानन्द

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द के बारे में कहा है- ''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं। भाषा मानो इनके हृदय के साथ जुड़कर ऐसी यशवर्तिनी हो गई थी कि ये उसे अपनी अनूठी भावभंगी के साथ-साथ जिस रूप में चाहते थे, उस रूप में मोड़ सकते थे। इनके हृदय का योग पाकर भाषा को नूतन गतिविधि का अभ्यास हुआ और वह पहले से कहीं अधिक बलवती दिखाई पड़ी। जब आवश्यकता होती थी, तब ये उसे बंधी प्रणाली पर से हटाकर अपनी नई प्रणाली पर ले जाते थे। भाषा की पूर्व अर्जित शक्ति से ही काम चलाकर उन्होंने उसे अपनी ओर से नई शक्ति प्रदान की है। घनानन्द जी इन विरले कवियों में है, जो भाषा की व्यंजना बढ़ाते हैं।''

6. इनमें से किस कवि की प्रेमिका का नाम 'सुजान' था?

(a) रसखान (b) बिहारी
(c) घनानन्द (d) आलम

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

कवि घनानन्द की प्रेमिका का नाम 'सुजान' था, जो एक वेश्या थी। मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार की नृत्य-गायन विद्या में निपुण सुजान वेश्या से घनानन्द को प्रेम हो गया था। घनानन्द ने 'सुजान' शब्द का प्रयोग अपनी कविता में सर्वाधिक किया है।

7. 'सुजान' शब्द का प्रयोग किस कवि की कविता में सर्वाधिक हुआ है?

(a) बिहारी (b) भूषण
(c) घनानन्द (d) ठाकुर

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. वियोग शृंगार का प्रधान मुक्तक कवि-

(a) घनानन्द (b) रसलीन
(c) पद्माकर (d) आलम

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

घनानन्द स्वच्छन्द काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस धारा के प्रायः सभी गुण इनकी शैली में मिल जाते हैं, जैसे-भावात्मकता, वक्रता, लाक्षणिकता, भावों की वैयक्तिकता, रहस्यात्मकता, मार्मिकता, स्वच्छन्दता इत्यादि। इन्होंने अपनी रचनाओं में वियोग-व्यथा के सैकड़ों अंतर्दशाओं के मार्मिक चित्र खींचे हैं, जो सीधे हृदय को छूते हैं। वियोग-शृंगार में प्रिय के रहने पर प्रेमी का भावमग्न हो जाना स्वाभाविक है पर घनानन्द संयोग में भी भावमग्न हैं। भावात्मकता के कारण ही अनुभूति का सम्बन्ध जब सशरीर प्रिय से हटकर अनुभूत्यात्मक हो जाता है, तो उसका सम्बन्ध परम सत्ता से बना प्रतीत होने लगता है।

समसामयिक घटना चक्र

9. **घनानन्द की 'कृतियाँ' किस भाषा में हैं?**

(a) अवधी (b) खड़ी बोली

(c) ब्रज (d) मैथिली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

घनानन्द की कृतियाँ ब्रजभाषा में हैं। घनानन्द के प्रमुख ग्रन्थ हैं-सुजानसागर, विरहलीला, कोकसार, रसकेलिबल्ली और कृपाकाण्ड।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- घनानन्द का जन्म 1689 ई. के आस-पास हुआ और 1739 ई. में ये नादिरशाह के सैनिकों द्वारा मार डाले गये।
- ये प्रेम की मस्ती विशेषतः वियोग शृंगार के कवि हैं।
- शुक्ल जी के अनुसार ''प्रेममार्ग का एक ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ है।''
- शुक्ल जी ने उन्हें 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य' का ऐसा कवि कहा जैसे कवि उनके पौने दो सौ वर्ष बाद छायावाद काल में प्रकट हुए।

10. **'सुजानसागर' के लेखक हैं-**

(a) घनानन्द (b) बोधा

(c) ठाकुर (d) आलम

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **''लोग हैं लागि कवित्त बनावत,**
मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत।''
इस काव्यपंक्ति के रचयिता का नाम है-

(a) आलम (b) द्विजदेव

(c) घनानन्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्यपंक्ति के रचयिता घनानन्द हैं। इसके माध्यम से घनानन्द अपनी पहचान अलग बताते हैं।

12. **''लोग हैं लागि कवित्त बनावत,**
मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत।''
किसकी पंक्ति है?

(a) आलम की (b) देव की

(c) घनानन्द की (d) ठाकुर की

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **''लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तौ मेरे कवित्त बनावत।''**
यह काव्यपंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

(a) केशवदास (b) मतिराम

(c) नन्ददास (d) घनानन्द

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं । पंक्ति के लेखक हैं-**

(a) मतिराम (b) देव

(c) घनानन्द (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पंक्तियां घनानन्द की हैं।

15. **"सीखि लीनो मीन मृग खंजन कमल-नैन,**
सीखि लीनो जस औ प्रताप को कहानो है।''
ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) ठाकुर (b) घनानन्द

(c) द्विजदेव (d) मतिराम

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों की रचना रीतिमुक्त धारा के कवि ठाकुर ने कवि कर्म पर व्यंग्य कसते हुए कहा है।

16. **'कवित्त रत्नाकर' के रचनाकार हैं-**

(a) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' (b) सेनापति

(c) घनानन्द (d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'कवित्त रत्नाकर' के रचनाकार सेनापति हैं। अभी तक इनकी यही कृति प्राप्त हुई है। कुछ इतिहासकारों ने इनकी दूसरी कृति 'काव्यकल्पद्रुम' भी मानी है, पर वह उपलब्ध नहीं है। कुछ लोग दोनो को एक ही ग्रन्थ मानते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कवित्त रत्नाकार के अन्तर्गत सेनापति ने श्लेष अलंकार, शृंगार, षड्ऋतु, रामायण और रामरसायन का वर्णन किया है।
- कवित्त रत्नाकर में पाँच तरंगें और तीन सौ चौरानबे छन्द हैं।

17. 'कवित्त रत्नाकर' किस भाषा में रचित है?

(a) ब्रजभाषा (b) अवधी भाषा

(c) खड़ी बोली (d) राजस्थानी भाषा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'कवित्त रत्नाकर' की रचना संवत् 1706 में सेनापति द्वारा ब्रजभाषा में की गई। इसमें शृंगार, ऋतु वर्णन, श्लेष आदि के वर्णन के साथ सेनापति के भक्ति सम्बन्धी उद्‌गार संकलित हैं। इनका दूसरा ग्रन्थ 'काव्य-कल्पद्रुम' श्री ब्रजभाषा में है। ये रामभक्ति परम्परा के कवि हैं। ये श्लेष प्रेमी एवं इनकी कविता घनाक्षरियों में है।

18. 'सुजान चरित्र' के रचयिता हैं-

(a) घनानन्द (b) बोधा

(c) सूदन (d) मतिराम

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

रीतिकालीन कवि सूदन का 'सुजान चरित्र' वीर रस प्रधान एक ऐतिहासिक काव्य है, जिसमें भरतपुर के महाराजा बदन सिंह के पुत्र सुजान सिंह उपनाम 'सूरजमल' के युद्धों का लम्बा वर्णन मिलता है।

19. निम्न में से किस कवि ने 'सतसई' की रचना नहीं की है?

(a) मतिराम (b) सेनापति

(c) बिहारी (d) वृंद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

सेनापति ने 'सतसई' की रचना नहीं की है। इनकी एक ही कृति 'कवित्त रत्नाकर' प्राप्त हुई है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मतिराम द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ हैं-फूलमंजरी (1619), लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराज (1633-43), ललितललाम (1661-64), सतसई (1681), अलंकारपंचाशिका (1690) और वृत्तकौमुदी (1701) इत्यादि।
- बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनका अन्यतम ग्रन्थ 'सतसई' है। सतसई में बिहारी ने अलंकार, रस, भाव, नायिका भेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गुण आदि का ध्यान रखकर सुन्दर दोहे रचे हैं। मुक्तक-परम्परा में बिहारी का स्थान शीर्ष पर है।
- वृंद की प्रमुख रचनाएँ हैं-बारहमासा (1681), भावपंचाशिका (1686), नयनपचीसी (1686), पवनपचीसी (1691), शृंगार शिक्षा (1691) और यमक सतसई (1706) इत्यादि।
- 'बारहमासा' में बारहों महीनों का सुन्दर वर्णन है।
- 'भावपंचाशिका' में शृंगार के विविध भावों के अनुसार, सरस छन्द लिखे गये हैं।
- इन्होंने 'सुख सागर तरंग' नाम का ग्रन्थ पिहानी के अकबर अली खाँ को समर्पित किया था। इस आधार पर इनका संवत् 1824 तक जीवित रहना सिद्ध होता है।

20. मतिराम द्वारा रचित ग्रन्थ है—

(a) कृष्णायन (b) जगद्विनोद

(c) ललितललाम (d) रस चन्द्रिका

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ रीतिसिद्ध

1. रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के कवि हैं-

(a) केशव (b) देव

(c) भूषण (d) बिहारी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के प्रमुख कवि बिहारी हैं। रीतिसिद्ध उन कवियों को कहा गया है जिनका काव्य, काव्य के शास्त्रीय ज्ञान से आबद्ध था, तथापि वे लक्षणों के चक्कर में नहीं पड़े, परन्तु काव्य शास्त्र का पूरा ज्ञान था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रीतिकालीन काव्य को तीन भागों में विभक्त किया गया है-रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।
- रीतिबद्ध काव्य धारा के कवियों ने काव्यशास्त्रीय परम्परा आदि का निर्वाह कर लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया जिसमें चिन्तामणि, भिखारीदास, देव, मतिराम, पद्माकर आदि प्रमुख हैं।
- रीतिसिद्ध काव्यधारा के कवियों ने लक्षण ग्रन्थ न लिखकर लक्षण को ध्यान में रखते हुए लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया, जिसमें बिहारी और रसनिधि प्रमुख हैं।
- रीतिमुक्त काव्यधारा के कवियों ने रीतिकाल की परिपाटी को त्यागकर स्वच्छन्द रूप से शृंगार काव्य की रचना किया, जिसमें घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर आदि प्रमुख हैं।

2. बिहारी रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?

(a) रीतिबद्ध (b) रीतिसिद्ध

(c) रीतिमुक्त (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सम-सामयिक घटना चक्र

3. **निम्नलिखित में से कौन-सा कवि रीतिबद्ध परम्परा में है?**
(a) बिहारीलाल (b) घनानन्द
(c) मतिराम (d) आलम

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **बिहारी किस धारा के कवि हैं?**
(a) रीतिसिद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिबद्ध (d) स्वच्छन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **निम्नलिखित में से एक कवि ने लक्षण-ग्रन्थ की रचना नहीं की है:**
(a) भिखारीदास (b) ग्वाल कवि
(c) बिहारी (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **'दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति' यह कथन किसका है?**
(a) बिहारी (b) तुलसी
(c) जायसी (d) कबीर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।
अर्थात् आँखें उलझती हैं, परिवार टूटता है, पर चतुरों के हृदय का प्रेम जुड़ रहा है, किन्तु दुर्जनों के हृदय में गाँठ पड़ रही है, यह कैसा विधान है। यह पंक्तियाँ बिहारी लाल की हैं।

7. **'बिहारी सतसई' में दोहे हैं-**
(a) 500 (b) 718
(c) 719 (d) 717

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रीतिकाल (रीतिसिद्ध) के कवि बिहारी की एक मात्र रचना 'सतसई' है। अपनी इसी एकमात्र कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गये। यह मुक्तक काव्य है। इसमें 719 दोहे संकलित हैं, परन्तु कहीं-कहीं 713 दोहों का भी उल्लेख मिलता है। 'बिहारी सतसई' शृंगार रस की अत्यन्त प्रसिद्ध और अनूठी कृति है। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य का एक-एक अनमोल रत्न माना जाता है। भाषा शिल्प की दृष्टि से 'बिहारी सतसई' ब्रज काव्य की महान विभूषि है। शब्दावली परिमार्जित, चुटीली और हृदयग्राही है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ बिहारी शाहजहाँ के समकालीन थे और राजा जयसिंह के राजकवि थे।
➲ बिहारी का जन्म 1595 ई. के लगभग ग्वालियर में हुआ। वे जाति के माथुर चौबे थे। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनका बचपन बुन्देलखण्ड में बीता और युवावस्था ससुराल मथुरा में व्यतीत हुई। 1664 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।

8. **बिहारी की रचना का क्या नाम है?**
(a) बिहारी रत्नाकर (b) बिहारी सतसई
(c) सतसैया (d) बिहारी बोधिनी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **बिहारी निम्न में से किस काल के कवि थे?**
(a) वीरगाथा काल (b) भक्ति काल
(c) रीतिकाल (d) आधुनिक काल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **'बिहारी सतसई' किस भाषा का काव्य ग्रन्थ है?**
(a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) भोजपुरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है, जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया?**
(a) रहीम (b) मतिराम
(c) बिहारी (d) देव

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

आधुनिक काल

1. 19वीं शताब्दी से अब तक लिखे गए हिन्दी साहित्य को अधिकांश विद्वानों द्वारा क्या अभिधान दिया गया?

(a) कला काल (b) आधुनिक काल
(c) नवीन विकास का युग (d) गद्य काल

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

19 वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ भारत में वर्तमान युग का आविर्भाव हुआ। पाश्चात्य संस्कृति, साहित्य एवं विचारों के सम्पर्क और उनके साथ संघर्ष से चेतना की एक नई लहर दौड़ी जिसे, पुनर्जागरण कहते हैं। प्रतीकात्मक रूप से सन् 1850 हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की आरम्भिक तिथि मानी जाती है। यह तिथि आधुनिक साहित्य के महान प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जन्म तिथि भी है। अधिकांश विद्वानों ने इस काल को आधुनिक काल से अभिहित किया है।

2. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को इस नाम से भी अभिहित किया जाता है-

(a) जीवनीकाल (b) पद्यकाल
(c) संस्मरण काल (d) गद्यकाल

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को स्वातन्त्र्य काल (गद्यकाल) से अभिहित किया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को 'गद्य काल' कहकर पुकारा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं ''आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है।'' इस दृष्टि से इस काल को गद्यकाल भी कहा जा सकता है।

3. रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के 'आधुनिक काल' को किस अन्य नाम से अभिहित किया है?

(a) वर्तमान काल (b) गद्यकाल
(c) उत्थानकाल (d) उक्त में से किसी नाम से नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ब्रजभाषा के आधुनिक कालीन प्रसिद्ध कवि हैं-

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) हरिऔध
(c) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

ब्रजभाषा के आधुनिक कालीन प्रसिद्ध कवि जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' हैं। इन्हें ब्रजभाषा काव्य का अन्तिम प्रौढ़ कवि भी माना जाता है। इनके प्रसिद्ध काव्य हिन्डोला, हरिश्चन्द्र, गंगावतरण, ऊद्धव शतक, कलकाशी, समस्यापूर्ति, जयप्रकाश, सर्वस्व, घनाक्षरी, नियम गंगा विष्णु लहरी, रत्नाष्टक, वीराष्टक, प्रकीर्ण पदावली आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का जन्म 1866 ई. में वाराणसी में तथा मृत्यु 1932 में हरिद्वार में हुई थी।
- बिहारी इनके सर्वाधिक प्रिय कवि थे।
- सतसई पर लिखी हुई इनकी टीका 'बिहारी रत्नाकर' अपनी अर्थवत्ता में बेजोड़ है।
- इनकी ऊद्धव शतक (1929) प्रौढ़तम काव्य है।

5. 'रत्नाकर' शब्द किस कवि के साथ जुड़ा है?

(a) हरिश्चन्द्र (b) जगन्नाथ
(c) बदरीनारायण (d) भिखारीदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. इनमें से जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की कृति छाँटिये–

(a) ऊद्धव शतक (b) भ्रमर गीत
(c) गीतावली (d) रश्मिरथी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'ऊद्धव शतक' के लेखक हैं-

(a) रत्नाकर (b) नन्ददास
(c) सूरदास (d) सेवाराम

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. ऊद्धव शतक में .... छन्द हैं।

(a) 116 (b) 120
(c) 130 (d) 135

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(*)

समसामयिक घटना चक्र

राम प्रसाद मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'खड़ी बोली कविता में विरह वर्णन' में लिखा है कि ऊद्धव शतक में 118 छन्द हैं। 'ऊद्धव शतक' जगन्नाथदास रत्नाकर की प्रसिद्ध कृति है। यह भ्रमरगीत परम्परा का काव्य है। गोपी-ऊद्धव संवाद इसका वर्ण्य-विषय है। ऊद्धव शतक एक तरह से विरह काव्य है, किन्तु विरह की तीव्रानुभूति के साथ गोपियों का उत्कट प्रेम भी इसमें पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति हुआ है। इसे कुछ समीक्षक शृंगार काव्य ही मानते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रत्नाकर ने शृंगार और वीर दोनों रसों में रचनाएँ की हैं।
- उन्होंने अंग्रेजी कवि पोप के 'एस्से ऑन क्रिटिसिज्म' का रोला छन्दों में 'समालोचनादर्श' नाम से अनुवाद किया।
- रत्नाकर के काव्यग्रन्थों में 'हिन्डोला', 'हरिश्चन्द्र', 'ऊद्धव शतक', 'गंगावतरण,' 'कलकाशी,' शृंगार लहरी', 'गंगा विष्णु लहरी', 'रत्नाष्टक', 'वीराष्टक' तथा फुटकर रचनाएँ हैं।
- रत्नाकर ने 'साहित्य सुधा निधि' मासिक पत्रिका का सम्पादन भी किया था।
- फारसी और संस्कृत के ज्ञाता प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञ, विद्वान तथा उच्चकोटि के कवि रत्नाकर को 'गंगावतरण' पर हिन्दुस्तानी अकेडमी प्रयाग ने पुरस्कार प्रदान किया।
- सन् 1930 में रत्नाकर जी कलकत्ता के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति हुए।

9. रत्नाकर कृत 'गंगावतरण' किस छन्द में लिखा गया है?

(a) चौपाई (b) दोहा

(c) रोला (d) घनाक्षरी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

जगन्नाथ दास रत्नाकर का 'गंगावतरण' काव्य रोला छन्द में लिखा गया है, किन्तु इनका प्रिय छन्द कवित्त है।

10. ऊद्धवशतक की
''हमको लिख्यो है कहा, हमको लिख्यो है कहा,
हमको लिख्यो है कहा, कहन सबै लगीं।''
में पुनरुक्ति द्वारा क्या बोध होता है?

(a) भाव का अपकर्ष (b) भावसंधि

(c) भावोत्कर्ष (d) भावसबलता

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्तियाँ जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' के ऊद्धवशतक से ली गई हैं। ऊद्धव के ब्रज पहुंचते ही गोपियाँ श्रीकृष्ण के 'प्रेम संदेश' को पाने के लिए अति उत्कंठित एवं आकुलता-व्याकुलता से दौड़ पड़ती है, जो भावोत्कर्ष का प्रतीक है।

❑ भारतेन्दु युग

1. भारतेन्दु जी ने किस नाटक में स्वयं अभिनय किया है?

(a) जानकी मंगल (b) जानकी भरत

(c) बरवै रामायण (d) अँधेर नगरी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

शीतला प्रसाद त्रिपाठी का 'जानकी मंगल' (1868) नाटक अवश्य अभिनय के लिए रचा गया था। यह नाट्य गुणों से युक्त है और इसकी भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है, किन्तु इस समय तक भारतेन्दु का उदय हो चुका था और उनका 'विद्यासुन्दर' नाटक प्रकाशित हो गया था। वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रवर्तित रामलीला की लोकप्रियता के साथ लीला-नाटकों की जो परम्परा आरम्भ हुई, उसका श्रेष्ठ रूप 'जानकी मंगल' नाटक है। इसके अभिनय में भारतेन्दु जी ने भी भाग लिया था। इसकी विषयवस्तु 'रामचरितमानस' पर आधृत रामकथा ही है, किन्तु ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली के प्रयोग तथा सभी प्रकार के आवश्यक रंग-निर्देश के कारण यह नाटक भारतेन्दु द्वारा प्रवर्तित साहित्यिक नाटकों की परम्परा से जुड़ जाता है।

2. काशी में नेशनल थियेटर की स्थापना के प्रेरक रहे.......

(a) डॉ. जगमोहन सिंह (b) प्रतापनारायण मिश्र

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

काशी की नाट्य संस्था -'नेशनल थियेटर' की मंडली ने 'अंधेर नगरी' नाटक का मंचन 1881 ई. में किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संस्था के संरक्षक थे। उन्होंने अभिनय में हिस्सा भी लिया था।

3. भारतेन्दु कालीन किस उपन्यास में आधुनिकता की शुरुआत मानी जाती है?

(a) रानी केतकी की कहानी (b) परीक्षा गुरु

(c) सौ अजान एक सुजान (d) चन्द्रकान्ता

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

भारतेन्दु युग में लेखकों को उपन्यास-रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी के उपन्यासों से प्राप्त हुई। अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। इससे पूर्व श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' (1877) शीर्षक नामक लघु सामाजिक उपन्यास लिखा था। अतः स्पष्ट है कि भारतेन्दु कालीन उपन्यास 'परीक्षा गुरु' से आधुनिकता की शुरुआत मानी जाती है। 'सौ अजान एक सुजान' (1892), बालकृष्ण भट्ट कृत तथा 'चन्द्रकान्ता' (1887) देवकीनन्दन खत्री कृत उपन्यास है।

4. 'तदीय समाज' से किसका सम्बन्ध था?

(a) केशवचन्द्र सेन (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(c) राजा राममोहन राय (d) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'भारतीय नवजागरण के अग्रदूत' के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों का अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। वे 'आधुनिक हिन्दी के पितामह' कहे जाते हैं। भारतेन्दु हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। उन्होंने वैष्णव भक्ति प्रचार के लिए 'तदीय समाज' की स्थापना की। इनका मूल नाम हरिश्चन्द्र था, उनकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने सन् 1880 में उन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि प्रदान की।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।

➲ हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बंगला के विद्यासुंदर (1867) नाटक के अनुवाद से होती है।

➲ उन्होंने सन् 1868 में 'कविवचनसुधा' नामक पत्रिका निकाली, 1876 में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन और फिर 'बालबोधिनी' नामक पत्रिकाएँ निकालीं।

5. 'नवजागरण का अग्रदूत' हिन्दी के किस लेखक को कहा जाता है?

(a) शिवप्रसाद सितारे हिंद (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(c) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) बाबू मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. ''अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।''
ये पंक्तियाँ किसके द्वारा लिखी गई हैं?

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) महावीरप्रसाद द्विवेदी

(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) प्रताप नारायण मिश्र

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

भारतेन्दु का काल ब्रिटिश उपनिवेश का था। ब्रिटिश उपनिवेश में भारत सभी दृष्टियों से परास्त हो गया। भारत को पूर्णतः मटियामेट कर यहाँ की सारी सम्पत्ति को अपने देश की ओर ले जाना ब्रिटिशों का एकमात्र लक्ष्य था। भारतेन्दु 'भारत-दुर्दशा' के पहले अंक में ही यह सूचित करते हैं-
''अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।''

7. 'धन्य भारत भूमि सब रतननि की उपजावनि' इस पंक्ति के लेखक हैं-

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिखायी, पर उनकी राष्ट्रीय भावना केवल यहीं तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजों की विचारधारा और देशभक्तिपूर्ण कविताओं से भी उन्होंने यथेष्ठ प्रेरणा ली, जिसका फल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ इसी तथ्य को स्पष्ट करती हैं। देश के उत्कर्ष-अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डाल कर इस युग (भारतेन्दु युग) के कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना के बीजवपन का महत्वपूर्ण कार्य किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ देशभक्ति की भावना बाद में मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भारत-भारती' में लक्षित हुई।

➲ भारतेन्दु की 'विजयिनी विजय वैजयन्ती', प्रेमघन की 'आनन्द अरुणोदय',प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' और 'नया संवत', राधाकृष्णदास की 'भारत बारहमासा' और 'विनय' शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त हैं।

➲ 'हमारो उत्तम भारत देश' काव्य पंक्ति राधा चरण गोस्वामी द्वारा रचित है, जो देशभक्ति भावना को परिलक्षित करती है।

➲ 'प्रेमघन' ने 'हार्दिक हर्षादर्श' कविता में भारत की शासनाधिकार लेने वाली महारानी विक्टोरिया के विषय में कहा है—''किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन।''

➲ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ''हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान'' का गुणगान किया।

➲ प्रेमघन ने 'राजभक्ति भारत सरिस और ठौर कहुँ नाहिं' कहकर विदेशी शासकों को आश्वस्त किया, तो अम्बिकादत्त व्यास ने 'जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश' द्वारा रानी विक्टोरिया के प्रति आभार प्रकट किया।

8. लाला श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर' की सच्ची समालोचना किसने की थी?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) भारतेन्दु

(c) बदरीनारायण चौधरी (d) बालकृष्ण भट्ट

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'हिन्दी प्रदीप' में 'संयोगिता स्वयंवर' की समीक्षा 'सच्ची समालोचना' शीर्षक से की गयी है। इसमें बालकृष्ण भट्ट ने इस नाटक के 'ऐतिहासिक' कहे जाने पर आपत्ति की है, क्योंकि इसकी कथावस्तु में उन्हें वस्तुनिष्ठता का अभाव प्रतीत हुआ है। निबन्ध के आरम्भ में ही वे लिखते हैं– ''लालाजी यदि बुरा न मानिये तो एक बात आप से पूछें वह यह कि आप ऐतिहासिक नाटक किस्को कहेंगे क्या केवल किसी पुराने समय के ऐतिहासिक पुनरावृत्त की छाया लेकर नाटक लिख डालने ही से वह ऐतिहासिक हो गया-क्या किसी विख्यात राजा या रानी के आने से ही वह ऐतिहासिक हो जाएगा यदि ऐसा है, तो गप्प हॉकने वाले दास्तानगो और नाटक के ढंग में कुछ भी भेद न रहा-किसी समय के लोगों के हृदय की क्या दशा थी उनके आभ्यान्तरिक भाव किस पहलू पर ढुलके हुये थे अर्थात् उस समय मात्र के भाव Spirit of the times क्या थे–इन सब बातों को ऐतिहासिक रीति पर पहले समझ लीजिये तब उसके दरसाने का भी यत्न नाटकों द्वारा कीजिये।'' तात्पर्य यह है कि 'संयोगिता स्वयंवर' ऐतिहासिक नाम वाले पात्रों को लेकर लिखा गया एक किस्सा है, ऐतिहासिक नाटक नहीं, क्योंकि इसमें लेखक ने अपने ऐतिहासिक बोध का परिचय नहीं दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतेन्दु युग में कुछ विस्तृत समीक्षाएँ भी लिखी गयीं। इनमें से जो दो सर्वाधिक प्रसिद्ध समीक्षाएँ हैं, वे लाला श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर' पर लिखी गयी हैं, जिसे लेखक ने 'ऐतिहासिक नाटक' कहा था। पहली समीक्षा 'हिन्दी प्रदीप' (अप्रैल, 1886) में निकली थी और दूसरी 'आनन्द कादम्बिनी' (माला-2, मेघ 10-11-12, 1886) में दोनों समीक्षाएँ एक ही वर्ष आगे-पीछे करके निकली थीं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि 'आनन्द कादम्बिनी' में प्रकाशित समीक्षा में 'हिन्दी प्रदीप' में प्रकाशित समीक्षा का हवाला दिया गया। दोनों समीक्षाओं में से किसी समीक्षा के साथ उसके लेखक के नाम का उल्लेख नहीं है, जिससे यह अनुमान होता है कि ये समीक्षाएँ स्वयं सम्पादकों द्वारा लिखी गयी हैं।
- बालकृष्ण भट्ट ने पं. किशोरीलाल गोस्वामी की कविता-पुस्तक 'समस्या-पूर्ति-मंजरी' की हिन्दी प्रदीप में समीक्षा करते हुए लिखा था– ''इसकी सम्पूर्ण कविताएँ केवल शृंगार रस की न हो थोड़ी-सी सामयिक देश भलाई के सम्बन्ध में भी होती, तो सोना और सुगन्धित कहा जाता।''
- इसी प्रकार उन्होंने शंकर दीक्षित नामक एक कवि की कविता पुस्तक 'माधुरी विलास' की समीक्षा करते हुए 'हिन्दी प्रदीप' में ही यह लिखा था ''देशोपकारी बातें पर यह कविता की जाती, तो अधिक लाभ था।''
- 'संयोगिता स्वयंवर' के कथोपकथन एक ओर आलंकारिक हैं और दूसरी ओर पाण्डित्यपूर्ण। भट्ट जी ने आलंकारिकता पर आक्षेप करते हुए कहा है–''केवल क्लिष्ट श्लेष बोलने ही से तो ऐतिहासिक नाटक के पात्र क्या वरन एक प्राकृतिक मनुष्य की भी पदवी हम आपके पात्रों को नहीं दे सकते-बल्कि मनुष्य के बदले आपके नाटकों को पात्रों के नीरस और रूखे से रूखे अर्थान्तरन्यास गढ़ने की कला कहें, तो अनुचित न होगा।''
- आनन्द कादम्बिनी में प्रकाशित समीक्षा ('प्रेमघन-सर्वस्व', द्वितीय) भट्ट जी की समीक्षा से भी बड़ी है। इसमें 'संयोगिता स्वयंवर' की समीक्षा 'संयोगिता स्वयंवर नाटक' के नाम से 'प्राप्ति स्वीकार वा समालोचना' स्तम्भ के अन्तर्गत की गयी है।
- 'प्रेमघन' ने 'हिन्दी प्रदीप' की समीक्षा पर अपना सन्तोष प्रकट करते हुए लिखा है–''नाट्य रचना के बहुतेरे शेष 'हिन्दी प्रदीप' ने अपनी 'सच्ची समालोचना' में दिखलाये हैं। अतः उसमें हम विस्तार नहीं देते; हम केवल यहाँ अलग-अलग उन दोषों को दिखलाना चाहते हैं कि जो प्रधान और विशेष हैं।''
- 'रणधीर प्रेममोहिनी' लाला श्रीनिवास दास का 'संयोगिता स्वयंवर' से पहले का नाटक है। यह नाटक भट्ट जी को पसन्द आया था। उनके अनुसार, ''ट्रेजेडी के किस्म का यह पहला नाटक है, जो हिन्दी भाषा में रचा गया है।'' इसमें शृंगार, हास्य और करुण तीनों रसों का उत्तम रीति से निर्वाह देखने को मिला था। इसके साथ-साथ इस नाटक में सदुपदेश भी थे और पात्रों का आदर्श एवं यथार्थ रूप में चित्रण भी।
- भारतेन्दु का नाटक 'नीलदेवी' के बारे में 'विषय, छन्द या गान' को भट्ट जी ने ऐसा 'उत्तेजक' बतलाया है, जिसे पढ़कर कायरों का जी भी फड़क उठे।

9. 'मेघदूत' काव्य का खड़ी बोली में अनुवाद किया है-

(a) सदल मिश्र ने (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने
(c) लल्लू लाल ने (d) राजा लक्ष्मण सिंह ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

भारतेन्दु युग के कवियों ने हिन्दी और ब्रजभाषा में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ संस्कृत की अनेक रचनाओं के अनुवाद भी किए। राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा अनूदित 'रघुवंश' और 'मेघदूत' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं, जिनमें भावान्तरण की सरसता, शैली की लालित्य, शुद्ध ब्रजभाषा तथा सवैया छन्द प्रस्तुत किया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ठाकुर जगमोहन सिंह द्वारा अनूदित रचनाएँ 'ऋतु संहार' और 'मेघदूत' विशेष उल्लेखनीय हैं।

10. शेक्सपीयर के सभी नाटकों का हिन्दी अनुवाद किसने किया है?

(a) मोहन राकेश (b) लाला सीताराम
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) जगनिक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

लाला सीताराम ने शेक्सपीयर की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है, जिनमें भूल भुलैया (1885) प्रमुख था। लाला सीताराम का उपनाम 'भूप' था। इन्होंने दोहा-चौपाई में अवधी भाषा का घनाक्षरी सवैया में ब्रजभाषा का और गद्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनका एक ग्रन्थ 'अयोध्या का इतिहास' बहुचर्चित है। इनकी कुछ कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। जैसे- बैरगिया नाला।

11. गोल्ड स्मिथ की कृति ट्रैवलर का अनुवाद किसने किया है?

(a) रामचरित उपाध्याय (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) श्रीधर पाठक (d) ठाकुर गोपाल शरण सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

श्रीधर पाठक ने कालिदास कृति 'ऋतुसंहार' और गोल्ड स्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेजटेंड', तथा 'द ट्रैवलर' का काव्यानुवाद क्रमशः 'एकान्तवासी योगी', 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रांत पथिक' नामक शीर्षक से किया।

12. भारतेन्दु का खड़ी बोली में रचित कविताओं का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है?

(a) फूलों का गुच्छा (b) प्रेमतरंग
(c) प्रेम सरोवर (d) प्रेम माधुरी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

भारतेन्दु द्वारा रचित खड़ी बोली में रचित कविताएँ 'फूलों का गुच्छा' नामक काव्य ग्रन्थ में संगृहीत हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी के प्रणेता, पितामह व प्रवर्तक माना जाता है।

13. निम्नलिखित में से भारतेन्दुकालीन कवि कौन से हैं?

(a) हरिश्चन्द्र, प्रेमघन, प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास
(b) हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पांडेय
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण, गोपालशरण सिंह
(d) मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

भारतेन्दुकालीन प्रमुख कवि इस प्रकार हैं- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास इत्यादि।

14. कौन-सा निबन्धकार भारतेन्दु युग का नहीं है?

(a) बालकृष्ण भट्ट (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) श्रीनिवास दास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

बालमुकुन्द गुप्त द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं। बालमुकुन्द की रचनाएँ 'शिवशम्भू का चिट्ठा' तथा 'चिट्ठे और खत' हैं। द्विवेदी युग के प्रमुख निबन्धकार-महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोविन्द नारायण मिश्र, माधव प्रसाद मिश्र, मिश्रबन्धु, गोपालराम गहमरी, सरदार पूर्ण सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकार-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन',लाला श्रीनिवास दास, जगमोहन सिंह आदि हैं।

15. भारतेन्दु ने अपना बलिया वाला ऐतिहासिक व्याख्यान दिया था-

(a) 1880 ई. में (b) 1874 ई. में
(c) 1884 ई. में (d) 1882 ई. में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए ददरी मेले का एक खास ऐतिहासिक महत्व है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने नवम्बर, 1884 में यहाँ एक व्याख्यान दिया था, जिसे 'बलिया व्याख्यान' या 'बलिया का भाषण' के नाम से जाना जाता है। यही व्याख्यान 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' शीर्षक से 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में दिसम्बर, 1884 में प्रकाशित हुआ।

16. समस्या पूर्ति किस युग की विशेषता है?

(a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
(c) छायावाद युग (d) प्रगतिवादी युग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

समस्या पूर्ति भारतेन्दु युग की काव्य शैली थी और उनके मंडल के कवि विविध विषयों पर तत्काल समस्या पूर्ति किया करते थे। रामकृष्ण वर्मा, प्रेमघन आदि कवि तत्काल समस्या पूर्ति के लिए प्रसिद्ध थे। भारतेन्दुकालीन कविता की मुख्य विशेषताएँ हैं—1. देश-भक्ति और राष्ट्रीय भावना, 2. जनवादी विचारधारा, 3. प्राचीन परिपाटी की कविता, 4. कलात्मकता का अभाव, 5. काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग, 6. हास्य-व्यंग्य एवं समस्या पूर्ति तथा 7. प्राचीन छन्द।

17. भारतेन्दु युग के नाटककार हैं -

(a) श्रीनिवास दास (b) प्रसाद

(c) हरिकृष्ण 'प्रेमी' (d) वृन्दावन लाल वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

भारतेन्दु युग के लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधा चरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, बाबू देवकीनन्दन खत्री और किशोरी लाल गोस्वामी आदि उल्लेखनीय हैं। हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले लाला श्रीनिवास दास को हिन्दी में आधुनिक ढंग का पहला उपन्यास 'परीक्षा गुरु' लिखने का गौरव प्राप्त है। उपन्यास के अतिरिक्त नाटक के क्षेत्र में भी उन्हें भरपूर ख्याति मिली। श्रीनिवास जी के प्रमुख नाटक-प्रह्लाद चरित्र, तप्ता संवरण, रणधीर और प्रेममोहिनी तथा संयोगिता स्वयंवर आदि हैं।

18. भारतेन्दु युग का कौन-कवि पुष्टिमार्ग में दीक्षित था?

(a) बालकृष्ण भट्ट (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(c) प्रेमघन (d) प्रतापनारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

हिन्दी के कृष्णभक्त कवियों में विद्यापति, सूरदास आदि अष्टछाप के कवि, रहीम, रसखान, मीराबाई, बिहारी, चाचा हितहरिवंश, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, जगन्नाथदास रत्नाकर, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', धर्मवीर भारती आदि के नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत विकल्प में भारतेन्दु युग के कवियों में केवल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुष्टिमार्ग में दीक्षित तथा कृष्ण भक्त थे।

19. गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करने वाले-कलम की कारीगरी समझने वाले-लेखक थे—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गोविन्दनारायण मिश्र

(c) बदरीनाथ भट्ट (d) बदरीनारायण चौधरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि पण्डित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की शैली सबसे विलक्षण थी। ये गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करने वाले–कलम की कारीगरी समझने वाले लेखक थे और कभी-कभी ऐसे पेचीदे मजमून बाँधते थे कि पाठक एक-डेढ़ कॉलम के लम्बे वाक्य में उलझा रह जाता था। अनुप्रास और अनूठे पदविन्यास की ओर भी उनका ध्यान रहता था। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत सौभाग्य, प्रयाग रामागमन 'प्रेमघन' जी के प्रसिद्ध नाटक हैं।
- 'प्रेमघन' ने 'जीर्ण जनपद' नामक एक काव्य लिखा है, जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण है।

20. नीचे दो वक्तव्य दिये गये है, इनमें से एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है।

कथन (A) : भारतेन्दु युग के आते-आते हिन्दी में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हो गया था।

कारण (R) : भारतेन्दु युग के सभी लेखक पत्रकार थे। उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में से ही उत्तर चुनिये।

(a) (A) सही और (R) गलत है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

(b) (A) गलत और (R) सही है, दोनों एक-दूसरे के पूरक नहीं हैं।

(c) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।

(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कथन (A) की सही व्याख्या कारण (R) है।

❑ द्विवेदी युग

1. 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है?

(a) शान्तिप्रिय द्विवेदी

(b) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(d) डॉ. राम अवध द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2004, 2005

उत्तर—(b)

आधुनिक कविता के दूसरे पड़ाव (सन् 1903 से 1916) को द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। यह आधुनिक कविता के उत्थान व विकास का काल है। सन् 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका के सम्पादक बने। द्विवेदी जी ने खड़ी बोली को शुद्ध व्याकरण-सम्मत और व्यवस्थित बनाकर साहित्य के सिंहासन पर बैठने योग्य बनाया। अब वह ब्रजभाषा रानी की युवराज्ञी न रहकर स्वयं साहित्यिक जगत की साम्राज्ञी बन गयी। यह कार्य द्विवेदी जी के महान व्यक्तित्व से ही सम्पन्न हुआ और इस काल का कवि-मंडल उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके बताये मार्ग पर चला। इसीलिए इस युग को 'द्विवेदी युग' का नाम दिया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा 'शंकर', सत्यनारायण 'कविरत्न', गोपालशरण सिंह आदि हैं।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्य सेवा को देखते हुए सन् 1931 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें आचार्य की उपाधि प्रदान की।

2. 'द्विवेदी युग' नामकरण किसके नाम के आधार पर किया गया है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) शान्तिप्रिय द्विवेदी (d) मन्नन द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'द्विवेदी युग' का नामकरण किस रचनाकार के नाम के आधार पर किया गया?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) सुधाकर द्विवेदी

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) मन्नन द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. द्विवेदी युग का एक और नाम है -

(a) संक्रांति काल (b) संधिकाल

(c) जागरण-सुधारकाल (d) गद्यकाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधारकाल' भी कहा जाता है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने आदिकाल को सन्धिकाल तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्यकाल कहा है।

5. द्विवेदी युग का वह साहित्यकार, जिन्हें 'कविता-कामिनी-कांत', 'भारतेन्दु प्रज्ञेन्दु', 'साहित्य सुधाकर' उपाधियों से विभूषित किया गया था—

(a) नाथूराम शर्मा शंकर (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

द्विवेदी युग के कवि नाथूराम शर्मा शंकर ब्रजभाषा के कवि थे, किन्तु शीघ्र ही खड़ी बोली की ओर झुक गये थे। इन्होंने राजा रवि वर्मा के चित्रों के आधार पर कविताएँ लिखी हैं। ये समस्यापूर्ति में बड़े कुशल थे। इन्हें 'कविता-कामिनी-कांत', 'भारतेन्दु प्रज्ञेन्दु', 'साहित्य सुधाकर' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया था। 'अनुराग रत्न', 'शंकर सरोज', 'गर्भरंडा-रहस्य तथा 'शंकर-सर्वस्व' इनके प्रमुख काव्य ग्रन्थ हैं। ये प्रायः अतिशयोक्तिपूर्ण कविता लिखते थे।

6. ''ज्ञानराशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है।'' यह उक्ति किस साहित्यकार की है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) नन्ददुलारे वाजपेयी

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर 'द्विवेदी युग' कहा जाता है। वे साहित्य को 'ज्ञान राशि का संचित कोष' मानते थे। वे भाषा और साहित्य के व्यवस्थापक थे। उन्होंने सरस्वती पत्रिका को इस व्यवस्थापन का माध्यम बनाया।

7. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी रचित 'अर्थशास्त्र' विषय का ग्रन्थ है-

(a) अर्थशास्त्र की भूमिका (b) आर्थिक व्यवस्था

(c) भारतीय अर्थनीति (d) सम्पत्तिशास्त्र

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' विषय का ग्रन्थ है- सम्पत्तिशास्त्र। यह पुस्तक सन् 1908 में प्रकाशित हुई, जो भारत के आर्थिक-राजनीतिक यथार्थ का अभूतपूर्व चित्र प्रस्तुत करती है।

8. 'सम्पत्तिशास्त्र' के लेखक हैं—

(a) श्रीधर पाठक (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. सम्पत्तिशास्त्र के लेखक का नाम है—

(a) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(d) बाबू श्यामसुन्दर दास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'जूही की कली' कविता को किस सम्पादक ने अपने पत्र में बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था?

(a) गोपालदास गहमरी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) बनारसीदास चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक नेतृत्व के उत्कर्ष काल में निराला का साहित्यिक जीवन शुरू होता है। निराला की 'जूही की कली' (1916) मुक्त छन्द की कविता महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने पत्र में बिना प्रकाशित किये ही लौटा दी। निराला 'समन्वय' पत्र से जुड़े। बाद में 'सुधा' एवं 'मतवाला' से भी जुड़े। मतवाला से उनका संघर्ष भी रहा।

11. 'निराला की कविता 'जूही की कली' को किस संपादक ने बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था?

(a) श्यामसुन्दर दास (b) बालमुकुंद गुप्त
(c) प्रेमचन्द (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. ''अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।'' किसने कहा है?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुन्दर दास (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि कविता अन्तःकरण की वृत्तियों का चित्र बन जाती है या रामचन्द्र शुक्ल को याद करें, तो उन्होंने कहा था कि जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है, तो हृदय की मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, वह कविता है।

13. इनमें से कौन द्विवेदी युग का कवि नहीं है?

(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(b) सोहनलाल द्विवेदी
(c) रामनरेश त्रिपाठी
(d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सोहनलाल द्विवेदी, द्विवेदी युग के कवि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत एवं प्रमुख गाँधीवादी कवि हैं। द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा 'शंकर', गोपाल शरण सिंह, जगन्नाथ दास रत्नाकर आदि हैं।

14. द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ प्रगीतकार माने जाते हैं-

(a) रूपनारायण पाण्डेय (b) लोचन प्रसाद पाण्डेय
(c) मुकुटधर पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुज मुकुटधर पाण्डेय भी सुकवि थे। वे प्रकृति के उपासक थे। इनके काव्य में भावात्मकता, आन्तरिक संवेदना और रहस्यात्मक अनुभूति के दर्शन होते हैं। ये द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ प्रगीतकार माने जाते हैं। वस्तुतः इनके काव्य में छायावाद का पूर्वाभास मिलता है। 'पूजाफूल' तथा 'कानन-कुसुम' इनके प्रकाशित काव्य संकलन हैं।

15. छायावाद का पूर्वाभास किस कवि की रचनाओं में प्रकट हुआ?

(a) मुकुटधर पाण्डेय (b) रूपनारायण पाण्डेय
(c) लोचन प्रसाद पाण्डेय (d) श्याम नारायण पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. किस कवि की रचनाओं में छायावाद का पूर्वाभास संलक्षित हुआ?

(a) रूपनारायण पाण्डेय (b) डॉ.गोपाल शरण
(c) मुकुटधर पाण्डेय (d) लोचन प्रसाद पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है-

(a) कविता कौमुदी (b) ऊद्धव चरित
(c) प्रियप्रवास (d) लोकायतन

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रियप्रवास' संस्कृत की समस्त तथा कोमल-कान्त पदावली से अलंकृत एवं संस्कृत वर्णवृत्तों में लिखित हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है, यह सत्रह सर्गों में विभक्त है। इसमें शृंगार और करुण रस की प्रधानता है। रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'प्रियप्रवास' को महाकाव्य नहीं माना है। 'हरिऔध' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। गद्य और पद्य में उनका समान अधिकार था। कुल मिलाकर उनकी 51 रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हरिऔध जी ने जहाँ 'चोखे चौपदे' में मुहावरों के बाहुल्य तथा लोकभाषा के समावेश का प्रयास किया, वहीं 'वैदेही वनवास' की रचना द्वारा एक और प्रबन्ध सृष्टि का प्रयत्न किया।
- अपने काव्य संग्रह 'रसकलश' को ब्रजभाषा में लिखकर यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा पर भी उनकी अच्छी पकड़ है।
- हरिऔध जी ने दो नाटक 'प्रद्युम्न विजय' (1893) तथा 'रुक्मणी परिणय' (1894) भी लिखे।
- सन् 1894 में इनका प्रथम उपन्यास 'प्रेमकान्ता' प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात दो और उपन्यास 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899)तथा 'अधखिला फूल' (1907) भी प्रकाशित हुआ।
- हरिऔध जी की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं—रसिक रहस्य (1899), प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेम प्रपंच (1900), प्रमाम्बु प्रश्रवण, प्रेमाम्बु प्रवाह (1901), प्रेम पुष्पहार (1904), उद्‌बोधन (1906), काव्योपवन (1909), कर्मवीर (1916), ऋतु मुकुर (1917), पद्मप्रसून (1925) तथा पद्मप्रमोद।
- कल्पलता, बोलचाल, पारिजात तथा हरिऔध सतसई जैसे मुक्तक काव्य के अलावा कबीर वचनावली, साहित्य सन्दर्भ तथा हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आलोचनात्मक कृतियों की रचना भी हरिऔध जी ने की थी।
- सन् 1924 में इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान पद को भी सुशोभित किया।
- खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय 'हरिऔध' जी को है।

18. खड़ी बोली हिन्दी का आधुनिककालीन प्रथम महाकाव्य है—

(a) साकेत (b) प्रियप्रवास
(c) भारत भारती (d) कुरुक्षेत्र

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'हरिऔध' के 'प्रियप्रवास' महाकाव्य में सर्गों की संख्या है—

(a) 17 (b) 19
(c) 21 (d) 23

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा लिखित काव्य ग्रन्थ है—

(a) पथिक (b) कनुप्रिया
(c) चोखे चौपदे (d) वासवदत्ता

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'वैदेही वनवास' नामक काव्य लिखा है—

(a) देव (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
(c) बदरीनारायण चौधरी (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'वैदेही वनवास' के लेखक हैं—

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
(c) गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (d) रामनरेश त्रिपाठी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. खड़ी बोली में प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' के रचयिता हैं-

(a) भारतेन्दु हरिचन्द्र
(b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) माखनलाल चतुर्वेदी
(d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है—

(a) कामायनी (b) रामचरितमानस
(c) साकेत (d) प्रियप्रवास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना 'अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध' की नहीं है?

(a) विचित्र विवाह (b) वैदेही वनवास
(c) चोखे चौपदे (d) चुभते चौपदे

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'विचित्र विवाह', 'राष्ट्र भारती', 'देवदूत', 'देवसभा' रामचरित उपाध्याय की कृति है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'रामचरितचिंतामणि' नामक प्रबंध काव्य की भी रचना की है। शेष कृतियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की हैं।

26. ''दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।।
तरु शिखा पर थी जब राजती।
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।।''
काव्य पंक्तियों का सम्बन्ध है—

(a) आँसू से (b) परिवर्तन से
(c) प्रियप्रवास से (d) किसान से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' के प्रथम सर्ग से अवतरित हैं।

27. द्विवेदी युग की कविता है—

(a) उपदेशात्मक एवं इतिवृत्तात्मक
(b) प्रकृति चित्रात्मक
(c) नव जागरण परक
(d) नारी चेतनात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि सामान्यतः द्विवेदीयुगीन काव्य को नीरस, इतिवृत्तात्मक और उपदेशात्मक कहा जाता है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

28. 'इतिवृत्तात्मकता' किस काव्य युग की प्रमुख विशेषता है?

(a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
(c) शुक्ल युग (d) छायावादी युग

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. द्विवेदी युगीन साहित्य में किस प्रवृत्ति की प्रमुखता नहीं है?

(a) गद्यात्मकता (b) काव्यात्मकता
(c) वैचारिकता (d) इतिवृत्तात्मकता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

काव्यात्मकता द्विवेदी युगीन साहित्य की प्रवृत्ति की प्रमुखता नहीं है। शेष द्विवेदी युगीन प्रवृत्ति की प्रमुखता है।

30. भारत-भारती का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

(a) 1912 ई. (b) 1914 ई.
(c) 1916 ई. (d) 1918 ई.

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

3 अगस्त, 1886 को झाँसी (उ.प्र.) के चिरगाँव में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के सर्वाधिक प्रभावी तथा लोकप्रिय रचनाकारों में से एक हैं। इनकी कविताओं में बौद्ध दर्शन, महाभारत, रामायण आदि के कथानक स्वतः उतर आते हैं। हिन्दी की खड़ी बोली के रचनाकार गुप्त जी हिन्दी कविता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के समान हैं। उन्होंने सन् 1912 में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत 'भारत-भारती' का प्रकाशन किया, जो तीन खण्डों में है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ गाँधीजी ने मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा दी।
➲ गुप्त जी को सन् 1954 में पद्मभूषण प्रदान किया गया।
➲ 'साकेत' इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है, जिसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को नायिका बनाकर रामकथा कही गयी है।
➲ इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-जयद्रथ वध,विकट भट, गुरुकुल, किसान, सिद्धराज, जयभारत, द्वापर, वैतालिक, कुणाल, यशोधरा, पंचवटी, हिडिम्बा, अर्जन-विसर्जन, काबाकर्बला तथा साकेत (महाकाव्य)।
➲ गुप्त जी द्वारा अनूदित काव्य हैं-'प्लासी का युद्ध','मेघनाद वध','वृत्र-संहार।
➲ 'यशोधरा' की नायिका गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा हैं।
➲ 'किसान' में एक सामान्य किसान के जीवन-संघर्ष की कथा है।
➲ 'रंग में भंग' राजपूत आन की कथा है।
➲ 'जयिनी' मार्क्स की पुत्री जैनी पर रचित प्रबन्ध काव्य है।
➲ मैथिलीशरण गुप्त की प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किन्तु इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत-भारती' (1912) है।
➲ गुप्त जी ने 'तिलोत्तमा','चन्द्रहास' और 'अनघ' नामक तीन नाटक, प्रायः सभी प्रकार के प्रगीत और मुक्तक भी लिखे हैं। मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध रामभक्त कवि थे।
➲ गुप्त जी की प्रारम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थीं। बाद में इनका परिचय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ और इनकी कविताएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगीं।

31. 'भारत-भारती' में किस भावना की रूपरेखा प्रस्तुत है?

(a) दैन्य भावना (b) राष्ट्रीय भावना
(c) प्रेम भावना (d) भक्ति भावना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. राजपूती आन की कथा है-

(a) सिद्धराज (b) रंग में भंग
(c) पंचवटी (d) साकेत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'चिरगाँव' किस कवि का जन्म स्थान है?
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) सुमित्रानन्दन पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'किसान' के रचनाकार हैं-
(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) निराला
(c) हरिऔध (d) प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. रंग में भंग नामक काव्य कृति के रचयिता हैं—
(a) भिखारीदास (b) मलूकदास
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. निम्नलिखित में से एक मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचना नहीं है—
(a) सिद्धराज (b) जयभारत
(c) हिडिम्बा (d) कृषक-क्रन्दन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'जयद्रथ-वध' क्या है?
(a) महाकाव्य (b) प्रबन्ध काव्य
(c) खण्डकाव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'जयद्रथ-वध' का प्रकाशन 1910 ई. में हुआ था। मैथिलीशरण गुप्त की प्रारम्भिक रचनाओं में 'भारत-भारती' को छोड़कर 'जयद्रथ-वध' की प्रसिद्धि सर्वाधिक रही। हरिगीतिका छन्द में रचित यह एक खण्डकाव्य है।

38. साकेत महाकाव्य का सर्वाधिक मार्मिक सर्ग है—
(a) षष्ठ (b) सप्तम्
(c) अष्टम् (d) नवम्

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत महाकाव्य का नवम् सर्ग सर्वाधिक मार्मिक है। साकेत में 12 सर्ग हैं, जिसका रचनाकाल 1916-1932 ई. है। साकेत की सम्पूर्ण कथा का केन्द्र बिन्दु 'उर्मिला' है। आरम्भ में इसका नाम उर्मिला-उत्ताप अर्थात् उर्मिला-काव्य रखा गया, क्योंकि महाकवि रबीन्द्रनाथ ने बंगला-भाषा में लिखे गये अपने निबन्ध 'काव्येर उपेक्षिता' में राम-कथा में अव्यक्त वेदना-देवी उर्मिला के प्रति भारतीय कवियों की उपेक्षा की ओर ध्यान आकृष्ट किया था और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' लेख द्वारा हिन्दी कवियों से अनुरोध किया था कि वे इस उपेक्षा को दूर करें। अपने काव्य-गुरु द्विवेदी जी से संकेत पाकर गुप्त जी ने 'साकेत' लिखना शुरू कर दिया।

39. 'साकेत' की कथा का मुख्य सम्बन्ध किसके चरित्र विकास से जुड़ा है?
(a) राम और सीता के (b) लक्ष्मण और उर्मिला के
(c) भरत और माण्डवी के (d) लक्ष्मण और सीता के

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'साकेत' की कथा का मुख्य सम्बन्ध उर्मिला और लक्ष्मण के चरित्र से जुड़ा है। यह मैथिलीशरण गुप्त का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इसकी कथा साकेत (अयोध्या) को केन्द्र मानकर लिखी गयी है। इस काव्य का प्रारम्भ अयोध्या के राजभवन में होने वाले लक्ष्मण-उर्मिला के विनोद से होता है। यह विशद प्रबन्ध काव्य है। इसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को नायिका बनाकर राम कथा कही गयी है। 'साकेत' रचना की मूल प्रेरणा गुप्त जी को महावीर प्रसाद द्विवेदी के एक लेख 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' से मिली, जो 'सरस्वती' में 1908 ई. की जुलाई में भुजंगभूषण भट्टाचार्य के छद्म नाम से छपा था।

40. मैथिलीशरण गुप्त ने इतिहास के उपेक्षित नारी पात्र को निम्न पुस्तक में प्रतिष्ठित किया—
(a) भारत-भारती (b) रंग में भंग
(c) द्वापर (d) साकेत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. द्विवेदी युग के सम्पूर्णतः प्रतिनिधि कवि हैं-
(a) श्रीधर पाठक (b) हरिऔध
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है, ''गुप्तजी की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है।'' कालानुसरण की क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिन्दी-भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निस्सन्देह कहे जा सकते हैं। भारतेन्दु के समय से स्वदेश-प्रेम की भावना जिस रूप में चली आ रही थी, उसका विकास 'भारत-भारती' में मिलता है। इधर के राजनीतिक आन्दोलनों ने, जो रूप धारण किया उसका पूरा आभास पिछली रचनाओं में मिलता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानों एवं श्रमजीवियों के प्रति प्रेम एवं सम्मान सबकी झलक हम पाते हैं।'' अतः द्विवेदी युग के सम्पूर्णतः प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

❑ छायावाद

1. 'छायावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस आलोचक ने किया था?

(a) मुकुटधर पाण्डेय (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नामवर सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'छायावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय ने किया। 'छायावाद' सिद्ध करने में पं. मुकुटधर पाण्डेय के 'श्री शारदा' में प्रकाशित लेखमाला की अहम भूमिका रही। पं. मुकुटधर पाण्डेय की 'सरस्वती' में प्रकाशित कविता 'कुकरी के प्रति' को प्रथम छायावादी कविता माना गया एवं समस्त हिन्दी साहित्य जगत ने इसे स्वीकार भी किया। इसमें छायावाद के सभी तत्व समाहित थे। सन् 1916 में इनकी पहली कविता संग्रह 'पूजा के फूल' का प्रकाशन हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-शैलबाला (1916), लच्छमा (1917), परिश्रम (1917), हृदयदान (1918), मामा (1918) आदि।

2. 'छायावाद' शब्द प्रयोग सबसे पहले किया था-

(a) राम विलास शर्मा (b) मुकुटधर पाण्डेय
(c) नामवर सिंह (d) जयशंकर प्रसाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. छायावादी युग का प्रवर्तक किसे कहा जाता है?

(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) महादेवी वर्मा (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

छायावाद के प्रवर्तक के सम्बन्ध में एक लम्बा विवाद है। डॉ. गंगा प्रसाद पाण्डेय, निराला की 'जूही की कली' (1916) के साथ इस युग के प्रवर्तक महाप्राण निराला को मानते हैं। छायावाद का काल 1918-1938 ई. तक माना जाता है। अधिकतर विद्वान 'प्रसाद' की 'झरना' (1918) से इस युग की शुरुआत मानते हैं। चूँकि इस युग में प्रसाद का आगमन पहले हुआ और छायावाद की भी यहीं से शुरुआत मानी जाती है। अतः जयशंकर प्रसाद को 'छायावाद का प्रवर्तक' माना जा सकता है।

4. छायावाद की पहली रचना मानी जाती है-

(a) पल्लव (b) लहर
(c) कामायनी (d) झरना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आधुनिक काल की किस काव्यधारा में 'रहस्यवाद' की भावना पायी जाती है?

(a) द्विवेदी युग (b) छायावाद
(c) प्रगतिवाद (d) प्रयोगवाद

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

आधुनिक काल की 'छायावाद' काव्यधारा में रहस्यवाद की भावना पायी जाती है। छायावाद दो अर्थों में प्रयुक्त किया गया-रहस्यवाद के अर्थ में और शैली विशेष या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 1916 के आस-पास हिन्दी में कल्पनापूर्ण स्वच्छन्दता और भावुकता की एक लहर उमड़ी। भाव, भाषा, शैली, छन्द, अलंकार सभी दृष्टियों से पुरानी कविता से इसका कोई मेल न था। आलोचकों ने इसे छायावाद या छायावादी कविता का नाम दिया।

6. छायावाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हो सकती हैं -

1. विशेषण विपर्यय **2. स्वच्छन्द भावावेश**
3. मूर्ति विधान **4. इतिवृत्तात्मकता**

इनमें से कौन-सा विकल्प सही है?

(a) 1, 2 और 3 (b) 1, 3 और 4
(c) 1, 2 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'छायावाद' के अर्थ-निर्धारण के संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सीमित अर्थ में एक शैली विशेष माना है, जिसमें लाक्षणिक मूर्तिमत्ता, प्रतीक-विधान, विरोध चमत्कार, विशेषण-विपर्यय, मानवीकरण, अन्योक्ति विधान आदि पर बल रहता है। 'छायावाद' के व्यापक अर्थ में उन्होंने रहस्यवाद को भी समाविष्ट किया है। जयशंकर प्रसाद ने छायावाद में स्वानुभूति की विवृत्ति पर बल दिया। छायावाद के विवेचन के प्रसंग में स्वच्छन्दावादी प्रवृत्ति का भी उल्लेख मिलता है। इतिवृत्तात्मकता द्विवेदी युग की विशेषता है।

7. चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली किस युग की कविता की विशेषता है?

(a) छायावाद (b) प्रगतिवाद
(c) प्रयोगवाद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत, गेय तथा संगीतात्मक हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैलियों को अपनाकार छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया है। प्रभावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया। अलंकारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय जैसे नए अलंकारों का उदय एवं प्रचुर प्रयोग हुआ। भाषा (खड़ी बोली) को सँवारने, उसमें ब्रजभाषा-जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ाने का समस्त श्रेय इस युग को ही दिया गया है।

8. छायावाद में 'वक्रता का वैभव' मिलता है। 'प्रसाद' के काव्य में निम्नलिखित में से किसका उत्कर्ष मिलता है?

(a) विदग्धता (b) अभिव्यंजना
(c) चारुता (d) चमत्कार

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

अभिव्यंजना की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद के काव्य की गरिमा अपरिमित है, वस्तु का मार्मिक एवं पूर्ण अन्तःसाक्षात्कार तभी सम्भव है, जब अभिव्यंजना के सूक्ष्म प्रसाधनों का प्रयोग कौशलपूर्ण हो। यह तथ्य भी सही है कि अभिव्यंजना साधन मात्र है, साध्य वास्तविक वस्तु ही होती है। प्रसाद के काव्य में ध्वनि, रीति, गुण, वक्रोक्ति, औचित्य आदि तत्वों से युक्त होकर अभिव्यंजना ने अपना स्वरूप ग्रहण किया है। 'आँसू' में प्रसाद की अन्तर्भावनाओं की जैसी अभिव्यक्ति हुई है, वैसी अन्यत्र विरल है। कामायनी में एक प्रौढ़ विद्वता झलकती है। अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने में प्रसाद की कला अतुलनीय रही है। प्रसाद की लाक्षणिकता बेजोड़ है। प्रसाद की कविताएँ माधुर्य रस से भरी हुई हैं। परम्परा से कटकर, हटकर और ऊपर उठकर प्रसाद ने अपनी कविता की भावभूमि का निर्माण किया है।

9. आधुनिक काल के तीसरे उत्थान की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति है-

(a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) हालावाद (d) छायावाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को दो खण्डों में विभाजित किया है- गद्य खण्ड और काव्य खण्ड। दोनों खण्डों को दो-दो प्रकरणों में बांटा गया है। गद्य के पहले प्रकरण में ब्रजभाषा गद्य और खड़ी बोली गद्य का विवेचन तथा दूसरे प्रकरण में गद्य-साहित्य का आविर्भाव विश्लेषित है। काव्य खण्ड में भी दो प्रकरण हैं- पुरानी काव्य धारा और नयी धारा। नयी धारा के भी तीन उत्थान हैं- प्रथम, द्वितीय और तृतीय। काव्य खण्ड के दूसरे प्रकरण के तृतीय उत्थान को काव्य में 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया जाता है।

10. जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' की भाषा है-

(a) सधुक्कड़ी (b) अवधी
(c) ब्रजभाषा (d) खड़ी बोली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' की भाषा खड़ी बोली है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य 'मनु' और 'श्रद्धा' को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। यह रूपक कथाकाव्य भी है। उनकी यह कृति छायावाद और खड़ी बोली की काव्य गरिमा का ज्वलन्त उदाहरण है। सुमित्रानन्दन पन्त इसे 'हिन्दी में ताजमहल के समान' मानते हैं।

11. 'कामायनी' को 'छायावाद का उपनिषद्' किसने कहा है?

(a) डॉ. नगेन्द्र ने (b) मुक्तिबोध ने
(c) डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने (d) शान्तिप्रिय द्विवेदी ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' (1935 ई.) छायावादी शैली का प्रथम महाकाव्य है। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने 'कामायनी' को 'छायावाद का उपनिषद्' कहा है। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने 27 कृतियाँ लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं- परिचय, नीरव, हिमानी, हमारे साहित्य निर्माता, युग और साहित्य, सामयिकी, धरातल, जीवन-यात्रा, परिव्राजक की प्रजा, वृन्त और विकास, कवि और काव्य, परिक्रमा, चित्र और चिंतन एवं स्मृतियाँ और कृतियाँ।

12. कामायनी में श्रद्धा किसका प्रतीक है?

(a) तन का (b) मन का

(c) हृदय का (d) बुद्धि का

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

कामायनी में मनु, श्रद्धा और इड़ा, क्रमशः मन, हृदय और बुद्धि के प्रतीक हैं। कामायनी अपनी मूल कथा और उससे व्यंजित होने वाले तात्पर्य दोनों की दृष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ रचना है। 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद कृत एक महाकाव्य है। इसकी प्रधान पात्र श्रद्धा है। काम की पुत्री होने के कारण उसका दूसरा नाम कामायनी भी है। प्रसाद जी ने इस गरिमामयी नारी को सम्मान देने के लिये ही अपने महाकाव्य का नाम कामायनी रखा है। इसकी कथा का आधार ऋग्वेद, छांदोग्य उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण और श्रीमद्भागवत है।

13. 'कामायनी' की श्रद्धा.........का प्रतीक है।

(a) बुद्धि (b) मन

(c) हृदय (d) आनन्द

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. जयशंकर प्रसाद की किस कृति को पहले ब्रजभाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में रूपान्तरित कर दिया गया?

(a) प्रेम पथिक (b) कानन कुसुम

(c) झरना (d) आँसू

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की रचना 'प्रेम पथिक' (1913) पहले ब्रजभाषा में की गई थी, किन्तु बाद में उसे खड़ी बोली में रूपान्तरित कर दिया गया। यह भी उल्लेखनीय है कि 'कानन कुसुम' और 'झरना' के परवर्ती संस्करणों में कवि ने कुछ नई कविताओं का समावेश किया तथा 'आँसू' में चौसठ छन्द और जोड़ दिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जयशंकर प्रसाद की प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं–उर्वशी (1909), वनमिलन (1909), प्रेम राज्य (1909), अयोध्या का उद्धार (1910), शोकोच्छ्वास (1910), वभ्रुवाहन (1911), कानन कुसुम (1913), करुणालय (1913), महाराणा का महत्व (1914), झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933) और कामायनी (1935)।

15. 'आँसू' है-

(a) मुक्तक काव्य संकलन (b) अतुकान्त काव्य

(c) प्रबन्ध काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'आँसू' विरह काव्य है, जिसमें प्रेमी की अतीत की मादक स्मृतियों की याद में अपनी आन्तरिक ज्वाला, विषाद और वेदना का इजहार है। स्मृति के रूप में प्रायः तीन वस्तुओं का उल्लेख हुआ है-प्रिय के शारीरिक सौन्दर्य और परिम्भ-कुम्भ की मदिरा तथा निःश्वास मलय के झोंके का।

16. जयशंकर प्रसाद की कृतियाँ किस विकल्प में हैं?

(a) नीरजा, सांध्यगीत, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी

(b) झरना, लहर, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त

(c) परिमल, गीतिका, प्रबन्ध पद्म, तुलसीदास

(d) पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत कृतियाँ जयशंकर प्रसाद की हैं। विकल्प (a) की कृतियाँ महादेवी वर्मा की, विकल्प (c) की कृतियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की तथा विकल्प (d) की कृतियाँ सुमित्रानन्दन पन्त की हैं।

17. निम्नलिखित में से किस कृति के लेखक जयशंकर प्रसाद नहीं हैं?

(a) कानन कुसुम (b) ध्रुवस्वामिनी

(c) चारुचन्द्र लेख (d) तितली

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'चारुचन्द्र लेख' के लेखक जयशंकर प्रसाद नहीं, बल्कि हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ हैं-बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, कुटज, विचार प्रवाह, अशोक के फूल, कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क इत्यादि। कानन कुसुम, ध्रुवस्वामिनी और तितली जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'कबीर' नामक कृति पर हजारी प्रसाद द्विवेदी को मंगला प्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ।
- साहित्य समिति इन्दौर ने हजारी प्रसाद द्विवेदी को 'सूर साहित्य' पर स्वर्ण-पदक से सम्मानित किया।
- विश्व-भारती का सम्पादन कार्य भी इन्होंने किया।

18. निम्न में से कौन-सी कृति जयशंकर 'प्रसाद' की नहीं है?

(a) कानन कुसुम (b) दीपशिखा
(c) झरना (d) कामायनी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'दीपशिखा' जयशंकर प्रसाद की कृति नहीं, बल्कि महादेवी वर्मा की रचना है। जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ हैं-कानन कुसुम, वनमिलन, प्रेमाश्रय, प्रेम पथिक, रघुवंश कमाल, छोटा जादूगर, आँधी, अघोरी का मोह, अपराधी, इंद्रजाल, पुरस्कार, गुंडा, आकाशदीप आदि।

19. निम्न में से कौन-सी रचना महादेवी वर्मा की नहीं है?

(a) यामा (b) दीपशिखा
(c) आँगन के पार द्वार (d) नीरजा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'आँगन के पार द्वार' महादेवी वर्मा की रचना नहीं, बल्कि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की है। 'अज्ञेय' की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-अरी ओ करुणा प्रभामय, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्र धनु रौंदे हुए ये, पूर्वा, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, बावरा अहेरी, इत्यलम, चिन्ता, पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं-नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, यामा तथा हिमालय इत्यादि।
- 'नीहार' महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं।
- प्रसाद, पन्त, निराला तथा महादेवी वर्मा 'छायावाद युग' के इन चार महान् कवियों को 'बृहत चतुष्टयी' के नाम से जाना जाता है।
- महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' अलंकार से सम्मानित किया।
- इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित हुईं।
- काव्यात्मक प्रतिभा के लिए इन्हें 'सेकसरिया' एवं 'मंगला प्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।
- महादेवी वर्मा को 'ज्ञानपीठ' एवं 'भारत-भारती' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।
- महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.) का जन्म फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ।
- ये आरम्भ में ब्रजभाषा में कविता लिखती थीं, बाद में खड़ी बोली में लिखने लगीं।
- ये एक कुशल चित्रकार भी थीं।

20. 'नीहार' की रचना किसने की है?

(a) महादेवी वर्मा (b) अज्ञेय
(c) दिनकर (d) पन्त

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य संकलन है—

(a) दीपशिखा (b) यामा
(c) नीहार (d) रश्मि

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'सप्तपर्णा' किसकी कृति है?

(a) निराला (b) प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कौन-सा कवि छायावादी नहीं है?

(a) निराला (b) पन्त
(c) प्रसाद (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. छायावाद के प्रमुख कवियों में किसमें गीतों की मधुर वेदना की मर्माभिव्यक्ति अधिक है?

(a) प्रसाद (b) पन्त
(c) महादेवी (d) निराला

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

छायावाद के प्रमुख कवियों में महादेवी वर्मा के गीतों में मधुर वेदना की मर्माभिव्यक्ति अधिक है। उनके विविध गीतों में व्यथा, पीड़ा, आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय-निवेदन और साधना की विविध अनुभूतियों के स्वर मुखरित हुए हैं। उन्होंने अनुभूति को विचार से समन्वित करने का प्रयास किया। महादेवी वर्मा ने दु:ख को केवल व्यक्तिगत जीवन के सन्दर्भ में स्वीकार किया है, सामाजिक जीवन के प्रसंग में तो वे अथक और अमर साधना में विश्वास करती हैं। उन्हें 'अमरों के लोक' की कामना नहीं है, वे तो मिटने के अधिकार को ही बनाये रखना चाहती हैं। अपनी पीड़ा का वर्णन उन्होंने इन शब्दों में किया है—**''अमरता उसमें मनाती है मरण-त्योहार।''**

25. 'केवल सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता का राग' कहकर 'छायावाद' का किसने विरोध किया था?

(a) आचार्य शुक्ल (b) महादेवी वर्मा

(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

छायावादी समीक्षा का विवेचन करते हुए महादेवी वर्मा ने कहा है "छायावाद स्थूल की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुआ था। छायावाद ने कोई रूढ़िगत आध्यात्म या वर्गगत सिद्धान्तों का संचयन न देकर हमें केवल समष्टिगत चेतना और सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता की ओर जागरूक कर दिया था। इसी से उसे यथार्थ रूप में ग्रहण करना हमारे लिए कठिन हो गया।" अतः स्पष्ट है कि महादेवी वर्मा ने 'केवल सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता का राग' कहकर 'छायावाद' का विरोध किया।

26. 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' यह कथन किसका है?

(a) महादेवी वर्मा (b) प्रसाद

(c) पन्त (d) निराला

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

महादेवी वर्मा का दुःखवाद किसी सीमा तक समाज-कल्याण की भावना में संपृक्त है। वे जब अपने जीवन की तुलना 'नीर-भरी दुःख की बदली' दीपशिखा से करती हैं, तो वहाँ आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ लोक कल्याण की भावना भी विद्यमान रहती है। जिस प्रकार घटा स्वयं को गला कर सृष्टि को सुख और शीतलता प्रदान करती है या दीपक स्वयं जलकर राख हो जाता है, किन्तु परिवेश को आलोकित करता है, उसी प्रकार महादेवी स्वयं साधना की आग में जलकर सामाजिक जीवन को अधिक सुखद और मंगलमय बनाना चाहती हैं। वे कहती हैं–

दुखव्रती निर्माण उन्मद
ये अमरता नापते पद
बाँध देंगे अंक-संसृति से तिमिर में स्वर्ण बेला।

27. हिन्दी काव्य की आधुनिक मीरा किसे कहा जाता है?

(a) महादेवी वर्मा (b) कीर्ति चौधरी

(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) वन्दना वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

जिस प्रकार मीरा ने स्वयं को श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया था। वही समर्पण भाव महादेवी वर्मा की कविताओं में है। अतः महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। काव्य-शिरोमणि 'निराला' जी ने उनकी साहित्यिक उत्कृष्टता को 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' कह कर सम्बोधित किया था।

28. "तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रंदन देखूँ।" यह पंक्ति है -

(a) निराला (b) अज्ञेय

(c) महादेवी (d) बच्चन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

"तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रंदन देखूँ।" यह पंक्ति महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'दुविधा' शीर्षक कविता से ली गई है। महादेवी वर्मा ने अपनी कविता का माध्यम पूरी तरह गीत को बनाया है।

29. निराला की कविता 'राम की शक्ति-पूजा' पर किस रचना का सर्वाधिक प्रभाव है?

(a) रामचरितमानस (b) वाल्मीकि रामायण

(c) साकेत (d) कृत्तिवास रामायण

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

कृत्तिवास रामायण के आधार पर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने 'राम की शक्ति पूजा' मिथक काव्य रचना की है। निराला जी ने कथा में परिवर्तन तो नहीं किया है, लेकिन राम के चरित्र को आधुनिक मनुष्य के अंतर्द्वन्द्व से जोड़ दिया है। निराला की कविताओं पर भारतीय दर्शन का गहरा प्रभाव है। 'राम की शक्ति पूजा' लंकाकाण्ड के कथानक को लेकर लिखी गई एक लम्बी कविता है। इसमें अपने सर्जक के निजत्व के समीपतम पहचान का प्रतिफलन है। यह रामकथा कम, निराला के रचनात्मक संशय, संघर्ष एवं आत्म-बलिदान की कहानी अधिक है।

30. 'निराला' की कविता 'राम की शक्तिपूजा' पर किस रचना का सर्वाधिक प्रभाव है?

(a) वाल्मीकि रामायण (b) कृत्तिवास रामायण

(c) रामचरितमानस (d) विष्णु पुराण

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'कला और बूढ़ा चाँद' के लेखक हैं -

(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सुमित्रानन्दन पन्त

(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'कला और बूढ़ा चाँद' के लेखक सुमित्रानन्दन पन्त (बचपन का नाम गोसाई दत्त) हैं। पन्त जी की अन्य रचनाएँ हैं-उच्छ्वास, ग्रन्थि, वीणा, लोकायतन, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, वाणी, चिदम्बरा, पतक्षर, एक भाव क्रान्ति, गीत हंस, शंख ध्वनि, किरण वीणा, समाधिता और ग्राम्या इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सुमित्रानन्दन पन्त की कृति 'लोकायतन' प्रबन्ध काव्य है।
- 1960 में पन्त जी को 'कला और बूढ़ा चाँद' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 'लोकायतन' पर सोवियत और 'चिदम्बरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए।
- सुमित्रानन्दन पन्त की 'ग्राम्या' कृति का सम्बन्ध 'ग्रामीण परिवेश' से है। पन्त जी ने 'ग्राम्या' में गाँव की विविध समस्याओं का आकलन किया है।
- 'युगवाणी' में मार्क्स और गाँधी के सिद्धान्तों को पुस्तक से पढ़कर छन्दोबद्ध किया गया है।
- पन्त जी ने अपनी पहली कविता 'गिरजे का घण्टा' की रचना सन् 1916 में की।
- 'गुंजन' को उनका अन्तिम छायावादी काव्य संग्रह कहा जा सकता है।

32. 'चिदम्बरा' के रचनाकार हैं—

(a) प्रसाद (b) पन्त
(c) निराला (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. पन्त जी की 'ग्राम्या' कृति का सम्बन्ध है-

(a) ग्रामीण परिवेश से (b) प्रगतिवादी दृष्टि से
(c) कल्पना लोक से (d) नई कविता से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'लोकायतन' के रचयिता हैं -

(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) बालकृष्ण शर्मा नवीन
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) सुमित्रानन्दन पन्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. पन्त की पहली रचना है—

(a) वीणा (b) ग्रन्थि
(c) गिरजे का घण्टा (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. सुमित्रानन्द पन्त की सुप्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' उनके किस काव्यसंकलन में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी?

(a) गुंजन (b) ग्राम्या
(c) पल्लव (d) युगान्त

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

सुमित्रानन्दन पन्त की सुप्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' उनके काव्यसंकलन 'पल्लव' में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई।

37. अरविन्द दर्शन से प्रभावित हिन्दी के कवि हैं-

(a) जयशंकर प्रसाद (b) निराला
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

सुमित्रानन्दन पन्त ने अरविन्द दर्शन के आधार पर नया दर्शन ढूँढ़ने का प्रयास किया है, फिर भी उनकी रचनाओं पर अरविन्द दर्शन की गहरी छाप है। अरविन्द दर्शन को अपनाकर पन्त छायावाद से निकलने की चेष्टा करते हुए पुनः उसी क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते हैं। कला और बूढ़ा चाँद, रश्मिबन्ध, गीतहंस, स्वर्णिमचक्र, समाधिता जैसी रचनाओं पर अरविन्द की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

38. इनमें से कौन-सा कवि अपने रचनाकाल के अंतिम दौर में प्रगतिवाद के भौतिक दर्शन के साथ-साथ अरविन्द-दर्शन से प्रभावित हुआ?

(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. अपने काव्य जीवन के उत्तर में अरविन्द दर्शन से प्रभावित कवि हैं-

(a) महादेवी वर्मा (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) जयशंकर प्रसाद (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. ....अरविन्द दर्शन से बहुत ही प्रभावित थे।

(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) महादेवी वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सम-सामयिक घटना चक्र

41. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) पन्त को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है

(b) 'पल्लव' पन्त की रचना है

(c) 'लोकायतन' महाकाव्य की श्रेणी में आता है

(d) पन्त भारतेन्दु युग के कवि हैं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सुमित्रानन्दन पन्त, भारतेन्दु युग के नहीं बल्कि, छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। पन्त काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है। 'आँसू की बालिका', 'पर्वत-प्रदेश में प्रवास' आदि कविताओं में प्रकृति के मनोहर चित्र विद्यमान हैं, जिनमें कवि की जन्मभूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य का वैभव दिखायी देता है। अतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि पन्त जी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। 'पल्लव' (1928) पन्त जी की रचना है। 'लोकायतन' महाकाव्य की श्रेणी में माना जाता है।

42. किस छायावादी कवि को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा गया है?

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) जयशंकर प्रसाद

(c) महादेवी वर्मा (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना महाकाव्य नहीं है?

(a) कामायनी (b) प्रियप्रवास

(c) साकेत (d) पल्लव

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'पल्लव' महाकाव्य नहीं है। यह 1928 ई. में रचित सुमित्रानन्दन पन्त का आरम्भिक काव्य ग्रन्थ है। 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया महाकाव्य, 'प्रियप्रवास' अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा लिखा गया महाकाव्य तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य है।

44. हिन्दी साहित्य में 'महाप्राण' किस कवि के लिए प्रयुक्त होता है?

(a) तुलसीदास (b) निराला

(c) जयशंकर प्रसाद (d) सूरदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य में 'महाप्राण' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के लिए प्रयुक्त होता है। निराला जी ने स्वच्छन्दतावादी विचारधारा के साथ बड़ी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ 'चतुरी चमार', 'बिल्लेसुर बकरिहा' आदि प्रस्तुत कीं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- निराला जी ने अपनी विवाहिता पुत्री के निधन से विक्षुब्ध होकर 'सरोज स्मृति' की रचना की।
- निराला जी कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' का सम्पादन भार भी संभाला। इसके बाद 'मतवाला' के सम्पादक मंडल में सम्मिलित हुए।
- लखनऊ में 'गंगा पुस्तकमाला' का सम्पादन करने के साथ 'सुधा' के सम्पादकीय लिखने लगे।
- निराला जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं-अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936) , तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता, अणिमा, नये पत्ते, बेला, अर्चना और आराधना इत्यादि।
- 'परिमल' में गीत भी हैं और मुक्तक छन्द भी, मधुर भावों से अनुप्राणित प्रणयगीत भी हैं।
- गीतिका मुख्यतः श्रृंगारिक रचना है।
- इनकी अत्यधिक समर्थ काव्य रचना 'राम की शक्तिपूजा' और शोक-गीत 'सरोज स्मृति' हैं।
- 'पंचवटी प्रसंग' काव्य की रचना सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।
- 'पंचवटी' नाम की एक रचना मैथिलीशरण गुप्त की भी है।

45. 'पंचवटी प्रसंग' काव्य के रचयिता हैं-

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) निराला

(c) जयशंकर प्रसाद (d) केशवदास

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. 'अनामिका' काव्य किनके द्वारा रचित है?

(a) अज्ञेय (b) निराला

(c) धूमिल (d) सुमन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'परिमल' किस कवि की रचना है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) जयशंकर प्रसाद

(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'गीतिका' के रचनाकार का नाम है-

(a) प्रसाद (b) पन्त

(c) निराला (d) मुकुटधर पाण्डेय

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'निराला' का जन्म कहाँ हुआ था?

(a) उत्तर प्रदेश (b) उड़ीसा

(c) बंगाल (d) बिहार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

स्वच्छन्दतावादी विचारधारा के कवि निराला जी का जन्म 21 फरवरी, 1896 को महिषादल राज्य, मेदिनीपुर (बंगाल) नामक ग्राम में हुआ था। इनका पैतृक गृह उन्नाव जिले के गढ़कोला गांव में था। इनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी तथा पत्नी का नाम मनोहरा देवी था। 15 अक्टूबर, 1961 को इलाहाबाद अब प्रयागराज में इनका निधन हुआ था।

50. साहित्यिक क्षेत्र में सर्वाधिक विरोध किसका हुआ था?

(a) प्रसाद (b) निराला

(c) दिनकर (d) हरिऔध

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

निराला को केवल व्यक्ति के रूप में ही परिस्थितियों का तीव्र विरोध नहीं सहना पड़ा, वरन कवि के रूप में भी उनका प्रबल विरोध हुआ। इसका प्रधान कारण तो उनकी मौलिकता है, जो कवि के दीप्त अहंकार की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। सन् 1916 में 'जूही की कली' का प्रकाशन उस युग के साहित्यचेताओं के लिए एक चुनौती बन कर सामने आया। उसमें व्यक्त प्रणय-केलि के चित्र और मुक्त छन्द का शक्तिशाली शिल्प-दोनों ही तत्कालीन मान्यताओं से मेल नहीं खाते थे, किन्तु निराला अपनी धुन के पक्के और फक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। इसलिए उन्होंने सबकी उपेक्षा की। उनके काव्य में आरम्भ से ही विविधता के दर्शन होते हैं।

51. निम्न पंक्तियाँ किस प्रसिद्ध लम्बी कविता से उद्धृत हैं?

प्रतिपल परिवर्तित व्यूह, भेद कौशल-समूह।

राक्षस-विरुद्ध प्रत्यूह, क्रुद्ध कपि विषम।।

(a) राम की शक्तिपूजा (b) बादल राग

(c) पेशोला की प्रतिध्वनि (d) शेर सिंह का शस्त्र-समर्पण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' से अवतरित हैं। इसमें कवि ने राम-रावण युद्ध का वर्णन करते हुए धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। राम धर्म के प्रतीक हैं और रावण अधर्म का। 'राम की शक्तिपूजा' की रचना सन् 1936 में हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **निराला की लम्बी रचना (कविता) है-**राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, बादल राग, तुलसीदास तथा कुकुरमुत्ता।
- **निराला के उपन्यास हैं-** अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरुपमा, उच्छृंखलता, काले-कारनामे, पुराण कथा, महाभारत।
- **निराला के निबन्ध संग्रह हैं-** प्रबन्ध परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, बंगभाषा का उच्चरण, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष आदि।
- **निराला के अनुवाद हैं-** आनन्दमठ, विश्व विकर्ष, कृष्णकान्त का विल, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज रानी, देवी चौधरानी, चन्द्रशेखर, रजनी, श्रीरामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानन्द, राजयोग।

52. निराला की निम्नलिखित कविताओं में से कौन 'लम्बी कविता' नहीं है?

(a) भिक्षुक (b) कुकुरमुत्ता

(c) सरोज स्मृति (d) राम की शक्तिपूजा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. 'निराला' की 'बादल राग' कविता का सम्बन्ध है-

(a) छायावादी सौन्दर्य से (b) प्रगतिवादी चेतना से

(c) प्रयोगवादी चेतना से (d) प्रकृति के सौन्दर्य से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

निराला की 'बादल राग' परिमल से अवतरित है। यह वातावरण प्रधान रचना है। कवि ने इस कविता के माध्यम से प्रकृति के कठोर रूप का चित्रण किया है। इसमें मुख्यत: ध्वनि, नाद और रूपक के माध्यम से युद्ध और विप्लव का रचनात्मक वातावरण तैयार किया गया। रचनात्मकता ही उसकी अन्तर्दृष्टि है। विधवा, दीन और भिक्षुक में 'सहने' के माध्यम से जिस करुणा का सृजन किया गया है, वह बादल में गर्जन-तर्जन, विप्लव और प्रहार में बदल गयी है। इसी आधार पर निराला की 'बादल राग' कविता का सम्बन्ध प्रकृति के सौन्दर्य से है।

54. 'बादल राग' के रचयिता हैं-

(a) प्रसाद (b) पन्त

(c) निराला (d) महादेवी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **'धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध'- पंक्ति में किसके जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति मिलती है?**

(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) हनुमान
(c) लक्ष्मण (d) विभीषण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।'
उपर्युक्त पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कृति 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं। इसमें मौजूद हताशा की, पराजय की, अकेले रह जाने की पीड़ा तथा निराशा का बोध कराती है। यहाँ निराला ने राम के ही नहीं, बल्कि अपने अभावग्रस्त जीवन की भी गहरी गूँज को प्रदर्शित करते हैं।

56. **मुक्त छन्द के प्रणेता हैं-**

(a) निराला (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

मुक्त छन्द के प्रणेता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला की कविता का समारम्भ मुक्तवृत्त से होता है। 'जूही की कली' (निराला के मतानुसार 1916) उनकी पहली रचना है और यह मुक्तवृत्त में है। मुक्तवृत्त में छन्दोबद्ध रचना के तुक, मात्रा आदि के अवरोधक तत्व निःशेष हो जाते हैं।

57. **निराला की 'जूही की कली' उदाहरण है—**

(a) मात्रिक छन्द का (b) वार्णिक छन्द का
(c) मुक्त छन्द का (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. **रबड़ छन्द या केंचुआ छन्द किस कवि की कविताओं को लक्ष्य कर कहा गया है?**

(a) दिनकर (b) धूमिल
(c) निराला (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

रबड़ छन्द या केंचुआ छन्द सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं को लक्ष्य कर कहा गया है। मुक्त छन्द की स्वच्छन्द प्रवृत्ति का परिहास करते हुए इसे रबड़ छन्द, केंचुआ छन्द, कंगारू छन्द इत्यादि नाम दिए गए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पन्त को मुक्त छन्द को हिन्दी काव्य में संस्थापित करने का श्रेय है।
- जयशंकर प्रसाद ने कुछ कविताएँ मुक्तक छन्द में रची जैसे-पेशोला की प्रतिध्वनि, परन्तु व्यापक रूप से वे मुक्त छन्द को स्वीकार न कर सके।

59. **निराला की अन्तिम कविता है—**

(a) राम की शक्तिपूजा
(b) तुलसीदास
(c) सरोज स्मृति
(d) पत्रोत्कण्ठित जीवन का विष बुझा हुआ है

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की अन्तिम कविता है—
पत्रोत्कण्ठित जीवन का विष बुझा हुआ है
आशा का प्रदीप जलता है, हृदय-कुंज में,
अंधकार पथ एक रश्मि से सुझा हुआ है,
दिङ्निर्णय ध्रुव से जैसे नक्षत्र-पुंज में।
यह 1961 में लिखी गयी है। 'पत्रोत्कण्ठित' में एक पंक्ति है-'सिद्ध योगियों जैसे या साधारण मानव/ताक रहा है भीष्म शरों के कठिन सेज पर।'

60. **'प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव' पंक्ति वाली कविता का सम्बन्ध है—**

(a) जयशंकर प्रसाद से (b) भवानी प्रसाद मिश्र से
(c) सुमित्रानन्दन पन्त से (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव' पंक्ति वाली कविता का सम्बन्ध सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से है। उनकी यह कविता छन्दमुक्त के अन्तर्गत 'वर दे' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित है। निराला जी ने काव्य, उपन्यास, कहानी, समालोचना, निबन्ध आदि लिखे हैं।

61. **निम्नलिखित में निराला की व्यंग्यपरक कविता कौन-सी है?**

(a) तुलसीदास (b) कुकुरमुत्ता
(c) सरोज स्मृति (d) तोड़ती पत्थर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कुकुरमुत्ता' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा 1941 ई. में रचित व्यंग्यपरक कविता है, जिसका मूल स्वर प्रगतिवादी है। यह निराला के काव्य संकलन 'नये पत्ते' में संकलित है।

62. छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' किसने कहा है?

(a) जयशंकर प्रसाद (b) महादेवी वर्मा

(c) नन्ददुलारे वाजपेयी (d) डॉ.नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' डॉ. नगेन्द्र ने कहा। डॉ. नगेन्द्र की प्रमुख कृतियाँ हैं-रीतिकाव्य की भूमिका, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, रस सिद्धान्त, अरस्तू का काव्यशास्त्र, काव्य में उदात्त तत्व, काव्य बिम्ब, नई समीक्षा आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महादेवी वर्मा के अनुसार, ''छायावाद प्रकृति के बीच जीवन का उद्‌गीत है।''
- डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, ''आत्मा और परमात्मा का गुप्त वाग्विलास रहस्यवाद है और वही छायावाद है।''
- शान्तिप्रिय द्विवेदी के अनुसार, ''जिस प्रकार 'मैटर ऑफ फैक्ट' (इतिवृत्तात्मक) के आगे की चीज छायावाद है, उसी प्रकार छायावाद के आगे की चीज रहस्यवाद है।''

63. 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है' यह कथन है-

(a) नन्ददुलारे वाजपेयी का (b) महादेवी वर्मा का

(c) डॉ. नगेन्द्र का (d) डॉ. रामविलास शर्मा का

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' किसने कहा है?

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

65. इनमें से कौन उत्तर छायावादी कवि नहीं है?

(a) नरेन्द्र शर्मा (b) रामकुमार वर्मा

(c) बच्चन (d) अंचल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

रामकुमार वर्मा उत्तर छायावादी कवि नहीं हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम छायावाद के द्वितीय वर्ग के कवियों में सर्वाधिक उल्लेखनीय है। उनके 'रूपराशि', 'निशीथ', 'चित्ररेखा', 'आकाशगंगा' आदि काव्य संग्रहों में छायावादी पद्धति की रचनाएँ संकलित हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- छायावाद के प्रथम वर्ग के कवियों में रामनरेश त्रिपाठी 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, भगवतीचरण वर्मा आदि हैं।
- छायावाद के द्वितीय वर्ग के कवियों में डॉ. रामकुमार वर्मा, उदय शंकर भट्ट, मोहन लाल महतो 'वियोगी', लक्ष्मीनारायण मिश्र, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', गोपाल सिंह नेपाली, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', आरसी प्रसाद सिंह हैं।

❑ प्रगतिवाद

1. हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना की अभिव्यक्ति जिस काव्यधारा में देखने को मिलती है, उस धारा को कहा जाता है-

(a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद

(c) जनवाद (d) अकविता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

सन् 1935 से आगे के कुछ वर्ष प्रगतिवाद युग के वर्ष हैं। प्रगतिवाद, मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर चलता है, जिसमें वर्ग चेतना की प्रधानता है। ऐसा समझना चाहिए कि राजनीति में जो मार्क्सवाद है, काव्य में वही प्रगतिवाद। प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है। शुद्ध प्रगतिवादी कवियों के नाम नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन' और गजानन माधव 'मुक्तिबोध' आदि हैं। प्रगतिवादी कविता पर जैसे मार्क्स का प्रभाव है, वैसे प्रयोगवादी कविता पर फ्रायड का। प्रगतिवाद को साम्यवाद का साहित्यिक संस्करण कहा गया है।

2. प्रगतिवादी काव्य सृष्टि है?

(a) दार्शनिक (b) वर्ग चेतना प्रधान

(c) वैयक्तिक यथार्थ (d) यथास्थितिवादी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद' किस काव्यधारा का आधार है?

(a) नई कविता (b) प्रगतिवाद

(c) समानान्तर कविता (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रगतिवाद का उदय छायावाद के समाप्तिकाल में सन् 1936 के आस-पास सामाजिक चेतना के साथ आरम्भ हुआ। यह मार्क्सवादी दर्शन (द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद) के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बना कर चला। राजनीतिक दासता देश में एक ओर पूँजीवाद और सामन्तवाद की शोषक शक्तियों को प्रश्रय दे रही थी, तो दूसरी ओर जनसामान्य के लिए भयावह गरीबी, अशिक्षा, असुविधा और अपमान की सृष्टि कर रही थी। साहित्य भी इससे प्रभावित हुआ, जिससे प्रगतिवादी साहित्य का आन्दोलन आरम्भ हुआ। वर्ष 1935 में ई. एम. फार्स्टर के सभापतित्व में पेरिस (लन्दन) में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' (प्रगतिशील लेखक संघ) नामक अन्तरराष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ। यहीं पर भारतीयों में से कुछ समाजवादी विचारधारा वालों ने 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की जिनमें मुल्कराज आनन्द और सज्जाद जहीर शामिल थे। वर्ष 1936 में सज्जाद जहीर और डॉ. मुल्कराज आनन्द के प्रयत्नों से भारतवर्ष में भी इस संस्था की शाखा खुली और प्रेमचन्द की अध्यक्षता में लखनऊ में इसका प्रथम अधिवेशन हुआ। प्रगतिवादी काव्यधारा में छायावाद की जीवनशून्य होती हुई व्यक्तिवादी वायवी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी निहित थी।

4. ....प्रगतिवाद का आधार है।

(a) रहस्यवाद (b) हालावाद

(c) प्रकृतिवाद (d) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. प्रगतिशील लेखक संघ किस स्तर की संस्था है?

(a) राष्ट्रीय (b) अन्तरराष्ट्रीय

(c) राज्य स्तरीय (d) हिन्दी भाषी प्रांतीय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की थी—

(a) प्रेमचन्द ने (b) नागार्जुन ने

(c) राही मासूम रजा ने (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. लखनऊ में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की थी—

(a) यशपाल ने (b) दिनकर ने

(c) निराला ने (d) प्रेमचन्द ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना कब की गयी थी?

(a) 1926 (b) 1936

(c) 1946 (d) 1939

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. लखनऊ में आयोजित 1936 के प्रगतिशील लेखक संघ के ऐतिहासिक आयोजन के अध्यक्ष थे—

(a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद

(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) मुल्कराज आनन्द

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना लन्दन में किसके प्रयत्न से हुई थी?

(a) प्रेमचन्द

(b) निर्मल वर्मा

(c) मुल्कराज आनन्द व सज्जाद जहीर

(d) नागार्जुन व केदारनाथ अग्रवाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. प्रगतिवाद के जन्म में किसका योगदान है?

(a) छायावादी रोमानियत एवं पलायनवादी प्रवृत्ति,

(b) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना

(c) मार्क्सवादी प्रभाव

(d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. प्रगतिवाद के अन्तर्गत कौन-सा विचार अमान्य है?

(a) यथार्थवाद (b) रूपवाद

(c) पदार्थवाद (d) समाजवाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रगतिवाद के अन्तर्गत यथार्थवाद, पदार्थवाद तथा समाजवाद शामिल हैं। प्रगतिवाद के रूप सम्बन्धी मत में चन्द्रबली सिंह का मत है कि ''विचारधारा पर सही जोर देने के साथ ही प्रगतिवादी आन्दोलन में काफी बड़े पैमाने पर साहित्य के रूपगत पक्ष की उपेक्षा की प्रवृत्ति रही।'' अतः स्पष्ट है कि प्रगतिवाद में रूपवाद शामिल नहीं है।

13. निम्नलिखित प्रवृत्तियों में से एक 'प्रगतिवाद' की प्रवृत्ति नहीं है—

(a) धर्म, ईश्वर तथा व्यक्तिवाद में आस्था

(b) सामाजिकता का आग्रह

(c) शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषण वर्ग के प्रति घृणा

(d) जनसामान्य के प्रति लोकमंगल की कामना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं- (i) प्राचीन रूढ़ियों एवं मान्यताओं का विरोध, (ii) मानवतावादी प्रवृत्ति, (iii) शोषक वर्ग के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति सहानुभूति, (iv) विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, (v) समाज का यथार्थवादी चित्रण, (vi) नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण, (vii) मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना एवं (viii) ईश्वर के प्रति अनास्था।

14. वैद्यनाथ मिश्र किसका वास्तविक नाम था?

(a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध

(c) रघुवीर सहाय (d) धूमिल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'बाबा' के नाम से प्रसिद्ध कवि नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। ये प्रगतिवादी विचारधारा के कवि हैं। इनका जन्म 30 जून, 1911 को मधुबनी (बिहार) के तिरौनी नामक गाँव में हुआ था। आधुनिक हिन्दी काव्य को और समृद्ध करने वाले नागार्जुन का 5 नवम्बर, 1998 को ख्वाजा सराय, दरभंगा (बिहार) में निधन हो गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ नागार्जुन ने 1935 में 'दीपक' (मासिक) तथा 1942-43 में विश्वबन्धु (साप्ताहिक) पत्रिका का सम्पादन किया।

➲ हिन्दी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाओं का सृजन किया।

➲ मैथिली में नवीन भावबोध की रचनाओं का प्रारम्भ उनका महत्वपूर्ण कविता-संग्रह 'चित्र' से माना जाता है।

➲ नागार्जुन ने संस्कृत तथा बांग्ला में भी काव्य-रचना की है।

➲ 'पत्रहीन नग्न गाछ' (मैथिली कविता संग्रह) के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

➲ इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं-युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हजार-हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या : ऐसे भी तुम क्या, पका है कटहल, भस्मांकुर।

➲ इनकी अन्य कृतियों में शामिल हैं-बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुम्भी पाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, वरुण के बेटे।

15. नागार्जुन किस वर्ग के कवि हैं?

(a) छायावादी (b) प्रगतिवादी

(c) प्रयोगवादी (d) द्विवेदी युगीन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. नागार्जुन किस काव्यधारा के कवि हैं?

(a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद

(c) अकविता (d) समकालीन कविता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. कबीर के उपरान्त हर विध्वंसकारी और जनविरोधी शक्ति को सर्वाधिक खुली चुनौती देने वाले साहित्यकार हैं—

(a) निराला (b) नागार्जुन

(c) दिनकर (d) हरिऔध

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

नागार्जुन ने अपने समाज में व्याप्त समस्या तथा बुराइयों को जितनी गहराई तथा धमाकेदार तरीके से उठाया है, उतना शायद कबीर के अलावा किसी ने नहीं उठाया है। नागार्जुन ने भ्रष्टाचार, अवसरवादिता जैसी सामाजिक कुरीतियों पर चोट की, राजनीति की गरिमा तथा लोकतंत्र के मायावी जाल को तार-तार करते हुए उसके वास्तविक चेहरों को सामने लाते हैं। पूंजीपति वर्ग के शोषण एवं अत्याचारों का विरोध करते हैं तथा मजदूरों, किसानों एवं छात्रों के हित की बात को बड़े जोरदार ढंग से सामने रखते हैं। बाबा नागार्जुन एक सशक्त कवि होते हुए एक समाज सुधारक की भूमिका निभाते हैं। डॉ. नामवर सिंह उन्हें कबीर की परम्परा के कवि मानते हैं।

18. 'प्रगतिवाद' के सन्दर्भ में इनमें से एक कथन सही नहीं हैं, वह है-

(a) प्रगतिवाद जन-जीवन के साथ प्रकृति और कल्पनालोक में सौन्दर्य खोजता है।

(b) प्रगतिवाद ने पहली बार साहित्यिक चेतना को यथार्थवाद की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी ।

(c) प्रगतिवाद की मूल प्रेरणा मार्क्सवाद से विकसित हुई थी।

(d) प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है। प्रगतिवाद ने पहली बार साहित्यिक चेतना को यथार्थवाद की ओर होने की प्रेरणा दी, जो मार्क्सवाद से विकसित हुई। प्रगतिवाद ने सौन्दर्य को नये दृष्टिकोण से देखा। वह वर्तमान जनजीवन में सौन्दर्य खोजता है। सौन्दर्य का सम्बन्ध हमारे हार्दिक आवेगों और मानसिक चेतना दोनों से होता है। इन दोनों का सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्धों से होता है।

19. प्रगतिवादी समीक्षक हैं-

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) रामविलास शर्मा

(c) गुलाब राय (d) श्यामसुन्दर दास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रामविलास शर्मा हिन्दी में प्रगतिवादी समीक्षा-पद्धति के एक प्रमुख स्तम्भ थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद डॉ. रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं। उनकी आलोचना प्रक्रिया में केवल साहित्य ही नहीं होता, बल्कि वे समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं। रामविलास शर्मा की समीक्षा कृतियों में विशेष उल्लेखनीय हैं-प्रेमचन्द और उनका युग (1953), निराला (1946), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1954), प्रगति और परम्परा (1954), भाषा और संस्कृति (1954), भाषा और समाज (1961), निराला की साहित्य साधना (1969)।

20. प्रगतिवादी कवि हैं-

(a) जयशंकर प्रसाद (b) मुक्तिबोध

(c) केदारनाथ अग्रवाल (d) हरिवंशराय बच्चन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इनका पहला काव्य संग्रह 'युग की गंगा' आजादी के पहले मार्च, 1947 में प्रकाशित हुआ। केदारनाथ अग्रवाल ने मार्क्सवादी दर्शन को जीवन का आधार मानकर जनसाधारण के जीवन की गहरी व व्यापक संवेदना को अपनी कृतियों में मुखरित किया। केदारनाथ अग्रवाल के अन्य प्रमुख कविता संग्रह हैं- फूल नहीं रंग बोलते हैं, गुलमेंहदी, हे मेरी तुम!, बोलेबोल अबोल, जमुन जल तुम, कहें केदार खरी खरी, मार प्यार की थापें आदि।

21. 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' के रचनाकार हैं—

(a) केदारनाथ अग्रवाल (b) नागार्जुन

(c) त्रिलोचन (d) नरेश मेहता

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'जमुन जल तुम' काव्य के रचनाकार हैं—

(a) भवानीप्रसाद मिश्र (b) धूमिल

(c) शिवमंगल सिंह (d) केदारनाथ अग्रवाल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. इनमें से कौन-सी रचना केदारनाथ अग्रवाल की नहीं है?

(a) युग की गंगा (b) नींद के बादल

(c) आग का झरना (d) युगधारा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c&d)

युग की गंगा तथा नींद के बादल केदारनाथ अग्रवाल की काव्य कृति है जबकि युगधारा नागार्जुन की कृति है। केदारनाथ अग्रवाल ने 'आग का आइना' भी लिखा है, किन्तु विकल्प में 'आग का झरना' है। अतः विकल्प में दो रचनाएँ केदारनाथ अग्रवाल की नहीं हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

24. ''अबे सुन बे गुलाब
भूल मत गर पाई खुशबू रंगो आब''
-काव्य पंक्तियों का सम्बन्ध है-

(a) प्रगतिवादी कविता से (b) प्रयोगवादी कविता से

(c) समानान्तर कविता से (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रगतिवादी रचना 'कुकुरमुत्ता' से ली गई हैं। इनकी अन्य प्रगतिवादी रचनाएँ हैं-अणिमा, नये पत्ते, बेला तथा अर्चना।

25. प्रगतिवाद के प्रमुख कवि नहीं हैं-

(a) नागार्जुन (b) दिनकर

(c) अज्ञेय (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

अज्ञेय जी प्रगतिवाद के प्रमुख कवि नहीं, बल्कि प्रयोगवाद एवं नयी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। नागार्जुन, दिनकर एवं मुक्तिबोध प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं।

26. निम्नलिखित में से किस लम्बी कविता के रचयिता मुक्तिबोध हैं?

(a) पेशोला की प्रतिध्वनि (b) अँधेरे में

(c) राम की शक्ति पूजा (d) असाध्य वीणा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

'अँधेरे में' कविता के रचयिता गजानन माधव मुक्तिबोध हैं। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं-चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल, अन्तर्दर्शन, आत्मसंवाद, ब्रह्मराक्षस, भूल गलती, चम्बल की घाटी में आदि। राम की शक्तिपूजा 'निराला' की लम्बी कविता तथा असाध्य वीणा 'अज्ञेय' की है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'मुक्तिबोध' का पूरा नाम गजानन माधव मुक्तिबोध है।
- इनका जन्म ग्वालियर (मध्य प्रदेश) के एक कस्बे में हुआ था।
- ये अध्यापक, पत्रकार, विशिष्ट विचारक कवि, कथाकार और समीक्षक के रूप में समादृत रहे।
- उन्होंने 'अँधेरे' कविता की लम्बी व्याख्या करते हुए 'अस्मिता की खोज' की बात उठाई है।

27. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के रचयिता हैं–

(a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध

(c) धर्मवीर भारती (d) धूमिल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'भूल गलती' कविता के कवि हैं–

(a) नागार्जुन (b) केदारनाथ अग्रवाल

(c) त्रिलोचन (d) मुक्तिबोध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. 'अँधेरे में' कविता किसने लिखी है?

(a) मुक्तिबोध (b) नागार्जुन

(c) त्रिलोचन (d) धूमिल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'कामायनी : एक पुनर्विचार' नामक आलोचना ग्रंथ के लेखक हैं

(a) राम स्वरूप चतुर्वेदी (b) राम विलास शर्मा

(c) डॉ. नगेंद्र (d) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

'कामायनी : एक पुनर्विचार' नामक आलोचना ग्रन्थ के लेखक गजानन माधव 'मुक्तिबोध' हैं। मुक्तिबोध जी ने 'कामायनी : एक अध्ययन' के नाम से आलोचना पुस्तक की पांडुलिपि तैयार की थी, लेकिन वह प्रकाशित होकर बाजार में नहीं आ पायी। इसी पुस्तक को उन्होंने पुनः संशोधित-परिवर्द्धित करके 'कामायनी : एक पुनर्विचार (1961) के नाम से प्रकाशित कराया। 'मुक्तिबोध' के जीवन-काल में उनकी एक उल्लेखनीय पुस्तक 'भारत : इतिहास और संस्कृति' मध्य प्रदेश, शिक्षा विभाग द्वारा सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों के लिए प्रकाशित हुई।

31. रहस्य पुरुष का बिम्ब मुक्तिबोध की किस कविता में नहीं है?

(a) मेरे सहचर मित्र (b) अँधेरे में

(c) इस चौड़े ऊँचे टीले पर (d) मुझे पुकारती हुई

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(b)

मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस' एवं 'अँधेरे में' कविताओं में फैंटेसी है अर्थात् एक जादुई कथा में आधुनिक जीवन अनुभवों की अभिव्यक्ति है। इन कविताओं में गहरा मानसिक संघर्ष, तनाव तथा छटपटाहट है।

32. गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में कौन-सी कविता संकलित नहीं है?

(a) जन्मदिन की धूप में (b) एक स्वप्नकथा

(c) भूल गलती (d) ब्रह्मराक्षस

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(a)

गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में भूल गलती, एक स्वप्नकथा, ब्रह्मराक्षस, पता नहीं, डूबता चाँद कब डूबेगा, मुझे याद आते हैं आदि कविताएँ संकलित हैं। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' का प्रकाशन सन् 1964 में हुआ था। जबकि 'जन्मदिन की धूप में' कविता केदारनाथ सिंह द्वारा रचित है, जो 'अकाल में सारस' कविता संग्रह में संकलित है।

33. मुक्तिबोध की किस पुस्तक को प्रतिबन्धित किया गया था?

(a) विपात्र (b) एक साहित्यिक की डायरी

(c) चाँद का मुँह टेढ़ा है (d) भारत : इतिहास और संस्कृति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

मुक्तिबोध की पुस्तक 'भारत : इतिहास और संस्कृति' को प्रतिबन्धित किया गया था। मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'भद्रता और नैतिकता' के विरुद्ध ठहराई गई इस पुस्तक पर मध्य प्रदेश न्यायालय में मुकदमा चला था। जिसका निर्णय था कि इसके दस आपत्तिजनक अंशों को हटाकर इसे पुनः प्रकाशित किया जा सकता है। पाठ्य पुस्तक संस्करण की भूमिका में मुक्तिबोध ने लिखा है कि यह इतिहास की पुस्तक नहीं है। इस अर्थ में कि सामान्यतः इतिहास में राजाओं, युद्धों और राजनैतिक उलट-फेरों का जैसा विवरण रहता है, वैसा इसमें नहीं है। युद्धों और राजवंशों के विवरण में न अटककर मैंने अपने समाज और उसकी संस्कृति के विकास-पथ को अंकित किया है।

34. त्रिलोचन शास्त्री की कविताएँ हिन्दी के अतिरिक्त किस अन्य उपभाषा में हैं?

(a) ब्रज (b) मैथिली

(c) अवधी (d) भोजपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

त्रिलोचन शास्त्री की कविताएँ हिन्दी के अलावा अवधी बोली (पूर्वी हिन्दी) में हैं। त्रिलोचन का साहित्य सफर पत्रकारिता से शुरू हुआ और आगे हिन्दी साहित्य के तीन प्रगतिशील कवियों में एक स्तम्भ माने गये हैं। यहीं से वास्तव में अवधी कविताओं में तरक्की देखने को मिलती है। त्रिलोचन जी ने अवधी में एक अच्छी रचना 'अमोला' लिखी है, जिसमें 2700 बरवै एकसाथ हैं।

35. निम्नलिखित में दिनकर की काव्य रचना नहीं है -

(a) हुंकार (b) कुरुक्षेत्र

(c) उर्वशी (d) त्रिधारा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(d)

'त्रिधारा' दिनकर की काव्य रचना नहीं, बल्कि सुभद्राकुमारी चौहान की रचना है। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं-बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे-साधे चित्र (1947), मुकुल और मिला तेज से तेज इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ बुन्देलखण्डी लोकशैली में लिखी गई सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' अपने समय में काफी प्रसिद्ध हुई।

➲ भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को सुभद्राकुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए 'तटरक्षक जहाज' को 'सुभद्रा' नाम दिया है।

➲ भारतीय डाक-तार विभाग ने 6 अगस्त, 1976 को सुभद्राकुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया।

➲ रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख रचनाएँ हैं-रेणुका (1935), हुंकार (1940), रसवन्ती (1940), द्वन्द्वगीत (1940), कुरुक्षेत्र (1946), सामधेनी (1947), रश्मिरथी (1952), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, दिल्ली, नीम के पत्ते, नील कुसुम, संस्कृति के चार अध्याय और हारे को हरिनाम इत्यादि।

➲ 'रेणुका' दिनकर का प्रथम काव्य-संग्रह है।

➲ उर्वशी इनका दूसरा विशिष्ट प्रबन्ध है, जिसे गीतनाट्य भी कहा गया है। कथा का पाँच अंकों में विभाजन और कथोपकथन पद्धति के कारण इसे नाट्य की स्थूल संज्ञा दी जा सकती है, पर इसमें नाटकीयता का अभाव है। मूलतः यह प्रबन्ध काव्य है।

36. 'हारे को हरिनाम' शीर्षक काव्यग्रन्थ के रचनाकार हैं—

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(c) वियोगी हरि (d) सुमित्रानन्दन पन्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है?

(a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध

(c) जयशंकर प्रसाद (d) दिनकर

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. रामधारी सिंह 'दिनकर' की किस कृति को 'आधुनिक युग की गीता' कहा गया है?

(a) रेणुका (b) हुंकार

(c) कुरुक्षेत्र (d) उर्वशी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(c)

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति 'कुरुक्षेत्र' को 'आधुनिक युग की गीता' कहा गया है। युद्ध की समस्या को लेकर लिखे गये प्रबन्ध काव्यों में कुरुक्षेत्र का स्थान बहुत ऊँचा है। 'कुरुक्षेत्र' एक काव्यात्मक गीत है, जिससे आध्यात्मिक चिन्तन के स्थान पर आधुनिक जीवन के प्रश्नों का चिन्तन है।

39. रामधारीसिंह दिनकर की काव्यकृति कौन-सी है?

(a) लोकायतन (b) कुरुक्षेत्र

(c) आर्यावर्त (d) उन्मुक्त

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. ''दो राह समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।''
यह पंक्तियाँ किसकी कविता से उद्धृत हैं?

(a) शिवमंगलसिंह सुमन (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' के 'जनतन्त्र का जन्म' नामक शीर्षक से उद्धृत हैं।

41. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का सर्वप्रथम प्रकाशित काव्य संग्रह है-

(a) क्वासि (b) रश्मिरेखा

(c) उर्मिला (d) कुंकुम

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' सन् 1930 तक कवि रूप में यशस्वी हो चुके थे, परन्तु पहला कविता संग्रह 'कुंकुम' 1936 ई. में प्रकाशित हुआ। इस गीत संग्रह का मूल स्वर यौवन के पहले उद्दाम प्रणयावेग एवं प्रखर राष्ट्रीयता का है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की प्रथम रचना 'आह्वान' 1918 ई. में 'प्रतिभा पत्रिका' में प्रकाशित हुई थी। आह्वान का वास्तविक नाम 'जीव ईश्वर वार्तालाप' है।
- उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ-रश्मिरेखा (1951), अपलक (1952) और क्वासि काव्य संग्रह हैं।
- 1931 ई. में गणेश शंकर विद्यार्थी की मृत्यु के पश्चात कई वर्षों तक वे 'प्रताप' पत्रिका के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे।
- हिन्दी की राष्ट्रीय काव्य धारा को आगे बढ़ाने वाली पत्रिका 'प्रभा' का सम्पादन भी उन्होंने 1921-1923 ई. में किया था।

42. नवगीत दशक-1, 2, 3 का सम्पादक कौन था?

(a) शम्भूनाथ सिंह (b) अज्ञेय

(c) नरेश मेहता (d) उमाशंकर तिवारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

नवगीतकार योगेन्द्रदत्त शर्मा की प्रतिभा से प्रभावित होकर डॉ. शम्भूनाथ सिंह ने नवगीत दशक योजना में उन्हें प्रमुख कवि के रूप में संकलित किया। उनके द्वारा सम्पादित नवगीत दशक-1,2,3 हैं।

❑ प्रयोगवाद

1. प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन् वह साधन है- यह कथन किस 'वाद' से संबंधित है?

(a) प्रगतिवाद (b) छायावाद

(c) यथार्थवाद (d) प्रयोगवाद

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'अज्ञेय' (पूरा नाम- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन) ने प्रयोगवाद के बारे में अपनी 'दूसरी तार सप्तक' भूमिका में लिखा है कि 'प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, न ही हैं। प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य नहीं है। अतः हमें 'प्रयोगवादी' कहना उतना की सार्थक या निरर्थक है, जितना हमें 'कवितावादी' कहना।

2. 'अज्ञेय' का पूरा नाम है-

(a) रायकृष्णदास (b) कन्हैया लाल

(c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. प्रयोगवाद के प्रवर्तक के अनुसार प्रयोगवादी कवि का मुख्य तथ्य क्या था?

(a) नये काव्य उपकरणों का प्रयोग

(b) भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता की प्रतिष्ठा

(c) नई राहों का अन्वेषण

(d) काव्य की पूर्व परम्परा का निषेध

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

सन् 1943 में 'तार सप्तक' का प्रकाशन होते ही स्पष्ट हो गया कि कविता ने प्रगतिवाद से भिन्न चेतना ग्रहण करनी प्रारम्भ कर दी है। इस भिन्न चेतना का निर्माण प्रगतिवाद की मान्यताओं को उलटकर हुआ हो, ऐसा नहीं है। हाँ अपने से पहले काव्यान्दोलन के रूढ़िगत स्वरूप को इसमें अवश्य ही नकारने की घोषणा की गई। समग्र रूप से इस चेतना का निर्माण युगीन परिवेश (निराश, कुण्ठा, व्यष्टि और समष्टि का संघर्ष) और युग-व्याप्त राजनीतिक-सामाजिक दर्शन के समन्वय से हुआ था। तार सप्तक की योजना फुटकर लघु संकलनों की परेशानियों से बचने के लिए तैयार की गई। जब प्रकाशन योजना सामने आ गई, तब कहीं यह सोचा

गया कि संकलित कवि अन्वेषी-दृष्टिकोण के हों। भूमिका में अज्ञेय ने स्पष्ट किया है कि ''उनके (संकलित कवियों के) एकत्र होने का कारण ही यह है कि वे किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं हैं, अभी राही हैं—राही नहीं, राहों के अन्वेषी। उनमें मतैक्य नहीं है, सभी महत्वपूर्ण विषयों पर उनकी राय अलग-अलग है—जीवन के विषय में, समाज और धर्म और राजनीति के विषय में काव्यवस्तु और शैली के, छन्द और तुक के, कवि के दायित्वों के प्रत्येक विषय में उनका आपस में मतभेद है।........ वे सब परस्पर एक-दूसरे पर, एक-दूसरे की रुचियों, कृतियों और आशाओं-विश्वासों पर, एक-दूसरे की जीवन परिपाटी पर और यहाँ तक कि एक-दूसरे के मित्रों और कुत्तों पर भी हँसते हैं।'' अतः स्पष्ट है कि प्रयोगवाद के प्रवर्तक (अज्ञेय) के अनुसार, प्रयोगवादी कवि का मुख्य तथ्य 'नई राहों का अन्वेषण' है।

4. .... ने प्रयोगवाद को सर्वाधिक प्रभावित किया।

(a) मार्क्सवाद (b) अस्तित्ववाद
(c) प्रगतिवाद (d) छायावाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

प्रयोगवाद पर अस्तित्ववाद का गहरा प्रभाव था। नयी कविता, प्रयोगवाद से भिन्न होकर, एक रूढ़ अर्थ में तब प्रयुक्त होने लगी जब सन् 1954 में इलाहाबाद से 'नयी कविता' नामक संकलन प्रकाशित होने लगा। आरम्भ में ये नयी कविता वाले प्रयोगवाद से अपना सम्बन्ध जोड़ते थे। किन्तु प्रयोगवाद पर अज्ञेय का एकाधिकार था; अज्ञेय से प्रयोग के आचार्यों की खटक गयी, तब नयी कविता की धारा बहुत-कुछ अस्तित्ववाद से प्रभावित थी। इसी से आगे चलकर वह धारा भी फूटी जो किसी भी जीवन-मूल्य को स्वीकार न करती थी। नयी कविता को प्रभावित करने वाले अस्तित्ववाद से मुख्य टक्कर मार्क्सवाद की थी।

5. निम्नलिखित में से एक कथन असत्य है-

(a) 'प्रयोगवाद' का जन्म 'तार सप्तक' के प्रकाशन के साथ माना जाता है।
(b) प्रयोगवाद में प्रयोग इष्ट नहीं, साधन माना गया है।
(c) प्रयोगवादी कविता ह्रासोन्मुख मध्यवर्गीय समाज के जीवन का चित्र है।
(d) नयी कविता प्रयोगवाद का विकसित रूप नहीं है।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'नयी कविता' नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट हैं। अतः विकल्प (d) असत्य है। शेष कथन सही हैं।

6. प्रयोगवादी कवियों की रचनाएँ, किस सप्तक में संगृहीत हैं?

(a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

हिन्दी में प्रयोगवाद का प्रारम्भ सन् 1943 में 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है। प्रयोगवादी कवियों की रचनाएँ 'तार सप्तक' में संगृहीत हैं। तार सप्तक में 'सात कवि' शामिल हैं। प्रयोगवाद को प्रपद्यवाद और नयी कविता के नाम से भी जाना जाता है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इसे मुन्नी, युवती और बहू की संज्ञा दी। अज्ञेय जी ने इसे 'राहों के अन्वेषी' कहा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ तार सप्तक (1943) के कवि-(याद करने का सूत्र-**अमुने गिरा प्रभा**) अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल।
➲ दूसरे सप्तक (1951) के कवि-(याद करने का सूत्र-**शह भर शनध**) शमशेर बहादुर सिंह, हरिनारायण व्यास, भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, शकुन्तला माथुर, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती।
➲ तीसरे सप्तक (1959) के कवि-(याद करने का सूत्र-**केकुकी विप्र सम**) केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, कीर्ति चौधरी, विजयदेव नारायण साही, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन।
➲ चौथे सप्तक (1979) के कवि-(याद करने का सूत्र-**श्री अरासुरा स्वन**) श्रीराम वर्मा, अवधेश कुमार, राजकुमार कुंभज, सुमन राजे, राजेन्द्र किशोर, स्वदेश भारतीय, नन्द किशोर आचार्य।

7. अज्ञेय कौन-से वाद के कवि हैं?

(a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) छायावाद (d) इनमें से कोई नहीं है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. तार सप्तक में संकलित कवियों को 'राहों के अन्वेषी' कहा था—

(a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) प्रभाकर माचवे

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'प्रयोगवाद' की जन्मदात्री पत्रिका है-

(a) तार सप्तक (b) प्रतीक
(c) नये पत्ते (d) नयी कविता

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **निम्नलिखित में से कौन 'तार सप्तक' का कवि नहीं है?**
(a) शमशेर बहादुर सिंह (b) गिरिजा कुमार माथुर
(c) मुक्तिबोध (d) प्रभाकर माचवे
T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **इनमें से कौन 'तार सप्तक' में शामिल नहीं है?**
(a) अज्ञेय (b) शमशेर
(c) मुक्तिबोध (d) नेमिचन्द्र जैन
दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **निम्नलिखित में से तार सप्तक में कौन कवि शामिल नहीं था?**
(a) प्रभाकर माचवे (b) नेमिचन्द्र जैन
(c) भारत भूषण अग्रवाल (d) रामधारी सिंह दिनकर
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ किस सप्तक में हैं?**
(a) पहला तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक
नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **निम्नलिखित में से कौन-सा कवि 'दूसरा सप्तक' में सम्मिलित नहीं था?**
(a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) शकुन्तला माथुर
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) मुक्तिबोध
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **इनमें से 'दूसरा सप्तक' में संकलित कवि हैं :**
(a) रघुवीर सहाय (b) केदारनाथ सिंह
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) नेमिचन्द्र जैन
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. **सन् 1951 में प्रकशित 'दूसरा सप्तक' में कौन-सी कवयित्री शामिल थीं?**
(a) अमृता भारती (b) कीर्ति चौधरी
(c) शकुन्तला माथुर (d) सुमन राजे
P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. **केदारनाथ सिंह किस सप्तक के संकलित कवि हैं?**
(a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. **'चौथा सप्तक' में संकलित कवयित्री हैं—**
(a) शकुन्तला माथुर (b) सुमन राजे
(c) मणिकामोहिनी (d) कीर्ति चौधरी
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. **'तार सप्तक' में कौन-सा कवि सम्मिलित नहीं है?**
(a) भारत भूषण अग्रवाल (b) मुक्तिबोध
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) रघुवीर सहाय
P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. **'तार सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है-**
(a) सन् 1940 (b) सन् 1943
(c) सन् 1955 (d) सन् 1958
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. **'तार सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है-**
(a) सन् 1936 (b) सन् 1943
(c) सन् 1946 (d) सन् 1956
P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. **'तार सप्तक' का सम्बन्ध किस काव्यधारा से है?**
(a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) हालावाद (d) अकविता
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता संकलन के कवि हैं-

(a) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (b) धर्मवीर भारती
(c) रघुवीर सहाय (d) मुक्तिबोध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता संकलन के कवि रघुवीर सहाय हैं। ये 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रघुवीर सहाय की अन्य प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं–

- **कविता संग्रह-** सीढ़ियों पर धूप में, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था इत्यादि।
- **कहानी संग्रह-**रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं।
- **निबन्ध संग्रह-**दिल्ली मेरा परदेश, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे, लहरें और तरंग, अर्थात, यथार्थ का अर्थ, भँवर इत्यादि।
- **अनुवाद-**बरनमवन (शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' का अनुवाद), तीन हंगारी नाटक इत्यादि।

24. 'कुआनो नदी' कविता संग्रह के कवि हैं-

(a) त्रिलोचन (b) भारतभूषण अग्रवाल
(c) अज्ञेय (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'कुआनो नदी' कविता संग्रह के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सन् 1983 में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को कविता संग्रह 'खूँटियों पर टँगे लोग' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
➲ 'उड़े हुए रंग' इनका उपन्यास है।
➲ 'सोया हुआ जल' और 'पागल कुत्तों का मसीहा' नाम से इन्होंने दो लघु उपन्यास लिखे।
➲ 'अँधेरे पर अँधेरा' संग्रह में इनकी कहानियाँ संकलित हैं।
➲ 'बकरी' नामक इनका नाटक काफी लोकप्रिय रहा।
➲ बालोपयोगी साहित्य में इनकी कृतियाँ-भौं-भौं-खों-खों, लाख की नाक,बतूता का जूता और महँगू की टाई महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
➲ 'कुछ रंग कुछ गंध' शीर्षक से इनका यात्रा वृत्तांत भी प्रकाशित हुआ।
➲ 'शमशेर' और 'नेपाली कविताएँ' नामक कृतियों का सम्पादन भी इन्होंने किया।

25. 'कुआनो नदी' काव्य संग्रह के रचनाकार हैं—

(a) धूमिल (b) कुँवर नारायण
(c) दुष्यन्त कुमार (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'नकेनवाद' किस काव्य धारा के लिए प्रयुक्त हुआ था?

(a) छायावादी काव्य (b) प्रगतिवादी काव्य
(c) प्रयोगवादी काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

प्रयोगवाद के भीतर ही 'प्रपद्यवाद' या 'नकेनवाद' भी पनपा, लेकिन वह प्रयोगवाद की एक छोटी शाखा-मात्र बनकर रह गया। नकेनवाद बिहार में प्रचलित हुआ। 'नकेन', नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश मेहता के नामों के प्रथम अक्षर से बना है। नकेनवादी तीनों कवियों ने 'प्रयोग-दशसूत्री' में प्रयोगवाद और प्रयोगशीलता में अन्तर स्पष्ट किया है। ये प्रयोग को ही काव्य का एकमात्र लक्ष्य मानते हैं।

27. 'नकेनवाद' नामक साहित्यिक आन्दोलन के अग्रणी हैं—

(a) जगदीश गुप्त, नरेश मेहता और अज्ञेय
(b) नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश मेहता
(c) नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नागार्जुन
(d) नरेश मेहता, केसरी कुमार और निर्मल वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. इनमें से कौन-सा कवि 'नकेनवाद' से जुड़ा है?

(a) केसरी कुमार (b) केदारनाथ सिंह
(c) नरेश मेहता (d) केदारनाथ अग्रवाल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. इनमें से कौन 'प्रपद्यवाद' से संबंधित नहीं हैं?

(a) नलिन विलोचन शर्मा (b) प्रयागनारायण त्रिपाठी
(c) नरेश (d) केसरीकुमार

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'घोर अहंनिष्ठ व्यक्तिवाद' किस काव्यधारा की प्रवृत्ति है?

(a) छायावाद (b) प्रगतिवाद
(c) प्रयोगवाद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं– 1. सम-सामयिक जीवन का यथार्थ चित्रण, 2. घोर अहंनिष्ठ वैयक्तिकता, 3. विद्रोह का स्वर, 4. लघु मानव की प्रतिष्ठा, 5. अनास्थावादी तथा संशयात्मक स्वर, 6. आस्था तथा भविष्य के प्रति विश्वास।

❑ नयी कविता

1. नयी कविता के प्रवर्तक थे-

(a) प्रताप नारायण मिश्र (b) प्रेमचन्द

(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(*)

नई कविता भारतीय स्वतन्त्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह भी कहा जाता सकता है कि प्रयोगवाद के बाद हिन्दी कविता की जो नवीन धारा विकसित हुई वह नयी कविता है। नयी कविता के प्रवर्तक अज्ञेय हैं।

2. नयी कविता के प्रमुख लक्षण हैं -

(a) अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि

(b) शोषित वर्ग की पीड़ा और पूंजीपतियों की घोर निन्दा

(c) प्रकृति चित्रण और सौन्दर्यबोध

(d) इनमें से कोई भी नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

नयी कविता के दो तत्व प्रमुख हैं- अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरुष की, आशा की हो या निराशा, अपनी सच्चाई में कविता के लिए और जीवन के लिए भी अमूल्य है। नयी कविता में बुद्धिवाद नवीन यथार्थवादी दृष्टि के रूप में भी है और नवीन जीवन-चेतना की पहचान के रूप में भी।

3. 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ-

(a) सन् 1953 में (b) सन् 1954 में

(c) सन् 1955 में (d) सन् 1956 में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

सन् 1954 में 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद (अब प्रयागराज) से हुआ। 1947 में जब अज्ञेय ने 'प्रतीक' का प्रकाशन आरम्भ किया, तब मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'मुझे पुकारती हुई पुकार' प्रकाशित हुई।

4. ....'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है।

(a) 1952 (b) 1953

(c) 1954 (d) 1955

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'नयी कविता' की प्रमुख प्रवृत्ति है–

(a) बौद्धिकता का प्राधान्य

(b) यथार्थवाद का अति आग्रह

(c) कुण्ठा, निराशा, संदेह की अभिव्यक्ति

(d) उपर्युक्त सभी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं-(i) बौद्धिकता का प्राधान्य (ii) यथार्थवाद का अति आग्रह (iii) कुण्ठा, निराशा, संदेह की अभिव्यक्ति (iv) कथ्य की व्यापकता और दृष्टि की उन्मुक्तता (v) मानवतावाद की नई परिभाषा आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'नयी कविता' का नामकरण प्रयोगवादी कवियों के द्वारा ही किया गया।

➲ 'नयी कविता' के संस्थापकों में जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

6. 'लघुमानव की धारणा' किसकी प्रवृत्तिगत विशेषता है?

(a) नयी कविता (b) दलित-विमर्श

(c) प्रगतिवाद (d) छायावाद

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर–(a)

लघु मानव का अर्थ है- वह सामान्य मनुष्य, जो अपनी सारी संवेदना , भूख-प्यास और मानसिक आंच को लिए-दिए उपेक्षित था। इस लघु मानव का अर्थ यदि मनुष्य की लघुता को खोज-खोज कर सत्य-रूप में उसकी प्रतिष्ठा करने से है, तो निश्चय ही यह अतिवादी, प्रतिक्रियावादी और असत्य जीवन दृष्टि है। नयी कविता की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने पर उसकी सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखाई पड़ती है। आज की क्षणवादी और लघु मानववादी दृष्टि जीवन मूल्यों के प्रति नकारात्मक नहीं स्वीकारात्मक दृष्टि है। अतः लघु मानव की धारणा नयी कविता की प्रवृत्तिगत विशेषता है।

7. 'नयी कविता' परम्परा का तिरस्कार है और 'नयी कहानी' परम्परा का विस्तार।' यह कथन है-

(a) शैलेश मटियानी (b) राजेन्द्र यादव

(c) महीपसिंह (d) नामवर सिंह

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

'नयी कविता' परम्परा का तिरस्कार है और 'नयी कहानी' परम्परा का विस्तार' यह कथन राजेन्द्र यादव का है।

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

❑ निबन्ध

1. हिन्दी निबन्ध का उत्कर्ष काल है-

(a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग

(c) शुक्ल युग (d) शुक्लोत्तर युग

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आचार्य शुक्ल के मार्गदर्शन से द्विवेदी युग के पश्चात का निबन्ध लेखक परिचय, विवरण अथवा भावोद्रेक के मोह को छोड़कर, अनुशीलन और आलोचना के साथ वस्तु के मूल तत्व की शोध में प्रवृत्त हुआ और वस्तु की अपनी सामर्थ्य-सीमा के साथ बौद्धिक व्याख्या और विवेचन करने लगा। इस नए काल के निबन्ध लेखक अधिकांशतः आलोचनात्मक निबन्ध लिखने में प्रवृत्त हुए अर्थात वे पहले आलोचक हैं, बाद में निबन्ध लेखक। इसी कारण शुक्ल युग के निबन्ध प्रौढ़ एवं शक्ति-सम्पन्न हैं। विकास की दृष्टि से यह युग (शुक्ल युग) 'उत्कर्ष काल' है। विषय, शैली, स्वरूप, भाव तथा भाषा के विचार से इस युग में हिन्दी निबन्ध का सर्वांगीण विकास हुआ।

2. 'कविता क्या है?' निबन्ध के लेखक हैं-

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) अध्यापक पूर्ण सिंह (d) कुबेरनाथ राय

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध संग्रह चिन्तामणि है, इसके तीन भाग हैं। चिन्तामणि के प्रमुख निबन्ध हैं- भाव या मनोविकार, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, करुणा, लज्जा और ग्लानि, घृणा, ईर्ष्या, भय, क्रोध, कविता क्या है, काव्य में लोक मंगल की साधनावस्था। रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित अन्य निबन्ध मानस की धर्मभूमि, रसात्मक बोध के विविध रूप, तुलसी का भक्ति मार्ग, काव्य में अभिव्यंजनावाद, मित्रता, अध्ययन आदि हैं।

3. 'कविता क्या है' निबन्ध के लेखक कौन हैं?

(a) श्यामसुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ. नगेन्द्र (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध-संग्रह 'चिंतामणि' के अब तक कितने भाग प्रकाशित हुए हैं?

(a) एक (b) दो

(c) तीन (d) चार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध संग्रह का नाम है-

(a) चिन्तामणि (b) झरना

(c) आँसू (d) कामायनी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'चिन्तामणि' किस निबन्धकार का महत्वपूर्ण निबन्ध संग्रह है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) बालकृष्ण भट्ट

(c) गुलाब राय (d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. "धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है।''
उपर्युक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के किस निबन्ध का अंश है?

(a) श्रद्धा और भक्ति (b) मानस की धर्मभूमि

(c) लोभ और प्रीति (d) कविता क्या है?

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबन्ध 'मानस की धर्मभूमि' में लिखा है ''धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है, यह हम कहीं पर कह चुके हैं। धर्म है ब्रह्म के सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति, जिनकी असीमता का आभास अखिल विश्व स्थिति में मिलता है। इस प्रवृत्ति का साक्षात्कार परिवार और समाज ऐसे छोटे क्षेत्रों से लेकर समस्त भू-मण्डल और अखिल विश्व तक के बीच किया जा सकता है।''

8. 'सुलोचना' निबन्ध संकलन है-

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(c) बालकृष्ण भट्ट (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। कविता, नाटक, निबन्ध तथा व्याख्यान में अविस्मरणीय योगदान देने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। 'सुलोचना' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का निबन्ध है।

9. निबन्ध-संग्रह 'शब्दिता' के निबन्धकार हैं-

(a) विवेकी राय (b) निर्मल वर्मा
(c) धर्मवीर भारती (d) पं. विद्यानिवास मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

धर्मवीर भारती ने 'ठेले पर हिमालय, पश्यन्ती, शब्दिता आदि निबन्ध संग्रहों में आधुनिकतावादी आन्दोलनों पर विचार किया है और अनेक स्थापित मान्यताओं का पुनराख्यान भी किया है।

10. 'अशोक के फूल' निबन्ध रचित है-

(a) महादेवी वर्मा द्वारा (b) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा (d) नागार्जुन द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'अशोक के फूल' निबन्ध के लेखक डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी के अन्य प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं- कुटज, विचार-प्रवाह, नाखून क्यों बढ़ते हैं, देवदास, बसन्त आ गया, वर्षा धनपति से घनश्याम तक, मेरी जन्म भूमि, घर जोड़ने की माया, कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क। रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित निबन्ध हैं -ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से, अर्द्धनारीश्वर, पीपल, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय। क्षणदा, शृंखला की कड़ियां, अबला और सबला, साहित्यकार की आस्था आदि महादेवी वर्मा के निबन्ध संग्रह हैं।

11. 'अशोक के फूल' निबन्ध के रचयिता हैं—

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) गिरिजाकुमार माथुर
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) कुबेरनाथ राय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'आलोक पर्व' निबन्ध के रचनाकार हैं—

(a) विद्यानिवास मिश्र (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) प्रभाकर माचवे (d) कुँवर नारायण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को कौन-सा निबन्ध संकलन इनमें है?

(a) अशोक के फूल (b) कुटज
(c) कल्पलता (d) उपर्युक्त सभी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' यह किस विधा की रचना है?

(a) एकांकी नाटक (b) निबन्ध
(c) उपन्यास (d) कहानी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के निबन्धकार हैं-

(a) गुलाब राय (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुन्दर दास (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से कौन-सा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का निबन्ध नहीं है?

(a) कल्पलता (b) कुटज
(c) अशोक के फूल (d) कल्पवृक्ष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'रसज्ञ-रञ्जन' किस सुप्रसिद्ध निबन्धकार की कृति है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) बाबू गुलाब राय
(d) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'रसज्ञ-रञ्जन' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का निबन्ध है। उनके अन्य निबन्ध हैं- कालिदास और उनकी कविता, सुकवि संकीर्तन, अतीत स्मृति, सम्पत्तिशास्त्र, कौटिल्य कुठार, कालिदास की निरंकुशता, वनिता विलाप, साहित्य सन्दर्भ, अद्‌भुत आलाप, चरित चर्या, प्राचीन चिह्न, पुरावृत्त, दृश्य दर्शन, पुरातत्व प्रसंग आदि ।

18. निम्नलिखित में से निबन्ध संग्रह और उसके लेखक का एक युग्म गलत है, वह है-

(a) 'युगसन्धियों पर' - सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(b) 'शब्दिता' - प्रभाकर माचवे

(c) 'मल्लिनाथ की परम्परा'- रवीन्द्रनाथ त्यागी

(d) 'विरामचिह्न' - रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'युगसन्धियों पर' सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन'अज्ञेय' की, 'मल्लिनाथ की परम्परा' रवीन्द्रनाथ त्यागी की तथा 'विराम चिह्न' रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबन्ध संग्रह है, जबकि 'शब्दिता' प्रभाकर माचवे की नहीं बल्कि धर्मवीर भारती द्वारा लिखित निबन्ध संग्रह है। अतः विकल्प (b) सुमेलित नहीं है।

19. निम्नलिखित निबन्ध-संग्रहों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

निबन्ध-संग्रह	लेखक
अ) मैंने सिल पहुंचाई	1. हरिशंकर परसाई
ब) सुनो भाई साधो	2. शिवप्रसाद सिंह
स) शिखरों के सेतु	3. कुबेरनाथ राय
द) रस आखेटक	4. विद्यानिवास मिश्र

	अ	ब	स	द
(a)	1	3	4	2
(b)	4	1	2	3
(c)	2	4	1	3
(d)	4	2	3	1

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

सही सुमेलन है-

निबन्ध-संग्रह	लेखक
मैंने सिल पहुंचाई	1. विद्यानिवास मिश्र
सुनो भाई साधो	2. हरिशंकर परसाई
शिखरों के सेतु	3. शिवप्रसाद सिंह
रस आखेटक	4. कुबेरनाथ राय

20. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) 'मन पवन की नौका'-कुबेरनाथ राय का निबन्ध-संग्रह है।

(b) 'विचार और वितर्क'- हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध-संग्रह है।

(c) 'कौन तू फुलवा बीनन हारी'- विवेकीराय का निबन्ध है।

(d) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'कौन तू फुलवा बीनन हारी' विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध है। शेष कथन सही हैं।

21. 'बसन्त आ गया, पर कोई उत्कण्ठा नहीं' शीर्षक निबन्ध के लेखक का नाम है-

(a) बालमुकुन्द गुप्त (b) प्रताप नारायण मिश्र

(c) विद्यानिवास मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'बसन्त आ गया, पर कोई उत्कण्ठा नहीं' शीर्षक निबन्ध के लेखक विद्यानिवास मिश्र हैं। मिश्रजी के निबन्धों से एक ऐसे व्यक्ति का चित्र सामने आता है, जो भारतीय शाश्वत् परम्परा को उनके मूल्यबोध को बेहतरीन ढंग से व्यक्त करने में सर्वथा सक्षम है। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- परम्परा बन्धन नहीं, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, कंटीले तारों के आर-पार, संचारिणी, कौन तू फुलवा बीनन हारी, अस्मिता के लिए, भ्रमरानन्द के पत्र, अंगद की नियति, चितवन की छाँव, कदम की फूली डाल, तुम चंदन हम पानी, आँगन का पँछी और बंजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, साहित्य की चेतना, महाभारत का काव्यार्थ, लागौ रंग हरी, अग्निरथ आदि।

22. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' किसका ललित निबन्ध-संग्रह है?

(a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) कुबेरनाथ राय

(c) विद्यानिवास मिश्र (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध अपने समय में बड़ा चर्चित रहा है। इस निबन्ध के लेखक हैं—

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) विद्यानिवास मिश्र

(c) कुबेरनाथ राय (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. इनमें से कौन ललित निबन्धकार नहीं हैं?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल

(c) कुबेरनाथ राय (d) विद्यानिवास मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

अज्ञेय ने कृष्ण बिहारी मिश्र की पुस्तक 'बेहया का जंगल' की भूमिका में लिखा है, ''ललित निबन्ध एक सर्जनात्मक विधा इसलिए है कि वह निबन्ध चिन्तन की ही नहीं, निर्बन्ध कल्पना की खुली छूट देता है। बल्कि वह कल्पना ही तो है, जो चिन्तन को निर्बन्ध करती है और इसीलिए चिन्तन की निर्बन्धता व्यक्तिव्यंजक हो जाती है। कल्पना अगर मुक्त है, तो उसे किसी अंचल के साथ जोड़ना कुछ विशेष अर्थ नहीं रखता, लेकिन रचना जो बिम्ब उभारती है उसका स्रोत भले ही कहीं और, किसी अरूप संसार में हो, अगर उसका मूर्तन करता है, तो कोई स्थूल आधार आवश्यक है और इसलिए परिवेश का महत्व हो जाता है।'' और यह संयोग है कि पूर्वांचल के परिवेश में ही अधिकांश ललित निबन्धकार जन्मे। हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय, कृष्ण बिहारी मिश्र-ये सभी पूर्वांचल के हैं। शिवप्रसाद सिंह का मानना है कि इन लेखकों को पूर्वांचल की समृद्ध लोक संस्कृति की विरासत अपने आप प्राप्त हुई। अतः स्पष्ट है कि रामचन्द्र शुक्ल ललित निबन्धकार नहीं हैं।

25. निम्नलिखित में से कौनसा निबन्धकार ललित निबन्धकार नहीं है?

(a) रामविलास शर्मा (b) कुबेरनाथ राय
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(*)

कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रतिष्ठित ललित निबन्धकार माने जाते हैं। रामविलास शर्मा ने आलोचनात्मक निबन्ध तो लिखे ही हैं, पर ललित निबन्धों की भी सृष्टि की है। अतः स्पष्ट है कि दिये गये विकल्प में सभी उत्तर सही हैं।

26. पत्रकारिता के स्तर से निबन्ध शैली को विकसित करने वाले प्रमुख लेखक हैं-

(a) माखन लाल चतुर्वेदी (b) शिवपूजन सहाय
(c) रामवृक्ष बेनीपुरी (d) गुलाबराय

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

पत्रकारिता के स्तर से निबन्ध शैली को विकसित करने वाले लेखकों में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम प्रमुख है। उनकी शैली में राष्ट्रीयता, भावुकता और ओजस्विता का मिला-जुला रूप माखनलाल चतुर्वेदी का स्मरण दिलाता है। इस प्रकार के निबन्धों में विचार तत्व कम तथा भावावेग अधिक रहता है। 'गेहूँ और गुलाब' (1950) तथा 'वन्दे वाणी विनायकौ' (1957) बेनीपुरी के प्रमुख निबन्ध संकलन हैं।

27. 'वन्दे वाणीविनायकौ' इनमें से किसका निबन्ध-संग्रह है?

(a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) विवेकी राय
(c) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (d) कुबेरनाथ राय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. बालमुकुन्द गुप्त रचित निबन्ध-संग्रह का नाम है-

(a) भारतमित्र (b) प्रज्ञा मित्र
(c) शिवसागर की चिट्ठियाँ (d) शिवशम्भु के चिट्ठे

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

बालमुकुन्द गुप्त रचित निबन्ध-संग्रह का नाम 'शिवशम्भु का चिट्ठा' है। ये चिट्ठे 'भारतमित्र' में 1904-1905 में प्रकाशित हुए थे। ये तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन को सम्बोधित करके लिखे गये हैं। लेखक ने कर्जन के भारत-विरोधी कारनामों पर ओजपूर्ण, तीखी एवं व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया है।

29. 'शिवशम्भु के चिट्ठे' के लेखक हैं—

(a) बालमुकुन्द गुप्त (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'शिवशम्भु का चिट्ठा' किसके निबन्धों का संकलन है?

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) राधाकृष्ण दास (d) बालमुकुन्द गुप्त

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. ''भौं'' निबन्ध के लेखक हैं-

(a) पं. विद्यानिवास मिश्र (b) सरदार पूर्ण सिंह
(c) हरिशंकर परसाई (d) प्रतापनारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रतापनारायण मिश्र ने दाँत, भौं, वृद्ध, धोखा, खुशामद, आप, नारी, परीक्षा, ह, द, समझदार की मौत है, बात, मुच्छ-जैसे साधारण विषयों पर भी चमत्कारपूर्ण और असाधारण निबन्ध लिखे। इनके अन्य निबन्ध-संग्रह-प्रताप पीयूष, निबन्ध नवनीत एवं प्रताप समीक्षा हैं।

32. प्रतापनारायण मिश्र के निबन्धों की प्रधान विशेषता है।

(a) सरलता (b) क्लिष्टता

(c) गम्भीरता (d) विनोदप्रियता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रतापनारायण मिश्र के निबन्धों की प्रधान विशेषता विनोदप्रियता है। इनकी शैली में एक प्रकार का मनमौजीपन है। उनमें कटुता नहीं है। विनोदपूर्ण वक्रता तथा बैसवाड़ी बोली की सहज ग्रामीण स्वच्छन्दता ने उनकी शैली को अत्यन्त सजीव बना दिया।

33. शिकार सम्बन्धी रोचक निबन्धों के रचनाकार हैं-

(a) श्रीराम वर्मा (b) श्रीराम शर्मा

(c) श्रीकान्त वर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

शिकार सम्बन्धी रोचक निबन्धों के रचनाकार श्रीराम शर्मा हैं। पं. श्रीराम शर्मा ने शिकार से सम्बन्धित अनेक निबन्ध लिखे हैं।

34. 'प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण' नामक निबन्ध-संग्रह किसका है?

(a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) अज्ञेय

(c) दिनकर (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण', रामधारी सिंह 'दिनकर' की व्यावहारिक समीक्षा सम्बन्धी कृति है, न कि निबन्ध संग्रह। अपनी समीक्षा में इन्होंने आधुनिक कवियों में मैथिलीशरण को सर्वश्रेष्ठ माना है। उनकी दृष्टि में मैथिलीशरण जी ने आर्य संस्कृति को जगाया है। पराधीन देश को अपनी शक्ति की याद दिलाई है, इतिहास को काव्य रूप में रूपान्तरित किया है। 'पन्त' जी का महत्व नवजागरण के आनन्द और उल्लास को स्वर देने के कारण और 'प्रसाद' जी दार्शनिकता, ज्ञान-गरिमा, विद्या-वैभव और कवित्व की समृद्ध साधना के कारण हैं। इनके अन्य निबन्ध संग्रह हैं- मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, खड्ग और वीणा, मन्दिर और राजभवन, कर्म और वाणी, हृदय की राह, ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से, और चाहिए किरण जगत को और चाहिए चिनगारी, दीपक की लौ अपनी ओर, हड्डी का चिराग आदि।

35. 'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध-संग्रह के रचनाकार का नाम है-

(a) शान्तिप्रिय द्विवेदी (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(c) अज्ञेय (d) वासुदेवशरण अग्रवाल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'निषाद बाँसुरी' की रचना विधा है-

(a) कहानी (b) रेखाचित्र

(c) संस्मरण (d) ललित निबन्ध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

कुबेरनाथ राय द्वारा लिखित 'निषाद बाँसुरी' ललित निबन्ध है। इनका पहला निबन्ध संग्रह 'प्रिया नीलकण्ठी' 1968 ई. में प्रकाशित हुआ। इनके अन्य निबन्ध संग्रह हैं- रस आखेटक (1970), गन्ध मादन (1972), विषाद योग (1973), पर्ण मुकुट (1978), महाकवि की तर्जनी (1979), कामधेनु (1980), पत्र मणिपुतुल के नाम (1980), मन पवन की नौका (1982), किरात नदी में चन्द्रमधु (1983), दृष्टि अभिसार (1984), त्रेता का वृहत्साम (1986), मराल (1993), उत्तर कुरु (1994), वाणी का क्षीरसागर (1998), अंधकार में अग्निशिखा (1998), आगम की नाव (2008) आदि। कुबेरनाथ राय पहले 'माधुरी' और 'विशाल भारत' में वैचारिक निबन्ध लिखते थे।

37. 'प्रिया नीलकण्ठी' तथा 'निषाद बाँसुरी' किसके निबन्ध संग्रह हैं?

(a) रमेश चन्द्र शाह (b) विद्यानिवास मिश्र

(c) कुबेरनाथ राय (d) श्रीराम परिहार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. केवल छः निबन्ध लिखकर निम्नलिखित में से किस लेखक ने हिन्दी जगत में ख्याति अर्जित की है?

(a) माधवप्रसाद मिश्र (b) पूर्ण सिंह

(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) गोविंदनारायण मिश्र

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

सरदार पूर्ण सिंह आलोच्य युग (द्विवेदी युग) के श्रेष्ठ निबन्धकार हैं। उन्होंने कुल छः निबन्ध लिखकर आलोचकों का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। इनके निबन्ध नैतिक और सामाजिक विषयों से संबद्ध हैं। गद्य में आवेगशील और व्यक्तित्व-व्यंजक का लाक्षणिक शैली का प्रयोग इनकी विशेषता है।

39. हिन्दी साहित्य में सरदार पूर्ण सिंह की ख्याति किस रूप में है?

(a) एक आलोचक के रूप में (b) एक नाटककार के रूप में

(c) एक निबन्धकार के रूप में (d) एक व्यंग्यकार के रूप में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी, 1881 को पाकिस्तान के एबटाबाद नामक स्थान पर हुआ था। हिन्दी साहित्य में सरदार पूर्ण सिंह की ख्याति एक निबन्धकार के रूप में है, क्योंकि इन्होंने शोध से सम्बन्धित बहुत सारे लेख अंग्रेजी में लिखे हैं। हिन्दी में इन्होंने कम ही लेख लिखे हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सरदार पूर्ण सिंह के प्रमुख कविता संग्रह हैं—खुले मैदान, खुले आसमानी रंग।

➲ सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट विटमैन आदि इनके सभी निबन्ध 'सरस्वती' पत्रिका में छपे।

40. सरदार पूर्ण सिंह विख्यात हैं—

(a) कवि के रूप में (b) निबन्धकार के रूप में

(c) नाटककार के रूप में (d) व्यंग्यकार के रूप में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'मजदूरी और प्रेम' शीर्षक निबन्ध के लेखक की एक रचना है:

(a) साहित्य की महत्ता (b) आचरण की सभ्यता

(c) मेरी जन्मभूमि (d) बनजारा मन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'आचरण की सभ्यता' निबन्ध के लेखक हैं—

(a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (b) अध्यापक पूर्ण सिंह

(c) श्यामसुन्दर दास (d) बालमुकुन्द गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. इनमें से कौन-सा निबन्ध अध्यापक पूर्ण सिंह का नहीं है?

(a) आचरण की सभ्यता (b) मजदूरी और प्रेम

(c) गेहूँ और गुलाब (d) कन्यादान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'विक्रमोर्वशी की मूल कथा' नामक निबन्ध के लेखक हैं—

(a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) रामचन्द्र शुक्ल

(c) अज्ञेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने 'विक्रमोर्वशी की मूल कथा', 'अमंगल के स्थान पर मंगल शब्द', 'मारेसि मोहिं कुठांव' तथा 'कछुआ धर्म' आदि निबन्ध लिखे हैं।

45. 'मारेसि मोहिं कुठांव' एवं 'कछुआ धर्म' निबन्ध के लेखक हैं—

(a) बाबू गुलाब राय (b) बालमुकुन्द गुप्त

(c) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (d) सरदार पूर्ण सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. किस प्रकार के निबन्धों में समास शैली प्रयुक्त होती है?

(a) भावात्मक (b) विवरणात्मक

(c) वर्णनात्मक (d) विचारात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

विचारात्मक निबन्धों के प्रणयन में लेखकों ने 'समास' एवं 'व्यास' दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया। विषय-प्रधान निबन्धों को विवरणात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक तथा विचारात्मक निबन्धों के वर्गों में विभक्त किया जाता है। वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबन्ध शैली की दृष्टि से बहुत करीब हैं। इनके प्रतिपादन की पद्धति में अन्तर होता है। विचारात्मक निबन्धों की प्रतिपादन की पद्धति को ध्यान में रखते हुए विश्लेषणात्मक अथवा विवेचनात्मक निबन्ध भी कहा गया है। इस प्रकार के निबन्धों को सूत्रात्मक वाक्य रचना की शैली वाला निबन्ध भी कहते हैं। यही समास शैली है। प्रत्येक वाक्य के विचार होते हैं और एक वाक्य दूसरे वाक्य का पूरक होता है अर्थात् संक्षेप में व्यक्त किया जाता है। इसके विपरीत व्यास शैली होती है। भावात्मक निबन्धों में लेखक के भाव की तरंगें होती हैं। किसी भी पूर्व स्मृति, किसी प्राचीन कलाकृति, किसी स्मरणीय दृश्य, कल्पना की उड़ान अथवा इसी प्रकार के किसी भावनापूर्ण प्रसंग से लेखक भावुक हो जाता है। इसमें भी धारा शैली और तरंग शैली नामक दो भेद किये गये हैं।

47. किस प्रकार के निबन्धों में बुद्धितत्व प्रमुख होता है?

(a) भावात्मक (b) वर्णात्मक

(c) विवरणात्मक (d) विचारात्मक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

विचारात्मक निबन्धों में बुद्धितत्व को और भावात्मक निबन्धों में रागात्मक तत्व को प्रधानता मिलती है। शैली तत्व सभी में समान रूप में रहता है। वर्णनात्मक और विवरणात्मक दोनों ही प्रकार के निबन्धों में कहीं विचारात्मकता तथा कहीं भावात्मकता की प्रधानता हो सकती है, विचारात्मकता एवं भावात्मक का भी मिश्रण होना सम्भव है।

❑ नाटक एवं एकांकी

1. 'सम्भवामि युगे-युगे' नाटक के रचयिता हैं-

(a) जि.जे. हरिजीत (b) मनमोहन ठाकुर
(c) विष्णु प्रभाकर (d) परिणिता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'सम्भवामि युगे-युगे' नाटक के रचयिता जि.जे. हरिजीत हैं। इनका यह नाटक सामाजिक एवं पौराणिक नाटक है, जो सन् 1980 में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक को कर्नाटक सरकार से पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हरिजीत जी ने कन्नड़, अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओं में नाटकों की रचनाएँ की हैं।
➲ 'रंगायन', 'खरगोश की नौकरी' इनका एकांकी संग्रह है।
➲ हुमायूँ, उत्तर मृच्छकटिका (एक पहिए की गाड़ी), रेल सत्याग्रह, खामोश एमर्जेन्सी जारी है, एक और विक्रमोर्वशीय, ओह ! युनिवर्सिटी, सम्राट स्कन्धगुप्त, प्रिंसिपल परशुराम, विद्रोही , एक संघर्ष कथा, वैतरणी के पार नाटक हैं।

2. इनमें से 'नाग बोडस' द्वारा लिखित नाटक है—

(a) खूबसूरत बहू (b) योर्स फेथफुली
(c) यमगाथा (d) अमृतपुत्र

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'नाग बोडस' एक लोकप्रिय भारतीय नाटककार और हिन्दी कथाकार थे। इनकी पहचान मुख्यतः नाटककार के रूप में ही थी। इनकी रचनाएँ हैं- 'खूबसूरत बहू', थेकू बाबा लोचनदास, नर-नारी, कृति-विकृति आदि।

3. नाटक और नाटककार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है—

(a) चारुमित्र-राजकुमार वर्मा (b) एक घूंट-जयशंकर प्रसाद
(c) टूटते परिवेश-विष्णु प्रभाकर (d) आषाढ़ का एक दिन-सुरेन्द्र वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक है। 1959 में इसे सर्वश्रेष्ठ नाटक के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। शेष युग्म सही हैं।

4. ....हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक है।

(a) आनन्द रघुनन्दन (b) नीलदेवी
(c) अन्धेर नगरी (d) प्रहलाद चरित

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

महाराज विश्वनाथ सिंह कृत 'आनन्द रघुनन्दन' (अनुमानतः 1700 ई.) शास्त्रीय नियमों के अनुसार नान्दी, विष्कम्भक, भरतवाक्य आदि का प्रयोग किया गया है और रंग निर्देश (संस्कृत भाषा में) भी दिये गये हैं। इसलिए विद्वानों ने इसे हिन्दी का प्रथम नाटक माना है, किन्तु इसमें नाट्यदृष्टि से अनेक दोष हैं। अन्धेर नगरी (1881) तथा नीलदेवी (1881) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और 'प्रहलाद चरित्र' (1888) श्रीनिवासदास कृत नाटक है।

5. बाबू तोताराम ने जोसेफ एडीसन के नाटक 'कैटो' का अनुवाद किस नाम से किया है?

(a) रहस्य कथा (b) कृतान्त
(c) गुप्तचर (d) ऐज यू लाइक इट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

बाबू तोताराम ने जोसेफ एडीसन के नाटक 'कैटो' का अनुवाद 'कृतान्त' (1879) शीर्षक से किया था।

6. जयशंकर प्रसाद के 'करुणालय' का नाट्य रूप है—

(a) एकांकी (b) प्रतीकात्मक नाटक
(c) ऐतिहासिक नाटक (d) गीतिनाट्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी में गीतिनाट्य परम्परा की प्रथम रचना 'करुणालय' (1913) है, जो जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गयी है। प्रसाद ने कुल 12 नाटकों की रचना की है, जो इस प्रकार हैं—सज्जन (1910), प्रायश्चित (1913), राज्यश्री (1914), विशाखा (1921), अजातशत्रु (1922), जनमेजय का नागयज्ञ (1926), कामना (1927), स्कन्दगुप्त (1928), एक घूँट (1929), चन्द्रगुप्त (1931) और ध्रुवस्वामिनी (1933)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'करुणालय' में हरिश्चन्द्र और विश्वमित्र के प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान का आधार लिया गया है।
➲ 'सज्जन' का कथानक 'महाभारत' से लिया गया है।
➲ 'प्रायश्चित' में जयचन्द्र के मूर्खतापूर्ण कुचक्र के कारण पृथ्वीराज का अन्त दिखाया गया है।

7. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का सही क्रम है—

(a) अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, कामना, विशाखा
(b) विशाखा, अजातशत्रु, कामना, स्कन्दगुप्त
(c) स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, विशाखा, कामना
(d) कामना, विशाखा, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'जनमेजय का नागयज्ञ' के लेखक हैं—
(a) पन्त (b) निराला
(c) प्रसाद (d) हरिऔध
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. हिन्दी में गीतिनाट्य परम्परा की प्रथम रचना और उसके रचनाकार हैं—
(a) करुणालय – जयशंकर प्रसाद
(b) अनघ – मैथिलीशरण गुप्त
(c) उन्मुक्त – सियारामशरण गुप्त
(d) अन्धायुग – धर्मवीर भारती
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. हिन्दी का सर्वप्रथम गीतिनाट्य है—
(a) अनघ (b) प्रभात
(c) करुणालय (d) पंचवटी-प्रसंग
T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित गीतिनाट्य है—
(a) राज्यश्री (b) विशाखा
(c) करुणालय (d) ध्रुवस्वामिनी
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है?
(a) ध्रुवस्वामिनी (b) कृष्णार्जुन युद्ध
(c) रुक्मिणी परिणय (d) प्रेमलोक
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की रचना किसने की?
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रतापनारायण मिश्र
(c) हरिकृष्ण जौहर (d) जयशंकर प्रसाद
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. ''कुमार! यह मृत्यु और निर्वासन का सुख, यह तुम अकेले ही लोगे यह नहीं हो सकता।'' किस नाटक की पंक्ति है?
(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) एक घूँट
(c) कामना (d) ध्रुवस्वामिनी
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद द्वारा 1933 ई. में रचित नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्त से कहती है, ''कुमार! यह मृत्यु और निर्वासन का सुख, तुम अकेले ही लोगे! ऐसा नहीं हो सकता''।

15. ''वीरता जब भागती है, तो अपने पीछे राजनीति के छलछिद्र की धूल उड़ाती है।'' उपर्युक्त कथन 'प्रसाद' के किस नाटक का है?
(a) अजातशत्रु (b) स्कन्दगुप्त
(c) चन्द्रगुप्त (d) ध्रुवस्वामिनी
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015
डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

''वीरता जब भागती है, तो अपने पीछे राजनीति के छलछिद्र की धूल उड़ाती है।'' यह पंक्तियां जयशंकर प्रसाद कृति 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के प्रथम अंक की हैं। ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख पात्र चन्द्रगुप्त, रामगुप्त, शिखरस्वामी, ध्रुवस्वामिनी, मंदाकिनी, कोमा, आचार्य मिहिरदेव, शकराज हैं।

16. 'अलका' जयशंकर प्रसाद के किस नाटक की पात्र है?
(a) ध्रुवस्वामिनी (b) विशाखा
(c) स्कन्दगुप्त (d) चन्द्रगुप्त
T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' पर बंगला साहित्य के नाटककार द्विजेन्द्र लाल रॉय के नाटक का सीधा प्रभाव माना जाता है। स्वयं द्विजेन्द्र लाल रॉय के नाटकों पर आंग्ल प्रभाव स्पष्ट है। फलस्वरूप प्रसाद के इस नाटक पर भी आंग्ल प्रभाव है। राजनीतिक कुचक्र की आँधी में भटकती हुई नारी का चित्रण विदेशी साहित्य की विशेषता रही है। चन्द्रगुप्त में अलका, सुवासिनी आदि नारी पात्रों का जो राजनीतिक उलझनपूर्ण चित्रण हुआ है, वह आंग्ल प्रभाव ही है। पाश्चात्य आधुनिक नाटकों की भाँति यहाँ भी स्त्रियाँ गुप्तचर बनती हैं। मालविका, अलका, सुवासिनी आदि प्रमुख स्त्री पात्र प्रायः गुप्तचर का काम करती हैं।

17. .... चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका है।

(a) अलका (b) कल्याणी
(c) मालविका (d) कार्नेलिया

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

डॉ. कृष्णलाल अपनी पुस्तक 'साहित्यिक निबन्ध' में लिखते हैं कि चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका का प्रश्न एक पहेली बनकर रह गया है। कार्नेलिया नाटक के प्रारम्भ में दिखाई देती है और इसके पश्चात् फिर अन्त में। इस प्रकार नायिका को जो प्रमुखता और महत्व प्राप्त होना चाहिए, वह कार्नेलिया को प्राप्त सही है, पर वह नायिका नहीं है 'कल्याणी बहुत दूर तक नाटक की सम्भावित नायिका होने का दिखाई देती है। डॉ. दशरथ झा 'हिन्दी नाटक की रूपरेखा' में लिखते हैं कि फलभोक्ता एक दृष्टि से चन्द्रगुप्त ठहरता है। क्योंकि चन्द्रगुप्त को स्वराज्य तथा कार्नेलिया दोनों प्राप्त होते हैं। डॉ. झा 'प्रसाद के नाटकों पर संस्कृत नाट्य साहित्य का प्रभाव' में लिखते हैं कि 'कल्याणी' भी उपयुक्त नेत्री हो सकती थी, पर यहाँ नाटककार का उद्देश्य कुछ उच्चतर उपलब्धि का था वह कार्नेलिया-चन्द्रगुप्त का संयोग कराकर दो विभिन्न संस्कृतियों के संगम के द्वारा अपनी उदार-मानवतावादी अन्तर्दृष्टि का परिचय देता है। इस प्रकार कार्नेलिया को चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका कहा जा सकता है।

18. निम्नलिखित में से एक जयशंकर प्रसाद रचित नाटक नहीं है—

(a) अजातशत्रु (b) स्कन्दगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) तितली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'तितली' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उपन्यास है। शेष सभी उनके द्वारा लिखे गए नाटक हैं।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नहीं है?

(a) स्कन्दगुप्त (b) चन्द्रगुप्त
(c) कर्बला (d) ध्रुवस्वामिनी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कर्बला' जयशंकर प्रसाद का नाटक नहीं, बल्कि प्रेमचन्द द्वारा 1924 ई. में लिखा गया है। प्रेमचन्द ने केवल तीन नाटकों की रचना की—संग्राम (1923), कर्बला (1924) तथा प्रेम और बेदी (1933)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऐतिहासिक नाटकों में सबसे अधिक सफलता 'प्रसाद' को मिली।
- 'प्रसाद' के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना देखी जा सकती है।
- इनके नाटक अभिनय की दृष्टि से पूर्णतः सफल नहीं थे।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक प्रसाद का नहीं है?

(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) स्कन्दगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) सिन्दूर की होली

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'सिन्दूर की होली' प्रसाद का नाटक नहीं, बल्कि लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाटक है। इस नाटक में दो पात्र मनोरमा और चन्द्रकान्ता एक-दूसरे के विरोधी हैं। मनोरमा वैधव्य का समर्थन करती है और चन्द्रकान्ता रोमैंटिक प्रेम का। मनोरमा का विधवा-विवाह का विरोध स्वयं बुद्धिवाद का विरोध करने लगता है और रोमैंटिक चन्द्रकान्ता का तर्क बुद्धिवाद हो जाता है। शेष प्रसाद के नाटक हैं।

21. कल्पांतर..... है।

(a) काव्य नाटक (b) गीतिनाट्य
(c) महाकाव्य (d) खण्डकाव्य

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'कल्पांतर' गिरिजा कुमार माथुर कृति गीतिनाट्य है, जो सैद्धान्तिक और सूचनापरक होने के कारण रचनात्मक नहीं बन सका।

22. 'मुद्राराक्षस' नाटक का नायक कौन है?

(a) सिद्धार्थक (b) समीद्धार्थक
(c) चाणक्य (d) चन्द्रगुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

मुद्राराक्षस संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है, जिसके रचयिता विशाखदत्त हैं। इसकी रचना चौथी शताब्दी में हुई थी। इस महत्वपूर्ण नाटक को हिन्दी में सर्वप्रथम अनूदित करने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है जिन्होंने 1878 ई. में 'मुद्राराक्षस' नाम से अनुवाद किया। इस नाटक का नायक चाणक्य है।

23. 'एक और द्रोणाचार्य' किसकी नाट्यकृति है?

(a) सुरेन्द्र वर्मा (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) शंकर शेष (d) भीष्म साहनी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'एक और द्रोणाचार्य' (1977) शंकर शेष की नाट्यकृति है। इनके अन्य नाटक हैं- 'रक्तबीज' (1982), 'खजुराहो का शिल्पी, (1982),'बाढ़ का पानी' (1983), 'आधी रात के बाद' (1983), 'पोस्टर (1983),'चेहरे, (1983) आदि।

24. 'चन्द्रावली' नाटिका के लेखक हैं—

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(c) लक्ष्मीनारायण लाल (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चन्द्रावली नाटिका के लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। भारतेन्दु के नाटकों को दो वर्गों में रखा जा सकता है— मौलिक तथा अनूदित। मौलिक के अन्तर्गत भारत जननी, वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चन्द्र, श्री चन्द्रावली नाटिका, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अन्धेर नगरी तथा अनूदित के अन्तर्गत विद्या सुन्दर, रत्नावली, धनन्जय विजय, कर्पूर मंजरी, पाखण्ड विडम्बन्, मुद्राराक्षस एवं दुर्लभ बन्धु हैं। इनकी अपूर्ण कृतियों में प्रेम जोगिनी (नाटिका) तथा सतीप्रताप, प्रवास नाटक, नवमल्लिका, रत्नावली एवं मृच्छकटिक (सभी गीतिरूपक) शामिल हैं।

25. इनमें से कौन-सा भारतेन्दु जी का अनूदित नाटक है?

(a) भारत दुर्दशा (b) चन्द्रावली
(c) नीलदेवी (d) विद्या सुन्दर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'भारत दुर्दशा' नाटक के रचनाकार हैं—

(a) जयशंकर प्रसाद (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'पाँचवें पैगम्बर' नाटक के लेखक हैं-

(a) राधाकृष्ण दास (b) किशोरी लाल गोस्वामी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

पाँचवें (चूसा) पैगम्बर नाटक के लेखक भारतेन्दु हरिचन्द्र हैं। उन्होंने इस नाटक के माध्यम से समाज सुधार के उन सभी प्रयासों का जम कर मजाक उड़ाया है, जिन सुधारों का वे अपने वैचारिक निबन्धों में खुलकर विरोध नहीं कर सकते थे। ध्यातव्य हो कि पैगम्बरी धर्मों की खिल्ली उड़ाते हुए उन्होंने एक पाँचवें पैगम्बर 'चूसा' की कल्पना की है, जो मूसा का बिगड़ा रूप है। यह समस्त दुर्गुणों की खान है। इस दुर्गुणों की श्रेणी में भारतेन्दु ने चोरी, दलाली आदि को तो रखा ही है, साथ ही विधवा विवाह तथा स्त्री समानता जैसी मांगों को और दूसरे धर्मो के रीति-रिवाजों को भी भारतेन्दु ने इन बुराइयों की श्रेणी में ही रखकर इन सबका जमकर मजाक उड़ाया है।

28. इनमें से कौन-सा नाटक भारतेन्दु जी का नहीं है?

(a) भारत दुर्दशा (b) नीलदेवी
(c) प्रेम जोगिनी (d) रणधीर प्रेममोहिनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

लाला श्रीनिवासदास जी ने रणधीर प्रेममोहिनी (1878), प्रह्लादचरित, तप्तासंवरण (1883) तथा संयोगिता स्वयंवर (1885) नामक चार नाटक लिखे। भारत दुर्दशा (नाट्यरासक), नीलदेवी (ऐतिहासिक गीतिरूपक एवं वियोगान्त) तथा प्रेम जोगिनी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक हैं। रणधीर प्रेममोहिनी हिन्दी का प्रथम दुःखान्त नाटक है।

29. हिन्दी का प्रथम दुःखान्त नाटक कौन-सा है?

(a) अन्धेर नगरी (b) भारत दुर्दशा
(c) रणधीर प्रेममोहनी (d) कलि-कौतुक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'संयोगिता स्वयंवर' है—

(a) नाटक (b) उपन्यास
(c) कहानी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'चौपट चपेट' नाटक के लेखक हैं—

(a) भारतेन्दु (b) नाथूराम शर्मा
(c) प्रेमघन (d) किशोरीलाल गोस्वामी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'चौपट चपेट' नाटक के लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं- **उपन्यास**-त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी, प्रणयिनी-परिणय, हृदय हारिणी का आदर्श रमणी, लवंगलता वा आदर्श बाला, सुल्ताना रजिया बेगम वा रंग महल में हलाहल, मालतीमाधव, मदन-मोहिनी, गुलबहार, हीराबाई वा बेहयाई का बोरका (ऐतिहासिक उपन्यास), इन्दुमती वा वनविहंगिनी (ऐतिहासिक उपन्यास) आदि **कविता संग्रह**- किशोरी सतसई। **नाटक**- मयंक मंजरी।

32. **श्रृंगार और वीर रस प्रधान नाटक है-**

(a) मयंक मंजरी (b) बकरी
(c) सच्चा धर्म (d) माधवी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

किशोरीलाल गोस्वामी कृत नाटक 'मयंक मंजरी' (1891) श्रृंगार और वीर रस प्रधान नाटक है।

33. **'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' किसकी नाट्य कृति है?**

(a) सुरेन्द्र वर्मा (b) रामकुमार वर्मा
(c) महादेवी वर्मा (d) भगवतीचरण वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' 1975 ई. में सुरेन्द्र वर्मा द्वारा लिखा गया नाटक है। उनके अन्य नाटक हैं—द्रौपदी (1972), सेतुबन्ध (1972), नायक खलनायक विदूषक (1972), आठवाँ सर्ग (1976), छोटे सैयद बड़े सैयद (1982), एक दूनी एक (1987), शकुन्तला की अँगूठी (1990), कैद-ए-हयात (1993) और रति का कंगन (2010) आदि।

34. **'हानूश' नाटक के रचनाकार हैं—**

(a) कुसुम कुमार (b) रमेश बख्शी
(c) भीष्म साहनी (d) मोहन राकेश

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'हानूश' नाटक के रचनाकार भीष्म साहनी हैं। इसकी रचना 1977 ई. में की गयी। यह नाटक चेकोस्लोवाकिया में प्रचलित एक लोक-कहानी पर आधृत है। इनके अन्य नाटक हैं—कबिरा खड़ा बाजार में (1981), माधवी (1985), मुआवजे (1993), रंग दे बसन्ती चोला (1998) और आलमगीर (1999)। कुसुम कुमार के प्रमुख नाटक हैं—संस्कार को नमस्कार, ओम क्रान्ति-क्रान्ति, सुनो सेफाली, दिल्ली ऊँचा सुनती है, रावण लीला, मादा मिट्टी, सलामी मंच, पवन चतुर्वेदी की डायरी आदि। जबकि रमेश बख्शी के प्रमुख नाटक हैं—देवयानी का कहना, तीसरा हाथी, वामाचार, यादों के घर, कसे हुए तार आदि।

35. **'विश्वामित्र' नाटक के लेखक हैं—**

(a) गोविन्द बल्लभ पन्त (b) उदयशंकर भट्ट
(c) लक्ष्मीनारायण मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'विश्वामित्र' नाटक 1938 ई. में उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखा गया है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—विक्रमादित्य (1933), दाहर या सिन्ध पतन (1934), अंबा (1935), सागर विजय (1937), मत्स्यगन्धा (1937), राधा (1941), मुक्ति पथ (1944), शक-विजय (1949), अशोकवनवन्दिनी (1959), गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण (1959), अश्वत्थामा (1959), असुर सुन्दरी (1972)। गोविन्द बल्लभ पन्त के प्रमुख नाटक हैं— राजमुकुट (1935), कुमार हृदय का भग्नावशेष (1936), अन्तःपुर का छिद्र (1940), तुलसीदास (1974) , आत्मदीप (1978)। लक्ष्मीनारायण मिश्र के प्रमुख नाटक हैं—अशोक (1926), गरुड़ ध्वज (1945), नारद की वीणा (1946), वत्सराज (1950), चक्रव्यूह (1954) तथा अश्वमेध आदि।

36. **'चरणदास चोर' किसकी नाट्यकृति है?**

(a) मुद्राराक्षस (b) बलराज पण्डित
(c) हबीब तनवीर (d) नाग बोडस

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'चरणदास चोर' हबीब तनवीर की नाट्यकृति है। इसका प्रकाशन 1975 ई. में हुआ। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—आगरा बाजार (1954), शतरंज के मोहरे (1954), लाला शोहरत राय (1954), मिट्टी की गाड़ी (1958), गाँव का नाम ससुराल मोर नाम दामाद (1973), पोंगा पण्डित, द ब्रोकन ब्रिज (1995), जहरीली हवा (2002), राज रक्त (2006) आदि ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हबीब तनवीर का पहला नाटक 'आगरा बाजार' है।
- 'चरणदास चोर' एडिन वर्ग इन्टरनेशनल ड्रामा फेस्टिवल (1982) में पुरस्कृत होने वाला पहला भारतीय नाटक था।
- तनवीर को 'थिएटर का विश्वकोश' कहा जाता है।
- तनवीर अच्छे अभिनेता, निर्देशक, नाट्य लेखक, गीतकार, कवि, गायक व संगीतकार भी थे।

37. **'लहरों के राजहंस' के नाटककार हैं—**

(a) मोहन राकेश (b) विष्णु प्रभाकर
(c) अमृतलाल नागर (d) अमृत राय

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'लहरों के राजहंस' 1963 ई. में मोहन राकेश द्वारा लिखा गया नाटक है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—आषाढ़ का एक दिन (1958), आधे-अधूरे (1969) आदि। विष्णु प्रभाकर के प्रमुख नाटक हैं— डॉक्टर (1958), युगे-युगे क्रान्ति (1969), टूटते परिवेश (1974), कुहासा और किरण (1975), डरे हुए लोग (1978), वन्दिनी (1979),अब और नहीं (1981), सत्ता के आर-पार (1981), श्वेत कमल (1984) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मोहन राकेश प्रयोगशील नाटककार थे।
- आषाढ़ का एक दिन नाटक कालिदास के काल्पनिक जीवनवृत्त पर आधारित है।
- 'लहरों के राजहंस' का कथानक अश्वघोष के 'सौन्दरानन्द' कृति पर आधारित है।
- 'आधे-अधूरे' नाटक मध्यम वर्ग की पारिवारिक जीवन की समस्या पर आधारित है।

38. मध्यम वर्ग की पारिवारिक समस्या को दर्शाने वाला नाटक है—

(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) अन्धायुग
(c) आधे-अधूरे (d) तमस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. निम्नलिखित में मोहन राकेश लिखित एक नाटक है—

(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) सिन्दूर की होली
(c) मिस्टर अभिमन्यु (d) लहरों के राजहंस

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. इनमें गौतम बुद्ध के आख्यान पर आधारित नाटक है-

(a) टूटते परिवेश (b) जय-पराजय
(c) अजातशत्रु (d) लहरों के राजहंस

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

लहरों के राजहंस , मोहन राकेश का नाटक है। यह भोग-अभोग या पार्थिव-अपार्थिव के संघर्ष का नाटक है। यह संघर्ष यहाँ सुंदरी और गौतम बुद्ध की विपरीत जीवन दृष्टियों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। इस नाटक में सुंदरी और गौतम बुद्ध के बीच हो रहे संघर्ष में जय-पराजय का प्रमाण वे दोनों स्वयं नहीं हैं यहां इसकी कसौटी नंद है। इसलिए इस नाटक का मूल द्वंद्व सुंदरी , नंद और गौतम बुद्ध के त्रिकोणों में उलझा हुआ है। यह अद्भुत नाटकीय-विडम्बना है कि ये तीनों व्यक्ति अलग-अलग जीतकर भी हार जाते हैं।

41. कौन-सा नाटक मोहन राकेश कृत नहीं है?

(a) लहरों के राजहंस (b) आधे-अधूरे
(c) रक्त कमल (d) आषाढ़ का एक दिन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'रक्त कमल' मोहन राकेश की कृति नहीं है, बल्कि लक्ष्मीनारायण लाल की कृति है। शेष नाटक मोहन राकेश के हैं।

42. महाभारत की कथा पर आधारित नाटक है—

(a) अन्धायुग (b) अन्धी गली
(c) कोणार्क (d) आधे-अधूरे

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'अन्धायुग' (1955) महाभारत की कथा पर आधारित है। इसके लेखक धर्मवीर भारती हैं। 'कोणार्क' जगदीश चन्द्र माथुर का नाटक है। 'अन्धी गली' उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का नाटक है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अन्धायुग' में महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से प्रभास तीर्थ में कृष्ण के देहावसान के क्षणों तक की कथा ली गई है।
- 'अन्धायुग' एक सशक्त आधुनिक त्रासदी है।
- 'अन्धायुग' एक गीतनाट्य है।

43. 'शारदीया' के नाटककार हैं—

(a) मोहन राकेश (b) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
(c) जगदीश चन्द्र माथुर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'शारदीया' 1959 ई. में लिखा गया जगदीश चन्द्र माथुर का एक नाटक है। इस नाटक की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है, जो उन्नीसवीं शती के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में तत्कालीन समाज एवं मानवीय सम्बन्धों की अन्तरंग झाँकी प्रस्तुत करता है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—कोणार्क (1951), पहला राजा (1969), दशरथ नन्दन (1974), रघुकुल रीति (1985) आदि। 'दशरथ नन्दन' नाटक रामचरितमानस पर आधारित है। 'रघुकुल रीति' इनके मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। यह भी रामलीला पर आधारित है।

44. 'कोणार्क' नाटक की रचना किसने की?

(a) मोहन राकेश (b) जगदीश चन्द्र माथुर
(c) भुवनेश्वर (d) रामकुमार वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. प्रभुसत्ता सम्पन्न शासक वर्ग एवं गरीब शिल्पी के मध्य संघर्ष-कथा को किस नाटक की विषय-वस्तु बनाया गया है?

(a) कोणार्क (b) शारदीया
(c) शिल्पी (d) आदमी का जहर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जगदीश चन्द्र माथुर ने 'कोणार्क' नाटक में विभिन्न प्रकार के पात्रों, घटनाओं आदि को इस प्रकार संयोजित किया है कि वे विशिष्ट नाटकीय स्थितियों में संश्लिष्ट हो उठते हैं। इसमें संघर्ष के कई आयाम उभरते हैं–प्रभुसत्ता और गरीब शिल्पी के बीच का संघर्ष। वस्तुतः कोणार्क का निर्माण एक गहरे अन्तर्द्वन्द्व का परिणाम है।

46. 'सती चन्द्रावली' और 'अमरसिंह राठौर' नाटकों की रचना किसने की?

(a) राधाचरण गोस्वामी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) प्रताप नारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

पं. राधाचरण गोस्वामी ने कई बहुत ही अच्छे मौलिक नाटक लिखे हैं, जैसे– सुदामा नाटक, सती चन्द्रावली, अमरसिंह राठौर, तन मन धन श्री गोसाईं जी के अर्पण। इनमें से सती चन्द्रावली और अमरसिंह राठौर बड़े नाटक हैं।

47. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की नाट्य कृति का नाम है–

(a) तिलचट्टा (b) शुतुरमुर्ग
(c) अन्धों का हाथी (d) बकरी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मूलतः कवि हैं। इनका पहला नाटक 'बकरी' व्यंग्यात्मक है। यह 1974 ई. में प्रकाशित हुआ। इनके दो अन्य नाटक 'लड़ाई' (1979) और 'अब गरीबी हटाओ' आदि हैं। 'लड़ाई' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कहानी का नाट्य रूपान्तरण है, जबकि 'अब गरीबी हटाओ' में भ्रष्टाचार, उत्पीड़न, अन्याय आदि को मूर्त रूप दिया गया है।

48. बकरी किसकी रचना है?

(a) विशाखदत्त (b) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(c) कुंवर नारायण (d) हरिजीत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'बकरी' नाटक के रचयिता हैं–

(a) मोहन राकेश (b) उपेन्द्रनाथ अश्क
(c) हबीब तनवीर (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. 'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद किया–

(a) राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने (b) राजा लक्ष्मण सिंह ने
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने (d) गिरिधर दास ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह ने 1861 ई. में किया। रघुवंश (1878) और मेघदूत (1882) का भी इन्होंने हिन्दी गद्य में अनुवाद किया।

51. भारतेन्दु युग की केन्द्रीय विधा है?

(a) उपन्यास (b) कहानी
(c) नाटक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

भारतेन्दु युग की केन्द्रीय विधा नाटक है। भारतेन्दु युग के लेखकों को नाटक और निबन्ध में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

52. 'नहुष' नाटक लिखा गया है–

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा (b) वियोगी हरि के द्वारा
(c) शिवमंगल सिंह 'सुमन' के द्वारा (d) गोपालचन्द्र के द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार, विशुद्ध नाटक रीति का ध्यान रखकर हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक नाटक 'नहुष' उनके पिता गोपालचन्द्र (गिरधरदास) द्वारा 1859 ई. में लिखा गया था।

53. 'नहुष' नाटक के नाटककार हैं–

(a) गोपालचन्द्र उर्फ गिरधरदास (b) ब्रजरत्न दास
(c) सीताराम दास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. 'नहुष' नाटक के लेखक बाबू गिरधरदास का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से क्या सम्बन्ध था?

(a) पिता का (b) दादा का
(c) परदादा का (d) भाई का

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. 'उत्तर प्रियदर्शी' नामक गीतिनाट्य के लेखक कौन हैं?

(a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध
(c) प्रसाद (d) हरिकृष्ण प्रेमी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'उत्तर प्रियदर्शी' नामक गीतिनाट्य के लेखक अज्ञेय हैं। इसका प्रकाशन 1967 ई. में हुआ, जिसमें अशोक का अपने ही भीतर के नरक को भोगने तथा बाहरी और भीतरी नरक से ऊपर उठने का वर्णन है। 'उत्तर प्रियदर्शी' का पहला मंचन नई दिल्ली में 'त्रिवेणी कला संग्राम' के खुले रंगमंच पर 6 मई, 1967 ई. को सम्पन्न हुआ। इस गीतिनाट्य में 'प्रेरणा' शीर्षक के अन्तर्गत इसके कथानक के आधार पर प्रकाश डाला गया है।

56. 'पृथ्वीराज की आँखें' शीर्षक के रचयिता हैं—

(a) उदयशंकर भट्ट (b) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(c) रामकुमार वर्मा (d) सेठ गोविन्ददास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'पृथ्वीराज की आँखें' शीर्षक नाटक के रचयिता रामकुमार वर्मा हैं। ऐतिहासिक आधार पर डॉ. रामकुमार वर्मा प्रथम सफल नाटककार थे। वर्ष 1930 में इन्होंने पहला एकांकी 'बादल की मृत्यु' लिखा। रेशमी टाई, सप्तकिरण, रूपरंग, रिमझिम, चारुमित्रा, विभूति, रजतरश्मि, ऋतुराज, दीपदान, इन्द्रधनुष, पांचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूर पंख, खट्टे-मीठे एकांकी, ललित एकांकी, कैलेण्डर का आखिरी पन्ना, जूही के फूल आदि इनकी एकांकी हैं। डॉ. रामकुमार के नाटकों में विजय पर्व, कला और कृपाण, नाना फड़नवीस, सत्य का स्वप्न प्रमुख हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में ''जिस देश के पास हिन्दी जैसी मधुर भाषा है, वह देश अंग्रेजी के पीछे दीवाना क्यों है? स्वतन्त्र देश के नागरिकों को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। हमारी भावभूमि भारतीय होनी चाहिए। हमें जूठन की ओर नहीं ताकना चाहिए।''

➲ कोई उन्हें नाटक सम्राट मानता है, तो कोई हिन्दी एकांकी का जनक। कोई कहता है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद अगर किसी ने प्रामाणिक हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है, तो वे डॉ. रामकुमार वर्मा ही हैं।

➲ वर्मा जी ने कवि मन से 'एकलव्य', 'उत्तरायण' एवं 'ओ अहल्या' जैसे कालजयी सांस्कृतिक महाकाव्य लिखे हैं।

57. 'उत्तरायण' किसकी कृति है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) गणपति चन्द्र गुप्त (d) रामकुमार वर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. निम्नलिखित नाटककारों में ऐतिहासिक नाटककार कौन हैं?

(a) लक्ष्मीनारायण लाल (b) डॉ. धर्मवीर भारती
(c) उपेन्द्रनाथ अश्क (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'रेल का विकट खेल' नाटक के रचनाकार हैं—

(a) भारतेन्दु (b) प्रताप नारायण मिश्र
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रेमघन

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'रेल का विकट खेल' बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित नाटक है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—दमयन्ती स्वयंवर, बृहन्नला, वेणी संहार, कलिराज की सभा, शिक्षादान, बाल विवाह आदि।

60. 'शिवसाधना' नाटक है—

(a) प्रसाद का (b) हरिकृष्ण का
(c) सेठ गोविन्द दास का (d) उदयशंकर भट्ट का

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'शिवसाधना' 1937 ई. में हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखा गया नाटक है। इनके अन्य नाटक हैं—स्वर्णविहान (1930), रक्षाबन्धन (1934), पाताल विजय (1936), प्रतिशोध (1937)। सेठ गोविन्द दास के प्रमुख नाटक हैं—हर्ष (1935), प्रकाश (1935), कर्तव्य-दो भाग (1935)।

61. 'मादा कैक्टस' नाटक किसने लिखा है?

(a) रांगेय राघव (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) हरिकृष्ण 'प्रेमी' (d) जयशंकर प्रसाद

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'मादा कैक्टस' (1959) नाटक डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित है। इस नाटक में प्रेम और विवाह को कला-साधना के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। अन्धा कुआँ (1955), सुन्दर रस (1959),तीन आँखों वाली मछली (1960), सूखा सरोवर (1960), रक्त कमल (1962), रातरानी (1962), दर्पन (1963), सूर्यमुख (1968), कलंकी (1969), मिस्टर अभिमन्यु (1971), करफ़्यू (1972), राम की लड़ाई, नरसिंह कथा, एक सत्य हरिश्चन्द्र, चतुर्भुज राक्षस, पंचपुरुष, गंगामाटी आदि इनकी अन्य कृतियाँ हैं।

62. 'अन्धा कुआँ' के रचनाकार हैं—

(a) लक्ष्मीनारायण भारद्वाज (b) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
(c) मोहन राकेश (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

63. 'अंजोदीदी' किस विधा की रचना है?

(a) कविता (b) नाटक
(c) कहानी (d) उपन्यास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

अंजोदीदी (1954) उपेन्द्रनाथ अश्क की सर्वाधिक प्रौढ़ नाट्य कृति है। इसकी केन्द्रीय पात्र अंजोदीदी हैं, जो बहुत अनुशासन प्रिय हैं। अश्क जी के अन्य नाटक हैं–'जय-पराजय' (1937), 'छठां बेटा' (1940), 'कैद' (1945), 'उड़ान' (1946), 'भंवर' (1950), 'अलग-अलग रास्ते' (1954) आदि।

64. 'रसगंधर्व' नाटक के रचयिता हैं—

(a) मोहन राकेश (b) मणि मधुकर
(c) सुरेन्द्र वर्मा (d) शंकर शेष

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'रसगंधर्व' नाटक के रचयिता मणि मधुकर हैं। इनके अन्य नाटक इस प्रकार हैं-बुलबुल सराय, दुलारी बाई, खेला पोलमपुर, हे बोधिवृक्ष, इकतारे की आँख और इलायची बेगम है।

65. 'डॉक्टर' नामक कृति की विधा है—

(a) नाटक (b) प्रहसन
(c) कहानी (d) गीति परक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

विष्णु प्रभाकर कृत 'डॉक्टर' नामक नाटक, मनोवैज्ञानिक-सामाजिक नाटक है, जिसमें डॉ. अनीला के सन्दर्भ में भावना और नैतिक कर्तव्य का संघर्ष दिखाया गया है। प्रभाकर जी का एक अन्य नाटक 'समाधि' भी है।

66. ....को नुक्कड़ नाटक के जनक कहते हैं।

(a) भीष्म साहनी (b) हबीब तनवीर
(c) सफदर हाशमी (d) प्रसन्ना हेग्गोड

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सफदर हाशमी को नुक्कड़ नाटक का जनक कहते हैं। हाशमी ने नुक्कड़ नाटक को एक नई दिशा दी। डॉ. लाल बहादुर वर्मा ने गोरखपुर में 'संचेतना' नामक संस्था का गठन करके नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत की। नुक्कड़ नाटक न केवल वास्तविक जीवन में बल्कि चलचित्र माध्यम में भी काफी महत्व रखता है। नुक्कड़ नाटक का इस्तेमाल स्वयंसेवी संस्थाओं, थियेटर समूहों, बुद्धिजीवी वर्ग, सामाजिक कार्यकर्ताओं और छात्रों द्वारा सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर जनता के बीच जागरूकता लाने के लिए किया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक ने भी 'तीसरे थियेटर' के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। हिन्दी फिल्म 'हल्ला बोल' ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ नुक्कड़ के माध्यम से आवाज उठाई है।

67. हिन्दी का पहला 'रेडियो नाटक ' माना जाता है-

(a) सीमारेखा (b) राधाकृष्ण
(c) सेठ बांकेलाल (d) युगसंधि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

हिन्दी में रेडियो-नाटक का जन्म 1937 में रेडियो में प्रसारित पहला हिन्दी नाटक आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित 'राधाकृष्ण' से माना जाता है।

68. पण्डित जवाहरलाल नेहरू और ब्रह्मावर्त के पृथु के बीच विलक्षण साम्य किस नाटक में है?

(a) कोणार्क (b) शारदीय
(c) भारत दुर्दशा (d) पहला राजा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

नेहरूयुगीन मोहभंग के यथार्थ को 1964 में तुगलक में कन्नड़ रंगकर्मी और नाटककार गिरीश करनाड ने मध्यकालीन मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन तुगलक के रूपक प्रस्तुत किया, तो 1969 में इसी विषय पर इसी पद्धति में हिन्दी नाटकार जगदीशचन्द्र माथुर ने 'पहला राजा' नाटक लिखा। खास बात यह है कि दोनों नाटकों में नेहरूयुगीन द्वन्द्व और चिन्ता केन्द्र है। करनाड ने इसे मुहम्मद बिन तुगलक के ऐतिहासिक चरित्र के रूपक प्रस्तुत किया है, जबकि माथुर ने इसे महाभारत के राजधर्मानुशासन पर्व में वर्णित पृथु के मिथक व्यक्तित्व में रूपान्तरित किया है। 'पहला राजा' माथुर का अन्तिम नाटक है। यह अपनी प्रयोगधर्मिता तथा युगीन समस्याओं के विन्यास के लिए प्रसिद्ध है। 'पहला-राजा' में नेहरूयुगीन लोकतंत्र की समस्याओं को लिया गया है, जो आज और अधिक जटिल हो गई हैं। बच्चन सिंह के अनुसार, इस नाटक में जवाहरलाल नेहरू लक्षणावृत्ति से स्वतन्त्र भारत के पहले राजा कहे जा सकते हैं। पृथु की अनेक विशेषताएँ नेहरू से मिलती-जुलती हैं। अतः पृथु का कथानक नेहरूयुगीन समस्याओं को उठाने के लिए वस्तुनिष्ठ समीकरण बन जाता है।

69. दृश्य काव्य की विधा है—

(a) नाटक (b) निबन्ध
(c) उपन्यास (d) गीतिकाव्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकों वाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।

70. हिन्दी में यथार्थवादी एकांकी के जनक हैं—

(a) रामकुमार वर्मा (b) उपेन्द्रनाथ अश्क
(c) उदयशंकर भट्ट (d) भुवनेश्वर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

डॉ. रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'एकांकी सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। सन् 1930 में रचित 'बादल की मृत्यु' उनका पहला एकांकी है। इस दृष्टि से उन्हें 'हिन्दी एकांकी का जनक' माना जाता है। यह एकांकी पश्चिमी नाट्य-विधान का पूरा ध्यान रखकर लिखा गया है। डॉ. वर्मा ने रूप-विधान तो पश्चिम से लिया है, किन्तु उनके नाटकों की आत्मा भारतीय है। पाश्चात्य ढंग के एकांकी का सूत्रपात अधिकांश विद्वान भुवनेश्वर प्रसाद के 'कारवाँ' से मानते हैं। डॉ. वर्मा के एकांकी, प्रेम और सेक्स की समस्याओं से सम्बन्धित हैं। ये एकांकी मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की आधार भूमि पर यथार्थवादी कलेवर में समाज और जीवन की वस्तु-स्थिति तक पहुँचते हैं। पर इन एकांकियों में लेखक की आदर्शवादी सोच इतनी गहरी है कि वे आदर्शवादी झोंक में यथार्थ को मनमाना नाटकीय मोड़ दे बैठते हैं। इसलिए उनके स्त्री पात्र शिक्षा और नए संस्कारों के बावजूद प्रेम और जीवन का मोह त्यागकर प्रेम के लिए उत्सर्ग कर बैठते हैं, मानो उत्सर्ग या प्राणान्त ही सच्चे प्रेम की कसौटी हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1940 ई. में डॉ. नगेन्द्र ने कहा था ''हिन्दी-एकांकी का इतिहास गत दस वर्षों में सिमटा हुआ था।''
- श्रीरामनाथ 'सुमन', 'चारुमित्रा' (1942) की भूमिका में डॉ. रामकुमार वर्मा को हिन्दी एकांकी का जन्मदाता मानते हैं।
- डॉ. सत्येन्द्र इसका सूत्रपात भारतेन्दु से स्वीकार करते हैं।
- डॉ. सोमनाथ गुप्त 'प्रसाद' के 'एक घूँट' से एकांकी नाटकों का प्रारम्भ मानते हैं।
- 'अज्ञेय' जी ने भी लगभग यही मत स्वीकार करते हुए लिखा है- ''प्रसाद का 'एक घूँट' भी एकांकी है। .....रूप विधान की दृष्टि से वह आधुनिक एकांकी के बहुत निकट है और ऐसा माना जा सकता है कि आधुनिक एकांकी की परम्परा वहीं से आरम्भ होती है।''
- उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित एकांकी संग्रह 'अभिनव एकांकी' 1940 में प्रकाशित हुआ था। स्त्री का हृदय, चार एकांकी, समस्या का अंत, धूम शिखा, अन्धकार और प्रकाश, आदिम युग, पर्दे के पीछे, आज का आदमी, सात प्रहसन आदि उनके अन्य एकांकी संकलन हैं।
- भुवनेश्वर द्वारा रचित एकांकी ताँबे के कोड़े, आज़ादी की नींद, सिकन्दर आदि हैं।

71. आधुनिक एकांकी के जनक माने जाते हैं—

(a) उदयशंकर भट्ट (b) जयशंकर प्रसाद
(c) रामकुमार वर्मा (d) जगदीशचन्द्र माथुर

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

72. 'रुपया तुम्हें खा गया' एकांकी के लेखक हैं—

(a) भगवतीचरण वर्मा (b) रघुवंशी
(c) राजीव सक्सेना (d) विनय रंजन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'रुपया तुम्हें खा गया' एकांकी के लेखक भगवतीचरण वर्मा हैं।

73. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना एकांकी है?

(a) सुहाग के नूपुर (b) परिन्दे
(c) गुल की बन्नो (d) नदी प्यासी थी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'नदी प्यासी थी' धर्मवीर भारती द्वारा लिखित एकांकी है, जबकि 'परिन्दे' तथा 'गुल की बन्नो' कहानियाँ हैं, जिनके लेखक क्रमशः निर्मल वर्मा एवं धर्मवीर भारती हैं। 'सुहाग के नूपुर' अमृतलाल नागर द्वारा लिखित उपन्यास है।

74. 'प्रकाश और परछाईं' किस एकांकीकार की रचना है?

(a) धर्मवीर भारती (b) विष्णु प्रभाकर
(c) बेचन शर्मा उग्र (d) हरिकृष्ण प्रेमी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विष्णु प्रभाकर के एकांकी संग्रह हैं-'बारह एकांकी' (1958), 'दस बजे रात' (1959), 'ये रेखाएं ये दायरे' (1963), 'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' (1966), प्रकाश और परछाईं','मेरे प्रिय एकांकी' (1970), 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' (1979)।

75. **'कबूतरखाना' किस एकांकीकार की रचना है?**

(a) विनोद रस्तोगी (b) मोहन राकेश
(c) भुवनेश्वर (d) जगदीशचन्द्र माथुर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जगदीशचन्द्र माथुर की एकांकी है-कबूतरखाना, मकड़ी का जाला, भोर का तारा, ओ मेरे सपने, घोंसले, रीढ़ की हड्डी, खंडहर।

76. **उपेन्द्रनाथ 'अश्क' रचित 'जोंक' किस प्रकार की एकांकी है?**

(a) प्रतीकात्मक (b) सामाजिक व्यंग्य
(c) मनोवैज्ञानिक (d) राजनैतिक व्यंग्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' रचित जोंक एक सामाजिक एकांकी है, जो हास्य व्यंग्य प्रधान है। तूफान से पहले, चरवाहे आदि इनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। देवताओं की छाया में, पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ, अन्धी गली तथा पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी उनके एकांकी संग्रह हैं। लक्ष्मी का स्वागत, पापी और सूखी डाली में कौटुम्बिक व्यवस्था को नये दृष्टिकोण से देखा गया है। 'विवाह के दिन' इनका प्रहसन है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'अश्क' ने विशेष रूप से सामाजिक श्रेणी के एकांकियों की रचना की। इनकी 'कइसा साब कइसी बीबी, जोंक, पक्का गाना, घपले आदि रचनाएँ हास्य व्यंग्य प्रधान प्रतीकात्मक रचनाएँ हैं।

➲ रंग-मंच से घनिष्ठ परिचय होने के कारण उनकी एकांकी अभिनय की दृष्टि से बहुत सफल रही हैं।

❑ कहानी

1. **कहानी और कहानीकार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है**

(a) वापसी - उषा प्रियंवदा (b) यही सच है - मन्नू भंडारी
(c) जयदोल - अज्ञेय (d) ठेस - जैनेन्द्र

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'ठेस' कहानी फणीश्वरनाथ रेणु' की है। शेष युग्म सही हैं।

2. **इनमें से कौन-सी हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है?**

(a) इन्दुमती (b) ग्यारह वर्ष का समय
(c) दुलाईवाली (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

भारतेन्दु युग में कहानियाँ नहीं लिखी गईं। कुछ कथात्मक शैली के निबन्ध अवश्य लिखे गये थे, जो पढ़ने में अत्यन्त रोचक थे। कहानियों का विकास आलोच्य युग (द्विवेदी युग) में हुआ। 'सरस्वती' (1900) पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म मान्य है। किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' कहानी 'सरस्वती' में 1900 ई. में इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। यह शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' नाटक के आधार पर लिखी गयी है। इसी वर्ष 'सुदर्शन' में माधव प्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' कहानी प्रकाशित हुई। 1902 ई. में 'सरस्वती' में भगवानदीन 'बी.ए.' की 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी प्रकाशित हुई। यह वास्तविक परिस्थिति का चित्र प्रस्तुत करने वाली रचना है। 'सरस्वती' में ही रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) और बंगमहिला की 'दुलाईवाली' (1907) शीर्षक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। अत: इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'इन्दुमती' हिन्दी की पहली कहानी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 1909 ई. में वृन्दावनलाल वर्मा ने 'राखीबंद भाई' लिखकर ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा को जन्म दिया।

➲ 1909 ई. में काशी से 'इन्दु' का प्रकाशन हुआ। इसमें जयशंकर प्रसाद की भावात्मक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इन कहानियों का संग्रह 'छाया' (1912) नाम से प्रकाशित हुआ।

3. **'इन्दुमती' कहानी के लेखक हैं-**

(a) मास्टर भगवानदास (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'इन्दुमती' किसकी छाया मानी जाती है?**

(a) ओथेलो की (b) मैकबेथ की
(c) टेम्पेस्ट की (d) मर्चेंट ऑफ वेनिस की

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इन्दुमती' नामक कहानी सर्वप्रथम कब और कहाँ प्रकाशित हुई थी?**

(a) सन् 1900 में सरस्वती में (b) सन् 1900 में विशाल भारत में
(c) सन् 1903 में सरस्वती में (d) इनमें से किसी में भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **आधुनिक हिन्दी कहानी का आरम्भ 'सरस्वती' पत्रिका के सन् 1900 ई. में प्रकाशित अंक की किस कहानी से माना जाता है?**

(a) इन्दुमती (b) नासिकेतोपाख्यान

(c) रानी केतकी की कहानी (d) यमलोक की यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **आधुनिक खोजों के अनुसार पहली मौलिक कहानी है-**

(a) रानी केतकी की कहानी

(b) पंच परमेश्वर

(c) उसने कहा था

(d) एक टोकरी भर मिट्टी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

आधुनिक खोजों के अनुसार, पहली मौलिक कहानी एक टोकरी भर मिट्टी (1901) है। जिसके लेखक माधवराव सप्रे हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ प्रयाग से निकलने वाली प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' के पहले अंक (1900 ई.) से आधुनिक हिन्दी कहानी का जन्म होता है।

➲ नई खोजों के आधार पर यह सिद्ध हो गया कि शुक्ल जी की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' के पहले ही सन् 1901 में 'एक टोकरी भर मिट्टी' नामक कहानी 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक मासिक पत्रिका में छपी थी।

8. **'हत्या' नामक कहानी के लेखक हैं-**

(a) अज्ञेय (b) जैनेन्द्र कुमार

(c) मुक्तिबोध (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'हत्या' नामक कहानी के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं। उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं-खेल, अपना-अपना भाग्य, वातायन, बाहुबली, नीलम देश की राज कन्या, ध्रुवयात्रा, दो चिड़ियाँ, पाजेब, एक दिन आदि। इनकी कहानियों का मुख्य विषय नारी है।

9. **निम्नांकित में मनोविश्लेषण प्रधान कथाकार कौन नहीं है?**

(a) इलाचन्द्र जोशी (b) अज्ञेय

(c) सुदर्शन (d) जैनेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004, 2009

उत्तर—(c)

सुदर्शन मनोविश्लेषण प्रधान कथाकार नहीं हैं, जबकि इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय तथा जैनेन्द्र मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यासकार/कथाकार हैं। सुदर्शन का वास्तविक नाम पण्डित बद्रीनाथ भट्ट था। सुदर्शन की कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना था। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी था। 'हार की जीत' सुदर्शन की पहली कहानी थी, जो 1920 ई. में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हजार दास्तां' में इनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इनकी प्रमुख रचनाएँ-सच का सौदा, अठन्नी का चोर, साइकिल की सवारी, तीर्थ यात्रा, पत्थरों का सौदागर और पृथ्वी वल्लभ आदि हैं।

10. **'हार की जीत' कहानी लेखक हैं—**

(a) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (b) भगवती प्रसाद वाजपेयी

(c) सुदर्शन (d) पाण्डेय बेचन शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **'हार की जीत' कहानी के लेखक कौन हैं?**

(a) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (b) प्रेमचन्द

(c) सुदर्शन (d) डॉ. राम विलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **'रक्षाबंधन' कहानी के लेखक हैं-**

(a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (b) वृन्दावनलाल वर्मा

(c) विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

पं. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की पहली कहानी 'रक्षाबंधन' 1913 में सरस्वती में छपी।

13. **इनमें प्रवासी कहानीकार हैं-**

(a) विभूति नारायण राय (b) तेजेन्द्र शर्मा

(c) ममता कालिया (d) रवीन्द्र कालिया

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

तेजेन्द्र शर्मा प्रवासी (भारतीय-अमेरिकी) कहानीकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- अपराधबोध का प्रेत, एक बार फिर होली, दीवार में रास्ता, ओवर-फ्लो पार्किंग, काला सागर, गंदगी का बक्सा, ढिबरी टाइट, चरमाहट, देह की कीमत, पासपोर्ट के रंग तथा सपने मरते नहीं।

14. **'गुलाबी बन्नो' कहानी के लेखक हैं—**

(a) त्रिलोचन (b) धर्मवीर भारती
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) कुँवर नारायण

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'गुलाबी बन्नो' कहानी के लेखक का नाम पूछा गया है। प्रस्तुत विकल्पों में इस कहानी का कोई लेखक नहीं है, जबकि इस कहानी का शुद्ध नाम 'गुल की बन्नो' है, जिसके लेखक धर्मवीर भारती हैं।

15. **'कोठरी की बात' कहानी अद्भूत है। इसके लेखक हैं-**

(a) अज्ञेय (b) निर्मल वर्मा
(c) कृष्णा सोबती (d) रजनी गुप्ता

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'कोठरी की बात, इन्द्र की बेटी, चिड़ियाघर, आदम की डायरी, गृहत्याग, पुलिस की सीटी, जिज्ञासा, हारिति, अकलंक, छाया, नीली हँसी, मुस्लिम-2 भाई-2, शरणदाता, पुरुष का भाग्य, अछूते फूल, ताज की छाया में इत्यादि अज्ञेय की कहानियाँ हैं।

16. **जैनेन्द्र की पहली कहानी-संग्रह कब प्रकाशित हुई?**

(a) 1934 (b) 1929
(c) 1939 (d) 1937

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

जैनेन्द्र की पहली कहानी-संग्रह 'खेल' 1928 ई. में प्रकाशित हुई। इसके बाद फाँसी 1929 ई. में प्रकाशित हुई। उचित विकल्प न होने के कारण 1929 ई. माना जा सकता है। इनके अन्य कहानी संग्रह हैं-वातायन (1930 ई.), नीलम देश की राजकन्या (1933 ई.), एक रात (1934 ई.), दो चिड़ियाँ (1935ई.), पाजेब (1942 ई.), जयसंधि (1949 ई.) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ जैनेन्द्र प्रेमचन्द युग के कहानीकार हैं।
- ➲ इनकी समस्त कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' शीर्षक से दस भागों में प्रकाशित हैं।
- ➲ जैनेन्द्र की कहानियों के माध्यम से पहली बार हिन्दी साहित्य में 'व्यक्ति' को महत्व मिला।
- ➲ ये मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं।

17. **उदय प्रकाश द्वारा रचित कौन-सी कहानी नहीं है?**

(a) तिरिछ (b) पाल गोमरा का स्कूटर
(c) पीली आँधी (d) दरियाई घोड़ा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'पीली आँधी' (1996 ई.), उदय प्रकाश की कहानी नहीं है। यह प्रभा खेतान कृत उपन्यास है। उदय प्रकाश के कहानी संग्रह हैं-दरियाई घोड़ा (1989 ई.), तिरिछ (1989 ई.), और अन्त में प्रार्थना (1994 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.), पीली छतरी वाली लड़की (2001 ई.), दत्तात्रेय का दु:ख (2002 ई.), मोहनदास (2006 ई.), वारेन हेस्टिंग्स का सांड, सूनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ 'मोहनदास,' उदय प्रकाश की आत्मकथात्मक कृति है। यह विश्व की आधी दर्जन भाषाओं में अनूदित हो चुकी है।
- ➲ ये प्रसिद्ध कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार थे।
- ➲ वर्ष 2004 में हॉलैण्ड के प्रख्यात 'अन्तरराष्ट्रीय कविता उत्सव' में वे भारतीय कवि के रूप में भाग ले चुके हैं।

18. **'पाल गोमरा का स्कूटर' कहानी के लेखक हैं-**

(a) प्रियंवद (b) स्वयं प्रकाश
(c) उदय प्रकाश (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. **'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' शीर्षक कहानी के लेखक हैं-**

(a) स्वयं प्रकाश (b) अरुण प्रकाश
(c) उदय प्रकाश (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. **निर्मल वर्मा की चर्चित कहानी-संग्रह है-**

(a) परिन्दे (b) तलाश
(c) बंजर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'निर्मल वर्मा' की चर्चित कहानी संग्रह 'परिन्दे' है। इसका प्रकाशन 1960 ई. में हुआ था। इनके अन्य कहानी संग्रह हैं-जलती झाड़ी (1965 ई.), पिछली गर्मियों में (1968 ई.), बीच बहस में (1973 ई.), कव्वे और कालापानी (1983 ई.), सूखा तथा अन्य कहानियाँ (1995 ई.) आदि। परिन्दे को डॉ. नामवर सिंह ने 'नयी कहानी' की पहली कृति माना है।

21. फणीश्वरनाथ रेणु की कौन-सी कहानी है?

(a) रसप्रिया (b) रस आखेटक

(c) रसिकप्रिया (d) प्रिया नीलकण्ठी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी रसप्रिया है। उनकी अन्य कहानियाँ हैं– 'तीसरी कसम उर्फ मारे गये गुलफाम, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अच्छे आदमी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ एक श्रावणी दोपहर की धूप तथा अच्छे आदमी फणीश्वरनाथ रेणु के मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई।

➲ ये नयी कहानी के प्रारम्भकर्ता हैं।

➲ रेणु को पूर्णिया जिले की भूमि के प्रति निश्छल और गहरा लगाव था।

➲ 'तीसरी कसम' उर्फ 'मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नामक फिल्म बनायी गयी थी। यह कहानी ग्रामीण अंचल पर आधारित है।

22. 'तीसरी कसम' फिल्म किस लेखक की कहानी पर बनायी गयी थी?

(a) प्रेमचन्द (b) फणीश्वरनाथ रेणु

(c) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (d) जैनेन्द्र कुमार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कहानीकार के रूप में विख्यात पुरातत्ववेत्ता हैं -

(a) पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

(b) विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

(c) पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी

(d) राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम पुरातत्ववेत्ता, भाषा पण्डित और कहानीकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने केवल तीन कहानियाँ लिखकर जो यश प्राप्त किया है, वह अन्य साहित्यकारों के लिए दुर्लभ है। उनकी प्रथम कहानी 'सुखमय जीवन' (सं. 1968) 'भारत मित्र' में प्रकाशित हुई थी।

24. 'मलबे का आदमी' कहानी का कथ्य क्या है?

(a) साम्प्रदायिकता (b) पर्यावरण

(c) प्रदूषण (d) भारत-पाक विभाजन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का आदमी' 1947 के भारत-पाक विभाजन के फलस्वरूप पैदा हुई मनःस्थिति पर आधारित है। देश के विभाजन की परिणति व्यापक रक्तपात में ही नहीं हुई, बल्कि दो सम्प्रदायों के बीच दुराव, संदेह, त्रास, डर, घृणा आदि मानसिक अवधारणाओं में भी हुई।

25. निम्नलिखित में से राजेन्द्र यादव की कहानी कौन-सी है?

(a) एक और जिन्दगी (b) जहाँ लक्ष्मी कैद है

(c) तलाश (d) एक दिन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'अभिमन्यु की आत्मकथा', छोटे-छोटे ताजमहल', किनारे से किनारे तक', 'प्रतीक्षा', 'टूटना और अन्य कहानियाँ', 'अपने पार' इत्यादि राजेन्द्र यादव के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'एक और जिन्दगी' मोहन राकेश की, 'तलाश', कमलेश्वर की तथा 'एक दिन' जैनेन्द्र की रचित कहानी है।

26. 'नयी कहानी-आन्दोलन' के प्रमुख कहानीकार हैं-

(a) मोहन राकेश (b) जैनेन्द्र

(c) यशपाल (d) इलाचन्द्र जोशी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'नयी कहानी-आन्दोलन' के प्रमुख कहानीकार मोहन राकेश हैं। नयी कहानी का आन्दोलन सन् 1950 से 1960 के बीच के कालखण्ड का उल्लेखनीय इतिहास है, जिसने रूप तथा वस्तु दोनों ही क्षेत्र में हिन्दी कहानी को नये आयाम दिये। इस आन्दोलन के अन्य प्रमुख कहानीकार हैं-राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, हरिशंकर परसाई, भैरव प्रसाद गुप्त आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सन् 1960 से बाकायदे 'नयी कहानियाँ' नामक पत्रिका भैरव प्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने लगी।

➲ सन् 1960 के बाद 'नयी कहानी' के स्थान पर 'अ-कहानी' आन्दोलन का विकास हुआ।

➲ अ-कहानी के संस्थापक डॉ.गंगा प्रसाद विमल हैं।

➲ सचेतन कहानी के पुरोधा डॉ.महीप सिंह हैं।

27. नयी कहानी की विशेष उपलब्धि किस क्षेत्र में रही है?

(a) बदलते सामाजिक-पारिवारिक रिश्तों के चित्रण में

(b) महानगरीय संत्रास के चित्रण में

(c) व्यक्ति के अकेलेपन के चित्रण में

(d) राजनीतिक मोहभंग के चित्रण में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नयी कहानी यथार्थ और जीवन की वास्तविकताओं के अंकन के आधार पर अपने को पिछली कहानी से अलग करती है। नयी कहानी में कहानी के परम्परागत और रूढ़ तत्वों के आधार पर कहानी के मूल्यांकन का विरोध किया गया। 'काल के प्रवाह में' व्यक्ति की सामाजिकता का बोध और स्थिति ही आज की कहानी की विषय-वस्तु है। कथाकार व्यक्ति को उसकी समग्रता में देखने का आग्रह करता है। व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों तथा व्यावहारिक जीवन के तकाजों तथा अन्य आवश्यकताओं की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया के रूप में पाना चाहता है। नयी कहानी ने राजनीति के प्रति उदासीनता और उपेक्षा का रुख अपनाया। नयी कहानी की विशेष उपलब्धि बदलते सामाजिक पारिवारिक रिश्तों के चित्रण में रही है।

28. इनमें से शिवमूर्ति की कहानी नहीं है—

(a) भरतनाट्यम् (b) तिरियाचरित्तर

(c) कसाईबाड़ा (d) अकर्मक क्रिया

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'अकर्मक क्रिया' शिवमूर्ति की कहानी नहीं, बल्कि से.रा.यात्री की कहानी है, अन्य कहानियाँ शिवमूर्ति की हैं। से.रा.यात्री की अन्य रचनाएँ हैं- **उपन्यास**-दराजों में बन्द दस्तावेज, लौटते हुए, कई अँधेरों के पार, अपरिचित शेष, चांदनी के आर-पार, बीच की दरार, टूटते दायरे आदि। **कहानी संग्रह**- केवल पिता, धरातल, टापू पर अकेले, दूसरे चेहरे, काल विदूषक सिलसिला, खंडित संवाद आदि।

29. 'कसाईबाड़ा' कहानी के लेखक हैं-

(a) शिवमूर्ति (b) सतीश जमाली

(c) अखिलेश (d) मंजूर एहतेशाम

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'कसाईबाड़ा' कहानी के लेखक शिवमूर्ति हैं। इसका प्रकाशन 1980 ई. में हुआ। इनकी अन्य कहानियाँ हैं-भरतनाट्यम, सिरी उपमा जोग, तिरिया चरित्तर, केशर कस्तूरा, अकाल-दंड आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ शिवमूर्ति की ख्याति उनकी प्रसिद्ध कहानी कसाईबाड़ा से हुई है।
- ➲ इस कहानी का नाट्य-रूपान्तर भी हुआ है और अनेक संस्थाओं द्वारा इसका मंचन भी हुआ है।
- ➲ इस कहानी में चार प्रमुख पात्र-शनीचरी, प्रधान, लीडर और दरोगा हैं।

30. हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी 'कसाईबाड़ा' के लेखक हैं-

(a) ओम प्रकाश वाल्मीकि (b) कँवल भारती

(c) शिवमूर्ति (d) श्यौराज सिंह 'बेचैन'

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. निम्नलिखित में से ओमप्रकाश बाल्मीकि का कहानी-संग्रह है?

(a) दिवास्वप्न (b) नमक का कैदी

(c) छतरी (d) अपाहिज

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

ओमप्रकाश बाल्मीकि का कहानी-संग्रह 'छतरी' है। 'सलाम' और 'घुसपैठिये' इसके पूर्व प्रकाशित इनकी कहानी संग्रह हैं। ये सभी कहानियां दलित समाज के यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

32. 'राजा निरबंसिया' कहानी के लेखक हैं-

(a) पानू खोलिया (b) कमलेश्वर

(c) हरिशंकर परसाई (d) रवीन्द्र कालिया

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'राजा निरबंसिय' (1957 ई.) कहानी के लेखक कमलेश्वर हैं। इनके अन्य कहानी-संग्रह हैं-कस्बे का आदमी (1958 ई.), खोई हुई दिशाएँ (1963 ई.), मांस का दरिय (1966 ई.), बयान (1973 ई.), आजादी मुबारक (2002 ई.)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ 1972 ई. में कमलेश्वर ने समान्तर कहानी का आन्दोलन चलाकर युवा कहानीकारों को आकृष्ट किया था।
- ➲ इनकी समस्त कहानियों का संग्रह-'समग्र कहानियाँ' शीर्षक से 2001 ई. में प्रकाशित हुआ।
- ➲ नयी कहानी के दौर में राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, मांस का दरिया,जॉर्ज पंचम की नाक, अपना एकान्त कहानियाँ विशेष चर्चित हुई हैं।
- ➲ समान्तर कहानी के दौर में मानसरोवर के हंस, इतने अच्छे दिन, कितने पाकिस्तान जैसी कहानियाँ सराही गयीं।

33. 'समानान्तर कहानी' के प्रवर्तक हैं—

(a) मोहन राकेश (b) राजेन्द्र यादव

(c) कमलेश्वर (d) हिमांशु जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. प्रेमचन्द की कहानियों की संख्या लगभग—

(a) 200 (b) 300

(c) 400 (d) 500

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रेमचन्द की कहानियों की संख्या लगभग तीन सौ (300) माना है। प्रेमचन्द की कहानियों पर हिन्दी में अनेक शोध किये जा चुके हैं, परन्तु उनकी कहानियों की संख्या- निर्धारण में परस्पर विरोधी सूचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें कुछ एक की चर्चा निम्नलिखित पंक्तियों में की जा सकती है। प्रेमचन्द का अपना बयान है- ''मेरी कहानियों की कुल संख्या लगभग ढाई सौ है।'' आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं- ''प्रेमचन्द जी की कहानियों की संख्या 300 के लगभग है। इसके अतिरिक्त उनकी उर्दू कहानियों की संख्या भी 100 से ऊपर है।'' इस प्रकार आचार्य वाजपेयी के अनुसार, कहानियों की संख्या 400 (चार सौ) होती है।

नोट- प्रश्न में यह स्पष्ट नहीं है कि कुल कहानियों के बारे में पूछा जा रहा है या केवल हिन्दी कहानियों को। अत: हिन्दी कहानियों को आधार मानकर (b) सही उत्तर माना जा सकता है।

35. 'नमक का दारोगा' कहानी के लेखक हैं-

(a) जयशंकर प्रसाद (b) प्रेमचन्द

(c) गुलाब राय (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'नमक का दारोगा' कहानी के लेखक प्रेमचन्द हैं। इनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं-सौत, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, रानी सारन्धा, शंखनाद, बैंक का दिवाला, बूढ़ी काकी, कफन आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'सौत' (1915) प्रेमचन्द की पहली कहानी है।
- 'कफन' (1936) अन्तिम कहानी है।
- 'पंच परमेश्वर' में ग्राम पंचायत के आदर्श को उभारा गया है।
- 'नमक का दारोगा' में ईमानदारी और 'बड़े घर की बेटी' में संयुक्त परिवार की मर्यादा प्रतिष्ठित की गयी है।
- प्रेमचन्द कृत अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं—मिस पद्मा, आहुति, कश्मीरी सेब, दो बहनें, मंत्र, कप्तान साहब, झाँकी, दण्ड, दुर्गा का मन्दिर, दूसरी शादी, दो बैलों की कथा, प्रेरणा, जुलूस, घरजमाई, काशी में आगमन, क्रिकेट मैच, आत्माराम आदि।
- प्रेमचन्द की अन्य कहानियाँ हैं- बलिदान (1918), आत्माराम (1920), बूढ़ी काकी (1921), विचित्र होली (1921), गृहदाह (1922), हार की जीत (1922), परीक्षा (1923), आपबीती (1923), उद्धार (1924), सवा सेर गेहूँ (1924), शतरंज के खिलाड़ी (1925), माता का हृदय (1925), कजाकी (1926), सुजान भगत (1927), इस्तीफा (1928), अलग्योझा (1929), पूस की रात (1930), तावान (1931), होली का उपहार (1931), ठाकुर का कुआँ (1932), बेटों वाली विधवा (1932), ईदगाह (1933), नशा (1934), बड़े भाई साहब (1934) आदि।

36. 'प्रेरणा' नामक कहानी रचित है-

(a) नगेन्द्र द्वारा (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा

(c) जयशंकर प्रसाद द्वारा (d) प्रेमचन्द द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. प्रेमचन्द की अन्तिम कहानी थी-

(a) ईदगाह (b) कफन

(c) ठाकुर का कुआँ (d) बड़े घर की बेटी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. कौन-सी कहानी घटना प्रधान है?

(a) आत्माराम (b) आत्मसंगीत

(c) पंच परमेश्वर (d) जादू

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कथावस्तु के आधार प्रेमचन्द की कहानियों के तीन वर्ग बनाये गये हैं, यथा घटना प्रधान, चरित्र प्रधान तथा भाव प्रधान। प्रेमचन्द जी ने ऐसी भी कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें तीनों उपकरणों का सुन्दर सामंजस्य है। जैसे-पंच परमेश्वर, मंत्र आदि।

39. झबरा किस कहानी का पात्र है?

(a) कफन (b) पूस की रात

(c) दो बैलों की कहानी (d) ईदगाह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'झबरा' प्रेमचन्द कृत कहानी 'पूस की रात' का पात्र है। इस कहानी के पात्र-हल्कू, मुन्नी, सहना एवं झबरा हैं। 'झबरा' हल्कू के कुत्ते का नाम है।

40. **'कफन' कहानी में घीसू और माधव कफन के पैसे का क्या करते हैं?**
(a) पूड़ियाँ खरीद कर खाते हैं (b) बोतल भर शराब पीते हैं
(c) इनमें से कोई काम नहीं करते (d) उपर्युक्त दोनों काम करते हैं
P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'कफन' कहानी में घीसू और माधव कफन के पैसे से शराब, पूड़ियाँ, भूनी हुई मछली आदि खरीद कर खाते हैं।

41. **'दामुल का कैदी' के लेखक कौन हैं?**
(a) प्रसाद (b) सुदर्शन
(c) प्रेमचन्द (d) यशपाल
T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'दामुल का कैदी' के लेखक प्रेमचन्द हैं। यह उनकी प्रारम्भिक कहानी है। इस पर लोकवार्ताओं का प्रभाव है। 'दामुल का कैदी' कथानक लिखने में पुनर्जन्म का भी सहारा लिया गया है।

42. **निम्नलिखित में से किस कहानी के लेखक प्रेमचन्द नहीं हैं?**
(a) बड़े घर की बेटी (b) मिस पद्मा
(c) ठाकुर का कुआँ (d) छोटा जादूगर
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'छोटा जादूगर' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गयी कहानी है, जबकि शेष कहानियाँ प्रेमचन्द की हैं।

43. **प्रेमचन्द की कौन-सी कृति अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गई थी?**
(a) काया कल्प (b) सोजेवतन
(c) निर्मला (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सोजेवतन, यानी देश का दर्द प्रेमचन्द की उर्दू कहानियों का यह पहला संग्रह 1907 में 'नवाब राय' (घर का नाम धनपत राय) के नाम से छपा। अंग्रेजी हुक्मरानों को इन कहानियों में बगावत की गूँज सुनाई दी। हमीरपुर के कलक्टर ने प्रेमचन्द को बुलवाकर उनसे इन कहानियों के बारे में पूछताछ की। प्रेमचन्द ने अपना जुर्म कुबूल किया। उन्हें कड़ी चेतावनी दी गई और सोजेवतन की 500 प्रतियाँ जो अंग्रेजी हुकूमत के अफसरों ने जगह-जगह से जब्त की थीं, उनको सरेआम जलाने का हुक्म दिया। सोजेवतन में पाँच कहानियाँ थीं, जिसमें मुंशी जी की सबसे पहली छोटी कहानी 'दुनियाँ सबसे अनमोल रत्न' भी शामिल है। इसके बाद वे 'प्रेमचन्द' नाम से लेखन कार्य करने लगे।

44. **प्रेमचन्द की कृति, जिसे ब्रिटिश शासन द्वारा जब्त कर लिया गया था, है-**
(a) सोजेवतन (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) निर्मला
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. **प्रेमचन्द की किस कृति को प्रतिबन्धित किया गया था?**
(a) कर्बला (b) सोजेवतन
(c) निर्मला (d) गबन
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. **प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लिखते थे?**
(a) धनपत राय (b) नवाब राय
(c) गणपत राय (d) इनमें से कोई नहीं
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. **'गुण्डा' कहानी 'प्रसाद' के किस कहानी संग्रह में संकलित है?**
(a) इन्द्रजाल (b) आकाशदीप
(c) प्रतिध्वनि (d) आँधी
P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'गुण्डा' कहानी इन्द्रजाल कहानी संग्रह में संकलित है, जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। इन्द्रजाल कहानी-संग्रह में कुल 14 कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन सन् 1936 में हुआ था। इसमें इन्द्रजाल, सलीम, छोटा जादूगर, नूरी, परिवर्तन, सन्देह, भीख में, चित्रवाले पत्थर, चित्र मन्दिर, गुण्डा, अनबोला, देवरथ, विराम चिह्न और सालवती कहानियाँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी 'ग्राम' 1911 ई. में इन्दु में प्रकाशित हुई।
- छाया (1912), प्रथम कहानी-संग्रह है, जिसमें 5 कहानियाँ-ग्राम, चन्दा, रसिया बालम, मदन-मृणालिनी, तानसेन शामिल हैं। छाया के दूसरे संस्करण (1918) में 6 कहानियाँ शामिल की गई हैं—शरणागत, सिकन्दर की शपथ, चित्तौड़ का उद्धार, अशोक, जहाँआरा और गुलाम।
- कहानी-संग्रह प्रतिध्वनि (1926) में 15 कहानियाँ-प्रसाद, गूदड़भाई, गुदड़ी के लाल, अघोरी के लाल, पाप की पराजय, सहयोग, पत्थर की पुकार, उस पार का योगी, करुणा की विजय, खंडहर की लिपि, कलावती की शिक्षा, चक्रवर्ती का स्तम्भ, दुखिया, प्रतिभा, प्रलय हैं।

➲ कहानी-संग्रह आकाशदीप (1929) में 19 कहानियाँ-आकाशदीप, ममता, स्वर्ण के खंडहर, सुनहला साँप, हिमालय का पथिक, भिखारिन, प्रतिध्वनि, कला, देवदासी, समुद्र-संतरण, बैरागी, बंजारा, चूड़ीवाला, अपराधी, प्रणय चिह्न, रूप की छाया, ज्योतिष्मती, रमला और बिसाती हैं।

➲ कहानी संग्रह आँधी (1929) में 11 कहानियाँ हैं—आँधी, मधुआ, दासी, घीसू, बेड़ी, व्रतभंग, ग्राम-गीत, विजया, अमिट स्मृति, नीरा और पुरस्कार।

48. प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी में इतिहास के किस युग का चित्रण है?

(a) सल्तनत युग

(b) मुगल शासकों का युग

(c) विक्टोरिया का शासन

(d) ईस्ट इंडिया कम्पनी का समय

दिल्ली केंद्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी का विषय क्षेत्र आरम्भिक ब्रिटिश काल के इतिहास से जुड़ा है। इस कहानी में गुण्डा नन्हकू सिंह की पुरुष वृत्ति और अन्तस में छुपी प्रेम-भावना के उदात्त रूप को व्यक्त किया गया है। इस कहानी में बलवंत सिंह, राजा चेतसिंह, अलाउद्दीन कुबरा, मनियार सिंह (नन्हकू सिंह) और राजमाता पन्ना ये सारे पात्र ऐतिहासिक हैं।

49. नारी पात्र 'मधुलिका' का सम्बन्ध किस कहानी से है?

(a) आकाशदीप (b) पुरस्कार

(c) देवदासी (d) इन्द्रजाल

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

एक खास प्रकार के नारी पात्रों की सृष्टि में जयशंकर प्रसाद जी अद्वितीय हैं, जो अपने निश्छल प्रेम, त्याग और बलिदान से पाठकों पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं। 'आकाशदीप' की चम्पा, 'देवरथ' की सुमाता तथा 'पुरस्कार' की मधुलिका आदि प्रसाद जी की अनुपम नारी सृष्टि हैं।

50. कहानी-संग्रह 'दूसरा ताजमहल' की लेखिका हैं-

(a) नासिरा शर्मा (b) क्षमा कौल

(c) ममता कालिया (d) अनिता जैन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

इलाहाबाद में जन्मीं नासिरा शर्मा सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतन्त्र पत्रकारिता में संलग्न हैं। कहानी, उपन्यास, नाटक, लेख तथा सांस्कृतिक एवं कलात्मक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध नासिरा जी की कहानी-संग्रह 'दूसरा ताजमहल' ख्याति प्राप्त है। इनकी अन्य कहानी-संग्रह हैं—शामी कागज, इब्ने मरियम संगसार, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इंसानी नस्ल तथा बुतखाना। इनके प्रमुख उपन्यास हैं-सात नदियाँ एक समन्दर, शाल्मली, ठीकरे की मँगनी, जिन्दा मुहावरे, अक्षयवट, कुईयाँजान, जीरो रोड आदि। दहलीज, प्लेटफॉर्म नं. सेवेन आदि इनके प्रमुख नाटक हैं। राष्ट्र और मुसलमान, औरत के लिए औरत, किताब के बहाने इनके प्रसिद्ध लेख हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ क्षमा कौल द्वारा रचित उपन्यास 'दर्दपुर' है।

➲ ममता कालिया द्वारा लिखित कहानी-संग्रह हैं- छुटकारा, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन और चर्चित कहानियाँ।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा कहानी-संग्रह नासिरा शर्मा का है?

(a) चल खुसरो घर आपने (b) स्वीमिंग पूल

(c) बोलने वाली औरत (d) पत्थर गली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

नासिरा शर्मा की प्रमुख कहानी-संग्रह है-'पत्थर गली (1986), 'संगसार' (1993), 'इब्ने मरियम' (1994), 'सबीना के चालीस चोर' (1997), 'खुदा की वापसी' (1998), 'इनसानी नस्ल' (2001), 'दूसरा ताजमहल' (2002)।

52. 'दुलाई वाली' किस विधा की रचना है?

(a) कहानी (b) रेखाचित्र

(c) उपन्यास (d) संस्मरण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'दुलाई वाली' कहानी विधा की रचना है। इसकी लेखिका बंग महिला (राजेन्द्र बाला घोष) हैं। यह हिन्दी की पहली कहानी लेखिका हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ शिल्पविधि की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी है- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।

➲ कुछ आलोचक 'दुलाई वाली' कहानी को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी मानते हैं।

53. हिन्दी की पहली कहानी लेखिका हैं—

(a) चन्द्रकिरण सौनरेक्सा (b) बंग महिला

(c) होमवती देवी (d) चन्द्रमुखी ओझा

T.G.T. परीक्षा, 2011

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'ग्यारह वर्ष का समय' किस विधा की रचना है?**
(a) कहानी (b) उपन्यास
(c) डायरी (d) संस्मरण

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी की प्रथम कहानी किसे मानते हैं?**
(a) ग्यारह वर्ष का समय (b) इन्दुमती
(c) दुलाई वाली (d) गुलबहार

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' 1900 ई. में प्रकाशित हुई। रामचन्द्र शुक्ल ने इसे हिन्दी की पहली कहानी माना है। बच्चन सिंह ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में लिखा है कि गोस्वामी जी की ही कहानी 'प्रणयिनी परिणय' (1887) को पहली कहानी माना जा सकता है, यद्यपि इसे गोस्वामी जी ने उपन्यास कहा है। गोस्वामी ने इन्दुमती को भी उपन्यास कहा है। कुछ लोग माधवराव सप्रे की कहानी 'टोकरी भर मिट्टी' (1901) को पहली कहानी कहते हैं, पर तिथि को देखते हुए 'प्रणयिनी-परिणय' या 'इन्दुमती' ही पहली कहानी हो सकती है।

56. **अपने जीवन-काल में सिर्फ तीन कहानियों की रचना कर हिन्दी कथा साहित्य में अपनी अमिट पहचान बना लेने वाले रचनाकार का नाम है—**
(a) इलाचन्द्र जोशी (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(c) अज्ञेय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था 'संवत् 1972 में पहले महायुद्ध के समय में निकली थी। उसमें वचन निभाने की वीरता और भावुकता से पूर्ण एक सजीव चित्र है। गुलेरी जी ने 'बुद्धू का काँटा', 'सुखमय जीवन' और 'उसने कहा था' तीन कहानियाँ लिखकर अपूर्व ख्याति प्राप्त कर ली।

57. **'बुद्धू का काँटा' कहानी के लेखक हैं-**
(a) बेचन शर्मा 'उग्र' (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(c) प्रेमचन्द (d) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

T.G.T. पुनर्परीक्षा 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. **निम्नलिखित में से कौन-सी कहानी पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' कृत नहीं है?**
(a) सुखमय जीवन (b) बुद्धू का काँटा
(c) ग्यारह वर्ष का समय (d) उसने कहा था

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. **'एक पति के नोट्स' कहानी के लेखक हैं-**
(a) गिरिराज किशोर (b) महेन्द्र भल्ला
(c) गोविन्द मिश्र (d) राजी सेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'एक पति के नोट्स' (1967 ई.) कहानी नहीं है। यह एक उपन्यास है, जिसके लेखक महेन्द्र भल्ला हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं-दूसरी तरफ (1976 ई.), उड़ने से पेश्तर (1987 ई.), दो देश और तीसरी उदासी (1997 ई.)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'एक पति के नोट्स' में कथानायक अपनी पत्नी सीता की एकरसता से बोर होकर अपने पड़ोसी की पत्नी संध्या की ओर बढ़ता है। उसे घर बुलाकर सम्बन्ध स्थापित करता है, किन्तु यहाँ उसे कुछ नया अनुभव नहीं होता।
➲ इस उपन्यास में सेक्स के माध्यम से आज के जीवन की ऊब और निरर्थकता को प्रकट किया गया है।
➲ 'दूसरी तरफ' उपन्यास में कथा नायक जीविका की तलाश में विदेश जाता है।

60. **'हरी बिन्दी' किस साहित्यकार की कहानी है?**
(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) ऊषा प्रियंवदा
(c) मृदुला गर्ग (d) मन्नू भंडारी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'हरी बिन्दी' मृदुला गर्ग द्वारा लिखी गयी कहानी है। इनके द्वारा रचित कहानी-संग्रह शहर के नाम, मेरे देश की माटी, अहा एवं कहानियाँ-ग्लेशियर से, यहाँ कमलिनी खिलती हैं, जुग्गी चाचा की मोटर साइकिल, बाल गुरु, खुश किस्मत, बेंच पर बूढ़े आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ मैत्रेयी पुष्पा कृत कहानियाँ हैं-लालमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह), त्रिया हठ (कहानी-संग्रह), फैसला, सिस्टर, सेंध, अब फूल नहीं खिलते, बोझ, पगला गई है, भागवती, छाँह, तुम किसकी हो बिन्नी? आदि।
➲ ऊषा प्रियंवदा द्वारा रचित कहानी-संग्रह जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि हैं।

61. 'सफेद कौआ' कहानी के लेखक हैं—

(a) मंजुल भगत (b) रमेश बतरा
(c) मृदुला गर्ग (d) सुरेन्द्र तिवारी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'सफेद कौआ' (1986) में प्रकाशित कहानी की लेखिका मंजुल भगत हैं। ये मृदुला गर्ग की बहन हैं। इनकी अन्य कहानियाँ हैं— गुलमोहर के गुच्छे (1974), टूटा हुआ इन्द्रधनुष (1976), क्या छूट गया (1976), आत्महत्या के पहले (1979), कितना छोटा सफर (1979), बावन पत्ते एक जोकर (1982), दूत (1992), बूंद (1998), अंतिम बयान (2001)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ मंजुला की पहली कहानी 'शादी की साल गिरह' और अन्तिम कहानी 'ठंडमार सिंह' है।
- ➲ क्या छूट गया और टूटा हुआ इन्द्रधनुष लम्बी कहानियाँ हैं। इन्हें लघु उपन्यास भी कहा जाता है।
- ➲ गुलमोहर के गुच्छे में मुख्यतः नारी के विभिन्न रूपों और स्थितियों का ही चित्रण किया गया है।
- ➲ 'सफेद कौआ' में अपनी कथा भूमि को विस्तृत किया है।
- ➲ इनके ग्यारह कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

62. 'जंक्शन' कहानी के लेखक हैं -

(a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) दूधनाथ सिंह (d) यशपाल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'जंक्शन' कहानी मुक्तिबोध की है, जिसमें निम्न वर्ग के प्रति उनकी घृणा करने की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है।

63. 'सतह से उठता आदमी' की विधा है—

(a) काव्य (b) कहानी
(c) नाटक (d) नाट्य काव्य

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'सतह से उठता आदमी', कहानी विधा है, जिसके लेखक गजानन माधव 'मुक्तिबोध' हैं। उनके द्वारा रचित अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- कविता-संग्रह चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल। कहानी-संग्रह काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी है। इनकी आलोचनात्मक कृतियाँ इस प्रकार हैं—कामायनी : एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी आदि।

64. निम्नांकित में से कौन कथाकार नहीं है?

(a) कृष्णा सोबती (b) ममता कालिया
(c) निर्मला जैन (d) मृणाल पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

निर्मला जैन कथाकार नहीं, बल्कि आलोचक हैं। रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र (1967), आधुनिक साहित्य : मूल्य और मूल्यांकन (1980), हिन्दी आलोचना 20वीं शताब्दी (1982), आधुनिक हिन्दी काव्य : रूप और संरचना (1984), कथा प्रसंग : यथा प्रसंग (2000), डॉ. नगेन्द्र (2003), काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा (2006), कथा समय में तीन हस्ताक्षर (2011), हिन्दी आलोचनात्मक का दूसरा पाठ (2013), प्लेटो के काव्य सिद्धान्त, कविता के प्रति संसार आदि इनकी आलोचनात्मक पुस्तकें हैं।

65. 'सीट नं. 6' किस लेखिका का कहानी-संग्रह है?

(a) मन्नू भंडारी (b) मंजुल भगत
(c) ममता कालिया (d) इंदुबाली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'सीट नं. 6' ममता कालिया की कहानी-संग्रह है। इसका प्रकाशन वर्ष 2014 में हुआ है। 'काके दी हट्टी', 'मुखौटा' तथा 'नयी सदी की पहचान' इनकी अन्य कहानी-संग्रह हैं।

❑ उपन्यास

1. डॉ. काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'उपसंहार' की कथावस्तु का आधार है—

(a) सीता-निष्कासन के बाद राम का जीवन
(b) महाभारत-युद्ध के बाद कृष्ण का जीवन
(c) ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध का जीवन
(d) दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गाँधी का जीवन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

डॉ. काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'उपसंहार' 'महाभारत-युद्ध के बाद कृष्ण के जीवन' पर आधारित कथावस्तु है। इस उपन्यास में श्रीकृष्ण के सद्कार्यों का बखान नहीं, बल्कि उस द्वारकाधीश कृष्ण का उत्तरार्ध है, जिसे महाभारत युद्ध के पश्चात उस युद्ध की विभिषिका ने कहीं दूर नेपथ्य में धकेल दिया गया है।

2. **'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास के लेखक हैं—**

(a) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(b) प्रभाकर माचवे

(c) भगवतीचरण वर्मा

(d) यशपाल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास के रचनाकार सच्चिदान्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' हैं। यह उपन्यास 'अज्ञेय' के अन्य उपन्यासों से भिन्न प्रकृति की रचना है। इस उपन्यास में यथार्थ बोध के वैयक्तिक पक्ष की प्रधानता है। इस रचना को कुछ विद्वानों ने अस्तित्ववादी चेतना का उपन्यास माना है। 'अज्ञेय' ने इसकी रचना दो पात्रों, योके और सेल्मा के माध्यम से की है।

3. **निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-**

सूची-I (उपन्यास)	सूची-II (रचनाकार)
(A) अल्मा कबूतरी	(i) जय प्रकाश कर्दम
(B) छप्पर	(ii) चित्रा मुद्गल
(C) मुक्तिपर्व	(iii) मैत्रेयी पुष्पा
(D) आवां	(iv) मोहनदास नैमिषारण्य

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	iv	i	iii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	i	ii	iii	iv
(d)	iii	i	iv	ii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

सही सुमेलित हैं-

सूची-I (उपन्यास)		सूची-II (रचनाकार)
अल्मा कबूतरी	-	मैत्रेयी पुष्पा
छप्पर	-	जय प्रकाश कर्दम
मुक्तिपर्व	-	मोहनदास नैमिषारण्य
आवां	-	चित्रा मुद्गल

4. **' 'शेखर : एक जीवनी' को मैं हिन्दी के पाँच सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासों में मानता हूँ।'-प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' के सन्दर्भ में यह सूक्तिपरक अभिमत इनमें से किसका है?**

(a) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (b) डॉ. रामकमल राय

(c) डॉ. विद्यानिवास मिश्र (d) डॉ. नामवर सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

' 'शेखर : एक जीवनी' को मैं हिन्दी के पाँच सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासों में मानता हूँ।' यह सूक्तिपरक अभिमत डॉ. नामवर सिंह का है।

5. **समाज से उपेक्षित भंगियों की जीवन-गाथा.......................उपन्यास में है।**

(a) जुलूस (b) नाच्यौं बहुत गोपाल

(c) मैला आँचल (d) परती परिकथा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'नाच्यौं बहुत गोपाल' यशस्वी साहित्यकार अमृतलाल नागर का, उनके अब तक के उपन्यासों की लीक से हटकर सर्वथा मौलिक उपन्यास है। इसमें 'मेहतर' कहे जाने वाले अछूतों में भी अछूत, अभागे अंत्यजों के चारों ओर की कथा का ताना-बाना बुना गया है और उनके अंतरंग जीवन की करुणामयी रसार्द्र और हृदयग्राही झांकी प्रस्तुत की गई है। ढाई-तीन वर्षों के अथक परिश्रम से, विभिन्न मेहतर बस्तियों के सर्वेक्षण व वहाँ के निवासियों के 'इंटरव्यू' के आधार पर लिखी गयी इस बृहद् औपन्यासिक कृति में नागर जी ने सहृदय कथाकार और सजग समाजशास्त्री का अद्भुत समन्वय हुआ है।

6. **'तीसरी सत्ता' उपन्यास के लेखक का क्या नाम है?**

(a) गिरिराज किशोर (b) श्रीलाल शुक्ल

(c) गोविन्द मिश्र (d) निर्मल वर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

तीसरी सत्ता, लोग, जुगलबन्दी, ढाई घर, इन्द्र सुने, यथा प्रस्तावित आदि उपन्यास के लेखक गिरिराज किशोर हैं। इनकी अन्य रचनाएँ निम्न हैं-
कहानी संग्रह-नीम के फूल, चार मोती बेआब, पेपरवेट, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, शहर-दर-शहर, यह देह किसकी है? आदि।
नाटक-नरमेघ, प्रजा ही रहने दो, चेहरे-चेहरे किसके चेहरे, केवल मेरा नाम लो, जुर्म आयद, काठ की तोप, लघु नाटक-मोहन का दु:ख आदि।

7. **'तीस-चालीस-पचास' उपन्यास के लेखक हैं :**

(a) केशवप्रसाद मिश्र (b) भैरवप्रसाद

(c) राजेन्द्र प्रसाद (d) प्रभाकर माचवे

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

प्रभाकर माचवे के तीन उपन्यास 'दर्द के पैवन्द', 'किसलिए' तथा 'तीस-चालीस-पचास' इन तीनों उपन्यासों में आधुनिक जीवन की मूल्यहीनता एवं खोखलेपन के वर्णन का प्रयास किया गया है।

8. 'फांस' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) पंकज विष्ट (b) संजीव

(c) शिवमूर्ति (d) मिथिलेश्वर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'फांस' उपन्यास के लेखक संजीव हैं। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि है- देशभर में लगभग पिछले दो दशकों से बढ़ रही किसानों की आत्महत्याएँ। हालांकि उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के बनगाँव नामक गाँव का चित्रण किया गया है, लेकिन इसमें आंध्र प्रदेश व कर्नाटक के किसानों सहित भारत के उन सभी किसानों की कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें पहले जी.एम.बीजों का इस्तेमाल करने के लिए फुसलाया गया और फिर कर्ज दिया गया। लेकिन सूखे की मार और कुछ प्रकृति के साथ अत्याचार के कारण सीधे-साधे किसानों की जिन्दगी कर्ज और सूखे के बोझ तले होने के कारण आत्महत्या की तरफ बढ़ती गई।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यास कमलेश्वर का नहीं है?

(a) काली आँधी (b) डाक बंगला

(c) चौखट (d) कितने पाकिस्तान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

कमलेश्वर का नाम नयी कहानी आन्दोलन से जुड़े अगुआ कथाकारों में आता है। उनकी पहली कहानी 1948 में प्रकाशित हुई थी, परन्तु 'राजा निरबंया' (1957) से वे बड़े कथाकार बन गये। कमलेश्वर ने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों में 'मांस का दरिया' नीली झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकान्त, आसक्ति, जिन्दा-मुर्दे, जार्ज पंचम की नाक, मुर्दों की दुनिया, कसबे का आदमी एवं स्मारक आदि उल्लेखनीय हैं। चौघट उपन्यास के रचनाकार द्रोणवीर कोहली हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कमलेश्वर की अन्य कृतियाँ इस प्रकार हैं-

उपन्यास- एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया आदमी, काली आँधी, लौटे हुए मुसाफिर, वही बात, आगामी अतीत, सुबह दोपहर शाम, रेगिस्तान, एक और चन्द्रकान्ता, कितने पाकिस्तान आदि।

नाटक-अधूरी आवाज, रेत पर लिखे नाम, हिन्दोस्ताँ हमारा।

10. चंद हसीनों के खतून..........किसकी रचना है?

(a) आगा हश्र काश्मीरी (b) मुंशी अजमेरी

(c) पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (d) मुंशी सदासुख लाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

वर्ष 1927 में प्रकाशित पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के लघु व्यंग्य उपन्यास 'खुदाराम'और 'चंद हसीनों के खतून' में तीक्ष्ण व्यंग्य की बानगी प्रस्तुत है।

11. किस भाषा में उपन्यास को 'कादम्बरी' कहते हैं?

(a) संस्कृत (b) तमिल

(c) गुजराती (d) मराठी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'मराठी' में उपन्यास के अर्थ में कादम्बरी शब्द एक जातिवाचक संज्ञा बन गया है।

12. उपन्यास और उपन्यासकार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है—

(a) नीला चाँद - शिवप्रसाद सिंह

(b) महाभोज - उषा प्रियंवदा

(c) सारा आकाश - राजेन्द्र यादव

(d) मुझे चाँद चाहिए - सुरेन्द्र वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

महाभोज, मन्नू भण्डारी का उपन्यास है। शेष युग्म सही हैं।

13. 'अजय की डायरी' (देवराज) किस विधा की कृति है?

(a) डायरी (b) उपन्यास

(c) नाटक (d) कहानी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

देवराज नन्द किशोर मूलत: चिंतक हैं और उनकी साहित्य चिंता भी उनकी व्यापक संस्कृति-चिंता के अन्तर्गत उपलक्ष्य रूप में ही है। ये मानवतावादी परम्परा के विचारक हैं और कृति के बजाय कृतित्व के लिए आवश्यक वातावरण और प्रेरणाओं को स्पष्ट करने में सहज उत्साह का अनुभव करते हैं। देवराज नन्द किशोर की अन्य रचनाएँ हैं- पथ की खोज (उपन्यास), साहित्य चिंता, आधुनिक समीक्षा, छायावाद का पतन, साहित्य और संस्कृति, अजय की डायरी (उपन्यास), संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, इतिहास पुरुष (कविता संग्रह), प्रतिक्रियाएं, मैं, वे और आप (उपन्यास)। इनकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'संस्कृति का दार्शनिक विवेचन' है।

14. निम्नलिखित में से कौन-सी औपन्यासिक कृति ''घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन (vision) को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न है''?

(a) भूले-बिसरे चित्र (b) अनामदास का पोथा

(c) अपने-अपने अजनबी (d) शेखरः एक जीवनी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

लाहौर जेल में रहते वक्त तत्कालीन परिस्थितियों के मुताबिक अज्ञेय के मन में फाँसी की सजा निश्चित हो गई थी। उस रात के वक्त जो घनीभूत वेदना उनके भीतर उमड़ आयी थी, उसी की परिणति है 'शेखर एक जीवनी'। अज्ञेय के ही शब्दों में ''घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन (Vision) को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न है।'' अपने जीवन का संभावित अन्त, फाँसी की छाया में उन्होंने अपना जीवन का मूल्य, अर्थ एवं सिद्धि को स्थापित करना चाहा। 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास दो खण्डों में विभक्त है, जिसका मुख्य पात्र शेखर है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'शेखर एक जीवनी' वस्तुतः जीवनी मूलक उपन्यास है, जिसमें एक जीवन की वास्तविकता का साक्षात्कार होता है, तो दूसरी ओर औपन्यासिक शिल्प एवं कल्पना के स्थापत्य का अनायास रूप से दर्शन होती है। 'शेखर एक जीवनी' को एक 'चरित्र उपन्यास' की संज्ञा दी जा सकती है। 'भूले-बिसरे चित्र' भगवती चरण वर्मा का उपन्यास है। अनामदास का पोथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है। 'अपने-अपने अजनबी', 'अज्ञेय' द्वारा लिखित उपन्यास है।

15. 'यह पथ बंधु था' उपन्यास के लेखक हैं—

(a) नरेश मेहता (b) प्रभाकर माचवे

(c) भैरव प्रसाद गुप्त (d) रांगेय राघव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'यह पथ बंधु था' (1962) उपन्यास के लेखक नरेश मेहता हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- डूबते मस्तूल (1954), धूमकेतु : एकश्रुति (1962), दो एकांत (1964), नदी यशस्वी है (1967), प्रथम फाल्गुन (1968), उत्तर कथा (भाग एक-1979, भाग दो- 1982)।

16. इनमें से कौन-सा उपन्यास प्रेम विवाह और सेक्स से सम्बन्धित है?

(a) इरावती (b) तितली

(c) कंकाल (d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उपन्यास 'कंकाल' प्रेम विवाह और सेक्स से सम्बन्धित है, जिसमें समाज की त्याज्य, अवैध और अज्ञात-कुलशील संतानों की कथा कही गई है।

17. 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) चित्रा मुद्गल (b) प्रभा खेतान

(c) ममता कालिया (d) नासिरा शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'दुक्खम-सुक्खम' (2009) उपन्यास की लेखिका ममता कालिया हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- बेघर (1971), नरक दर नरक (1975), प्रेम कहानी (1980), लड़कियाँ (1987), एक पत्नी के नोट्स (1997), दौड़ (2000) और अँधेरे का ताला (2009)।

18. निम्न में से कौन उपन्यास एवं उपन्यासकार का युग्म सही नहीं है?

(a) महाभोज-मन्नू भण्डारी (b) आवां-चित्रा मुद्गल

(c) तत्सम-राजी सेठ (d) मुझे सूरज चाहिए-सुरेन्द्र वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

विकल्प (d) युग्म गलत है। सुरेन्द्र वर्मा ने 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास लिखा है, न कि 'मुझे सूरज चाहिए'। महाभोज-मन्नू भण्डारी का, आवां-चित्रा मुद्गल का तथा तत्सम-राजी सेठ का उपन्यास है।

19. 'सुरंग में सुबह' उपन्यास के लेखक हैं—

(a) शिवमूर्ति (b) मिथिलेश्वर

(c) संजीव (d) अमरकान्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'सुरंग में सुबह' उपन्यास के लेखक मिथिलेश्वर हैं। इनके अन्य उपन्यास इस प्रकार हैं-झुनिया (1980), युद्धस्थल (1981), प्रेम न बाड़ी ऊपजै (1995), यह अन्त नहीं (2000) एवं एक थी मुनिला।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मिथिलेश्वर को 'बाबूजी' कहानी-संग्रह के लिए मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा वर्ष 1976 के 'अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार', 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी-संग्रह के लिए सोवियत रूस द्वारा वर्ष 1979 के 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार', 'मेघना का निर्णय' कहानी-संग्रह के लिए उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष 1982 के 'यशपाल पुरस्कार' तथा निखिल भारत बंग साहित्य द्वारा राज्य के सर्वोत्कृष्ट हिन्दी लेखन के लिए वर्ष 1983 के 'अमृत पुरस्कार' से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

20. सुरेन्द्र वर्मा कृत प्रसिद्ध उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका हैं-

(a) वर्षा वशिष्ठ (b) अनन्या

(c) महुआ (d) मधूलिका

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

सुरेन्द्र वर्मा कृत प्रसिद्ध उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका हैं-वर्षा वशिष्ठ। इस उपन्यास में सुरेन्द्र वर्मा ने समाज, रंगमंच और सिने जगत से जुड़े विभिन्न पहलुओं को छूने की कोशिश की है। वर्ष 1996 में इस रचना के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। सुरेन्द्र वर्मा की अन्य रचनाएँ हैं-

उपन्यास- 'अँधेरे से परे', दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, काटना शामी का वृक्ष, पद्म पंखुरी की धार से ।

कहानी-संग्रह-जहाँ बारिश नहीं।

नाटक-सेतुबंध, द्रौपदी, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आठवां सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, एक-दूनी-एक, शकुंतला की अंगूठी।

21. 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) विक्रम सेठ (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) रांगेय राघव (d) अरुन्धती राय

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'शेष कादम्बरी' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) मृदुला गर्ग (b) ऊषा प्रियंवदा
(c) मन्नू भण्डारी (d) अलका सरावगी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'शेष कादम्बरी' उपन्यास की लेखिका अलका सरावगी हैं। उनके अन्य उपन्यास हैं— 'कलि-कथा : वाया बाईपास' (1998), कोई बात नहीं (2004) और ब्रेक के बाद (2008)।

23. 'लालटीन की छत' के लेखक हैं-

(a) भीष्म साहनी (b) ऊषा प्रियंवदा
(c) निर्मल वर्मा (d) नरेन्द्र कोहली

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'लालटीन की छत' (1974) एक उपन्यास है, जिसके लेखक निर्मल वर्मा हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- वे दिन (1964), एक चिथड़ा सुख (1979), रात का रिपोर्टर (1989), अंतिम अरण्य (2000)।

24. 'लालटीन की छत'..........की रचना है।

(a) मन्नू भंडारी (b) कृष्णा सोबती
(c) ममता कालिया (d) निर्मल वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'वे दिन' किस गद्यात्मक विधा की रचना है?

(a) संस्मरण (b) कहानी
(c) यात्रा-वृत्तांत (d) उपन्यास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'निष्कवच' उपन्यास की लेखिका हैं :

(a) क्षमा कौल (b) सूर्यबाला
(c) मधु काँकरिया (d) राजीसेठ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'निष्कवच' राजीसेठ का उपन्यास है। इनका एक अन्य उपन्यास तत्-सम है। 'अंधे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा-मुक्त', 'दूसरे देश काल में', 'यह कहानी नहीं' कहानी संग्रह है।

27. निम्नलिखित में से अमृतराय का उपन्यास है-

(a) विषाद मठ (b) हुजूर
(c) बीज (d) दुःख मोचन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

अमृतराय के पहले उपन्यास 'बीज' (1952) में दूसरे महायुद्ध, सन् बयालीस की क्रान्ति, बंगाल का दुर्भिक्ष, आजाद हिन्द फौज, विद्यार्थियों का जुलूस और आन्दोलन, स्वाधीनता दिवस आदि घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान जीवन की विषमताओं का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास पर मार्क्सवादी प्रभाव है। इनके अन्य उपन्यास हैं- नागफनी का देश (1953), हाथी के दाँत (1956), सुख-दुःख (1969), भटियाली (1969) आदि।

28. 'जुलूस' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) नागार्जुन (b) मोहन राकेश
(c) कमलेश्वर (d) फणीश्वरनाथ रेणु

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'जुलूस' (1965) उपन्यास फणीश्वरनाथ रेणु का है। जुलूस में पूर्वी बंगाल से आये शरणार्थियों की समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- मैला आँचल (1954), परती परिकथा (1957), दीर्घ तपा (1963), कितने चौराहे (1966) और पल्टूबाबू रोड (1979)। रामरतन राय (1971) 'रेणु' का अधूरा उपन्यास है। इसमें 'आंचलिकता' का वह रूप नहीं रह गया है, जो 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' में है।

29. आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक किसे माना जाता है?

(a) नागार्जुन (b) शिवपूजन सहाय

(c) फणीश्वरनाथ रेणु (d) शिवप्रसाद मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास ही सही अर्थों में 'आंचलिक' हैं। 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' में ग्रामांचलों के जितने विशद और सवाक् चित्र देखने को मिलते हैं, उतने अन्य तथाकथित आंचलिक उपन्यासों में नहीं। अतः फणीश्वरनाथ रेणु को आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने पहला 'मैला आँचल लिखा तत्पश्चात् 'परती परिकथा'। रेणु के 'मैला आँचल' के प्रकाशन के पूर्व नागार्जुन का 'बलचनमा' (1952) प्रकाशित हो चुका था, पर इसे आंचलिक नहीं कहा गया, यद्यपि इसमें आंचलिकता का कम रंग नहीं है।

30. हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास है—

(a) मैला आँचल (b) परती परिकथा

(c) आधागाँव (d) वरुण के बेटे

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'मैला आँचल' किस प्रकार का उपन्यास है?

(a) राजनीतिक (b) आदर्शवादी

(c) आंचलिक (d) ऐतिहासिक

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'आवारा मसीहा' किस उपन्यासकार की जीवनी से सम्बन्धित है?

(a) शरत्चन्द्र (b) बंकिम चन्द्र

(c) अमृतलाल नागर (d) विमल मित्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'आवारा मसीहा' उपन्यास, उपन्यासकार 'शरत्चन्द्र' की जीवनी से सम्बन्धित है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। ज्ञान चन्द्र जैन ने कथा शेष में अमृतलाल नागर की जीवनी लिखी है।

33. 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी पर आधारित उपन्यास है?

(a) प्रेमचन्द (b) बंकिमचन्द्र

(c) शरत्चन्द्र (d) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'चतुरी चमार' उपन्यास है-

(a) प्रेमचन्द (b) निराला

(c) भगवती चरण वर्मा (d) जैनेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'चतुरी चमार' निराला द्वारा लिखा गया उपन्यास है। इनके अन्य उपन्यास हैं-अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती, कुल्लीभाट, बाले कारनामे आदि ।

35. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का 'रंगनाथ की वापसी' शीर्षक से नाट्यान्तर किसने किया है?

(a) गिरीश रस्तोगी (b) कुसुम कुमार

(c) शोभना भूटानी (d) शान्ति मेहरोत्रा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

गिरीश रस्तोगी ने श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का नाट्य रूपान्तर 'रंगनाथ की वापसी' नाम से किया था।

36. 'राग दरबारी' के रचनाकार का नाम है—

(a) मोहन राकेश (b) श्रीलाल शुक्ल

(c) हरिशंकर परसाई (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. श्रीलाल शुक्ल की रचना है—

(a) आषाढ़ का एक दिन (b) कटरा बी आरजू

(c) राग दरबारी (d) सारा आकाश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. निम्नलिखित उपन्यासों में श्रीलाल शुक्ल का कौन-सा उपन्यास है?

(a) एक चिथड़ा सुख (b) तीसरा आदमी

(c) उखड़े हुए लोग (d) सीमाएँ टूटती हैं

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास हैं-सूनी घाटी का सूरज (1957), अज्ञातवास (1962), राग दरबारी (1968), आदमी का जहर (1972), सीमाएँ टूटती हैं (1973), मकान (1976), पहला पड़ाव (1987), विश्रामपुर का सन्त (1998), बब्बर सिंह और उसके साथी (1999), राग विराग (2001)। एक चिथड़ा सुख निर्मल वर्मा, तीसरा आदमी-कमलेश्वर तथा उखड़े हुए लोग-राजेन्द्र यादव का उपन्यास है।

नोट-'तीसरा आदमी' विष्णु प्रभाकर का एकांकी संग्रह भी है।

39. 'सरकटी लाश' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) बाबू देवकी नाथ खत्री (b) गोपालराम गहमरी

(c) लज्जाराम मेहता (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जासूसी उपन्यासों का प्रवर्तन गोपालराम गहमरी ने किया था। गोपालराम गहमरी अंग्रेज उपन्यासकार सर ऑर्थर कानन डायल से प्रभावित थे। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'ए स्टडी इन स्कारलेट' (1887) को गोपालराम गहमरी ने 'गोविन्द राम' (1905) शीर्षक से हिन्दी में रूपान्तरित किया। सरकटी लाश (1900), खूनी कौन (1900), बेकसूर की फाँसी (1900), बेगुनाह का खून (1900), जमुना का खून (1900), डबल जासूस (1900), मायाविनी (1901), चक्करदार चोरी (1901), जासूस की भूल (1901), अद्भूत खून (1902), जासूस पर जासूसी (1904), जासूस चक्कर में (1906), इन्द्रजालिक जासूस (1910), लाइन पर लाश (1910), खूनी का भेद (1910), गुप्त भेद (1913), जासूस की ऐयारी (1914) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

40. 'झूला नट' उपन्यास की रचनाकार हैं-

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग

(c) ऊषा प्रियंवदा (d) शिवानी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'झूला नट' उपन्यास की रचनाकार मैत्रेयी पुष्पा हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- स्मृतिदंश (1990), बेतवा बहती रही (1993), इदन्नमम (1994), चाक (1997), अल्मा कबूतरी (2000), अगन पाखी (2001), विजन (2002), कहे ईसुरीफाग (2004), त्रिया हठ (2005) तथा गुनाह-बेगुनाह (2011) आदि।

41. 'चाक' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग

(c) ममता कालिया (d) मन्नू भण्डारी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'कठ गुलाब' किसकी रचना है?

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) चित्रा मुद्गल

(c) मृदुला गर्ग (d) अलका सरावगी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'कठ गुलाब' एक उपन्यास है, जिसकी लेखिका मृदुला गर्ग हैं। इसकी रचना 1996 में की गई। इनके अन्य उपन्यास हैं- उसके हिस्से की धूप (1975), वंशज (1976), चितकोबरा (1979), अनित्य (1980), मैं और मैं (1984) तथा मिलजुल मन (2009)।

43. 'मिलजुल मन' उपन्यास की लेखिका हैं—

(a) कृष्णा सोबती (b) मन्नू भण्डारी

(c) मृदुला गर्ग (d) ऊषा प्रियंवदा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'महाभोज' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) ममता कालिया (b) कृष्णा सोबती

(c) मन्नू भण्डारी (d) शानी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'महाभोज' (1979) मन्नू भण्डारी द्वारा लिखा गया एक राजनीतिक उपन्यास माना गया है। इसका परिवेश वैयक्तिक या पारिवारिक न होकर सामाजिक है। मन्नू भण्डारी के अन्य उपन्यास हैं- आपका बण्टी (1971) तथा एक इंच मुस्कान (जिसे राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर लिखा) आदि।

45. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भण्डारी द्वारा संयुक्त रूप से लिखा गया उपन्यास है-

(a) सारा आकाश (b) आपका बण्टी

(c) मुर्दा सराय (d) एक इंच मुस्कान

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. इनमें से कौन-सा सहयोगी उपन्यास है?

(a) महाभोज (b) उखड़े हुए लोग

(c) एक इंच मुस्कान (d) आपका बंटी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'आपका बंटी' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) मृदुला गर्ग (b) कृष्णा सोबती

(c) ऊषा प्रियंवदा (d) मन्नू भण्डारी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'आपका बंटी' उपन्यास किसने लिखा है?

(a) मन्नू भण्डारी (b) निरुपमा सेवती
(c) शिवानी (d) राजी सेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'जिन्दगीनामा' किसकी रचना है?

(a) मन्नू भण्डारी (b) मृदुला गर्ग
(c) कृष्णा सोबती (d) ऊषा प्रियंवदा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कृष्णा सोबती के दो उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के' (1972) और 'जिन्दगीनामा' (1979) विशेष प्रसिद्ध हैं। इस उपन्यास में नारी जीवन की एक मनोवैज्ञानिक समस्या को उभारा गया है, जबकि 'जिन्दगीनामा' में पंजाब की विगत शती की जिन्दगी का पूरा ब्योरा प्रस्तुत किया गया है।

50. कृष्णा सोबती की कौन-सी कृति सांझी संस्कृति पर है?

(a) मित्रो मरजानी (b) हम हशमत
(c) जिन्दगीनामा (d) यारों का यार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. 'वैशाली की नगर वधू' नामक उपन्यास के लेखक हैं-

(a) वृन्दावनलाल वर्मा
(b) आचार्य चतुरसेन शास्त्री
(c) इलाचन्द्र जोशी
(d) यशपाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'वैशाली की नगर वधू' (1949) एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसके लेखक आचार्य चतुरसेन शास्त्री हैं। इनके अन्य ऐतिहासिक उपन्यास हैं- सोमनाथ (1954), वयं रक्षामः (1955)।

52. 'वैशाली की नगर वधू' किसकी रचना है?

(a) वृन्दावनलाल वर्मा (b) अमृतलाल नागर
(c) चतुरसेन शास्त्री (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. 'मानस का हंस' उपन्यास के लेखक हैं—

(a) अमृतलाल नागर (b) यशपाल
(c) रेणु (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'मानस का हंस' (1972) एक जीवनीपरक उपन्यास है, जिसे 'तुलसीदास' को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इसके लेखक अमृतलाल नागर हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- शतरंज के मोहरे, सात घूँघट वाला मुखड़ा (1968), एकदा नैमिषारण्ये (1972), खंजन नयन (1981), करवट (1985) पीढ़ियाँ (1990)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अमृतलाल नागर ने 'सूरदास' के जीवन को केन्द्र में रखकर 'खंजन नयन' नामक उपन्यास लिखा है।

➲ 'शतरंज के मोहरे' में अवध की नवाबी का ह्रासोन्मुख जीवन सफलतापूर्वक चित्रित है।

54. इनमें से कौन-सा उपन्यास जीवनीपरक है?

(a) खंजन नयन (b) मृगनयनी
(c) आपका बंटी (d) कलिकथा : वाया बाईपास

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. इनमें से कौन-सा उपन्यास राही मासूम रजा द्वारा लिखित है?

(a) नूतन ब्रह्मचारी (b) आधा गाँव
(c) काला जल (d) पुनर्नवा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

राही मासूम रजा एक आंचलिक उपन्यासकार थे। इनका 'आधा गाँव' शिया मुसलमानों की जिन्दगी पर लिखा गया पहला उपन्यास है। इसमें भारत विभाजन के पहले और बाद की जिन्दगी को उभारा गया है। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- टोपी शुक्ला, ओस की बूँद, सीन 75, हिम्मत जौनपुरी, दिल एक सादा कागज आदि।

56. 'आधा गाँव' इनमें से किस विधा की रचना है?

(a) कहानी (b) उपन्यास
(c) नाटक (d) संस्मरण

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

57. 'टोपी शुक्ला' के लेखक हैं—
(a) श्रीलाल शुक्ल (b) राही मासूम रजा
(c) मोहन राकेश (d) मन्नू भण्डारी
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. 'आधा गाँव' उपन्यास है-
(a) कृष्णा सोबती (b) रेणु
(c) राही मासूम रजा (d) भगवती चरण वर्मा
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'आधा गाँव' के लेखक हैं-
(a) मेहरुन्निसा परवेज (b) शानी
(c) राही मासूम रजा (d) असगर वजाहत
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

60. इनमें से कौन आंचलिक उपन्यासकार है?
(a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद
(c) राही मासूम रजा (d) जैनेन्द्र कुमार
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

61. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यासकार एक आंचलिक उपन्यासकार है?
(a) यशपाल (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) राही मासूम रजा (d) अज्ञेय
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

फणीश्वरनाथ रेणु ने सर्वप्रथम अपनी प्रथम कृति 'मैला आँचल' (1954) को ही आंचलिक उपन्यास के नाम से अभिहित किया। प्रथम संस्करण की भूमिका में उन्होंने लिखा था– ''यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास''। उन्होंने प्रेमचन्द के उपन्यासों में आंचलिकता खोजी। यही नहीं शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' (1926) और वृन्दावनलाल वर्मा के 'झाँसी की रानी' (1946) तथा 'मृगनयनी' को भी आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में ले लिया गया। प्रस्तुत विकल्पों में राही मासूम रजा आंचलिक उपन्यासकार हैं, जिनका 'आधा गाँव' आंचलिक उपन्यास है।

62. देश-विभाजन की त्रासदी किस उपन्यास में वर्णित है?
(a) राग दरबारी (b) गबन
(c) झूठा सच (d) इन्हीं हथियारों से
T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'झूठा सच' प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल द्वारा लिखा गया है, जो देश-विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। 'झूठा सच' यशपाल द्वारा दो भागों में लिखा गया है। इस उपन्यास का पहला भाग- 'वतन और देश' 1958 ई. में प्रकाशित हुआ, जबकि दूसरा भाग 'देश का भविष्य' 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं- तारा, पुरी और कनक। यशपाल के अन्य प्रमुख उपन्यास हैं— पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, देशद्रोही मनुष्य के रूप, अमिता, दिव्या, तेरी मेरी उसकी बात आदि।

63. 'झूठा सच' उपन्यास के लेखक हैं-
(a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध
(c) यशपाल (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. 'सूरज किरन की छाँव' - आंचलिक उपन्यास के लेखक हैं-
(a) राजेन्द्र अवस्थी (b) शैलेश मटियानी
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) उदयशंकर भट्ट
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'सूरज किरन की छाँव' राजेन्द्र अवस्थी का पहला उपन्यास है। यह एक आंचलिक उपन्यास है।

65. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यास नागार्जुन का नहीं है?
(a) बलचनमा (b) रतिनाथ की चाची
(c) वरुण के बेटे (d) परती परिकथा
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'परती परिकथा' नागार्जुन का उपन्यास नहीं, बल्कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का उपन्यास है। शेष उपन्यास नागार्जुन के हैं। नागार्जुन का पहला उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' 1948 ई. में प्रकाशित हुआ था। बलचनमा (1952), नई पौध (1953), बाबा बटेशर नाथ (1954), वरुण के बेटे (1957), दुखमोचन (1957), कुम्भी पाक (1960), हीरक जयन्ती (1961), उग्रतारा (1963), इमरतिया (1968), पारो (1975), गरीब दास (1979) आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

66. साम्प्रदायिक समस्या पर लिखा गया उपन्यास कौन है?

(a) तमस (b) बलचनमा

(c) अपने-अपने अजनबी (d) बूँद और समुद्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'तमस' भीष्म साहनी का साम्प्रदायिक समस्या पर लिखा गया उपन्यास है, जिसमें भारत-विभाजन के पूर्व हिन्दू-मुस्लिम दंगों का जायजा लिया गया है। यह दो भागों में है- पहले भाग में शहरी दंगों की डाक्युमेंट्री है, तो दूसरे भाग में एक परिवार के माध्यम से गाँव के दंगों का चित्रण किया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- बसन्ती, कुन्ती, भाग्य रेखा, कड़ियां झरोखे, मैयादास की माड़ी।

67. निम्नलिखित रचनाओं में कौन-सी ऐसी पुस्तक है, जो भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर नहीं लिखी गई है?

(a) तमस (b) आधा गाँव

(c) कितने पाकिस्तान (d) राग दरबारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर 'राग दरबारी' पुस्तक नहीं लिखी गयी है। यह प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल की रचना है। भीष्म साहनी द्वारा रचित 'तमस', राही मासूम रजा द्वारा रचित 'आधा गाँव' तथा कमलेश्वर द्वारा रचित 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर लिखी गयी है।

68. निम्नलिखित में से किस उपन्यास का कथानक भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित नहीं है?

(a) झूठा-सच (b) तमस

(c) आधा गाँव (d) कर्मभूमि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'कर्मभूमि' (1932 ई.) उपन्यास, जो प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया है, भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित नहीं, बल्कि इसमें नागरिक और ग्रामीण दोनों जीवन-धाराओं पर आधारित यथार्थवादी राजनैतिक चित्रण किया गया है। शेष सभी उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित हैं।

69. पाप और पुण्य के चिरंतन नैतिक प्रश्न को किस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है?

(a) सामर्थ्य और सीमा (b) चित्रलेखा

(c) भूले-बिसरे चित्र (d) आखिरी दाँव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'चित्रलेखा' भगवती चरण वर्मा की औपन्यासिक कृति है। भगवती चरण वर्मा को उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला उनका उपन्यास चित्रलेखा है, जिसमें पाप-पुण्य के चिरंतन नैतिक प्रश्न को प्रस्तुत किया गया है। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- पतन, तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव, भूले-बिसरे चित्र, रेखा, सीधी-सच्ची बातें तथा सबहिं-नचावत रामगोसाई।

70. 'चित्रलेखा' किसकी औपन्यासिक कृति है?

(a) भगवती चरण वर्मा (b) भगवती प्रसाद बाजपेयी

(c) उदयशंकर भट्ट (d) विष्णु प्रभाकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

71. 'बावनदास' इनमें से किस उपन्यास का पात्र है?

(a) गोदान (b) परती परिकथा

(c) बलचनमा (d) मैला आँचल

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

मैला आँचल उपन्यास का पात्र 'बावनदास, कालीचरण, कमली तथा डॉ. प्रशान्त हैं। परती परिकथा के पात्र जितेन्द्र तथा इरावती हैं। होरी, गोबर, मातादीन, दातादीन, अलगू, मंगरू, धनिया, सिलिया, झुनिया आदि गोदान के पात्र हैं।

72. 'गोबर' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का पात्र है?

(a) प्रेमाश्रम (b) गबन

(c) गोदान (d) निर्मला

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. 'वर्ग-वैषम्य' एवं 'वर्ग-चेतना' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का मूल आधार है?

(a) गबन (b) गोदान

(c) निर्मला (d) प्रेमाश्रम

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

प्रेमचन्द 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में प्रेम के माध्यम से हृदय परिवर्तन द्वारा समाज की आर्थिक विषमताओं को हटाकर रामराज्य स्थापित करना चाहते हैं। यह उपन्यास वर्ग-वैषम्य एवं वर्ग-चेतना पर आधारित है। प्रेमाश्रम के किसान जमींदारों की बेगारी, धौंस तथा अत्याचार के विरुद्ध तन कर खड़े हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रेमचन्द के 'प्रेमाश्रम' उपन्यास पर गाँधीवाद का प्रभाव है।
- वस्तुतः यह हिन्दी का पहला राजनीतिक उपन्यास है।
- 'प्रेमाश्रम' प्रेमचन्द के 'गोशए आफियत' का हिन्दी अनुवाद है।

74. प्रेमचन्द का कौन-सा उपन्यास गाँधीवाद से प्रभावित है?

(a) गोदान (b) कर्मभूमि
(c) रंगभूमि (d) सेवासदन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

प्रेमचन्द का उपन्यास 'रंगभूमि' के गाँधीवादी नायक सूरदास का व्यक्तित्व अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सूरदास का साधन-शुद्धि का आग्रह, मशीनीकरण का विरोध, पूँजीवादी संस्कृति की उपेक्षा, प्राचीनकाल से चली आयी सामन्तवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण आदि विचार गाँधीवाद का प्रभाव सूचित करते हैं। कर्मभूमि में गाँधी के व्यावहारिक कार्यक्रमों का गाँवों में प्रचार दिखाया गया है। सूत-कताई, बुनाई, हरिजनोद्धार, शराबबंदी, मुर्दा जानवरों का मांस-भक्षण न करना, विभिन्न जातियों में रोटी-व्यवहार, मन्दिर-प्रवेश का आन्दोलन इत्यादि को पढ़ते समय गाँधी-युग का वातावरण साकार होता जान पड़ता है। 'गोदान' में आकर 'प्रेमचन्द' समाजवाद की ओर कदम बढ़ाते दिखाई पड़ते हैं, लेकिन गाँधीवाद तत्व प्रेमचन्द के व्यक्तित्व से विलुप्त नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्द का उपन्यास 'रंगभूमि' गाँधीवाद से प्रभावित है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) बताया है, जबकि मुरली मनोहर प्रसाद सिंह तथा रेखा अवस्थी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'प्रेमचन्द : विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता' में 'हिन्दी उपन्यास परम्परा' (नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा सम्पादित) अध्याय के अन्तर्गत पृष्ठ 192-194 तक (संस्करण-2008) यह उद्धृत है कि प्रेमचन्द के उपन्यास 'रंगभूमि' में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, नागरिक, ग्रामीण के साथ विभिन्न वर्गों और स्थितियों की योजना एवं गाँव तथा नगरों के परिवारों का वर्णन किया गया। इसके लिखे जाने के समय गाँधीजी का सत्याग्रह आन्दोलन पराकाष्ठा पर था। गाँधीजी के सामाजिक, राजनीतिक तथा आदर्शमूलक विचारों से यह उपन्यास प्रभावित है। सूरदास नामक अन्धा पात्र भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतीक है तथा गाँधीवादिता में पगा हुआ है। वह अन्धा निर्बल होने पर भी निष्ठावान है। विनय, सोफिया और प्रभुसेवक आदि के चित्रणों में भी गाँधीवादी जीवनदृष्टि का प्रभाव है। 'रंगभूमि' गाँधीवादी उपन्यास इसलिए कहा जाता है कि यह गाँधीजी की राजनीतिक चेतना से अनुप्राणित है। 'रंगभूमि' प्रेमचन्द की उपन्यासकला का एक विकसित सोपान है। गाँधीवाद का प्रभाव साहित्य या जीवन पर जैसा भी कुछ पड़ा वह 'रंगभूमि' में दिखाई पड़ता है। चरित्रों की विविधता, बहुलता (औपन्यासिक बाहुल्य) और तत्कालीन जीवन की व्यापकता का चित्रण 'रंगभूमि' की अपनी विशेषता है। 'कर्मभूमि' में न तो 'रंगभूमि' जैसी आदर्शवादिता है और न 'गबन' जैसी विषय की एकाग्रता और समाहार है। 'कर्मभूमि' में सामान्य जीवन की धारा व वास्तविकता अधिक है, गाँधीवादी प्रभाव कम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'रंगभूमि' में सर्वहारा और पूँजीपति के बीच सीधा संघर्ष चित्रित है।
- 'सूरदास' बनारस के पांडेपुर गाँव का एक किसान है।
- रंगभूमि में तीन पात्र हैं- महेन्द्र कुमार, सूरदास तथा जनसेवक।
- प्रेमचन्द ने रंगभूमि में पहली बार प्रतीकों का प्रयोग किया है।

75. 'सूरदास' प्रेमचंद के किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है?

(a) कर्मभूमि (b) प्रेमाश्रम
(c) सेवासदन (d) रंगभूमि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. 'सूरदास' किस उपन्यास का पात्र है?

(a) रंगभूमि (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) मानस का हंस

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. 'सूरदास' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का पात्र है?

(a) वरदान (b) प्रतिज्ञा
(c) गोदान (d) रंगभूमि

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एलटी ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. 'सूरदास' किस उपन्यास का चर्चित पात्र है?

(a) गोदान (b) कर्मभूमि
(c) रंगभूमि (d) कायाकल्प

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. 'चौगाने हस्ती' नामक उर्दू उपन्यास प्रेमचन्द ने हिन्दी में किस नाम से लिखा?

(a) रंगभूमि (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) गोदान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(a)

आरम्भ में प्रेमचन्द अपने उपन्यास पहले उर्दू में लिखते थे और फिर स्वयं उनका हिन्दी रूपान्तर करते थे। 'रंगभूमि', 'सेवासदन' और प्रेमाश्रम क्रमशः 'चौगाने हस्ती', 'बाजारे-हुस्न' और 'गोएश-आफियत' नाम से उर्दू में लिखे गए थे, किन्तु प्रकाशित पहले ये हिन्दी में ही हुए। 'जलवए ईसार' का रूपान्तर 'वरदान' 1921 ई. में प्रकाशित हुआ तथा 'हमखुर्मा व हमसवाब' के पूर्व प्रकाशित हिन्दी-रूपान्तर 'प्रेमा अर्थात दो सखियों का विवाह' को परिष्कृत कर उन्होंने 'प्रतिज्ञा' (1929) शीर्षक से उसे सर्वथा नये रूप में प्रकाशित कराया।

80. उर्दू उपन्यास चौगाने हस्ती (प्रेमचन्द) का हिन्दी रूपान्तरण है -

(a) गबन (b) मंगल सूत्र

(c) गोदान (d) रंगभूमि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

81. प्रेमचन्द का एक सशक्त उपन्यास 'गोदान' है-

(a) राजनैतिक (b) धार्मिक

(c) सामाजिक (d) ऐतिहासिक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'गोदान' प्रेमचन्द का अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है। यह उनकी प्रौढ़तम कृति है। गोदान में प्रेमचन्द का सम्पूर्ण जीवन- अनुभव सिमट कर केन्द्रीभूत हो गया है। 'होरी' उपन्यास का नायक है। वह किसानों का प्रतिनिधि है। धर्म के ठेकेदारों, छोटे-बड़े महाजनों और जमींदारों के जाल में उलझा हुआ मर्यादावादी किसान घिसते-घिसते मजदूर हो जाता है और पिसते-पिसते शव। दूसरी ओर सभ्य नागरिक समाज की स्थिति भी सामाजिक उत्थान के लिए आशाप्रद नहीं है।

82. निम्नलिखित उपन्यासों में से प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास है-

(a) सेवासदन (b) निर्मला

(c) प्रेमाश्रम (d) गोदान

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

83. प्रेमचन्द द्वारा उर्दू भाषा में लिखा गया उपन्यास 'बाजारे हुस्न' का हिन्दी रूपान्तरण है-

(a) कायाकल्प (b) सेवासदन

(c) गबन (d) रंगभूमि

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया सेवासदन पहला हिन्दी उपन्यास है, जिसे स्वयं प्रेमचन्द ने 'हिन्दी का बेहतरीन नॉवेल' कहा है। यह उनके उर्दू उपन्यास 'बाजारे हुस्न' (1914) का हिन्दी रूपान्तरण है। यह भारतेन्दु युग से चली आ रही वैचारिक समस्याओं- दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि का प्रथम रचनात्मक रूपायन है। वस्तुतः यह आर्य समाज की सुधारवादी संरचना के समानान्तर साहित्यिक रचना थी। चूँकि यह उपन्यास 'बाजारे हुस्न' हिन्दी का रूपान्तरण है, इसलिए स्पष्ट है कि इसकी समस्या भी वेश्या जीवन की ही समस्या है।

84. गोदान उपन्यास है-

(a) यथार्थवादी

(b) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी

(c) आदर्शवादी

(d) यथार्थोन्मुख आदर्शवादी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जीवन के अन्तिम दिनों में प्रेमचन्द की आदर्शवादी आस्था हिल उठी थी। 'सेवासदन' से लेकर 'गोदान' तक आते-आते भीतर ही भीतर उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुके थे। 'गोदान' उनकी परिपक्व जीवन दृष्टि का परिणाम है। यहाँ तक आते-आते प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवाद बन गया है।

85. प्रेमचन्द के निम्नलिखित उपन्यासों को रचना वर्ष के सिलसिलेवार क्रम में सजाइए-

(क) गबन (ख) गोदान

(ग) सेवासदन

(a) क → ख → ग (b) ग → क → ख

(c) ख → क → ग (d) ग → ख → क

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रेमचन्द ने कुल ग्यारह उपन्यास लिखे, जो इस प्रकार हैं-

उपन्यास		प्रकाशन वर्ष
1- सेवासदन	–	1918 ई.
2- वरदान	–	1921 ई.
3- प्रेमाश्रम	–	1922 ई.
4- रंगभूमि	–	1925 ई.
5- कायाकल्प	–	1926 ई.
6- निर्मला	–	1927 ई.
7- प्रतिज्ञा	–	1929 ई.
8- गबन	–	1931 ई.
9- कर्मभूमि	–	1932 ई.
10- गोदान	–	1936 ई.
11- मंगलसूत्र	–	अपूर्ण

86. निम्नांकित उपन्यासों का कालक्रमानुसार सही विकल्प चिह्नित कीजिए—

(a) प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गोदान, गबन

(b) गबन, गोदान, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि

(c) प्रेमाश्रम, गबन, कर्मभूमि, गोदान

(d) कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, गबन, गोदान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. 'मंगलसूत्र' शीर्षक अधूरे उपन्यास के लेखक का नाम है-

(a) मोहन राकेश (b) प्रेमचन्द

(c) शैलेश मटियानी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. इनमें से कौन-सा उपन्यास प्रेमचन्द का नहीं है?

(a) गोदान (b) सेवासदन

(c) कर्मभूमि (d) शेखर : एक जीवनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

शेखर : एक जीवनी, अज्ञेय का उपन्यास है, शेष उपन्यास प्रेमचन्द के हैं। हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा में 'शेखर : एक जीवनी' एक नए मोड़ का प्रतीक है, इसमें एक नवीन मनोविश्लेषण पद्धति का प्रयोग विविध शिल्प तकनीकों के साथ किया गया। यह एक खास ढंग का रोमांटिक उपन्यास है।

89. 'प्रतिज्ञा' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) नागार्जुन (b) रेणु

(c) प्रेमचन्द (d) यशपाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'प्रतिज्ञा' उपन्यास के लेखक प्रेमचन्द हैं, यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें विधवाओं और अछूतों का प्रश्न उठाया गया है। इसी उपन्यास के साथ प्रेमचन्द ने एक और उपन्यास 'निर्मला' भी लिखा। 'निर्मला' में दहेज की कुप्रथा और अनमेल विवाह का भीषण परिणाम दिखाया गया है।

90. 'वीरांगना' नामक उपन्यास के रचयिता हैं-

(a) जयशंकर प्रसाद (b) रामनरेश त्रिपाठी

(c) जगन्नाथ (d) रामधारी सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'वीरांगना' नामक उपन्यास के लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं। त्रिपाठी जी सिद्धहस्त साहित्यकार थे। इनको प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता के रूप में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई थी। त्रिपाठी जी की अन्य प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-**मुक्तक**-मारवाड़ी मनोरंजन, आर्य संगीत शतक, **कविता**-विनोद, क्या होमरूल लोगे, मानसी, **काव्य**-मिलन, पथिक, स्वप्न,**कहानी**-तरकस, आँखों देखी कहानियाँ, **उपन्यास**-वीरबाला, मारवाड़ी और पिशाचिनी, सुभद्रा और लक्ष्मी, **नाटक**-जयंत, प्रेमलोक, वफाती चाचा, अजनबी, पैसा परमेश्वर, बा और बापू, कन्या का तपोवन तथा **व्यंग्य**-दिमागी ऐयाशी, स्वप्नों के चित्र।

91. 'भागवन्ती' उपन्यास के रचयिता हैं-

(a) सुदर्शन (b) ज्ञानेन्द्र

(c) रामवृक्ष बेनीपुरी (d) अज्ञेय

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'भागवन्ती' उपन्यास के रचयिता सुदर्शन हैं। इनका पूरा नाम पं. बदरीनाथ भट्ट था। उपन्यास तथा कहानी के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। हृदय की परख, अमर अभिलाषा, हृदय की प्यास आदि इनके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। इन्हें 'शहरी मध्यवर्ग का प्रतिनिधि लेखक' कहा जा सकता है।

92. 'वयं रक्षामः है—

(a) निबन्ध-संग्रह (b) काव्य ग्रन्थ

(c) संस्कृत नाटक (d) उपन्यास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आचार्य चतुरसेन शास्त्री के द्वारा लिखित उपन्यास वयं रक्षामः है। इसका मुख्य पात्र रावण है। यह रचना रावण से सम्बन्धित घटनाओं का जिक्र करती है और उनका दूसरा पहलू दिखाती है।

93. निम्नलिखित कथाकृतियों में किसका सम्बन्ध काशी से नहीं है?

(a) काशी का अस्सी

(b) गली आगे मुड़ती है

(c) झीनी-झीनी बीनी चदरिया

(d) अलग-अलग वैतरणी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

शिवप्रसाद सिंह की 'अलग-अलग वैतरणी' आंचलिक उपन्यास है, जिसका सम्बन्ध 'करैता' गाँव से है। 'काशी का अस्सी' उपन्यास काशीनाथ सिंह द्वारा रचित है। इस उपन्यास का सम्बन्ध काशी से है। 'गली आगे मुड़ती है' शिवप्रसाद सिंह की कृति है। इसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के घर का पता बताया गया है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास है। यह उपन्यास बनारस के बुनकरों को लेकर लिखा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ शिवप्रसाद सिंह की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-वैश्वानर (काशी-1), नीला चाँद (काशी-2), कोहरे में युद्ध, दिल्ली दूर है, शैलूष, मंजूषिमा, औरत, अन्धकूप, एक यात्रा सतह के नीचे, अमृता, मानसी गंगा, किस-किस को नमस्ते करूँ, उत्तर योगी आदि।

94. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'अनामदास का पोथा' में किस उपनिषद् के सर्वाधिक स्थलों का प्रयोग हुआ है?

(a) कठोपनिषद्
(b) छान्दोग्य उपनिषद्
(c) याज्ञवल्क्य उपनिषद्
(d) वृहदारण्यक उपनिषद्

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

'अनामदास का पोथा' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'द्वारा लिखित उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वन्द्व व उनके उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास इस उपन्यास की महत्वपूर्ण विशेषताएँ व उपलब्धियाँ हैं। इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि छान्दोग्य उपनिषद्' में वर्णित कथा है जिसके अनुसार, दो पक्षियों की वार्ता सुनकर राजा ने रैक नामक 'पीठ खुजलाने वाले बैलगाड़ी वाले साधु' महिला जानी और उसकी शरण में जाकर ज्ञान याचना की।

95. 'अनामदास का पोथा' शीर्षक उपन्यास के लेखक हैं–

(a) वृन्दावनलाल वर्मा
(b) भगवती चरण वर्मा
(c) अमृतलाल नागर
(d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(d)

'अनामदास का पोथा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी के उपन्यास इतिहास के तथ्यों पर आधारित नहीं हैं, उनमें कल्पना के आधार पर ऐतिहासिक वातावरण की अर्थवान सृष्टि की गयी है। यह अर्थवत्ता उनके ऐतिहासिक दृष्टिकोण की देन है। वे किसी कालखण्ड को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ उसे वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के साथ भी जोड़ते चलते हैं और इस सन्दर्भ में ही समग्रतः उनका गम्भीर जीवन दर्शन का भी प्रतिफल हो जाता है। इनके अन्य उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्रलेख, पुनर्नवा आदि हैं।

96. निम्न में से कौन-सा समूह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों को दर्शाता है?

(a) अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा
(b) बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
(c) झूठा सच, दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या
(d) सोमनाथ धर्मपुत्र, वयं रक्षामः, आत्मदाह

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

97. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किसकी औपन्यासिक कृति है?

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल
(d) डॉ. नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

98. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' है-

(a) एक नाटक
(b) एक आत्मकथा
(c) एक जीवनी
(d) एक उपन्यास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

99. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक हैं-

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' है-

(a) एक कहानी
(b) एक उपन्यास
(c) एक आत्मकथा
(d) इनमें से कुछ भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. 'चारु चन्द्रलेख' के उपन्यासकार हैं-

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) भगवती चरण वर्मा

(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

102. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी किस धारा के उपन्यासकार हैं?

(a) सांस्कृतिक मिथकीय (b) सामाजिक-सांस्कृतिक

(c) प्रयोगवादी (d) प्रगतिवादी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सामाजिक-सांस्कृतिक विचारधारा के उपन्यासकार थे। इसकी झलक इनके 'कबीर' पुस्तक में मिलती है।

103. 'भट्टिनी' किस उपन्यास की नायिका है?

(a) बाणभट्ट की आत्मकथा (b) चित्रलेखा

(c) दिव्या (d) पुनर्नवा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हजारी प्रसाद द्विवेदी कृति 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास में प्रधान पात्र बाण है। इस उपन्यास में भट्टिनी तथा निपुणिका प्रमुख स्त्री पात्र हैं।

104. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के प्रकाशन का सही अनुक्रम है-

(a) अनामदास का पोथा, पुनर्नवा, बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख

(b) बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा

(c) पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, चारुचन्द्र लेख, बाणभट्ट की आत्मकथा

(d) चारुचन्द्र लेख, अनामदास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उच्चकोटि के शोधकर्ता, निबन्धकार उपन्यासकार एवं आलोचक थे। इन्होंने सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य एवं अपभ्रंश साहित्य को प्रकाश में लाकर भक्ति-साहित्य पर उच्चस्तरीय समीक्षात्मक ग्रन्थों की रचना की। ये विशेष रूप से वैयक्तिक एवं भावनात्मक निबन्धों की रचना करने में अद्वितीय रहे। इनके उपन्यासों का सही कालक्रम है- बाणभट्ट की आत्मकथा (1943), चारुचन्द्र लेख (1963), पुनर्नवा (1973) तथा अनामदास का पोथा (1973)।

105. पंडित किशोरीलाल गोस्वामी का उपन्यास निम्नलिखित में से कौन नहीं है?

(a) तरुण तपस्विनी

(b) रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल

(c) राजकुमारी

(d) भोजपुर का ठग

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

भोजपुर का ठग पंडित किशोरीलाल गोस्वामी का उपन्यास नहीं, बल्कि गोपालराम गहमरी का उपन्यास है। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी ने सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों पर लगभग पैंसठ उपन्यास लिखे हैं। उनमें कुछ उपन्यास त्रिवेणी, स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी, प्रणयिनी परिणय, लवंगलता वा आदर्श बाला, सुख शर्वरी, लीलावती, प्रेममयी, राजकुमारी, तारा, चपला वा नव्य समाज चित्र, कनक कुसुम वा मस्तानी, तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी, लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा, रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल, इन्दुमती वा वन-विहंगिनी, मालती माधव वा मदन मोहिनी आदि हैं।

106. 'रजिया बेगम' किसकी रचना है?

(a) गोपालराम गहमरी (b) किशोरीलाल गोस्वामी

(c) श्रद्धाराम फुल्लौरी (d) प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. प्रसाद द्वारा रचित इरावती कैसा उपन्यास है?

(a) सामाजिक (b) ऐतिहासिक

(c) पौराणिक (d) यथार्थवादी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रसाद के दो सामाजिक उपन्यास 'कंकाल' तथा 'तितली' पर्याप्त चर्चित रहे हैं। उन्होंने एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा जिसका नाम है 'इरावती', किन्तु यह उपन्यास उनके असामयिक निधन के कारण अधूरा रह गया। 'इरावती' में शुंगकालीन ऐतिहासिक कथा-वस्तु को बड़ी सहजता से चित्रित किया जा रहा था तथा बौद्धकालीन रूढ़ियों और विकृतियों के प्रति विद्रोह की सृष्टि की परिणति से निश्चय ही यह उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास बन जाता, लेकिन प्रसाद जी इसे पूरा नहीं कर सके। 'कंकाल' में प्रसाद जी ने व्यक्ति की स्वतन्त्रता का समर्थन किया है। 'कंकाल' की कथा का केन्द्र है- प्रयाग, काशी, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन आदि। 'तितली' के द्वारा उन्होंने प्रेम के आदर्श स्वरूप की व्याख्या की और साथ ही इसमें ग्रामीण समस्याओं का भी चित्रण किया गया है।

108. जयशंकर प्रसाद के अधूरे उपन्यास का नाम है-

(a) मंगलसूत्र (b) तितली
(c) इरावती (d) कंकाल

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

109. ''कंकाल एक प्रकार से पाप और पुण्य की समस्या का उपन्यास है।'' इस कथन के समकक्ष जयशंकर प्रसाद के बाद निम्नलिखित में से किस उपन्यास में इस समस्या को मुख्य रूप से उठाया गया है?

(a) गोदान (b) अमृत और विष
(c) नदी के द्वीप (d) चित्रलेखा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा गया भगवतीचरण वर्मा का सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास 'चित्रलेखा' है। इसके केन्द्र में पाप और पुण्य का विषय है, जिसमें एक संन्यासी सांसारिकता की ओर अग्रसर होना चाहता है, लेकिन नायिका चित्रलेखा उसे फटकारती है तथा उसकी खुद की रुचि संन्यास में हो जाती है। 'चित्रलेखा' में महान योगी कुमार गिरी और भोग-विलास तथा वासना में लिप्त शासक बीजगुप्त के चरित्र की पारस्परिक तुलना में अप्रत्याशित रूप से पाप और पुण्य की नई परिभाषा गढ़ते हैं और अपने शिक्षक से अन्तिम पाठ इस प्रकार सुनते हैं- संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन मात्र है फिर पाप और पुण्य कैसा।

110. निम्न में से 'मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार' किसे कहा जा सकता है?

(a) इलाचन्द्र जोशी (b) जैनेन्द्र
(c) अज्ञेय (d) मनोहरश्याम जोशी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

दिये गये विकल्पों में इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र तथा अज्ञेय तीनों मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। अतः इस प्रश्न के तीन विकल्प सही हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

111. 'गुलाम मंडी' उपन्यास की लेखिका हैं-

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) महुआ माझी (d) निर्मला भुराड़िया

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'गुलाम मंडी' उपन्यास की लेखिका निर्मला भुराड़िया हैं। इसमें मानव तस्करी की वैश्विक समस्या को तथा किन्नरों के जीवन की त्रासदी और सामाजिक उपेक्षा के दर्द को बहुत ही मार्मिकता के साथ सामने लाया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- 'फिर कोई प्रश्न करो नचिकेता' और 'खुशी का विज्ञान'।

112. 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास की रचना किसने की?

(a) गिरिराज किशोर (b) काशीनाथ सिंह
(c) अरुण कमल (d) विनोद कुमार शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास की रचना विनोद कुमार शुक्ल ने की है। 'नौकर की कमीज' (1979), 'खिलेगा तो देखेंगे' इनके अन्य उपन्यास हैं। विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार हैं। शुक्ल जी को 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास के लिए वर्ष 1999 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्रदान किया गया।

113. 'भूतनाथ' उपन्यास के रचयिता हैं-

(a) राधाकृष्ण दास
(b) जगमोहन सिंह
(c) देवकीनन्दन खत्री
(d) गोपालराम गहमरी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'भूतनाथ' उपन्यास के रचयिता देवकीनन्दन खत्री हैं। उन्होंने चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता सन्तति, काजर की कोठरी, नरेन्द्र मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर उर्फ कटोरा भर खून, गुप्त गोदना जैसी अन्य रचनाएँ कीं। भूतनाथ (1907-1913) अपूर्ण थी। अपनी असामयिक मृत्यु के कारण वे इस उपन्यास के केवल छः भागों को लिख पाये। आगे के शेष पन्द्रह भाग उनके पुत्र 'दुर्गाप्रसाद खत्री' ने पूर्ण किये।

114. 'गली आगे मुड़ती है' के लेखक हैं-

(a) नामवर सिंह (b) शिवप्रसाद सिंह
(c) अज्ञेय (d) मोहन राकेश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'गली आगे मुड़ती है' उपन्यास के लेखक शिवप्रसाद सिंह हैं। शिवप्रसाद सिंह कृत अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- 'अलग-अलग वैतरणी' (पहला उपन्यास), 'नीला चाँद' आदि।

115. 'नीला चाँद' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) रांगेय राघव (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) शैलेश मटियानी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

116. 'नूतन ब्रह्मचारी कृति' के लेखक हैं-

(a) श्रीनिवासदास (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) किशोरीलाल गोस्वामी (d) बालकृष्ण भट्ट

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

भारतेन्दु मंडली के प्रधान सदस्य बालकृष्ण भट्ट जी ने 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यास लिखे।

117. 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यास के लेखक कौन थे?

(a) प्रेमचन्द (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) गोपालराम गहमरी (d) लज्जाराम मेहता

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

118. 'नूतन ब्रह्मचारी' है-

(a) नाटक (b) उपन्यास
(c) कहानी संग्रह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

119. 'काला जल' का कथानक किस समस्या से सम्बन्धित है?

(a) स्त्री उत्पीड़न (b) दलित समस्या
(c) भ्रष्टाचार (d) साम्प्रदायिकता

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'काला जल' गुलशेर खाँ शानी का बहुचर्चित उपन्यास है, जो सन् 1965 में 'काला जल बिल आखिर' नाम से प्रकाशित हुआ। शानी ने यह उपन्यास तब लिखा, जब वे महज 27-28 साल के थे। इस सामाजिक उपन्यास में एक विशाल पैमाने पर निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार का परिवेश, दुःख-दर्द और संघर्ष का कच्चा चिट्ठा मौजूद है। इस उपन्यास में विभाजन के बाद फैली घृणा की आग और उसमें झुलस रहे पारस्परिक सम्बन्धों को परखा गया है। उपन्यास तीन खण्डों में विभक्त है। इनके अन्य उपन्यास 'साँप और सीढ़ी', 'एक लड़की की डायरी' एवं 'नदी और सीपियाँ' सामाजिक उपन्यास हैं।

120. 'काला जल' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) बदीउज्जमाँ (b) रमेश वक्षी
(c) शानी (d) कृष्णा सोबती

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

121. 'मृगनयनी' उपन्यास के रचनाकार हैं-

(a) वृन्दावनलाल वर्मा (b) रांगेय राघव
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) आचार्य चतुरसेन

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'मृगनयनी' (1950) उपन्यास के रचनाकार वृन्दावनलाल वर्मा हैं। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- लगन (1928), संगम (1928), प्रेम की भेंट (1928), गढ़ कुण्डार (1930), कुण्डली चक्र गढ़ (1932), विराटा की पद्मिनी (1936), झाँसी की रानी (1946), कचनार (1947), अमरबेल (1953) आदि।

122. ठेठ हिन्दी में उपन्यास लिखने वाले कौन हैं?

(a) निराला (b) प्रेमचन्द
(c) प्रसाद (d) हरिऔध

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' में उपन्यास-लेखन की प्रतिभा नहीं थी। इनके उपन्यास 'अधखिला फूल' (1907) में धार्मिक अन्ध विश्वासों का दुष्परिणाम दिखाया गया है। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899) प्रसिद्ध रचना है, किन्तु इसमें कथा-विन्यास की अपेक्षा भाषा के विशिष्ट प्रयोग पर लेखक की अधिक दृष्टि रही है।

123. 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' उपन्यास की रचना किस हिन्दी कवि ने की है?

(a) भारतेन्दु (b) हरिऔध
(c) रत्नाकर (d) प्रसाद

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

124. पद्यात्मक भावभूमि पर 'श्यामा स्वप्न' नामक उपन्यास की सर्जना किसने की?

(a) श्रीनिवासदास (b) ठाकुर जगमोहन सिंह
(c) राजा लक्ष्मण सिंह (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899 ई.) मध्य प्रदेश की विजय राघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे। काशी में इन्होंने संस्कृत एवं अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। वहीं पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से सम्पर्क हुआ। उनकी काव्य कृतियाँ- प्रेमसंपत्तिलता (1885), श्यामालता (1885), श्यामा-सरोजनी (1886), देवयानी (1886) तथा श्यामा स्वप्न हैं। 'श्यामा स्वप्न' शीर्षक उपन्यास में उन्होंने प्रसंगवश कुछ कविताओं का समावेश किया है। उनके द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं। सरस-मधुर ब्रजभाषा उनकी रचनाओं की अन्यतम विशेषताएँ हैं।

125. 'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक का नाम है-

(a) यशपाल (b) भगवतीचरण वर्मा

(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं। जैनेन्द्र द्वारा रचित अन्य उपन्यास हैं- परख, सुनीता, कल्याणी, सुखदा, विवर्त्त, जयवर्द्धन, तपोभूमि, मुक्तिबोध आदि। उनके उपन्यास 'मुक्तिबोध' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

126. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किसे हिन्दी का पहला उपन्यास माना है?

(a) देवरानी-जेठानी की कहानी (b) परीक्षा गुरु

(c) भाग्यवती (d) नूतन ब्रह्मचारी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

भारतेन्दु-युग के लेखकों को उपन्यास-रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी के उपन्यासों से प्राप्त हुई। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास का 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी इसे हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले लाला श्रीनिवास दास को हिन्दी में आधुनिक ढंग का पहला उपन्यास लिखने का गौरव प्राप्त है।

127. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है-

(a) परीक्षा गुरु (b) भाग्यवती

(c) नूतन ब्रह्मचारी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

128. 'परीक्षा गुरु' को किस समालोचक ने हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है?

(a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) मिश्र बन्धु

(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

129. 'परीक्षा गुरु' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) सीताराम दास (b) लाला श्रीनिवास दास

(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

130. 'परीक्षागुरु ' उपन्यास का प्रथम प्रकाशन कब हुआ था?

(a) 1877 ई. (b) 1882 ई.

(c) 1890 ई. (d) 1893 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

131. देवकीनन्दन खत्री जी के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास किसने माना?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ. नामवर सिंह (d) डॉ. श्रीकृष्णलाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास डॉ. श्रीकृष्णलाल ने माना है। जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'परीक्षा गुरु' उपन्यास को हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना है, जिसके लेखक श्रीनिवास हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु के 'पूर्णप्रकाश' और 'चन्द्रमा' उपन्यास को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है।

132. हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है -

(a) झाँसी की रानी (b) नूरजहाँ

(c) हृदय हारिणी (d) सम्राट अशोक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'हृदय हारिणी' है। जिसके लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं, जो हिन्दी के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। 'हृदय हारिणी वा आदर्श रमणी' 1904 में पुस्तक - रूप में प्रकाशित हुआ था।

133. 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' किस उपन्यासकार की कृति है?

(a) राही मासूम रजा (b) अब्दुल बिस्मिल्लाह
(c) असगर वजाहत (d) मुद्राराक्षस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' (1986) अब्दुल बिस्मिल्लाह की औपन्यासिक कृति है। इस उपन्यास में बनारस के बुनकरों का जीवन यथार्थ पूरी संश्लिष्टता में सजीव हो उठा है, जिसमें गरीब निम्न मध्यमवर्गीय जुलाहों के शोषण की कहानी है। इनके अन्य उपन्यास हैं- समर शेष (1980), जहरवाद (1987), दन्तकथा (1990), मुखड़ा क्या देखें (1996), अपित्र आख्यान (2008), रावी लिखता है, (2010)।

134. अब्दुल बिस्मिल्लाह कृत 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में किसका चित्रण है?

(a) कबीर के जीवनकाल का
(b) भारत की साम्प्रदायिक समस्या का
(c) बुनकरों के जीवन संघर्ष का
(d) इनमें से कोई नहीं।

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

135. 'संन्यासी' किसकी कृति है?

(a) यशपाल (b) नागार्जुन
(c) निराला (d) इलाचन्द्र जोशी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

'संन्यासी' इलाचन्द्र जोशी की एक औपन्यासिक कृति है। इलाचन्द्र जोशी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, निर्वासित तथा जहाज का पंछी आदि इनके उपन्यास हैं।

136. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास विशेषकर किस पर केन्द्रित है?

(a) पं. जवाहरलाल नेहरू (b) महात्मा गाँधी
(c) लाल बहादुर शास्त्री (d) विनोवा भावे

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास गाँधीजी के दक्षिण अफ्रीकी अनुभव पर आधारित है। इसके लेखक गिरिराज किशोर हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- लोग, चिड़ियाघर, दो, इंद्र सुने, दावेदार, तीसरी सत्ता, यथा प्रस्तावित, परिशिष्ट, असलाह, अन्तर्ध्वंस, ढाई घर तथा यातना घर।

137. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लेखक हैं—

(a) विनोद कुमार शुक्ल (b) रमेशचन्द्र शाह
(c) अनामिका (d) गिरिराज किशोर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

138. 'बया का घोंसला' उपन्यास के लेखक हैं-

(a) धर्मवीर भारती (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) फणीश्वरनाथ रेणु

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रश्न में केवल 'बया का घोंसला' पूछा गया है, जबकि इसका पूरा नाम 'बया का घोंसला और साँप' (1953) है। इस उपन्यास के लेखक लक्ष्मीनारायण लाल हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- धरती की आँखें (1951), काले फूल का पौधा (1955), रूपाजीवा (1959), बड़ी चम्पा छोटी चम्पा (1961), मन वृन्दावन (1966), प्रेम अपवित्र नदी (1972), बड़के भैया (1973), हरा समन्दर गोपी चन्दर (1974), श्रृंगार (1975), बसंत की प्रतीक्षा (1975), देवीना (1976), पुरुषोत्तम (1983), गली अनारकली (1985) तथा कनाट प्लेस (1986)।

139. 'रूपाजीवा' उपन्यास है-

(a) लक्ष्मीनारायण लाल का
(b) लक्ष्मीनारायण शर्मा का
(c) राजेन्द्र यादव का
(d) अमृतलाल नागर का

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

140. नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख किस उपन्यास में नहीं है?

(a) कब तक पुकारूँ (b) शैलूष
(c) झूलानट (d) सेवासदन

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

सेवासदन में नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख नहीं है, बल्कि यह वेश्यावृत्ति पर आधारित है। शेष उपन्यासों में नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख है।

141. उपन्यास के तत्वों में कौन-सा नहीं है?

(a) कथावस्तु (b) चरित्रचित्रण
(c) कथोपकथन (d) रंग निर्देश

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

विद्वानों के अनुसार उपन्यास के छः तत्वों को मान्यता दी गई है— 1. कथावस्तु, 2. पात्र एवं चरित्र चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. भाषा शैली, 5. देश काल एवं वातावरण तथा 6. उद्देश्य। रंग निर्देश उपन्यास का तत्व नहीं है, यह नाटक का तत्व है।

❑ जीवनी

1. 'अकाल पुरुष गाँधी' किसने इस जीवनी की रचना की है?

(a) जैनेन्द्र (b) अज्ञेय
(c) डॉ. देवराज (d) प्रभाकर माचवे

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'अकाल पुरुष गाँधी' जीवनी के रचनाकार जैनेन्द्र कुमार हैं, जिसका प्रकाशन सन् 1968 में हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हिन्दी में जीवनी लिखने की परम्परा का उद्‌भव भारतेन्दु युग में 1881 ई. के आस-पास हुआ। गोपाल शर्मा शास्त्री ने उस युग की महान विभूति स्वामी दयानन्द सरस्वती पर हिन्दी की पहली जीवनी 'दयानन्द दिग्विजय' लिखी।

2. 'गणेश शंकर विद्यार्थी' रचित गाँधी की जीवनी है—

(a) बापू (b) श्री गाँधी
(c) कर्मवीर गाँधी (d) अकाल पुरुष गाँधी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

गणेश शंकर विद्यार्थी रचित गाँधीजी की जीवनी का नाम 'श्री गाँधी' है। घनश्याम दास बिड़ला ने 'बापू' नामक जीवनी तथा जैनेन्द्र कुमार ने 'अकाल पुरुष गाँधी' नामक जीवनी लिखी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कुछ प्रमुख जीवनीकार तथा जीवनी के लेखक इस प्रकार हैं—

जीवनी	जीवनीकार
देशभक्त लाला लाजपत राय	नवजादिकलाल श्रीवास्तव
बालगंगाधर तिलक	ईश्वरी प्रसाद शर्मा
गाँधी-मीमांसा	रामदयाल तिवारी
गाँधी जी कौन हैं	रामनरेश त्रिपाठी
गाँधी गौरव	नरोत्तमदास व्यास
चम्पारण में महात्मा गाँधी	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
लाजपत महिमा	नन्दकुमार देव
चन्द्रशेखर आजाद	मन्मथनाथ गुप्त

3. गाँधीजी की जीवनी 'महात्मा गाँधी' के लेखक हैं-

(a) रामचन्द्र वर्मा (b) सम्पूर्णानन्द
(c) ईश्वरी प्रसाद शर्मा (d) केशव प्रसाद सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

गाँधीजी की जीवनी 'महात्मा गाँधी' (1921 ई.) के लेखक रामचन्द्र वर्मा हैं। 'महात्मा गाँधी' के जीवन पर लिखे गये ग्रन्थों में लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज कृत महात्मा गाँधी (1939 ई.), घनश्यामदास बिड़ला कृत बापू (1940 ई.), ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल' कृत-महात्मा गाँधी (1940 ई.), सुशील नायर कृत बापू के कारावास की कहानी (1949) आदि उल्लेखनीय हैं।

4. 'मनीषी की लोकयात्रा' किसकी जीवनी है?

(a) प्रेमचन्द की (b) निराला की
(c) कविराज गोपीनाथ की (d) शरत्चन्द्र की

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

भगवती प्रसाद सिंह द्वारा रचित 'मनीषी की लोकयात्रा' जीवनी है। इसमें कविराज गोपीनाथ की जीवन-कथा का वर्णन है।

5. 'कलम का सिपाही' कृति के लेखक हैं—

(a) प्रेमचन्द (b) विष्णु प्रभाकर
(c) अमृतराय (d) रामविलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'कलम का सिपाही' एक जीवनी प्रधान कृति है, जिसके लेखक अमृतराय हैं। इसमें मुंशी प्रेमचन्द की जीवनी लिखी गयी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हिन्दी में प्रेमचन्द की जीवनी उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' (1944) नाम से लिखी।

➲ शिवरानी देवी ने प्रेमचन्द को परिवार के सन्दर्भ में देखा और अमृतराय ने युग जीवन के सन्दर्भ में।

➲ प्रेमचन्द की तीसरी जीवनी 'कलम का मजदूर' (1964) मदन गोपाल ने लिखी है।

6. प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का मजदूर' के रचनाकार हैं-

(a) अमृतराय (b) मदन गोपाल
(c) शिवरानी देवी (d) विष्णु प्रभाकर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'कलम का सिपाही' हिन्दी गद्य की किस विधा की रचना है?

(a) आत्मकथा (b) रिपोर्ताज

(c) संस्मरण (d) जीवनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'कलम का सिपाही' का लेखक कौन हैं?

(a) प्रेमचन्द (b) अमृतराय

(c) शरतचन्द्र (d) दयानन्द सरस्वती

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी है?

(a) प्रेमचन्द (b) शरतचन्द्र

(c) पन्त (d) निराला

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

साहित्यकार शरतचन्द्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' है, जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का सिपाही' के रचनाकार अमृतराय हैं। पन्त की जीवनी 'सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य' के रचनाकार शान्ति जोशी एवं निराला की जीवनी 'निराला की साहित्य साधना' के रचनाकार रामविलास शर्मा हैं।

10. 'आवारा मसीहा' इनमें से किस साहित्यकार की जीवनी है?

(a) रवींद्रनाथ ठाकुर (b) बंकिमचन्द्र बनर्जी

(c) शरतचन्द्र चटर्जी (d) नागार्जुन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'आवारा मसीहा' किस उपन्यासकार की जीवनी से सम्बन्धित है?

(a) शरतचन्द्र (b) बंकिम चन्द्र

(c) विमल मित्र (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'आवारा मसीहा' किस विधा की रचना है?

(a) उपन्यास (b) कहानी

(c) जीवनी (d) आत्मचरित

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'आवारा मसीहा' के लेखक हैं—

(a) विष्णु प्रभाकर (b) श्रीलाल शुक्ल

(c) रमेश कुंतल मेघ (d) रमेश चन्द्र शाह

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. इनमें से कौन-सा लेखक जीवनी लेखक नहीं है?

(a) रामविलास शर्मा (b) अज्ञेय

(c) अमृतराय (d) विष्णु प्रभाकर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में से एक कृति एक प्रसिद्ध साहित्यकार के जीवन पर आधारित उपन्यासात्मक जीवनी है—

(a) शेखर एक जीवनी (b) आवारा मसीहा

(c) गुड़िया भीतर गुड़िया (d) अन्या से अनन्या तक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्न में से कौन-सी कृति जीवनी विधा से सम्बन्धित नहीं है?

(a) चौरासी वैष्णव की वार्ता

(b) बसेरे से दूर

(c) भक्तमाल

(d) मालवीयजी के साथ तीस दिन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'बसेरे से दूर' हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवों की वार्ता (1558 ई.), नाभादास कृत भक्तमाल एवं राम नरेश त्रिपाठी कृत मालवीय जी के साथ तीस दिन जीवनी विधा से सम्बन्धित हैं।

युवा-सामयिक घटना चक्र

17. **इनमें से एक कृति जीवनी नहीं है—**
(a) आवारा मसीहा (b) कलम का सिपाही
(c) अन्या से अनन्या (d) शिखर से सागर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'अन्या से अनन्या' स्त्री व्यथा की आत्मकथा है। इसकी लेखिका प्रभा खेतान हैं। 'आवारा मसीहा' शरतचन्द्र की जीवनी है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। 'कलम का सिपाही' मुंशी प्रेमचन्द की जीवनी है, जिसके लेखक अमृतराय हैं। 'शिखर से सागर तक' अज्ञेय की जीवनी है। इसके लेखक राम कमल राय हैं।

18. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को केन्द्र में रखकर लिखी गई पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश ' के लेखक हैं-**
(a) राजदेव सिंह (b) केदारनाथ सिंह
(c) विश्वनाथ त्रिपाठी (d) रमेश कुन्तल मेघ

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'व्योमकेश दरवेश' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की जीवनी है, जिसे विश्वनाथ त्रिपाठी ने लिखा है। इसका प्रकाशन 2011 में हुआ। यह हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अब तक लिखी तीन श्रेष्ठ जीवनियों- कलम का सिपाही, निराला की साहित्य साधना तथा आवारा मसीहा के बाद चौथी श्रेष्ठ जीवनी है। इस पुस्तक में 'रचना और रचनाकार' शीर्षक के अन्तर्गत द्विवेदी जी पर लिखे गए आलोचनात्मक आलेख भी एकत्र संकलित हैं।

❑ आत्मकथा

1. **'यादों की बारात' किसकी आत्मकथा है?**
(a) राही मासूम रजा
(b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) जोश मलिहाबादी
(d) सुमित्रानन्दन पन्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'यादों की बारात' जोश मलिहाबादी की आत्मकथा है। इनका नाम शबीर हसन खां 'जोश' था। इनका जन्म 5 दिसम्बर, 1894 को मलिहाबाद (लखनऊ) के एक जागीरदार घराने में हुआ था। इनके पिता का नाम बशीर अहमद खां 'वशीर' था। इनके पिता और दादा भी अच्छे शायर थे। इन्होंने 'कलीम' नाम की मासिक पत्रिका निकाली तथा 'मन की जीत','एक रात' और 'गुलामी' के गाने लिखे।

2. **विधा की दृष्टि से 'अस्ति और भवति' कृति क्या है?**
(a) आत्मकथा (b) पत्र-साहित्य
(c) उपन्यास (d) निबन्ध

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'अस्ति और भवति' विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आत्मकथा है। इसका प्रथम प्रकाशन वर्ष 2014 में हुआ।

3. **'एक कहानी यह भी' आत्मकथा की लेखिका हैं—**
(a) रमणिका गुप्ता (b) मन्नू भण्डारी
(c) कुसुम अंसल (d) प्रभा खेतान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भण्डारी हैं। मन्नू भण्डारी ने इस रचना में अपने लेखनीय जीवन की कहानी उतार दी है। यह उनकी आत्मकथा तो नहीं है, लेकिन इसमें उनके भावात्मक और सांसारिक जीवन के उन पहलुओं पर भरपूर प्रकाश पड़ता है, जो उनकी रचना-यात्रा में निर्णायक रहे। यह एक आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथा है। इसमें बड़े ही प्रभावशाली ढ़ंग से दर्शाया गया है कि बालिकाओं को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है।

4. **निम्नलिखित में से कृति आत्मकथा नहीं है—**
(a) अर्धकथा (b) निज वृत्तांत
(c) अब मैं नाच्यौं बहुत गोपाल (d) मेरी आत्मकहानी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'अब मैं नाच्यौं बहुत गोपाल' यशस्वी साहित्यकार अमृतलाल नागर का उनके अब तक के उपन्यासों की लीक से हटकर सर्वथा मौलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में मेहता कहे जाने वाले अछूतों में भी अछूत, अभागे अंत्यजों के चारों ओर कथा का ताना-बाना बुना गया है और उनके अंतरंग जीवन की करुणामयी रसार्द्र और हृदयग्राही झांकी प्रस्तुत की गई है। अन्य रचनाओं के लेखक हैं-अर्धकथा (आत्मकथा)-बनारसीदास चतुर्वेदी, निज वृत्तांत (आत्मकथा)-अम्बिका दत्त व्यास, मेरी आत्मकथा (आत्मकथा) श्यामसुन्दर दास है।

5. **'गालिब छूटी शराब' इनमें से किसकी आत्मकथा है?**
(a) मुद्राराक्षस (b) कमलेश्वर
(c) मोहन राकेश (d) रवीन्द्र कालिया

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'संस्मरण' हिन्दी गद्य साहित्य की आकर्षक, सुरुचिकर एवं आधुनिकतम विधा है। जीवन अभिव्यक्ति की यह विधा संस्मरण पर आधारित है या कहा जाए 'स्व' की स्मृतियों का शब्दांकन है। 'गालिब छूटी शराब' रवीन्द्र कालिया का आत्मकथात्मक संस्मरण है। इस पुस्तक के माध्यम से रवीन्द्र कालिया 'स्व' के साथ-साथ पूरे साहित्य जगत से पाठक को पूरे सुरुचिपूर्ण ढ़ंग से परिचित कराते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गालिब की अन्य रचनाएँ हैं-
- **कहानी संग्रह-**नौ साल छोटी पत्नी, काला रजिस्टर, गरीबी हटाओ, बांके लाल, गली कूचे, चकैया नीम, सत्ताइस साल की उम्र तक, जरा सी रोशनी आदि।
- **उपन्यास-**खुदा सही सलामत, एबीसीडी, 17 रानाडे रोड।
- **संस्मरण-**स्मृतियों की जन्मपत्री, कामरेड मोनालिजा, सृजन के सहयात्री, आदि।
- **व्यंग्य-**राग मिलावट मालकौंस, नीद क्यों रातभर नहीं आती।

6. इनमें से कौन-सी कृति आत्मकथा है?

(a) कलम का सिपाही (b) चीड़ों पर चाँदनी
(c) अर्द्धकथानक (d) बाणभट्ट की आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तब उसे 'आत्मकथा' कहते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' मानी गई है। बनारसीदास का 'अर्द्धकथानक' एक अद्वितीय और अनोखी रचना है। यह हिन्दी में लिखी हुई पहली आत्मकथा मानी जाती है। बनारसीदास ने अपनी आत्मकथा समकालीन ब्रजभाषा में सन् 1641 में लिखी। उस समय वे 55 वर्ष के थे। जैन शास्त्रों के अनुसार, मनुष्य का पूर्ण जीवनकाल 110 वर्षों का होता है, इसलिए बनारसीदास ने अपनी इस 55 वर्षों की कहानी को 'अरध कथान' कहा है, परन्तु यह उनकी पूर्ण कथा ही कही जा सकती है, क्योंकि 'अर्द्धकथानक' लिखने के दो-तीन वर्षों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। हिन्दी साहित्य का मध्यकाल ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि भाषाओं में पद्य साहित्य का रचनाकाल था, इसीलिए बनारसीदास ने अपनी इस आत्मकथा को दोहा-चौपाई शैली में पद्य में ही लिखा है। प्रकारांतर से मूल पाठ के साथ हिन्दी गद्यानुवाद को जोड़कर इसे पुन: प्रकाशित किया गया। हिन्दी में आत्मकथा साहित्य के लेखन की परम्परा का श्रीगणेश इसी से माना जाता है। 'कलम का सिपाही' अमृतराय द्वारा लिखित प्रेमचन्द की 'जीवनी', 'चीड़ों पर चाँदनी' निर्मल वर्मा का 'यात्रा वृत्तांत' तथा 'बाणभट्ट की आत्मकथा' हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'ऐतिहासिक उपन्यास' है।

7. अर्द्धकथानक किस विधा की रचना है?

(a) उपन्यास (b) जीवनी
(c) नाटक (d) आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'अर्द्धकथानक' नामक कृति की विधा क्या है?

(a) जीवनी (b) आत्मकथा
(c) रिपोर्ताज (d) यात्रा साहित्य

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. बनारसीदास जैन ने लिखी थी-

(a) हिन्दी की पहली जीवनी (b) हिन्दी की पहली आत्मकथा
(c) हिन्दी की पहली कहानी (d) हिन्दी की पहली काव्य नाटिका

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'अर्द्धकथानक' है-

(a) जीवनी (b) आत्मकथा
(c) संस्मरण (d) रिपोर्ताज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'अर्द्धकथानक' किस विधा की रचना है?

(a) जीवनी (b) उपन्यास
(c) आत्मकथा (d) नाटक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' द्वारा लिखित अपनी आत्मकथा का क्या नाम है?

(a) तरुण के स्वप्न (b) परिव्राजक की प्रजा
(c) कुछ आप बीती कुछ जग बीती (d) आत्मनिरीक्षण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

नेताजी सुभाषचन्द्र द्वारा लिखित आत्मकथा 'तरुण के स्वप्न' (1935) नामक शीर्षक से है, जिसको गिरीशचन्द्र जोशी ने इसी शीर्षक नाम से अनूदित किया है। 'परिव्राजक की प्रजा' (1952) संस्मरणात्मक शैली में रचित शान्तिप्रिय द्विवेदी की आत्मकथा, 'आत्मनिरीक्षण' (1957) सेठ गोविन्ददास की आत्मकथा है। दक्षिण भारतीय लेखक होने के बावजूद नरदेव शास्त्री ने 'आप बीती जग बीती' (1957) आत्मकथा लिखी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हिन्दी में अनूदित प्रथम आत्मकथा महर्षि दयानन्द की है। दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी आत्मकथा हिन्दी से अंग्रेजी में, अंग्रेजी से उर्दू तथा उर्दू से हिन्दी में अनूदित हुई है। 1904 ई. में मुंशी दयाराम ने उर्दू से हिन्दी में, 1912 ई. में देवेन्द्र मुखोपाध्याय ने अंग्रेजी से हिन्दी में इसका अनुवाद किया।

➲ 1915 ई. में अंग्रेजी में के.टी. वाशिंगटन की आत्मकथा 'अप फ्रॉम स्लेवरी' का अनुवाद पंडित लक्ष्मीनारायण गर्दे द्वारा 'आत्मोद्धार' नाम से हुआ।

➲ गुजराती में लिखी गई महात्मा गाँधी की आत्मकथा हरिभाऊ उपाध्याय ने 'सत्य के प्रयोग' (1927) शीर्षक से अनूदित किया।

➲ जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा 'माई स्टोरी' का अनुवाद हरिभाऊ उपाध्याय ने 'मेरी कहानी' शीर्षक से किया।

➲ शचीन्द्रनाथ सान्याल की बंगला भाषा में लिखी आत्मकथा हिन्दी में 'बंदी जीवन' (1938) नाम से अनूदित हुई।

➲ डॉ. राधाकृष्णन की आत्मकथा को शालिग्राम ने 'सत्य की खोज' नाम से अनूदित किया।

➲ सत्यानन्द अग्निहोत्री कृत 'मुझमें देव-जीवन का विकास' (1910) तथा स्वामी दयानन्द कृत 'जीवन चरित्र' (1917) आत्मकथा है।

13. 'आत्मनिरीक्षण' किसकी आत्मकथा है?

(a) वियोगी हरि (b) आचार्य चतुरसेन
(c) सेठ गोविन्ददास (d) वृन्दावनलाल वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

हिन्दी के प्रबल पक्षधर तथा समर्थ नाटककार सेठ गोविन्ददास ने अपनी आत्मकथा 1957 में 'आत्मनिरीक्षण (1957) शीर्षक से लिखी है। इस आत्मकथा में उन्होंने महात्मा गाँधी तथा जवाहरलाल नेहरू के विचारों की आलोचना भी की है।

14. हिन्दी में दलित साहित्य की पहली आत्मकथा किसने लिखी?

(a) ओमप्रकाश वाल्मीकि ने (b) मोहनदास नैमिषारण्य ने
(c) कौसल्या बैसन्त्री ने (d) सूरजपाल ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

हिन्दी में दलित साहित्य की पहली आत्मकथा मोहनदास नैमिषारण्य द्वारा रचित 'अपने-अपने पिंजरे' (1995) है। तत्पश्चात ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' (1997) तथा सूरजपाल चौहान ने 'तिरस्कृत' नामक दलित आत्मकथाएँ लिखीं।

15. 'जूठन' किस लेखक की आत्मकथात्मक कृति है?

(a) ओमप्रकाश वाल्मीकि (b) मोहनदास नैमिषारण्य
(c) कौशल्या बैसंत्री (d) डॉ.भगवानदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा के लेखक हैं—

(a) श्योराज सिंह 'बेचन' (b) मोहनदास नैमिषारण्य
(c) सूरजपाल चौहान (d) ओमप्रकाश वाल्मीकि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'जूठन' किस रचनाकार की आत्मकथा है?

(a) नैमिषारण्य (b) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(c) रामविलास शर्मा (d) हरिवंशराय बच्चन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्न में से दलित आत्मकथा नहीं है?

(a) अपने-अपने पिंजरे (b) जूठन
(c) तिरस्कृत (d) मेरी असफलताएँ

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मेरी असफलताएँ (1941) बाबू गुलाब राय का निबन्ध संग्रह है, शेष दलित आत्मकथाएँ हैं।

19. 'मणिकर्णिका' आत्मकथा है—

(a) कँवल भारती की (b) मोहन नैमिषारण्य की
(c) जयप्रकाश कर्दम की (d) तुलसीराम की

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

दलित चिंतक तुलसीराम द्वारा लिखित आत्मकथा 'मुर्दहिया' अपशकुन से शुभ शकुन तक के सफर को वर्णित करती है। इनकी आत्मकथा का दूसरा भाग 'मणिकर्णिका' वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ। यह आत्मकथा तत्कालीन समाज का सम्पूर्ण विवरण है।

20. 'मुर्दहिया' किस लेखक की आत्मकथा है?

(a) तुलसीराम (b) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(c) सूरजपाल चौहान (d) जयप्रकाश कर्दम

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'रसीदी टिकट' इनमें से किसकी आत्मकथा है?

(a) अमृता प्रीतम (b) कृष्णा सोबती
(c) अमृत राय (d) खुशवन्त सिंह

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'रसीदी टिकट' अमृता प्रीतम की आत्मकथा है।

22. 'मुड़ मुड़ के देखता हूँ'- यह राजेन्द्र यादव की .... रचना है।

(a) उपन्यास (b) कहानी
(c) जीवनी (d) आत्मकथा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'मुड़ मुड़ के देखता हूँ' राजेन्द्र यादव की आत्मकथा रचना है। इन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, समीक्षा निबन्ध, आत्मकथा आदि विधाओं में रचनाएँ की हैं।

23. निम्नलिखित में कौन-सा जोड़ा सुमेलित नहीं है?

(आत्मकथा)		(लेखक)
(क) मेरी जीवन यात्रा	-	राहुल सांकृत्यायन
(ख) सिंहावलोकन	-	यशपाल
(ग) नीड़ का निर्माण फिर	-	हरिवंशराय बच्चन
(घ) बसेरे से दूर	-	अज्ञेय

(a) केवल (क) (b) (ख) और (ग) दोनों
(c) केवल (ग) (d) केवल (घ)

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'बसेरे से दूर' (1977) आत्मकथा हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखी गयी है। शेष जोड़े सुमेलित हैं।

24. रामविलास शर्मा की आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' कितने खण्डों में विभक्त है?

(a) दो (b) तीन
(c) एक (d) चार

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

रामविलास शर्मा कृत आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' तीन खण्डों में विभक्त है, जो 1996 में प्रकाशित हुई। इनकी प्रमुख आत्मकथा 'घर की बात' भी है।

25. 'सिंहावलोकन' किसकी आत्मकथा है?

(a) महादेवी वर्मा की (b) यशपाल की
(c) नागार्जुन की (d) हरिवंशराय 'बच्चन' की

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

यशपाल की आत्मकथा 'सिंहावलोकन' तीन भागों में प्रकाशित हुई, जिसका प्रथम भाग 1951 में, द्वितीय भाग 1952 में तथा तृतीय भाग 1955 में प्रकाशित हुआ।

26. यशपाल की आत्मकथा है-

(a) नीड़ का निर्माण फिर (b) सिंहावलोकन
(c) मेरी जीवन-यात्रा (d) मेरा जीवन-प्रवाह

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'मेरा जीवन-प्रवाह' किसकी आत्मकथा है?

(a) राहुल सांकृत्यायन (b) वियोगी हरि
(c) शान्तिप्रिय द्विवेदी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

वियोगी हरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन-प्रवाह' 1948 में प्रकाशित हुई जिसमें समाज के निम्न वर्ग का मार्मिक वर्णन किया गया है।

28. हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के कितने भाग प्रकाशित हैं?

(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

हिन्दी के लोकप्रिय कवि हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित है। वे हैं- (1) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), (2) नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.), (3) बसेरे से दूर (1977 ई.) तथा (4) दशद्वार से सोपान तक (1985 ई.)।

29. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' किसकी आत्मकथा है?

(a) कुबेर नाथ राय (b) हरिवंशराय 'बच्चन'

(c) महादेवी वर्मा (d) शिवप्रसाद सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. डॉ. हरिवंशराय बच्चन की कृति 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ? किस विधा में लिखी गई एक प्रतिनिधि गद्य-कृति है?

(a) संस्मरण (b) उपन्यास

(c) रेखाचित्र (d) आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है?

(a) कविता (b) आत्मकथा

(c) संस्मरण (d) रेखाचित्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. इनमें से कौन-सी कृति' आत्मकथा' विधा में है?

(a) कलम का सिपाही (b) क्या भूलूँ क्या याद करूँ

(c) अतीत के चलचित्र (d) जहाज का पंछी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'मेरी जीवन-यात्रा' किसकी आत्मकथा है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) राहुल सांकृत्यायन (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'मेरी जीवन-यात्रा' (1946 ई.) राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा है। इसको उन्होंने पाँच खण्डों में प्रस्तुत किया है।

34. राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा का नाम है-

(a) मेरी जीवन कथा (b) मेरी जीवन-यात्रा

(c) क्या भूलूँ, क्या याद करूँ (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा है-

(a) शीला झुनझुनवाला की

(b) मैत्रेयी पुष्पा की

(c) कुसुम अंचल की

(d) गोपाल प्रसाद व्यास की

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'कस्तूरी कुंडल बसै' (2002), मैत्रेयी पुष्पा कृत आत्मकथा है। शीला झुनझुनवाला कृत आत्मकथा 'कुछ कही कुछ अनकही', कुसुम अंचल कृत आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' (1996) एवं गोपाल प्रसाद व्यास कृत आत्मकथा 'कहो व्यास, कैसी कही'? (1995) है।

36. निम्नलिखित आत्मकथाएँ और उनके लेखकों में से कौन-सा युग्म सही है?

(a) सहचर है समय : अमृता प्रीतम

(b) कस्तूरी कुण्डल बसै : प्रभा खेतान

(c) टुकड़े-टुकड़े दास्तान : अमृतलाल नागर

(d) घर की बात : चतुरसेन शास्त्री

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

विकल्प (c) का युग्म सही है। 'सहचर है समय' के लेखक रामदरश मिश्र, 'कस्तूरी कुण्डल बसै' की लेखिका मैत्रेयी पुष्पा तथा 'घर की बात' के लेखक गुरुदत्त हैं।

❑ संस्मरण तथा रेखाचित्र

1. 'सन् बयालीस के संस्मरण' इनमें से किस लेखक की संस्मरणात्मक कृति है?

(a) पद्मसिंह शर्मा (b) श्रीराम शर्मा

(c) मन्मथनाथ गुप्त (d) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'सन् बयालिस के संस्मरण' के लेखक श्रीराम शर्मा जी हैं। इनके अन्य संस्मरण हैं-'वे जीते कैसे हैं' तथा बोलती प्रतिमाएँ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में संस्मरण आधुनिक काल की विधा है। हिन्दी संस्मरण को विकास की दिशा में बढ़ाने वाले प्रमुख साहित्यकार हैं-रामवृक्ष बेनीपुरी-माटी की मूरतें, मील के पत्थर। देवेन्द्र सत्यार्थी-'क्या गोरी का सांवरी' तथा 'रेखाएँ बोल उठीं' कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'- 'भूले हुए चेहरे' तथा 'माटी हो गई सोना'।

2. कृष्णा सोबती द्वारा लिखित संस्मरण कृति है—

(a) हम हशमत

(b) स्मृतियों का शुक्ल-पक्ष

(c) सुधियाँ उस चन्दन के वन की

(d) संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और साफ-सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने हिन्दी की कथा भाषा को विलक्षण ताजगी दी है। 'हम हशमत' उनके द्वारा कृत संस्मरण विधा की रचना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कृष्णा सोबती की अन्य कृतियों में शामिल हैं—सूरजमुखी अँधेरे के, दिलोदानिश, जिन्दगीनामा, ऐ लड़की, समय सरगम, मित्रों मरजानी, जैनी मेहरबान सिंह (सभी उपन्यास), बादलों के घेरे, डार से बिछुरी (दोनों कहानी-संग्रह), यारों के यार तिन पहाड़ (यात्रा विवरण)।

➲ अजीत कुमार और ओंकारनाथ श्रीवास्तव का संस्मरण 'बच्चन निकट से' (1968), काका साहेब कालेलकर का संस्मरण 'गाँधी संस्मरण और विचार' (1968), रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'संस्मरण एवं श्रद्धांजलियाँ' (1969), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का 'अन्तिम अध्याय' (1972), कमलेश्वर का 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' (1975), विष्णु प्रभाकर का 'यादों की तीर्थयात्रा' (1981) तथा भीमसेन त्यागी का 'आदमी से आदमी तक' प्रमुख संस्मरण हैं।

3. 'कुछ आप बीती, कुछ जग बीती' संस्मरण के लेखक हैं-

(a) बनारसी दास चतुर्वेदी
(b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(d) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'कविवचन सुधा' में सन् 1876 में प्रकाशित 'एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती' प्रथम मौलिक कृति है, जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का और हिन्दी साहित्य का भी पहला अधूरा मौलिक उपन्यास माना जा सकता है। परन्तु इसके नाम से यह प्रतीत होता है कि यह कहानी है, आत्मकथा है या संस्मरण है। इसके प्राप्त अंशों द्वारा यह प्रमाणित होता है कि यह अर्ध आत्मकथा है। डॉ. केसरी नारायण शुक्ल ने इसे 'भारतेन्दु के निबन्ध' में संकलित किया है। बाबू राधाकृष्ण दास ने भी भारतेन्दु के कथा साहित्य में इसका परिचय देते हुए लिखा है'उन्होंने स्वयं एक उपन्यास लिखना आरंभ किया था, उसका नाम था ''एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती।'' 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' उपन्यास न होकर एक संस्मरण मात्र है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आधुनिक हिन्दी निर्माताओं में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी एक कर्मठ लेखक और पत्रकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने हिन्दी लेखन और पत्रकारिता को अन्तरराष्ट्रीय आयाम दिया। 'विश्व की विभूतियाँ' चतुर्वेदी जी का संस्मरणात्मक लेख संग्रह है। इसमें 15 संस्मरण हैं और वे सबके सब विदेशी हैं। प्रारम्भ में इसे 'सेतुबंध' नाम से प्रकाशित किया गया था। पं. बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने जुलाई, 1881 में 'आनन्दकादम्बिनी' (मासिक) एवं 1891 ई. में 'नागरी नीरद' साप्ताहिक-पत्र का प्रकाशन किया।

4. 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' किस विधा की रचना है?

(a) आत्मकथा
(b) जीवनी
(c) संस्मरण
(d) रेखाचित्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'याद हो कि न याद हो'-संस्मरण-कृति के लेखक हैं-

(a) राजेंद्र यादव
(b) अजितकुमार
(c) काशीनाथ सिंह
(d) विष्णुकांत शास्त्री

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'याद हो कि न याद हो' काशीनाथ सिंह का संस्मरण है। इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें 'काशी का अस्सी', 'घर का जोगी जोगड़ा' तथा 'कहनी उपखान' इत्यादि हैं।

6. 'रेखाएँ बोल उठीं' रेखाचित्र किसने लिखा है?

(a) देवेन्द्र सत्यार्थी
(b) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(c) शिवपूजन सहाय
(d) उपेन्द्रनाथ अश्क

P.G.T. परीक्षा, 2010
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

रेखाचित्र और संस्मरण परस्पर मिलती-जुलती विधाएँ हैं, जिनमें भेदक रेखा खींच पाना कठिन है। पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के अनुसार, ''प्राय: प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी''। आनुपातिक दृष्टि से वैयक्तिकता एवं तटस्थता को देखकर ही यह निर्णय किया जाता है कि कोई रचना संस्मरण है या रेखाचित्र, क्योंकि रेखाचित्र वस्तुपरक अधिक होता है और संस्मरण में आत्मपरकता ज्यादा पायी जाती है। रेखाचित्र में लेखक का अपना व्यक्तित्व भी प्रकारान्तर से आ जाता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रश्न में 'रेखाएँ बोल उठीं' में एक ही वर्ष के परीक्षा में दो प्रश्नों को कहीं संस्मरण दर्शाया है, तो कहीं रेखाचित्र। 'रेखाएँ बोल उठीं' देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र है। इनकी अन्य कृतियों में शामिल हैं— 'एक युग : एक प्रतीक', 'क्या गोरी क्या साँवरी' तथा 'कला के हस्ताक्षर'।

7. **देवेन्द्र सत्यार्थी के संस्मरण का नाम है—**

(a) माटी की मूरतें (b) अतीत के चलचित्र
(c) रेखाएँ बोल उठीं (d) दीप जले शंख बजे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **'माटी की मूरतें' नामक रेखाचित्र किसने लिखा?**

(a) महादेवी वर्मा (b) निराला
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'माटी की मूरतें' नामक रेखाचित्र रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित है। इनके अन्य रेखाचित्र हैं—लालतारा, गेहूँ और गुलाब आदि।

9. **'गेहूँ और गुलाब' की रचना विधा है—**

(a) उपन्यास (b) कहानी
(c) नाटक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **'लालतारा' की विधा है—**

(a) रेखाचित्र (b) संस्मरण
(c) जर्नल (d) यात्रावृत्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **'माटी की मूरतें' किस विधा की रचना है?**

(a) संस्मरण (b) रेखाचित्र
(c) आत्मकथा (d) जीवनी

P.G.T. परीक्षा, 2004
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **'माटी की मूरतें' के लेखक हैं—**

(a) पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) राय देवीप्रसाद पूर्ण (d) पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्र हैं—**

(a) रेखाचित्र (b) सेतुबन्ध
(c) उपर्युक्त दोनों (d) स्मारिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'रेखाचित्र' और 'सेतुबन्ध' बनारसीदास चतुर्वेदी का रेखाचित्र है। बनारसीदास चतुर्वेदी इस बात को मानते हैं कि अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक ए.जी. गार्डिनर से अच्छा रेखाचित्रकार शायद ही कोई हुआ हो। गार्डिनर ने जो रेखाचित्र बनाए हैं, उसमें कहीं भी अपनी छाया नहीं पड़ने दी। उसमें जितने रंग हैं, वे सब चरितनायक के ही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तुर्गनेव को रेखाचित्रों के लेखन का पितामह माना जाता है।
- चतुर्वेदी जी ने अपने ग्रन्थ 'रेखाचित्र' की भूमिका में लिखा है ''जिस आदमी को जीवन के विविध अनुभव प्राप्त नहीं हुए, जिसने आँखें खोलकर दुनिया नहीं देखी, जिसे कभी जीवन संग्राम में जमने का मौका नहीं मिला, जो संसार के भले-बुरे आदमियों के संसर्ग में नहीं आया, मनोवैज्ञानिक घातों, प्रतिघातों का जिसने अध्ययन नहीं किया और जिसने एकांत में बैठकर जिन्दगी के भिन्न-भिन्न प्रश्नों पर विचार नहीं किया भला वह क्या सजीव चित्रण कर सकता है।''
- बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखा है—''संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित इन तीनों का एक-दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है, इसका निर्णय करना कठिन है।''
- सन् 1912 में चतुर्वेदी जी का पहला रेखाचित्र 'मर्यादा' में 'औरंगजेब' नाम से प्रकाशित हुआ था। वे मानते हैं कि उन्होंने लगभग सवा सौ रेखाचित्र लिखे होंगे। किन्तु इस पुस्तक में कुल 40 रेखाचित्र प्रकाशित हुए हैं।
- 'विश्व की विभूतियाँ' भी चतुर्वेदी जी का संस्मरणात्मक लेख संग्रह है। प्रारम्भ में इसे 'सेतुबन्ध' नाम से प्रकाशित किया गया था, किन्तु द्वितीय संस्करण में इसका नाम 'विश्व की विभूतियाँ' रख दिया गया।
- चतुर्वेदी जी का एक ग्रन्थ है 'हमारे आराध्य'। इस ग्रन्थ में 17 महापुरुषों का चरित्र-चित्रण किया गया है, उसी प्रकार 'विश्व की विभूतियाँ' में भी 15 संस्मरण हैं और वे सबके सब विदेशी हैं।

14. **'अमिट रेखाएँ' के संस्मरण रेखा चित्रकार हैं—**

(a) विष्णु प्रभाकर (b) सत्यवती मलिक
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) शिवपूजन सहाय

T.G.T. परीक्षा, 2011
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'अमिट रेखाएँ (1951) सत्यवती मलिक का संस्मरण रेखाचित्र है। विष्णु प्रभाकर के रेखाचित्र 'जाने-अनजाने', 'कुछ शब्द कुछ रेखाएँ और 'हँसते निर्झर दहकती भट्ठी' हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र 'रेखाएँ बोली उठीं' तथा शिवपूजन सहाय की रेखाचित्र 'वे दिन वे लोग' हैं।

15. 'महादेवी वर्मा' का रेखाचित्र इनमें से कौन-सा नहीं है?

(a) अतीत के चलचित्र (b) पथ के साथी

(c) स्मृति की रेखाएँ (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

हिन्दी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र-साहित्य की श्रीवृद्धि में महादेवी वर्मा ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। 'अतीत के चलचित्र' (1941), 'स्मृति की रेखाएँ' (1947), 'पथ के साथी' (1956), 'स्मारिका' (1971) और 'मेरा परिवार' (1972) उनके उल्लेखनीय रेखाचित्र-संग्रह हैं। यद्यपि महादेवी की रचनाओं की विधा के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। इन्हें निबन्ध, संस्मरण और कहानी में से कोई एक संज्ञा भी दी जाती है, किन्तु अधिकांश विद्वान उन्हें संस्मरणात्मक रेखाचित्र ही मानते हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना है।

16. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना 'रेखाचित्र' है?

(a) पथ के साथी (b) श्रृंखला की कड़ियाँ

(c) यामा (d) दीपशिखा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'स्मृति की रेखाएँ' रेखांकन के रचनाकार हैं–

(a) डॉ. श्याम सुन्दर दास (b) महादेवी वर्मा

(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'पथ के साथी' में निम्नलिखित में से किस साहित्यकार का संस्मरण नहीं है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त

(b) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड)परीक्षा, 2018

उत्तर–(d)

महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरण 'पथ के साथी' में अपने समकालीन रचनाकारों का चित्रण किया है। 'पथ के साथी' में रवीन्द्रनाथ टैगोर, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, सुभद्राकुमारी चौहान तथा सियारामशरण गुप्त के उत्कृष्ट शब्द-चित्र हैं।

19. महादेवी जी ने किस रचना में पशु-पक्षियों के रेखाचित्र प्रस्तुत किए हैं?

(a) पथ के साथी (b) अतीत के चलचित्र

(c) स्मृति की रेखाएँ (d) मेरा परिवार

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(d)

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र 'मेरा परिवार' (1972) में पशु-पक्षियों के चित्र उकेरे गए हैं। पथ के साथी (1956) में उन्होंने समकालीन लेखकों के संस्मरणात्मक चित्रों का संकलन किया है।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा रेखाचित्र महादेवी वर्मा का नहीं है?

(a) अतीत के चलचित्र (b) स्मृति की रेखाएँ

(c) पथ के साथी (d) मंटो मेरा दुश्मन

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

'मंटो मेरा दुश्मन' महादेवी वर्मा का रेखाचित्र नहीं, बल्कि उपेन्द्रनाथ अश्क का संस्मरण है। इनका एक अन्य संस्मरण है-बेदी : मेरा हमदम मेरा दोस्त।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- उपेन्द्रनाथ अश्क के रेखाचित्र हैं–रेखाएँ और चित्र (1955 ई.)।
- 'अश्क' ने चेहरे अनेक (पाँच भाग 1977-88 ई.) में अपनी जीवन कथा प्रस्तुत की है।

21. निम्न में से कौन रेखाचित्र विधा की रचना नहीं है?

(a) कठगुलाब

(b) क्षण बोले कण मुस्काए

(c) पुरानी स्मृतियाँ

(d) रेखाएँ बोल उठीं

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(a)

प्रतिष्ठित हिन्दी कथाकार मृदुला गर्ग का नवीनतम उपन्यास 'कठगुलाब' है, जबकि क्षण बोले कण मुस्काए, कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' की। पुरानी स्मृतियाँ, प्रकाशचन्द्र गुप्त की और रेखाएँ बोल उठीं, देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र है।

22. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित संस्मरण नहीं है—

(a) अनुमोदन का अन्त

(b) इधर-इधर की बातें

(c) सभा की सभ्यता

(d) विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मन्दिर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'अनुमोदन का अन्त' (फरवरी, 1905), 'सभा की सभ्यता' (अप्रैल, 1907) तथा 'विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मन्दिर' (जनवरी, 1918) महावीर प्रसाद द्विवेदी के संस्मरण हैं, जबकि 'इधर-उधर की बातें' (मई, 1918) रामकुमार खेमका का संस्मरण है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ जगद्बिहारी सेठ ने 'मेरी बड़ी छुट्टियों का प्रथम सप्ताह' (जून, 1913), पांडुरंग खानखोजे 'वाशिंगटन महाविद्यालय का संस्थापन दिनोत्सव' (अक्टूबर, 1913) तथा प्यारेलाल मिश्र ने 'लंदन का फाग या कुहरा' (फरवरी, 1908) शीर्षक से संस्मरण लिखे हैं।

➲ काशी प्रसाद जायसवाल ने 'इंग्लैण्ड के देहात में महाराज बनारस का कुआँ' (जुलाई, 1907), जगन्नाथ खन्ना ने 'अमेरिका आने वाले विद्यार्थियों को सूचना' (दिसम्बर, 1911) तथा भोलादत्त पाण्डेय ने 'मेरी नयी दुनिया सम्बन्धिनी रामकहानी' (दिसम्बर, 1909) नामक शीर्षक से संस्मरण लिखे हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्मरण-रेखाचित्र विधा की रचना नहीं है?

(a) पद्मपराग (b) अतीत के चलचित्र

(c) माटी की मूरतें (d) ज्योतिविहग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

पद्मपराग, पद्मसिंह शर्मा, अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, माटी की मूरतें, रामवृक्ष बेनीपुरी का संस्मरण रेखाचित्र है। ज्योतिविहग, शांतिप्रिय द्विवेदी द्वारा सुमित्रानन्दन पन्त पर लिखी गई आलोचनात्मक पुस्तक है।

24. श्रीराम शर्मा की 'बोलती प्रतिमा' रचना की विधा है—

(a) रेखाचित्र (b) संस्मरण

(c) आत्मकथा (d) जीवनी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

पं. श्रीराम शर्मा के रेखाचित्रों का संग्रह 'बोलती प्रतिमा' (1937) के नाम से प्रकाशित हुआ। उनका एक रेखाचित्र 'जंगल के जीव' भी है। वर्ष 1936-37 से हिन्दी रेखाचित्र में विकास की रेखाएँ क्रमिक रूप से मिलने लगती हैं।

25. 'बोलती प्रतिमा' के रचनाकार इनमें से कौन हैं?

(a) पद्मसिंह शर्मा (b) श्रीराम शर्मा

(c) बनारसीदास चतुर्वेदी (d) सेठ गोविन्ददास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'जंगल के जीव' के रचनाकार कौन हैं?

(a) प्रेमचन्द (b) बनारसीदास चतुर्वेदी

(c) श्रीराम शर्मा (d) रामविलास शर्मा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'जंगल के जीव' कृति के लेखक कौन हैं?

(a) महादेवी वर्मा (b) श्रीराम शर्मा

(c) रामवृक्ष बेनीपुरी (d) शिवपूजन सहाय

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. हिन्दी में रेखाचित्र के प्रथम रचयिता पं. पद्मसिंह शर्मा की रचना का नाम है—

(a) पद्मपराग (b) पथ के साथी

(c) दस तस्वीरें (d) रेखा और रंग

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

हिन्दी के प्रारम्भिक संस्मरण रेखाचित्रों के प्रवर्तक पद्मसिंह शर्मा माने जाते हैं। उनकी रचना 'पद्मपराग' रेखाचित्र है। पथ के साथी (1956 ई.) महादेवी वर्मा कृत रेखाचित्र है। दस तस्वीरें (1963 ई.) जगदीश चन्द्र माथुर कृत रेखाचित्र तथा 'रेखा और रंग' (1955) विनय मोहन शर्मा का रेखाचित्र है।

❑ रिपोर्ताज

1. हिन्दी में रिपोर्ताज का आरम्भ किस युग में हुआ था?

(a) द्विवेदी युग

(b) भारतेन्दु युग

(c) प्रसाद युग

(d) प्रसादोत्तर युग/छायावादोत्तर युग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

हिन्दी में रिपोर्ताज-लेखन की परम्परा शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' (दिसम्बर, 1938) से आरम्भ हुई। 'हंस' के 'समाचार और विचार' तथा 'अपना देश' स्तम्भों के अन्तर्गत भी उनकी इस शैली की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुईं, जिनमें 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' विशेषरूपेण उल्लेखनीय है। छायावाद का काल 1918-1938 ई. तक माना जाता है। तत्पश्चात छायावादोत्तर युग प्रारम्भ हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी में रिपोर्ताज का आरम्भ प्रसादोत्तर युग/छायावादोत्तर युग से हुआ था।

2. नवीन रिपोर्ताज की परम्परा किस रचना से आरम्भ होती है?

(a) लक्ष्मीपुरा (b) तूफानों के बीच
(c) बंगाल का अकाल (d) स्वराज्य भवन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'लक्ष्मीपुरा' किस विधा की रचना है?

(a) यात्रावृत्त (b) निबन्ध
(c) रिपोर्ताज (d) डायरी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी साहित्य के पहले रिपोर्ताज लेखक होने का श्रेय प्राप्त था?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) शिवदान सिंह चौहान (d) आनन्द कौसत्सायन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'अल्मोड़े का बाजार' किस विधा की रचना है?

(a) जीवनी (b) रिपोर्ताज
(c) प्रगीत (d) यात्रावृत्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। जिस रचना में वर्ण्य विषय का आँखों देखा तथा कानों सुना ऐसा विवरण प्रस्तुत किया जाये कि पाठक की हृदतंत्री के तार झंकृत हो उठें और वह उसे भूल न सके, उसे 'रिपोर्ताज' कहते हैं। 'अल्मोड़े का बाजार' रिपोर्ताज विधा की रचना है। इसके लेखक प्रकाशचन्द्र गुप्त हैं। 'स्वराज्य भवन' और 'बंगाल का अकाल' उनके अन्य प्रमुख रिपोर्ताज हैं।

6. 'अल्मोड़े का बाजार' रिपोर्ताज के लेखक हैं—

(a) भगवतशरण उपाध्याय (b) रघुवीर सहाय
(c) प्रकाशचन्द्र गुप्त (d) रांगेय राघव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'बंगाल का अकाल' रिपोर्ताज के लेखक हैं-

(a) रांगेय राघव
(b) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(c) शिवदान सिंह चौहान
(d) धर्मवीर भारती

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(*)

'बंगाल का अकाल' रिपोर्ताज के लेखक प्रकाशचन्द्र गुप्त हैं। गुप्त जी का 'बंगाल का अकाल' शीर्षक रिपोर्ताज पर लिखे गये रिपोर्ताजों के बीच महत्वपूर्ण स्थान रखता है। डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' (रूपाभ - दिसम्बर, 1938) को हिन्दी का पहला रिपोर्ताज होने का श्रेय दिया गया है। रांगेय राघव ने सन् 1942 में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा की । यात्रा के बाद कुछ सशक्त रिपोर्ताज लिखे जो बाद में 'तूफानों के बीच' नाम से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुआ। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' द्वारा लिखे गये 'वेदों की खोज' (1927) नामक रिपोर्ताज को हिन्दी का पहला रिपोर्ताज होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन आश्चर्य का विषय है कि ओमप्रकाश सिंहल एवं अन्य आलोचकों ने हिन्दी के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का कहीं उल्लेख तक नहीं किया।

8. 'बंगाल का अकाल' नामक रिपोर्ताज किसकी रचना है?

(a) डॉ. धर्मवीर भारती (b) रांगेय राघव
(c) शिवदान सिंह चौहान (d) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'तूफानों के बीच' नामक रिपोर्ताज के लेखक हैं-

(a) शिवदान सिंह चौहान
(b) रांगेय राघव
(c) धर्मवीर भारती
(d) शमशेर बहादुर सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

1941 ई. में बंगाल के भीषण अकाल की काली छाया को रांगेय राघव ने रिपोर्ताज के माध्यम से सशक्त शैली में व्यक्त किया है। यह रिपोर्ताज, 'तूफानों के बीच में' शीर्षक से हंस पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

10. 'तूफानों के बीच' किस विधा की रचना है?

(a) रिपोर्ताज (b) संस्मरण
(c) आत्मकथा (d) यात्रा-वृत्तांत

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'प्लाट का मोरचा' रिपोर्ताज के लेखक का नाम है-

(a) रांगेय राघव (b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्लाट का मोरचा, रिपोर्ताज के लेखक शमशेर बहादुर सिंह हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रान्तिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुतपूर्व फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखे गये रिपोर्ताज हैं।
➲ शिव सागर मिश्र के रिपोर्ताज 1965 में लड़े गये भारत-पाक युद्ध को आधार बनाकर लिखे गये हैं।
➲ धर्मवीर भारती ने सितम्बर, 1971 में मुक्तिवाहिनी के साथ बांग्लादेश की यात्रा की थी। इसी वर्ष भारतीय थल सेना के साथ वे भारत-पाक युद्ध के मोर्चे पर भी गए थे। इन दोनों ही रोमांचक घटनाओं पर आधृत रिपोर्ताजों को उन्होंने 'युद्धयात्रा' में संकलित किया है। इसके पहले ये रिपोर्ताज 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुए थे।

12. 'प्लाट का मोरचा' शमशेर बहादुर सिंह कृत है—

(a) कहानी (b) संस्मरण
(c) रिपोर्ताज (d) यात्रा वृत्तांत

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'विवेकी राय' द्वारा रचित कृति 'बाढ़ ! बाढ़ !! बाढ़ !!!' हिन्दी साहित्य की किस विधा की प्रसिद्ध रचना है?

(a) जीवनी परक (b) रेखाचित्र
(c) संस्मरण परक (d) रिपोर्ताज साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

विवेकी राय द्वारा रचित कृति 'बाढ़! बाढ़ !! बाढ़ !!!' रिपोर्ताज है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रिपोर्ताज	लेखक
खून के छींटे	भगवतशरण उपाध्याय
एकलव्य के नोट्स	फणीश्वरनाथ रेणु
पेरिस के नोट्स	रामकुमार
धरती के लिए	कैलाश नारद
प्राग : एक स्वप्न	निर्मल वर्मा
क्या हमने कोई षड्यंत्र रचा था	सती कुमार

14. इनमें से कौन-सी गद्य विधाएँ विगत 15-20 वर्षों की देन हैं?

(a) कहानी (b) उपन्यास
(c) रिपोर्ताज, फीचर लेखन (d) नाटक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

रिपोर्ताज तथा फीचर लेखन नवीन विधा है, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के आस-पास आरम्भ हुआ। अन्य विकल्पों में इससे पुरानी विधा है।
नोट-प्रश्न में 15-20 वर्षों की गद्य विधाएँ पूछा गया है, जबकि यह लगभग 70-75 वर्ष पुरानी विधा है।

❑ इण्टरव्यू

1. 'जैनेंद्र जी के साथ कुछ घण्टे' इण्टरव्यू के लेखक हैं-

(a) नन्द कुमार कोहली (b) श्रीराम शर्मा
(c) पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' (d) मनोहरश्याम जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नई धारा' पत्रिका ने 'हम इनसे मिले' शीर्षक से एक स्तंभ ही आरम्भ कर दिया था, जिसमें नन्द कुमार कोहली का 'जैनेंद्र जी के साथ कुछ क्षण' नामक इण्टरव्यू छपा था। प्रभाकर माचवे ने 1938 में जैनेंद्र कुमार का इण्टरव्यू लिया था, जो 'जैनेन्द्र के विचार' नामक पुस्तक में छपा था। 1952 ई. में डॉ. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' कृत 'मैं इनसे मिला' में 18 कवियों कथाकारों तथा आलोचकों की भेटवार्ताएँ संकलित हैं। इसके प्रथम भाग में गुलाब राय, राम नरेश त्रिपाठी, सुदर्शन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', लक्ष्मीनारायण मिश्र, महादेवी वर्मा, शन्तिप्रिय द्विवेदी, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' तथा द्वितीय भाग में इंद्र विद्या वाचस्पति, राय कृष्णदास, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जैनेंद्र कुमार, यशपाल, दिनेशनंदिनी डालमिया, डॉ. नगेंद्र, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', प्रभाकर माचवे तथा विष्णु प्रभाकर से ली गयी भेंटवार्ताएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

❑ यात्रावृत्त

1. भारतेन्दु ने यात्रावृत्त सम्बन्धी कौन-सी रचना लिखी?

(a) गया यात्रा (b) इलाहाबाद की यात्रा
(c) गंगा पार की यात्रा (d) सरयू पार की यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

भारतेन्दु की यात्रावृत्त सम्बन्धी रचना सरयू पार की यात्रा, मेंहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा और हरिद्वार की यात्रा उल्लेखनीय है। उनकी यात्रावृत्त रचनाएँ कविवचनसुधा पत्रिका में 1871 से 1879 ई. तक के अंकों में प्रकाशित होती रही हैं। 'गया की यात्रा' बालकृष्ण भट्ट की यात्रावृत्त सम्बन्धी रचना है।

2. निम्नलिखित में विष्णु प्रभाकर लिखित यात्रावृत्त कौन-सा है?

(a) घाट-घाट का पानी (b) ज्योतिपुंज हिमालय
(c) दरख्तों के पार शाम (d) सागर के आर-पार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(b)

विष्णु प्रभाकर की यात्रावृत्त है- 'ज्योतिपुंज हिमालय' (1982), 'राह चलते-चलते' (1985), 'हिमशिखरों की छाया में' (1988), 'हम सफर मिलते रहे' (1996), 'आकाश एक है' (1998), 'संपूर्ण यात्रावृत्त' (1999)।

3. 'हमारी यात्रा' के यात्रा वृत्तांतकार हैं-

(a) भगवानदास वर्मा (b) कल्याण चन्द्र
(c) लोचन प्रसाद पाण्डेय (d) यशपाल जैन

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

'हमारी यात्रा' के यात्रा वृत्तांतकार लोचन प्रसाद पाण्डेय हैं। इनकी यह यात्रा वृत्तांत सितम्बर, 1915 में 'इन्दु' में छपी थी। भगवानदास वर्मा का यात्रा वृत्तांत 'लन्दन का यात्री' तथा यशपाल जैन की 'योरोप यात्रा के संस्मरण' यात्रा वृत्तांत हैं।

4. 'लंका यात्रा का विवरण' - यात्रावृत्त के लेखक हैं

(a) ठाकुर गदाधर सिंह (b) गोपालराय गहमरी
(c) स्वामी सत्यदेव परिव्राजक (d) राहुल सांकृत्यायन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(b)

द्विवेदी युग के गोपालराय गहमरी ने 'लंका यात्रा का विवरण' (1916) की रचना करके यात्रावृत्त संबंधी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। उन्होने रेल तथा जहाज द्वारा की गई अपनी लंका-यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है।

5. यात्रा-वृत्तांत के लेखक एवं यायावर के रूप में जिनकी प्रसिद्धि है, वे हैं-

(a) नागार्जुन
(b) राहुल सांकृत्यायन
(c) सेठ गोविन्द दास
(d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

यात्रा लेखन में राहुल सांकृत्यायन का अन्यतम स्थान है। वे पक्के घुमक्कड़ थे और उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग घूमने-फिरने में व्यतीत हुआ था। उन्होंने तिब्बत में सवा वर्ष (1933), मेरी यूरोप यात्रा (1935), मेरी तिब्बत यात्रा (1937), घुमक्कड़शास्त्र, श्रीलंका की यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, रूस में पच्चीस मास, जापान की यात्रा आदि यात्रा-वृत्तांत कृतियों की रचना की है।

6. 'घुमक्कड़शास्त्र' यात्रावृत्त के लेखक हैं-

(a) सत्यदेव परिव्राजक (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) यशपाल (d) अज्ञेय

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'घुमक्कड़शास्त्र' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं-

(a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) राहुल सांकृत्यायन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है?

(a) काव्य (b) यात्रा-वृत्तांत
(c) जीवनी (d) डायरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा-वृत्तांत विधा की रचना है। इसमें 'अज्ञेय' जी' द्वारा स्वतन्त्रता पूर्व भारत की यात्रा का वर्णन है। इसमें वर्णित कुछ स्थल वर्तमान पाकिस्तान का हिस्सा हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1955 में यूनेस्को के निमन्त्रण पर अज्ञेय जी यूरोप भ्रमण पर गये तथा इस यात्रा का वृत्तांत 'एक बूँद सहसा उछली' में किया।
- इनके अतिरिक्त अज्ञेय ने चार छोटे यात्रा वृत्तांत-बीसवीं शती का गोलोक, वसंत का अग्रदूत, ऋण स्वीकारी हूँ और अज्ञेय अपनी निगाह में, का उल्लेख मिलता है। इनमें से 'बीसवीं शती का गोलोक', एक बूँद सहसा उछली का एक अंश है।

9. 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है?

(a) जीवनी (b) आत्मकथा
(c) यात्रा-साहित्य (d) डायरी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'अरे यायावर रहेगा याद' किसकी कृति है?

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) दिनकर
(c) अज्ञेय (d) किसी की भी नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'एक बूँद सहसा उछली' यात्रा वृत्तांत के लेखक हैं—

(a) भगवतशरण उपाध्याय (b) सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(c) यशपाल जैन (d) धर्मवीर भारती

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'एक बूँद सहसा उछली' की रचना विधा है—

(a) संस्मरण (b) डायरी
(c) रिपोर्ताज (d) यात्रावृत्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'एक बूँद सहसा उछली' किसके द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत है?

(a) अज्ञेय जी (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) यशपाल (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. रामवृक्ष बेनीपुरी की कौन-सी कृति यात्रावृत्त की है?

(a) सागर की लहरों पर
(b) अप्रवासी की यात्राएं
(c) पैरों में पंख बाँधकर
(d) मेरी यूरोप यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रामवृक्ष बेनीपुरी ने सन् 1952 में 'पैरों में पंख बाँधकर' अपनी यात्रावृत्त लिखा। उनकी दूसरी यात्रावृत्त 'उड़ते चलो उड़ते चलो' सन् 1954 में लिखी गयी।

15. 'आखिरी चट्टान' रचना के लेखक हैं—

(a) मोहन राकेश (b) अमृत राय
(c) रांगेय राघव (d) राहुल सांकृत्यायन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'आखिरी चट्टान तक' मोहन राकेश का यात्रा वृत्त है, जो भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ था। दिसम्बर, 1952 से फरवरी, 1953 के बीच मोहन राकेश ने गोआ से कन्याकुमारी तक की यात्रा की थी। यात्रा से लौटते ही यह लिख डाली थी। अमृत राय की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-साहित्य में संयुक्त मोर्चा, सुबह रंग, लाल धरती, नई समीक्षा, नागफनी का देश, हाथी के दांत, अग्नि शिखा, फांसी के तख्ते से, कस्बे का एक दिन, गीलीमिट्टी, कठघरे जंगले, सहचिंतन, भटियाली, बतरस, चतुरंग, सारंग और धुआँ।

❑ गद्य काव्य एवं व्यंग्य

1. 'साधना' गद्य काव्य किसने लिखा है?

(a) रायकृष्ण दास (b) अज्ञेय
(c) दिनकर (d) माखनलाल चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रायकृष्ण दास, कहानी सम्राट प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकार एवं गद्य गीत लेखक थे। साधना (1919), अनाख्या (1929), सुधांशु (1929), प्रवाल (1929) आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने 'भारत कला भवन' की स्थापना की, थी जिसे वर्ष 1950 में 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' को हस्तगत कर दिया गया। चित्रकला एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। उनकी लिखित 'भारत की चित्रकला' और 'भारतीय मूर्तिकला' अपने विषय के मौलिक ग्रन्थ हैं।

2. विष्णुकान्त शास्त्री की प्रसिद्ध गद्य काव्य-कृति का नाम है—

(a) पूजा
(b) शुभ्रा
(c) कुछ चन्दन की कुछ कपूर की
(d) दुपहरिया के फूल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

विष्णुकान्त शास्त्री की प्रसिद्ध गद्य काव्य-कृति का नाम 'कुछ चन्दन की कुछ कपूर की' है। शास्त्री जी की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— कवि निराला की वेदना तथा निबन्ध, चिन्तन मुद्रा, अनुचिन्तन, तुलसी के हियहेरि, बांग्लादेश के सन्दर्भ में (रिपोर्ताज), स्मरण को पाथेय बनने दो (संस्मरण), सुधियाँ उस चन्दन वन की, भक्ति और शरणागत, ज्ञान और कर्म आदि। भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी (भारत रत्न से सम्मानित) की चुनी हुई कविताओं का संकलन इन्होंने 'अमर आग है' में किया है।

3. 'निठल्ले की डायरी' नामक हास्य-व्यंग्य निबन्ध-संग्रह के लेखक हैं—

(a) श्रीलाल शुक्ल (b) गोपाल प्रसाद व्यास
(c) रवीन्द्रनाथ त्यागी (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'निठल्ले की डायरी' हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों का एक संग्रह है। इसमें उनके 26 व्यंग्य शामिल हैं, जिसमें समाज में फैले भ्रष्टाचार, दिखावा और अफसरशाही आदि को उन्होंने अपनी कलम से निशाना बनाया।

4. 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' के लेखक हैं—

(a) विद्यानिवास मिश्र (b) हरिशंकर परसाई
(c) कुबेर नाथ राय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

हरिशंकर परसाई 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' के लेखक हैं। इस रचना की मूल अन्तर्वस्तु और उसके भाषा शिल्प दोनों ही स्तरों से यह ज्ञात होता है कि परसाई जनता के रचनाकार थे। उनके इस निबन्ध संग्रह में 'सारिका' के लिए दो स्तम्भों- 'तुलसीदास चन्दन घिसैं' तथा 'कबिरा खड़ा बाजार में' के अन्तर्गत लिखे गये इकतीस निबन्ध शामिल हैं। इन निबन्धों में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर दिखने वाले अन्तर्विरोधों पर कड़े प्रहार किये हैं। हरिशंकर परसाई की रचनाओं में मौलाना का लड़का, राग-विराग, सदाचार का ताबीज, भोलाराम का जीव, मुंडन, एक तृप्त आदमी की कहानी, मैं हूँ तोता प्रेम का मारा और सत्य साधक मंडल आदि कहानियाँ व्यंग्यपरक हैं। इन कहानियों में यदि एक ओर राजनीति और शासनतंत्र की विकृतियों एवं कार्य पद्धति की आलोचना की गई है, तो दूसरी ओर साधारण आदमी की यातनाओं और महत्वाकांक्षा शून्य मानसिकता के निर्माण की विडम्बना को भी रेखांकित किया गया है।

5. 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य के लेखक हैं—

(a) हरिशंकर परसाई (b) ज्ञान वाजपेयी
(c) रामगोपाल (d) श्रीलाल शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'भोलाराम का जीव' किस विधा की रचना है?

(a) निबन्ध (b) रेखाचित्र
(c) संस्मरण (d) व्यंग्य

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'भूत के पाँव' किसकी व्यंग्य रचना है?

(a) रवीन्द्रनाथ त्यागी (b) हरिशंकर परसाई
(c) शरद जोशी (d) के.पी. सक्सेना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'भूत के पाँव पीछे' हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचना है। इनकी अन्य व्यंग्य रचनाएँ हैं-वैष्णव की फिसलन ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा की दौर आदि।

नोट-प्रश्न में केवल 'भूत के पाँव' पूछा गया है, जबकि वास्तव में 'भूत के पाँव पीछे' है।

8. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक निबन्धों का लक्ष्य क्या है?

(a) पाठकों को वास्तविकता के प्रति आँखें खोलना
(b) पाठकों को गम्भीर हास्य प्रदान करना
(c) पाठकों की भाव जड़ता को तोड़ना
(d) पाठकों में विडम्बनाओं के प्रति आक्रोश और घृणा जगाना

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक निबन्धों का लक्ष्य पाठकों के वास्तविकता के प्रति आँखें खोलना है। उनके व्यंग्य सामान्यत: मूल्यगत विसंगतियों से संबद्ध होते हैं - मूल्य चाहे राजनीतिक हो, सांस्कृतिक हो या पीढ़ीगत।

9. निम्नलिखित में से कौन-सी व्यंग्य रचना 'हरिशंकर परसाई' की नहीं है?

(a) नेताजी कहिन (b) भूत के पाँव
(c) निठल्ले के डायरी (d) बारात की वापसी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

नेताजी कहिन मनोहर श्याम जोशी की व्यंग्य रचना है। शेष रचनाएँ हरिशंकर परसाई की हैं।

10. 'नेताजी कहिन' के लेखक हैं—

(a) रवीन्द्र कालिया (b) रवीन्द्रनाथ त्यागी
(c) श्रीलाल शुक्ल (d) मनोहर श्याम जोशी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'नेताजी कहिन' के रचनाकार हैं—

(a) हरिशंकर परसाई (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) मनोहर श्याम जोशी (d) भैरव प्रसाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्न में से व्यंग्यकार नहीं हैं—

(a) रवीन्द्रनाथ त्यागी (b) अज्ञेय
(c) लतीफ घोंघी (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' व्यंग्यकार नहीं हैं, बल्कि प्रयोगवाद एवं नयी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी, लतीफ घोंघी एवं हरिशंकर परसाई व्यंग्यकार हैं। लतीफ घोंघी ने व्यंग्यकृत 'व्यंग्य चरितम्' लिखा है। परसाई जी की व्यंग्य रचनाएँ हैं-वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि, जबकि रवीन्द्रनाथ त्यागी की प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ हैं—उर्दू-हिन्दी हास्य व्यंग्य, बसन्त से पतझर तक, भाद्रपद की साँझ, एक फाइल का सफर, पूरब खिले पलाश आदि।

13. निम्नलिखित लेखकों में व्यंग्यकार कौन हैं?

(a) मोहन राकेश (b) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'
(c) बेढब बनारसी (d) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c& d)

स्वतन्त्रता पूर्व के व्यंग्यकारों ने राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र की विसंगतियों पर अधिक लक्ष्य सन्धान किया। गौरतलब है कि अंग्रेज सरकार के प्रेस एक्ट लाने के बाद राजनीतिक व्यंग्य लिखने का मतलब था-सरकार के विरोध में जाना। लेकिन इस युग में बेढब बनारसी (कृष्ण देव प्रसाद गौड़), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भुवनेश्वर प्रसाद, हरिशंकर शर्मा जैसे निडर रचनाकारों ने इस खतरे को देखते हुए भी अपना युगधर्म निभाया और अंग्रेजी सत्ता को अपने साहित्य द्वारा चुनौती दी। बेढब बनारसी की उत्कृष्ट कृति 'लफ्टर पिगसन की डायरी' में गम्भीर व्यंग्य देखा जा सकता है। गम्भीर सरोकार युक्त व्यंग्य लेखन पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने खूब किया। 1927 ई. में प्रकाशित उनके लघु व्यंग्य उपन्यास 'खुदा राम' और 'चन्द्र हसीनों के खतूत' में उनके तीक्ष्ण व्यंग्य की बानगी देखी जा सकती है। उग्र जी ने 'नेता का स्थान', सरकार तुम्हारी आँखों में' जैसे राजनीतिक व्यंग्यों के साथ-साथ 'भुनगों' जैसी तीव्र लाक्षणिक कहानी भी लिखी। साथ ही धार्मिक और सामाजिक आडम्बरों की विसंगतियों पर 'चुम्बन' और 'चार बेचारे' जैसे व्यंग्य नाटकों के माध्यम से चोट की। अत: स्पष्ट है कि बेढब बनारसी तथा पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' दोनों व्यंग्यकार हैं। इस प्रकार प्रश्न के दो विकल्प (c) तथा (d) सही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जब पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी संग्रह 'चाकलेट' (जिसकी प्रशंसा स्वयं महात्मा गाँधी ने भी की थी) छपी, तो हिन्दी के तथाकथित प्रौढ़ आलोचकों ने उग्र साहित्य को 'घासलेट साहित्य' की व्यंग्य संज्ञा की।
- निराला और उग्र की रचनाओं में गद्य और पद्य दोनों में व्यंग्य उपस्थित है।
- निराला की 'कुकुरमुत्ता', 'गर्म पकौड़ी' 'बाप तुम मुर्गी खाते यदि' आदि तथा उग्र जी की 'अपनी ख़बर' में संकलित हास्य-व्यंग्य और 'जेल में क्या-क्या है?' शीर्षक कविताओं में व्यंग्य की यह उपस्थिति देखी जा सकती है।
- गम्भीर जनोन्मुखी व्यंग्य कर्म की बानगी विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' हरिशंकर शर्मा की व्यंग्य रचना 'कन्ट्रोल कीर्तन', भुवनेश्वर के व्यंग्य नाटक 'ताँबे के कीड़े', भगवती चरण वर्मा की व्यंग्य कथा 'दो बांके' प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' और 'नशा' यशपाल की 'महादान' अमृतलाल नागर की 'देश सेवा शाह मदारों की' आदि रचनाओं में देखी जा सकती है।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'म्युनिसपिलेटी के कारनामे' में नगरपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार की जमकर खबर ली, वहीं 'सुतापराधे जनकस्य दण्डे' में उनकी चुटीली शैली आकर्षक का केन्द्र रही।

रचना एवं रचनाकार

1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
(A) मछलीघर	(i) दुष्यंत कुमार
(B) अपनी शताब्दी के नाम	(ii) श्रीराम वर्मा
(C) शब्दों की शताब्दी	(iii) दूधनाथ सिंह
(D) साये में धूप	(iv) विजयदेव नारायण साही

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	iv	i	iii
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	iii	i	iv	ii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (रचना)		सूची-II (रचनाकार)
मछलीघर	-	विजयदेव नारायण साही
अपनी शताब्दी के नाम	-	दूधनाथ सिंह
शब्दों की शताब्दी	-	श्रीराम वर्मा
साये में धूप	-	दुष्यंत कुमार

2. सूची- I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए।

सूची-I (रचनाएँ)	सूची-II (रचनाकार)
(A) वीर पंचरत्न	(i) मुकुटधर पाण्डेय
(B) उलाहना पंचक	(ii) गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'
(C) मातृवंदना	(iii) अमीर अली 'मीर'
(D) कानन कुसुम	(iv) लाला भगवानदीन

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	iii	iv	i	ii
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	ii	i	iv	iii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

रचनाएँ		रचनाकार
वीर पंचरत्न	-	लाला भगवानदीन
उलाहना पंचक	-	अमीर अली 'मीर'
मातृवंदना	-	गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'
कानन कुसुम	-	मुकुटधर पाण्डेय

3. इनमें से कौन-सी सुमेलित नहीं है?

(a) मुक्तिमार्ग - भारत भूषण अग्रवाल

(b) पिघलते पत्थर - रांगेय राघव

(c) अजेय खण्डहर - निराला

(d) प्रलय सृजन - शिवमंगल सिंह 'सुमन'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'अजेय खण्डहर' रांगेय राघव की रचना है। शेष युग्म सुमेलित हैं।

4. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (लक्षण ग्रन्थ)	सूची-II (आचार्य)
(A) रसिक प्रिया	(i) चिन्तामणि
(B) काव्य प्रकाश	(ii) मतिराम
(C) ललित ललाम	(iii) कुलपति मिश्र
(D) रस रहस्य	(iv) केशवदास

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	iii	iv	i
(b)	iv	i	ii	iii
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	i	ii	iii	iv

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (लक्षण ग्रन्थ)		सूची-II (आचार्य)
रसिक प्रिया	-	केशवदास
काव्य प्रकाश	-	चिन्तामणि
ललित ललाम	-	मतिराम
रस रहस्य	-	कुलपति मिश्र

समसामयिक घटना चक्र

5. निम्नलिखित लक्षणग्रंथों को उनके रचनाकारों से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

लक्षणग्रंथ	रचनाकार
अ) भाषाभूषण	1. भिखारीदास
ब) ललित ललाम	2. पद्माकर
स) काव्यनिर्णय	3. मतिराम
द) जगद्विनोद	4. जसवंत सिंह

	अ	ब	स	द
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	4	3	1	2

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

सुमेलित है-

(लक्षणग्रंथ)	(रचनाकार)
भाषाभूषण	जसवंत सिंह
ललित ललाम	मतिराम
काव्यनिर्णय	भिखारीदास
जगद्विनोद	पद्माकर

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए।

सूची-I	सूची-II
(A) प्रद्युम्न-चरित्र	(i) नारायणदास
(B) स्वर्गारोहण	(ii) चतुर्भुजदास
(C) मधुमालती कथा	(iii) विष्णुदास
(D) छिताई वार्ता	(iv) सुधीर अग्रवाल

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	ii	i	iv	iii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I		सूची-II
प्रद्युम्न-चरित्र	-	सुधीर अग्रवाल
स्वर्गारोहण	-	विष्णुदास
मधुमालती कथा	-	चतुर्भुजदास
छिताई वार्ता	-	नारायणदास

7. इनमें से कौन-सा सुमेलित नहीं है?

(a) गीत गोविन्दानन्द	(i) भारतेन्दु
(b) नागरी नीरद	(ii) प्रेमघन
(c) पृथ्वीराज प्रयाण	(iii) राधाकृष्णदास
(d) आनन्द मंजरी	(iv) बालमुकुन्द गुप्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'आनन्द मंजरी' के रचयिता पंडित अम्बिका दत्त व्यास हैं। शेष युग्म सुमेलित हैं।

8. निम्नलिखित से कौन-सा सुमेलित नहीं है?

(a) श्यामा स्वप्न	(i) डॉ. जगमोहन सिंह
(b) आश्चर्य वृत्तांत	(ii) पं. अम्बिका दत्त व्यास
(c) सौ अजान एवं एक सुजान	(iii) देवदत्त
(d) विधवा विपत्ति	(iv) राधाचरण गोस्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'सौ अजान एवं एक सुजान' के रचनाकार बालकृष्ण भट्ट हैं। शेष युग्म सही हैं।

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कविता)	सूची-II (रचनाकार)
(A) जूही की कली	1. अज्ञेय
(B) नौका विहार	2. माखनलाल चतुर्वेदी
(C) नदी के द्वीप	3. सुमित्रानन्दन पन्त
(D) पुष्प की अभिलाषा	4. निराला

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	4	1	2	3
(c)	3	2	1	4
(d)	1	4	3	2

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

सुमेलित है-

सूची-I (कविता)	सूची-II (रचनाकार)
जूही की कली	निराला
नौका विहार	सुमित्रानन्दन पन्त
नदी के द्वीप	अज्ञेय
पुष्प की अभिलाषा	माखनलाल चतुर्वेदी

सम-सामयिक घटना चक्र

10. रीतिकाल के निम्नलिखित कवियों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेल कीजिए:

सूची-I (कवि का नाम)	सूची-II (रचना का नाम)
(A) चिन्तामणि	(i) रस सारांश
(B) रसलीन	(ii) रसराज
(C) भिखारीदास	(iii) रसविलास
(D) मतिराम	(iv) रस-प्रबोध

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	iv	i	ii

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

रीतिकालीन कवियों की उनकी रचनाओं के साथ सही सुमेलन इस प्रकार है–

सूची-I (कवि का नाम)		सूची-II (रचना का नाम)
चिन्तामणि	-	रसविलास
रसलीन	-	रस-प्रबोध
भिखारीदास	-	रस सारांश
मतिराम	-	रसराज

11. निम्न में कौन-सी रचना एवं रचनाकार का युग्म सही नहीं है?

(a) काव्यनिर्णय-भिखारीदास
(b) रसरहस्य-कुलपति मिश्र
(c) रसविलास-चिन्तामणि
(d) भावविलास-केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'भावविलास' के रचनाकार देव हैं। शेष युग्म सही हैं।

12. निम्न में से कौन-सी रचना के रचनाकार का नाम सही नहीं है?

(a) फूल नहीं रंग बोलते हैं-केदारनाथ अग्रवाल
(b) उस जनपद का कवि हूँ-त्रिलोचन शास्त्री
(c) सीढ़ियों पर धूप में-शमशेर बहादुर सिंह
(d) संसद से सड़क तक-सुदामा पांडेय 'धूमिल'

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'सीढ़ियों पर धूप में' कृति के रचनाकार रघुवीर सहाय हैं। शेष युग्म सही हैं।

13. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) दिव्या	**(i) भीष्म साहनी**
(B) तमस	**(ii) फणीश्वरनाथ रेणु**
(C) मैला आँचल	**(iii) नागार्जुन**
(D) बलचनमा	**(iv) यशपाल**

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

सही सुमेलित युग्म इस प्रकार है–

सूची-I	सूची-II
दिव्या	यशपाल
तमस	भीष्म साहनी
मैला आँचल	फणीश्वरनाथ रेणु
बलचनमा	नागार्जुन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तमस उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसका अनुवाद वर्ष 1988 में अंग्रेजी में किया गया।
- इस उपन्यास पर टेलीविजन धारावाहिक भी बनाया जा चुका है जिसमें ओमपुरी और अमरीश पुरी जैसे कलाकारों ने अपना योगदान दिया है।
- भीष्म साहनी को 'तमस' के लिए वर्ष 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता संग्रह) पर नागार्जुन को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- नागार्जुन को भारत-भारती पुरस्कार, मध्य प्रदेश के मैथिली गुप्त पुरस्कार और बिहार सरकार के राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- नागार्जुन को दिल्ली की हिन्दी अकादमी का शिखर सम्मान भी मिला।

14. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) सूरदास	(i) बीजक
(B) जगन्नाथदास	(ii) लोकायतन
(C) कबीर	(iii) सूरसागर
(D) सुमित्रानन्दन पन्त	(iv) उद्धव शतक

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
सूर दास	सूरसागर
जगन्नाथदास	उद्धव शतक
कबीर	बीजक
सुमित्रानन्दन पन्त	लोकायतन

15. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) लालटीन की छत	(i) निर्मल वर्मा
(B) आपका बंटी	(ii) गिरिराज किशोर
(C) जुगलबंदी	(iii) ऊषा प्रियंवदा
(D) पचपन खम्भे लाल दीवारें	(iv) मन्नू भण्डारी

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(b)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
लालटीन की छत	निर्मल वर्मा
आपका बंटी	मन्नू भण्डारी
जुगलबंदी	गिरिराज किशोर
पचपन खम्भे लाल दीवारें	ऊषा प्रियंवदा

16. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) मानस के हंस	(i) भगवतीचरण वर्मा
(B) झूठा सच	(ii) अमृतलाल नागर
(C) टेढ़े-मेढ़े रास्ते	(iii) यशपाल
(D) मरी हुई मछली	(iv) राजकमल चौधरी

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(b)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
मानस के हंस	अमृतलाल नागर
झूठा सच	यशपाल
टेढ़े-मेढ़े रास्ते	भगवतीचरण वर्मा
मरी हुई मछली	राजकमल चौधरी

17. 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' के लेखक हैं—

(a) वृन्दावन लाल वर्मा
(b) भगवतीचरण वर्मा
(c) विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'
(d) चंडी प्रसाद हृदयेश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सम-सामयिक घटना चक्र

18. **सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-**

सूची-I	सूची-II
(A) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(i) विष्णु प्रभाकर
(B) रसीदी टिकिट	(ii) अमृता प्रीतम
(C) आवारा मसीहा	(iii) अमृत राय
(D) कलम का सिपाही	(iv) हरिवंशराय बच्चान

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	हरिवंशराय बच्चान
रसीदी टिकिट	अमृता प्रीतम
आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर
कलम का सिपाही	अमृत राय

19. **सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-**

सूची-I	सूची-II
(A) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(i) रेखाचित्र
(B) आवारा मसीहा	(ii) यात्रा-साहित्य
(C) तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक	(iii) आत्मकथा
(D) मेरा परिवार	(iv) जीवनी

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलन युग्म क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	आत्मकथा
आवारा मसीहा	जीवनी
तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक	यात्रा-साहित्य
मेरा परिवार	रेखाचित्र

20. **सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-**

सूची-I (पुस्तक)	सूची-II (लेखक)
(A) शेखर : एक जीवनी	(i) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(B) अशोक के फूल	(ii) हरिवंशराय बच्चान
(C) क्या भूलूँ क्या याद करूँ	(iii) अज्ञेय

कूट :

	(A)	(B)	(C)
(a)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)
(d)	(iii)	(ii)	(i)

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I (पुस्तक)	सूची-II (लेखक)
शेखर : एक जीवनी	अज्ञेय
अशोक के फूल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	हरिवंशराय बच्चान

21. **सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-**

सूची-I	सूची-II
(A) मंगलसूत्र	(i) विष्णु प्रभाकर
(B) इरावती	(ii) भीष्म साहनी
(C) आवारा मसीहा	(iii) जयशंकर प्रसाद
(D) तमस	(iv) प्रेमचन्द

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

कूट से सही उत्तर का चयन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
मंगलसूत्र	प्रेमचन्द
इरावती	जयशंकर प्रसाद
आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर
तमस	भीष्म साहनी

सम-सामयिक घटना चक्र

22. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) प्रियप्रवास	(i) मैथिलीशरण गुप्त
(B) रंग में भंग	(ii) राय देवीप्रसाद पूर्ण
(C) मृत्युंजय	(iii) हरिऔध
(D) पथिक	(iv) रामनरेश त्रिपाठी

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
प्रियप्रवास	हरिऔध
रंग में भंग	मैथिलीशरण गुप्त
मृत्युंजय	राय देवीप्रसाद पूर्ण
पथिक	रामनरेश त्रिपाठी

23. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और दिये गये कूटों से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) बाणभट्ट की आत्मकथा	(i) अज्ञेय
(B) शेखर : एक जीवनी	(ii) मोहन राकेश
(C) आधे-अधूरे	(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(D) संस्कृति के चार अध्याय	(iv) हजारी प्रसाद द्विवेदी

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
बाणभट्ट की आत्मकथा	हजारी प्रसाद द्विवेदी
शेखर : एक जीवनी	अज्ञेय
आधे-अधूरे	मोहन राकेश
संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'

24. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) अरी ओ करुणा प्रभामय	1. मुक्तिबोध
(B) धूप के धान	2. अज्ञेय
(C) खुशबू के शिलालेख	3. गिरिजा कुमार माथुर
(D) चाँद का मुँह टेढ़ा है	4. भवानी प्रसाद मिश्र

कूट-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	iv	iii	ii
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iv	i	iii	ii

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

सही सुमेलन युग्म इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
अरी ओ करुणा प्रभामय	-	अज्ञेय
धूप के धान	-	गिरिजा कुमार माथुर
खुशबू के शिलालेख	-	भवानी प्रसाद मिश्र
चाँद का मुँह टेढ़ा है	-	मुक्तिबोध

25. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(a) इत्यलम्	1. धर्मवीर भारती
(b) ठंडा लोहा	2. अज्ञेय
(c) गीत फरोस	3. नरेश मेहता
(d) संशय की एक रात	4. भवानी प्रसाद मिश्र

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	iv	iii	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	ii	i	iv	iii

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

समसामयिक घटना चक्र

सही सुमेलन इस प्रकार है–

सूची-I	**सूची-II**
इत्यलम्	अज्ञेय
ठंडा लोहा	धर्मवीर भारती
गीत फरोस	भवानी प्रसाद मिश्र
संशय की एक रात	नरेश मेहता

26. निम्न में से कौन-सी रचना एवं उसके रचनाकार का युग्म सही नहीं है?

(a) कविता-कौमुदी-रामनरेश त्रिपाठी
(b) हिमकिरीटिनी-माखनलाल चतुर्वेदी
(c) हल्दीघाटी-श्यामनारायण पाण्डेय
(d) रसवन्ती-सियारामशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

रसवन्ती रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति है। शेष युग्म सही हैं।

27. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?

(a) महादेवी वर्मा - नीहार
(b) मैथिलीशरण गुप्त - कामायनी
(c) पन्त - तोड़ती पत्थर
(d) निराला - साकेत

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

विकल्प (a) का जोड़ा सही है। 'कामायनी', जयशंकर प्रसाद, 'तोड़ती पत्थर' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

28. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?

(a) प्रियप्रवास - हरिऔध
(b) सांध्यगीत - प्रसाद
(c) आँसू - निराला
(d) साकेत - तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

विकल्प (a) का जोड़ा सही है। 'सांध्यगीत' महादेवी वर्मा, 'आँसू' जयशंकर प्रसाद तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

29. इनमें से कौन-सी सुमेलित नहीं है?

(a) चतुरसेन शास्त्री - उत्सर्ग
(b) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार - अशोक
(c) हरिकृष्ण प्रेमी - प्रतिशोध
(d) सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी - विशाखा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

'विशाखा' शिरवाडकर यांचा की कृति है। शेष युग्म सही हैं।

30. सही युग्म का चयन कीजिए-

(a) भगवतशरण उपाध्याय - विलायत यात्रा
(b) देवेन्द्र सत्यार्थी - तूफानों के बीच
(c) रामवृक्ष बेनीपुरी - हिमालय यात्रा
(d) मोहन राकेश - आखिरी चट्टान तक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

सही युग्म इस प्रकार सुमेलित हैं–

प्रतापनारायण मिश्र	-	विलायत यात्रा
रांगेय राघव	-	तूफानों के बीच
काका कालेलकर	-	हिमालय यात्रा
मोहन राकेश	-	आखिरी चट्टान तक

31. निम्नलिखित तथ्यों को कालक्रमानुसार लिखिए-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा
2. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की
3. अज्ञेय द्वारा 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया गया
4. जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना की

(a) 1 2 4 3
(b) 2 1 3 4
(c) 2 1 4 3
(d) 4 2 3 1

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास 1929 ई. में लिखा। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस ' की रचना लगभग 1574 ई. में की। अज्ञेय ने 'तारसप्तक' का प्रकाशन 1943 ई. में किया। जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना 1935 ई. में की। अतः कालक्रमानुसार विकल्प (c) सही उत्तर है।

32. रसरतन के रचयिता हैं-

(a) जानकवि (b) पुहकर
(c) शेखनबी (d) शेखनिसार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(b)

पुहकर कवि ने सन् 1616 में 'रसरतन' नामक प्रेम- कथानक काव्य लिखा था, जिसमें रंभावती और सूरसेन की प्रेमकथा है। ये प्रतापपुर (मैनपुरी) के निवासी थे।

33. 'चंदनबाला रास' के रचयिता हैं :

(a) जिनधर्म सूरि (b) विजयसेन सूरि
(c) जिनदत्त सूरि (d) आसगु

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'चंदनबाला रास' के रचयिता आसगु हैं।

34. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना शिवराज सिंह चौहान की है?

(a) हिन्दी साहित्य की परम्परा
(b) अनैतिक
(c) प्रेमचंद ! विरासत का सवाल
(d) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' शिवराज सिंह चौहान की रचना है।

35. 'माधवानल कामकंदला' काव्य के रचयिता हैं-

(a) आलम (b) बोध
(c) ठाकुर (d) गंग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(a)

'माधवानल कामकंदला' काव्य के रचयिता आलम हैं। आलम रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। आलम के नाम से चार ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। माधवानल कामकंदला, श्याम स्नेही, सुदामा चरित तथा आलम केलि। इनमें दो ग्रन्थ प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा व सुदामा चरित कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा की प्रबन्धात्मक रचनाएँ हैं। 'आलम केलि' मुक्तक काव्य रचना है। इनकी रचनाओं में भावों की प्रधानता है।

36. 'रामकृष्ण परमहंस' के जीवन को लक्ष्य करके लिखी गई पुस्तक 'हलचल के पंख' के लेखक हैं—

(a) रामचंद्र तिवारी (b) मोहन अवस्थी
(c) कृष्णबिहारी मिश्र (d) कुबेरनाथ राय

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

'हलचल के पंख' के लेखक मोहन अवस्थी हैं। यह उनके अनुगीतों का संग्रह है।

37. 'प्राकृत पैंगलम' के रचयिता हैं-

(a) हेमचन्द (b) स्वयंभू
(c) वंशीधर (d) विद्यापति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कतिपय आचार्यों के ग्रन्थों का विलोडन (चुराने के अर्थ में) करके कई हजार शब्द संग्रहीत किये गये हैं। उनमें वररुचि, हेमचन्द, स्वयंभू, हरिदेव, विद्यापति, सरहपाद तथा संग्रहीत उद्धरणों के सम्पादित ग्रन्थ तथा व्याकरण में प्रमुख ''प्राकृत पैंगलम तथा विशलिका'', ''प्राकृत भाषाओं का व्याकरण'' प्रमुख हैं। 'प्राकृत पैंगलम' के टीकाकार वंशीधर हैं। प्राकृत पैंगलम में संग्रहीत अपभ्रंश कविताओं की भाषा को अवहट्ट कहा है। प्राकृत पैंगलम किसी एक काल की रचना नहीं है। उचित विकल्प के अभाव में विकल्प (c) उत्तर माना जा सकता है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार इसमें संकलित पदों का रचनाकाल 900 ई. से लेकर 1400 ई. तक का है। ब्रजभाषा पर कार्य करने वाले विद्वानों ने इसे ब्रजभाषा का ग्रन्थ माना है। किन्तु डॉ. उदय नारायण तिवारी के अनुसार इसमें अवधी, भोजपुरी, मैथिली और बंगला के प्राचीनतम रूप भी मिलते हैं।

38. 'अंगवधू' .... की रचना है।

(a) गरीबदास (b) मिस्कीनदास
(c) मलूकदास (d) दादूदयाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'अंगवधू', दादूदयाल का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। वे कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे। निर्गुण भक्त कवि होने पर भी उन्होंने ईश्वर के सगुण स्वरूप को मान्यता दी है। उनकी काव्यभाषा ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी और खड़ी बोली के शब्दों का मिश्रण भी मिलता है। उनकी भाषा कबीर की अपेक्षा सरल और बोधगम्य है। उनके 52 शिष्यों में रज्जब और सुन्दरदास सर्वप्रमुख थे।

39. 'बुद्धचरित' के रचनाकार की इनमें से एक और कृति है, वह है—

(a) मुद्राराक्षस (b) प्रतिज्ञायौगन्धरायण
(c) हनुमन्नाटक (d) सौन्दरानन्द

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'बुद्धचरित' महाकवि अश्वघोष की कवित्त्व कीर्ति का आधार स्तम्भ है। 28 सर्गों में विरचित इस महाकाव्य के द्वितीय से लेकर त्रयोदश सर्ग तक तथा प्रथम एवं चतुर्दश सर्ग के कुछ अंश ही मिलते हैं। बुद्धचरित के अलावा अश्वघोष रचित अन्य रचनाएँ हैं—सौन्दरानन्द, शारिपुत्रप्रकरण तथा राष्ट्रपाल (दो रूपक) है। इसके अतिरिक्त अश्वघोष का जातक की शैली पर लिखित 'कल्पना मण्डितिका' कथाओं का संग्रह है।

40. 'प्रवासी के गीत' के रचनाकार हैं-

(a) नरेन्द्र शर्मा (b) हरिवंशराय 'बच्चन'
(c) भगवतीचरण वर्मा (d) हरिकृष्ण प्रेमी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

नरेन्द्र शर्मा के प्रमुख कविता संग्रह हैं- 'प्रवासी के गीत' , 'मिट्टी और फूल' 'अग्निशस्य', प्यासा निर्झर, 'मुट्ठी बंद रहस्य'। 'मनोकामिनी', 'द्रोपदी', 'उत्तरजय सुवर्णा' इनके प्रबंधकाव्य हैं।

41. 'रामायण महानाटक' के लेखक हैं-

(a) प्राणचंद चौहान (b) केशवदास
(c) हृदयराम (d) अग्रदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

प्राणचंद चौहान भक्तिकाल के कवि थे। वे रामायण महानाटक के रचयिता हैं।

42. 'औरत की बोली' कृति के रचनाकार हैं—

(a) महुआ माझी (b) गीताश्री
(c) मैत्रेयी पुष्पा (d) अलका सरावगी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'औरत की बोली' कृति के रचनाकार गीताश्री हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—

कहानी संग्रह-प्रार्थना के बाहर, कविता जिनका हक।

स्त्री विमर्श-स्त्री आकांक्षा के मानचित्र।

शोध-सपनों की मंडी (आदिवासी लड़कियों की तस्करी पर आधारित), देहराग (बैगा आदिवासियों की गोदना कला पर एक सचित्र शोध पुस्तक)।

43. 'मनबोध मास्टर की डायरी' के लेखक हैं

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) विवेकी राय
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) अमृतराय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

विवेकी राय गंवई (गांव) रंग में रंगे हुए सहज और आस्तिक रचनाकार हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में रचना की है। वे एक साथ ही कवि, कथाकार, निबन्धकार और रिपोर्ताज लेखक भी हैं। 'मनबोध मास्टर की डायरी' डॉ. विवेकी राय की रचना है।

44. 'सनेह लीला' के रचयिता हैं-

(a) रैदास (b) पीपा
(c) विष्णुदास (d) बेनी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'सनेह लीला' के रचयिता विष्णुदास हैं। 'महाभारत कथा' और 'स्वर्गारोहण' भी इन्हीं की रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ विष्णुदास के कृष्णलीला सम्बन्धी दो काव्य उपलब्ध हुए हैं-'रुक्मिणी मंगल' तथा 'सनेह लीला'।
➲ 'सनेह लीला' में कृष्ण को अपना ब्रज-सम्बन्धी बाल्यकाल स्मरण आता है और वह ऊद्धव को गोपियों के लिए संदेश देकर ब्रज भेजते हैं।
➲ 'रुक्मिणी मंगल' में कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह की कथा है।
➲ विष्णुदास के ये दोनों काव्य कृष्ण एवं राम काव्यों के प्रेरक हैं।

45. हिन्दी में शिकार साहित्य के अप्रतिम लेखक हैं-

(a) जगमोहन सिंह (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(c) श्रीराम शर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

श्रीराम शर्मा ने शिकार के सम्बन्ध में बहुत से लेख लिखे हैं। पर 'बोलती प्रतिमा' (1937 ई.) और 'वे जीते कैसे हैं' (1957 ई.) में इनके रेखाचित्र संस्मरण संगृहीत हैं। इन संग्रहों में वे ही चित्र अधिक प्रभावशाली हैं, जो शिकार से सम्बद्ध हैं।

46. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नहीं लिखी है?

(a) अशोक के फूल (b) कबीर
(c) नया साहित्य (d) कुटज

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'नया साहित्य' के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी नहीं हैं, जबकि अशोक के फूल, कबीर और कुटज उनकी रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'नया साहित्य' भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा संचालित मासिक पत्रिका है।
➲ जिसका प्रगतिशील साहित्य की रचना और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

47. 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' निम्नलिखित में से किसके द्वारा लिखा गया है?

(a) डॉ. इन्द्रनाथ मदान (b) डॉ. सुमन राजे
(c) डॉ. श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. ममता कालिया

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' डॉ. सुमन राजे द्वारा लिखी गयी पुस्तक है। डॉ. सुमन राजे द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें हैं-कविता सपना और लाश घर, चौथा सप्तक, उगे हुए हाथों के फूल, यात्रादेश, साहित्य, निकेतन, कानपुर, इक्कीसवी सदी का गीत आलोचना एवं साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप, काव्य रूप-संरचना, उद्‌भव और विकास, नाट्य शिल्प, रचना की कार्यशाला आदि।

48. **'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' ग्रन्थ के लेखक हैं—**

(a) नामवर सिंह (b) दूधनाथ सिंह

(c) सुमन राजे (d) बच्चन सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक एवं चिन्तक डॉ. बच्चन सिंह की महत्वपूर्ण पुस्तक है। इन्होंने आदिकाल को 'अपभ्रंश काल' कहा है। आधुनिक काल का आरंभ 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से मानते हुए इस काल का उपविभाजन 'नवजागरण-युग', स्वच्छन्दतावाद-युग तथा उत्तर-स्वच्छन्दतावाद-युग के नाम से किया है। उत्तर-स्वच्छन्दतावाद-युग के अंतर्गत प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और उत्तर आधुनिकतावाद का विवेचन मिलता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ डॉ. बच्चन सिंह की अन्य कृतियां हैं-बिहारी का नया मूल्यांकन, क्रान्तिकारी कवि निराला-आलोचक और आलोचना, रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना, समकालीन साहित्य और आलोचना की चुनौती, हिन्दी नाटक, हिन्दी आलोचना के बीच-शब्द ।

49. **'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक हैं-**

(a) फ्रैंक ई.के. (b) मैक्समूलर

(c) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक फ्रैंक ई.के. हैं। भारत में यह सन् 1920 में कलकत्ता एसोसिएशन प्रेस द्वारा प्रकाशित की गयी थी। यह अंग्रेजी भाषा में लिखी गयी है।

50. **'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिट्रेचर' के लेखक हैं :**

(a) मौलवी करीम उद्दीन (b) एफ.ई.के.

(c) जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (d) इडविन ग्रीव्ज

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिट्रेचर के लेखक इडविन ग्रीव्ज हैं। इसका प्रकाशन 1918 में हुआ था।

51. **'आलसियों का कोड़ा' किसकी रचना है?**

(a) लल्लू लाल (b) मुंशी सदासुख लाल

(c) सदल मिश्र (d) सितारे हिन्द

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

'आलसियों का कोड़ा' के रचनाकार राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—राजा भोज का सपना, वीर सिंह का वृत्तांत, भूगोल हस्तामलक, वामामनरंजन, मानवधर्म सार, उपनिषदसार, योगवशिष्ठ आदि।

52. **'चंडी चरित्र' किसकी विशिष्ट साहित्यिक रचना है?**

(a) गुरु गोविन्द सिंह (b) अर्जुनसिंह

(c) रामदास (d) अंगद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'चंडी चरित्र' गुरु गोविन्द सिंह की विशिष्ट साहित्यिक रचना है। इनकी रचनाओं के संग्रह का नाम 'दशम ग्रन्थ' है। इसमें 16 रचनाएँ संकलित हैं। इनकी शैली ओजस्विनी है। गुरुजी की रचनाओं में वीर रस प्रधान है।

53. **कबीर के बीजक पर रची गई 'त्रिज्या' टीका किसकी है?**

(a) पूरनदास (b) जगजीवनदास

(c) भगवानदास (d) पल्टू साहब

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

पूरनदास, अमर साहब के शिष्य सुखलाल साहब के शिष्य थे। उन्होंने 'वैराग्य शतक' नामक ग्रंथ की रचना की। तत्पश्चात् उन्होंने 'निर्णयसार' और 'बीजक की त्रिज्या' टीका की रचना की।

54. **'कालिदास हजारा' की रचना की-**

(a) भारतेन्दु ने (b) घनानन्द ने

(c) चिन्तामणि (d) कालिदास ने

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

रीतिकालीन कवि कालिदास ने 'कालिदास हजारा' की रचना की है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'सुन्दरी तिलक' में रीतिकालीन कवियों का संकलन किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कालिदास का पूरा नाम कालिदास त्रिवेदी था। इनका जम्बू नरेश जोगजीत सिंह के यहाँ रहना पाया जाता है, जिनके लिए संवत् 1749 में इन्होंने 'वर-वधू-विनोद' बनाया। यह नायिकाभेद और नखशिख की पुस्तक है।

➲ बत्तीस कवित्तों की इनकी एक छोटी सी पुस्तक 'जँजीराबंद' भी है।

55. 'हालात-ए-कन्हैया' किसकी रचना है?
(a) पूरन भगत (b) विद्यापति
(c) अमीर खुसरो (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'हालात-ए-कन्हैया' अमीर खुसरो की रचना है। इनके द्वारा नजरान-ए-हिन्दी नामक एक और ग्रन्थ की रचना का उल्लेख मिलता है।

56. 'हिन्दी नवरत्न' के लेखक हैं?
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) प्रतापनारायण मिश्र
(c) मिश्रबन्धु (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से बीसवीं शती का प्रथम चरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस काल में जिन विद्वानों ने सक्रिय भूमिका निभाई, उनमें मिश्रबन्धुओं (गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र) का नाम सर्वोपरि है। 'हिन्दी नवरत्न' तथा मिश्रबन्धु विनोद (तीनों भाग, 1913) मिश्रबन्धुओं की रचना है।

57. 'हिन्दी नवरत्न' एक आलोचनात्मक कृति है, जिसके आलोचक रचनाकार हैं—
(a) शिवसिंह सरोज (b) मिश्रबन्धु
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) श्यामसुन्दर दास
डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. 'माधव विलास' के रचनाकार हैं-
(a) लल्लू लाल (b) सदल मिश्र
(c) राम प्रसाद निरंजनी (d) सदासुख लाल
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'माधव विलास' (1817) के रचनाकार लल्लू लाल हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—सिंहासन बत्तीसी (1801), बैताल पच्चीसी (1801), माधोनल (1801), शकुन्तला (1801), प्रेम सागर इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सदल मिश्र की 'चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान' को संस्कृत से खड़ी बोली में अनूदित किया।
➲ राम प्रसाद निरंजनी ने योगवशिष्ठ एवं सदासुख लाल ने सुखसागर की रचना की।

59. 'बिहारी बिहार' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं:
(a) काशीनाथ खत्री (b) बिहारी
(c) राधाचरण गोस्वामी (d) पं. अंबिकादत्त व्यास
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पं. अंबिकादत्त व्यास (1858-1900) को ब्रजभाषा का अच्छा कवि माना है। इन्होंने बिहारी के दोहों के भाव को विस्तृत करने के लिए कुंडलियाँ छन्द में 'बिहारी बिहार' नामक एक बड़ा काव्यग्रन्थ लिखा।

60. 'मोचीराम' तथा 'पटकथा' के लेखक हैं-
(a) चन्द्रकान्त देवताले (b) धूमिल
(c) बलदेव वंशी (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'मोचीराम' तथा 'पटकथा' सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की कविताएँ हैं। इनकी अन्य कविताएँ हैं—मैंने घुटने से कहा, हरित क्रान्ति, उसके बारे में, कुछ सूचनाएँ, हर तरफ धुआँ है, रोटी और संसद, भेंट, गाँव, घर में, वापसी आदि। संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र इनके कविता-संग्रह हैं।

61. 'संसद से सड़क तक' के रचनाकार हैं—
(a) मुक्तिबोध (b) धूमिल
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) लीलाधर जगूड़ी
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

62. वह विकल्प छाँटिए जिसमें खड़ी बोली के महाकाव्यों का नाम हो-
(a) रामचरितमानस, बीसलदेव रासो, पद्मावत
(b) लहर, दीपशिखा, भारतभारती
(c) चन्द्रगुप्त, पद्मावत, कुरुक्षेत्र
(d) साकेत, कामायनी, प्रियप्रवास
K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचित 'प्रियप्रवास' (1914), मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' (1931) तथा कामायनी (1935) जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है।

63. इनमें से कौन-सी नागार्जुन द्वारा रचित नहीं है?

(a) पाषाणी (b) रवीन्द्र के प्रति
(c) चंदना (d) कला और बूढ़ा चाँद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'कला और बूढ़ा चाँद' नागार्जुन द्वारा नहीं, बल्कि सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित काव्य है।

64. निम्न में से 'हिन्दी साहित्य का अतीत' किसने लिखा?

(a) डॉ. विश्वनाथ तिवारी (b) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'हिन्दी साहित्य का अतीत' (भाग- 1 और 2) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का आलोचनात्मक ग्रन्थ है। इनके अन्य आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं– बिहारी का वाग्विभूति, वाङ्मय विमर्श, हिन्दी का समसामयिक साहित्य और हिन्दी नाट्य साहित्य का विकास इत्यादि। शुक्ल जी ने अपनी आलोचना के लिए सगुणोपासक भक्त कवियों को चुना, तो मिश्र जी ने रीतिकालीन कवियों को, बिहारी एवं घनानन्द उनके प्रिय कवि हैं।

65. 'हिन्दी साहित्य का अतीत' (भाग-1 और 2) साहित्येतिहास ग्रन्थ के लेखक हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) श्यामसुन्दर दास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

66. 'हिन्दी साहित्य का अतीत' नामक इतिहास ग्रन्थ के रचनाकार का नाम है—

(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) रामकुमार वर्मा (d) गणपति चन्द्र गुप्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

67. 'आत्मबोध' किसकी रचना है?

(a) जालन्धरनाथ (b) गोरखनाथ
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'आत्मबोध' नामक ग्रन्थ के रचनाकार हठयोग के प्रवर्तक गोरखनाथ हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–सबदी, पद, प्राणसंकली, सिष्यादरसन, नर वैबोध, अभैमात्रा जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तवार, मछीन्द्र-गोरखबोध, रामावली, ग्यान तिलक, ग्यान चौतीसा तथा पंचमात्रा आदि।

68. 'आत्मबोध' किसकी रचना है?

(a) गोरखनाथ (b) जालन्धरनाथ
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) चर्पटनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. इनमें से किस ग्रन्थ में सबसे प्राचीन गद्य का नमूना द्रष्टव्य है?

(a) गोरखसार (b) योगवशिष्ठ
(c) पद्मपुराण (d) बैताल पच्चीसी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

गोरखनाथ नाथ साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। वे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे, किन्तु उन्होंने सिद्धों के मार्ग का विरोध किया था। गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उनके पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ हुए, जिनके आचरण का विरोध उनके शिष्य गोरखनाथ ने किया। गोरखनाथ के काल को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। गोरखनाथ कृति 'गोरखसार' में सबसे प्राचीन गद्य का नमूना प्राप्त होता है।

70. 'कौलज्ञान निर्णय' के रचनाकार हैं—

(a) गोरखनाथ (b) जालन्धरनाथ
(c) मत्स्येन्द्रनाथ (d) गोपीचन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'कौलज्ञान निर्णय' के रचनाकार मत्स्येन्द्रनाथ हैं।

71. 'देहाती दुनियाँ' के रचनाकार हैं—

(a) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) शिवपूजन सहाय (d) बलभद्र दीक्षित

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शिवपूजन सहाय हिन्दी साहित्य के उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक एवं पत्रकार थे। ये 'भाषा के जादूगर' के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'कुछ' में संकलित निबन्धों में उन्होंने तुच्छ से तुच्छ विषय को अपनी रोचक रचना शैली से मोहक बना दिया है। आत्माभिव्यंजना, शिष्ट हास्य, मार्मिक व्यंग्य और अनौपचारिक, किन्तु परिष्कृत परिमार्जित शैली के कारण शिवपूजन सहाय का हिन्दी निबन्ध साहित्य में विशेष तथा महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रारम्भिक लेख 'लक्ष्मी', 'मनोरंजन' तथा 'पाटलीपुत्र' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–देहाती दुनियाँ (1926), मतवाला माधुरी (1924), गंगा (1931), जागरण (1932), हिमालय (1946), साहित्य (1950), वही दिन वही लोग (1965), मेरा जीवन (1985), स्मृतिशेष (1994), हिन्दी भाषा और साहित्य (1996) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1934 में इन्होंने लहेरिया सराय (दरभंगा) से 'बालक' नामक मासिक पत्र का सम्पादन किया।
- 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद' के संचालक तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रकाशित 'साहित्य' नामक शोध- समीक्षा प्रधान, त्रैमासिक पत्र के सम्पादक थे।
- वर्ष 1921-22 में आरा से मारवाड़ी सुधार नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया तथा कलकत्ता के 'मतवाला मण्डल' के सदस्य रहे।

72. 'भाषा के जादूगर' के रूप में कौन विख्यात सीरीज है?

(a) शिवपूजन सहाय (b) बेचन शर्मा 'उग्र'
(c) जैनेन्द्र कुमार (d) यशपाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. 'सन्दर्भ' के लेखक हैं—

(a) डॉ. विनय (b) दूधनाथ सिंह
(c) श्रीराम वर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'सन्दर्भ' का लेखक प्रस्तुत विकल्पों में से कोई नहीं है। डॉ. विनय की कृति 'एक पुरुष और भी' है। शैक्षिक 'सन्दर्भ' एक द्विमासिक पत्रिका है। यह शिक्षकों तथा शिक्षा में रुचि रखने वाले के लिए समान रूप से उपयोगी है। यह एकलव्य, भोपाल (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित होती है।

74. 'आत्मजयी' के लेखक हैं—

(a) कुँवर नारायण (b) दुष्यन्त कुमार
(c) रघुवीर सहाय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'आत्मजयी' कुँवर नारायण द्वारा लिखित 'कठोपनिषद' के नचिकेता-प्रसंग पर आधारित एक प्रबन्धकाव्य है।

75. इनमें से किस कृति रचना का आधार 'कठोपनिषद्' है?

(a) अंधायुग (b) आत्मजयी
(c) महाप्रस्थान (d) आर्यावर्त

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. इनमें से कुँवर नारायण का काव्यसंग्रह है—

(a) मछलीघर (b) धूप के धान
(c) उत्सवा (d) हाशिए का गवाह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दी के वरिष्ठ कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कुँवर नारायण का निधन नवम्बर, 2017 में हो गया। इन्होंने कविता के अलावा कहानी एवं आलेचना विधाओं में भी लिखा। इनके कविता संग्रह में चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम आत्मजयी, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों बाजश्रवा के बहाने, हाशिये का गवाह प्रमुख हैं।

77. 'लुकमान अली' किसकी काव्य रचना है?

(a) मणि मधुकर (b) लीलाधर जगूडी
(c) सौमित्र मोहन (d) मंगलेश डबराल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

हिन्दी में 'अकविता' आंदोलन के प्रमुख कवियों में से एक सौमित्र मोहन भी थे। 'लुकमान अली' सौमित्र मोहन की काव्य रचना है। इनकी अन्य कृतियाँ हैं-निषेध, पहचान, चाकू से खेलते हुए आदि। इसके अलावा 'देहरा में अब भी उगते हैं हमारे पेड़' नाम से रस्किन बाण्ड की कहानियों का अनुवाद भी किया है।

78. 'प्रबन्ध चिन्तामणि' के रचयिता का नाम है-

(a) दामोदर पण्डित (b) कवि आसुग
(c) रोडा कवि (d) मेरुतुंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'प्रबन्ध चिन्तामणि' के रचयिता मेरुतुंग हैं।

79. 'जयचन्द्र प्रकाश' के रचनाकार हैं-

(a) नल्ल सिंह (b) जगनिक
(c) भट्ट केदार (d) मधुकर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'जयचन्द्र प्रकाश' के रचनाकार भट्ट केदार जी हैं। नल्ल सिंह ने 'विजयपाल रासो' की रचना की है। मधुकर कवि ने जयमयंक-जस-चन्द्रिका की रचना की है। जगनिक ने परमाल रासो की रचना की है।

80. 'जयमयंक-जस-चन्द्रिका' के रचयिता का नाम है-

(a) भट्ट केदार (b) नरपति नाल्ह
(c) नल्ल सिंह (d) मधुकर कवि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

जयमयंक जस-चन्द्रिका की रचना मधुकर ने 1186 ई. में की थी। यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं है, किन्तु 'राठौड़ा री ख्यात' में यह उल्लेख मिलता है कि दयालदास ने इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर कन्नौज का वृत्तांत लिखा था।

81. 'अपराजिता' के लेखक हैं-

(a) नरेन्द्र शर्मा (b) अंचल
(c) दिनकर (d) माखन लाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

'अपराजिता' काव्य ग्रन्थ के लेखक रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' हैं। इनके अन्य काव्य ग्रन्थ हैं–'मधुलिका', 'अपराधिता' आदि। इनकी कहानी संग्रह हैं– नंगमनंग, ये वे बहुचेरे, कुँअर की दुलहिन आदि।

82. 'समाधिलेख' के लेखक हैं-

(a) श्रीराम वर्मा (b) श्रीकान्त वर्मा
(c) दूधनाथ सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

'समाधिलेख' काव्य कृति के लेखक श्रीकान्त वर्मा हैं। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं–भटका मेघ,दिनारम्भ, माया दर्पण, जलसाघर, मगध, संचयिता आदि। इनकी कुछ प्रतिनिधि रचनाएँ हैं–कुछ का व्यवहार बदल गया, राजनीतिज्ञों ने मुझे, कोसल में विचारों की कमी, कलिंग, आस्था की प्रतिध्वनियाँ, टूटी पड़ी है परम्परा, महामहिम, ऊब, भद्रवंश के प्रेत, एक और ढंग आदि।

83. 'मगध' पुस्तक के लेखक कौन हैं?

(a) श्रीकान्त वर्मा (b) श्रीराम वर्मा
(c) रामचन्द्र वर्मा (d) केदार नाथ सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. 'मगध' कविता संग्रह के रचयिता हैं-

(a) अशोक वाजपेयी (b) श्रीकान्त वर्मा
(c) मोहन राकेश (d) रघुवीर सहाय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. शेखर जोशी की रचना है–

(a) मकान (b) हत्यारे
(c) कोसी का घटवार (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(c)

शेखर जोशी की रचना 'कोसी का घटवार' है। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं– साथ के लोग, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, मेरा पहाड़, प्रतिनिधि कहानियाँ, एक पेड़ की याद आदि।

86. 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पुस्तक के लेखक हैं–

(a) मुनिजिन विजय (b) मोतीलाल मेनारिया
(c) टीकमसिंह तोमर (d) पं.गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पुस्तक के लेखक मोतीलाल मेनारिया हैं। इसमें मारवाड़ी गद्य का जो नमूना लिया गया है, उसमें 'रहता' के लिए 'रैवतो','हमारा' या 'म्हारा' के लिए मारा, 'काढ' के लिए 'काड' आदि रूप मिलते हैं।

87. निम्नांकित में से कौन-सा काव्य-ग्रन्थ नहीं है?

(a) वैदेही वनवास (b) पथिक
(c) रसज्ञ-रंजन (d) भारत-भारती

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'रसज्ञ-रंजन' महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध संग्रह है। 'पथिक', राम नरेश त्रिपाठी, 'भारत-भारती' मैथिलीशरण गुप्त तथा 'वैदेही वनवास', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का काव्य-ग्रन्थ है।

88. 'शम्बूक वध' के रचनाकार हैं–

(a) धर्मवीर भारती (b) जगदीश गुप्त
(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) प्रभाकर माचवे

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

'शम्बूक' राम कथा से सम्बन्धित जगदीश गुप्त की एक चर्चित रचना है। 'शम्बूक' एक शूद्र है, जो तपस्या करने के कारण राम के द्वारा मारा जाता है। शम्बूक, दलित विमर्श का एक उत्कृष्ट काव्य है। 'रीतिकाव्य संग्रह', 'नवधा' और 'त्रयी' गुप्तजी की संपादित रचनाएँ हैं। 'नवधा' में जगदीश गुप्त अज्ञेय के साथ मिलकर नव कवियों की रचनाओं का संकलन प्रस्तुत करते हैं। 'त्रयी' शीर्षक से तीन संकलन युवा कवियों से सम्बन्धित प्रकाशित हुए। गुप्त जी रचित 'जयन्त' पौराणिक कथानक के आधार पर रचा गया एक खण्ड काव्य है।

89. 'गोरखबानी' नामक पुस्तक के सम्पादक हैं—

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) डॉ. भागीरथ मिश्र

(c) डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन व सम्पादन अपनी कृति 'गोरखबानी' में किया है। वे हिन्दी में डी. लिट. की उपाधि प्राप्त करने वाले पहले शोधार्थी थे। बाल्यकाल में 'अंबर' नाम से कविताएँ रचते थे। 'हिल्मैन' नामक अंग्रेजी पत्रिका का भी उन्होंने सम्पादन किया।

90. 'एकलव्य' नामक कृति के लेखक हैं—

(a) भगवतीचरण वर्मा (b) रामकुमार वर्मा

(c) नन्ददुलारे वाजपेयी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'एकलव्य' नामक काव्य कृति के लेखक रामकुमार वर्मा हैं। इनकी अन्य काव्य कृतियाँ हैं—उत्तरायण, ओ अहल्या आदि। इनके प्रमुख नाटक संग्रह हैं—पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, रूपरंग, रजतरश्मि, दीपदान, ऋतुराज, रिमझिम, इन्द्रधनुष, पाँचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूरपंख, जूही के फूल आदि।

91. 'अंगदपैज' की रचना किसने की है?

(a) नाभादास (b) धरणीदास

(c) ईश्वरदास (d) मलूकदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

ईश्वरदास ने 'अंगदपैज' और 'भरत मिलाप' की रचना की है।

92. 'कवितावली' किसकी रचना है?

(a) लालदास (b) रामप्रिया शरण

(c) रामचरण दास (d) मधुसूदन दास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कवितावली रामचरण दास की कृति है। कवितावली को बहुत से पुराने हस्तलेखों में कवित्त-रामायण और कवितावली-रामायण की भी संज्ञा दी गई है। कवित्त-रामायण संज्ञा चंद, लाला मंगल दास, लाल (कवि), सेनापति, हरिदास के रामकथा सम्बन्धी हस्तलेखों को भी दी गई है। कवितावली नाम के हस्तलेख जनकराज, किशोरी शरण, दूलनदास, परमेश्वरी दास, सरयूदास, सहजराम के भी प्राप्त हुए हैं।

93. कौन-सी कृति भारतेन्दु हरिश्चन्द की नहीं है?

(a) भारत हरण (b) भारत दुर्दशा

(c) अंधेर नगरी (d) वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

भारत हरण (1890) कृति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की नहीं, बल्कि देवकीनन्दन त्रिपाठी की है। शेष रचनाएँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हैं।

94. इनमें से कौन-सी भारतेन्दु की रचना नहीं है?

(a) वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति (b) विषस्य विषमौषधम्

(c) बादशाह दर्पण (d) पद्मावती

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, विषस्य विषमौषधम् तथा बादशाह दर्पण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है, जबकि पद्मावती मलिक मुहम्मद जायसी की रचना है।

95. 'पृथ्वीकल्प' किसकी रचना है?

(a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) गिरिजा कुमार माथुर

(c) मुक्तिबोध (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'पृथ्वीकल्प' गिरिजा कुमार माथुर की रचना है। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं- मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, मुझे और अभी कुछ कहना है, भीतरी नदी की यात्रा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गिरिजा कुमार माथुर का पहला काव्य संग्रह 'मंजीर' सन् 1941 में प्रकाशित हुआ।
- ये तार सप्तक के कवि थे।
- रामविलास शर्मा के शब्दों में—''उनका किशोर मन न वयस्क होता है, न प्रौढ़, वार्धक्य तो दूर की बात है।''
- माथुर जी 'वक्त के सामने' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा वर्ष 1993 में बिरला फाउण्डेशन द्वारा व्यास सम्मान प्रदान किया गया।

96. निम्नलिखित में कौन गिरिजा कुमार माथुर की कृति नहीं है?

(a) नाश और निर्माण (b) धूप के धान

(c) पृथ्वीकल्प (d) चाँद का मुँह टेढ़ा है

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

97. कौन-सी काव्यकृति गिरिजा कुमार माथुर की नहीं है?
(a) नाश और निर्माण (b) शिलापंख चमकीले
(c) छाया मत छूना (d) बुनी हुई रस्सी
नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'बुनी हुई रस्सी' (1971), भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का संग्रह है। इस रचना पर उन्हें 1972 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। शेष रचनाएँ गिरिजा कुमार माथुर की हैं।

98. 'सोए पलाश दहकेंगे' शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार हैं :
(a) नचिकेता (b) शंभुनाथ सिंह
(c) माहेश्वर तिवारी (d) यश मालवीय
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'सोए पलाश दहकेंगे' शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार नचिकेता हैं। 'पलाश' को केंद्र में रखकर की गई अन्य रचनाएँ हैं-पूरब खिले पलाश (रवींद्रनाथ त्यागी, व्यंग्य संग्रह), अकेला पलाश (मेहरुन्निसा परवेज, उपन्यास), जाने कितने रंग पलाश के (मृदुला वाजपेयी, उपन्यास), पलाश वन (नरेंद्र शर्मा)।

99. 'हिन्दी शब्दानुशासन' के लेखक हैं—
(a) कामता प्रसाद गुरु
(b) किशोरीदास वाजपेयी
(c) श्यामसुन्दर दास
(d) रामचन्द्र वर्मा
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'हिन्दी शब्दानुशासन' के लेखक किशोरीदास वाजपेयी जी हैं। ये महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा चलाये गये व्याकरण सम्मत परिष्कार आन्दोलन के अगुआ थे। वाजपेयी जी पहले ऐसे भाषाविद् थे, जिन्होंने हिन्दी व्याकरण के अंग्रेजी आधार को अस्वीकार कर उसे संस्कृत के आधार पर प्रतिष्ठित किया। इन्हें 'हिन्दी का पाणिनि' घोषित किया गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने किशोरीदास वाजपेयी से 'हिन्दी शब्दानुशासन' कहकर लिखवाया था।
- किशोरीदास वाजपेयी ने 'सुदामा' नामक नाटक लिखा तथा 'तरंगिणी' नामक संग्रह में ब्रज कविताएँ एवं दोहे रचे।
- इनकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं—ब्रजभाषा व्याकरण, कांग्रेस का इतिहास, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राष्ट्र भाषा का प्रथम व्याकरण, भारतीय भाषा विज्ञान आदि।

100. हिन्दी व्याकरण ग्रन्थ 'शब्दानुशासन' के रचनाकार हैं—
(a) हेमचन्द्र (b) किशोरीदास वाजपेयी
(c) पाणिनि (d) पतंजलि
डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. 'हिन्दी शब्दानुशासन' ग्रन्थ के रचनाकार हैं—
(a) हेमचन्द्र (b) कामता प्रसाद गुरु
(c) किशोरीदास वाजपेयी (d) धीरेन्द्र वर्मा
T.G.T. परीक्षा, 2010
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

102. 'हिन्दी का पाणिनि' किसको कहा जाता है?
(a) कामता प्रसाद गुरु (b) रामचन्द्र वर्मा
(c) भोलानाथ तिवारी (d) किशोरीदास वाजपेयी
P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

103. हिन्दी भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की देख-रेख में लिखा गया, जिसका नाम था-'हिन्दी व्याकरण'। इसके लेखक थे—
(a) किशोरीदास वाजपेयी (b) कामता प्रसाद गुरु
(c) हरदेव बाहरी (d) पृथ्वीनाथ पाण्डेय
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

हिन्दी भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण 'नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की देख-रेख में किया गया, जिसका नाम 'हिन्दी व्याकरण' था। हिन्दी व्याकरण के लेखक कामता प्रसाद गुरु थे। इनकी ख्याति इसी रचना के कारण ज्यादा हुई। यह हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा और प्रामाणिक व्याकरण माना जाता है। कामता प्रसाद गुरु की अन्य रचनाओं में -सत्य, प्रेम, पार्वती और यशोदा (उपन्यास), भौमासुर वध, विनय पचासा (ब्रजभाषा काव्य), पद्य पुष्पावली, सुदर्शन (पौराणिक नाटक) तथा हिन्दुस्तानी शिष्टाचार आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

104. 'प्रेमचन्द : सामन्त का मुंशी' पुस्तक के लेखक हैं—
(a) डॉ. धर्मवीर (b) विवेकी राय
(c) मुद्राराक्षस (d) प्रेमचन्द
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

डॉ. धर्मवीर ने दलित दृष्टि से प्रेमचन्द साहित्य का मूल्यांकन करते हुए 'प्रेमचन्द : सामन्त का मुंशी' व 'प्रेमचन्द की नीली आँखें' नाम से पुस्तकें लिखी हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी साहित्य व आलोचना में प्रेमचन्द को प्रतिष्ठित करने का श्रेय डॉ. रामविलास शर्मा को दिया जाता है। उन्होंने प्रेमचन्द पर दो प्रमुख किताबें 'प्रेमचन्द' और 'प्रेमचन्द का युग' लिखीं।
- प्रेमचन्द के पत्रों को सहेजने का काम अमृतराय और मदन गोपाल ने किया।
- कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचन्द के जीवन के कमजोर पक्षों को उजागर करने के साथ-साथ 'प्रेमचन्द का अप्राप्य साहित्य' (दो भाग) व 'प्रेमचन्द विश्वकोश' (दो भाग) का सम्पादन किया।

105. 'ठण्डा लोहा' के रचनाकार हैं—

(a) गिरिजा कुमार माथुर (b) धर्मवीर भारती
(c) दुष्यन्त कुमार (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'ठण्डा लोहा' के रचनाकार धर्मवीर भारती हैं। इनकी अन्य काव्य कृतियाँ हैं—सात गीत वर्ष, अन्धायुग, कनुप्रिया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सात गीत वर्ष में भारती जी आधुनिकता बोध को उजागर करते हैं।
- अन्धायुग में महाभारत की कथा के माध्यम से युद्धजन्य कुण्ठा, युद्ध की निरर्थक परिणति, विवेकहीन अमानवीय स्थितियों को अभिव्यंजित किया है।
- कनुप्रिया में राधा-कृष्ण का रागबोध उद्घाटित होता है। इसमें उनके विरहजन्य भावोद्वेलन को भारती जी ने रूपायित किया है।

106. 'अन्धायुग किसकी रचना है?

(a) धर्मवीर भारती (b) भारतेन्दु
(c) यशपाल (d) गोविन्द बल्लभ पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. 'अन्धायुग' के लेखक हैं—

(a) गिरिजा कुमार माथुर (b) धर्मवीर भारती
(c) मुक्तिबोध (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

108. 'कनुप्रिया' के लेखक हैं—

(a) नन्ददुलारे वाजपेयी (b) वीरेन्द्र मिश्र
(c) मोहन राकेश (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

109. धर्मवीर भारती की काव्यकृति कनुप्रिया में किसका वर्णन है?

(a) राधा के नवीन रूप (b) सीता का दु:ख
(c) मीरा (d) रसिक प्रिया

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

110. 'सिद्ध साहित्य' किसकी रचना है?

(a) राहुल सांकृत्यायन (b) धर्मवीर भारती
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नागेन्द्र नाथ उपाध्याय

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'सिद्ध साहित्य' धर्मवीर भारती की रचना नहीं है, बल्कि उन्होंने इस विषय पर शोध कार्य किया था। बाद में यही पुस्तकाकार के रूप में प्रकाशित हुआ।

111. निम्नलिखित में कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की नहीं है?

(a) ठण्डा लोहा (b) सात गीत वर्ष
(c) कनुप्रिया (d) सूर्य का स्वागत

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

'सूर्य का स्वागत' के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं। शेष कृतियाँ धर्मवीर भारती की हैं।

112. इनमें से कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की नहीं है?

(a) अन्धा युग (b) कनुप्रिया
(c) ठण्डा लोहा (d) हरी घास पर क्षण भर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

हरी घास पर क्षण भर 'अज्ञेय' की रचना है। शेष रचनाएँ धर्मवीर भारती की हैं।

113. किन दो साहित्यकारों ने 'अर्द्धनारीश्वर' नाम से रचना की है?

(a) हरिऔध – माखनलाल चतुर्वेदी

(b) विष्णु प्रभाकर – हरिऔध

(c) दिनकर – बच्चन

(d) विष्णु प्रभाकर – दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(d)

विष्णु प्रभाकर और रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अर्द्धनारीश्वर नाम से रचना की है।

114. धर्म नैतिकता और विज्ञान के लेखक हैं–

(a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद

(c) रामधारी सिंह दिनकर (d) मुक्तिबोध

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

धर्म नैतिकता और विज्ञान (1969) के लेखक रामधारी सिंह दिनकर हैं। इनके अन्य गद्यकाव्य रचनाएँ इस प्रकार हैं-मिट्टी की ओर (1946), चित्तौड़ का साका (1948), रेती को फूल (1954), हमारी सांस्कृतिक एकता (1955), भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955), उजलीआँग (1956), काव्य की भूमिका (1958), पन्त-प्रसाद और मैथिलीशरण (1958), वेणुवन (1958), वट-पीपल (1961), लोकदेव नेहरू (1965) एवं शुद्ध कविता की खोज (1966) आदि।

115. 'रूपांवरा' किसकी रचना है?

(a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध

(c) नेमिचन्द्र जैन (d) भारत भूषण अग्रवाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

'रूपांवरा' अज्ञेय का कविता संग्रह है। अज्ञेय के अन्य कविता संग्रह हैं– शरणार्थी (1948), हरी घास पर क्षण भर (1949), बावरा अहेरी (1954), इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969), सागर मुद्रा (1969), पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ (1973), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक पर छाया (1981) एवं ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'असाध्य वीणा' अज्ञेय की लम्बी कविता है।
- अज्ञेय ने तारसप्तक का सम्पादन किया।
- अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्य संग्रह के लिए सन् 1978 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

116. 'हरी घास पर क्षण भर' शीर्षक काव्य संकलन के रचयिता हैं–

(a) दिनकर (b) निराला

(c) अज्ञेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

117. 'असाध्य वीणा' कविता के रचनाकार का नाम है–

(a) धर्मवीर भारती (b) केदारनाथ अग्रवाल

(c) भवानी प्रसाद मिश्र (d) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

118. 'अज्ञेय' की 'असाध्य वीणा' किस प्रकार की काव्यकृति है?

(a) खण्डकाव्य (b) प्रबन्धकाव्य

(c) महाकाव्य (d) प्रलम्ब काव्य या लम्बी कविता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

119. 'अज्ञेय' की रचना है–

(a) कुरुक्षेत्र (b) हुंकार

(c) पवनदूत (d) हरी घास पर क्षण भर

T.G.T. परीक्षा, 2010, 2005

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

120. 'सागर मुद्रा' के लेखक हैं–

(a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय

(c) धर्मवीर भारती (d) गिरिजा कुमार माथुर

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

121. किस काव्य कृति पर अज्ञेय को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था?

(a) सागर मुद्रा (b) कितनी नावों में कितनी बार

(c) इत्यलम् (d) आँगन के पार द्वार

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

122. निम्नांकित में से कौन-सा काव्य संग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है?

(a) हरी घास पर क्षण भर (b) अरी ओ करुणा प्रभामय
(c) सीढ़ियों पर धूप (d) आँगन के पार द्वार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'सीढ़ियों पर धूप' काव्य संग्रह रघुवीर सहाय का है। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं—आत्मा के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गये हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था। शेष काव्य संग्रह 'अज्ञेय' के हैं।

123. इनमें से एक काव्य संग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है :

(a) आंगन के पार द्वार
(b) धरती
(c) ऐसा कोई घर आपने देखा है
(d) सदानीरा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

'धरती' काव्य संग्रह त्रिलोचन की है, शेष सभी 'अज्ञेय' के काव्य संग्रह हैं।

124. 'लोहे के दीवार के दोनों ओर' किसकी कृति है?

(a) अज्ञेय (b) सत्यदेव परिव्राजक
(c) यशपाल (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'लोहे के दीवार के दोनों ओर' एक यात्रा साहित्य है, जिसके लेखक यशपाल हैं। इसमें यशपाल ने यूरोपीय पूँजीवादी देशों तथा सोवियत रूस की जीवन-पद्धति का अध्ययन एक जिज्ञासु यात्री की हैसियत से किया है। इस वृत्तांत में 'वियना', 'मॉस्को' और 'लन्दन' इन तीन महानगरों का जीवन चित्र प्रमुख रूप से उभारा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'राहबीती' यात्रा वृत्तांत में यशपाल जी ने पूर्वी यूरोप की यात्रा का वर्णन किया है।
➲ हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतांत लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु से माना जाता है।
➲ सत्यदेव परिव्राजक की यात्रा वृत्तांत है—'मेरी कैलाश यात्रा'।

125. पूँजीपतियों की शोषक वृत्ति को उजागर करने वाले लेखक हैं—

(a) आचार्य चतुरसेन शास्त्री (b) जयशंकर प्रसाद
(c) यशपाल (d) पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

126. 'बकरी विलाप' किसकी काव्य कृति है?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रेमघन
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'बकरी विलाप' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य कृति है। होली डफ की, डरहना, रानी छद्म लीला, बसन्त होली, उर्दू का स्यापा, भारत मित्र, श्री पंचमी, कृष्ण चरित, नये जमाने की मुकरी आदि इनके प्रसिद्ध काव्य हैं।

127. 'वंशी और मादल' किसका गीत संग्रह है?

(a) रवीन्द्र भ्रमर (b) माहेश्वर तिवारी
(c) श्रीराम सिंह (d) ठाकुर प्रसाद सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'वंशी और मादल' गीत संग्रह ठाकुर प्रसाद सिंह की रचना है। ठाकुर प्रसाद सिंह का नाम नवगीत विधा के कवियों में प्रमुखता से लिया जाता है। कविता के क्षेत्र में 'महामानव' (प्रबन्ध-काव्य) 'वंशी और मादल' (गीत-संग्रह) विशेष चर्चित रहे। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- महामानव (1946), कुब्जा सुन्दरी (1963), हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार (1952) एवं पुराने घर नये लोग (1960)।

128. 'नाटक जारी है' किस विधा की रचना है?

(a) उपन्यास (b) नाटक
(c) निबन्ध (d) कविता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'नाटक जारी है' (1972) कविता विधा की रचना है। इसके रचनाकार लीलाधर जगूड़ी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं-शंखमुखी शिखरों पर (1964), इस यात्रा में (1974), रात अभी मौजूद है (1976), बची हुई पृथ्वी (1977), खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है, घबराए हुए शब्द (1981)। जगूड़ी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार पद्मश्री सम्मान तथा रघुवीर सहाय सम्मान से सम्मानित किया गया है।

129. 'बलदेव खटिक' किसकी कविता है?

(a) धूमिल की (b) लीलाधर जगूड़ी की
(c) बलदेव वंशी की (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

लीलाधर जगूड़ी की बलदेव खटिक एवं अन्तर्देशीय कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। धूमिल की कविता 'बीस साल बाद' देश की आजादी के बीस वर्ष बीतने पर लिखी गयी थी, लेकिन आज भी पुरानी नहीं लगती है। इनकी दूसरी कविता 'मोचीराम' बहुचर्चित कृति है।

130. 'प्रतिबद्ध कविता' के जनक हैं—

(a) श्याम परमार (b) अरुण कमल

(c) प्रभाकर माचवे (d) परमानन्द श्रीवास्तव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'प्रतिबद्ध कविता' के जनक परमानन्द श्रीवास्तव हैं। इनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं-

कविता संग्रह- उजली हँसी के छोर पर, अगली शताब्दी के बारे में, चौथा शब्द, एक अनायक वृत्तांत आदि।

कहानी संग्रह- रुका हुआ समय, नींद में मृत्यु, इस बार सपने में आदि।

131. 'जिंदगी मुस्काई' के रचनाकार हैं—

(a) बनारसीदास चतुर्वेदी (b) किशोरीदास वाजपेयी

(c) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'जिन्दगी मुस्काई' के रचनाकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। प्रभाकर जी हिन्दी के जाने-माने निबन्धकार हैं, जिन्होंने राजनीतिक और सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले अनेक निबन्ध लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं-'नयी पीढ़ी, नये विचार','माटी हो गयी सोना','आकाश के तारे-धरती के फूल', 'दीप जले', 'शंख बजे' एवं 'बाजे पायलिया के घुँघरू'।

132. 'बाजे पायलिया के घुँघरू' के लेखक हैं—

(a) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (b) कन्हैया लाल ओझा

(c) कन्हैया लाल मणिक लाल मुंशी (d) सोहन लाल द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

133. 'जगत सच्चाई सार' कविता के रचयिता हैं—

(a) नाथूराम शर्मा (b) देवीदत्त शुक्ल

(c) श्रीधर पाठक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जगत सच्चाई सार' कविता के रचयिता श्रीधर पाठक हैं। हिन्दी के अतिरिक्त इन्होंने अंग्रेजी, फारसी और संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने भारतोत्थान, भारत प्रशंसा आदि देशभक्ति पूर्ण कविताएँ भी लिखी हैं, तो दूसरी ओर 'जार्ज वन्दना' जैसी कविताओं में राजभक्ति का प्रदर्शन किया, परन्तु इनको सर्वाधिक सफलता प्रकृति चित्रण में प्राप्त हुई है।

134. 'कलिकौतुक' रूपक के लेखक हैं—

(a) प्रेमघन (b) प्रतापनारायण मिश्र

(c) बालकृष्ण भट्ट (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'कलिकौतुक' एक रूपक है, जिसके लेखक प्रतापनारायण मिश्र हैं। यह उनका एक नाट्य साहित्य है। हठी हमीर, संगीत शाकुन्तल (अभिज्ञान-शकुन्तलम् के आधार पर रचित गीतिरूपक), भारत दुर्दशा (रूपक), कवि प्रदेश (गीतिरूपक) इनके अन्य प्रमुख नाट्य साहित्य हैं। जुआरी-खुआरी (प्रहसन) तथा दूध का दूध और पानी का पानी इनकी अपूर्ण रचना है।

135. 'रवीन्द्र कविता कानन' के लेखक हैं—

(a) निराला (b) प्रसाद

(c) गुप्त (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'रवीन्द्र कविता कानन' के लेखक निराला हैं। यह उनकी एक आलोचनात्मक कृति है। इसमें उन्होंने रवीन्द्र के काव्य सौन्दर्य को पूर्णतः परखा है।

136. 'हृदय का मधुभार' काव्य रचना है-

(a) शुक्ल की (b) प्रसाद की

(c) पन्त की (d) निराला की

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'हृदय का मधुभार' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखी काव्य रचना है। इसमें प्रकृति का मनोहारी चित्रण हुआ है। इनकी अन्य प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—बुद्ध चरित (लाइट ऑफ एशिया के आधार पर ब्रजभाषा काव्य), मनोहर छटा इत्यादि।

137. 'रस-मीमांसा' नामक आलोचना पुस्तिका के लेखक हैं—

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. नामवर सिंह

(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. रामविलास शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'रस-मीमांसा' के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं— तुलसी, जायसी की ग्रन्थावलियाँ, भ्रमर गीतसार, हिन्दी साहित्य का इतिहास और चिन्तामणि इत्यादि।

समसामयिक घटना चक्र

138. निम्नलिखित में से किस आलोचना-ग्रन्थ के लेखक नाम सही नहीं है?

(a) रस-मीमांसा : हजारीप्रसाद द्विवेदी

(b) कबीर मीमांसा : रामचन्द्र तिवारी

(c) तुलसी काव्य-मीमांसा : उदयभानु सिंह

(d) निराला की साहित्य-साधना भाग-1,2 : रामविलास शर्मा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

साहित्य के प्रमुख सैद्धान्तिक चिन्तक आचार्य शुक्ल जी द्वारा सन् 1939 में 'रस-मीमांसा' लिखी गई और 1949 ई. में प्रकाशित हुई।

139. समीक्षात्मक कृति : 'आलोचना का पक्ष' के लेखक हैं—

(a) डॉ. रमेशकुंतल मेघ (b) डॉ. धर्मवीर भारती

(c) रमेशचन्द्र शाह (d) नन्दकिशोर आचार्य

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

समीक्षात्मक कृति : 'आलोचना का पक्ष' के लेखक रमेशचन्द्र शाह हैं। पद्मश्री रमेशचन्द्र शाह ने हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। इनकी अन्य रचनाएँ निम्न हैं-

उपन्यास-गोबर गणेश, किस्सा गुलाम, पूर्वापर, आखिरी दिन आदि।

कहानी संग्रह-जंगल में आग, मुहल्ले का रावण, मानपत्र, थिएटर, आदि।

140. इनमें कौन-सा समूह आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचनाओं को दर्शाता है?

(a) कल्पवृक्ष, पृथ्वीपुत्र, भारत की एकता, मातृभूमि

(b) हिन्दी साहित्य का इतिहास, चिन्तामणि, रस-मीमांसा, त्रिवेणी

(c) आकाश के तारे, धरती के फूल, भूले-बिसरे चेहरे, जिन्दगी मुस्काई

(d) सदाचार का ताबीज, रानी नागमती की कहानी, भोलाराम का जीव, जैसे उनके दिन फिरे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य का इतिहास, चिन्तामणि, रस-मीमांसा, त्रिवेणी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचनाओं को दर्शाता है।

141. 'वोल्गा से गंगा' किसकी रचना है?

(a) श्यामसुन्दर दास की (b) सरदार पूर्णसिंह की

(c) राहुल सांकृत्यायन की (d) डॉ. नगेन्द्र की

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'वोल्गा से गंगा' राहुल सांकृत्यायन की रचना है। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—कनैला की कथा, सतमी के बच्चे, बहुरंगी, मधुपुरी (कहानी संग्रह) जय यौधेय, दिवोदास, सिंह सेनापति, विस्मृत यात्री, मधुर स्वप्न और सप्तसिन्धु (उपन्यास) इत्यादि।

142. 'स्त्री-विमर्श' पर आधारित 'औरत की बोली' कृति की रचनाकार हैं-

(a) अनीता भारती (b) गीताश्री

(c) महुआ मांझी (d) कावेरी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

स्त्री-विमर्श पर आधारित 'औरत की बोली' कृति की रचनाकार सुप्रतिष्ठित पत्रकार गीताश्री हैं। यह पुस्तक किसी भी मामले में शोध पुस्तक से कम नहीं है। यद्यपि लेखिका ने इस पुस्तक को शोध तो नहीं मगर शोध जैसा ही कुछ मानती हैं। हिन्दी में वर्णित विषय पर यह पुस्तक देश-विदेश में फैले देह व्यापार का एक विहंगम सर्वेक्षण है। 'औरत की बोली' के माध्यम से लेखिका ने देश के भौगोलिक सीमाओं से परे, जाल की तरह स्त्रियों को अपनी जद में लिए हुए देह व्यापार की यह व्यवस्था अलग-अलग भावों की एक अत्यन्त दुरूह, सुनिश्चित मगर निर्णायक सर्वेक्षण का दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

143. 'वह सफर था कि मुकाम था' - कृति की लेखिका हैं :

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग

(c) ऊषा प्रियंवदा (d) प्रभा खेतान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'वह सफर था कि मुकाम था' की लेखिका मैत्रेयी पुष्पा हैं।

144. शृंखला की कड़ियाँ' की मुख्य वस्तु है-

(a) स्वाधीनता-आन्दोलन (b) दलित -विमर्श

(c) आदिवासी-विमर्श (d) स्त्री-विमर्श

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'शृंखला की कड़ियाँ' महादेवी वर्मा के समस्या मूलक निबन्धों का संग्रह है। स्त्री-विमर्श इनमें प्रमुख है। डॉ. हृदयनारायण उपाध्याय के शब्दों में ''आज स्त्री-विमर्श की चर्चा हर ओर सुनाई पड़ रही है। महादेवी वर्मा ने इसके लिए पृष्ठभूमि बहुत पहले तैयार कर दी थी। सन् 1942 में प्रकाशित उनकी कृति 'शृंखला की कड़ियाँ' सही अर्थों में स्त्री-विमर्श की प्रस्तावना है, जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में नारी की दशा ,दिशा एवं संघर्षों पर महादेवी ने अपनी लेखनी चलायी है।''

145. हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक हैं—

(a) वियोगी हरि (b) सूर्यकान्त शास्त्री

(c) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

T.G.T. परीक्षा, 2010, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–विश्व साहित्य, बिखरे पन्ने, तुम्हारे लिए, कुछ और कुछ, यात्री, हिन्दी कथा साहित्य और कथानक इत्यादि। हम-मेरी अपनी कथा, मेरा देश, वे दिन, मेरे प्रिय निबन्ध, समस्या और समाधान, नवरात्र, जिन्हें नहीं भूलूंगा, हिन्दी साहित्य एक ऐतिहासिक समीक्षा इनके प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सन् 1949 में वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया।
- ये मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचित हुए।
- इन्होंने 1920 से 1927 ई. तक 'सरस्वती' का सम्पादन किया।

146. 'हिन्दी साहित्य विमर्श' के लेखक हैं-

(a) बालमुकुन्द गुप्त (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (d) श्यामसुन्दर दास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

147. 'हिन्दी साहित्य की इतिहास भूमिका' साहित्येतिहास ग्रन्थ इनमें से किसके द्वारा लिखा गया है?

(a) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
(d) डॉ. मोहन अवस्थी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(*)

'हिन्दी साहित्य की इतिहास भूमिका' नामक साहित्येतिहास ग्रन्थ किसी इतिहासकार ने नहीं लिखा है। हिन्दी साहित्येतिहास की परम्परा में सर्वोच्च स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) को प्राप्त हुआ, जो मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था तथा जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखी गई। तदन्तर उनकी इतिहास सम्बन्धी कुछ और रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं- 'हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' आदि।

148. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका में किस शीर्षक से प्रकाशित हुआ था?

(a) हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका
(b) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(c) हिन्दी साहित्य का विकास
(d) हिन्दी साहित्य का सागर

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया, जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया। इसके आरंभ में ही आचार्य शुक्ल ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए उद्घोषित किया, ''जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।'' इससे स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास के प्रति एक निश्चित व सुस्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया।

149. 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' के लेखक हैं-

(a) श्री ब्रज रत्नदास (b) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
(c) डॉ. श्रीकृष्ण लाल (d) डॉ. दयानन्द श्रीवास्तव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास', 'साहित्य सन्देश' में प्रकाशित लेख तथा 'हिन्दी साहित्य समस्याएँ और समाधान' नामक पुस्तक में पर्याप्त तर्कों और प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में, जिसे आदिकाल कहते हैं, उसका कोई अस्तित्व नहीं है। स्वभावतः हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत भक्ति-साहित्य को ही आदिकालीन स्वीकारने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

150. समीक्षा के क्षेत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी का आगमन कब हुआ?

(a) 1920 (b) 1930
(c) 1940 (d) 1950

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

हजारी प्रसाद द्विवेदी की समीक्षा के क्षेत्र में प्रवेश सन् 1930 के आस-पास हुआ। उनकी प्रथम प्रकाशित कृति 'सूर साहित्य' है, जो 1934 ई. में प्रकाशित हुई।

151. 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप' के लेखक हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) नामवर सिंह (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'मध्यकालीन बोध का स्वरूप' के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—सूर-साहित्य, साहित्य सहचर, कालिदास की लालित्य योजना, हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य पर विचार, साहित्य का मर्म, लालित्य मीमांसा इत्यादि।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1957 में इन्हें पद्म विभूषण पुरस्कार प्रदान किया गया।
- वर्ष 1973 में साहित्य अकादमी अवॉर्ड, निबन्ध संग्रह 'आलोक' के लिए दिया गया।
- उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा मानद उपाधि दी गयी।

152. 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' हिन्दी का एक इतिहास ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचनाकार का नाम है—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नलिन विलोचन शर्मा
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामविलास शर्मा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

153. निम्न में से कौन-सी कृति आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की नहीं है?

(a) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
(b) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(c) हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास
(d) हिन्दी साहित्य का आदिकाल

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृति नहीं, बल्कि रामकुमार वर्मा की कृति है। शेष कृतियाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी की हैं।

154. 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लेखक कौन हैं?

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राजकुमार वर्मा (d) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास लेखन के लगभग एक दशाब्दी बाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस क्षेत्र में अवतरित हुए। उनकी 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' क्रम और पद्धति की दृष्टि से इतिहास के रूप में प्रस्तुत नहीं है, किन्तु उसमें प्रस्तुत विभिन्न स्वतन्त्र लेखों में कुछ ऐसे तथ्यों और निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है, जो हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के लिए नई दृष्टि नई सामग्री और नई व्याख्या प्रदान करते हैं।

155. 'प्रयाग रामागमन' के लेखक हैं—

(a) बालकृष्ण भट्ट (b) प्रतापनारायण मिश्र
(c) प्रेमघन (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'प्रयाग रामागमन' के लेखक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—जीर्ण जनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा बिन्दु, भारत सौभाग्य, संगीत सुधा, सरोवर, भारत भाग्योदय काव्य आदि।

156. 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' के लेखक हैं—

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) श्यामसुन्दर दास
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी के उत्थान में काफी कार्य किए, इनके सम्बन्ध में मैथिलीशरण गुप्त की यह उक्ति है—

हिन्दी के हुए जो विगत वर्ष पचास।
नाम उनका एक ही है श्यामसुन्दर दास।।

इनकी कृतियों को निम्न वर्गों में रखा जा सकता है—

(क) मौलिक रचनाएँ—हिन्दी कोविद रत्नमाला भाग-1 और 2 ,साहित्यालोचन भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा का विकास, गद्य कुसुमावली, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हिन्दी भाषा और साहित्य, गोस्वामी तुलसीदास, रूपक रहस्य, भाषा रहस्य भाग-1, हिन्दी गद्य के निर्माता भाग-1 और 2 तथा मेरी आत्म कहानी।

(ख) सम्पादित ग्रन्थ—चन्द्रावली अथवा नासिकेतोपाख्यान, छत्रप्रकाश, रामचरितमानस, पृथ्वीराज रासो, हिन्दी वैज्ञानिक कोष, वनिता-विनोद, इन्द्रावती, शकुन्तला नाटक, हम्मीर रासो, हिन्दी शब्दसागर, मेघदूत, दीनदयालगिरि ग्रन्थावली, परमाल रासो, सरस्वती, अशोक की धर्मलिपियाँ, रानी केतकी की कहानी, भारतेन्दु नाटकावली, कबीर ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, रत्नाकर, सतसई सप्तक, त्रिधारा, मनोरंजन पुस्तकमाला।

(ग) संकलित ग्रन्थ एवं पाठ्य पुस्तकें— मानस सुक्तावली, संक्षिप्त रामायण, हिन्दी निबन्धमाला, भाषासारसंग्रह, भाषा पत्रबोध, प्राचीन लेख मणिमाला, आलोक चित्रण, हिन्दी संग्रह, सरल संग्रह, नूतन संग्रह, हिन्दी कुसुमावली गद्य रत्नावली, साहित्य प्रदीप, हिन्दी की पहली पुस्तक आदि।

157. 'हिन्दी शब्दसागर' सम्पादित ग्रन्थ है—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) श्यामसुन्दर दास
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

158. 'साहित्यालोचन' कृति के रचनाकार हैं—

(a) श्यामसुन्दर दास (b) लक्ष्मीकान्त वर्मा
(c) रामकुमार वर्मा (d) अशोक वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

159. 'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक हैं—

(a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) नलिनविलोचन शर्मा
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हैं। निबन्धकार के रूप में चन्द्रधर जी बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। इन्होंने सौ से अधिक निबन्ध लिखे हैं। सन् 1903 में जयपुर से जैन वैद्य के माध्यम से 'समालोचक पत्र' प्रकाशित होना शुरू हुआ था, जिसके वे सम्पादक रहे। इनके निबन्धों के अधिकतर विषय इतिहास, दर्शन, धर्म, मनोविज्ञान और पुरातत्व सम्बन्धी ही हैं। 'शैशुनाक की मूर्तियाँ, देवकुल, पुरानी हिन्दी, संगीत, कच्छुआ धर्म, आँख, मोरेसि मोहिं कुठाऊं जैसे निबन्धों पर उनकी विद्वता की अमिट छाप मौजूद है।

160. 'पुरानी हिन्दी' ग्रन्थ के लेखक हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(c) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (d) श्यामसुन्दर दास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

161. निम्नांकित में से विद्यानिवास मिश्र की कृति नहीं है—

(a) तुम चन्दन हम पानी (b) रस आखेटक
(c) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (d) शिरीष की याद आयी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'रस आखेटक' निबन्ध कुबेरनाथ राय का है। शेष रचनाएँ विद्यानिवास मिश्र की हैं।

162. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'सौष्ठववादी आलोचक' किसने कहा?

(a) विजय देव नारायण साही (b) डॉ. नामवर सिंह
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. भगवत स्वरूप मिश्रा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र ने आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'सौष्ठववादी आलोचक' कहा है। डॉ. शिवकुमार शर्मा ने आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को 'समन्वयवादी एवं सौन्दर्यवादी आलोचक' कहा है।

163. हिन्दी आलोचना से सम्बन्धित पहली पुस्तक है-

(a) नैषध चरित चर्चा
(b) विक्रमांक देव चरित चर्चा
(c) देव बड़े कि बिहारी
(d) हिन्दी कालिदास आलोचना

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दी आलोचना से सम्बन्धित पहली पुस्तक 'हिन्दी कालिदास की आलोचना' है जिसके लेखक पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी थे, जो द्वितीय उत्थान (1893-1918) के आरम्भ में निकली।

164. यदि मैं कामायनी लिखता..........इस समीक्षात्मक ग्रन्थ के लेखक हैं—

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) डॉ. नगेन्द्र
(d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'यदि मैं कामायनी लिखता' समीक्षात्मक ग्रन्थ सुमित्रानन्दन पन्त ने लिखा है, जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि ''कामायनी इस युग का एक अपूर्व, अद्वितीय महान काव्य कृति है, इसमें मुझे सन्देह नहीं। वह हमारे युग-प्रवर्तक प्रसाद के शुभ्रशान्त सौन्दर्य का पवित्र यश-काव्य है, जिसे हिन्दी साहित्य में और सम्भवतः विश्व साहित्य में भी जरा-मरण का भय नहीं है। यदि मैं कामायनी लिखने की असम्भव बात सोचता भी, तो मैं उसे इतना भी सफल तथा पूर्ण नहीं बना सकता, जितना कि उसे महान क्षमता तथा प्रतिभाशाली प्रसाद बना गए हैं।''

165. 'महाकवि सूरदास' किसकी आलोच्य कृति है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी (d) डॉ. नगेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'महाकवि सूरदास' आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की आलोच्य कृति है। सूरदास की आलोचना में वाजपेयी जी लिखते हैं-''स्थिति-विशेष का पूरा दिग्दर्शन भी करें, घटनाक्रम का आभास भी दें और साथ ही समुन्नत कोटि के रूप-सौन्दर्य और भाव-सौन्दर्य की परिपूर्ण झलक भी दिखते जायँ, यह विशेषता हमें कवि सूरदास में मिलती है।'' इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी की भूमिका, आधुनिक साहित्य की भूमिका, नया साहित्य : नये प्रश्न, समाज और साहित्य, साहित्य और सामाजिक जीवन, नयी कविता, रस सिद्धान्त साहित्य का आधुनिक युग, आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा, रीति और शैली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- नन्ददुलारे वाजपेयी ने 'सूर', 'प्रसाद', 'निराला' और 'पन्त' आदि की व्यावहारिक समीक्षाएँ प्रस्तुत की।
- वाजपेयी जी की मान्यताएँ 'प्रसाद' से प्रभावित हैं। प्रसाद जी रसवादी (आनन्दवादी) कलाकार थे, तो वाजपेयी जी रसवादी समीक्षक।

166. 'पन्त जी और पल्लव' शीर्षक से इनमें से किस साहित्यकार ने प्रसिद्ध समीक्षा लिखी है?

(a) रामविलास शर्मा
(b) नामवर सिंह
(c) विजयदेव नारायण साही
(d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'पन्त जी और पल्लव' शीर्षक से सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने प्रसिद्ध समीक्षा लिखी है। इसमें निराला जी ने पन्त की कविताओं के उदाहरण देकर उनकी त्रुटियों को निर्दिष्ट किया है।

167. 'जायसी' नामक समीक्षा कृति के लेखक हैं—

(a) शिवसहाय पाठक (b) विजयदेव नारायण साही
(c) वासुदेवशरण अग्रवाल (d) रामचन्द्र शुक्ल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'जायसी' नामक समीक्षा कृति के लेखक विजयदेव नारायण साही हैं। ये 'तीसरे सप्तक' के चर्चित प्रयोगवादी कवि हैं। मछलीघर, साखी, संवाद तुमसे, आवाज हमारी जाएगी इनके कविता संग्रह है। ये 'आलोचना' एवं 'नई कविता' पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल में शामिल थे।

168. 'उर्मिला' किसका प्रबन्ध काव्य है?

(a) नरेन्द्र शर्मा (b) रामेश्वर शुक्ल अंचल
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

मैथिलीशरण गुप्त तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' दोनों ने 'उर्मिला' शीर्षक प्रबन्ध काव्य लिखकर उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र को विशेष रूप से उभारा। 'नवीन' के अन्य काव्य ग्रन्थ हैं—अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि तथा हम विषपायी जनम के आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'प्रभा' और 'प्रताप' का भी सम्पादन किया था।
- कुमकुम (1939 ई.) इनका पहला कविता-संग्रह है।

169. हम विषपायी जनम के' इस काव्यकृति के रचनाकार हैं—

(a) सुभद्रा कुमारी चौहान (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) गोपाल सिंह नेपाली

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

170. 'नूरजहां प्रबन्धकाव्य के रचयिता हैं :

(a) कुतुबन
(b) सियारामशरण गुप्त
(c) गुरुभक्त सिंह
(d) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'नूरजहां' और 'विक्रमादित्य' गुरुभक्त सिंह का प्रबन्धकाव्य है, जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रची गई है।

171. कौन-सी कृति मोहन राकेश की नहीं है?

(a) आषाढ़ का एक दिन (b) कन्यादान
(c) लहरों के राजहंस (d) आधे-अधूरे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कन्यादान' मोहन राकेश की कृति नहीं है, बल्कि सरदार पूर्णसिंह की है।

172. डॉ. सम्पूर्णानन्द की रचना का नाम है—

(a) हिन्दी भाषा की उत्पत्ति (b) आचरण की सभ्यता
(c) गेहूँ बनाम गुलाब (d) भाषा की शक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'भाषा की शक्ति' के रचनाकार डॉ. सम्पूर्णानन्द हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—जीवन और दर्शन, चिद्विलास, ज्योतिर्विनोद, अन्तरिक्ष यात्रा, समाजवाद, अन्तरराष्ट्रीय विधान इत्यादि। देशबन्धु चितरंजनदास तथा महात्मा गाँधी की जीवनी भी इन्होंने लिखी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. सम्पूर्णानन्द को उनकी कृति 'समाजवाद' पर 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक प्राप्त हुआ।
- उन्हें सर्वोच्च उपाधि 'साहित्य-वाचस्पति' भी प्राप्त हुई।
- उन्होंने 'मर्यादा' (मासिक) और 'टुडे' (अंग्रेजी दैनिक) का सम्पादन किया।

173. 'ध्रुवचरित' के रचयिता हैं—

(a) रसखान (b) स्वामी हरिदास
(c) नरोत्तमदास (d) भिखारीदास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

नरोत्तमदास भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी शाखा के रचनाकार माने जाते हैं। इनके उपलब्ध ग्रन्थों में एकमात्र 'सुदामाचरित' ही उपलब्ध है। 'ध्रुवचरित' आंशिक रूप से उपलब्ध है।

174. दलित साहित्य का चर्चित लेखक हैं—

(a) निराला (b) कुँअर बेचैन
(c) ओम प्रकाश वाल्मीकि (d) नगेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

दलित साहित्य के चर्चित लेखक ओम प्रकाश वाल्मीकि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (आलोचना), सदियों का संताप, बस ! बहुत हो चुका (कविता संग्रह), सलाम (कहानी संग्रह) तथा जूठन (आत्मकथा) आदि।

175. 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' पुस्तक किसने लिखी है?

(a) ओम प्रकाश वाल्मीकि (b) कँवल भारती
(c) मोहनदास नैमिशराय (d) श्यौराज सिंह 'बेचैन'

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

176. 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' के लेखक हैं—

(a) श्यौराज सिंह 'बेचैन' (b) शरण कुमार लिम्बाले
(c) सूरजपाल चौहान (d) मोहनदास नैमिशराय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' शरण कुमार लिम्बाले की समीक्षा है। इसी शीर्षक के नाम से ओम प्रकाश वाल्मीकि ने आलोचना ग्रन्थ लिखा है। शरण कुमार लिम्बाले की कृतियों में 'अक्करमाशी' (आत्मकथा), 'छूआछूत' 'देवता आदमी', दलित ब्राह्मण' (कहानी संग्रह), 'नरवानर', 'हिन्दू', 'बहुजन' (उपन्यास) शामिल हैं।

177. किस रचनाकार ने पौराणिक आख्यानों को अपने उपन्यासों में सर्वथा नए और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया है?

(a) नरेन्द्र कोहली (b) जयशंकर प्रसाद
(c) वृंदावनलाल वर्मा (d) मोहन राकेश

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

नरेन्द्र कोहली ने 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' नामक उपन्यासों के माध्यम से रामकथा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है। नरेन्द्र कोहली का उपन्यास 'अभिज्ञान' कृष्ण सुदामा आख्यान के आधार पर कर्म सिद्धान्त की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

178. 'कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी' के रचनाकार हैं—

(a) धर्मवीर (b) मुद्राराक्षस
(c) धूमिल (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

डॉ. धर्मवीर 'दलित धर्म' के समर्थक हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी' में लिखा है कि ''ब्राह्मण अपनी बात ब्राह्मण धर्म के रूप में कहता है। क्षत्रियों ने अपनी बात बौद्ध धर्म के रूप में रखी है। इसमें कुछ भी बुराई नहीं है। बुराई तब पैदा होती है जब दलित को अपनी बात दलित धर्म के रूप में नहीं रखने दी जाती।'' डॉ. धर्मवीर का ही यह 'बौद्धिक व्यायाम' है कि कबीर ने जो बातें नहीं कही, उन्हें मुख से बुलवा दिया गया। वे लिखते हैं ''दलित धर्म की पृथकता के लिए यही जरूरी नहीं है कि सिद्ध किया जाय कि ब्राह्मण धर्म बुरा है। ब्राह्मण धर्म अच्छा या बुरा है, इससे कबीर के धर्म को कोई सरोकार नहीं है।''

179. 'निशा-निमन्त्रण' के रचनाकार हैं—

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) हरिवंशराय बच्चन
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) वीरेन्द्र मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'निशा-निमन्त्रण' के रचनाकार हरिवंशराय बच्चन हैं। इनकी ख्याति 'मधुशाला' की रचना के साथ हुई। इनकी कविताओं का प्रथम संग्रह 'तेरा हार' है।

180. 'अमन का राग' के लेखक हैं—

(a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) मुक्तिबोध
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'अमन का राग' के लेखक शमशेर बहादुर सिंह हैं। यह एक कालजयी कविता है। इसका प्रकाशन 1952 ई. में हुआ।

181. 'मौर्य विजय' किसकी रचना है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) सियारामशरण गुप्त
(c) श्यामनारायण पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'मौर्य विजय' सियारामशरण गुप्त द्वारा सन् 1914 में लिखी गयी प्रथम रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—अनाथ, आर्द्रा, विषाद, दूर्वादल, बापू, आत्मोत्सर्ग, मृणायी, नकुल, सुनन्दा और गोपिका इत्यादि।

182. 'हल्दी घाटी' वीर रस प्रधान प्रबन्ध काव्य है—

(a) श्यामनारायण पाण्डेय (b) नवीन
(c) सोहन लाल द्विवेदी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'हल्दी घाटी' 1937-39 ई. में श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा लिखा गया वीर रस प्रधान प्रबन्ध काव्य है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—जौहर (1939-44), तुमुल (1948), रूपान्तर (1948), आरती (1945-46) और जय हनुमान (1956)।

183. 'भविसयत्त कहा' के रचनाकार हैं—

(a) पुष्पदन्त (b) स्वयंभू
(c) धनपाल (d) सरहपा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'भविसयत्त कहा' (भविष्ययत्त कथा) धनपाल की रचना है। इसकी रचना दसवीं शती में की गयी है। धनपाल अपभ्रंश के प्रमुख कवि हैं। इसमें एक वणिक की कथा है।

184. 'भविसयत्त कहा' किसकी रचना है?

(a) रामसिंह (b) देवसेन
(c) धनपाल (d) पुष्पदन्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

185. अब्दुल रहमान कृत 'सन्देशरासक' है—

(a) महाकाव्य (b) खण्डकाव्य
(c) प्रबन्ध काव्य (d) मुक्तक काव्य

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

अपभ्रंश साहित्य के समर्थ कवियों में अब्दुल रहमान का नाम आता है, जिसने 'सन्देशरासक' लिखकर हिन्दी काव्य के लिए एक स्थायी प्रेरणा का काम किया। 'सन्देशरासक' एक खण्डकाव्य है, जिसमें विक्रमपुर की वियोगिन के विरह की कथा है। कवि ने उसका नख-शिख वर्णन तथा पति के लिए सन्देश अत्यन्त सहज भावभूमि पर चित्रित करके काव्य को मार्मिक बना दिया है।

186. 'संदेशरासक'..........की श्रेणी में आता है।

(a) खण्डकाव्य (b) महाकाव्य
(c) चम्पूकाव्य (d) गीतिकाव्य

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

187. 'सन्देशरासक' के रचयिता हैं—

(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुल रहमान
(c) लक्ष्मीधर (d) हेमचन्द

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

188. 'बाँधो न नाव इस ठाँव' के लेखक हैं—

(a) उपेन्द्रनाथ अश्क (b) निराला
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'बाँधो न नाव इस ठाँव' एक उपन्यास है। इसके लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं—सितारों के खेल, गिरती दीवारें, गर्मराख, बड़ी-बड़ी आँखें, पत्थर अल पत्थर, शहर में घूमता आईना, एक नन्हीं किन्दील आदि।

189. 'साखी' किस कवि का काव्य-संग्रह है?

(a) केदारनाथ सिंह (b) कुँवर नारायण
(c) मलयज (d) विजयदेव नारायण साही

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'साखी' विजयदेव नारायण साही का काव्य संग्रह है। 'जमीन पक रही', 'यहाँ से देखो' केदारनाथ सिंह का काव्य संग्रह है। 'आमने-सामने' कुँवर नारायण का तथा 'जख्म पर धूल' मलयज का काव्य संग्रह है।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विजयदेव नारायण साही का पृथक काव्य संग्रह 'मछलीघर' नयी कविता की दुरूह परम्परा से प्रभावित जान पड़ता है।
- केदारनाथ सिंह के 'बाघ' (1986), अकाल में सारस (1988), उत्तर कबीर (1995), टालस्टाय और साइकिल (2005) कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं।
- कुँवर नारायण का 'कोई दूसरा नहीं' (1993) कविता संग्रह है।

190. **'मछलीघर' नामक काव्य-संग्रह के सम्पादक हैं-**

(a) दूधनाथ सिंह (b) विजयदेव नारायण साही
(c) लक्ष्मीकान्त वर्मा (d) धर्मवीर भारती

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

191. **चिन्तामणि द्वारा रचित 'प्रबन्ध काव्य' है—**

(a) कृष्ण चरित्र (b) काव्य प्रकाश
(c) शृंगार मंजरी (d) रसविलास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

चिन्तामणि द्वारा विरचित 'कृष्ण चरित' प्रबन्ध काव्य है। इसके अतिरिक्त दो प्रबन्ध काव्य हैं—रामायण और रामाश्वमेध।

192. **लक्षण ग्रन्थ 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिता हैं—**

(a) आचार्य केशवदास (b) आचार्य चिन्तामणि
(c) आचार्य श्रीपति मिश्र (d) आचार्य भिखारीदास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'चिन्तामणि' को रीतिकाल के आरम्भकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। वस्तुत: रीतिकाल की जो अविछिन्न धारा बही उसकी शुरुआत चिन्तामणि से ही होती है। चिन्तामणि के द्वारा लिखे गये कुल 4 ग्रंन्थों का उल्लेख मिलता है-कविकुल कल्पतरु, काव्य-प्रकाश, रस मंजरी, पिंगल और रामायण।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- चिन्तामणि कृत 'कविकुल कल्पतरु' में आठ प्रकरण हैं। जिनमें काव्य वेद, काव्य लक्षण, काव्य, स्वरूप, गुण, अलंकार, दोष, ध्वनि, आदि पर विचार किया गया है।
- 'कविकुल कल्पतरु' में लक्षण प्राय: दोहा-सोरठा छन्द में हैं और उदाहरण कवित्त सवैया में लक्षण निरूपण में चिन्तामणि ने प्राय: मम्मट का अनुसरण किया है।

193. **'सबसे बड़ा सिपहिया' के रचनाकार हैं—**

(a) वीरेन्द्र जैन (b) वीरेन्द्र कुमार
(c) मिथिलेश्वर (d) गोविन्द मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'सबसे बड़ा सिपहिया' के रचनाकार वीरेन्द्र जैन हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—मुक्तिदूत, सुखफरोश, हास्य कथा बत्तीसी इत्यादि। मुक्तिदूत, भारतीय ज्ञानपीठ के 'मूर्तिदेवी' पुरस्कार से सम्मानित कथा कृति है।

194. **सीता को प्रधानता देकर लिखा गया काव्य 'सीतायन' के रचयिता हैं—**

(a) नाभादास (b) पोलंकि राममूर्ति
(c) जानकी रसिक शरण (d) रामप्रिया शरण

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

शृंगार रस-प्रधान प्रबन्ध काव्यों में रामप्रिया शरण कृत 'सीतायन' परम प्रख्यात कृति है। यह प्रबन्ध 'रामचरितमानस' के ढंग पर सात काण्डों में सीता का चरित अंकित करता है। भाषा अवधी तथा छन्द दोहा-चौपाई है।

195. **'रामरक्षा स्त्रोत' रचना के लेखक हैं—**

(a) केशवदास (b) नाभादास
(c) ईश्वरदास (d) रामानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'रामरक्षा स्त्रोत' के लेखक रामानन्द हैं। रामानन्द, संस्कृत के विद्वान थे। 'वैष्णव मताब्द भास्कर' और 'रामार्जुन-पद्धति' इनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। रामानन्दी सम्प्रदाय को रामानुज सम्प्रदाय से पृथक सिद्ध करने के लिए 'ब्रह्मसूत्र' और 'गीता' पर इनके नाम से भाष्यों का प्रचार किया गया है।

196. **'उपदेशरसायन' के रचयिता कौन हैं?**

(a) जिनदत्त सूरि (b) जिनधर्म सूरि
(c) शालिभद्र सूरि (d) धनपाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

अपभ्रंश में चरितकाव्यों की परम्परा से भिन्न एक रासकाव्य परम्परा भी आरम्भ हुई थी। बारहवीं शताब्दी के 'जिनदत्त सूरि' का 'उपदेशरसायन रास' इस दृष्टि से उल्लेख्य है। 80 पद्यों का नृत्य गीतकाव्य रासलीला के उस मूल रूप की ओर ले जाता है, जिसमें हिन्दी के आदिकालीन रासोकाव्य लिखे गये होंगे और बाद में विकसित होकर अगेय बन गये।

197. **'संशय की एक रात' के लेखक हैं—**

(a) मुक्तिबोध (b) श्रीकांत वर्मा
(c) धूमिल (d) नरेश मेहता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'संशय की एक रात' के लेखक नरेश मेहता हैं। यह नाटक शैली में लिखी गयी लम्बी कविता है। इनके अन्य प्रमुख काव्य-संग्रह हैं—वनपाखी सुनो, बोलने दो चीड़, मेरा समर्पित एकान्त आदि।

198. 'आकाश गंगा' काव्य-संग्रह है—

(a) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (b) भगवती चरण वर्मा

(c) रामकुमार वर्मा (d) उदय शंकर भट्ट

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'आकाश गंगा' काव्य-संग्रह रामकुमार वर्मा का है। इनके अन्य प्रमुख कविता संग्रह हैं—अंजलि, अभिशाप, रूपराशि, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, एकलव्य, हिमहास, निशीथ, जौहर तथा चित्तौड़ की चिन्ता इत्यादि।

199. निम्नलिखित में से किस कृति के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं?

(a) अपनी केवल धार (b) खूँटियों पर टंगे लोग

(c) साये में धूप (d) युगधारा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'साये में धूप' (गजल-संग्रह) काव्य-कृति के रचनाकार दुष्यन्त कुमार हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसन्त (सभी कविता-संग्रह), एक कण्ठ, विषपायी (काव्य-नाटिका) इत्यादि।

200. 'साये में धूप' काव्य-कृति के रचयिता हैं—

(a) रघुवीर सहाय (b) दुष्यन्त कुमार

(c) नरेश मेहता (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

201. निम्नलिखित में से कौन सी काव्य-कृति 'रामकथा' पर आधारित नहीं है?

(a) शम्बूक (b) अग्निलीक

(c) संशय की एक रात (d) महाप्रस्थान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

नरेश मेहता कृति 'महाप्रस्थान' का कथानक 'महाभारत' पर आधारित है। यह प्रबन्ध काव्य महाभारत कथा में 'स्वर्गारोहण' की घटना को समकालीन यथार्थ-बोध से सम्बद्ध कर नयी अर्थवत्ता प्रदान की है। 'महाप्रस्थान' का प्रकाशन 1975 ई. में हुआ, किन्तु युग चित्रण की दृष्टि से यह चिरंतन है। नाट्य-प्रबन्ध 'महाप्रस्थान' का सम्पूर्ण कथ्य तीन पर्वों में सुगुम्फित है-यात्रा पर्व, स्वाहा पर्व तथा स्वर्ग पर्व। शेष कृतियाँ 'रामकथा' पर आधारित हैं।

202. निम्नलिखित काव्यकृतियों में से एक रामकथा पर आधारित नहीं है—

(a) शम्बूक (b) अग्निलीक

(c) महाप्रस्थान (d) संशय की एक रात

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

203. 'दिनकर' की प्रसिद्ध काव्यकृति' रश्मिरथी' की कथावस्तु कहाँ से ली गई है?

(a) पूर्णतया कल्पित है (b) भागवत पुराण

(c) रामायण (d) महाभारत

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'रश्मिरथी' काव्य के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। रश्मिरथी का अर्थ होता है वह व्यक्ति, जिसका रथ, रश्मि अर्थात सूर्य की किरणों का हो। इस काव्य में रश्मिरथी नाम कर्ण का है, क्योंकि उसका चरित्र सूर्य के समान प्रकाशमान है। कर्ण, महाभारत महाकाव्य का अत्यंत यशस्वी पात्र है।

204. 'अग्निलीक' काव्यनाटक (कृति) के रचनाकार हैं :

(a) लक्ष्मीनाराण लाल (b) सेठ गोविंददास

(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) नरेश मेहता

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

भारतभूषण अग्रवाल कृत 'अग्निलीक' एक काव्यनाटक है। इस कृति में रामकथा को मिथकीय आयाम प्रदान करके आधुनिक युग परिवेशानुसार चित्रित किया गया है। इस रचना में राम को सामन्तवादी प्रवृत्तियों के समर्थक और राज्य-लोभी के रूप वर्णित कर राम के चरित्र के अंतर्विरोधों की खोज की है। उन्होंने 'चारण' नामक पात्र की आदिवासी समूह के प्रतीक के रूप में नवीन सृष्टि और सीता परित्याग की घटना की मुक्त कंठ से निंदा की है।

205. शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित 'दो-आब' किस विधा की कृति है?

(a) कहानी (b) समीक्षा

(c) उपन्यास (d) काव्य

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित 'दो आब' गद्य काव्य का निबन्ध संग्रह है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1948 में हुआ। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार से हैं- प्लाट का मोर्चा कहानियाँ व स्केच (1952), शमशेर की डायरी, इतने पास अपने (1980), चुका भी हूँ नहीं मैं (1981), बात बोलेगी (1981) एवं कल तुझसे होड़ है मेरी (1988) आदि।

206. वह कौन-सा विकल्प है, जिसमें दिए गए सभी लेखकों ने कवि एवं नाटककार दोनों रूपों में प्रसिद्धि प्राप्त की है?

(a) मोहन राकेश, सुमित्रानन्द पन्त, लक्ष्मीनारायण लाल
(b) जयशंकर प्रसाद, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामकुमार वर्मा
(c) चिरंजीत, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त
(d) केदारनाथ अग्रवाल, श्रीधर पाठक, अज्ञेय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत लेखक कवि एवं नाटककार दोनों रूपों में प्रसिद्धि प्राप्त की है। विकल्प (d) में केवल कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले लोग हैं।

207. रेडियो नाटककार के रूप में कौन-सा लेखक अधिक प्रसिद्ध है?

(a) चिरंजीत (b) मोहन राकेश
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सेठ गोविन्ददास

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

वर्तमान में नाट्य सम्प्रेषण के तीन माध्यम हमारे सामने विद्यमान हैं। प्राचीन काल से चला आ रहा रंगमंच का माध्यम तो है ही। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई विज्ञान एवं टेक्नोलोजी की प्रगति से नाट्य-सम्प्रेषण के दो और माध्यम आविष्कृत हुए-माइक्रो फोन और कैमरा। माइक्रोफोन ने रेडियो-नाटक को जन्म दिया और कैमरा ने सिनेमाई नाटक को। सिनेमाई नाटक का ही आधुनिक रूप है टेलीविजन नाटक। चिरंजीत हिन्दी के पहले नाटककार हैं, जिन्होंने अपनी नाट्याभिव्यक्ति के लिए तीनों माध्यमों का बड़ी सफलता से उपयोग किया है। परन्तु इसके साथ ही यह भी निश्चित है कि उन्हें सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक ख्याति रेडियो-नाटककार के रूप में ही मिली, नाटक 'रतजगा' में उनके राष्ट्र प्रेम एवं काव्य गुण बेहतर दिखाई पड़ता है।

208. 'मंगलेश डबराल' की रचना है—

(a) जख्म पर धूल (b) पहाड़ पर लालटेन
(c) सुनो कारीगर (d) सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

मंगलेश डबराल की प्रमुख रचनाएँ हैं—पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है आदि।

209. 'कविता की तीसरी आँख' के रचनाकार हैं—

(a) शेरजंग गर्ग (b) मृदुला गर्ग
(c) प्रभाकर श्रोत्रिय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'कविता की तीसरी आँख' के रचनाकार प्रभाकर श्रोत्रिय प्रख्यात आलोचक, नाटककार, निबन्धकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—रचना एक यातना है, जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता, संवाद (नई कविता-आलोचना), कालयात्री है कविता, अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त, मेघदूत एक अंतयात्रा, श्री नरेश मेहता रचनावली आदि।

210. 'मैंने स्मृति के दीप जलाये' किसकी रचना है?

(a) राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) लक्ष्मी नारायण सुधांशु (d) रामनाथ सुमन

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'मैंने स्मृति के दीप जलाये' (1976) रामनाथ सुमन की रचना है। इनकी एक अन्य रचना 'छायावादयुगीन स्मृतियाँ (1975) हैं।

211. 'भाषाभूषण' के रचनाकार हैं—

(a) जसवन्त सिंह (b) भूषण
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

महाराज जसवन्त सिंह कृत 'भाषाभूषण' अलंकार विवेचन सम्बन्धी ग्रन्थ है, जिसमें 212 छन्द हैं। प्रारम्भ में 10 दोहों में भूमिका है, शेष 202 छन्दों में 116 अलंकारों का विवेचन है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ महाराज जसवन्त सिंह हिन्दी साहित्य के प्रधान आचार्यों में माने जाते हैं और इनका 'भाषाभूषण' ग्रन्थ अलंकारों पर बहुत प्रचलित पाठ्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को इन्होंने वास्तव में आचार्य के रूप में लिखा है, कवि के रूप में नहीं। उन्होंने अपना 'भाषाभूषण' बिल्कुल 'चन्द्रालोक' की छाया पर बनाया और उसी की संक्षिप्त प्रणाली का अनुसरण किया।

➲ भाषाभूषण के अतिरिक्त जो और ग्रन्थ इन्होंने लिखे हैं, वे तत्व ज्ञान सम्बन्धी हैं। जैसे—अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभव प्रकाश, आनन्द विलास, सिद्धान्तबोध, सिद्धान्तसार, प्रबोध चन्द्रोदय नाटक।

212. भाषाभूषण के रचयिता हैं—

(a) भूषण (b) देव
(c) कुलपति मिश्र (d) जसवन्त सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

213. इनमें कौन-सा ग्रन्थ 'चन्द्रालोक' की छाया है?

(a) काव्य विवेक (b) कविकुल कल्पतरू

(c) भाषाभूषण (d) काव्य प्रकाश

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

214. 'तुलसी : आधुनिक वातायन से' पुस्तक के लेखक हैं—

(a) रमेशकुन्तल मेघ (b) माताप्रसाद गुप्त

(c) अशोक वाजपेयी (d) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'तुलसी : आधुनिक वातायन से' पुस्तक के लेखक रमेशकुन्तल मेघ हैं। आधुनिक रचनावृत्त में 'तुलसी' को सबसे पहले बाबू शिवनन्दन सहाय ने देखा था। बाद में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने 'तुलसीदास' (1939) की रचना द्वारा तादात्म्यीकरण किया। रमेशकुन्तल मेघ की प्रमुख रचनाएँ हैं–मिथक और स्वप्न, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण, मध्ययुगीन रस दर्शन और समकालीन सौन्दर्य बोध, क्योंकि समय एक शब्द है, अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, वाग्मी हो लो ! मनखंजन किनके? आदि।

215. 'अरस्तू का काव्यशास्त्र' किसकी रचना है?

(a) बाबू गुलाब राय (b) डॉ. नामवर सिंह

(c) डॉ. नगेन्द्र (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'अरस्तू का काव्यशास्त्र' (1957) डॉ. नगेन्द्र द्वारा लिखा गया है। इनकी मौलिक तथा सम्पादित 50 पुस्तकें हैं–**मौलिक ग्रन्थों में-**सुमित्रानन्दन पन्त (1938), साकेत : एक अध्ययन (1939), आधुनिक हिन्दी नाटक (1940), विचार और विवेचन (1944), रीति काव्य की भूमिका (1949), देव और उनकी कविता (1949), विचार और अनुभूति (1949), भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका (1953), काव्य में उदात्त तत्व (1938), अनुसंधान और आलोचना (1961), कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ (1962), रस सिद्धान्त (1964), आलोचक की आस्था (1966), काव्य बिम्ब (1967), आस्था के चरण (1968), तन्त्रालोक से यन्त्रालोक तक (1968), नई समीक्षा : नए सन्दर्भ (1970), समस्या और समाधान (1971), अप्रवासी की यात्राएँ (1972), भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका।

सम्पादित ग्रन्थों में—हिन्दी ध्वन्यालोक (1952), कविभारती (1953), हिन्दी काव्यालंकार सूत्र (1934), रीति शृंगार (1954), भारतीय नाट्यशास्त्र (1955), भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा (1956), हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, भाग-6, भारतीय वाङ्मय (1958) तथा हिन्दी अभिनव भारती (1960)।

216. 'नई समीक्षा नए सन्दर्भ' किसकी आलोचना कृति है?

(a) नन्दकिशोर आचार्य (b) रमेशकुन्तल मेघ

(c) डॉ. नगेन्द्र (d) डॉ. रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

217. 'अप्रवासी की यात्राएँ' नामक कृति के रचनाकार कौन हैं?

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) अभिमन्यु अनत

(c) डॉ. धर्मवीर भारती (d) कन्हैयालाल नन्दन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

218. 'सुमित्रानन्दन पन्त' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं—

(a) डॉ. नामवर सिंह (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

219. 'यदि कहा जाए कि 'शब्दसागर' की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का श्रेय पं. रामचन्द्र शुक्ल को प्राप्त है, तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। एक प्रकार से यह उन्हीं के परिश्रम, विद्वता और विचारशीलता का फल है। कोश ने शुक्ल जी को बनाया और शुक्ल जी ने कोश को।'' युग-प्रवर्तक लेखक रामचन्द्र शुक्ल तथा प्रसिद्ध कृति 'शब्दसागर' के सम्बन्ध में यह मूल्यपरक कथन इनमें से किस साहित्यकार का है?

(a) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) चन्द्रशेखर शुक्ल

(c) बाबू श्यामसुन्दर दास (d) डॉ. रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

बाबू श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी शब्दसागर की 31 जनवरी, 1929 को प्रकाशित भूमिका में लिखा है कि 'इस कोश के कार्य में आरम्भ से लेकर अन्त तक पं. रामचन्द्र शुक्ल का सम्बन्ध रहा है और उन्होंने इसके लिए जो कुछ किया है, वह विशेष रूप से उल्लिखित होने योग्य है। 'यदि यह कहा जाय कि शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय पं. रामचन्द्र शुक्ल को प्राप्त है, तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। एक प्रकार से यह उन्हीं के परिश्रम, विद्वत्ता और विचारशीलता का फल है। इतिहास, दर्शन, भाषा विज्ञान, व्याकरण, साहित्य आदि के सभी विषयों का समीचीन विवेचन प्रायः उन्हीं का किया हुआ है।'

220. 'दूसरी परम्परा की खोज' किस विधा की रचना है?

(a) आलोचना (b) खोज एवं सर्वेक्षण

(c) कहानी (d) ललित निबन्ध

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'दूसरी परम्परा की खोज' (1982 ई.) आलोचना विधा है। इसके लेखक नामवर सिंह हैं। यह कृति हजारी प्रसाद द्विवेदी पर केन्द्रित है। इनकी अन्य आलोचनात्मक कृतियाँ हैं- हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (1952 ई.), छायावाद (1955 ई.), इतिहास और आलोचना (1957 ई.), आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ (1962 ई.), कहानी : नई कहानी (1965 ई.) तथा कविता के नये प्रतिमान (1968 ई.) आदि।

221. डॉ. नामवर सिंह की पुस्तक 'दूसरी परम्परा की खोज' किस पर केन्द्रित है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) जयशंकर प्रसाद

(c) जगदीश गुप्त (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

222. 'दूसरी परम्परा की खोज' के लेखक हैं—

(a) रामविलास शर्मा (b) शिवदान सिंह चौहान

(c) नामवर सिंह (d) देवीशंकर अवस्थी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

223. निम्नांकित में से किस कृति के लेखक नामवर सिंह हैं?

(a) आलोचना और काव्य (b) दूसरी परम्परा की खोज

(c) आस्था और सौन्दर्य (d) भाषा और समाज

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

224. 'कविता के नये प्रतिमान' के लेखक कौन हैं?

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. नामवर सिंह

(c) डॉ. देवराज (d) डॉ. रामविलास शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

225. नामवर सिंह का यह कथन इनमें से किस पुस्तक के लिए है कि ''पूर्ववर्ती व्यक्तिवादी इतिहास प्रणाली के स्थान पर सामाजिक अथवा जातीय ऐतिहासिक प्रणाली का आरम्भ करने वाली यह पहली हिन्दी पुस्तक है''?

(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका

(b) हिन्दी साहित्य की सामाजिक भूमिका

(c) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास

(d) हिन्दी साहित्य का नया इतिहास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

नामवर सिंह ने हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लिए कहा है, ''व्यक्तिवादी इतिहास प्रणाली के स्थान पर सामाजिक अथवा जातीय ऐतिहासिक प्रणाली का आरम्भ करने वाली यह पहली पुस्तक है।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ नामवर सिंह ने जोर देकर कहा है कि हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिए द्वन्द्वात्मक प्रणाली से काम लेना चाहिए और इस प्रणाली का सही उपयोग 'भौतिकवादी दृष्टिकोण' से ही हो सकता है। नामवर सिंह ने हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के बारे में लिखा है। यह पुस्तक 'नवीन युग की भूमिका' बनकर प्रकाश में आयी।

226. 'प्रगतिवाद' किसकी कृति है?

(a) शिवदान सिंह चौहान (b) अमृतराय

(c) प्रकाशचन्द्र गुप्त (d) डॉ. देवराज

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'प्रगतिवाद' एवं 'साहित्य की समस्याएँ' शिवदान सिंह चौहान की रचनाएँ हैं, जबकि डॉ. रामविलास शर्मा ने 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ', हंसराज रहबर ने 'प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन', अमृतराय ने 'साहित्य में संयुक्त मोर्चा' नामक पुस्तकें लिखीं।

227. निम्नलिखित में से किसने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा?

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ. नगेन्द्र (d) डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

डॉ. रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है, जबकि डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा।

228. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक हैं :

(a) रामविलास शर्मा (b) डॉ. नलिनविलोचन शर्मा
(c) डॉ. केसरीनारायण शुक्ल (d) श्री कृष्णलाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक डॉ. नलिनविलोचन शर्मा हैं।

229. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

(a) संस्कृति के चार अध्याय (b) कविता के नये प्रतिमान
(c) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद (d) राग दरबारी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

डॉ. रामविलास शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक, निबन्धकार, विचारक एवं कवि थे। इन्होंने 'निराला' पर एक आलोचनात्मक लेख इसी नाम से लिखा तथा निराला की साहित्य साधना (तीन भागों में, 1962, 72, 76) भी इनकी एक आलोचनात्मक कृति है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. रामविलास शर्मा की प्रमुख कृतियाँ हैं- गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद, नयी कविता और अस्तित्ववाद, भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, भारत में अंग्रेजी राज्य और मार्क्सवाद, भारतीय साहित्य और हिन्दी जाति के साहित्य की अवधारणा, भारतेन्दु युग, भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी आदि।
- प्रेमचन्द और उनका युग, परम्परा का मूल्यांकन, निराला की साहित्य साधना, भाषा और समाज तथा भाषा, साहित्य और संस्कृति इनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं।

230. 'निराला की साहित्य-साधना' आलोचना कृति के कितने भाग हैं?

(a) दो (b) एक
(c) तीन (d) चार

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

231. इनमें से किस ग्रन्थ के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(b) निराला : आत्महन्ता आस्था
(c) मध्यकालीन बोध का स्वरूप
(d) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

232. निम्नलिखित में से किस कृति के लेखक रामविलास शर्मा हैं?

(a) हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान
(b) दूसरी परम्परा की खोज
(c) छायावाद
(d) भाषा और समाज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

233. 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' के लेखक हैं-

(a) रामविलास शर्मा (b) नामवर सिंह
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

234. 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' कृति के लेखक हैं-

(a) डॉ. रामविलास शर्मा (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (d) डॉ. नामवर सिंह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

235. 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा' के लेखक हैं?

(a) डॉ. नामवर सिंह (b) लक्ष्मीकान्त वर्मा
(c) विजयदेव नारायण साही (d) रामविलास शर्मा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

236. निम्नांकित में से किस ग्रन्थ के लेखक रामविलास शर्मा नहीं हैं?

(a) भाषा और समाज
(b) नयी कविता और अस्तित्ववाद
(c) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद
(d) कविता के नये प्रतिमान

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

कविता के नये प्रतिमान के लेखक रामविलास शर्मा नहीं, बल्कि नामवर सिंह हैं।

237. 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक हैं :

(a) दूधनाथ सिंह (b) रामदरश मिश्र
(c) रामविलास शर्मा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक रामविलास शर्मा हैं। इस पुस्तक में भारतीय साहित्य और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कुछ पक्षों पर विचार किया गया है। उनके अनुसार, जिसे हिन्दुस्तानी संगीत कहते हैं, वह हिन्दी भाषी जनता का जातीय संगीत है और हिन्दुस्तानी संगीत में मुसलमानों का योगदान महत्वपूर्ण था।

238. निम्नलिखित में से एक रचना 'पत्र-साहित्य' के अन्तर्गत नहीं हैं, वह है-

(a) मेरे सन्धि-पत्र (b) फाइल और प्रोफाइल
(c) बच्चन : पत्रों में (d) पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा सम्पादित 'फाइल और प्रोफाइल' (1970), जीवन प्रकाश जोशी द्वारा सम्पादित 'बच्चन : पत्रों में' (1970) तथा हरिवंशराय बच्चन द्वारा सम्पादित 'पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' (1971) 'पत्र-साहित्य है, जबकि 'मेरे सन्धि-पत्र' सूर्यबाला द्वारा लिखित उपन्यास है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कुछ प्रमुख पत्र-साहित्य तथा उनके सम्पादक इस प्रकार हैं-

पत्र-साहित्य	सम्पादक
पद्मसिंह शर्मा के पत्र (1956)	बनारसीदास चतुर्वेदी तथा हरिशंकर शर्मा
यूरोप के पत्र (1944)	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
बंदी चेतना (1962)	कमलापति त्रिपाठी
बापू के पत्र	काका कालेलकर
निराला के पत्र (1971)	जानकी वल्लभ शास्त्री

➲ हरिवंशराय बच्चन द्वारा प्रणीत 'कवियों में सौम्य सन्त' (1960) के परिशिष्ट भाग में सुमित्रानन्दन पन्त के 126 मूल्यवान पत्र संकलित हैं।

➲ डॉ. शिवप्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित 'शांतिनिकेतन से शिवालक' (1967) में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा विभिन्न साहित्यकारों को लिखे गये पत्रों का संकलन किया गया।

➲ नेमिचंद्र जैन द्वारा उनके और मुक्तिबोध के बीच हुए पत्राचार का संकलन 'पाया पत्र तुम्हारा' (1984), चंद्रदेव सिंह द्वारा सम्पादित 'बच्चन के विशिष्ट पत्र' (1984), जगमोहन सिंह तथा चमनलाल द्वारा सम्पादित 'शहीद भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज' (1986) प्रमुख पत्र-साहित्य हैं।

239. 'चिठिया हो तो हर कोई बाँचै' किसके पत्रों का संग्रह है?

(a) धर्मवीर भारती (b) फणीश्वर नाथ 'रेणु'
(c) देवीशंकर अवस्थी (d) राम विलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'चिठिया हो तो हर कोई बाँचै' फणीश्वरनाथ 'रेणु' के पत्रों का संग्रह है।

240. 'चिठिया हो तो हर कोई बाँचै' - इनमें से किसके पत्रों का संग्रह है?

(a) केदारनाथ अग्रवाल (b) धर्मवीर भारती
(c) फणीश्वरनाथ 'रेणु' (d) बिन्दु अग्रवाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

241. 'लालतारा' के रचनाकार हैं—

(a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) उदयशंकर भट्ट
(c) निराला (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'लालतारा' के रचनाकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं– चिता के फूल, गेहूँ और गुलाब, कैदी की पत्नी, जंजीरें और दीवारें आदि।

242. 'कैदी की पत्नी' कृति के लेखक हैं—

(a) जैनेन्द्र कुमार (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) धर्मवीर भारती (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

243. 'अपनी केवल धार' काव्य-संकलन के रचनाकार हैं—

(a) केदारनाथ अग्रवाल (b) केदारनाथ सिंह
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) अरुण कमल

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'अपनी केवल धार' काव्य संकलन के रचनाकार अरुण कमल हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं– सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार, मैं वो शंख महाशंख (हिन्दी में), वायसेज (अंग्रेजी में) इत्यादि।

244. निम्नलिखित काव्य-संकलनों में से किसके कवि अरुण कमल हैं?

(a) चाँद का मुँह टेढ़ा है (b) मगध
(c) सागर मुद्रा (d) अपनी केवल धार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

245. 'नए इलाके में' किसकी काव्य कृति है?

(a) बोधिसत्व (b) विनोद कुमार शुक्ल

(c) उदय प्रकाश (d) अरुण कमल

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

246. 'मुक्तिबोध की आत्मकथा' के लेखक हैं—

(a) विष्णु चन्द्र शर्मा (b) विष्णु प्रभाकर

(c) नेमिचन्द्र जैन (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'मुक्तिबोध की आत्मकथा' के लेखक विष्णु चन्द्र शर्मा हैं।

247. समय के आरोही क्रम में कौन-सी रचना पहले आई?

(a) अंधेर नगरी (b) त्यागपत्र

(c) आत्मनेपद (d) तुम चन्दन हम पानी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

रचनाएँ एवं उनके प्रकाशन वर्ष निम्नानुसार है—

रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
1. अंधेर नगरी	1881	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. त्यागपत्र	1937	जैनेन्द्र कुमार
3. आत्मनेपद	1960	अज्ञेय
4. तुम चन्दन हम पानी	1976	विद्यानिवास मिश्र

248. ''रचना यदि जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का''। यह कथन इनमें से किस आलोचक का है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल का (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी का

(c) रामस्वरूप चतुर्वेदी का (d) मैथ्यू आर्नल्ड का

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

रामस्वरूप चतुर्वेदी 'मधुमती' (संस्करण, 2005) में 'हिन्दी सर्जना एवं आलोचना : बिखराव के संदर्भ' शीर्षक के अंतर्गत लिखते हैं, ''आधुनिक दृष्टि से, रचना जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का।''

249. ''काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।'' काव्य की यह परिभाषा देने वाले विद्वान हैं-

(a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) बाबू गुलाबराय

(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

बाबू गुलाबराय की मान्यता है कि ''काव्य संसार के प्रति कवि को भावप्रधान (किंतु क्षुद्र वैयक्तिक संबंधों से मुक्त) मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।''

250. 'जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख, और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिखा।' उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं-

(a) धूमिल (b) केदारनाथ सिंह

(c) गिरिराज माथुर (d) भवानीप्रसाद मिश्र

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख, और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिखा।' पंक्तियों के रचनाकार भवानीप्रसाद मिश्र हैं। यह पंक्तियाँ सन् 1930 में प्रकाशित 'कवि' शीर्षक कविता की हैं।

251. 'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।' यह किसका कथन है?

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) नंददुलारे वाजपेयी (d) नामवर सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है-''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।''

252. 'छायावाद और उत्तर-छायावाद के बीच कुछ वैसा ही सम्बन्ध दिखता है, जैसा मध्यकाल में भक्ति काव्य और रीति काव्य के बीच था'-पंक्तियों के लेखक हैं-

(a) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी (b) डॉ. बच्चन सिंह

(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' में लिखते हैं कि ''छायावाद और उत्तर-छायावाद के बीच कुछ वैसा ही सम्बन्ध दिखता है, जैसा मध्यकाल में भक्तिकाव्य और रीतिकाव्य के बीच था''।

253. हिन्दी आलोचना में शुक्ल जी की चिंतनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन किसने दिया?

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(c) मुक्तिबोध (d) रामविलास शर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

रीतिकाल की आलोचना करते हुए इस संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ही अपने इतिहास ग्रंथ में एक टिप्पणी इस प्रकार की है-''वास्तव में शृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई। प्रधानता शृंगार की रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगार काल कहे तो कह सकता है।'' पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग-2) इस विषय पर व्यापक ढंग से विचार करते हुए अपनी मान्यताएं देते हैं कि ''जिसने शृंगार काल नाम प्रस्तावित किया उसका सौभाग्य है कि इस नामोल्लेख के अनन्तर जितने हिन्दी साहित्य के इतिहास हाट में बिकने आए, उन्होंने किसी-न-किसी रूप में उसकी उसके लिए युग के विभाजन की अर्हता स्वीकार ली।'' आचार्य मिश्र प्रकारांतर भाव से यह स्वीकृति देते हैं कि इस नामकरण के पीछे आचार्य शुक्ल का नामकरण विषयक अभिमत मूल में अवश्य है। रीति नामकरण विषयक अनौचित्य तथा शृंगार काल के औचित्य की चिंतन विषयक अवधारणा के मूल में स्वयं आचार्य शुक्ल ही हैं और उनके द्वारा निर्दिष्ट रीतिकाल के लिए शृंगार काल शब्द की स्थापना के सटीक तर्क शुक्ल जी के न होकर आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के ही हैं। अतः इस नामकरण की अवधारणा शुक्ल जी से न जोड़कर पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र से ही जोड़ी जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी आलोचना में शुक्ल जी की चिंतनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया।

254. 'यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते, तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरणविरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ी थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती'। यह कथन किसका है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) श्यामसुन्दर दास
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) गणपतिचन्द्र गुप्त

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि 'यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते, तो जैसे अव्यवस्थित, व्याकरण-विरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती। उनके प्रभाव से लेखक सावधान हो गए और जिनमें भाषा की समझ और योग्यता थी, उन्होंने अपना सुधार किया।'

255. ''विख्यात जीवन-व्रत हमारा लोक-हित एकान्त था, 'आत्मा अमर है, देह नश्वर' यह अटल सिद्धान्त था।'' उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कृति में संगृहीत हैं?

(a) साकेत (b) भारत-भारती
(c) सिद्धराज (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

''विख्यात जीवन-व्रत हमारा लोक-हित एकान्त था, 'आत्मा अमर है, देव नश्वर' यह अटल सिद्धान्त था।'' उपर्युक्त पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत-भारती' में संगृहीत हैं।

256. 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही'-काव्य-पंक्तियाँ किस कृति की हैं?

(a) आँसू (b) सरोज स्मृति
(c) राम की शक्ति पूजा (d) निर्झरिणी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'दु:ख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।' उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ मुक्त छन्द के प्रवर्तक महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'सरोज स्मृति' नामक कविता की हैं। आर्थिक चिन्ताओं के बीच पुत्री सरोज का देहान्त हो जाता है, तब निराला जी ने 'सरोज स्मृति' नामक कविता लिखी।

257. ''सच्चा प्रेम वही है, जिसकी तृप्ति आत्मवलि पर हो निर्भर। त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।।'' इन पंक्तियों के रचयिता हैं :

(a) माखनलाल चतुर्वेदी
(b) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(c) रामनरेश त्रिपाठी
(d) श्रीधर पाठक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

निजी सुख और स्वार्थ को छोड़कर देश पर जीवन बलिदान की प्रेरणा रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में मिलती है। कवि की दृष्टि में वास्तविक प्रेम, देश-प्रेम है—
सच्चा प्रेम वही है, तृप्ति आत्मवलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।।
देश-प्रेम व पुण्य क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित।।
यह अद्‌भुत है कि रामनरेश त्रिपाठी की कविता में मानवीय-प्रेम और प्रकृति-प्रेम भी देश-प्रेम बन जाते हैं।

258. ''रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त, तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।''
'राम की शक्तिपूजा' कविता में यह कथन किसका है?

(a) लक्ष्मण (b) जाम्बवान
(c) सुग्रीव (d) विभीषण

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में नव्यवेदांत के शक्तिवाद और गांधी की आत्मशक्ति का रचनात्मक रूपांतरण देखा जा सकता है। पराजय-बोध और शक्ति से आहत राम को जाम्बवान का यह परामर्श राष्ट्रीय उद्‌बोधन में बदल जाता है-

बोले विश्वस्त कंठ से जाम्बवान-''रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुष-सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन।

259. भीतर-भीतर सब रस चूसै
हंसि-हंसि के तन-मन-धन मूसै- पंक्ति किस कवि की है?

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्णभट्ट
(c) ठाकुर (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अंग्रेजों की शोषण-नीति का उल्लेख अपने कविता के माध्यम से इस प्रकार किया है-

भीतर-भीतर सब रस चूसै, हंसि-हंसि के तन-मन-धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहिं अंगरेज।।

260. 'इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती।।'
इस पंक्तियों के रचनाकार हैं-

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) महादेवी वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रेम की अनुपलब्धि किस सीमा तक निराश, हताश और उदास कर देती है, इसका साक्षी है—जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आँसू' काव्य। इस कृति को पढ़कर कीट्स और कॉलरिज के असफल प्रणय-प्रसंगों का स्मरण हो जाता है। आँसू की विशिष्टता उसकी तीव्र अनुभूति प्रवणता तथा गहन मार्मिकता में है। प्रसाद जी प्रारम्भ में ही अपने उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से हृदय में घोर गरजना करने वाली और हाहाकार करती हुई वेदना का परिचय देते हैं।

261. 'ओम जय जगदीश हरे' की आरती की रचना किसने की है?

(a) श्रद्धाराम फिल्लौरी (b) राजा शिवप्रसाद
(c) शिवानन्द (d) हरिहर स्वामी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'ओम जय जगदीश हरे' आरती की रचना श्रद्धाराम फिल्लौरी ने की है। इनके द्वारा रचित उपन्यास 'भाग्यवती' है।

262. ''दु:ख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात।'' यह काव्यपंक्ति किस कृति की है?

(a) चाँद का मुँह टेढ़ा है (b) साकेत
(c) कामायनी (d) यामा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त काव्यपंक्ति जयशंकर प्रसाद की रचना कामायनी के श्रद्धा सर्ग से लिया गया। यहाँ कवि दु:ख की अपेक्षा सुख चाहता है, क्योंकि वह आनन्दवादी दर्शन से प्रभावित है।

263. 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में'—किस रचनाकार की पंक्ति है?

(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार जयशंकर प्रसाद हैं। यह पंक्ति कामायनी के 'लज्जा' परिच्छेद से लिया गया है, जिसमें नारी के गुणों का बखान किया गया है।

264. 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' - पंक्ति किस रचना में है?

(a) कामायनी (b) साकेत
(c) चन्द्रगुप्त (d) भारत-भारती

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

265. ''कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ
वर्तमान समाज में मैं चल नहीं सकता
पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।''
-ये पंक्तियाँ इनमें से किस कवि की हैं?

(a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध
(c) त्रिलोचन शास्त्री (d) सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

''कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ। वर्तमान समाज में चल नहीं सकता। पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।'' ये पंक्तियाँ मुक्तिबोध द्वारा रचित 'अंधेरे में' शीर्षक से ली गई हैं।

266. ''करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद?
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।''
उक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं-
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) सियारामशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह उन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रशंसा में कही है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ निराला ने मैथिलीशरण गुप्त को 'सुकवि' कहा है, तो दिनकर ने 'पुरुत्थान के कवि' और प्रभाकर श्रोत्रिय ने 'नव शास्त्रीय अथवा नव अभिजात्यवादी युग' के कवि के रूप में जानना चाहा है।
➲ कुछ आलोचक उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद के गायक कवि 'नेहरू-युग के सरकारी कवि गुप्त', 'अभिधा का कवि' कहकर गुप्त जी की महानता को कमतर आँकने का प्रयास करते हैं।

267. ''गिरा हो जाती है सनयन, नयन करते नीरव भाषण''......जैसे विरोधाभासी चमत्कार का सौंदर्य किसकी कविता में प्राप्त है?
(a) निराला (b) पन्त
(c) प्रसाद (d) महादेवी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ सुमित्रानन्दन पन्त की कविता 'उच्छ्वास' से ली गई है।

268. ''उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।'' तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन इनमें से किसका है?
(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नगेन्द्र
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

तुलसीदास जी की अक्षय कीर्ति का आधार उनके द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' है। इसकी रचना अवधी भाषा में दोहा-चौपाई शैली में हुई है। रामचरितमानस में शृंगार रस का शिष्ट एवं मर्यादित वर्णन है। इसमें तुलसीदास जी का व्यक्तित्व एक श्रेष्ठ कवि के साथ-साथ उपदेशक के रूप में भी सामने आता है। 'रामचरितमानस' समन्वय की विराट् चेष्टा का महाकाव्य है। निर्गुण और सगुण, शैव और वैष्णव, ज्ञान और भक्ति, राजा और प्रजा, लोक और शास्त्र आदि के समन्वय का प्रयास इस ग्रन्थ में किया गया है। समन्वय के इसी प्रयास को देखकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है-''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''

269. 'लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके' यह कथन किसका है?
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. नगेन्द्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

270. 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।' यह किसका कथन है?
(a) नगेन्द्र (b) नन्ददुलारे वाजपेयी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) बच्चन सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है- 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं। भाषा पर तुलसी का सा ही अधिकार हम रहीम का भी पाते हैं।'

271. 'अधिकार खोकर बैठना यह महादुष्कर्म है।' इस पंक्ति के रचयिता हैं-
(a) रामधारी सिंह दिनकर (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) निराला (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित जयद्रथ वध के प्रथम सर्ग के प्रथम भाग से अवतरित है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ गाँधीजी ने इन्हें राष्ट्र कवि की संज्ञा प्रदान की।
➲ सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत जेल गये।
➲ सन् 1952 में राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए।
➲ तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सन् 1962 में 'अभिनन्दन ग्रन्थ' भेंट किया।
➲ मैथिलीशरण गुप्त साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सन् 1954 में सम्मानित हुए।

272. 'वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।'
यह प्रसिद्ध काव्यपंक्ति निम्नलिखित में से किस कवि द्वारा रचित है?
(a) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) पं. रामनरेश त्रिपाठी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।' यह प्रसिद्ध काव्यपंक्ति मैथिलीशरण गुप्त की है।

273. ''मैं उनका आदर्श नहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे,
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा,
मन में लिए उमंग जिन्हें चिरकाल कल्पना होगा।''
उपर्युक्त पंक्तियाँ 'दिनकर' की किस रचना की हैं?

(a) कुरुक्षेत्र (b) रश्मिरथी
(c) सामधेनी (d) परशुराम की प्रतीक्षा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना 'रश्मिरथी' से ली गई हैं। इस रचना में कर्ण के जीवन में घटित प्रसंगों के संदर्भ में कवि ने आज के जीवन के अनेक प्रश्नों और संवेदनाओं को, दृष्टियों और चिंतन-पद्धतियों को, मूल्यों और आकांक्षाओं को उद्घाटित किया है।

274. ''मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत' - ये किस कवि की पंक्तियाँ हैं?

(a) धर्मवीर भारती (b) कुंवरनारायण
(c) नरेश मेहता (d) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

''मैं रथ का टूआ हुआ पहिया हूँ लेकिन मुझे फेको मत।'' ये पंक्तियाँ धर्मवीर भारती के 'टूटा पहिया' शीर्षक से लिया गया है।

275. 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।' यह पंक्ति किस रचनाकार की है?

(a) महादेवी वर्मा (b) मीराबाई
(c) सहजोबाई (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

महादेवी वर्मा ने अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय-निवेदन किया है, किन्तु उनका प्रणय दु:ख प्रधान है। वे प्रिय से मिलन की कामना नहीं करती, क्योंकि मिलन में तो व्यक्तित्व का ही नाश हो जाता है। प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से वे यही दर्शाने का प्रयास कर रही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है।
➲ उनके काव्य में विरह की प्रधानता है जो लौकिक न होकर अलौकिक विरह है।
➲ महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवादी प्रकृति विद्यमान है।
➲ 'मै नीर भरी दु:ख की बदली' इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है।

276. 'माधव हम परिनाम निरासा' - यह काव्य पंक्ति किस कवि की है?

(a) सुन्दरदास (b) विद्यापति
(c) सूरदास (d) रसखान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ग्रियर्सन ने कहा था कि ''हिन्दू धर्म के सूर्य का अस्त भले ही हो जाये, राधा और कृष्ण में मनुष्य की श्रद्धा व विश्वास भले ही न रहे और कृष्ण की प्रेमलीलाओं के प्रति भक्तों का जो अनुराग है, वह भले ही न रहे, तब भी विद्यापति के गीतों के प्रति जो प्रेम है, वह पाठकों के हृदय से कभी न हटेगा।'' जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्हें निराशा होती है। उनका लौकिक स्नेह आध्यात्मिक अनुराग बन जाता है। वे कहते हैं कि अपने कर्मों के कारण अगले जन्म में मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा कीट-पतंग जो भी बनें; पर तुम्हारे ही कीर्तन - गायन में उसकी मति लगी रहे। भक्त को भगवान के गुणगान में जो आनन्द आता है, वह मुक्तावस्था तक में नहीं मिलता। भक्तों ने उसके सामने वैकुण्ठ को भी तुच्छ समझा है। इसी सुखानुभूति की कामना विद्यापति करते हैं-

तातल सैकते वारि बिन्दु-सम
सुत मिल रमनि-समाज।
तोहे बिसरि मन ताहि समर्पिमु
अब मझु हब कोन काज
माधव, हम परिनाम निरासा।।

अर्थात्, पुत्र, मित्र और प्रेमिकाओं से मिलने वाला सुख तप्त बालू पर गिरने वाले जलबिन्दु के समान क्षणस्थायी और नश्वर हैं। हे प्रभो! मैंने आपको भूलकर अपना मत इन्हें समर्पित कर दिया था, किन्तु अब मेरा क्या हाल होगा? हे माधव! लगता है, जैसे यह निराशा हमारे सारे जीवन का एकमात्र परिणाम है।

277. 'माधव हम परिनाम निरासा' पंक्ति है—

(a) सूरदास की (b) नन्ददास की
(c) विद्यापति की (d) तुलसीदास की

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

278. राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है।
फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है।
उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार हैं—

(a) रघुवीर सहाय (b) नागार्जुन
(c) केदारनाथ सिंह (d) दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों के रचनाकार रघुवीर सहाय हैं। यह पंक्तियाँ 'अधिनायक' नामक शीर्षक से हैं। रघुवीर सहाय दूसरा सप्तक के कवि हैं। इन्होंने 'दिनमान' (1979-1982) का सम्पादन किया।

279. 'अब लौं नसानी अब न नसैहों' पद के रचयिता हैं–

(a) सूरदास (b) कुम्भनदास

(c) तुलसीदास (d) गोविन्दस्वामी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'अब लौं नसानी अब न नसैहों' पद के रचयिता तुलसीदास हैं।

280. निम्नलिखित पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

खने-खन नयनकोन अनुसरई।

खने-खन वसन धूलि-तन भरई।।

(a) विद्यापति (b) वल्लभाचार्य

(c) विट्ठलनाथ (d) निम्बार्काचार्य

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

उपर्युक्त पंक्ति आदिकालीन कवि विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' से उद्धृत है। इस प्रसंग में नायिका के नखशिख-सौन्दर्य को विद्यापति ने जिस ढंग से अंकित किया है, वह अपूर्व है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' की सरसता को लक्षित कर लोकहृदय और पण्डित समाज ने इन्हें अभिनव जयदेव, मैथिल कोकिल, नवकविशेखर आदि उपाधियों से विभूषित किया।
- विद्यापति ने शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा आदि संस्कृत ग्रन्थों की रचना की।
- उन्होंने अवहट् में कीर्तिलता और कीर्तिपताका तथा देशभाषा मैथिली में पदावली की रचना की।

281. 'कीर्तिपताका के रचनाकार का नाम है–

(a) विद्यापति (b) रामानन्द

(c) सूरदास (d) विष्णुदास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

282. 'देसिल बअना सब जन मिट्ठा।

ते तैंसन जंपओं अवहट्ठा।।'

यह पंक्ति किस कवि की है?

(a) कबीरदास (b) विद्यापति

(c) अमीर खुसरो (d) मलिक मुहम्मद जायसी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ विद्यापति की कृति कीर्तिलता से ली गई हैं। जिसका अर्थ है संस्कृत लोकरुचि अनुकूल भाषा नहीं है, प्राकृत लोगों के सही मर्म को स्पर्श नहीं कर सकती, परन्तु देसी भाषा सबको माधुर्यपूर्ण लगती है। इसलिए मैं ग्राम बोली को 'अवहट्ट' कहता हूँ।

283. 'लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।' इस काव्य पंक्ति के रचयिता हैं :

(a) ठाकुर (b) भिखारीदास

(c) चिन्तामणि (d) द्विजदेव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर–(a)

ठाकुर कहते हैं–

सीखि लीनों मीन मृग खंजन कमल नैन
सीखि लीनों जग औ प्रताप को कहानो है
सीखि लीनों कल्पवृक्ष, कामधेनु चिन्तामणि
सीखि लीनों मेरु और कुबेरगिरि आनो है
ठाकुर कहत याकी बड़ी है कठिन बात
याको नहिं भूलि कहूं बाधियत बानो है
डेल से बनाय आय मेलत सभा के बीच
लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।

इस रचना में बार-2 'सीखि' (शिक्षा-व्युत्पत्ति) को, उसके बल पर अंतः प्रेरणा के अभाव में मर-पचकर कविता करने वालों को कोसा जा रहा है और कहा जा रहा है कि कविता की बात बड़ी कठिन है, यह खेल नहीं है। मतलब वह असिधार-व्रत है। वह रचनाकार हो ही नहीं सकता, जो अपने जीवन में रचनाकार नहीं है। जीवन में रचनाकार वही होता है, जो मानवता से प्रतिबद्ध होकर मूल्यों को जीता है-अपमूल्यों से जूझता है, संघर्ष की आँच में तपती धूप में कहीं से आस्था का रस खींचकर हरा-भरा बना रहता है। यह खेल नहीं है। ठाकुर इस 'खेल' की ओर इशारा कर रहे हैं। कविता बाहर की प्रलोभना से नहीं भीतर की प्रेरणा से लिखी जाती है।

284. ''सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।'' सूरदास के संबंध में यह प्रशस्तिकथन किसका है?

(a) ब्रजरत्नदास (b) पं. परशुराम चतुर्वेदी

(c) विट्ठलनाथ (d) नाभादास

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर–(d)

सूरदास के संबंध में नाभादास का कथन है–

सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।
उक्ति, चीज, अनुप्रास वरन अवस्थिति, अति भारी।।
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी।
प्रतिबिंबित दिवि दिष्टि हृदय हरि लीला भासी।।

समसामयिक घटनाचक्र

285. 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' किस कवि द्वारा रचित श्लोक का अंश है?

(a) वाल्मीकि (b) कालिदास
(c) तुलसीदास (d) जयदेव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

तुलसीदास ने अपने साहित्य को 'स्वान्तः सुखाय' कहा है। वे लिखते हैं- ''स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, भाषा निबन्ध, मति मंजुल मातनोति।''

286. 'पायोजी मैंने राम रतन धन पायो'
-प्रस्तुत पद के रचयिता का नाम है—

(a) सूरदास (b) कुम्भनदास
(c) मीराबाई (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद की रचयिता मीराबाई हैं। इनके प्रमुख संग्रह हैं—बरसी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, राग गोविन्द तथा राग सोरठ का पद इत्यादि।

287. 'प्रेम को पंथ कराल महा, तरवारि की धार पै धावनो है।' इस पंक्ति के रचयिता हैं—

(a) आलम (b) मतिराम
(c) घनानन्द (d) बोधा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्ति के रचयिता बोधा हैं। इसमें प्रेम के निर्वाह पक्ष पर सहज भाषा में बड़े प्रभावकारी भाव प्रस्तुत किये गये हैं। 'विरह वारीश' और 'इश्कनामा' इनकी दो कृतियाँ उपलब्ध हैं। बोधा का वास्तविक नाम बुद्धिसेन था। इन्होंने पन्ना दरबार की सुजान नामक वेश्या के विरह में 'विरह वारीश' लिखी।

288. विरह वारीश किसकी रचना है?

(a) बोधा (b) ठाकुर
(c) आलम (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

289. 'सगुण अलंकारन सहित दोषरहित जो होय।
शब्द अरथ ताको कवित बिबुध कहत सब कोय।।'
'काव्य-विषयक यह परिभाषा इनमें से किस आचार्य कवि की है?

(a) चिन्तामणि (b) केशवदास
(c) भिखारीदास (d) मतिराम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

आचार्य चिन्तामणि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविकुल कल्पतरु' के प्रथम प्रकरण में ही गुणों के सम्बन्ध में विशद विवेचन किया है। उन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में ही काव्य का लक्षण प्रस्तुत करते हुए गुणों के महत्व का ज्ञापन इस प्रकार किया था-
''सगुण अलंकारन सहित दोषरहित जो होय।
शब्द अरथ ताको कवित विबुध कहत सब कोय।''
अर्थात् विद्वान लोग उस शब्दार्थ को कविता कहते हैं, जो सगुण सालंकार और निर्दोष हो। यहाँ उन्होंने 'गुणों' को ही काव्य में प्राथमिकता दी है।

290. ''प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी'' पंक्ति किस सन्त कवि की है?

(a) कबीरदास (b) दादूदयाल
(c) धर्मदास (d) रैदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति सन्त रैदास की 'रविदास की बानी' शीर्षक से उद्धृत है। इनकी रचनाओं में उपमा तथा रूपक अलंकार दिखायी पड़ता है।

291. ''प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी'' इस पंक्ति के रचनाकार हैं?

(a) चन्दनदास (b) मलूकदास
(c) नानक (d) सन्त रैदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

292. निम्नलिखित काव्यपंक्ति किस रचनाकार की है?
''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।''

(a) नानकदेव (b) कबीर
(c) रैदास (d) दादूदयाल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।' यह काव्य पंक्ति रैदास की है। अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने सरल व्यावहारिक ब्रजभाषा को अपनाया, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है।

293. 'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह पंक्ति किस कवि की है?

(a) केशवदास (b) कबीरदास
(c) तुलसीदास (d) नरहरिदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'केशव कहि न जाइ का कहिये' पद तुलसीदास कृत विनयपत्रिका का है।

294. **'केशव कहि न जाइ का कहिये' पंक्ति के रचनाकार हैं—**

(a) आचार्य केशवदास (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) रहीम

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

295. **'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह पंक्ति किस रचनाकार की है?**

(a) कबीर (b) रहीम
(c) केशव (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

296. **'केशव कहि न जाइ का कहिये' यह प्रसिद्ध पद किस काव्यकृति से उद्धृत है?**

(a) सूरसागर (b) सूर सारावली
(c) कृष्ण गीतावली (d) विनयपत्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

297. **'पराधीन सपनेहुँ सुख नाही' पंक्ति लिखी गई है—**

(a) रहीमदास द्वारा (b) कबीरदास द्वारा
(c) मलूकदास द्वारा (d) तुलसीदास द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचना में नारी की निन्दा भी काफी की है, किन्तु विभिन्न सन्दर्भों में उन्होंने नारी के प्रति अपार करुणा का भाव भी दिखाया है। मध्यकाल में शायद ही किसी अन्य कवि ने नारी की पराधीनता का उल्लेख इतने स्पष्ट तौर से किया हो, जिसे इन पंक्तियों के माध्यम से देखा जा सकता है-

कत बिधि सृजी नारि जग माँही।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाही।।

298. **सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:**

सूची-I (काव्यपंक्तियाँ)	**सूची-II (रचनाकार)**
A. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	**1. रसखान**
B. बसौ म्हारे नैनन में नंदलाल	**2. मीरा**
C. भक्तन को कहा सीकरी सों काम	**3. सूरदास**
D. प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	**4. कुम्भनदास**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	2	3	1
(c)	1	2	4	3
(d)	2	4	1	3

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सुमेलित है-

सूची-I (काव्यपंक्तियाँ)	सूची-II (रचनाकार)
मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	रसखान
बसौ म्हारे नैनन में नंदलाल	मीरा
भक्तन को कहा सीकरी सों काम	कुम्भनदास
प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	सूरदास

299. **उर में माखन चोर गड़े।**
अब कैसेहूँ निकसत नहिं ऊधौ, तिरछे ह्वै जु अड़े।।
ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) मीराबाई (d) कबीर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्ति पद्धति में अनुग्रह का ही प्राधान्य है- ज्ञान, योग, कर्म, यहाँ तक कि उपासना भी निरर्थक समझी जाती है। उन्होंने भगवदासक्ति के एकादश रूपों का वर्णन किया है। 'नारद भक्ति सूत्र' के अनुसार, आसक्ति के एकादश रूप इस प्रकार है- गुणमाहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, सात्यनिवेदनासक्ति, तन्मयासक्ति ओर परम विरहासक्ति। यद्यपि सूर ने इन सभी का वर्णन किया है। किन्तु उनका मन सख्य, वात्सल्य, रूप, कान्त और तन्मयासक्ति में अधिक रमा है। इसका उदाहरण निम्न है-

उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसेहूँ निकसत नहिं ऊधौ, तिरछे ह्वै जु अड़े।।

काव्यशास्त्र

1. काव्य-सम्प्रदायों का सही विकास-क्रम क्या होगा?

(a) रस-ध्वनि-अलंकार-रीति-वक्रोक्ति-औचित्य

(b) रस-अलंकार-रीति-वक्रोक्ति-ध्वनि-औचित्य

(c) अलंकार-रस-रीति-वक्रोक्ति-ध्वनि-औचित्य

(d) रस-रीति-ध्वनि-अलंकार-वक्रोक्ति-औचित्य

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास भरतमुनि (200 ई. पू.) से प्रारम्भ होता है। ये रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। आचार्य भामह भारतीय अलंकार के आचार्य माने जाते हैं। इन्होंने अपने ग्रन्थ में बौद्ध दार्शनिक सिद्धान्तों से अपना परिचय दिखलाया है। इस आधार पर भी इनको पाँचवीं-छठीं शताब्दी के मध्यकाल का ठहराया जाता है। संस्कृत के काव्यशास्त्रियों में वामन का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने 'रीति' को काव्य की आत्मा माना है और साहित्य-जगत में रीति-सम्प्रदाय नामक एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के मत में वामन का समय 800 ई. के आस-पास रखा जाना चाहिए। कुन्तक काव्यशास्त्र के इतिहास में वक्रोक्ति जीवितकार के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको दशम् शताब्दी ईस्वी के अन्तिम भाग में रखा जाता है। आनन्दवर्धन को ध्वनि सम्प्रदाय का प्रवर्तक और जन्मदाता माना जाता है। इनका समय नवम् शताब्दी ईस्वी का मध्यभाग सुनिश्चित किया गया है। औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक क्षेमेन्द्र हैं।

2. 'औचित्य' को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले आचार्य कौन हैं?

(a) आचार्य भामह (b) आचार्य क्षेमेन्द्र

(c) भट्टतौत (d) भट्ट लोल्लट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'औचित्य' को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले आचार्य क्षेमेन्द्र हैं। आचार्य क्षेमेन्द्र ने काव्य में रस को महत्व दिया, परन्तु उनका विचार है कि औचित्य के अभाव में रसानुभूति असम्भव है। इसी कारण उन्होंने औचित्य को सर्वाधिक महत्व देते हुए ही काव्य की आत्मा माना। 'औचित्य रससिद्धस्थ स्थिर काव्य जीवतम्' अर्थात् औचित्य रसपूर्ण काव्य का स्थिर जीवन होता है। अपने विचारों को अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा- ''औचित्य के द्वारा रस और अधिक आस्वादनीय बनकर सहृदय में व्याप्त हो जाता है। मधुमास जैसे-अशोक को अंकुरित कर देता है, उसी प्रकार यह भी भावुक हृदयों को अंकुरित कर देता। मधुर आदि रसों को चतुराई से मिलाने पर जिस प्रकार एक विचित्र आस्वाद उत्पन्न होता है, उसी प्रकार शृंगार आदि रसों को परस्पर समन्वित करने पर एक विलक्षण रसानुभूति होती है।'' इस प्रकार आचार्य क्षेमेन्द्र ने औचित्य पर पर्याप्त बल दिया। औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य क्षेमेन्द्र हैं। क्षेमेन्द्र ने औचित्य को इस प्रकार परिभाषित किया है-अनुरूप वस्तुओं के योग को आचार्य ने 'उचित' माना है एवं उचित के भाव को औचित्य कहते हैं- 'औचित्यं प्राहुराचार्याः सदृशं किम यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावः तदौचित्यं प्रचक्षते।।'

3. ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर ध्वनि सम्प्रदाय का प्रतिपादन किसने किया?

(a) दण्डी (b) मम्मट

(c) विश्वनाथ (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

भारतीय काव्यशास्त्र में विभिन्न सिद्धान्तों या सम्प्रदायों का जन्म काव्य की आत्मा की खोज से जुड़ा हुआ है। 'ध्वनि सिद्धान्त' भी काव्य की आत्मा का अनुसंधान करने वाला सिद्धान्त है। उसका केन्द्र-बिन्दु है–'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' अर्थात् काव्य की आत्मा 'ध्वनि' है। ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक आनन्दवर्धन माने जाते हैं। उनकी मान्यताएँ 'ध्वन्यालोक' में उपलब्ध हैं। ध्वनि तत्व के विरोधी भी भट्ट, आनन्दवर्धन के समकालीन थे। मुकुल, भट्टनायक, कुन्तक, धनंजय, महिम भट्ट आदि ध्वनि के विरोधी आचार्य थे। ध्वनि की परम्परा आनन्दवर्धन से पूर्व भी विद्यमान थी। अलंकारवादी आचार्यों ने ध्वनि शब्द का प्रयोग नहीं किया, फिर भी अनेक अलंकारों के लक्षणों अथवा उदाहरणों में, स्पष्ट अथवा प्रकारांतर से ध्वनि के संकेत मिल जाते हैं। आनन्दवर्धन ने ध्वनि सिद्धान्त की प्रथम बार व्यवस्थित व्याख्या की, किन्तु उनका प्रबल विरोध हुआ। बाद में आचार्य मम्मट ने अपने विवेचन द्वारा ध्वनि सिद्धान्त की पुनः स्थापना की। ये कश्मीर के महाराज अवन्ति वर्मा के आश्रित कवि थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ ध्वन्यालोक के अतिरिक्त आनन्दवर्धन के और भी ग्रन्थ हैं। जैसे-देवीशतक, अर्जुन चरित, सविक्रमबाण लीला, विनिश्चिय टीका विवृत्ति और तत्वालोक।

4. मम्मट किस सम्प्रदाय के आचार्य हैं?

(a) औचित्य (b) अलंकार

(c) ध्वनि (d) रीति

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **काव्य के विशिष्ट तत्व के रूप में 'ध्वनि' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया-**

(a) भामह ने (b) दण्डी ने
(c) आनन्दवर्धन ने (d) कुन्तक ने

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **'ध्वनि सम्प्रदाय' के संस्थापक आचार्य हैं—**

(a) आचार्य भामह (b) आचार्य आनन्दवर्धन
(c) आचार्य वामन (d) आचार्य कुंतक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **ध्वनि सम्प्रदाय को व्यवस्थित करने का श्रेय किसे जाता है?**

(a) आनन्द वर्धन (b) आचार्य कुन्तक
(c) अभिनव गुप्त (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (c) माना है, जबकि बलदेव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'संस्कृत आलोचना' (संस्करण 1957) में स्पष्ट लिखा है कि ध्वनि के सिद्धान्त को व्यवस्थित करने का श्रेय आचार्य आनन्दवर्धन को प्राप्त है।

8. **''जहाँ शब्द प्रत्यक्ष अर्थ को त्याग कर किसी और ही अर्थ की प्रतीति कराए, जो उसके प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार पूर्ण हो'' काव्य शास्त्र के अनुसार यह किसका लक्षण है?**

(a) रस का (b) अलंकार का
(c) ध्वनि का (d) इनमें से किसी का नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

''जहाँ शब्द प्रत्यक्ष अर्थ को त्याग कर किसी और ही अर्थ की प्रतीति कराए, जो उसके प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार पूर्ण हो'' काव्य शास्त्र के अनुसार, यह ध्वनि अथवा उत्तम काव्य का लक्षण है। ध्वनिकार ने इसकी परिभाषा इस प्रकार लिखी है—'जहाँ अर्थ अथवा शब्द स्वयं को और अपने अर्थ को गौण बनाकर व्यंग्यार्थ को अभिव्यक्त करते हैं, विद्वानों के द्वारा वह ध्वनि काव्य कहा गया है।' 'ध्वन्यालोक' का खण्डन करने वाले व्यक्ति विवेककार महिमभट्ट ने इस लक्षण की शब्द योजना में अनेक दोष दिखलाये हैं। अतएव मम्मट ने इसी लक्षण को शब्द भेद से इस प्रकार कहा है—'विद्वानों का कहना है कि वाच्य से व्यंग्य के अधिक होने पर ध्वनि नामक उत्तम काव्य होता है।' उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना है।

9. **किस आचार्य ने गुणों को रस-आश्रित माना है?**

(a) भामह (b) दण्डी
(c) रुद्रट (d) आनन्द वर्धन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

गुणों को रस-आश्रित मानने वाले आचार्य आनन्दवर्धन हैं। रीति और गुणों से सम्बद्ध आनन्दवर्धन की मान्यता को जिस प्रकार परवर्ती काव्यशास्त्र में सिद्धान्त स्वीकार किया गया, उसी प्रकार गुणों और रसों के पारस्परिक सम्बन्ध की मान्यता को विद्वान आज तक उसी रूप में स्वीकार करते हैं।

10. **काव्य के अर्थ-वैज्ञानिक विवेचन का शुभारम्भ किसने किया?**

(a) वामन (b) महिमभट्ट
(c) मम्मट (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

वामन काव्यांगों में व्यवस्था लाने के लिए सर्वप्रथम प्रयत्न करते दिखाई पड़ते हैं। वामन के अनुसार, काव्यों के द्रव्य गुण की उत्पत्ति देश विशेष से नहीं होती। वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली रीतियों का विवेचन वह काव्य गुणों की उत्कृष्टता के आधार पर करते हैं। ओज, प्रसाद, माधुर्य, सौकुमार्य, उदारता, श्लेष, कान्ति, समता, समाधि और अर्थव्यक्ति नामक शब्द और अर्थगुणों से युक्त शैली उत्कृष्टतम होती है, यह एक सार्वभौमिक सत्य वामन प्रस्तुत करते हैं। इसका उदाहरण वैदर्भी रीतिपरक काव्य है। वामन ने कहा है कि जिस प्रकार रेखाओं में चित्र समा जाता है, उसी प्रकार इन रीतियों में काव्य समाविष्ट हो जाता है। वामन ने गुणों को अधिक महत्व देकर, एक सीमा तक, कवि की चित्तवृत्ति के योग को स्वीकार किया है। अर्थ गुणों में कवि की नूतन कल्पना को समाधि नाम से, रसों की उद्‌भावना कान्ति के नाम से तथा अर्थ की प्रौढ़ता ओज नाम से स्वीकार की गई है। जब तक मन स्थिर होता, तब तक पद का रखना और हटाना ही होता रहता है। अलंकारों के विवेचन में भी वामन की दृष्टि में नवीनता मिलती है। वामन के अनुसार, यमक के पश्चात सभी शब्दालंकारों को उपमा का ही प्रपंच स्वीकार किया गया है। अतः स्पष्ट है कि काव्य में अर्थ वैज्ञानिक विवेचन का शुभारम्भ वामन ने किया है।

11. आचार्य वामन ने 'काव्य हेतु' के स्थान पर किस शब्द का व्यवहार किया है?

(a) तात्पर्य (b) लक्षणा
(c) अभिधा (d) काव्यांग

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. बिम्ब का काम है-

(a) काव्य में सौन्दर्य लाना (b) काव्य को सजीव बनाना
(c) काव्य को छन्दमुक्त करना (d) उपर्युक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आधुनिक युग में पाठक और आलोचक कविता की सजीवता को अधिक मान्यता देते हैं। मोटे रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक कवि का दृष्टिकोण सौन्दर्यवादी की अपेक्षा जीवनवादी अधिक है। यही कारण है कि कविता में बिम्ब का महत्व बढ़ गया है। ऐसा माना जाता है कि बिम्ब संवेदन से जुड़े होते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता 'ऐन्द्रियता' होती है। यही वजह है कि सुन्दरता से अधिक सजीवता बिम्ब का प्रधान गुण है। अलंकार में सजीवता हो सकती है, लेकिन उसके प्रयोग का प्रधान उद्देश्य कविता में सौन्दर्य लाना होता है। ठीक उसी प्रकार बिम्ब में सौन्दर्य हो सकता है, लेकिन उसका काम कविता को सजीव बनाना है। बिम्ब कई प्रकार के होते हैं-दृश्य, श्रव्य, घ्राण, स्पर्श, स्वाद आदि।

13. निम्नलिखित में से कौन भरतमुनि के रससूत्र का एक व्याख्याकार नहीं है?

(a) भट्ट लोल्लट (b) क्षेमेन्द्र
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा में रस-सिद्धान्त पर सबसे प्रामाणिक एवं चर्चित रचना 'भरतमुनि' के नाट्यशास्त्र के रूप में मिलती है। रस की निष्पत्ति का सर्वप्रथम उल्लेख इसी रचना में किया गया। भरतमुनि के 'रससूत्र' की व्याख्या में ही उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपनी शक्ति लगायी है और उसके परिणामस्वरूप उत्पत्तिवाद, अनुमितिवाद, भुक्तिवाद और अभिव्यक्तिवाद इन चार सिद्धान्तों का विकास हुआ है। विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस भरत-सूत्र में जो 'निष्पत्ति' शब्द आया है, उसके भी चार अर्थ होते हैं। भट्ट लोल्लट के मत में 'निष्पत्ति' का अर्थ 'उत्पत्ति', शंकुक के मत में 'अनुमिति', भट्ट नायक के मत में 'भुक्ति' और अभिनवगुप्त के मत में 'अभिव्यक्ति' का ग्रहण होता है। अतः भरतमुनि के 'रससूत्र' के व्याख्याकार क्षेमेन्द्र नहीं हैं, परन्तु क्षेमेन्द्र अपने औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'नाट्यशास्त्र' नाट्य कला पर व्यापक ग्रन्थ एवं टीका है, जिसे पञ्चम् वेद भी कहा जाता है।
- वर्तमान 'नाट्यशास्त्र' प्रायः 6000 श्लोकों का ग्रन्थ है। इसलिए उसको 'षटसाहस्री संहिता' भी कहा जाता है।
- नाट्यशास्त्र के उपलब्ध संस्करण 'षट्साहस्री संहिता' में 36 अध्याय हैं, जबकि निर्णयसागर द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण में 37 अध्याय दिये गए थे।
- वैसे नाट्यशास्त्र के प्राचीन टीकाकार आचार्य अभिनवगुप्त ने इसमें 36 अध्यायों का ही उल्लेख किया है।

14. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता हैं—

(a) आचार्य भरतमुनि (b) आनन्दवर्धन
(c) वामन (d) मम्मट

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'नाट्यशास्त्र' के प्रणेता हैं—

(a) भट्टलोल्लट (b) भरतमुनि
(c) भट्टनायक (d) अभिनव गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से भरतमुनि द्वारा विरचित ग्रंथ का नाम है—

(a) दशरूपक
(b) साहित्यदर्पण
(c) नाट्यशास्त्र
(d) नाट्य लक्षण रत्नकोश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. भरतमुनि के रससूत्र की 'भुक्तिवाद' के आधार पर व्याख्या करने वाले आचार्य हैं—

(a) श्रीशंकुक (b) भट्ट नायक
(c) अभिनवगुप्त (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. रस के सम्बन्ध में 'भुक्तिवाद' के प्रतिपादक आचार्य हैं-

(a) भट्ट लोल्लट (b) श्री शंकुक
(c) भट्ट नायक (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. भरत के रस-सूत्र के व्याख्यात आचार्य शंकुक का सिद्धान्त कहलाता है-

(a) उत्पत्तिवाद (b) अभिव्यंजनावाद
(c) अनुमितिवाद (d) भुक्तिवाद

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. रस-सूत्र की 'अनुमितिवादी' व्याख्या करने वाले आचार्य हैं-

(a) भट्ट नायक (b) अभिनव गुप्त
(c) लोल्लट (d) शंकुक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. आचार्य शंकुक द्वारा रस निष्पत्ति की व्याख्या का स्वरूप है-

(a) अभिव्यक्तिवादी (b) अनुमितिवादी
(c) उत्पत्तिवादी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. रस-निष्पत्ति सूत्र की समीक्षा में अनुमितिवाद किसके मंतव्य पर आधारित है?

(a) भट्ट नायक (b) विश्वनाथ
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. रसनिष्पत्ति के सम्बन्ध में भट्ट लोल्लट का मत है :

(a) अनुमितिवाद (b) उत्पत्तिवाद
(c) भुक्तिवाद (d) अभिव्यक्तिवाद

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. 'भट्ट लोल्लट' द्वारा प्रतिपादित मत कौन-सा है?

(a) उत्पत्तिवाद (b) अभिव्यक्तिवाद
(c) भोगवाद (d) अनुमितिवाद

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. रसानुभूति के सन्दर्भ में 'उत्पत्तिवाद' सम्प्रदाय के जनक हैं—

(a) अभिनव गुप्त (b) पाणिनि
(c) भरत मुनि (d) भट्ट लोल्लट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?

(a) भट्ट लोल्लट - उत्पत्तिवाद
(b) शंकुक - अनुमितिवाद
(c) आचार्य मम्मट - भुक्तिवाद
(d) अभिनव गुप्त - अभिव्यक्तिवाद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. रस-निष्पत्ति के सम्बन्ध में 'चित्रतुरंगन्याय' की मान्यता किस आचार्य की है?

(a) अभिनव गुप्त (b) शंकुक
(c) भट्ट लोल्लट (d) भट्ट नायक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में 'चित्रतुरंगन्याय' की मान्यता आचार्य शंकुक की है। भट्ट नायक ने रस सिद्धान्त के अन्तर्गत साधारणीकरण व्यापार का सर्वप्रथम उल्लेख किया है।

28. रस-विवेचन में 'चित्रतुरंगन्याय' की कल्पना इनमें से किस आचार्य ने की?

(a) शंकुक (b) अभिनव गुप्त
(c) भरतमुनि (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. **सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिये -**

सूची-I	**सूची-II**
(आचार्य)	**(सिद्धान्त)**
A. भट्ट लोल्लट	1. अभिव्यक्तिवाद
B. शंकुक	2. भुक्तिवाद
C. भट्ट नायक	3. अनुमितिवाद
D. अभिनव गुप्त	4. उत्पत्तिवाद

कूट :

(a) A-1, B-2, C-3, D-4
(b) A-4, B-3, C-2, D-1
(c) A-3, B-4, C-1, D-2
(d) A-2, B-1, C-4, D-3

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सूची-I	**सूची-II**
(आचार्य)	**(सिद्धान्त)**
भट्ट लोल्लट	उत्पत्तिवाद
शंकुक	अनुमितिवाद
भट्ट नायक	भुक्तिवाद
अभिनव गुप्त	अभिव्यक्तिवाद

30. **भारतीय रस सिद्धान्त में 'साधारणीकरण' का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?**

(a) आ. विश्वनाथ ने
(b) आ. जगन्नाथ ने
(c) आ. भट्ट नायक ने
(d) आ. अभिनव गुप्त ने

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

भारतीय रस सिद्धान्त में 'साधारणीकरण' का प्रयोग सर्वप्रथम भट्ट नायक ने किया था। साधारणीकरण शब्द का प्रयोग भट्ट नायक ने रस-निष्पत्ति-सम्बन्धी भरत-सूत्र की व्याख्या के लिए किया। उनके अनुसार, काव्य और नाटक में अभिधा से भिन्न दूसरी भावकत्व शक्ति अपने व्यापार से विभावादि को साधारणीकृत रूप में प्रस्तुत कर स्थायी भाव को भाव्यमान बनाती है। ध्वनिवादियों ने लक्षणा और व्यंजना को स्वीकार करते हुए साधारणीकरण में भावकत्व शक्ति का निषेध किया।

31. **भट्ट नायक का 'भुक्तिवाद' किस दर्शन पर आधारित है?**

(a) मीमांसा दर्शन
(b) न्याय दर्शन
(c) शैव दर्शन
(d) सांख्य दर्शन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भट्ट नायक का 'भुक्तिवाद' सांख्य दर्शन पर आधारित है। शंकुक का 'अनुमितिवाद' न्याय दर्शन, भट्ट लोल्लट का 'उत्पत्तिवाद' मीमांसा दर्शन और अभिनव गुप्त का 'अभिव्यक्तिवाद' पर आधारित हैं।

32. **महिम भट्ट द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त है-**

(a) अनुमानवाद
(b) तात्पर्यवाद
(c) लक्षणवाद
(d) अभिव्यंजनावाद

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

महिम भट्ट ने अपने अनुमान सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए अपने 'व्यक्तिविवेक' नामक ग्रन्थ में ध्वनि सिद्धान्त के विरुद्ध लिखा। उनका मत है कि ध्वनि सिद्धान्त के विशाल भवन का जिस व्यंजना के मूलाधार पर निर्माण किया गया है, वह व्यंजना कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं, किन्तु पूर्व-सिद्ध 'अनुमान' ही है। अनुमान में साधन से साध्य का 'अनुमान' किया जाता है। जैसे पर्वत पर धुआँ होने पर वहाँ अग्नि का अनुमान किया जाता है। उसमें पर्वत पर अग्नि होना सिद्ध करने में धुआँ ही साधन है अर्थात् कारण है, क्योंकि जहाँ धुआँ होता है, वहाँ अग्नि अवश्य होती है। महिम भट्ट का कहना है कि इसी प्रकार जिसे 'व्यंजक' कहा जाता है (जिसके द्वारा व्यंग्य अर्थ की प्रतीति होना बताया जाता है)। वह उसी प्रकार व्यंग्यार्थ की प्रतीति का कारण है, जिस प्रकार 'धुआँ' अग्नि के अनुमान का कारण है और जिसे 'व्यंग्यार्थ' कहा जाता है, वह उसी प्रकार अनुमान का विषय है, जिस प्रकार अग्नि। इसी युक्ति के आधार पर महिम भट्ट ने ध्वनिकार द्वारा प्रदर्शित ध्वनि के अनेक उदाहरणों में 'अनुमान' का प्रतिपादन किया है।

33. **आचार्य भरतमुनि के बाद 'रस निष्पति' को लेकर मुख्य रूप से किन विद्वानों ने रस के विषय में अपने विचार दिये हैं उनके नामों का कौन-सा क्रम सही है?**

(a) भट्ट लोल्लट, भट्ट शंकुक, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त
(b) अभिनव गुप्त, भट्ट नायक, भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट
(c) भट्टनायक, भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट, अभिनव गुप्त
(d) भट्ट शंकुक, भट्ट लोल्लट, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

आचार्य भरतमुनि के 'रस निष्पति' को लेकर मुख्य रूप से जिन विद्वानों ने रस के विषय में अपने विचार दिए उनके नामों का सही क्रम है—भट्ट लोल्लट, भट्ट शंकुक, भट्ट नायक, अभिनव गुप्त।

34. रस निष्पत्ति की विवेचना में 'भावकत्व और भोजकत्व' की कल्पना किस आचार्य ने की है?

(a) भट्ट लोल्लट (b) भट्ट नायक
(c) शंकुक (d) अभिनव गुप्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

रस निष्पत्ति की विवेचना में 'भावकत्व और भोजकत्व' की कल्पना सांख्यशास्त्री आचार्य भट्ट नायक की है। वे रस प्रक्रिया में 'भुक्तिवाद' को मानते हैं। उन्होंने शब्द की तीन शक्तियाँ माना है- अभिधा, भावकत्व तथा भोजकत्व।

35. रस सिद्धान्त की व्याख्या करके सबसे पहले दर्शक की महत्ता किसने स्वीकार की?

(a) भट्ट नायक (b) अभिनव गुप्त
(c) भट्ट लोल्लट (d) शंकुक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

अभिनव गुप्त ने भट्ट नायक की अनेक मान्यताओं का खण्डन करते हुए भी साधारणीकरण को स्वीकार किया है, किन्तु अब तक रस निष्पति के सभी व्याख्याताओं द्वारा काव्य के पाठक या श्रोता के व्यक्तित्व की उपेक्षा होती रही, किसी का भी ध्यान इस तथ्य की ओर नहीं गया कि रसानुभूति में काव्य-वस्तु के अतिरिक्त स्वयं पाठक का भी थोड़ा-बहुत योगदान रहता है। अभिनव गुप्त ने इस ओर ध्यान देते हुए अभिव्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा की। उनके मतानुसार, काव्यास्वादन से पाठक के हृदय में किसी नये तत्व की सृष्टि नहीं होती, अपितु उसकी जन्मजात वासनाएँ ही उद्वेलित होकर व्यक्त हो जाती हैं।

36. रस को नाट्य तक सीमित रखने का सर्वप्रथम विरोध किसने किया?

(a) भामह (b) रुद्रट
(c) आनन्दवर्धन (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

रस को नाटक तक सीमित रखने का सर्वप्रथम विरोध अभिनव गुप्त ने किया था।

❑ काव्यगुण

1. काव्य-गुणों के सम्बन्ध में जो कथन सही नहीं है, उसे छाँटिए-

(a) गुण काव्य के आंतरिक सौन्दर्य हैं, अलंकार बाह्य शोभा मात्र।
(b) गुण रस के उत्कर्षक और काव्य के शोभाकारक तत्व हैं।
(c) काव्यशास्त्र में काव्य-गुणों का विवेचन नहीं मिलता है।
(d) माधुर्य, प्रसाद, ओज सर्वमान्य काव्य-गुण हैं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

काव्यशास्त्र में काव्य-गुणों एवं काव्य-दोषों दोनों का विवेचन मिलता है। अतः विकल्प (c) कथन सही नहीं है। शेष कथन सही हैं।

2. आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या बतायी है-

(a) 3 (b) 5
(c) 10 (d) 8

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

काव्य के सौन्दर्य की वृद्धि करने वाले और उसमें अनिवार्य रूप से नित्य विद्यमान रहने वाले धर्म को गुण कहते हैं। गुण की अवधारणा भरतमुनि के समय से ही मान्य है। आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या 10 मानी है। वे इस प्रकार हैं—1. श्लेष, 2. प्रसाद, 3. समता, 4. समाधि, 5. माधुर्य, 6. ओज, 7. सौकुमार्य, 8. अर्थव्यक्ति, 9. उदारता एवं 10. कान्ति।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आचार्य भरत के अनुसार, काव्यदोष भी 10 ही होते हैं। वे इस प्रकार हैं— 1. गूढ़ार्थ, 2. अर्थान्तर 3. अर्थहीन, 4. भिन्नार्थ, 5. एकार्थ, 6. अभिलुप्तार्थ, 7. न्यायापेत, 8. विषम, 9. विसंधि और 10. शब्दच्युत।
➲ वामन ने गुणों को काव्य का नित्य धर्म मानकर अलंकारों से अलग किया है।
➲ आनन्दवर्धन ने गुणों को 'रस' का अंग माना है और इनकी संख्या तीन-ओज, प्रसाद तथा माधुर्य तक ही सीमित कर दी।
➲ देव और भिखारीदास ने गुणों की संख्या 10 मानी है।

3. इनमें से किस आचार्य ने काव्यगुणों की संख्या दस मानी है?

(a) क्षेमेंद्र (b) वामन
(c) भोजराज (d) भरतमुनि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. आचार्य भरत के अनुसार गुण होते हैं-

(a) 5 (b) 10
(c) 9 (d) 8

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आचार्य भरतमुनि ने गुणों की संख्या कितनी मानी है?

(a) सात (b) दस
(c) तेरह (d) अठारह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **भरतमुनि ने गुणों की संख्या बतायी है-**

(a) दस (b) आठ

(c) नौ (d) सात

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **आचार्य मम्मट ने काव्यगुण माने हैं-**

(a) 10 (b) 3

(c) 15 (d) 8

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

गुण कितने प्रकार के होते हैं और उनमें से कौन-से गुण आवश्यक हैं? इस विषय पर काव्याचार्यों में मतभेद रहा है। कोई तो गुण की संख्या दस मानता है (यथा-भरतमुनि, दण्डी, वामन आदि)। कोई चौबीस गुण मानता है (यथा-भोज) और कोई तीन गुण ही मानता है (यथा-मम्मट)। इन सब पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि गुण की संख्या के भेद के सम्बन्ध में विभेद अधिकतर दस गुणों को मानने का अथवा तीन गुणों को मानने का है, क्योंकि अग्निपुराणकार ने भी मुख्य रूप से तीन गुण, यथा- शब्द गुण, अर्थगुण और शब्दार्थ गुण माने हैं और इन्हीं के भेदोपभेद किये हैं। इसी प्रकार भोज ने वामन के दस गुणों के अतिरिक्त चौदह अन्य गुण भी माने हैं, लेकिन आचार्य मम्मट ने तीन गुण माने हैं-माधुर्य, ओज और प्रसाद।

8. **सही युग्म चिह्नित कीजिये-**

(a) वैदर्भी - माधुर्य

(b) गौड़ी - माधुर्य

(c) पांचाली - ओज

(d) गौड़ी - प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

वैदर्भी रीति के सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ का कथन है-

माधुर्य व्यंजक वर्णैः रचना ललितात्मका।

आवृत्तिरल्पवृत्तिर्या वैदर्भी रीतिरिष्यते।।

अर्थात् माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त, समास रहित पद रचना को 'वैदर्भी' रीति कहते हैं। यह रीति शृंगार, करुण एवं शान्त रस के लिए अधिक अनुकूल होती है। इसका प्रयोग विदर्भ देश के कवियों ने अधिक किया है। इसी से इसका नाम वैदर्भी रीति पड़ा। इसका एक अन्य नाम 'ललिता' भी है। मम्मट ने इसे 'उपनागरिका' कहा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गौड़ी रीति को 'परुषा' भी कहते हैं। आचार्य मम्मट इसे परिभाषित करते हुए कहते हैं-'ओजः प्रकाशकैस्तुपरुषा'' अर्थात् जहाँ ओज गुण का प्रकाश होता है, वहाँ गौड़ी (परुषा) रीति होती है। इसमें दीर्घ समास-युक्त पदावली का प्रयोग उचित माना जाता है।
- 'पांचाली' रीति के सम्बन्ध में कहा गया है-'माधुर्य सौकुमार्यो प्रपन्ना पांचाली' अर्थात् पांचाली में मधुरता और सुकुमारता होती है।

9. **जब द्रास, बटालिक, टाइगर हिल की, सीमा लगी गरजने।**
जब शहादत लेते हिमगिरि की, चट्टानें लगीं गरजने।।
तब जाग उठे ये शेर बबर, पौरुष हुंकार उठा था।
मातृ भूमि की बलिवेदी पर, लहू पुकार उठा था।।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा काव्य गुण व्यंजित हो रहा है?

(a) माधुर्य (b) ओज

(c) प्रसाद (d) उपर्युक्त तीनों

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में ओज गुण है। ओज वह गुण है, जिससे चित्त में स्फूर्ति आ जाए, मन में तेज उत्पन्न हो जाए। ओज गुण से युक्त रस के आस्वादन से चित्त दीप्त हो उठता है, उसमें आवेग उत्पन्न हो जाता है। ओज गुण का क्रमशः वीर से वीभत्स में और वीभत्स से रौद्र में आधिक्य रहता है। जहाँ द्वित्व वर्णों, संयुक्त वर्णों र के संयोग और ट, ठ, ड, ढ की अधिकता हो, समासाधिक्य हो और कठोर वर्णों की रचना हो, वहाँ ओज गुण होता है।

10. **काव्य का वह गुण जो चित्त में तेज और स्फूर्ति का संचार करता है, कौन-सा गुण कहलाता है?**

(a) ओज गुण

(b) माधुर्य गुण

(c) प्रसाद गुण

(d) इनमें से कोई नहीं।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **वीर रस प्रधान रचना में कौन-सा गुण प्रधान होता है?**

(a) ओज (b) प्रसाद

(c) माधुर्य (d) ये सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. ''चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजहीं''—पंक्ति में काव्यगुण है-

(a) प्रसाद

(b) ओज

(c) माधुर्य

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्ति में ओज गुण है। इस पंक्ति में द्वित्व वर्ण तथा संयुक्त वर्ण 'र' का प्रयोग किया गया है।

13. 'मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ
भाता मुझे सो नव मित्र-सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार-बार
मानो मिला मित्र मुझे पुराना।।''
उपर्युक्त काव्यांश में प्रयुक्त काव्य गुण का नाम है—

(a) प्रसाद (b) ओज

(c) माधुर्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त काव्यांश में माधुर्य काव्य गुण प्रयुक्त हुआ है। माधुर्य गुण की परिभाषा कुलपति मिश्र ने इस प्रकार दी है।

''द्रवै चित्त जाके सुनत, अति आनन्द प्रधान।
सु है मधुरता रसुन क्रम, प्रथम सरस की आन।।''

चित्त को पिघलाने वाला जो आनन्द प्रधान गुण है, उसको माधुर्य कहते हैं। यह संयोग श्रृंगार, करुण, विप्रलम्भ और शान्त में क्रमशः बढ़ता जाता है। मधुर रचना की आवश्यकताएँ इस प्रकार बतलायी गयी हैं-ट,ठ,ड,ढ से भिन्न वर्ण, आदि में अपने वर्गों के अन्तिम वर्णों (ङ,ञ,न,म) से युक्त होने पर जैसे-(मञ्च, कञ्च, पुञ्ज, लुञ्ज, चम्पक इत्यादि) माधुर्य के व्यंजक होते हैं।

14. 'कंकन किंकिन नुपूर धुनि सुनि।
कहत लखन सन राम हृदय, गुनि।।'
में कौन-सा काव्य गुण है?

(a) माधुर्य

(b) प्रसाद

(c) ओज

(d) इनमें से कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

जिस रचना को पढ़ते-पढ़ते अन्तःकरण द्रवित हो उठे, वह रचना माधुर्य गुण वाली होती है। यह गुण संयोग शृंगार से करुण में, करुण से वियोग में, वियोग से शान्त में अधिक अनुभूत होता है। कठोर वर्णों (ट, ठ, ड, ढ) को छोड़कर मधुर एवं कोमल रचना माधुर्य गुण के मूल हैं। जैसे 'क' से 'म' तक के वर्ण ञ, ङ, ण, न, म के युक्त वर्ण, ह्रस्व 'र' और 'ण' आदि। उपर्युक्त पंक्तियों में घुँघुरू की आवाज सुनकर श्रीराम के मन में अनुराग पैदा होता है। इसलिए यहाँ माधुर्य गुण है।

15. निरख सखी ये खंजन आये।
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये।।
इन पंक्तियों में कौन-सा गुण है?

(a) ओज गुण

(b) माधुर्य गुण

(c) प्रसाद गुण

(d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

माधुर्य वह गुण है, जिससे अन्तःकरण आनन्द से द्रवीभूत हो जाय। जब चित्तवृत्ति स्वाभाविक अवस्था में होती है, तब रति आदि के रूप से उत्पन्न आनन्द के कारण माधुर्य गुण युक्त रस के आस्वादन से स्वभावतः चित्त द्रवीभूत हो जाता है, पिघल जाता है। क्रमशः माधुर्य गुण संयोग से करुण में, करुण से विप्रलम्भ में, विप्रलम्भ से शान्त में अधिकाधिक अनुभूत होता है। ट,ठ,ड,ढ को छोड़कर क से म तक के वर्ण ङ,ञ,ण,न, म से युक्त वर्ण, ह्रस्व र और ण, समास का अभाव या अल्प समास के पद और कोमल, मधुर रचना माधुर्य गुण के मूल हैं।
उपर्युक्त पदों में नियमानुसार ट,ठ,ड,ढ रहित स्पर्श वर्ण हैं, सानुसार पद हैं और समासाभाव है। अतः माधुर्य की व्यंजना है।

16. 'बिंदु में थी तुम सिंधु अनंत, एक सुर में समस्त संगीत।
एक कलिका में अखिल वसंत, धरा पर थी तुम स्वयं पुनीता।।'
पन्त इस उद्धरण में काव्यगुण है—

(a) ओज (b) प्रसाद

(c) माधुर्य (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ पन्त जी के काव्यकृति 'पल्लव' से ली गई हैं। उपर्युक्त उद्धरण में 'प्रसाद' काव्यगुण है। जिस प्रकार सूखे ईंधन में अग्नि के समान अथवा स्वच्छ धुले हुए वस्त्र में जल के समान जो रचना पाठक के चित्त में सहसा व्याप्त हो जाती है, वह प्रसाद गुण युक्त कहलाती है।

❑ काव्यदोष

1. **अनुभावों और विभावों की कष्ट-कल्पना किस प्रकार का दोष है?**
   (a) समास दोष (b) रस दोष
   (c) पद दोष (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

रसगत काव्यदोष हैं-(i) स्वशब्दवाच्य (ii) विभाव-अनुभाव की कष्ट कल्पना (iii) प्रतिकूल विभाव ग्रहण का (iv) रस की बार-बार दीप्ति (v) बिना अवसर रस का प्रतिपादन (vi) अंग की अतिविस्तृति (vii) प्रकृति विपर्यय।

2. **'पांडव की प्रतिमा सम लेखो।**
   अर्जुन भीम महामति देखो।।'
   इसमें काव्य का कौन-सा दोष है?
   (a) शब्द दोष (b) रस दोष
   (c) अर्थ दोष (d) कोई भी नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्तियाँ केशवदास की रचना 'रामचन्द्रिका' से ली गई है। वह पंचवटी का वर्णन करते हुए उपर्युक्त पंक्तियों का उल्लेख करते हैं। इस काव्य में काल दोष है, क्योंकि राम कथा त्रेता युग की है, उसमें पांडव कहाँ थे।

3. **कंकण क्वणित रणित नूपुर थे, हिलते थे छाती पर हार।**
   मुखरित था कलरव गीतों में, स्वर लय का होता अभिसार।।
   बिछुड़े तेरे सब आलिंगन, पुलक स्पर्श का पता नहीं।
   मधुमय चुम्बन कातरतायें, आज न मुख को सता रहीं।।
   उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा काव्यदोष लक्षित हो रहा है?
   (a) काल दोष (b) वचन दोष
   (c) लिंग दोष (d) च्युत संस्कृति दोष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

जिस काव्य में शब्द सुनने पर कठोर और अप्रिय या बुरे लगें, वहाँ वचन दोष या श्रुतिकटुत्व दोष होता है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में **रसापकर्षकाः दोषाः** कहकर रस का अपकर्ष करने वाले तत्वों को दोष कहा है। मुख्य रूप से दोष तीन प्रकार के होते हैं-शब्द दोष, अर्थ दोष, रस दोष। शृंगार, करुण, शान्त जैसे रसों के प्रसंग में कठोर वर्णों या शब्दों का प्रयोग करने पर वचन दोष होता है। उपर्युक्त पंक्तियों में यही काव्यदोष है।

4. **'सब कोऊ जानत तुम्हें सारे जगत जहान'- में काव्य का कौन-सा दोष है?**
   (a) पुनरुक्ति दोष (b) अश्लीलत्व दोष
   (c) ग्राम्यत्व दोष (d) श्रुति कटुत्व दोष

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्ति में पुनरुक्ति काव्यदोष है। यहाँ पर जगत और जहान दोनों का प्रयोग हुआ है, जबकि दोनों का अर्थ संसार होता है।

5. **'तरु-रिपु-रिपु-धर देखि के विरहिनि तिय अकुलाय' में कौन-सा काव्यदोष है?**
   (a) च्युत संस्कृति (b) न्यून पदत्व
   (c) अधिक पदत्व (d) क्लिष्टत्व

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

क्लिष्टत्व का अर्थ है- कठिनाई। अर्थ को दुरूह बनाने वाले शाब्दिक चमत्कारों के प्रयोग से यह दोष काव्य में आ जाता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'तरु-रिपु-रिपु-धर' शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिसका तात्पर्य वृक्ष का शत्रु अग्नि, अग्नि का शत्रु जल और उस जल को धारण करने वाला बादल । ऐसे प्रयोगों के कारण अर्थबोध में कठिनाई होती है। अतः यहाँ क्लिष्टत्व काव्यदोष है।

6. **'सुन्दर हैं विहग सुमन सुन्दर मानव तुम सबसे सुन्दरतम' में कौन-सा काव्यदोष है?**
   (a) अधिक पदत्व (b) अप्रतीतत्व
   (c) दुष्क्रमत्व (d) क्लिष्टत्व

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

जहाँ वाक्य में अनावश्यक अर्थ का सूचक पद प्रयुक्त होता है, वहाँ अधिक पदत्व दोष होता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'सबसे सुन्दरतम' का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'सबसे' शब्द का प्रयोग अनावश्यक है, क्योंकि 'सुन्दरतम' का अर्थ ही 'सबसे सुन्दर' होता है।

❑ शब्दशक्तियाँ

1. **अर्थबोध कराने के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?**
   (a) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा पर आश्रित होती है।
   (b) लक्षणा शब्दशक्ति व्यंजना पर आश्रित होती है।
   (c) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा व व्यंजना दोनों पर आश्रित होती है।
   (d) लक्षणा एवं व्यंजना दोनों शब्द शक्तियाँ अभिधा पर आश्रित होती हैं।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

शब्द और अर्थ का शाश्वत सम्बन्ध है। गोस्वामी तुलसीदास ने शब्द और अर्थ को जल-बीचि के समान अभिन्न बताया है। शब्द उच्चारण के साथ ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव डालता है। स्वादिष्ट व्यंजन का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आना, शेर या साँप का नाम लेते ही मन में भय का संचार होना शब्दशक्ति है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का अर्थगत प्रभाव पड़ता है, उसे शब्दशक्ति कहते हैं। शब्दशक्तियाँ तीन होती हैं–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। ये तीन शब्दशक्तियाँ जिन शब्दों से अर्थ की अभिव्यक्ति कराती हैं, उन्हें क्रमशः वाचक, लक्षक और व्यंजक कहा जाता है। अभिधा ही मुख्य शक्ति है। इसकी प्रतीति सबसे पहले हुआ करती है। कवि देव ने इसकी पुष्टि इस प्रकार की है–

''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।''

इससे स्पष्ट है कि लक्षणा और व्यंजना, अभिधा पर ही आश्रित रहती हैं। लक्षणा में भी अभिधार्थ से योग रहता है और व्यंजना भी अभिधा के आधार पर ही चलती है, जो व्यंजना लक्षणामूला रहती है अथवा जो व्यंजना पर चलती रहती है वह भी अन्त में अभिधा के ही आश्रय में कही जाएगी, किन्तु चमत्कार की दृष्टि से व्यंजना ही मुख्य है। ये जिन अर्थों का बोध कराते हैं, उन्हें क्रमशः वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ कहा जाता है। जिस शक्ति द्वारा साक्षात् संकेतित अर्थ, जिसे मुख्यार्थ भी कहा जाता है, का बोध हो, उसे अभिधा कहते हैं। मुख्य अर्थ का बोध कराने के कारण यह मुख्या भी कहलाती है। अभिधा शक्ति द्वारा जिन शब्दों के अर्थ की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें वाचक कहा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो, उसे लक्षणा कहते हैं।
- अभिधा और लक्षणा से भिन्न अर्थ शक्ति को व्यंजना कहा जाता है। साहित्यदर्पणकार के शब्दों में ''अपना-अपना अर्थ बोधन कर अभिधा आदि वृत्तियों के शान्त होने पर जिससे अन्य अर्थ बोधन होता है, वह शब्द में तथा अर्थादिक में रहने वाली वृत्ति व्यंजना कहलाती है।''
- व्यंजना के द्वारा व्यक्त अर्थ को व्यंग्यार्थ या प्रतीयमान अर्थ कहते हैं।
- आनन्दवर्धन ने अपने ग्रन्थ में प्रतीयमान अर्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे ही काव्य की आत्मा स्वीकार किया है।
- भिखारीदास ने लिखा है कि व्यंजना या तो अभिधा पर आश्रित रहती है या लक्षणा पर। वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ पात्र के समान हैं, जिन पर व्यंग्यार्थ रूपी जल टिकता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, अभिधा तथा वाच्यार्थ का विशेष महत्व है। असमर्थ वाच्यार्थ में लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ निहित होने पर अधिक प्रभावकारक होता है। वास्तव में व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ के कारण चमत्कार आता है, परंतु वह चमत्कार होता है वाच्यार्थ में ही।
- शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, अभिधा कहलाती है। पं. जगन्नाथ के अनुसार, 'शब्द एवं अर्थ' के परस्पर सम्बन्ध को अभिधा कहते हैं।

2. ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत नवीन।।''
यह मान्यता निम्नलिखित में से किसकी है?

(a) मतिराम (b) भिखारीदास
(c) कुलपति मिश्र (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।।''
उपर्युक्त किसकी उक्ति है?

(a) केशवदास (b) ब्रजनाथ दास
(c) भिखारीदास (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।।''
किसका कथन है?

(a) घनानन्द (b) बिहारी
(c) देव (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।''
शब्दशक्ति के विषय में निम्नलिखित कथन किसका है?

(a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) देव कवि (d) चिन्तामणि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, कहलाती है-

(a) लक्षणा (b) व्यंजना
(c) शब्दशक्ति (d) अभिधा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को कहते हैं—

(a) अभिधा शक्ति

(b) व्यंजना शक्ति

(c) लक्षणा शक्ति

(d) उपर्युक्त सभी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. किस शब्दशक्ति की प्रतीति सबसे पहले हुआ करती है?

(a) व्यंजना (b) लक्षणा

(c) अभिधा (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. व्यंजना शब्द-शक्ति का संबंध किससे है?

(a) मुख्यार्थ (b) वाच्यार्थ

(c) लक्ष्यार्थ (d) व्यंग्यार्थ

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'रस की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द-शक्ति ही प्रधान है।' यह मान्यता है—

(a) आचार्य भामह की

(b) आचार्य भट्ट नायक की

(c) आचार्य कुन्तक की

(d) आचार्य दण्डी की

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

भट्ट नायक ने रस की स्थिति न तो नायक-नायिका से मानी और न नट-नटी में। रस की स्थिति उन्होंने सीधे सहृदय में मानी। उनके अनुसार, काव्य में तीन शक्तियाँ रहती हैं-अभिधा, भावकत्व और भोजकत्व। अभिधा वह शक्ति है, जिसके द्वारा पाठक या दर्शक काव्य के शब्दार्थ को ग्रहण करता है। दूसरी शक्ति है भावकत्व जिसके द्वारा उसे उस अर्थ का भावन होता है। भाव का भावन होने पर भाव की वैयक्तिकता का नाश होकर साधारणीकरण हो जाता है और भाव विशिष्ट न रहकर साधारण बन जाता है। अतः इस आधार पर भट्ट नायक की मान्यता है कि 'रस' की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द शक्ति ही प्रधान है।'

11. 'सिन्धु सेज पर धरा-वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी'-इस अवतरण में कौन-सी शब्दशक्ति है?

(a) अभिधा (b) व्यंजना

(c) तात्पर्य (d) लक्षणा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

अभिधा और लक्षणा के द्वारा अपने अर्थ का बोध कराकर विरत हो जाने पर जिस शब्द और अर्थ की शक्ति के द्वारा कवि के अभिप्रेत अर्थ की प्रतीति होती है, उसे व्यंजना कहते हैं। व्यंजति अर्थ को व्यंग्यार्थ अथवा ध्यन्वर्थ भी कहा जाता है। प्रस्तुत पंक्ति में व्यंजना शब्दशक्ति है। इसमें सिन्धु और धरा के लिए क्रमशः सेज और वधू के बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं। इनमें प्रमुख बिम्ब वधू का है और सेज का बिम्ब उसका अंगमात्र है। कवि ने वधू के बिम्ब को ही उभारने का विशेष प्रयास किया है। तनिक संकुचित, बैठी सी-इस विशेषण की सहायता से उसकी मुद्रा को साकार किया गया है।

12. ''जब सिंह तलवार लेकर उतरा तो गीदड़ भाग गए''- इस वाक्य में कौन-सी शब्दशक्ति है?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त वाक्य में 'लक्षणा' शब्द शक्ति है। इसका अर्थ है जब सिंह (वीर) तलवार लेकर उतरा तो गीदड़ (कायर) भाग गए। यहाँ सिंह का लक्षण वीर में तथा गीदड़ के लक्षण कायर से है।

13. 'लक्षणा' शब्दशक्ति द्वारा शब्द के जिस अर्थ का बोध होता है- उसे क्या कहेंगे?

(a) व्यंग्यार्थ (b) परार्थ

(c) लक्ष्यार्थ (d) अभिधार्थ

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. ''मनहुँ उमगि अंग-अंग छवि छलकै'' -तुलसी की इस पंक्ति में कौन-सी शब्द शक्ति है?

(a) अभिधा (b) लक्षणा

(c) व्यंजना (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में, राम की शोभा का वर्णन करते हुए कवि कहता है। इस 'छलकै' शब्द में कितनी शक्ति है। व्यापार को कैसा गोचर रूप प्रदान करता है। इसका वाच्यार्थ अत्यन्त तिरस्कृत है। लक्षणा से इसका अर्थ होता है– 'प्रभूत परिमाण में प्रकट होना।' पर अभिधा द्वारा इस प्रकार कहने से वैसी अनुभूति नहीं उत्पन्न हो सकती।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'अभिधेयार्थ' स्पष्टतः कहा जाता है, 'लक्ष्यार्थ' सूचित कराया जाता है और 'व्यंग्यार्थ' का ध्वनन ही सम्भव है, जो कथित या लक्षित न होने पर भी सहृदय द्वारा समझ लिया जाता है। व्यंजना के दो भेद-शाब्दी एवं आर्थी व्यंजना हैं।

15. बनन में बागन में बगरो बसंत है'-पद्माकर की इस पंक्ति का अर्थ शब्द की किस शक्ति से ग्रहण किया जा सकेगा?

(a) अभिधा से
(b) लक्षणा से
(c) व्यंजना से
(d) इन सभी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

पद्माकर की प्रस्तुत पंक्ति में लक्षणा शक्ति है। लक्षणा में शब्द का सीधा-साधा अर्थ नहीं निकलता। यह वह शब्द शक्ति है, जिससे शब्द के लाक्षणिक अर्थ का बोध होता है। इसके तीन प्रमुख तत्व होते हैं-I. शब्द के मुख्य अर्थ के ज्ञान में अवरोध, II. मुख्यार्थ व लक्ष्यार्थ का उचित सम्बन्ध, III. रूढ़ि या प्रयोजन में एक होना आवश्यक।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रीतिकाल के आचार्य चिन्तामणि ने कहा है-जो सुनि परे सो शब्द है समुझि परे सो अर्थ। इससे स्पष्ट होता है की सुनने और समझने के बीच कोई एक कड़ी है, जो सुनने के बाद शब्द के अर्थ को व्यंजित करती है और यह कड़ी इतनी सूक्ष्म है कि शब्द और उसका अर्थ कहने भर को पृथक है। इसे हम शक्ति कहते हैं।

16. चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।
उपर्युक्त दोहे में कौन-सी शब्दशक्ति है?

(a) अभिधा
(b) लक्षणा
(c) व्यंजना
(d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त दोहे में शाब्दी व्यंजना है। इस दोहे में 'वृषभानुजा' और 'हलधर' शब्दों के दो-दो अर्थ हैं लेकिन यहाँ 'वृषभानुजा' का राधा (वृषभदेव की पुत्री) और 'हलधर के वीर' को बलराम (श्रीकृष्ण के भाई) के एक ही अर्थ में नियन्त्रित कर दिया जाता है, किन्तु इन अर्थों के साथ 'गाय' और 'बैल' का व्यंग्यार्थ भी निकलता है और यही अर्थ इस दोहे को सुन्दर बनाये हुये है।

17. 'चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।'

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यंजना (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर' में कौन-सी व्यंजना है?

(a) शाब्दी व्यंजना
(b) आर्थी व्यंजना
(c) रस व्यंजना
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही माना है।

19. 'बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से'-'प्रसाद' की इस पंक्ति का अर्थ किस शब्दशक्ति से ग्रहण होगा?

(a) अभिधा से
(b) लक्षणा से
(c) व्यंजना से
(d) इन सभी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद की प्रस्तुत काव्य पंक्ति में लक्षणा शब्दशक्ति है। यहाँ केवल आरोप्यमान 'विधु' (उपमान) का कथन है। जहाँ केवल उपमान का वर्णन हो और उपमेय लुप्त हो वहाँ साध्यवसना गौणि प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

रस

1. **'रस-सामग्री' किस विकल्प में दी गयी है?**
(a) छन्द, अलंकार, गुण, रीति
(b) विभाव, अनुभाव, संचारी, स्थायीभाव
(c) अभिधा, लक्षणा, उत्प्रेक्षा, प्रतीक
(d) बिम्ब, वृत्ति, रसाभास, काव्य-दोष

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

रस के चार अंग हैं- स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव। संचारीभाव को व्यभिचारीभाव भी कहते हैं। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने 'रस' की व्याख्या करते हुए कहा है-'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव, व्यभिचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

2. **काव्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'नवरस' से क्या अभिप्राय है?**
(a) नवीन रस (b) नव वर्ष
(c) श्रृंगार रस (d) नौ रस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

काव्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'नवरस' से अभिप्राय 'नौ रस' से है। ये नौ रस इस प्रकार हैं- श्रृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस तथा शान्त रस।

3. **'रसो वै सः' रस से सम्बन्धित इस कथन का उल्लेख इनमें से किस ग्रन्थ में हुआ है?**
(a) ऋग्वेद (b) अग्निपुराण
(c) तैत्तिरेय उपनिषद् (d) नाट्यशास्त्र

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

रस से सम्बन्धित कथन का उल्लेख 'तैत्तिरेय उपनिषद्' ग्रन्थ में इस प्रकार से हुआ है-'रसो वै सः'।

4. **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' को प्रतिपादित किया है-**
(a) दण्डी ने
(b) भरतमुनि ने
(c) वामन ने
(d) अभिनव गुप्त ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने 'रस' की व्याख्या करते हुए कहा है- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इनके इस सूत्र में स्थायी भाव का उल्लेख नहीं है। भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के अनुसार, अनुभावों का विशेष उपयोग अभिनय की दृष्टि से ही होता है। भरतमुनि ने श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत सहित कुल आठ रस को नाट्य प्रयोग में स्वीकारा है। नवें रस शान्त का इसमें वर्णन नहीं है।

5. **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'-सूत्र किस आचार्य का है?**
(a) भट्ट लोल्लट (b) आचार्य भरतमुनि
(c) भट्ट नायक (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **भरतमुनि ने 'रस सूत्र' का विवेचन अपने किस ग्रन्थ में किया है?**
(a) नाट्यदर्पण (b) नाट्यशास्त्र
(c) हृदयदर्पण (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **'विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है' किसका कथन है?**
(a) भामह (b) भरत
(c) मम्मट (d) जगन्नाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **नाटक के सन्दर्भ में भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या है—**
(a) नौ (b) ग्यारह
(c) दस (d) आठ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रस की संख्या 8 किसने मानी है?

(a) मम्मट (b) विश्वनाथ

(c) भरतमुनि (d) अभिनव गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. आचार्य भरत ने किस रस को नाट्य प्रयोग में स्वीकार नहीं किया है?

(a) शान्त (b) करुण

(c) भयानक (d) अद्भुत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. रस-निरूपण के प्रथम व्याख्याता थे—

(a) भरतमुनि (b) दण्डी

(c) भामह (d) भट्ट लोल्लट

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रस-निरूपण के प्रथम व्याख्याता भरतमुनि थे। नाट्यशास्त्र भरतमुनि का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है। आचार्य भरतमुनि के रस सूत्र के प्रमुख चार व्याख्याता हैं– भट्ट लोल्लट-उत्पत्तिवाद, शंकुक-अनुमितिवाद, भट्ट नायक-भुक्तिवाद तथा अभिनव गुप्त-अभिव्यक्तिवाद।

12. विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें कहते हैं—

(a) अनुभाव (b) संचारी भाव

(c) विभाव (d) स्थायी भाव

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विभाव कहते हैं।रसानुभूति के कारण अथवा रसों को उदित करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है। विभाव के दो भेद हैं-1. आलम्बन और 2. उद्दीपन।

13. भाव शान्ति, भाव सन्धि और भाव सबलता का सम्बन्ध भाव के किस भेद से है?

(a) अनुभाव (b) स्थायी भाव

(c) विभाव (d) संचारी भाव

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं, **जैसे**—रस्सी से भयभीत व्यक्ति के मन में उत्पन्न चिन्ता, शंका, जड़ता, उन्माद आदि भाव संचारी भाव हैं। संचारी भाव पानी के बुलबुलों की भाँति बनते और बिगड़ते हैं। अतः स्पष्ट है कि भाव शान्ति, भाव सन्धि और भाव सबलता का सम्बन्ध संचारी भाव से है।

14. वाणी और अंगों के अभिनय द्वारा जिनसे प्रकट हो, वे हैं-

(a) संचारी भाव (b) विभाव

(c) अनुभाव (d) भाव

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वाणी और अंगों के अभिनय द्वारा जिनसे प्रकट हो वे 'अनुभाव' हैं। मानव मन में स्थायी भाव के जागृत होने पर कुछ शारीरिक चेष्टाएं भी उत्पन्न होती हैं, जिन्हें अनुभाव कहा जाता है; जैसे-सांप को देखकर व्यक्ति चिल्लाने या भागने लगे, तो उसकी यह शारीरिक चेष्टा 'अनुभाव' कहलाएगी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अनुभावों के भेद के विषय में आचार्यों में मतभेद है। भरत ने अनुभावों के तीन भेद किये हैं—वाचिक, आंगिक और सात्विक।
- भानुदत्त ने इनके चार भेद माने हैं और उनके नाम भी आचार्य भरत से कुछ भिन्न दिये हैं। ये हैं—कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक।
- तन की चेष्टाओं को कायिक अनुभाव माना जाता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में आश्रय द्वारा भ्रूसंचालन, कटाक्षपात आदि क्रियाएँ करना कायिक अनुभाव हैं। इन अनुभावों को उत्पन्न करने के लिए आश्रय को यत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें 'यत्नज' अनुभाव भी कहते हैं। इनकी संख्या अनिश्चित है।
- मन की चेष्टाएँ मानसिक अनुभाव कहलाती हैं। अंतःकरण की भावना के अनुकूल मन में हर्ष, विषाद आदि के उद्वेलन को मानसिक अनुभाव कहते हैं।
- मन के भाव के अनुकूल भिन्न-भिन्न प्रकार की कृत्रिम वेशभूषा धारण करने को आहार्य अनुभाव कहा जाता है।
- सात्विक अनुभाव वे होते हैं, जो सहज स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं। इनके उत्पन्न होने में आश्रय को कोई यत्न नहीं करना पड़ता है। अतः इन्हें 'अयत्नज' अनुभाव भी कहते हैं। इनकी संख्या आठ है—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, प्रकम्प (वेपथु), वैवर्ण्य (रंगहीनता) अश्रु, प्रलय (मूर्छा)।

15. 'रोमांच' किस तरह का अनुभाव है?

(a) सात्विक (b) कायिक

(c) आहार्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

16. वेश-भूषा से जो भाव प्रदर्शित किये जाते हैं, उन्हें.......कहा जाता है।

(a) कायिक

(b) मानसिक

(c) आहार्य

(d) सात्विक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'वेपथु' कैसा अनुभाव है?

(a) आंगिक (b) वाचिक

(c) सात्विक (d) बौद्धिक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. आलम्बन और उद्दीपन विभावों के कारण उत्पन्न भावों को बाहर प्रकाशित करने वाले कार्य कहलाते हैं—

(a) विभाव (b) अनुभाव

(c) संचारीभाव (d) स्थायीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. अनुभावों के कितने भेद होते हैं?

(a) 2 (b) 3

(c) 4 (d) 6

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, सम्भवतः विभिन्न विद्वानों में मतभेद के कारण ऐसा किया गया।

20. अनुभाव के दो भेद होते हैं-

(a) कायिक और वाचिक

(b) सात्विक और वाचिक

(c) कायिक और सात्विक

(d) सात्विक और मानसिक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

डॉ. हरदेव बाहरी (शब्द-अर्थ-प्रयोग) के अनुसार, अनुभाव के दो भेद होते हैं-कायिक या इच्छित तथा सात्विक या अनिच्छित। इच्छित अनुभाव को साधारण अनुभाव भी कहा जाता है।

21. ज्यौं ज्यौं पटु झटकति, हठति, हँसति नचावति नैन।
त्यौं-त्यौं निपट उदारहु फगुवा देत बनै ना।
पंक्ति में कौन-सा अनुभाव है?

(a) वाचिक अनुभाव

(b) कायिक अनुभाव

(c) मानसिक अनुभाव

(d) सात्विक अनुभाव

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में पट (वस्त्र) का झटकना, हँसना तथा आँखों का नचाना यह इंगित करता है कि यह सारी क्रिया शरीर के अंगों द्वारा हो रही है। अतः यह कायिक अनुभाव है।

22. आचार्य देव ने किस भाव को चौतीसवाँ संचारी भाव कहा है?

(a) छल (b) स्मृति

(c) पुलक (d) रोमांच

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

आश्रय के हृदय में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। ये संचारी इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि यह स्थिर नहीं रहते और बीच-बीच में प्रकट होकर विलीन हो जाते हैं। इनसे स्थायी भाव की पुष्टि होती है। इनको व्यभिचारी भाव भी कहते हैं। ये तैंतीस हैं। देव कवि ने 'छल' नामक एक और संचारी भाव ढूँढ़ निकाला है, जिसे वे चौतीसवाँ संचारी भाव कहते हैं।

23. रसों के संचारी भावों की कुल संख्या होती है-

(a) 23 (b) 27

(c) 33 (d) 37

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गयी है। वे इस प्रकार हैं-हर्ष,चिन्ता, गर्व, जड़ता, बिबोध (चैतन्य लाभ), मोह, स्मृति, मरण, व्याधि (रोग), मद, श्रम, आवेग, दीनता, शंका, उत्सुकता, विषाद, त्रास (भय या व्यग्रता), मति, असूया, उग्रता, निर्वेद, आलस्य, उन्माद, व्रीड़ा (लज्जा), ग्लानि, स्वप्न, चपलता, धृति, अमर्ष (असहनशीलता), निद्रा, अवहित्था (भाव का छिपाना), अपस्मार (मूर्छा) तथा वितर्क।

24. संचारी भावों की संख्या मानी गयी है-

(a) 32 (b) 30

(c) 34 (d) 33

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. संचारी भावों की संख्या कितनी होती है?

(a) दस (b) नौ

(c) तैंतीस (d) पच्चीस

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. अपस्मार क्या है?

(a) एक प्रकार का उपमान जिसमें, उपमेय की हेयता सिद्ध की जाती है

(b) संचारी भाव का एक प्रकार

(c) आधुनिक रसाचार्यों द्वारा खोजा गया एक रस

(d) एक प्रकार का काव्य दोष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिये -

सूची-I (रस)	**सूची-II (स्थायी भाव)**
A. शृंगार	1. उत्साह
B. अद्‌भुत	2. निर्वेद
C. शान्त	3. विस्मय
D. वीर	4. रति

कूट :

(a) A-3, B-4, C-1, D-2

(b) A-1, B-2, C-3, D-4

(c) A-4, B-3, C-2, D-1

(d) A-2, B-1, C-4, D-3

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलित है-

सूची-I (रस)	**सूची-II (स्थायी भाव)**
शृंगार	रति
अद्‌भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद
वीर	उत्साह

28. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची-I (रस)	**सूची-II (स्थायी भाव)**
A. अद्‌भुत	1. क्रोध
B. वीर	2. शोक
C. रौद्र	3. विस्मय
D. करुण	4. उत्साह

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	1	2
(d)	2	4	1	3

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सुमेलित है–

सूची-I (रस)	**सूची-II (स्थायी भाव)**
अद्‌भुत	विस्मय
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
करुण	शोक

29. निम्नलिखित में से किस विकल्प में स्थायीभाव दिये गये हैं?

(a) निर्वेद, आलस्य, ग्लानि, चिन्ता

(b) रति, शोक, उत्साह, भय

(c) उत्प्रेक्षा, प्रदीप, सोरठा, इन्द्रवज्रा

(d) शृंगार, वीर, अद्‌भुत, शान्त

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत शब्द स्थायीभाव है। ये क्रमशः श्रृंगार, करुण, वीर तथा भयानक रस के स्थायी भाव हैं।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थायीभाव नहीं है?

(a) विषाद (b) जुगुप्सा
(c) निर्वेद (d) हास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

विषाद किसी भी रस का स्थायीभाव नहीं है। जुगुप्सा, वीभत्स रस, निर्वेद, शान्त रस तथा हास, हास्य रस का स्थायी भाव है।

31. वीर रस का स्थायीभाव है-

(a) शोक (b) भय
(c) उत्साह (d) निर्वेद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वीर रस का स्थायीभाव उत्साह होता है। वीर रस के चार भेद होते हैं- युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर तथा दयावीर। करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है। भयानक रस का स्थायीभाव भय तथा शान्त रस का स्थायी भाव शम/निर्वेद होता है।

32. 'वीर रस' का स्थायीभाव है—

(a) स्फूर्ति (b) युद्ध
(c) उत्साह (d) विरक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'निर्वेद' किस रस का स्थायीभाव है?

(a) करुण रस (b) शान्त रस
(c) अद्‌भुत रस (d) भयानक रस

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'वीरों का कैसा हो बसन्त' में किस रस की सृष्टि हुई है?

(a) वीर रस (b) श्रृंगार रस
(c) अद्‌भुत रस (d) वीभत्स रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. दुर्गेश नंदिनी ने 'क्रान्ति की गायिका : सुभद्रा कुमारी चौहान' नामक लेख में सुभद्रा जी की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में लिखा है ''सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताएँ क्रान्ति के जयघोष से गुंजरित हो रही हैं। 'वीरों का कैसा हो बसन्त' कविता में भारतीय इतिहास के वीर पुरुषों एवं घटनाओं का नाम लेकर लंका और कुरुक्षेत्र का स्मरण कर त्रेता एवं द्वापर युग की वीरता के महत्व का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि बसन्त पर्व को रक्त पर्व के रूप में मनाया जाना चाहिए''। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त पंक्ति में वीर रस है।

35. किस रस का संचारीभाव उग्रता, गर्व, हर्ष आदि हैं?

(a) श्रृंगार (b) वीर
(c) वात्सल्य (d) रौद्र

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वीर रस का स्थायीभाव उग्रता, गर्व, हर्ष आदि होता है। यही परिपक्व होकर 'उत्साह' बनता है।

36. वीभत्स रस का स्थायीभाव है-

(a) शोक (b) विस्मय
(c) जुगुप्सा (d) अद्‌भुत

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

वीभत्स रस का स्थायीभाव 'जुगुप्सा' होता है। जब जुगुप्सा नामक स्थायी भाव, विभाव आदि भावों की परिपक्वता होती है, तब यह रस उत्पन्न होता है। शोक, करुण रस का स्थायी भाव है। इसी प्रकार विस्मय, अद्‌भुत रस का स्थायीभाव है।

37. किस रस का स्थायीभाव 'जुगुप्सा' है?

(a) भयानक (b) वीभत्स
(c) अद्‌भुत (d) वीर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'वीभत्स' रस का स्थायीभाव है-

(a) विस्मय (b) विशेषोक्ति
(c) जुगुप्सा (d) निर्वेद

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायीभाव है?
(a) वीभत्स (b) करुण
(c) अद्‌भुत (d) शान्त
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'जुगुप्सा' का स्थायीभाव होता है-
(a) वीर रस का (b) रौद्र रस का
(c) अद्‌भुत रस का (d) वीभत्स रस का
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. अद्‌भुत रस का स्थायीभाव है-
(a) जुगुप्सा (b) क्रोध
(c) विस्मय (d) निर्वेद
P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

अद्‌भुत रस का स्थायीभाव विस्मय/आश्चर्य होता है। जुगुप्सा, वीभत्स रस का स्थायीभाव है। इसी प्रकार क्रोध तथा निर्वेद क्रमशः रौद्र एवं शान्त रस के स्थायीभाव हैं।

42. 'अद्‌भुत रस' का स्थायीभाव क्या है?
(a) विस्मय (b) क्रोध
(c) उत्साह (d) जुगुप्सा
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. विस्मय या आश्चर्य किस रस का स्थायीभाव है?
(a) वीर रस (b) हास्य रस
(c) अद्‌भुत रस (d) रौद्र रस
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'शान्त रस' का स्थायीभाव है-
(a) रति (b) शोक
(c) निर्वेद (d) विस्मय
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

शान्त रस का स्थायीभाव शम/निर्वेद होता है। रति, शोक तथा विस्मय क्रमशः शृंगार, करुण तथा अद्‌भुत रस के स्थायी भाव हैं।

45. 'निर्वेद' स्थायीभाव है-
(a) रौद्र रस का (b) शान्त रस का
(c) करुण रस का (d) भयानक रस का
T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. ''राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परिछाँहि।''
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?
(a) हास्य (b) करुण
(c) शान्त (d) शृंगार
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

प्रस्तुत पंक्तियों में शृंगार रस है। यहाँ राम आलम्बन, सीता आश्रय, कंकन के नग में परछाई देखना उद्दीपन, राम की परछाई को देखना आदि अनुभाव, स्तम्भ, हर्ष आदि संचारीभाव स्थायीभाव रति हैं, जो इन सबसे पुष्ट होकर संयोग शृंगार रस का परिपाक करता है।

47. शृंगार रस का स्थायीभाव है-
(a) शोक (b) रति
(c) हास (d) उत्साह
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

शृंगार रस का स्थायीभाव रति/प्रेम होता है। जहाँ नायक तथा नायिका के सौन्दर्य तथा प्रेम सम्बन्धी वर्णन किया जाता है, वहाँ शृंगार रस होता है। इसके दो भेद हैं–संयोग शृंगार तथा वियोग अथवा विप्रलम्भ शृंगार।

48. शृंगार रस का स्थायीभाव है-
(a) रति (b) हास
(c) शोक (d) निर्वेद
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. ''मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई
जा के सिर मौर मुकुट मेरो पति सोई।।''
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?
(a) शृंगार रस (b) हास्य रस
(c) करुण रस (d) शान्त रस
T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में शृंगार रस का वर्णन है। यह पंक्ति मीराबाई द्वारा रचित है। जिन्होंने श्रीकृष्ण को पति के रूप में स्वीकार करते हुए इन पंक्तियों की रचना की है।

50. विप्रलम्भ शृंगार में वियोग की कितनी दशाएँ मानी गयी हैं?

(a) 10 (b) 12

(c) 14 (d) 16

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

विप्रलम्भ शृंगार में वियोग की 10 दशाएँ मानी गयी हैं, जो इस प्रकार हैं- 1. अभिलाषा, 2. चिन्ता, 3. गुणकथन, 4. स्मृति, 5. उद्वेग, 6. प्रलाप, 7. उन्माद, 8. व्याधि, 9. जड़ता और 10. मरण।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अग्निपुराण' में अन्य रसों को शृंगार रस का भेद माना गया है।
- केशव, देव आदि आचार्यों ने शृंगार रस को 'रसराज' माना है।
- देव ने शृंगार में सभी रसों को बिम्बित माना है।

51. किस रस को 'रसराज' की संज्ञा दी गई है?

(a) करुण (b) वात्सल्य

(c) शृंगार (d) रौद्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. किस रस का संचारी उद्दीपन विभाव बादल की घटाएँ, कोयल का बोलना, बसन्त ऋतु आदि होते हैं?

(a) शृंगार (b) वात्सल्य

(c) अद्भुत (d) शान्त

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

शृंगार रस का उद्दीपन विभाव बादल की घटाएँ, कोयल का बोलना, बसन्त ऋतु, उद्यान, कुंज, चन्द्रिका, नायक-नायिका की प्रेम चेष्टाएँ आदि हैं। आलम्बन हर्ष, लज्जा, उत्सुकता आदि संचारीभाव हैं।

53. 'फाड़ि नखन शव आंतड़िन, रुधिर मवाद निकारि।
लेपति अपने मुखनि पै, हरसि प्रेतगन नारि।।'
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा स्थायीभाव है?

(a) भय (b) जुगुप्सा

(c) विस्मय (d) निर्वेद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियों में वीभत्स रस है, जिसका स्थायीभाव जुगुप्सा (घृणा) है। जहाँ किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान या दृश्य को देखकर घृणा (जुगुप्सा) मन में उत्पन्न हो, वहाँ वीभत्स रस होता है।

54. 'विंध्य के वासी उदासी तपोव्रत धारी महाबिनु नारि दुखारें'।
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

(a) शृंगार (b) करुण

(c) हास्य (d) वीर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति में हास्य रस है। इस पंक्ति का अर्थ है कि विंध्य के तपस्वी वासी नारी के बिना काफी दु:खी हैं।

55. आधा पात बबूल का, तामें तनिक पिसान।
लाला जी करने लगे, छठे छमासे दान।।
उपर्युक्त दोहे में कौन-सा रस है?

(a) शृंगार (b) वीर

(c) करुण (d) हास्य

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त दोहे में हास्य रस है। जहाँ किन्हीं विचित्र स्थितियों या परिस्थितियों द्वारा हँसी उत्पन्न होती हो, वहाँ हास्य रस होता है। इसका स्थायीभाव 'हास' होता है।

56. जौ तुम्हार अनुशासन पावौं।
कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।।
काँचो घट डारौं फोरी।
रोकौं मेरु मुलक जिमि तोरी।।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

(a) वीर रस (b) रौद्र रस

(c) हास्य रस (d) अद्भुत रस

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। अपना शत्रु, दुष्ट व्यक्ति, समाजद्रोही, खलनायक आदि इसमें आलम्बन विभाव होते हैं तथा उनके कार्य या चेष्टाएँ उद्दीपन। आँखें लाल होना, दाँत पीसना, ओंठ काटना, अस्त्र-शस्त्र उठाना आदि इस रस में अनुभाव होते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण के क्रोध के भाव को प्रकट किया गया है। अतः यहाँ रौद्र रस है।

57. ''राग है कि, रूप है कि
रस है कि, जस है कि
तन है कि, मन है कि
प्राण है कि, प्यारी है''
उपर्युक्त पंक्तियों में रस है—

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

(a) शृंगार (b) वात्सल्य
(c) अद्‌भुत (d) शान्त

उपर्युक्त पंक्तियों में अद्‌भुत रस है। जहाँ सुनी अथवा अनसुनी वस्तु/व्यक्ति/स्थान के विचित्र एवं आश्चर्यजनक रूप को देखकर विस्मय हो, वहाँ अद्‌भुत रस होता है। इसका स्थायीभाव विस्मय होता है।

58. केसव कहि न जाय का कहिये'।
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये।
उपर्युक्त पंक्तियों में है-

(a) भक्ति रस (b) शान्त रस
(c) करुण रस (d) अद्‌भुत रस

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जहाँ किसी असाधारण अपूर्व अलौकिक वस्तु, जीव इत्यादि को देखकर हृदय में विशेष प्रकार का सुखद, कौतूहल (विस्मय) आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो, तो वहाँ अद्‌भुत रस होता है। उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास दास कृत 'विनय पत्रिका' से उद्धृत है, जिसमें यह भाव प्रतीत होता है। अतः इन पक्तियों में अद्‌भुत रस है।

59. ''समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती आनन्द अखंड घना था।।''
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है?

(a) शृंगार रस (b) करुण रस
(c) शान्त रस (d) भयानक रस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

मन में संयम, शान्ति या वैराग्य को जागृत करने वाले प्रसंगों के चित्रण में शान्त रस होता है। शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद या वैराग्य है।

60. दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही ।
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

(a) करुण रस (b) शृंगार रस
(c) अद्‌भुत रस (d) वीभत्स रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों में करुण रस है। इन पंक्तियों के माध्यम से सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी पुत्री 'सरोज' की मृत्यु के उपरान्त पूरी करुणा को उड़ेल दिया है।

61. ''अभी तो मुकुट बंधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल,
खिले थे चुम्बन-शून्य कपोल,
हाय रुक गया यहीं संसार
बना सिन्दूर अनल अंगार
वातहत लतिका वह सुकुमार
पड़ी है छिन्नाधार।''
में निहित रस है-

(a) शान्त (b) संयोग शृंगार
(c) करुण (d) वियोग शृंगार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अत्यन्त दुःखद घटना या प्रसंग के निरूपण से करुण रस की उत्पत्ति होती है। करुण रस का स्थायीभाव 'शोक' है। मूर्च्छित होकर गिर पड़ना, रोना, आहें भरना आदि इसके अनुभाव होते हैं। कवि सुमित्रानन्दन पन्त की उपर्युक्त पंक्तियों में सुखमय संसार के अचानक नष्ट हो जाने से जन्मीं गहरी निराशा व्यक्त हुई है। इन पंक्तियों में नववधू का प्रियतम विवाह के बाद पहले ही दिन काल-कवलित हो जाता है। यहाँ नववधू-आश्रय, दिवंगत पति-विषय, नायिका का दुःख में मौन रह जाना-अनुभाव है। विषाद, चिन्ता, लज्जा आदि संचारी भाव हैं। उनके संयोग से यहाँ करुण रस व्यक्त हुआ है।

62. मन की उत्तप्त वेदना, मन ही मन में बहती थी।
चुप रहकर अन्तर्मन में, कुछ मौन व्यथा कहती थी।।
दुर्गम पथ पर चलने का, वो सम्बल छूट गया था।
अविचल, अविकल वह प्राणी, भीतर से टूट गया था।।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस अभिव्यंजित हो रहा है?

(a) शान्त (b) वियोग शृंगार
(c) करुण (d) वात्सल्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में दुःखद घटना का प्रसंग है, अतः करुण रस है।

यूथ प्रतियोगिता दर्पण

63. निम्न पंक्तियों में किस रस का निरूपण हुआ है?

एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृगराय।

बिकल बटोही बीच ही परयो मूरछा खाय।।

(a) भयानक रस

(b) अद्‌भुत रस

(c) हास्य रस

(d) वीभत्स रस

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

भानुदत्त ने 'रसतरंगिणी' में भयानक रस के दो भेद किये हैं- स्वनिष्ठ और परनिष्ठ। स्वनिष्ठ भयानक रस वहाँ होता है, जहाँ भय का आलम्बन स्वयं आश्रय में रहता है और परनिष्ठ भयानक रस वहाँ होता है, जहां भय का आलम्बन आश्रय में वर्तमान न होकर उससे बाहर, पृथक होता है अर्थात् आश्रय स्वयं अपने किये अपराध से ही डरता है। प्रस्तुत पंक्तियों में अजगर और सिंह आलम्बन हैं। उन दोनों जीवों की भयानक आकृति तथा चेष्टाएँ उद्दीपन हैं, स्वेद, कम्प, रोमांच आदि संचारी भाव हैं और मूर्छा आदि अनुभाव हैं। इन सबसे भय स्थायी पुष्ट होकर भयानक रस की प्रतीति कराता है। यहाँ परनिष्ठ भयानक रस का उदाहरण है।

64. 'सोहत कर नवनीत लिये

घुटुरुन चलत रेनु तन मण्डित, मुख दधि लेप किये।

उपर्युक्त पंक्तियों में रस है-

(a) शृंगार (b) रौद्र

(c) शान्त (d) वात्सल्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जब अपने या पराये बालक को देखकर या सुनकर उसके प्रति मन में एक सहज आकर्षण या बाल-रति का भाव उमड़ता है, तो वहाँ वात्सल्य रस होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीकृष्ण के रूप का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि वे घुटनों के बल चलने लगे हैं, उनके हाथों में मक्खन है, मुँह पर दही लगा है, शरीर मिट्टी से लिपटा है। यहाँ पर उनके आकर्षक रूप का वर्णन है। अतः वात्सल्य रस है।

65. मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोई।

जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होई।।

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा रस है?

(a) भक्ति रस (b) शृंगार रस

(c) अद्‌भुत रस (d) वीर रस

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में भक्ति रस है। बिहारी मूलतः शृंगारी कवि हैं। उनकी भक्ति भावना राधा-कृष्ण के प्रति है और वह जहाँ-तहाँ ही प्रकट हुई है। सतसई के आरम्भ में मंगला-चरण का उपर्युक्त दोहा राधा के प्रति उनके भक्ति-भाव का ही परिचायक है। उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, जबकि कई पुस्तकों एवं कृतियों में उपर्युक्त पंक्ति को भक्ति विषयक माना गया है।

66. 'भारती वृत्ति' का सम्बन्ध किस रस से है?

(a) शृंगार

(b) वीर

(c) करुण

(d) अद्‌भुत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

'भारती वृत्ति' का सामान्य अर्थ है-वाग्व्यापार। प्रस्तावना में भारती वृत्ति होती है। इसका आशय यही है कि प्रस्तावना में वाग्व्यापार की प्रधानतः प्रयोजनीय होता है। भरतमुनि ने वृत्तियों को काव्य-माताएँ की संख्या दी है। विश्वनाथ ने भी इसका समर्थन किया है। ये वृत्तियाँ चार प्रकार की हैं- सात्त्वती, भारती, कैशिकी और आरभटी।

(I) कैशिकी वृत्ति- यह बड़ी मनोहर वृत्ति है। इसका सम्बन्ध शृंगार और हास्य से है। इसकी उत्पत्ति सामवेद से मानी गई है।

(II) सात्त्वती वृत्ति- इस वृत्ति का सम्बन्ध शौर्य, दान, दया, दाक्षिण्य से है। इसमें वीरोचित कार्य रहते हैं। इसका सम्बन्ध वीर रस है और इसमें थोड़ा रौद्र और अद्‌भुत का भी समावेश रहता है।

(III) आरभटी वृत्ति-माया इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, संघर्ष, आघात-प्रतिघात और बंधनादि से युक्त यह वृत्ति रौद्र रस के वर्णन में काम आती है। इस वृत्ति की उत्पत्ति अथर्ववेद से बतालाई गई है।

(IV) भारती वृत्ति- इसमें स्त्रियाँ वर्जित रहती हैं। इसका सम्बन्ध पुरुष नटों या भरतों से है। इसलिए भी यह भारती कहलाती है। इसका सम्बन्ध शब्दों से है। साहित्यदर्पणकार का मत है कि सब रसों में भारती वृत्ति काम आती है। भरतमुनि ने उसका सम्बन्ध करुण और अद्‌भुत से बतलाया है। इसके विषय में भारतेन्दु जी लिखते हैं कि यह केवल वीभत्स में ही काम आती है। भारती वृत्ति का सम्बन्ध नाटक के आरंभिक कृत्यों से भी रहता है। भरतमुनि ने इस वृत्ति की उत्पत्ति ऋग्वेद से बतलाई है।

वृत्तियों का रसों से सम्बन्ध बतलाने वाला श्लोक इस प्रकार है-

'शृंगारे, कैशिकी, वीरे सात्त्वत्यारभटी पुनः।'

रसे रौद्रे च वीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती।।'

छन्द

1. 'छन्दशास्त्र' के प्रणेता आचार्य माने जाते हैं—

(a) पतंजलि (b) पिंगल

(c) पाणिनि (d) मनु

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

छन्दशास्त्र के प्रणेता आचार्य पिंगल माने जाते हैं। छन्द का दूसरा नाम पिंगल है। पिंगलाचार्य के 'छन्दसूत्र' में छन्द का सुसम्बद्ध वर्णन होने के कारण इसे 'छन्दशास्त्र' का आदि ग्रन्थ माना जाता है। इसी आधार पर 'छन्दशास्त्र' को 'पिंगलशास्त्र' भी कहते हैं। छन्दशास्त्र आठ अध्यायों का एक सूत्र ग्रन्थ है। अग्निपुराण में भी पिंगल पद्धति पर आधारित छन्दशास्त्र का पूर्ण विवरण है।

2. इनमें से कौन-सी छन्दशास्त्र की प्रथम पुस्तक है?

(a) काव्य प्रकाश (b) छन्द सूत्र

(c) रसिक प्रिया (d) छन्द प्रभाकर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. अपभ्रंश काव्य का सुप्रसिद्ध छन्द कौन-सा है?

(a) कडवक (b) पद्धरि

(c) रास (d) इहा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

अपभ्रंश काव्य के बहुप्रचलित पज्झटिका, अरिल्ल और उनसे बने कडवक आदि थे, जो हिन्दी के आदिकालीन साहित्य में दोहे के समान लोकप्रिय नहीं हुए। अरिल्ल के स्थान पर हिन्दी में चौपाई का प्रयोग बढ़ा। कथाकाव्यों में इसकी प्रतिष्ठा देखी जा सकती है। इसकी लोकप्रियता को देखकर ही भक्तिकाल में जायसी और तुलसीदास ने आदिकाल का ऋण स्वीकार किया है। चौपाई के साथ दोहा रख कर 'कडवक' बनाने की जो प्रथा सिद्धों ने अपनी रचनाओं में आरम्भ की, उसी को आगे चलकर उक्त दोनों महाकवियों ने अपने काव्यों की मुख्य शैली बना लिया। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आदिकालीन रासो काव्यों में वीर रस की व्यंजना के लिए छप्पय, तोटक, तोमर, पद्धरि और नाराच का प्रयोग अधिक किया गया। इनमें से कुछ छन्द अपभ्रंश में भी प्रयुक्त हो रहे थे।
- आदिकाल में छन्द के अतिरिक्त कथा कहने के ढंग की कुछ शिल्प-पद्धतियाँ प्रचलित रहीं । इनमें कथानक-रूढ़ियों का महत्व है। रासो ग्रन्थों में इस प्रकार की रूढ़ियों का विशेष प्रयोग मिलता है। शुक, दूती, दैवी, शक्तियाँ आदि इन रूढ़ियों के साधन रहे हैं। ये रूढ़ियाँ अपभ्रंश-साहित्य में भी मिलती हैं।
- अपभ्रंश और हिन्दी दोनों में दोहा-शैली का प्रयोग एक ही स्रोत से आरम्भ हुआ। दोहा छन्द अपभ्रंश में जनभाषा से ही लिया गया था, इसलिए इस छन्द को हिन्दी का मुख्य छन्द मानना चाहिए।

4. मात्रा की दृष्टि से दोहा के ठीक विपरीत होता है-

(a) रोला (b) छप्पय

(c) चौपाई (d) सोरठा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

मात्रा की दृष्टि से दोहा के ठीक विपरीत सोरठा होता है। सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इस छन्द में दोहे के द्वितीय चरण को प्रथम और प्रथम को द्वितीय तथा तृतीय को चतुर्थ और चतुर्थ को तृतीय कर देने से बन जाता है। इस छन्द के विषम चरणों में 11 मात्राएँ और सम चरणों में 13 मात्राएँ होती हैं। तुक प्रथम और तृतीय चरणों में होती है।

जैसे-

। । । । ऽ । । ऽ । । । । । । । । । ऽ । । ।

रघुपति बानकृसानु, निसिचर निकर पतंग सम ।

। ऽ । ऽ । । ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ । । ।

जरे निसाचर जानु, जननी हृदय धीर धरु ।।

5. किस अर्द्धसम मात्रिक छन्द के विषम पदों में 11-11 तथा सम पदों में 13-13 मात्राएँ होती हैं?

(a) सोरठा (b) रोला

(c) चौपाई (d) दोहा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **दोहा छन्द का विपरीत कौन-सा छन्द होता है?**

(a) सोरठा (b) दोहा

(c) चौपाई (d) कुण्डलियाँ

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **मात्रा-क्रम की दृष्टि से दोहा के ठीक विपरीत पड़ने वाले छन्द का नाम है-**

(a) रोला (b) चौपाई

(c) सोरठा (d) हरिगीतिका

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **निम्नलिखित में से कौन-सा छन्द दोहा का विपरीत छन्द है?**

(a) रोला (b) छप्पय

(c) चौपाई (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।।

9. **''जिहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर बदन।**
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।''
उपर्युक्त पंक्तियों में छन्द है-

(a) दोहा (b) सोरठा

(c) बरवै (d) रोला

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में सोरठा छन्द है। सोरठा छन्द के विषम चरणों में 11मात्राएँ और सम चरणों में 13 मात्राएँ होती हैं। तुक प्रथम और तृतीय चरणों में होती है। **जैसे-**

। । । । । । । । S । । । S । । । । । । । ।
जिहि सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन।
। । । । । S । S । । S S । । । । । । । ।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ।।

10. **वह सम मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ हों तथा प्रत्येक चरण में 11वीं एवं 13वीं मात्रा पर यति होती हो, कौन-सा छन्द कहा जायेगा?**

(a) रोला (b) सोरठा

(c) सवैया (d) कवित्त

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

रोला सम मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 और 13 मात्राओं पर यति ही अधिक प्रचलित है। इसके प्रत्येक चरण के अन्त में दो गुरु या दो लघु वर्ण होते हैं। दो-दो चरणों में तुक आवश्यक है। **जैसे-**

S । । । । । । S । । S । । S । । S S
जो जगहित पर प्राण, निछावर है कर पाता।।
। । S । । S । S S । । । S । । S S
जिसका तन है किसी, लोकहित में लग जाता ।।

11. **रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर।**
जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लगिहें बेर।।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?

(a) दोहा (b) सोरठा

(c) रोला (d) चौपाई

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों में 13 मात्राएँ और सम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं। यति चरण के अन्त में होती है। विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए। सम चरणों के अन्त में लघु होना चाहिए। यह 24 मात्राओं वाला छन्द है। प्रस्तुत छन्द दोहा है, जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है। **जैसे—**

। । । । । । S S । S S । । । । S S ।
रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर।
। । S S । । S । S । । । । । । S S ।
जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लगिहें बेर ।।

12. **'दोहा' किस प्रकार का छन्द है?**

(a) सममात्रिक (b) विषम मात्रिक

(c) संस्कृत वृत (d) अर्द्धसम-मात्रिक

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **मात्रिक अर्द्धसम जाति का छन्द है-**

(a) रोला (b) दोहा

(c) चौपाई (d) कुण्डलियाँ

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।**
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।
इस पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?

(a) दोहा (b) रोला
(c) चौपाई (d) बरवै

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में दोहा छन्द है। दोहा में प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

15. **जिस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं, साथ ही सम चरणों के अन्त में जगण (। ऽ ।) होता है, वह छन्द है-**

(a) मालिनी (b) बरवै
(c) रोला (d) इन्द्रवज्रा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

बरवै अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 12-12 मात्राएँ और सम चरणों (द्वितीय और चतुर्थ) में 7-7 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण या तगण आने से इस छन्द में मिठास बढ़ती है। यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है। इसके प्रत्येक चरण में 19 मात्राएँ होती हैं। **जैसे—**

ऽ। ऽ। ।। ऽ।। ।ऽ ।ऽ।
वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।
।।। ।ऽ।। ऽ ।। ।।। ।ऽ।
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार।।

16. **किस छन्द में बारह और सात की यति से कुल उन्नीस मात्राएँ होती हैं?**

(a) सोरठा (b) दोहा
(c) चौपाई (d) बरवै

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. **अवधी का निजी छन्द है-**

(a) बरवै (b) कवित्त
(c) रोला (d) छप्पय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

अवधी का प्राणप्रिय छन्द 'बरवै' है। बरवै बड़ा सुन्दर छन्द है, किन्तु आधुनिक कविता में इसका प्रयोग बहुत कम हो गया है। यह एक मात्रिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं। इसके विषम यानी कि पहले और तीसरे चरणों में 12 मात्राएँ और सम यानी दूसरे और चौथे चरणों में 7 (सात) मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण यानी लघु, दीर्घ, लघु मात्राएँ होती हैं। रहीम के एक बरवै द्वारा इसे समझा जा सकता है। **जैसे—**

आगि लाग घरु बरिगा, अति भल कीन।
साजन हाथ घैलना, भरि-भरि दीन।।

अर्थात् आग लग गई, घर जल गया। यह बड़ा अच्छा हुआ, क्योंकि साजन के हाथों में पानी भर-भर के घड़े देने का मौका मिला।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बरवै छन्द के प्रणेता अकबर के नवरत्नों में से एक महाकवि अब्दुर्रहीम खानखाना 'रहीम' कहे जाते हैं।
- किंवदन्ती है कि रहीम का कोई सेवक अवकाश लेकर विवाह करने गया। वापस आते समय उसकी विरहाकुल नवोढ़ा पत्नी ने उसके मन में अपनी स्मृति बनाये रखने के लिए दो पंक्तियाँ लिखकर दीं। रहीम का साहित्य प्रेम सर्व विदित था, सो सेवक ने वे पंक्तियाँ रहीम को सुनायी। सुनते ही रहीम चकित रह गये। पंक्तियों में उन्हें ज्ञात छन्दों से अलग गति-यति का समायोजन था। सेवक को ईनाम देने के बाद रहीम ने पंक्ति पर गौर किया और मात्रा गणना कर उसे 'बरवै' नाम दिया। मूल पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-
  प्रेम प्रीति कौ बिरवा, चले लगाइ।
  सीजन की सुधि लीज्यौ, मुरझि न जाइ....।
- रहीम ने बरवै छन्द का प्रयोग कर 'बरवै नायिका भेद' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- रहीम के समकालिक महाकवि तुलसीदास को भी बरवै छन्द प्रिय था, जिसका प्रयोग उन्होंने अपनी अमर काव्यकृति 'बरवै रामायण' में किया है।
- बरवै के विषम चरण (प्रथम तथा तृतीय) में 13 तथा सम चरण (द्वितीय तथा चतुर्थ) में 7 मात्राएँ रखने का विधान है। विषम चरण में 12 मात्राएँ (भोजपुरी में बरवै मात्राएँ) होने से सम्भवतः यह छन्द बरवै कहलाया।

18. **'अवधि-शिला का उर पर, था गरु भार।**
तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार।।
इस उद्धरण में प्रयुक्त छन्द है—

(a) दोहा (b) सोरठा
(c) बरवै (d) गीतिका

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

| | | | S S | | | | S | | S |
' अवधि-शिला का उर पर, था गरु भार।
| | | | S | | S S | | | | S |
तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार।।
उपर्युक्त पंक्तियों के प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ हैं। अतः यह 'बरवै' है।

19. 'अराति-सैन्य सिन्धु में सुबाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बना, बढ़े चलो, बढ़े चलो।।'
में कौन-से गण हैं?

(a) जगण रगण जगण रगण जगण गुरु
(b) रगण जगण तगण तगण जगण गुरु
(c) रगण रगण जगण जगण मगण गुरु
(d) मगण भगण नगण तगण तगण गुरु

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियों में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण, गुरु नामक गण हैं। जगण में मध्य 'गुरु' होता है, रगण में मध्य लघु होता है और अन्त में 'गुरु' होता है। गुरु का चिह्न 'S' तथा लघु का चिह्न'।' होता है।

20. चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं-

(a) 11 (b) 13
(c) 16 (d) 15

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

चौपाई मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में जगण (ISI) और तगण (SSI) का आना वर्जित है। तुक पहले चरण की दूसरे से और तीसरे की चौथे से मिलती है। **जैसे-**
| | S | | S | | | | S S | | | | | | | | S | | S S
नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं ।।
| S S | S | | | | S S S | | | | | | S | | S S
बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुनगन गावन लागे ।।

21. चौपाई छन्द में कितनी मात्रा होती है?

(a) ग्यारह (b) बारह
(c) सोलह (d) अठारह

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'चौपाई' छन्द में मात्राओं की संख्या होती है-

(a) 13 (b) 11
(c) 16 (d) 24

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।।
इस पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?

(a) दोहा (b) चौपाई
(c) सोरठा (d) सवैया

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में चौपाई छन्द है। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और अन्त में 'गुरु' के बाद लघु नहीं होता अर्थात् पाद के अन्त में ऐसा लघु वर्ण न आवे जिसके पूर्व का वर्ण गुरु हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अरिल्ल, सममात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और 8-8 पर विराम होता है। अन्त में दो लघु या एक लघु के बाद दो गुरु होते हैं।

24. 'मंगल करनि, कलि मल हरनि, तुलसी कथा, रघुनाथ की'। उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा छन्द है?

(a) चौपाई (b) हरिगीतिका
(c) रोला (d) मालिनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

S | | | | | | | | | | | | | | S | S | | S | S
'मंगल करनि, कलि मल हरनि, तुलसी कथा, रघुनाथ की।'
पंक्ति में हरिगीतिका छंद है। यह एक सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 और 12 अथवा 14 और 14 पर यति से 28 मात्राएँ होती हैं। अंतिम में गुरु होते हैं।

25. हम जो कुछ देख रहे हैं,
सुन्दर है सत्य नहीं है।
यह दृश्य जगत भासित है,
बिन कर्म शिवत्व नहीं है।।
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में निम्नलिखित में से कौन-सा छन्द है?

(a) चौदह-चौदह मात्राओं की यति से 28 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।
(b) दस-दस वर्णों की यति से 20 वर्णों वाला वार्णिक छन्द है।

सम-सामयिक घटना चक्र

(c) तेरह-तेरह मात्राओं की यति से 26 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।

(d) पन्द्रह-पन्द्रह मात्राओं की यति से 30 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में हरिगीतिका मात्रिक छन्द है। इसमें 14-14 मात्राओं की यति पर कुल 28 मात्राओं के सम चरण और चरणान्त में लघु-गुरु का प्रयोग ही प्रचलित है। **जैसे-**

। । ऽ । । ऽ। ।ऽ ऽ ।ऽ। ऽ ।ऽ ।ऽ ऽ
हम जो कुछ देख रहे हैं, सुन्दर है सत्य नहीं है।
। । ।ऽ । । । ऽ। । ऽ । । ।ऽ । ।ऽ ।ऽ ऽ
यह दृश्य जगत भासित है, बिन कर्म शिवत्व नहीं है।।

26. निम्न में से कौन वार्णिक छन्द है?

(a) दोहा (b) चौपाई

(c) सवैया (d) रोला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सवैया एक वार्णिक समवृत्त छन्द है। इसके एक चरण में 22 से लेकर 26 तक अक्षर होते हैं। इसके कई भेद हैं। यथा-मत्तगयन्द, सुन्दरी, मदिरा दुर्मिल, सुमुखि, किरीट गंगोदक, मुक्तहरा, वाम, अरविन्द, मानिनी, महाभुजंगप्रयात तथा सुखी आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ वर्ण और मात्रा के विचार से छन्द के चार भेद होते हैं- (1) वार्णिक छन्द, (2) मात्रिक छन्द, (3) वार्णिक वृत्त और (4) मुक्तक छन्द।

➲ केवल वर्ण गणना के आधार पर रचा गया छन्द वार्णिक छन्द कहलाता है। इसके दो भेद होते हैं- (1) साधारण और (2) दण्डक। 1 से 26 वर्ण तक के चरण रखने वाले वार्णिक छन्द साधारण तथा इससे अधिक वर्ण रखने वाले दण्डक कहलाते हैं।

➲ वार्णिक वृत्त उस सम छन्द को कहते हैं, जिसमें चार समान चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में आने वाले वर्णों का लघु-गुरु क्रम सुनिश्चित होता है।

➲ मात्रा और गणना पर आधारित छन्द मात्रिक छन्द कहलाता है।

27. वार्णिक छन्दों में किसका विचार होता है?

(a) वर्ण का (b) मात्रा और वर्ण का

(c) मात्रा का (d) वर्ण की गुरुता का

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. वार्णिक छन्दों में गण कितने प्रकार के होते हैं?

(a) चार (b) सात

(c) आठ (d) दस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

तीन वर्णों को मिलाकर एक 'गण' बनता है। गणों की कुल संख्या आठ मानी गई है। इसे आसानी से याद करने का प्रसिद्ध सूत्र पिंगल के छन्दशास्त्र का है-यामाताराजभानसलगा। इस सूत्र में प्रथम आठ गणों- यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण के नाम आ गए हैं। अंतिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' छन्दशास्त्र में 'दशाक्षर' कहलाते हैं।

29. गणों की सही संख्या है -

(a) आठ (b) नौ

(c) दस (d) ग्यारह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा वार्णिक छन्द है?

(a) छप्पय (b) सोरठा

(c) उपेन्द्रवज्रा (d) रोला

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

जिन छन्दों की पहचान हेतु वर्णों के क्रम का विचार कर उसी आधार पर वर्णों की गणना की जाती है और वर्णों की संख्या क्रम तथा स्थान इत्यादि निश्चित रहते हैं। वार्णिक छन्द कहलाते हैं। इस श्रेणी में हरिगीतिका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा तथा सवैया इत्यादि आते हैं। वार्णिक छन्द के तीन प्रकार होते हैं- सम, अर्ध-सम तथा विषम।

31. "मैं राज्य की चाह नहीं करूंगा।
है जो तुम्हें इष्ट वहीं करूंगा।
संतान जौ-सत्यवती जनेगी।
राज्याधिकारी वह ही बनेगी।।"
—पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द है

(a) इन्द्रवज्रा (b) उपेन्द्रवज्रा

(c) वसंततिलका (d) हरिगीतिका

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण एवं एक जगण के साथ दो गुरु के क्रम में कुल 11 वर्ण होते हैं।

मैं राज्य की चाह नहीं करूंगा।
है जो तुम्हें इष्ट वहीं करूंगा।
संतान जो सत्यवती जनेगी।
राज्याधिकारी वह ही बनेगी।

प्रस्तुत छन्द के प्रत्येक पंक्ति में 11 वर्ण हैं। अतः यह इन्द्रवज्रा है।

32. मात्रिक छन्दों में मात्रा कितने प्रकार की होती है?

(a) तीन (b) दो
(c) चार (d) पाँच

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

किसी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय की अवधि को मात्रा कहा जाता है। 'कल', 'कला', 'मन्ता' और 'मन्त' मात्रा के पर्यायवाचक शब्द हैं। इसके भी दो प्रकार हैं- ह्रस्व या लघु तथा दीर्घ या गुरु। लघु मात्रा में 1 मात्रा मानी जाती है। इसका संकेत चिह्न (।) है। दीर्घ मात्रा में 2 मात्रा मानी जाती है। इसका संकेत चिह्न (ऽ) होता है, जिन्हें अवग्रह चिह्न भी कहते हैं।

33. निम्न में कौन मात्रिक छन्द है?

(a) दोहा (b) चौपाई
(c) रोला (d) ये सभी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, कुण्डलियाँ, छप्पय, हरिगीतिका, उल्लाला, गीतिका, बरवै इत्यादि मात्रिक छन्द हैं।

34. केवल मात्रिक छन्द किस विकल्प में हैं, छाँटिए—

(a) दोहा, द्रुतविलम्बित, सवैया (b) सोरठा, इन्द्रवज्रा, मन्दाक्रान्ता
(c) चौपाई, दोहा, रोला (d) मन्दाक्रान्ता, सवैया, चौपाई

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. ''या लकुटी अरु कामरिया पुर राज तिहूँ, पुर को तजि डारौ'' में प्रयुक्त छन्द है-

(a) कवित्त (b) सवैया
(c) बरवै (d) दोहा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में सवैया छन्द है। यह एक वार्णिक समवृत्त छन्द है। इसके एक चरण में 22 से लेकर 26 तक अक्षर होते हैं।

36. ''नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन'
और सुन्दरतानि के भेद को जानै।
....
भाषा प्रवीन सुछन्द सदा रहै,
सो घनजी के कवित्त बखानै।'
कवि प्रशस्ति में लिखा गया उक्त सवैया किसका है?

(a) ब्रजनाथ का (b) घनानन्द का
(c) ठाकुर का (d) बोधा का

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

घनानन्द और उनकी रचना की प्रशस्ति में ब्रजनाथ ने बखान करते हुए कहा है-
''नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन और सुन्दरतानि के भेद को जानै।
जोग-वियोग की रीति में कोवि भवना-भेद स्वरूप को ठानै।।
चाह के रंग में भीज्यो हियौ, बिछुरे-मिले प्रीतम सांतिन मानै।
भाषा प्रवीन सुछन्द सदा रहे, सो घनजी के कवित्त बखानै।''

37. मात्रिक विषम संयुक्त छन्द है-

(a) छप्पय (b) कुण्डलियाँ
(c) हरिगीतिका (d) सोरठा

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

कुण्डलियाँ मात्रिक विषम छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। दोहा और रोला छन्दों को मिलाने से यह छन्द बनता है। इस छन्द के प्रथम चरण की रचना दोहे के प्रथम और द्वितीय चरण को मिलाकर होती है। फिर दोहे के तृतीय और चतुर्थ चरण को मिलाने से इसका द्वितीय चरण बनता है। अन्त में रोले के चरण क्रमशः इसके तृतीय, चतुर्थ, पंचम और षष्ठम चरण बनते हैं। दोहे का चतुर्थ चरण रोले के प्रथम चरण में दुहराया जाता है और दोहे के प्रारम्भ का शब्द रोले के अन्त में आता है।

38. इनमें से किस छन्द में प्रथम व अन्तिम शब्द समान होता है?

(a) छप्पय (b) कुण्डलिनी
(c) इन्द्रवज्रा (d) उपजाति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'कुण्डलियाँ' विषम मात्रिक संयुक्त छन्द है। दोहा और रोला छन्दों को मिलाने से यह छन्द बनता है। इसमें 6 चरण होते हैं। इस छन्द में प्रथम दो पंक्तियाँ दोहा की एवं अन्तिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं। दोहे का अन्तिम चरण अर्थात् चौथा चरण रोले के प्रथम चरण में दुहराया जाता है तथा दोहे के प्रारम्भ का शब्द रोले के अन्त में आता है। प्रत्येक पंक्ति में 24-24 मात्राएँ होती हैं।

39. 'सरसी' छन्द में होता है-

(a) 27 मात्राएँ, 16, 11 पर यति, अन्त में लघु-गुरु

(b) 28 मात्राएँ, 16, 12 पर यति, अन्त में लघु-गुरु

(c) 28 मात्राएँ, 16, 12 पर यति, अन्त में गुरु-लघु

(d) 27 मात्राएँ, 16, 11 पर यति, अन्त में गुरु-लघु

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'सरसी' छन्द के प्रत्येक चरण में 27 मात्राएँ होती हैं। 16 और 11 पर यति होती है और छन्द के अन्त में (सम चरणान्त) गुरु-लघु होता है। पहली 16 मात्राओं की लय चौपाई की तरह तथा शेष 11 मात्राओं की लय दोहे के दूसरे चरण की तरह होती है।

40. अनुष्टुप है-

(a) एक छन्द (b) एक अलंकार

(c) एक रस (d) एक गुण

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'अनुष्टुप' एक छन्द है। जिस छन्द में पंचम अक्षर प्रत्येक चरण में लघु हो, परन्तु सप्तम अक्षर केवल दूसरे तथा चौथे चरण में लघु हो, षष्ठम अक्षर प्रत्येक चरण में गुरु हो, उसे पद्य कहते हैं। पद्य को ही श्लोक या अनुष्टुप भी कहते हैं।

41. घनाक्षरी छन्द है-

(a) मात्रिक (b) वार्णिक

(c) आक्षरिक (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

घनाक्षरी वार्णिक छन्द है। घनाक्षरी में 30 से लेकर 33 वर्णों का एक चरण होता है और 16-15 वर्णों पर प्रधान यति तथा समस्त चरण में 8, 8, 8,7 वर्णों पर साधारण यति होता है। अन्तिम वर्ण गुरु और चारों चरणों में समान तुक आवश्यक है।

42. छप्पय में होते हैं-

(a) प्रथम चार चरण रोला के और अन्तिम दो चरण उल्लाला के

(b) प्रथम दो चरण रोला के और अन्तिम चार चरण उल्लाला के

(c) प्रथम चार चरण चौपाई के और अन्तिम दो चरण दोहा के

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

छप्पय मात्रिक विषम और संयुक्त छन्द है। इस छन्द के छह चरण होते हैं। प्रथम चार चरण रोला के और शेष दो चरण उल्लाला के। प्रथम-द्वितीय और तृतीय-चतुर्थ के योग होते हैं। छप्पय में उल्लाला के सम-विषम चरणों का योग है। यह योग 15+13=28 मात्राओं वाला ही अधिक प्रचलित है। **जैसे—**

जहाँ स्वतन्त्र विचार न बदले मन में मुख में,
जहाँ न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में।
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो,
शान्तिदायिनी निशा, हर्षसूचक वासर हो।।
सब भाँति सुशासित हो जहाँ, समता के सुखकर नियम।।
बस उसी स्वशासित देश में, जगें हे जगदीश हम।।

43. किस छन्द में चार से अधिक चरण होते हैं?

(a) रोला (b) बरवै

(c) छप्पय (d) सोरठा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. निराला के अनुसार, 'हिन्दी में मुक्तकाव्य किस छन्द की बुनियादी पर सफल हो सकता है?

(a) रोला (b) दोहा

(c) चौपाई (d) कवित्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

निराला जी कवित्त छन्द को हिन्दी का जातीय छन्द मानते हैं-'हिन्दी में मुक्त काव्य कवित्त-छन्द की बुनियाद पर सफल हो सकता है। निराला के अनुसार, यह छन्द चिरकाल से इस जाति के कण्ठ का हार हो रहा है। यदि हिन्दी का 'जातीय छन्द' चुना जाय, तो वह यही होगा।

45. 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना-शैली है-

(a) दोहा-चौपाई शैली (b) बरवै शैली

(c) मसनबी शैली (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना दोहा-चौपाई शैली में की गयी है। दोहा अर्द्ध मात्रिक छन्द है। दोहा छन्द के विषम चरणों में 13 मात्राएँ और सम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं। चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

अलंकार

1. **अलंकारों की महत्ता के सम्बन्ध में इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है?**
   (a) अलंकारों से काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि होती है।
   (b) अलंकारों के बिना काव्य-रचना सम्भव नहीं है।
   (c) अलंकार काव्य-सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं।
   (d) अलंकारों से काव्य में रोचकता और प्रभविष्णुता आती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अलंकार काव्य सौन्दर्य उत्पन्न नहीं करते हैं, बल्कि काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं। अन्य विकल्प अलंकारों की महत्ता के सम्बन्ध में सही हैं।

2. **निम्नलिखित में से कौन-सा अलंकार-भेद नहीं है?**
   (a) शब्दालंकार
   (b) छन्दालंकार
   (c) अर्थालंकार
   (d) उभयालंकार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

अलंकार के तीन भेद माने जाते हैं- शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार। छन्दालंकार, अलंकार का भेद नहीं है।

❑ अनुप्रास अलंकार

1. **इनमें से जो अनुप्रास अलंकार का लक्षण न हो, उसे छाँटिए।**
   (a) शब्द के प्रारम्भ अथवा अन्त में वर्णों की आवृत्ति
   (b) एक या अनेक वर्णों की क्रमानुसार आवृत्ति
   (c) पंक्ति की सम्पूर्णतया आवृत्ति
   (d) एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

पंक्ति की सम्पूर्णतया आवृत्ति अनुप्रास अलंकार का लक्षण नहीं है। अन्य विकल्पों में अनुप्रास अलंकार के लक्षण हैं।

2. **'सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी' में कौन-सा अलंकार है?**
   (a) उत्प्रेक्षा (b) रूपक
   (c) अनुप्रास (d) व्यतिरेक

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

अनुप्रास शब्द 'अनु' तथा 'प्रास' शब्दों से मिलकर बना है। 'अनु' शब्द का अर्थ है-बार-बार तथा 'प्रास' का अर्थ है-वर्ण। जहाँ स्वर की समानता के बिना भी वर्णों की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति में 'स' तथा 'म' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो रही है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अनुप्रास के पाँच भेद होते हैं-
1. छेकानुप्रास, 2. वृत्यानुप्रास, 3. लाटानुप्रास, 4. श्रुत्यानुप्रास और 5. अन्त्यानुप्रास। इनमें तीन महत्वपूर्ण हैं-छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास और लाटानुप्रास।

➲ जहाँ कोई वर्ण केवल दो बार आये, वहाँ छेकानुप्रास होता है।

➲ जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति वृत्तियों के अनुसार हो, वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। वृत्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं-1.कोमला, 2.परुषा तथा 3. उपनागरिका।

➲ जिस रचना में य,र,ल,व, स आदि कोमल अक्षरों की प्रधानता हो, वहाँ कोमला,जहाँ ओज की व्यंजना करने वाले कठोर शब्द आएं, जैसे 'ट' वर्ग के वर्ण अथवा द्वित्य वर्ण वहाँ परुषा वृत्ति होती है। उपनागरिका वृत्ति में सानुनासिक वर्ण आते हैं।

➲ लाटानुप्रास में ऐसे शब्द या वाक्य दुबारा आते हैं, जिनका सामान्य अर्थ तो एक ही होता है, किन्तु अन्वय करने से पूरी उक्ति का अर्थ बदल जाता है।

3. **'जहाँ वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है' उसमें कौन-सा अलंकार होता है?**
   (a) यमक (b) श्लेष
   (c) अनुप्रास (d) उत्प्रेक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग, नरक ता हेतु।**
   पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग, नरक ता हेतु।।'
   उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-
   (a) अनुप्रास (b) यमक
   (c) श्लेष (d) उपमा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्ति में वाक्य दुबारा आ रहा है, जिसका सामान्य अर्थ तो एक ही है, किन्तु अन्वय करने से पूरी उक्ति का अर्थ बदल जा रहा है। प्रस्तुत पंक्ति के पूर्वार्द्ध का अर्थ है कि जो मनुष्य पराधीन है, उसके लिए स्वर्ग नरक है और उत्तरार्द्ध का अर्थ है कि जो मनुष्य पराधीन नहीं, उसके लिए नरक भी स्वर्ग है। यह लाटानुप्रास अलंकार के अन्तर्गत आता है।

5. ''राम हृदय जाके नहीं, विपति सुमंगल ताहि।
रामहृदय जाके, नहीं विपति सुमंगल ताहि।।''
इसमें कौन-सा अनुप्रास है?

(a) श्रुत्यानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) छेकानुप्रास

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

प्रस्तुत पंक्ति के पूर्वार्द्ध का अर्थ है कि जिनके हृदय में 'राम' नहीं हैं, उन्हें विपत्ति आती है और उत्तरार्द्ध का अर्थ है कि जिनके हृदय में राम हैं, उन्हें किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती है। अतः यह लाटानुप्रास अलंकार है।

6. 'जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न बसाय' में कौन-सा अलंकार है?

(a) छेकानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(c)

जब एक शब्द या वाक्यखण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, तो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति लाटानुप्रास का उदाहरण है।

7. ''तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
झुके कूल सो जल परसन हित मनहुँ सुहाए।।''
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-

(a) उत्प्रेक्षा (b) वृत्यानुप्रास
(c) शब्दार्थालंकार (d) स्वभावोक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(b)

जहाँ एक अथवा एक से अधिक वर्ण समूह की एक से अधिक बार आवृत्ति हो, वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में कई बार 'त' की आवृत्ति हुई है। अतः वृत्यानुप्रास अलंकार है।

8. जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ होता है-

(a) छेकानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) तीनों

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ यमक अलंकार

1. 'सूर-सूर तुलसी ससी उडगन केशवदास
अब के कवि खद्योत सम जहँ-तहँ करत प्रकास।।
इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है?

(a) अनुप्रास (b) यमक
(c) उत्प्रेक्षा (d) विरोधाभास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

यहाँ एक सूर का तात्पर्य सूरदास से तथा दूसरे सूर का तात्पर्य सूर्य से है। अतः प्रस्तुत पंक्तियों में यमक अलंकार है।

सूर-सूर तुलसी ससी, उडगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकास।।

अर्थात् सूर सूर्य हैं, तुलसी चन्द्रमा हैं और केशवदास नक्षत्र हैं और आधुनिक कवि जुगनुओं के समान जहाँ-तहाँ प्रकाश फैलाते हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना।

2. 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में कौन-सा अलंकार है?

(a) अनुप्रास (b) रूपक
(c) यमक (d) श्लेष

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

प्रस्तुत पंक्ति में 'कनक' शब्द दो बार आया है, दोनों का अर्थ अलग-अलग है। पहले शब्द का अर्थ है 'धतूरा' और दूसरे शब्द का अर्थ है 'सोना'। जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आये अर्थात् उसकी आवृत्ति हो और प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न अर्थ दे, वहाँ यमक अलंकार होता है।

3. 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में कौन-सा अलंकार है?

(a) यमक (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **जहाँ शब्दों, शब्दांशों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो, किन्तु उनके अर्थ भिन्न हों, वहाँ निम्न अलंकार होता है-**

(a) श्लेष (b) वक्रोक्ति
(c) यमक (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **'तरणि के ही संग तरल तरंग में, तरणि डूबी थी हमारी ताल में।' इसमें प्रयुक्त अलंकार है-**

(a) श्लेष (b) यमक
(c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

पद्यांश में 'तरणि' का प्रयोग दो बार हुआ है एवं दोनों का अर्थ अलग-अलग है। इसमें पहले तरणि का अर्थ सूर्य है, जबकि दूसरे तरणि का अर्थ नाव है। अत: यहाँ पर यमक अलंकार है।

6. **'खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा' रेखांकित शब्दों का अलंकार है-**

(a) यमक (b) श्लेष
(c) उपमा (d) रूपक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पद्यांश में प्रथम 'कुल' शब्द का अर्थ समूह है। द्वितीय, तृतीय कुल-कुल शब्द पक्षियों के कुल-कुल कलरव के सूचक हैं। कुल शब्द के भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

7. **तो पर वारौं उरबसी, सुन राधिके सुजान।**
तू मोहन की उर बसी कै ह्वै उरबसी सुजान।।
उपर्युक्त दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(a) यमक (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) वक्रोक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

प्रस्तुत दोहे में पहले उरबसी का अर्थ अप्सरा नाम की एक उर्वशी, दूसरे उरबसी का अर्थ हृदय में बसी तथा तीसरे उरबसी का अर्थ एक आभूषण के लिए प्रयुक्त हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

❑ श्लेष अलंकार

1. **''चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गँभीर।**
को घटि ये वृषभानुजा,वे हलधर के वीर।।''
में कौन-सा अलंकार है?

(a) वक्रोक्ति (b) यमक
(c) श्लेष (d) अनुप्रास

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों के कथन को 'श्लेष' कहते हैं। इनमें दो बातें आवश्यक हैं—(क) एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, (ख) एक से अधिक अर्थ प्रकरण में अपेक्षित हों। श्लेष का अर्थ होता है—चिपका हुआ। श्लिष्ट शब्द में एक से अधिक अर्थ चिपके रहते हैं। प्रस्तुत पंक्ति में श्लेष अलंकार है। यहाँ 'वृषभानुजा' और 'हलधर' श्लिष्ट शब्द हैं, जिनसे बिना आवृत्ति के ही भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं। 'वृषभानुजा' से 'वृषभानु की बेटी' (राधा) और 'वृषभ की बहन' (गाय) का तथा 'हलधर के वीर' से बलदेव (कृष्ण के भाई) और साँड़ (बैल के भाई) का अर्थ निकलता है।

2. **जिस काव्य-पंक्ति में प्रयुक्त किसी एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, उस पंक्ति में अलंकार होता है-**

(a) रूपक (b) अनुप्रास
(c) यमक (d) श्लेष

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **श्लेष अलंकार होता है-**

(a) शब्दालंकार (b) अर्थालंकार
(c) उभयालंकार (d) उपर्युक्त सबसे अलग

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं। इनमें अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा वक्रोक्ति प्रमुख अलंकार हैं।

4. **निम्नांकित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइये-**
रनित भृंग घंटावली झरित दान मधुनीर।
मंद-मंद आवत चल्यो कुंजरु कुंज समीर।।

(a) उत्प्रेक्षा (b) रूपक
(c) यमक (d) श्लेष

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्ति में श्लेष अलंकार है। जब काव्य में एक शब्द एक बार प्रयोग हो, और उसका अर्थ भिन्न-2 हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी द्वारा रचित है। यहाँ समीर का दो अर्थ है। पहले 'समीर' शब्द का अर्थ मदमस्त हाथी तथा दूसरे 'समीर' शब्द का अर्थ कुंज में प्रवाहित मंद वायु।

5. 'अजौं तरयौना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग' में अलंकार है-

(a) श्लेष (b) रूपक
(c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

तरयौना (पार न लगना) के टुकड़े करके, भिन्न-भिन्न अर्थ निकाले गये हैं। अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

❑ रूपक अलंकार

1. निम्न में से कौन अर्थालंकार है?

(a) श्लेष (b) यमक
(c) वक्रोक्ति (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

जहाँ अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है। इसमें उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द्रष्टान्त, संदेह, अतिशयोक्ति, प्रतीप, भ्रान्तिमान, दीपक, व्यतिरेक, अपह्नुति, अनन्वय, उल्लेख, मानवीकरण इत्यादि अलंकार हैं।

2. उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन-भृंग।।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(a) उपमा (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) दृष्टान्त

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाय, वहाँ रूपक अलंकार होता है। रूपक के तीन भेद होते हैं—निरंग, सांग तथा परम्परित। निरंग में केवल उपमेय और उपमान का अभेद रहता है। जहाँ उपमेय में उपमान के अंगों का भी आरोप हो, वहाँ सांग रूपक होता है। परम्परित रूपक में एक रूपक के द्वारा दूसरे रूपक की पुष्टि होती है। उपर्युक्त पंक्तियों में सांग रूपक अलंकार है। प्रस्तुत पंक्तियों में जनक सभा में रखे गए धनुष का वर्णन है, जिसे तोड़ने के लिए श्री राम मंच पर चढ़ गए हैं। इसमें मंच, रघुवर (राम), संत, लोचन (नेत्र) उपमेय तथा उपमान उदय गिरि, बाल पतंग (सूर्य), सरोज और भृंग (भ्रमर) उपमान हैं।

3. 'उदित उदय गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग' में कौन-सा अलंकार है?

(a) उपमा (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'चरण कमल बन्दौ हरि राई' में कौन-सा अलंकार है?

(a) यमक (b) रूपक
(c) श्लेष (d) अनुप्रास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियों में रूपक अलंकार है। इस पंक्ति का अर्थ है 'कमल रूपी चरण वाले हरि की मैं वन्दना करता हूँ। जहाँ रूपी शब्द का प्रयोग हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है। उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं होता। दोनों की स्थिति समान होती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

इन पंक्तियों में भी रूपक अलंकार है—
- मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
- पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
- आए महंत वसंत।
- तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं।

5. 'चरण कमल बन्दौ हरि राई' में कौन-सा अलंकार है?

(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) रूपक (d) श्लेष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'मुख रूपी चाँद पर राहु भी धोखा खा गया' पंक्तियों में अलंकार है-

(a) श्लेष (b) वक्रोक्ति
(c) उपमा (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जिस काव्य पंक्ति या वाक्य में उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाये, उस अलंकार को रूपक कहा जाता है। यानी उपमेय उपमान में कोई अन्तर न दिखाई पड़े। प्रस्तुत पंक्तियों में इसी का वर्णन किया गया है।

7. **मुख-कमल समीप सजे थे, दो किसलय दल पुराइन के।**
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक (b) अतिशयोक्ति
(c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' नामक रचना से ली गयी हैं। यहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया गया है। अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

8. **'सखि नील नभस्सर से उतरा, यह हंस अहा तिरता-तिरता।**
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता-चरता।।'
में रूपक अलंकार का कौन-सा प्रकार प्रयुक्त हुआ है?
(a) सांग रूपक (b) निरंग रूपक
(c) परम्परित रूपक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद्यांश का अर्थ है कि तारागणरूपी मोती इसलिए समाप्त हो गये, क्योंकि आकाशरूपी सरोवर से निकले सूर्यरूपी हंस ने उन्हें चुग लिया है। यहाँ तारागणरूपी मोतियों में सूर्यरूपी हंस का आरोप किया गया है। अतः यहाँ परम्परित रूपक है।

❑ उत्प्रेक्षा अलंकार

1. **''नील परिधान बीच सुकुमार,**
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलाबी रंग''।
इस पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) उत्प्रेक्षा (b) श्लेष
(c) रूपक (d) उपमा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

ओमप्रकाश शर्मा द्वारा रचित 'काव्यालोचना : भारतीय काव्यशास्त्र की आधुनिकतम कृति' में उपर्युक्त पंक्ति में वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार दर्शित है, जबकि हरिश्चन्द्र वर्मा द्वारा रचित 'साहित्य-चिन्तन के नये आयाम' में काव्य बिम्ब प्रदर्शित किया गया है। किन्हीं-किन्हीं पुस्तकों में इन पंक्तियों को उपमा अलंकार बताया गया है। अतः उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

2. **जब उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाय, तब होता है-**
(a) उपमा अलंकार (b) रूपक अलंकार
(c) दीपक अलंकार (d) उत्प्रेक्षा अलंकार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जब उपमेय में उपमान की सम्भावना प्रकट की जाय, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मानो, मानहुँ, मनहुँ, मनु, जानो, जानहुँ, जनु, निश्चय आदि उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- उत्प्रेक्षा अलंकार तीन प्रकार का होता है-(1) वस्तूत्प्रेक्षा, (2) हेतूत्प्रेक्षा और (3) फलोत्प्रेक्षा।
- जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु के आरोप की सम्भावना की जाय, वहाँ वस्तूत्प्रेक्षा होती है।
- जहाँ सम्भावना के मूल में कोई कारण या हेतु हो, वहाँ हेतूत्प्रेक्षा होती है।
- जहाँ किसी क्रिया के मूल में किसी फल की सम्भावना हो, वहाँ फलोत्प्रेक्षा होती है।

❑ उपमा अलंकार

1. **'पीपर पात सरिस मन डोला' में मन क्या है?**
(a) उपमेय (b) उपमान
(c) वाचक (d) धर्म

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत पंक्ति में उपमा के चारों अंगों के उपस्थित होने के कारण 'पूर्णोपमा अलंकार' है, जिसका वर्णन इस प्रकार है— पीपरपात - उपमान, मन - उपमेय, डोला - साधारण धर्म और सरिस - वाचक शब्द। जब दो भिन्न वस्तुओं में साधर्म्य अर्थात् धर्म की समानता दिखायी जाए, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। संस्कृत साहित्य में इस अलंकार का विशेष महत्व है। यहाँ तक कि आचार्यों ने इसे संपूर्ण अलंकारों की जननी तक कहा है। इसके चार अंग हैं-उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और धर्म। उपमा अलंकार के दो भेद हैं-I. पूर्णोपमालंकार और II. लुप्तोपमालंकार। जब उपमा के चारों अंग उपस्थित रहते हैं, तब 'पूर्णोपमा' तथा जब इनमें से किसी एक की कमी हो, तो लुप्तोपमालंकार होता है।

2. **'मोम-सा तन घुल चुका**
अब दीप-सा मन जल चुका है।'
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है—
(a) रूपक (b) पूर्णोपमा
(c) दृष्टान्त (d) उपमा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

जिस उपमा में चारों अंग विद्यमान हो। वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में मोम तथा दीप उपमान, तन तथा मन उपमेय, वाचक शब्द-सा दोनों में साधारण धर्म-धुल चुका तथा जल चुका है। अतः यहाँ पूर्णोपमा अलंकार है।

3. जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है, उसे कहते हैं

(a) साधारण धर्म
(b) वाचक
(c) उपमान
(d) उपमेय

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है, उसे वाचक कहते हैं। उपमेय तथा उपमान में उपस्थित वह गुण जो दोनों में समान रूप से पाया जाता है, साधारण धर्म कहलाता है। जिससे उपमा दी जाय, उसे उपमान तथा जिसको उपमा दी जाय उसे उपमेय कहते हैं।

❑ भ्रान्तिमान अलंकार

1. ''पायँ महावर देन को नाइन बैठी आय।
फिर फिर जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाय।''
में कौन-सा अलंकार है?

(a) अतिशयोक्ति
(b) भ्रान्तिमान
(c) संदेह
(d) प्रतीप

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

इस पंक्ति में भ्रान्तिमान अलंकार है, जहाँ सादृश्य के कारण किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाता है, वहाँ 'भ्रम' या भ्रान्तिमान अलंकार होता है। उपर्युक्त दोहे में नाइन को नायिका की एड़ी में महावर की गोली का भ्रम हो गया है। एड़ी इतनी लाल है कि नाइन उसे महावरी की गोली समझकर बार-बार मीड़कर रंग निकालना चाहती है। यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

2. निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रान्ति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।

(a) सन्देह (b) भ्रान्तिमान
(c) प्रतीप (d) निदर्शना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में भ्रान्तिमान अलंकार है। यहाँ घर में पाले शुक को, नायिका की नाक और मोती में अनार का दाना पकड़े शुक का भ्रम हो रहा है। जहाँ समता के कारण किसी वस्तु में (उपमेयों में) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाय, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

❑ विभावना अलंकार

1. 'बिनु पद चलै सुनै बिनु काना' इसमें कौन-सा अलंकार है?

(a) असंगति (b) श्लेष
(c) रूपक (d) वक्रोक्ति

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो जाय, वहाँ विभावना अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में बिना पैर चलना, बिना कान सुनना तथा बिना हाथ के कार्य होना, बिना कारण ही सम्पादित हो रहे हैं। अतः यहाँ विभावना अलंकार है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया।

2. 'बिनु पद चलै सुनै बिनु काना'
कर बिनु कर्म करै विधि नाना' में कौन-सा अलंकार है?

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति
(c) असंगति (d) दृष्टान्त

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. जहाँ कारण बिना कार्य की उत्पत्ति होती हो, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति
(c) असंगति (d) दीपक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन' होने पर कौन-सा अलंकार होता है?

(a) असंगत (b) विभावना
(c) विशेषोक्ति (d) व्यतिरेक

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ असंगति अलंकार

1. दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।
उक्त दोहे में प्रयुक्त अलंकार है-

(a) विषम (b) असंगति
(c) व्यतिरेक (d) निदर्शना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(b)

प्रस्तुत पंक्ति में असंगति अलंकार है। इस दोहे में उलझते हैं दृग (कारण), टूटता है कुटुम अर्थात् कुटुम्ब (कार्य) तथा टूटता है कुटुम (कारण) और जुड़ती है चतुरों के चित्त में प्रीति (कार्य)। इसी प्रकार जुड़ती है चतुरों के चित्त में प्रीति (कारण) और गाँठ पड़ती है दुर्जनों के हृदय में (कार्य)। अतः कारण और कार्य में संगति न होने से यहाँ असंगति अलंकार है।

2. दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।।
में कौन-सा अलंकार है?

(a) निदर्शना (b) दृष्टान्त
(c) असंगति (d) विभावना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति' में कौन-सा अलंकार है?

(a) विरोधाभास (b) असंगति
(c) विभावना (d) निदर्शना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ दृष्टान्त अलंकार

1. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती हैं।
किसी और पर प्रेम नारियाँ पति का क्या सह सकती हैं?

(a) दृष्टान्त (b) समासोक्ति
(c) विभावना (d) विरोधाभास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

जहाँ पहले कोई बात कहकर उससे मिलती-जुलती बात द्वारा दृष्टान्त दिया जाय, लेकिन समानता किसी शब्द द्वारा प्राकट न हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि एक म्यान में दो तलवारों का रहना वैसे ही असंभव है, जैसे कि एक पति का दो नारियों पर अनुरक्त रहना पत्नी सहन नहीं कर सकती। अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

❑ व्यतिरेक अलंकार

1. सम सुबरन सुखमाकर, सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल, कनक कठोर।।
इस छन्द में प्रयुक्त अलंकार है-

(a) निदर्शना
(b) व्यतिरेक
(c) समासोक्ति
(d) अर्थान्तरन्यास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

जब किसी विशेष गुण के कारण उपमेय को उपमान की अपेक्षा अधिक ऊँचा दिखाया जाय अर्थात् उपमान की अपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष वर्णन हो, तो व्यतिरेक अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में व्यतिरेक अलंकार है।

2. 'सम सुबरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर।।''
इस उद्धरण में अलंकार है-

(a) उपमा
(b) परिसंख्या
(c) अतिशयोक्ति
(d) व्यतिरेक

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'रघुवर जस प्रताप के आगे।
चन्द मन्द, रवि तापहिं त्यागे'।।
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(a) उल्लेख (b) विभावना
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्तियों में व्यतिरेक अलंकार है। यहाँ पर राम का गुण (उपमेय) चन्द्रमा तथा सूर्य के गुण (उपमान) से आधिक्य (उत्कर्ष) दिखाया गया है।

4. ''जन्म सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंक।।''
पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(a) अनन्वय (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) व्यतिरेक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

जहाँ उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ विशेषता दिखायी जाय, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है। समुद्र मंथन के 14 रत्नों में से चन्द्रमा का भी जन्म हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों में चन्द्रमा के बारे में कहा गया है कि खारे समुद्र में इसका जन्म हुआ, विष इसका भाई है, दिन में यह तेजस हो जाता है और कलंक से भी भरा हुआ है। बेचारा गरीब चन्द्रमा सीता के मुख की बराबरी कैसे कर सकता है। यहाँ उपमान से सकारण उत्कर्ष दिखाया जा रहा है। अतः व्यक्तिरेक अलंकार है।

5. ''जन्म सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंक।।''
इस उद्धरण में अलंकार है:

(a) असंगति (b) व्यतिरेक
(c) अनन्वय (d) प्रतीप

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ अतिशयोक्ति अलंकार

1. 'नितप्रति पून्यो ही रहे आनन ओप उजास' में अलंकार है—

(a) उत्प्रेक्षा (b) उपमा
(c) अनुप्रास (d) अतिशयोक्ति

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है नायिका के मुख पर व्याप्त उजाले से वहाँ रोज पूर्णिमा ही रहती है। मुख सौन्दर्य का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया गया है, अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

❑ विशेषोक्ति अलंकार

1. 'नीर भरे नित प्रति रहैं तऊ न प्यास बुझाई'
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(a) अतिशयोक्ति (b) विशेषोक्ति
(c) विभावना (d) उपमा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्ति में विशेषोक्ति अलंकार है। यहाँ कारण के रहते हुए भी कार्य सम्पन्न नहीं हो पा रहा है अर्थात् नयनों में नीर भरा हुआ बताये जाने पर भी प्यास नहीं बुझ रही।

❑ अर्थान्तरन्यास

1. जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्याप्त नहीं लपटे रहत भुजंग।।
इस दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(a) निदर्शना (b) अनुप्रास
(c) अर्थान्तरन्यास (d) सन्देह

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

जहाँ सामान्य कथन का विशेष से या विशेष कथन का सामान्य से समर्थन किया जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। प्रस्तुत दोहे में यही उक्ति दुहरायी जा रही है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

❑ अत्युक्ति अलंकार

1. जहाँ किसी वस्तु का लोक-सीमा से इतना बढ़ कर वर्णन किया जाय कि वह असम्भव की सीमा तक पहुँच जाय, वहाँ अलंकार होता है—

(a) अतिशयोक्ति (b) विरोधाभास
(c) अत्युक्ति (d) उत्प्रेक्षा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

जहाँ किसी वस्तु का लोक-सीमा से इतना बढ़ कर वर्णन किया जाय कि वह असम्भव की सीमा तक पहुँच जाय, वहाँ अत्युक्ति अलंकार होता है।
जैसे—

**लखन सकोप वचन जब बोले।
डगमगानि महि दिग्गज डोले।।**

यहाँ लक्ष्मण के क्रोधित होकर बोलने से पृथ्वी डगमगा उठी और दिग्गज काँप उठे। अतः मिथ्यात्वपूर्ण वर्णन होने से अत्युक्ति अलंकार है। अतिशयोक्ति और अत्युक्ति मिलते-जुलते अलंकार हैं। दोनों में केवल अन्तर यह है कि उक्ति यदि सम्भव हो, तो अतिशयोक्ति और असम्भव हो, तो अत्युक्ति होगी।

काकु वक्रोक्ति अलंकार

1. **''मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू''-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**
   (a) सभंग श्लेष (b) अभंग श्लेष
   (c) श्लेष वक्रोक्ति (d) काकु वक्रोक्ति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

''मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू।।'' में 'काकु वक्रोक्ति' अलंकार है। जहाँ कहे हुए वाक्य का कंठ की ध्वनि की विशेषता से दूसरा अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति होता है। इसमें केवल वाणी प्रस्तुतीकरण होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ वक्रोक्ति का शाब्दिक अर्थ है वक्र (टेढ़ी) उक्ति (कथन)। अर्थात कथन को सीधे न कहके टेढ़ा कहने वाला। वक्रोक्ति के दो भेद हैं- (i) श्लेष और (ii) काकु।

अक्रमातिशयोक्ति अलंकार

1. **''वह शर इधर गाण्डीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।**
   धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।।''
   उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सी अतिशयोक्ति है?
   (a) असम्बन्धातिशयोक्ति (b) सम्बन्धातिशयोक्ति
   (c) अक्रमातिशयोक्ति (d) अत्यन्ताशियोक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

जहाँ कारण और कार्य का एक साथ होना वर्णित हो, वहाँ अक्रमातिशयोक्ति होती है। प्रस्तुत पंक्ति में शर (कारण) का गाण्डीव से छूटना और सिर का छिन्न होना (कार्य) दोनों का एक साथ कथन किया गया है। इसलिए यहाँ कारण और कार्य में क्रम का निषेध होने से 'अक्रमातिशयोक्ति' है। सामान्यतः कार्य कारण के बाद होता है, किन्तु यदि कवि कारण से पहले कार्य का होना वर्णन करे, तो वहाँ अत्यन्ताशियोक्ति होगा।

मानवीकरण अलंकार

1. **अलंकार के सन्दर्भ में 'मानवीकरण' से क्या अभिप्राय है?**
   (a) जीवात्मा का मानव बन जाना।
   (b) मनुष्य द्वारा करने योग्य।
   (c) वशीकरण द्वारा अन्य जीवों को मानव बना देना।
   (d) वह अलंकार जिसमें भावनाओं में मानव-गुण व कार्य का आरोप किया जाये।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जिस अलंकार में भावनाओं में मानवगुण व कार्य का आरोप किया जाय, वहाँ 'मानवीकरण' अलंकार होता है।

काव्यलिंग अलंकार

1. **किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात में कौन-सा अलंकार होता है?**
   (a) व्यतिरेक (b) प्रतिवस्तूपमा
   (c) दृष्टान्त (d) काव्यलिंग

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

जहाँ किसी युक्ति से समर्थन का कारण बताया जाय वहाँ 'काव्यलिंग' अलंकार होता है। **जैसे—**

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय नर, या पाये बौराय।।

धतूरा खाने से नशा होता है, पर स्वर्ण पाने से भी नशा होता है। यहाँ इसी बात का समर्थन किया गया है कि स्वर्ण में धतूरे से ज्यादा नशा होता है। दोहे के उत्तरार्द्ध में कथन की पुष्टि हुई है।

प्रतीप अलंकार

1. **'उतरि नहाये जमुन जल जो सरीर सम स्याम'-पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**
   (a) उपमा (b) प्रतीप
   (c) विशेषोक्ति (d) विभावना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जहाँ प्रसिद्ध 'उपमान' को 'उपमेय' बना दिया जाय, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। 'प्रतीप' का अर्थ है उलटा। उपमान को उपमेय बना देना क्रम का उलट देना हुआ। इसीलिए जब प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना देते हैं तब 'प्रतीप' अलंकार होता है। यह उपमा अलंकार का उलटा होता है। प्रस्तुत पंक्ति में जमुना जल (जो श्यामता का प्रसिद्ध उपमान है) को उपमेय और श्याम शरीर को उपमान बना दिया, इसलिए यहाँ प्रतीप अलंकार है। जहाँ कारण के होने पर भी कार्य न हो, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होते हैं।

2. **'उतरि नहाये जमुन जल जो शरीर सम स्याम।' इस उद्धरण में अलंकार है—**
   (a) व्यतिरेक (b) विभावना
   (c) प्रतीप (d) असंगति

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. तरनि-तनूजा-नीर सोहत स्याम-शरीर सम' में अलंकार है—

(a) परिसंख्या (b) व्यतिरेक

(c) असंगति (d) प्रतीप

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012,2009

उत्तर—(d)

प्रस्तुत पंक्ति में तरनि-तनूजा (यमुना) के जल को उपमेय तथा श्याम शरीर को उपमान बना दिया गया है। अतः यहाँ प्रतीप अलंकार है।

4. माँ के शुचि उपकारों का, जीवन में अन्त नहीं है।
निस्वार्थ साधना पथ पर, माँ जैसा सन्त नहीं है।।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में मुख्य रूप से कौन-सा अलंकार लक्षित हो रहा है?

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति

(c) प्रतीप (d) अनन्वय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में प्रतीप अलंकार है। उपमेय से उपमान की हीनता का जहाँ वर्णन होता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इन पक्तियों में उपमेय (माँ के शुचि उपकारों का) से उपमान (निःस्वार्थ साधना) की हीनता का वर्णन किया गया है।

❑ अपह्नुति अलंकार

1. 'मैं जो कह रघुवीर कृपाला।
बंधु न होइ मोर यह काला।।'
इस उद्धरण में कौन-सा अलंकार है?

(a) भ्रान्तिमान (b) सन्देह

(c) प्रतीप (d) अपह्नुति

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जहाँ उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाय अर्थात् प्रस्तुत का निषेध कर अप्रस्तुत की स्थापना की जाय। वहाँ पर अपह्नुति अलंकार होता है। अपह्नुति का अर्थ है-छिपाना, निषेध करना, गोपन करना, अस्वीकृत करना इत्यादि। प्रस्तुत पंक्तियों में अपह्नुति अलंकार है। यहाँ पर सुग्रीव ने बालि के बारे में श्रीराम से कहा है कि हे कृपालु राम, यह मेरा बन्धु नहीं है, काल है।

❑ उदाहरण अलंकार

1. 'बूँद अघात सहै गिरि कैसे।
खल के बचन सन्त सह जैसे।'
में अलंकार है-

(a) उपमा (b) उदाहरण

(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जहाँ किसी बात के समर्थन में उदाहरण किसी वाचक शब्दों के साथ दिया जाय, वहाँ उदाहरण अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्ति में उदाहरण वाची शब्द 'जैसे' शब्दों द्वारा प्रथम पंक्ति के अर्थ को और प्रभावशाली बनाया जा रहा है। अतः यहाँ उदाहरण अलंकार है।

❑ स्मरण अलंकार

1. 'सघन कुंज छाया सुखद सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।
इस उद्धरण में अलंकार है—

(a) भ्रान्तिमान अलंकार (b) स्मरण अलंकार

(c) उल्लेख अलंकार (d) सन्देह अलंकार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

जब किसी वस्तु को देखकर या उसके विषय में सुनकर उसके सदृश पूर्व में देखी-सुनी किसी वस्तु का स्मरण आना वर्णित होता है, वहाँ स्मरण अलंकार होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में घने बगीचे की छाया और शीतल धीरे-धीरे बहने वाली हवा को देखकर नायिका को अपने पूर्व की बातें याद आ जाती हैं। अतः यहाँ पर स्मरण अलंकार है।

❑ तद्‌गुण अलंकार

1. ''अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठि पट जोति।
हरित बांस की बांसुरी, इंद्रधनुष रंग होति।।''
उपर्युक्त दोहे में अलंकार है

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति

(c) अतद्‌गुण (d) तद्‌गुण

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

प्रस्तुत दोहे में तद्‌गुण अलंकार है। इन दोहों में श्रीकृष्ण का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके होठों पर रखी बांसुरी ओंठ, दृष्टि, पट की ज्योति पड़ने के कारण अपने असली रंग को छोड़कर, इंद्रधनुष के रंग को ग्रहण कर लेती है। जब कोई वस्तु स्वयं का गुण त्याग कर अपने समीप की किसी अन्य वस्तु का गुण ग्रहण कर लेती है, तब वहाँ तद्‌गुण अलंकार होता है।

भाषा विज्ञान

1. **आधुनिक भाषा-विज्ञान का जनक कौन है?**
   (a) ब्लूमफील्ड (b) जेस्पर्सन
   (c) सोस्यूर (d) ग्लीसन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

फर्दनेंद द सोस्यूर (1857-1913) का नाम आधुनिक भाषा विज्ञान के जनक के रूप में लिया जाता है, क्योंकि उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत 'भाषायी क्रांति' के रूप में उभरे।

2. **भाषा विज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्न लाघव' का अर्थ है—**
   (a) शीघ्र बोलना
   (b) कम समय में अधिक बोलना
   (c) बोलने की मितव्ययिता
   (d) उच्चारण की सुविधा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

भाषा विज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्न लाघव' का अर्थ उच्चारण की सुविधा है। इसे 'मुख-सुख' भी कहा जाता है।

3. **'वाराणसी' का 'बनारस' रूप में विकास उदाहरण है—**
   (a) व्यंजन विपर्यय का (b) व्यंजनागम का
   (c) व्यंजन लोप का (d) स्वर-व्यंजनागम का

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

विपर्यय किसी शब्द के स्वर, व्यंजन या अक्षर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं और दूसरे के पहले स्थान पर आ जाते हैं। इसके कई भेद हैं-स्वर विपर्यय, व्यंजन विपर्यय तथा अक्षर विपर्यय। 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप व्यंजन विपर्यय विकास का उदाहरण है।

4. **'टकसाली भाषा' कहते हैं-**
   (a) संस्कृतनिष्ठ भाषा को (b) ग्रामीण भाषा को
   (c) परिनिष्ठित भाषा को (d) कृत्रिम भाषा को

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

भाषा विज्ञान के अनुसार, मानक भाषा को आदर्श भाषा, टकसाली भाषा तथा परिनिष्ठित भाषा भी कहते हैं। किसी भी भाषा का उसके विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के माध्यम के लिए उसका मानक रूप ही प्रयुक्त होता है। इसीलिए हिन्दी को प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति के माध्यम के परिप्रेक्ष्य में उसके मानक रूप पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

5. **निम्नलिखित में भाषा की प्रमुख प्रकृति कौन-सी है?**
   (a) सरलता से क्लिष्टता की ओर
   (b) जटिलता से सरलता की ओर
   (c) भावों से विचारों की ओर
   (d) विचारों से भावों की ओर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

भाषा वैचारिक और मानस पटल पर उद्वेलित होने वाली भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। विश्व में कई भाषाएँ बोली जाती हैं और सम्भवतः सभी भाषाएँ आपस में संवेदना के स्तर पर जुड़ाव रखती हैं, परन्तु हिन्दी भाषा अपनी सहजता और लचीलेपन के कारण संवेदनशीलता की इस विशेषता के अत्यन्त निकट है। हिन्दी शब्द पूर्व में भारतीयता या भारत से सम्बन्ध का द्योतक था जो कि प्रायः अभारतीयों द्वारा प्रयोग में लाया जाता था अर्थात् वे लोग जो भारत से आये हैं या भारतीय हैं उन्हें और उनकी बोली को 'हिन्दवी' कहते थे। कालान्तर में यह शब्द हिन्दी प्रदेश की उपभाषाओं एवं बोलियों के लिए प्रयुक्त होने लगा। हिन्दी के इतिहास पर नजर डालें, तो पाते हैं कि इसका इतिहास हजार वर्ष से भी पुराना है तथा यह भाषा अपनी विकास प्रक्रिया में एक गतिशील नदी की तरह बहती हुई निरन्तर जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर होती गई।

6. **न्यायालयीय भाषा में शब्द और उसके अर्थ में.......रहती है।**
   (a) निश्चितता (b) अनिश्चितता
   (c) कुशलता (d) कोमलता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

न्यायालयी भाषा में शब्द और उसके अर्थ में निश्चितता रहती है, जिससे शब्द का अर्थ समझने में किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो।

7. **कोई भी बोली या भाषा मानकता प्राप्त करने पर हो जाती है—**
   (a) दुरूह (b) सरल
   (c) भावपूर्ण (d) सरस

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

किसी भी बोली या भाषा की एक मानकता होती है, जिसे प्राप्त कर लेने पर वह बोली या भाषा सरल हो जाती है।

8. **एकाक्षरी भाषा-परिवार से तात्पर्य है-**
   (a) रोमिटिक-हेमेटिक परिवार (b) चीनी भाषा परिवार
   (c) कॉकेशियन परिवार (d) ऑस्ट्रो-एसियाटिक परिवार

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

चीनी एवं तिब्बती भाषा परिवार को एकाक्षर परिवार की भाषा कहा जाता है। यह उसकी आकृतिगत विशेषताओं को प्रभावित करता है। इस परिवार की भाषाओं का मुख्य क्षेत्र चीन, तिब्बत एवं वर्मा है। भूटान एवं भारत के उत्तर-क्षेत्र में भी इस परिवार के बोलने वाले हैं। इस परिवार की मुख्य भाषा चीनी है।

9. ज्ञान-विज्ञान के तत्वों को व्यक्त करने वाली विशेष शब्दावली को क्या कहते हैं?

(a) सामान्य शब्दावली (b) साहित्यिक शब्दावली
(c) बोलचाल की शब्दावली (d) पारिभाषिक शब्दावली

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

ज्ञान-विज्ञान के तत्वों को व्यक्त करने वाली विशेष शब्दावली को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। उदाहरणस्वरूप जीव विज्ञान के सन्दर्भ में 'कोशिका' का विशेष अर्थ है और उससे एक ही अर्थ लिया जाता है।

10. पारिभाषिक शब्दावली किसके लिए है?

(a) छात्रों के लिए
(b) जन-साधारण के लिए
(c) ज्ञान की किसी एक शाखा के जिज्ञासु के लिए
(d) बहुसंख्यक व्यक्तियों के लिए

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान की किसी एक शाखा के जिज्ञासु के लिए है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों यथा विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, भूगोल, चिकित्सा, वाणिज्य, विधि, दर्शन इत्यादि क्षेत्रों में होने वाले विकास के कारण अलग-अलग प्रकार के पारिभाषिक शब्द विकसित होते जाते हैं, जो विषय-विशेष के सन्दर्भ में एक निश्चित अर्थ को प्रकट करते हैं।

11. पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण कौन करता है?

(a) भाषा वैज्ञानिक (b) राष्ट्रपति
(c) कवि व साहित्यकार (d) समाज

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण भाषा वैज्ञानिक करते हैं।

12. वैज्ञानिक शैली का तात्पर्य किस शैली से है?

(a) आलंकारिक शैली (b) वस्तुनिष्ठ शैली
(c) समास शैली (d) लाक्षणिक शैली

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

वैज्ञानिक शैली का तात्पर्य वस्तुनिष्ठ शैली से है।

13. हिन्दी की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली मूलतः किस भाषा की शब्दावली का अनुवाद है?

(a) फारसी (b) अंग्रेजी
(c) संस्कृत (d) उर्दू

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

हिन्दी की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली मूलतः अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का अनुवाद है। जैसे-मीटर (Meter), रेडियो (Radio), किलोग्राम (Kilogram), थर्materमीटर (Thermometer) इत्यदि।

14. कार्यालयी हिन्दी की भाषा कैसी होनी चाहिए?

(a) अभिधात्मक (b) लक्षणा से युक्त
(c) व्यंजनात्मक (d) अभिधा-लक्षणा मिश्रित

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, अभिधा कहलाती है। कार्यालयी हिन्दी की भाषा 'अभिधात्मक' होनी चाहिए। इसे अत्यन्त सरल तथ्यों का सीधा और स्पष्ट कथन होना चाहिए।

निर्देश (प्रश्न 15 से 20 के लिए) : दिए गए अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी पारिभाषिक शब्द छाँटिए।

15. OFFICIAL LANGUAGE

(a) राष्ट्रभाषा (b) लोकभाषा
(c) राजभाषा (d) सम्पर्क भाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

OFFICIAL LANGUAGE को हिन्दी में कार्यालयी भाषा कहते हैं, जो सरकारी काम-काज हेतु प्रयोग होते हैं। इसका हिन्दी पारिभाषिक शब्द राजभाषा होगा। राष्ट्रभाषा को NATION LANGUAGE, लोकभाषा को PUBLIC LANGUAGE तथा सम्पर्क भाषा को CONTACT LANGUAGE कहते हैं।

16. EDITOR

(a) राजदूत (b) अभियन्ता
(c) संशोधक (d) सम्पादक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

EDITOR शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द सम्पादक होता है। राजदूत का ENVOY, अभियन्ता का ENGINEER, संशोधक का अंग्रेजी अनुवाद MODIFIER होगा।

17. **TRAINING**

(a) प्रशिक्षण (b) परीक्षण
(c) परिवीक्षा (d) रेल का चालन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

TRAINING शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द प्रशिक्षण होगा। परीक्षण का TEST, परिवीक्षा का PROBATION होगा।

18. **RESERVATION**

(a) अनुसंधान (b) आरक्षण
(c) स्थिरीकरण (d) आरोपण

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

RESERVATION शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द आरक्षण होगा। अनुसंधान का RESEARCH, स्थिरीकरण का STABILIZATION तथा आरोपण का अंग्रेजी अनुवाद ALLEGATION होगा।

19. **APPOINTMENT**

(a) नियुक्ति (b) विज्ञप्ति
(c) आदेश (d) अनुमोदन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

APPOINTMENT शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द नियुक्ति होगा। विज्ञप्ति का ADVERTISEMENT, आदेश का ORDER, अनुमोदन का APPROVAL होगा।

20. **REGISTRATION**

(a) नामांकन (b) संशोधन
(c) पंजीकरण (d) आरक्षण

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

REGISTRATION शब्द का हिन्दी पारिभाषिक शब्द पंजीकरण होगा। नामांकन का ENROLLMENT, संशोधन का AMENDMENT, आरक्षण का अंग्रेजी अनुवाद RESERVATION होगा।

21. **निम्नलिखित में से कौन भाषा वैज्ञानिक नहीं हैं?**

(a) सुनीति कुमार चटर्जी (b) धीरेन्द्र वर्मा
(c) भोलानाथ तिवारी (d) जयशंकर प्रसाद

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

सुनीति कुमार चटर्जी, धीरेन्द्र वर्मा, भोलानाथ तिवारी, उदय नारायण तिवारी, देवेन्द्रनाथ शर्मा इत्यादि भाषा वैज्ञानिक हैं, जबकि जयशंकर प्रसाद महान कवि एवं नाटककार हैं।

22. **राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?**

(a) बालगंगाधर तिलक (b) मुंशी आयंगर
(c) बालगंगाधर खेर (d) काका साहब कालेलकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष बालगंगाधर खेर थे। राजभाषा आयोग, संसदीय समिति और उसके प्रतिवेदन के अनुसार, संविधान में प्रदत्त आठवीं अनुसूची की तत्कालीन भाषाओं के 20 प्रतिनिधियों वाले आयोग का गठन बम्बई प्रान्त के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बालगंगाधर खेर की अध्यक्षता में 7 जून, 1955 को राष्ट्रपति के आदेश के अन्तर्गत हुआ।

23. **राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष थे—**

(a) पं. जवाहरलाल नेहरू (b) बालगंगाधर खेर
(c) पुरुषोत्तमदास टंडन (d) सी. राजगोपालाचारी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. **भाषा की सार्थक लघुतम इकाई है-**

(a) शब्द (b) पद
(c) ध्वनि (d) वाक्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। 'शब्द' भाषा की लघुतम सार्थक इकाई है। 'शब्द' सार्थक इकाई होते हुए भी वाक्य में इसका प्रयोग ज्यों-का त्यों नहीं कर सकते। शब्दों को प्रयोग में लाने के लिए शब्दों में व्याकरणिक परिवर्तन करना पड़ता है। सार्थक अर्थ प्राप्ति के लिए शब्दों का विशेष क्रम होना जरूरी होता है तथा उनमें प्रत्यय, विभक्ति आदि को भी देखना आवश्यक होता है। जब सारी प्रक्रियाओं के बाद शब्द वाक्य में प्रयोग करने योग्य बन जाये, तभी सही अर्थ की प्राप्ति होती है। एक ही शब्द के अनेक वाक्य भी बन सकते हैं। 'शब्द' को जब वाक्य के अनुकूल बनाते हैं तब वह 'पद' कहलाता है। भाषा विज्ञान में पद को 'रूप' भी कहा गया है। जितना महत्व भाषा का है उतना ही महत्व 'शब्द' का है, क्योंकि भाषा बिना शब्दों के नहीं बन पाती और 'शब्द' भाषा के अस्तित्व की निशानी होती है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

25. **भाषा की लघुतम, स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई को क्या कहते हैं?**

(a) वर्ण (b) वाक्य
(c) शब्द (d) ध्वनि

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. भारत की सम्पर्क भाषा कौन-सी है?

(a) संस्कृत (b) अंग्रेजी
(c) हिन्दी (d) उर्दू

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा है।

27. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुई है—

(a) वैदिक संस्कृत (b) लौकिक संस्कृत
(c) शौरसेनी अपभ्रंश (d) प्राकृत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि हिन्दी भाषा का उद्भव अपभ्रंश के शौरसेनी, अर्द्धमागधी और मागधी रूपों से हुआ है।

28. निम्नलिखित में से किसे हिन्दी की शैली नही मानेंगे?

(a) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी (b) हिन्दुस्तानी
(c) दक्खिनी (d) मसनवी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

आजकल हिन्दी भाषा की मुख्यतः तीन शैलियाँ प्रचलित हैं-हिन्दुस्तानी, उर्दू तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी। इनके अलावा एक चौथी शैली अंग्रेजी मिश्रित भी मिलती है। दक्खिनी हिन्दी शैली दक्षिण राज्यों के मुस्लिम बाहुल्य राज्यों के क्षेत्रों में बोली जाती है। मनसवी शैली हिन्दी की शैली नहीं है। यह प्रेममार्गी काव्यों की रचना के लिए प्रयुक्त हुई, जो फारसी की शैली है।

29. नीचे भाषा की चार विशेषताएँ दी गई हैं। इनमें से जो एक गलत विशेषता है उसे चुनिए-

(a) भाषा परिवर्तनशील होती है
(b) भाषा पैतृक सम्पत्ति होती है
(c) भाषा सामाजिक सम्पत्ति होती है
(d) भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है

T.G.T. परीक्षा, 2001, 2010

उत्तर—(b)

भाषा की विशेषताएँ हैं-(1) भाषा प्रतीकात्मक है। (2) भाषा ध्वनिमय है। (3) भाषा का सम्बन्ध मनुष्य से है। (4) भाषा कठिनता से सरलता की ओर गतिशील रहती है। (5) भाषा की क्षेत्रीय सीमा होती है। (6) भाषा परिवर्तनशील होती है। (7) समाज के सांस्कृतिक विकास एवं पतन के साथ भाषा के विकास एवं पतन भी सीधे जुड़े होते हैं। (8) भाषा सामाजिक सम्पत्ति होती है। (9) भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अतः स्पष्ट है कि भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं होती है।

❑ हिन्दी की बोलियाँ

1. किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को कहते हैं—

(a) राष्ट्रीय भाषा (b) राजभाषा
(c) बोली (d) उपभाषा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को बोली कहते हैं। उपभाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है, इसके अन्तर्गत बोलियाँ आती हैं।

2. इनमें से कौन-सी राजस्थान की बोली नहीं है?

(a) मारवाड़ी (b) बुन्देली
(c) मेवाती (d) मालवी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

पश्चिमी राजस्थानी के अन्तर्गत मारवाड़ी, उत्तरी राजस्थानी के अन्तर्गत मेवाती तथा दक्षिणी राजस्थानी के अन्तर्गत मालवी बोली आती है। बुन्देली मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे बुन्देलखण्ड में बोली जाती है।

3. मैथिली बोली के लोकप्रिय कवि हैं-

(a) तुलसी (b) जायसी
(c) विद्यापति (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मैथिली बोली के लोकप्रिय कवि विद्यापति हैं। विद्यापति मिथिला निवासी थे। मैथिल-कोकिल उपाधि से विभूषित विद्यापति ने 'पदावली' में राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन किया है। उन्होंने संस्कृत में शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा आदि, अवहट्ठ में रचित कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका तथा देशभाषा मैथिली में 'पदावली' का गान किया।

4. 'अंगिका' किस राज्य की बोली है?

(a) बंगाल (b) छत्तीसगढ़
(c) मध्य प्रदेश (d) बिहार

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

अंगिका बिहार राज्य की बोली है। यह नेपाल के तराई वाले प्रदेश में बोली जाती है। अंग जनपद के कारण इस बोली का नाम 'अंगिका' पड़ा। बिहार में मैथिली और मगही भी बोली जाती है।

5. **'ग्वालियर' की बोली है-**
(a) बुन्देली (b) ब्रजभाषा
(c) खड़ी बोली (d) कन्नौजी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

बुन्देली, बुन्देलखण्ड की बोली है। झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर जिले के पूर्वी क्षेत्रों में यह बोली जाती है। मध्य प्रदेश के दमोह, सागर, सिवनी, नरसिंहपुर जिलों की भी बोली बुन्देली ही है। छिंदवाड़ा और होशंगाबाद तक के कुछ हिस्सों में यह बोली जाती है। ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली आपस में एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं।

6. **झांसी, जालौन, हमीरपुर में कौन-सी बोली प्रचलित है?**
(a) बुन्देली (b) कन्नौजी
(c) ब्रजभाषा (d) मालवी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली इनमें से कौन है?**
(a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली
(c) बुन्देली (d) बाँगरू

T.G.T. परीक्षा, 2003
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली ब्रजभाषा है। ब्रज का पुराना अर्थ है-'पशुओं या गौओं का समूह' या 'चरागाह'। पशुपालन के प्राधान्य के कारण यह क्षेत्र ब्रज कहलाया और इसी आधार पर इसकी बोली ब्रजभाषा कहलायी। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से हुआ है। ब्रजभाषा आगरा, मथुरा-वृन्दावन, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली तथा आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है। साहित्य और लोक साहित्य दोनों ही दृष्टियों से ब्रजभाषा बहुत सम्पन्न है। हिन्दी प्रदेश के बाहर भी भारत के अनेक क्षेत्रों में ब्रजभाषा में साहित्य रचना होती रही है। सूरदास, नन्ददास, रहीम, रसखान, बिहारी, देव, घनानन्द, रत्नाकर आदि इसके प्रमुख कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अर्द्धमागधी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप में छत्तीसगढ़ी का विकास हुआ है। इसका क्षेत्र सरगुजा, कोरिया, बिलासपुर, रायगढ़, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, कांकेर आदि में है।

8. **ब्रजभाषा का क्षेत्र कौन नहीं है?**
(a) धौलपुर (b) सरगुजा
(c) मथुरा (d) आगरा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **'ब्रजभाषा' है-**
(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) बिहारी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **'खसखुरा' या 'गुरखाली' भाषा है-**
(a) नेपाल की राजभाषा
(b) गढ़वाल की लोकभाषा
(c) कुमायूँ की साहित्यिक भाषा
(d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

नेपाल की राज्यभाषा, 'नेपाली' को, पर्वतिया, 'गुरखाली','खसखुरा आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है।

11. **उकार बहुला बोली मानी जाती है-**
(a) अवधी (b) भोजपुरी
(c) बघेली (d) छत्तीसगढ़ी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

कृष्णदत्त वाजपेयी जी ने 'ब्रज का इतिहास' में मथुरा जिले की जातियों की भाषागत विशेषताओं का अध्ययन किया है। आहीरों की भाषा 'उकार बहुला' है। नाज, काम, रास को वे नाजु, कामु, रासु कहेंगे। वाजपेयी जी ने इस उकार बहुलता को भरत द्वारा निर्दिष्ट आभीरोक्ति (अपभ्रंश) से सम्बद्ध किया है। यह उकार बहुलता अवधी की भी विशेषता है।

12. **''ताले कै पानी पताले गये बेटी
पुरइनि गइँ कुम्हिलाइ हो।
गंगा जमुना बिच रेती परतु है
कइसे कै रचउं बिआह रे।''
उक्त गीत किस बोली का है?**
(a) अवधी (b) ब्रज
(c) भोजपुरी (d) कन्नौजी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

प्रस्तुत गीत अवधी बोली का है। यह एक विवाह गीत है।

13. ध्रुपद गायन का सम्बन्ध किस भाषा से है?
(a) ब्रजभाषा (b) अवधी
(c) राजस्थानी (d) खड़ी बोली
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

ध्रुपद गायन का सम्बन्ध ब्रजभाषा से है। अधिकांश विद्वानों का मत है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इसकी रचना की। इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि राजा मानसिंह तोमर ने ध्रुपद के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अकबर के समय में तानसेन और उनके गुरु स्वामी हरिदास नायक बैजू और गोपाल आदि प्रख्यात गायक ध्रुपद ही गाते थे।
➲ नाट्यशास्त्र के अनुसार वर्ण, अलंकार, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ ध्रुव रूप में परस्पर सम्बद्ध रहें, उन गीतों को ध्रुवा कहा गया है।
➲ शास्त्रीय संगीत के पद, ख्याल, ध्रुपद आदि का जन्म ब्रजभूमि में होने के कारण इन सबकी भाषा ब्रज है, ध्रुपद का विषय समग्र रूप से ब्रज का रास ही है।
➲ तानसेन के नाम से 'संगीतसार' और 'रागमाला', कृष्णलीला नामक ग्रन्थ मिलते हैं।

14. सही युग्म चुनिए-
(a) पश्चिमी हिन्दी - खड़ी बोली (कौरवी)
(b) बिहारी हिन्दी - मारवाड़ी
(c) पूर्वी हिन्दी - गढ़वाली
(d) पहाड़ी हिन्दी - बघेली
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

पश्चिमी हिन्दी-खड़ी बोली (कौरवी) युग्म सही है। पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत प्रमुख पाँच बोलियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं-खड़ी बोली या कौरवी, ब्रजभाषा, हरियाणी (बाँगरू), बुन्देली तथा कन्नौजी। बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत हैं-भोजपुरी, मगही तथा मैथिली। पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी। पहाड़ी हिन्दी के अन्तर्गत कुमायूँनी, गढ़वाली तथा नेपाली बोलियाँ आती हैं।

15. खड़ी बोली व ब्रजभाषा किस उपभाषा के अन्तर्गत आती हैं?
(a) पूर्वी हिन्दी (b) राजस्थानी हिन्दी
(c) पश्चिमी हिन्दी (d) पहाड़ी
K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से बिहारी हिन्दी का रूप नहीं है-
(a) भोजपुरी (b) अवधी
(c) मगही (d) मैथिली
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. निम्नलिखित बोलियों में से 'पूर्वी हिन्दी' की बोली नहीं है-
(a) अवधी (b) छत्तीसगढ़ी
(c) भोजपुरी (d) बघेली
P.G.T. परीक्षा, 2002
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. हिन्दी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है-
(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी
T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत कौन-सी बोली नहीं है?
(a) बघेली (b) ब्रज
(c) कन्नौजी (d) खड़ी बोली
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. निम्नलिखित में से कौन-सी पश्चिमी हिन्दी में नहीं है?
(a) बाँगरु (b) बुन्देली
(c) बघेली (d) कन्नौजी
दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. इनमें से कौन 'पश्चिमी हिन्दी' की बोली नही है?
(a) बघेली (b) ब्रजबोली
(c) बुन्देली (d) कन्नौजी
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. निम्नलिखित में कौन-सी पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है?

(a) ब्रज (b) बाँगरू
(c) कन्नौजी (d) डोगरी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. निम्नलिखित में से एक पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है—

(a) कन्नौजी (b) छत्तीसगढ़ी
(c) ब्रज (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत कौन-सी बोली नहीं आती है?

(a) छत्तीसगढ़ी (b) कौरवी
(c) बुन्देली (d) छत्तीसगढ़

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. पश्चिमी हिन्दी की कितनी बोलियाँ हैं?

(a) 3 (b) 5
(c) 4 (d) 2

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. पश्चिमी हिन्दी में कौन बोली है?

(a) मगही (b) कन्नौजी
(c) मैथिली (d) अवधी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. इनमें से कौन-सी बोली पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं आती?

(a) खड़ी बोली (b) ब्रजभाषा
(c) कन्नौजी (d) अवधी

P.G.T.परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'कन्नौजी' हिन्दी की किस उपभाषा की एक बोली है?

(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) राजस्थानी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. निम्नलिखित में से कौन-सी बोली पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं पड़ती है?

(a) ब्रजभाषा (b) अवधी
(c) बुन्देली (d) कन्नौजी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. इनमें से पश्चिमी हिन्दी की बोली कौन-सी नहीं है?

(a) ब्रज भाषा (b) बघेली
(c) कन्नौजी (d) बुन्देली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा युग्म गलत है?

(a) अवधी - पूर्वी हिन्दी (b) ब्रजभाषा - पश्चिमी हिन्दी
(c) भोजपुरी - पूर्वी हिन्दी (d) खड़ी बोली - पश्चिमी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'भोजपुरी-पूर्वी हिन्दी' का युग्म गलत है। भोजपुरी, मगही तथा मैथिली बिहारी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाएँ हैं। 'अवधी' पूर्वी हिन्दी, जबकि ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं।

32. खड़ी बोली हिन्दी की उत्पत्ति हुई है-

(a) मागधी अपभ्रंश से (b) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से
(c) शौरसेनी अपभ्रंश से (d) पैशाची अपभ्रंश से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

खड़ी बोली (पश्चिमी हिन्दी) की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई। खड़ी बोली के कई अन्य नाम हैं-हिन्दुस्तानी, कौरवी, सरहिन्दी। ब्रज भाषा की तुलना में यह बोली खड़ी-खड़ी लगती है, सम्भवतः इसीलिए इसे 'खड़ी बोली' कहा गया है। राहुल सांकृत्यायन ने खड़ी बोली को 'कौरवी' का नाम दिया था। इसका क्षेत्र देहरादून का मैदानी भाग, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली नगर, गाजियाबाद, बिजनौर, रामपुर और मुरादाबाद है। मागधी अपभ्रंश से बिहारी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ हैं-भोजपुरी, मैथिली तथा मगही । अर्द्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ हैं-अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अवधी बोली सीतापुर, लखीमपुर, लखनऊ, रायबरेली, उन्नाव, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद आदि स्थानों पर बोली जाती है।
- मारवाड़ी बोली की कई उपबोलियाँ हैं जिनमें ठटकी, थाली, बीकानेरी, बागड़ी, शेखावटी, मेवाड़ी, खैराड़ी, सिरोही आदि हैं।
- अपभ्रंश से विकसित प्रमुख आधुनिक भाषाएँ तथा उपभाषाएँ इस प्रकार हैं–

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएँ तथा उपभाषाएँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती,
पैशाची	लहंदा, पंजाबी
ब्राचड़	सिन्धी
महाराष्ट्री	मराठी
मागधी	बिहारी, बांग्ला, उड़िया (ओडिया), असमिया
अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी

33. निम्नलिखित आधुनिक भाषाओं में से किसका सम्बन्ध अपभ्रंश की पैशाची बोली से है?

(a) राजस्थानी (b) गुजराती
(c) पंजाबी (d) बंगाली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. यह बोली पूर्वी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है–

(a) अवधी (b) बघेली
(c) छत्तीसगढ़ी (d) बुन्देली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. सिन्धी भाषा का विकास अपभ्रंश की किस शाखा से हुआ है?

(a) पैशाची (b) शौरसेनी
(c) ब्राचड़ (d) मागधी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. पूर्वी हिन्दी वर्ग की बोलियों का विकास किससे माना गया है?

(a) शौरसेनी अपभ्रंश (b) मागधी अपभ्रंश
(c) अर्द्धमागधी अपभ्रंश (d) नागर अपभ्रंश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, देहरादून (मैदानी भाग) और सहारनपुर की बोली है–

(a) गढ़वाली (b) छत्तीसगढ़
(c) खड़ी बोली (d) बाँगरू

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पूर्वी हिन्दी' की बोलियों का विकास हुआ है–

(a) शौरसेनी अपभ्रंश से
(b) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से
(c) मागधी अपभ्रंश से
(d) पैशाची अपभ्रंश से

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2015, 2017

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. खड़ी बोली हिन्दी का विकास किस भाषा से हुआ है?

(a) ब्रज (b) अवधी
(c) दक्खिनी हिन्दी (d) अपभ्रंश

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. दिल्ली व मेरठ के आस-पास की बोली का क्या नाम है?

(a) ब्रजभाषा (b) पंजाबी
(c) खड़ी बोली (d) अवधी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. बिहारी हिन्दी का विकास किस प्राकृत या अपभ्रंश से माना गया है?

(a) शौरसेनी (b) मागधी
(c) अर्द्धमागधी (d) पैशाची

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है?

(a) मागधी (b) अर्द्धमागधी
(c) शौरसेनी (d) पैशाची

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. 'खड़ी बोली' का दूसरा नाम है—

(a) हरियाणवी (b) कौरवी
(c) मेवाती (d) राजस्थानी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. कौरवी भाषा का उदय किससे हुआ है?

(a) पश्चिमी हिन्दी (b) राजस्थानी
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. 'कौरवी' किस बोली को कहते हैं?

(a) मारवाड़ी (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) छत्तीसगढ़ी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. बिहारी हिन्दी की बोली का नाम है-

(a) मगही (b) बघेली
(c) छत्तीसगढ़ी (d) बुन्देली

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'मगही' किस उपभाषा की बोली है?

(a) राजस्थानी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. पूर्वी हिन्दी का विकास इनमें से किस अपभ्रंश में हुआ है?

(a) ब्राचड़ (b) अर्द्धमागधी
(c) खस (d) मागधी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. बिहार की राजधानी 'पटना' किस बिहारी बोली क्षेत्र में स्थित है?

(a) मैथिली (b) भोजपुरी
(c) मगही (d) अंगिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'मगही' शब्द 'मागधी' का विकसित रूप है। कुछ लोग इसे 'मागधी' भी कहते हैं। यह बोली पूरे गया जिले में तथा पटना, हजारीबाग, मुंगेर, पालामऊ, भागलपुर और राँची आदि जिलों के कुछ भागों में बोली जाती है।

50. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के उदय के पूर्व आर्यभाषा का कौन-सा रूप विद्यमान था?

(a) संस्कृत (b) पालि
(c) प्राकृत (d) अपभ्रंश

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है। विशुद्धतः हिन्दी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं का आरम्भ अपभ्रंश से माना जाता है।

51. आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास किससे हुआ है?

(a) अपभ्रंश (b) अवधी
(c) खड़ी बोली (d) ब्रजभाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. सिन्धी भाषा का सम्बन्ध किससे है?

(a) पैशाची (b) ब्राचड़
(c) मगही (d) शौरसेनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना है।

53. निम्नलिखित में से असत्य कथन चुनिए—

(a) रीवा, सतना, शहडोल—बघेली के क्षेत्र हैं।
(b) वर्धा की राष्ट्रभाषा सुधार समिति की ओर से देवनागरी में जो सुधार हुआ, वह 'स्वरखड़ी' के नाम से जाना जाता है।
(c) खड़ी बोली का एक अन्य नाम 'कौरवी' है।
(d) राजस्थानी उपभाषा का विकास पैशाची अपभ्रंश से हुआ है।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

राजस्थानी उपभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। शेष कथन सत्य हैं।

54. हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का सही क्रम चुनिए-

(a) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली
(b) संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली
(c) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, खड़ी बोली, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी
(d) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, शौरसेनी, पश्चिमी हिन्दी, खड़ी बोली

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है। विशुद्धतः, हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ अपभ्रंश से माना जाता है। हिन्दी का विकास क्रम है—संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-शौरसेनी-पश्चिमी हिन्दी-खड़ी बोली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है। आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी वियोगात्मक या विश्लिष्ट भाषा है।
- भाषा-परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है।
- भारत में चार भाषा-परिवार-भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रिक व चीनी-तिब्बती मिलते हैं।
- भारत में बोलने वालों के प्रतिशत के आधार पर भारोपीय परिवार सबसे बड़ा भाषा परिवार है।
- हिन्दी भारोपीय/भारत यूरोपीय के भारतीय-ईरानी शाखा के भारतीय-आर्य (Indo-Aryan) उपशाखा से विकसित एक भाषा है।

55. हिन्दी में अधिकांश शब्द किस भाषा से आए हैं?

(a) संस्कृत　　(b) फ़ारसी
(c) अंग्रेजी　　(d) उर्दू

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. हिन्दी किस परिवार की भाषा है?

(a) सामी हामी　　(b) भारोपीय
(c) काकेसी　　(d) पापुई

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

57. 'बनारसी' किसकी उपबोली है?

(a) बुन्देली　　(b) छत्तीसगढ़ी
(c) बघेली　　(d) कन्नौजी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

बिहार के शाहाबाद जिले के भोजपुर गाँव के नाम के आधार पर 'भोजपुरी' बोली का नाम पड़ा है। मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से विकसित इस बोली का क्षेत्र बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद, चम्पारण, सारण तथा आस-पास का कुछ क्षेत्र है। हिन्दी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी बोलने वाले सबसे अधिक हैं। अतः स्पष्ट है कि 'बनारसी' भोजपुरी की उपबोली है जो कि विकल्प में नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्तमान में समस्त बिहार-मैथिली, मगही तथा भोजपुरी क्षेत्रों में साहित्य भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रचलन है, किन्तु इससे यह परिणाम नहीं निकाला जा सकता है कि बिहारी बोलियों की उत्पत्ति उसी प्राकृत से हुई है जिससे हिन्दी की।

58. 'भोजपुरी' बोली की उत्पत्ति हुई है-

(a) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से　　(b) मागधी अपभ्रंश से
(c) शौरसेनी अपभ्रंश से　　(d) ब्राचड़ अपभ्रंश से

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. इनमें से कौन-सा गलत है?

(a) विकसित तथा प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से बोली का रूप भाषा से बहुत छोटा होता है।
(b) रूप-रचना की दृष्टि से बोली पूर्णतः विकसित होती है।
(c) बोली दैनन्दिन व्यवहृत होने वाली घरेलू अभिव्यक्ति का माध्यम है।
(d) विभाषा बोली का विकसित रूप है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

विकल्प (b) का कथन गलत है। बोली भाषा का क्षेत्रीय रूप होती है, जो अपने सीमित क्षेत्र में दैनिक जीवन के नित्य व्यवहार में प्रयुक्त होती है। यह भाषा का अल्पविकसित रूप होती है।

❑ हिन्दी की उपभाषाएँ

1. हिन्दी की कितनी उपभाषाएँ हैं?

(a) दो　　(b) तीन
(c) चार　　(d) पाँच

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं। जिनकी बोलियाँ इस प्रकार हैं–

उपभाषा		बोली
पश्चिमी हिन्दी	-	खड़ी बोली, हरियाणवी, दक्खिनी, ब्रजभाषा, बुन्देली, कन्नौजी
राजस्थानी हिन्दी	-	मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी
पूर्वी हिन्दी	-	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
बिहारी हिन्दी	-	भोजपुरी, मगही, मैथिली
पहाड़ी हिन्दी	-	कुमाऊँ, गढ़वाली

2. 'मेवाती' किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

(a) पूर्वी हिन्दी (b) राजस्थानी हिन्दी

(c) बिहारी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

'मेवाती' राजस्थानी उपभाषा वर्ग की बोली है। मेवाती को उत्तरी राजस्थानी भी कहते हैं। राजस्थानी उपभाषा के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी), उत्तरी राजस्थानी (मेवाती) और दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) हैं। उत्तरी राजस्थान में इसका क्षेत्र अलवर, भरतपुर तथा आस-पास के क्षेत्र हैं। मेव जाति के इलाके मेवात के नाम पर इसे 'मेवाती' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी, बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत भोजपुरी, मैथिली एवं मगधी (मगही) तथा पहाड़ी हिन्दी के अन्तर्गत पहाड़ी बोलियाँ गढ़वाली, कुमाऊँनी और नेपाली आती हैं।
- बघेल राजपूतों के आधार पर रीवा तथा आस-पास का इलाका बघेलखण्ड कहलाता है और वहाँ की बोली को बघेली कहते हैं।
- बघेली का उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। इसका क्षेत्र रीवा, नागौद, शहडोल, सतना, मैहर तथा आस-पास का क्षेत्र है। कुछ अपवादों को छोड़कर बघेली में केवल लोक साहित्य है।

3. अवधी किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी

(c) बिहारी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'छत्तीसगढ़ी' बोली हिन्दी के किस उपभाषा वर्ग के अन्तर्गत आती है?

(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी

(c) बिहारी (d) पहाड़ी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'बघेली' हिन्दी के किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी

(c) राजस्थानी हिन्दी (d) बिहारी हिन्दी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'बघेली' बोली का सम्बन्ध किस उपभाषा से है?

(a) राजस्थानी (b) पूर्वी हिन्दी

(c) बिहारी (d) पश्चिमी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'पँवारी' इनमें से किस बोली से सम्बन्धित है?

(a) ब्रज (b) खड़ी बोली

(c) बुन्देली (d) अवधी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर–(c)

बुन्देली हिन्दी भाषा की एक बोली है, जबकि पँवारी, भदावरी, राठौरी इत्यादि उसकी उपबोलियां हैं।

8. बाँगरू किस उपभाषा वर्ग की बोली है?

(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी

(c) बिहारी (d) पहाड़ी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(a)

बाँगरू पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली के अन्तर्गत आती है। बाँगरू को हरियाणी अथवा हरियाणवी भी कहते हैं। बाँगरू (शुष्क, उच्च भूमि) भू-भाग के कारण यहाँ की बोली का नाम बाँगरू पड़ा। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। करनाल, रोहतक, दिल्ली तथा हिसार के क्षेत्र इसके अन्तर्गत आते हैं।

9. हरियाणवी या बाँगरू बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है?

(a) पश्चिमोत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश (b) अर्द्धमागधी

(c) नागर अपभ्रंश (d) मागधी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग न होना किस उपभाषा की प्रमुख विशेषता है?

(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) राजस्थानी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

हिन्दी खड़ी बोली से अवधी की विभिन्नता मुख्य रूप से व्याकरणात्मक है। इसमें कर्ता कारक के परसर्ग (विभक्ति) 'ने' का नितांत अभाव है। अन्य उपसर्गों के प्रायः दो रूप मिलते हैं- ह्रस्व और दीर्घ (कर्म-सम्प्रदान-सम्बन्ध—क, का; करण-अपादान—स-त, से-ते; अधिकरण—म, मा)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गठन की दृष्टि से हिन्दी क्षेत्र की उपभाषाओं को दो वर्गों-पश्चिमी और पूर्वी में विभाजित किया जाता है। अवधी पूर्वी के अन्तर्गत है।
- पूर्वी की दूसरी उपभाषा छत्तीसगढ़ी है। अवधी को कभी-कभी बैसवाड़ी भी कहते हैं।
- परन्तु बैसवाड़ी अवधी की एक उपबोली मात्र है, जो उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली और फतेहपुर जिले के कुछ भागों में बोली जाती है।

11. निम्नलिखित में से किस बोली में कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न प्रयुक्त नहीं होता है?

(a) ब्रज (b) अवधी
(c) बुन्देली (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता है?

(a) खड़ी बोली (b) दक्खिनी हिन्दी
(c) हरियाणवी (d) अवधी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. इनमें से किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता?

(a) कौरवी (b) अवधी
(c) हरियाणवी (d) मालवी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित में से किस बोली में उत्तम पुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग उत्तम पुरुष एकवचन 'मैं' के अर्थ में किया जाता है?

(a) ब्रज (b) अवधी
(c) बाँगरू (d) खड़ी बोली

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अवधी में उत्तम पुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग उत्तम पुरुष एकवचन 'मैं' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।

15. गएल, भएल आदि किस बोली की किस तरह की क्रियाएँ हैं?

(a) भोजपुरी, भूतकालिक (b) अवधी, वर्तमानकालिक
(c) ब्रजभाषा, भूतकालिक (d) बुन्देली, भविष्यकालिक

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

गएल, भएल आदि भोजपुरी बोली की भूतकालिक क्रियाएँ हैं।

❑ हिन्दी की ध्वनियाँ

1. इनमें से कौन-सी ध्वनि अवधी में नहीं है?

(a) क (b) ण
(c) न (d) म

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

अवधी में संस्कृत मूर्धन्य संघर्षी 'ष' का 'ख' और तालव्य 'श' का 'स' रूप उच्चारण होता है तथा 'ण' ध्वनि 'न' में बदल जाती है। जैसे-वेष-भूख, शीतल-सीतल, रावण-रावन, हर्ष-हरख, बाण-बान इत्यादि। अवधी में 'ल' ध्वनि प्रायः 'र' हो जाती है, कभी 'ड़' ध्वनि भी 'र' हो जाती है। जैसे-तलवार-तरवारि, डाल-डारि, लड़का-लरिका, पकड़-पकरि इत्यादि।

2. 'प्रसन्नता' शब्द में कौन-सी ध्वनि है?

(a) संयुक्त ध्वनि (b) सम्पृक्त ध्वनि
(c) युग्मक ध्वनि (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

जब एक ही ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह युग्मक ध्वनि कहलाती है जैसे-अक्षुण्ण, उत्फुल्ल, दिक्कत, प्रसन्नता आदि। एक ध्वनि जब दो व्यंजनों से संयुक्त होती है, तब वह संपृक्त ध्वनि कहलाती है। जैसे-'सम्बल', 'कम्पन' इत्यादि। यहाँ पर 'स' और 'ब' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि तथा 'क' और 'प' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि संयुक्त हुई है। दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर जब एक स्वर के सहारे बोली जाती हैं, तो संयुक्त ध्वनियां कहलाती हैं। जैसे-प्राण,घ्राण, क्लांत, म्लान, प्रकर्ष इत्यादि। संयुक्त ध्वनियाँ अधिकतर तत्सम शब्दों में मिलती हैं।

3. 'स्वर ध्वनि' के प्रकार हैं-

(a) दीर्घ (b) प्लुत
(c) ह्रस्व (d) उपर्युक्त तीनों

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

स्वर के तीन भेद होते हैं- 1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर तथा 3. प्लुत स्वर।

1. **ह्रस्व स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें एकमात्रिक कहा जाता है। इनकी संख्या चार है-अ,इ,उ और ऋ।
2. **दीर्घ स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से दोगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ इन्हें द्विमात्रिक कहा जाता है।
3. **प्लुत स्वर**-जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। ये प्राय: दूर से पुकारने के लिए प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए उच्चारण की स्पष्टता के लिए इनके आगे- 'ऽ' लगा दिया जाता है। इसका तात्पर्य है-तिगुना समय। इन्हें त्रिमात्रिक कहा जाता है। जैसे– ओ३म !, हे राऽम्! आदि।

इन सभी स्वरों का अनुनासिक उच्चारण भी होता है। जैसे-अँ,आँ,इँ, ईं, उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं।

4. **स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को कहते हैं -**

(a) मात्रा (b) अनुस्वार
(c) ह्रस्व (d) प्लुत

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। मात्रा या उच्चारण के आधार पर यह तीन प्रकार के होते हैं- ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर तथा प्लुत स्वर। जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से भी अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर तथा जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। किसी को पुकारने या नाटक के संवादों में मंचन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

5. **सही कथन चुनिए-**

(a) 'य' और 'व' ध्वनियाँ अर्द्धस्वर कहलाती हैं।
(b) व्यंजन का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से हो सकता है।
(c) अवधेश का विग्रह अव+धेश होता है।
(d) हिन्दी में व्यंजनों की संख्या साठ है।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

य, र, ल, व को अन्त:स्थ कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण व्यंजन तथा स्वरों का मध्यवर्ती-सा लगता है। स्वर व्यंजनों के ये 'अन्त:स्थिति' से जान पड़ते हैं। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठों के परस्पर सटाने से होता है। इन चारों वर्णों को अर्द्धस्वर भी कहा जाता है। व्यंजन का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से नहीं हो सकता है। जब किसी व्यंजन में स्वर नहीं रहता, तब उस व्यंजन के नीचे हल् का चिह्न लगा दिया जाता है। हिन्दी के प्रत्येक शब्द के अन्तिम 'अ' लगे 'वर्ण का उच्चारण हलन्त-सा होता है। जैसे-रात्, पुस्तक्, मन् इत्यादि। यदि अकारान्त शब्द का अन्तिम वर्ण संयुक्त हो, तो अन्त्य 'अ' का उच्चारण पूरा होता है। **जैसे**-सत्य , ब्रह्म, धर्म इत्यादि। व्यंजनों की संख्या 35 है जिनमें ड़ तथा ढ़ द्विगुण व्यंजन हैं। अवधेश का विग्रह अवध + ईश होता है। अत: दिए गए कथन में केवल विकल्प (a) सही है।

6. **इनमें से अन्त:स्थ वर्ण है—**

(a) व (b) त
(c) ए (d) औ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **इनमें से कौन-सी ध्वनि अन्त:स्थ नहीं है?**

(a) व (b) ब
(c) र (d) ल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **इनमें से कौन-सा वर्ण स्पर्श व्यंजन नहीं है?**

(a) क (b) च
(c) ट (d) य

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **कामता प्रसाद गुरु ने बाह्य प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के कितने भेद माने हैं?**

(a) तीन (b) पाँच
(c) चार (d) दो

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

कामता प्रसाद गुरु ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी व्याकरण' में उद्धृत किया है कि बाह्य प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के दो भेद हैं-अल्पप्राण तथा महाप्राण।

10. निम्नलिखित में कण्ठ्यध्वनियाँ कौन-सी हैं?

(a) क, ख (b) य, र

(c) च, ज (d) ट, ण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

कण्ठ और निचली जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'कण्ठ्य' कहलाते हैं। इस प्रकार की ध्वनियों को कण्ठ्यध्वनियाँ कहते हैं। इसके अन्तर्गत अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ), ह और विसर्ग आते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तालु और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'तालव्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ), य और श आते हैं।
- मूर्द्धा और जीभ के स्पर्श वाले वर्ण 'मूर्द्धन्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत ऋ, ट वर्ग (ट,ठ,ड,ढ,ण), र और ष आते हैं।
- दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'दंत्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत त वर्ग (त, थ, द, ध, न), ल और स आते हैं।
- दोनों ओष्ठों के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'ओष्ठ्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत उ, ऊ तथा प वर्ग (प, फ, ब, भ, म) आते हैं।
- कण्ठ और तालु में जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण 'कण्ठतालव्य' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत ए तथा ऐ आते हैं।
- कण्ठ द्वारा जीभ और ओष्ठों के कुछ स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत 'ओ' और 'औ' आते हैं।
- दाँत से जीभ और ओठों के कुछ योग से बोला जाने वाला वर्ण 'दंतोष्ठ्य' कहलाता है। जैसे-व।

11. उच्चारण स्थान के आधार पर 'ञ' व्यंजन है-

(a) तालव्य (b) मूर्धन्य

(c) कण्ठ्य (d) ओष्ठ्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. हिन्दी की मूर्धन्य ध्वनियाँ हैं-

(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ

(c) प, फ, ब, भ (d) त, थ, द, ध

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. उच्चारण की दृष्टि से 'व' ध्वनि है—

(a) दंत्य (b) दंत्योष्ठ्य

(c) कंठतालव्य (d) तालव्य

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?

(a) थ (b) फ

(c) म (d) व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. हिन्दी की ओष्ठ्य व्यंजन ध्वनि है—

(a) अ (b) थ

(c) भ (d) ज

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित में से हिन्दी की कण्ठ्य ध्वनि है—

(a) ई (b) त

(c) फ (d) ह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. निम्नलिखित में ओष्ठ ध्वनि नहीं है—

(a) च में (b) प में

(c) भ में (d) म में

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'द' ध्वनि का उच्चारण स्थान के आधार होता है—

(a) तालव्य (b) दंत्य

(c) कण्ठ्य (d) ओष्ठ्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. निम्नलिखित में से कौन मूर्धन्य ध्वनि नहीं है?

(a) ट (b) ठ

(c) ढ (d) ढ़

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'ओ, औ' किस प्रकार के वर्ण हैं?
(a) तालव्य (b) मूर्द्धन्य
(c) दंतोष्ठ्य (d) कण्ठोष्ठ्य
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. हिन्दी की 'श' ध्वनि है-
(a) मूर्द्धन्य (b) तालव्य
(c) दंत्य (d) ओष्ठ्य
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. निम्नलिखित में से दंत्य ध्वनि है—
(a) क (b) छ
(c) त (d) प
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. हिन्दी की 'ब' ध्वनि है—
(a) दंत्य ध्वनि (b) ओष्ठ्य ध्वनि
(c) मूर्द्धन्य ध्वनि (d) तालव्य ध्वनि
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. ड़, ढ़ ध्वनियों के विषय में कौन-सा कथन शुद्ध है?
(a) ये तालव्य ध्वनियाँ हैं। (b) ये मूर्धन्य उत्क्षिप ध्वनियाँ हैं।
(c) इनका प्रयोग शब्द के आरंभ, मध्य तथा अंत में (सर्वत्र) किया जाता है। (d) दोनों महाप्राण हैं।
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

ड़, ढ़ मूर्धन्य उत्क्षिप्प ध्वनियाँ हैं। यह अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं।

25. हिन्दी की अग्र अवृत्ताकार, संवृत स्वर ध्वनि है—
(a) अ (b) इ
(c) आ (d) ए
G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

स्वरों के उच्चारण में केवल काकल में अवरोध होता है, मुख विवर से हवा निर्बाध गति से बाहर निकलती है। जिह्वा का हिस्सा विशेष कुछ ऊपर उठता है। 'इ' ह्रस्व, संवृत, अवृत्ताकार तथा अग्र स्वर है। 'अ' ह्रस्व, अर्ध विवृत, मध्य स्वर, 'आ' दीर्घ, विवृत, पश्च स्वर तथा 'ऐ' दीर्घ, अर्ध विवृत तथा अग्र स्वर है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा स्वर संवृत है?
(a) आ (b) औ
(c) इ (d) ऐ
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. निम्न में अर्द्धस्वर कहलाता है-
(a) य (b) म
(c) र (d) ल
T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'म' वर्ण 'प' वर्ग के अन्तर्गत आता है, यह ओष्ठ्य स्पर्श कहलाता है। य, र, ल, व परम्परागत शब्दावली में अर्द्धस्वर के अन्तर्गत आते हैं। परम्परागत 'अर्द्धस्वर' के अधीन परिगणित चारों व्यंजन य,र,ल,व में से पहला व्यंजन 'य' विशुद्ध 'अर्द्धस्वर' है, जबकि 'व' (जैसे–'वन' शब्दों में) वस्तुतः घोष संघर्षी है। हाँ किसी पूर्ववर्ती व्यंजन के साथ उच्चरित होकर 'अर्द्धस्वर' बन जाता है। **जैसे-**'स्वर' या 'अनुस्वार' शब्दों में 'व'।

28. निम्नलिखित में कौन-सी व्यंजन ध्वनियाँ स्पर्श संघर्षी कहलाती है?
(a) च, छ, ज, झ (b) क, ख, ग, घ
(c) ट, ठ, ड, ढ (d) प, फ, ब, भ
G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

विकल्प (a) की व्यंजन ध्वनियाँ तालव्य स्पर्शी है। आधुनिक पारिभाषिक शब्दावली में स्पर्श-संघर्षी व्यंजन के नाम से पुकारते हैं। इनके उच्चारण करते समय मुखाववय में यथास्थिति आंशिक या पूर्ण अवरोध होता है।

29. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन सुमेलित है-
(a) ग - अघोष (b) फ - अल्पप्राण
(c) स - ऊष्म (d) ठ - सघोष
G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

ग, सघोष व्यंजन, फ, महाप्राण व्यंजन, ठ अघोष व्यंजन तथा स ऊष्म व्यंजन है। अतः विकल्प (c) सही है।

30. निम्नांकित में अघोष अल्पप्राण ध्वनि कौन-सी है?

(a) झ (b) ठ

(c) ज (d) क, त

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

वायु को संस्कृत में प्राण कहते हैं। इसी आधार पर कम वायु से उच्चरित ध्वनि 'अल्पप्राण' और अधिक वायु से उत्पन्न ध्वनि 'महाप्राण' कही जाती है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवां वर्ण अल्पप्राण है। **जैसे-** क,च,ट,त,प,ग,ज,ड,द,ब ङ,ञ,ण,न,म। सभी स्वर अल्पप्राण हैं। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण है। **जैसे-**ख, छ, ठ, थ, फ, घ, स, ढ, ध, भ। सभी ऊष्म वर्ण (श,ष,स,ह,) महाप्राण हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में केवल नाद का उपयोग होता है, उन्हें घोष (सघोष) वर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्णों में प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवां वर्ण **जैसे-** ग,घ,ङ,ज,झ,ञ,ड,ढ,ण,द, ध,न,ब,भ,म इत्यादि और सभी स्वर वर्ण तथा य,र,ल,व, ह घोष (सघोष) वर्ण हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में नाद की जगह केवल श्वाँस का उपयोग होता है, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। स्पर्श वर्णों में प्रत्येक वर्ग का पहला तथा दूसरा वर्ण यथा-क,ख,च,छ,ट,ठ,त,थ,प,फ और श,ष,स अघोष वर्ण हैं।

31. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्ण सघोष महाप्राण व्यंजन है?

(a) क (b) झ

(c) ठ (d) प

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. इनमें से कौन व्यंजन अल्पप्राण है?

(a) ख (b) थ

(c) च (d) फ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. हिन्दी के स्पर्श व्यंजन के पाँचों वर्गो के दूसरे और चौथे वर्ण होते हैं-

(a) अल्पप्राण व्यंजन (b) महाप्राण व्यंजन

(c) घोष व्यंजन (d) अघोष व्यंजन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. निम्नलिखित व्यंजनों में कौन महाप्राण है?

(a) क (b) ग

(c) ङ (d) ठ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. महाप्राण ध्वनियाँ व्यंजन-वर्ग में किससे सम्बन्धित हैं?

(a) पहला, दूसरा (b) दूसरा, तीसरा

(c) दूसरा, चौथा (d) पहला, चौथा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. निम्न में से कौन एक अल्पप्राण ध्वनि है?

(a) क (b) ख

(c) घ (d) ध

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. श, ष, स, ... के अन्तर्गत आते हैं।

(a) ऊष्म (b) स्पर्श

(c) अन्तःस्थ (d) संयुक्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन के अन्तर्गत आते हैं। ऊष्म व्यंजन वे हैं, जिनका उच्चारण मुखांगों के घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा से होता है। ये महाप्राण व्यंजन के अन्तर्गत आते हैं।

38. इनमें से ऊष्म व्यंजन नहीं है-

(a) ह (b) ष

(c) श (d) ल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. उच्चारण की दृष्टि से 'श्, ष्, स्' व्यंजन किस प्रकार के हैं?

(a) अंतस्थ (b) वर्त्स्य

(c) ऊष्म (d) तालव्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. अनुनासिक व्यंजन कौन-से होते हैं?

(a) वर्ग के प्रथमाक्षर (b) वर्ग का तृतीयाक्षर

(c) वर्ग का चौथा व्यंजन (d) वर्ग का पंचमाक्षर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'वर्ग का पंचमाक्षर' (, ञ, ण, न, म) अनुनासिक व्यंजन होते हैं।

41. अयोगवाह कहा जाता है-

(a) विसर्ग को (b) महाप्राण को

(c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) को 'अयोगवाह' कहते हैं। ये ध्वनियाँ न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन, फिर भी अर्थ का वहन करती हैं। पं. किशोरी दास वाजपेयी के शब्दों में इनकी स्वतंत्र गति नहीं, इसलिए ये स्वर नहीं हैं और व्यंजनों की तरह ये स्वरों के पूर्व नहीं, पश्चात् आते हैं, इसलिए व्यंजन नहीं। वर्णों की दोनों श्रेणियों में किसी के साथ इनका जातीय योग नहीं है, इसलिए इन दोनों ध्वनियों को 'अयोगवाह' कहते हैं।

42. हिन्दी में 'अनुस्वार' किस ध्वनि का सूचक नहीं है?

(a) ङ (b) ञ

(c) ण (d) य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

ङ, ञ, ण 'अनुस्वार' ध्वनियां हैं, जबकि य, अंतःस्थ व्यंजन है।

43. 'वर्णमाला' किसे कहेंगे?

(a) शब्द-समूह को (b) वर्णों के संकलन को

(c) शब्द-गणना को (d) वर्णों के व्यवस्थित समूह को

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

वर्ण या अक्षर उस ध्वनि को कहते हैं जिसके टुकड़े नहीं हो सकते हैं अर्थात् भाषा की सबसे छोटी इकाई है। व्यंजन और स्वर के संयुक्त रूप को अक्षर कहते हैं। अक्षरों या वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। हिन्दी के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें 11 स्वर, 2 अयोगवाह, 33 व्यंजन, 2 द्विगुण (व्यंजन) तथा 4 संयुक्ताक्षर आते हैं।

44. हिन्दी भाषा में कितने व्यंजन हैं?

(a) 21 (b) 33

(c) 36 (d) 40

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. हिन्दी वर्णमाला में वर्ण हैं-

(a) 50 (b) 52

(c) 54 (d) 55

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. व्यंजन और स्वर के संयुक्त रूप को क्या कहते हैं?

(a) वर्ण (b) ध्वनि

(c) अक्षर (d) वाक्य

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. हिन्दी भाषा में कितने स्वर हैं?

(a) 14 (b) 11

(c) 13 (d) 5

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. भाषा की सबसे छोटी इकाई कौन-सी है?

(a) शब्द (b) व्यंजन

(c) स्वर (d) वर्ण

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. भाषा की सबसे छोटी इकाई है -

(a) शब्द (b) मात्रा

(c) वर्ण (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. मात्रा स्वर को क्या कहते हैं?

(a) वर्ण (b) समरूप (ग्रेफीम)

(c) रूप (d) शब्द

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

जो स्वर न अग्र रेखा के समीप हैं, न पश्च रेखा के, केन्द्रीय स्वर कहलाते हैं–अ, आ ऐसे ही स्वर हैं। नागरी लिपि में मात्रा पद्धति है। ये मात्राएँ स्वरों के चिह्न होती हैं। जब कभी कोई व्यंजन किसी स्वर के साथ आता है, तब उसके साथ पूरा स्वर नहीं लिखा जाता, केवल स्वर की मात्रा लिखी जाती है। मात्रा स्वर की समरूप (ग्रेफीम) कही जाती है। हिन्दी स्वर ध्वनियों में प्रथम छह स्वर और उनकी मात्राएँ इस प्रकार हैं-

स्वर	विरण	मात्रा
अ	ह्रस्व अ, जैसे अनार	- ा
आ	दीर्घ आ, जैसे-काम	(ा)
इ	ह्रस्व इ, जैसे-जिन	(ि)
ई	दीर्घ ई, जैसे-जीत	(ी)
उ	ह्रस्व उ, जैसे-कुल	(ु)
ऊ	दीर्घ ऊ, जैसे-फूल	(ू)

द्वि स्वर

नीचे दिये गये चार स्वर द्वि स्वर कहलाते हैं।

स्वर	विरण	मात्रा
ए	(अ + इ), जैसे-मेल	(े)
ऐ	(अ + ए), जैसे-कैसा	(ै)
ओ	(ऊ + उ), जैसे-गोल	(ो)
औ	(अ + ओ), जैसे-कौन	(ौ)

51. 'श्र' एक संयुक्त व्यंजन है। इसमें किन दो वर्णों को सम्मिलित किया गया है?

(a) स और र वर्णों को (b) ष और र वर्णों को
(c) श और र वर्णों को (d) श्र और अ वर्णों को

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

हिन्दी में चार संयुक्त व्यंजन है, जिसका निर्माण दो व्यंजनों के योग से हुआ है। ये चार इस प्रकार हैं-

क्ष = क् + ष त्र = त् + र
ज्ञ = ज् + श्र = श् + र

52. लिखित भाषा में विचारों को कैसे व्यक्त करते हैं?

(a) संकेतों द्वारा (b) बोलकर
(c) लिखकर (d) सुनकर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जब व्यक्ति किसी दूर बैठे व्यक्ति को पत्र द्वारा अथवा पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख द्वारा अपने विचार प्रकट करता है, तब उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

53. हिन्दी की स्पर्श घोष, महाप्राण, ओष्ठ्य व्यंजन ध्वनि है -

(a) भ् (b) ठ्
(c) थ् (d) ह्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'भ्' स्पर्श घोष, महाप्राण तथा ओष्ठ्य व्यंजन है।

54. 'क' व्यंजन के विषय में निम्न में से कौन-सा सही है?

(a) अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि
(b) महाप्राण, घोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि
(c) अल्पप्राण, घोष, संघर्षी, तालव्य ध्वनि
(d) महाप्राण, अघोष, संघर्षी, कण्ठ्य ध्वनि

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'क' व्यंजन अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी तथा कण्ठ्य ध्वनि है।

55. आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से 'ब्' वर्ण का वैशिष्ट्य है-

(a) ओष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, अघोष, निरनुनासिक
(b) द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष, निरनुनासिक
(c) द्वयोष्ठ्य, स्पर्श-संघर्षी, अल्पप्राण, अघोष, निरनुनासिक
(d) ओष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, सघोष, निरनुनासिक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से 'ब्' वर्ण का वैशिष्ट्य-द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष, निरनुनासिक है।

56. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियों को वर्गीकृत करने के कौन से पाँच आधार स्वीकार किए गए हैं?

(a) स्वर, काल, स्थान, संवाद, नाद
(b) स्वर, स्थान, काल, प्राण, सुर
(c) काल, प्रयत्न, स्थान, प्राण, अनुदात्त
(d) स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न, अनुप्रदान

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

पाणिनि ने लिखा है कि आत्मा बुद्धि के द्वारा अर्थो को जानकर दूसरों को बतलाने की इच्छा से मन को प्रेरित करता है। प्राण वायु उर स्थल में आहत होकर मन्द स्वर को उत्पन्न करता है। कण्ठ में टकराकर मध्यम स्वर, सिर में टकराकर तार स्वर बनाता है। वही मुख में आकर वर्ण बनता है। वर्णो के विभाग भी स्वर से, काल से, स्थान से, प्रयत्न से और अनुप्रदान से तय होते हैं।

❑ देवनागरी लिपि

1. देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग किस राज्य में हुआ माना जाता है?

(a) महाराष्ट्र (b) उत्तर प्रदेश

(c) राजस्थान (d) गुजरात

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

देवनागरी का नामकरण विवादास्पद है। ज्यादातर विद्वान गुजरात के नागर ब्राह्मण से इसका सम्बन्ध जोड़ते हैं। उनका मानना है कि गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से वहाँ के पण्डित वर्ग अर्थात नागर ब्राह्मणों के नाम से इसे नागरी कहा गया है। अपने अस्तित्व में आने के तुरन्त बाद इसने देवभाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया। इसीलिए 'नागरी' में देव शब्द जुड़ गया और बन गया 'देवनागरी'।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- देवनागरी लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है।
- एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण संकेत होता है।
- एक वर्ण संकेत से अनिवार्यत: एक ही ध्वनि व्यक्त होती है। जो ध्वनि का नाम वही वर्ण का नाम होता है। जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।

2. कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है?

(a) बंगला (b) पंजाबी

(c) मराठी (d) गुजराती

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

देवनागरी एक लिपि है, जिसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी लिपि में अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, नेपाली, तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, विष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती हैं।

3. हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है?

(a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी

(c) नागरी (d) मसनावी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. देवनागरी लिपि में स्वर वर्णों की संख्या है—

(a) 11 (b) 12

(c) 13 (d) 14

P.G.T. परीक्षा, 2011

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

देवनागरी लिपि में स्वरों की संख्या 11 है। ये इस प्रकार हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

5. 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी' यह संविधान के किस अनुच्छेद में वर्णित है?

(a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344

(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम लोग हिन्दी दिवस मनाते हैं। संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार, ''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अनुच्छेद 344 राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग एवं समिति के गठन से सम्बन्धित है।
- अनुच्छेद 345, 346, 347 में प्रादेशिक भाषाओं सम्बन्धी प्रावधानों को रखा गया है।
- अनुच्छेद 343 (2) में किसी बात के होते हुए भी संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की कालावधि के पश्चात विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा का अथवा अंकों के देवनागरी रूप का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग अनुबन्धित कर सकेगी जैसे कि ऐसी विधि में उल्लेखित हो।

6. भारत में हिन्दी को संविधान की किस धारा के अन्तर्गत राजभाषा घोषित किया गया है?

(a) धारा 343 (i) (b) धारा 343 (ii)

(c) धारा 333 (i) (d) धारा 334 (i)

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा मिला?**

(a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344
(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया है कि "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी?"**

(a) अनुच्छेद 343 (b) अनुच्छेद 344
(c) अनुच्छेद 345 (d) अनुच्छेद 346

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **किस तिथि को 'हिन्दी' को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया है?**

(a) 15 अगस्त, 1947 (b) 26 जनवरी, 1950
(c) 14 सितम्बर, 1949 (d) 14 सितम्बर, 1950

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **भारत की राजभाषा-**

(a) हिन्दी (b) अंग्रेजी
(c) हिन्दी एवं अंग्रेजी (d) भारत की सभी भाषाएँ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **संविधान के अनुच्छेद 351 में किस विषय का वर्णन है?**

(a) संघ की राजभाषा
(b) उच्चतम न्यायालय की भाषा
(c) पत्राचार की भाषा
(d) हिन्दी भाषा के विकास सम्बन्धित निर्देश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

हिन्दी भाषा के विकास के लिए यह विशेष निर्देश अनुच्छेद 351 में दिया गया कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके एवं उसका शब्द भण्डार समृद्ध और संवर्धित हो।

❑ देवनागरी लिपि का विकास एवं विशेषता

1. **देवनागरी लिपि का विकास माना जाता है—**

(a) देववाणी से (b) खरोष्ठी से
(c) ब्राह्मी से (d) सिन्धु लिपि से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

सभी भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं। देवनागरी लिपि का विकास भी ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी भारत की लगभग 10 प्रमुख लिपियों में से एक है। देवनागरी एक आक्षरिक लिपि है, जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। अधिकतर लिपियों की तरह देवनागरी भी बायें से दायें की तरफ लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों जैसे ध, भ, थ इत्यादि के ऊपर रेखा कटी होती है) जिसे 'शिरोरेखा' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन तथा उर्दू भाषा की लिपि 'अरबी फारसी' होती है।

2. **'देवनागरी' का विकास किस लिपि से हुआ है?**

(a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी
(c) फारसी (d) रोमन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **देवनागरी लिपि का विकास किससे हुआ है?**

(a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी
(c) कीलाक्षर (d) हेरीग्लिफिक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **देवनागरी लिपि का विकास हुआ है-**

(a) खरोष्ठी से (b) फारसी से
(c) मराठी से (d) ब्राह्मी से

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **प्राचीन देवनागरी लिपि का विकास.....से हुआ है।**

(a) कुटिल लिपि (b) सेमेलिट लिपि

(c) गुरुमुखी लिपि (d) नेपाली लिपि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

प्राचीन देवनागरी लिपि का विकास कुटिल लिपि से हुआ है। इस कुटिल लिपि से 8-9वीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ, जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी का क्षेत्र उत्तरी भारत है, किन्तु दक्षिणी भारत के कुछ भागों में भी यह मिली है। दक्षिण भारत में इसका नाम 'नागरी' न होकर नंदिनागरी है। प्राचीन नागरी से ही आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, कैथी, मैथिली, असमिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुई हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सर विलियम जोन्स का विश्वास है कि ब्राह्मी लिपि का विकास सेमेटिक लिपि से हुआ है। सेमेटिक लिपि को मोटे रूप से तीन शाखाओं में बाँटी जा सकती है-1. उत्तरी सेमेटिक 2. दक्षिणी सेमेटिक 3. फोइनीशियन। अंगद देव जी ने प्राचीन शारदा लिपि और सीमित उपयोग की एक स्थानीय लिपि मिलाकर 'गुरुमुखी लिपि' का विकास किया।

➲ इसी लिपि में उन्होंने गुरु नानकदेव की तथा अपनी भी समस्त वाणी लिखी। इससे पूर्व गुरु नानक की वाणी का बहुत-सा भाग तो केवल फारसी लिपि में उपलब्ध था।

➲ नेपाली भाषा ब्राह्मी लिपि से उद्‌भूत देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। नेपाली, नेपाल की भाषा है। यह भारत की भी एक राष्ट्रीय भाषा है। नेपाली भाषा के प्राचीन नाम पहाड़ी, रवस, पर्वती और गोर्खा व गोर्खोली रहे हैं।

6. **देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता है-**

(a) हिन्दी भाषा की लिपि होना

(b) प्राचीन लिपि होना

(c) अनेक भारतीय भाषाओं की लिपि होना

(d) सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि होना, एक ध्वनि के लिए एक संकेत होना।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भारत की सभी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरू किया। ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम नमूना 5वीं सदी ई.पूर्व का है, जो कि बौद्धकालीन है। गुप्तकाल के प्रारम्भ में ब्राह्मी के दो भेद हो गये—उत्तरी ब्राह्मी व दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी से तमिल लिपि/कलिंग लिपि, तेलुगू एवं कन्नड़ लिपि, ग्रन्थ लिपि तमिलनाडु, मलयालम लिपि का विकास हुआ। देवनागरी लिपि की विशेषता है— सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि का होना तथा एक ध्वनि के लिए एक ही प्रतीक (संकेत) होना। जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। शिरोरेखा का प्रयोग सुन्दरता के लिए किया जाता है।

7. **निम्नांकित में से कौन विशेषता देवनागरी में नहीं है?**

(a) इसमें जैसा उच्चारण होता है, वैसा ही लिखा जाता है।

(b) इसमें एक ध्वनि के लिए एक ही प्रतीक है।

(c) इसमें शिरोरेखा का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

(d) विकास की दृष्टि से यह लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी की समकालीन है।

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **'देवनागरी लिपि' के विषय में क्या सत्य नहीं है?**

(a) यह दायें से बायें लिखी जाती है।

(b) इसकी उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से मानी जाती है।

(c) यह वर्णात्मक लिपि है।

(d) इसमें शिरोरेखा का प्रयोग किया जाता है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

देवनागरी लिपि बायें से दायें लिखी जाती है, इसकी उत्पत्ति नागर ब्राह्मणों से मानी जाती है। यह अक्षर पर आधारित लिपि है, इसलिए उसे 'अक्षरात्मक लिपि' कहते हैं। इसमें शिरोरेखा का प्रयोग किया जाता है (कुछ अक्षरों यथा भ, थ, ध, आदि को छोड़कर)। अतः स्पष्ट है कि प्रश्न के दो उत्तर विकल्प (a) एवं (c) सही हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) सही उत्तर माना, जबकि विकल्प (a) तथा (c) दोनों सही उत्तर हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ द्विवेदी जी ने देवनागरी को 'संस्कृत लिपि' भी कहा है।

➲ द्विवेदी जी ने कहा है ''संस्कृत लिपि की सरलता और शुद्धता सबको स्वीकार करनी पड़ेगी। संसार में संस्कृत के समान शुद्ध और स्पष्ट लिपि दूसरी नहीं।''

9. **'देवनागरी लिपि' मूलतः क्या है?**

(a) वर्णात्मक (b) अक्षरात्मक

(c) चित्रात्मक (d) प्रतीकात्मक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

❑ लिपि त्रुटियाँ सुधार के प्रयत्न

1. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित 'लिपि सुधार-परिषद्' की 28, 29 नवम्बर, 1953 को हुई बैठक की अध्यक्षता की थी-

(a) तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने

(b) तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने

(c) तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि ने

(d) तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वी.डी. जत्ती ने

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित 'लिपि सुधार-परिषद्' की 28, 29 नवम्बर, 1953 को हुई बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने किया था। यह बैठक लखनऊ में आयोजित की गई थी, जिसमें अनेक प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों, विद्वानों तथा भाषाशास्त्रियों ने हिस्सा लिया था। नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर उत्तर प्रदेश सरकार ने 'लिपि सुधार-परिषद्' की स्थापना की थी।

2. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1947 में गठित 'देवनागरी लिपि सुधार समिति' के अध्यक्ष थे-

(a) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (b) सम्पूर्णानन्द

(c) आचार्य नरेन्द्र देव (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उ.प्र. सरकार ने वर्ष 1947 में देवनागरी लिपि में सुधार के लिए 'आचार्य नरेन्द्र देव समिति' का गठन किया जिसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव थे।

3. नागरी लिपि सुधार समिति के संयोजक थे-

(a) काका कालेलकर (b) श्रीनिवास

(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) आचार्य नरेन्द्र देव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नागरी लिपि में सुधार का प्रथम प्रयास महाराष्ट्र में हुआ और वहाँ के सावरकर बन्धुओं ने सभी स्वरों के लिए 'अ' में ही मात्रा लगाने का सुझाव दिया। दूसरा प्रयास वर्ष 1933 में प्रारम्भ हुआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में गाँधीजी के सभापतित्व में नागरी लिपि में सुधार के लिए एक लघु समिति गठित की गयी, जिसके संयोजक काका कालेलकर बनाये गये। इस समिति के द्वारा प्रस्तुत 14 सुझावों को सम्मेलन ने स्वीकार किया।

4. किस विद्वान ने देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि स्वीकार करने का सुझाव दिया था?

(a) महात्मा गाँधी (b) काका कालेलकर

(c) सुनीति कुमार चटर्जी (d) विनोबा भावे

P.G.T. परीक्षा, 2009

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि का प्रस्ताव डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने रखा था।

5. देवनागरी में 'अ' के बारह खड़ी का सुझाव किसने दिया था?

(a) नरेन्द्र देव (b) डॉ. श्यामसुंदर दास

(c) काका कालेलकर (d) विनोबा भावे

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

सावरकर बंधुओं और काका कालेलकर ने 'अ' की बारह खड़ी को उपयोग में लाने का सुझाव दिया, किन्तु यह स्वीकार नहीं किया जा सका। उनका सुझाव था कि 'अ' में ही मात्राओं को जोड़कर लिखा जाय।

6. पंजाबी की लिपि है-

(a) देवनागरी (b) गुरुमुखी

(c) फारसी (d) रोमन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

पंजाबी की लिपि गुरुमुखी है। 'पंजाबी' पंजाब क्षेत्र की भाषा है। यह दो शब्दों से बना है। पाँच + आबों। 'आबों' से तात्पर्य नदियों से है। इस क्षेत्र में पाँच नदियाँ-रावी, सतलज, व्यास, चिनाब और झेलम हैं। इसलिए इसे पंजाब कहा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डोगरी आदि कुछ उपभाषाएँ जम्मू क्षेत्र तक फैली हैं। माझी, डोगरी, मालबाई, पोवाधी, राठी, भट्टियानी इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं। डोगरी की लिपि 'टाकरी' है।
- पंजाबी बोलने वाले मुख्य रूप से सिक्ख हैं, इसलिए इसे 'सिक्खी' कहते हैं।
- गुरुनानक एवं अन्य गुरुओं तथा सन्तों की वाणी का संग्रह 'गुरु ग्रन्थ साहब' पंजाबी का प्रसिद्ध प्राचीन धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रन्थ है।
- नानक, वारिसशाह, मोहन सिंह, अमृता प्रीतम पंजाबी के प्रमुख साहित्यकार हैं।

व्याकरण

1. **जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे क्या कहते हैं?**
(a) पिंगलशास्त्र
(b) भाषाशास्त्र
(c) व्याकरण
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

व्याकरण (वि + आ + करण) का अर्थ विशेष रूप से आख्यान करना होता है। 'व्याकरण' को किसी भाषा के लिखित और बोल-चाल के रूपों का यथार्थतः समझाने वाला शास्त्र कहते हैं। इसमें शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है।

❑ संज्ञा

1. **आपका घर जिस शहर में है, उस शहर का नाम संज्ञा का कौन-सा भेद सूचित करता है?**
(a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) समूहवाचक (d) भाववाचक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(a)

जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-राम, गाँधीजी, गंगा, काशी आदि। राम, गाँधीजी कहने से एक व्यक्ति का, गंगा कहने से एक नदी का, काशी कहने से एक शहर का बोध होता है।

2. **बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बौले बोल।**
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टके का मोल।।
रहीम द्वारा लिखित इन पंक्तियों में 'बड़े' शब्द का प्रयोग जिस रूप में हुआ है, वह है-
(a) विशेषण (b) संज्ञा
(c) सर्वनाम (d) क्रिया-विशेषण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

रहीम द्वारा लिखित उपर्युक्त पंक्तियों में 'बड़े' शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में हुआ है। जो संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे विशेषण कहते हैं। उपर्युक्त पंक्ति में बड़ाई, बौले बोल, बड़े शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये विशेषण हुए और 'बड़े' शब्द संज्ञा।

3. **'द्वार-द्वार भटकना' में प्रयुक्त द्विरुक्ति 'द्वार-द्वार' है-**
(a) पारस्परिक सम्बन्ध बताने के अर्थ में
(b) अतिशयता प्रकट करने के अर्थ में
(c) भेद बताने के अर्थ में
(d) समग्रता प्रकट करने के अर्थ में

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(d)

'द्वार-द्वार' संज्ञा शब्द की द्विरुक्ति है। द्विरुक्ति का अर्थ है–दुहराना; एक उक्ति को दो बार उच्चारित करना। इसकी रचना सार्थक शब्दों की आवृत्ति से होती है। प्रस्तुत वाक्य में 'द्वार-द्वार' द्विरुक्ति का प्रयोग 'समग्रता प्रकट करने के अर्थ में' हुआ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ द्विरुक्ति विभिन्न अर्थों का द्योतक है जो इस प्रकार हैं–
1. **पारस्परिक सम्बन्ध बताने के अर्थ में**-भाई-भाई का प्रेम।
2. **अतिशयता प्रकट करने के अर्थ में**-दाने-दाने का मोहताज, काले-काले बाल।
3. **भेद बताने के अर्थ में**-रंग-रंग के फूल, नए-नए खेल।
4. **एक जाति होने के अर्थ में**-छोटे-छोटे लड़के।
5. **अभाव के अर्थ में**-छोटी-छोटी वस्तु, फीका-फीका रंग।
6. **निश्चय के अर्थ में**-आएगा, जाएगा।

4. **संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियों को क्या कहा जाता है?**
(a) संश्लिष्ट (b) विश्लिष्ट
(c) श्लिष्ट (d) उपर्युक्त में कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

हिन्दी व्याकरण में विभक्तियों के प्रयोग की विधि निश्चित है। हिन्दी में दो तरह की विभक्तियाँ हैं- 1.विश्लिष्ट, 2. संश्लिष्ट। संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियाँ विश्लिष्ट होती हैं अर्थात् अलग रहती हैं। जैसे-राम ने। सर्वनाम के साथ विभक्तियाँ संश्लिष्ट या मिली होती हैं। जैसे-उसका, तुमको।

5. **'हमारे देश में जयचंदों की कमी नहीं है' में 'जयचंदों' संज्ञा के किस भेद के अन्तर्गत आता है?**
(a) व्यक्तिवाचक (b) समूहवाचक
(c) जातिवाचक (d) भाववाचक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

कुछ व्यक्तियों में कुछ विचित्र गुण होते हैं या वे दुर्लभ गुणों के कारण उनके प्रतिनिधि माने जाते हैं। उन व्यक्तियों का नाम लेते ही उनका वह गुण दिमाग के सामने आ जाता है। ऐसी स्थिति में इनका जातिवाचक के रूप में प्रयोग होता हैं। **जैसे–** 'भीष्म पितामह' शब्द सुनते ही दृढ़-प्रतिज्ञा वाले व्यक्ति का चित्र सामने आता है। कुछ उदाहरण द्वारा इसे समझा जा सकता है। **जैसे–**
1. हमारे देश में जयचन्दों की कमी नहीं है।
2. विभीषणों से बचो।
3. कलयुग में भी हरिश्चन्द्रों की कमी नहीं है।
4. वह तो एकलव्य है, गुरु के लिए कुछ भी कर सकता है।
उपर्युक्त उदाहरणों में जयचन्द 'विश्वासघात', विभीषण 'देशद्रोही', एकलव्य 'गुरुभक्ति' के प्रतिनिधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

6. इनमें से भाववाचक संज्ञा है -
(a) तप (b) तीर
(c) भरत (d) चिन्ता

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

जिस शब्द में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के गुण, दशा, भाव, धर्म, स्वभाव, इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - दया, क्रोध, चिन्ता, ममत्व, मनुष्यता, लड़कपन इत्यादि।

7. 'राष्ट्र' की भाववाचक संज्ञा है-
(a) राष्ट्री (b) राष्ट्रीय
(c) सौराष्ट्र (d) राष्ट्रीयता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

भाववाचक संज्ञा प्रायः पाँच प्रकार के शब्दों से बनती है-जातिवाचक संज्ञा से, विशेषण से, सर्वनाम से, क्रिया से तथा अव्यय से। राष्ट्र एक जातिवाचक संज्ञा है। इसका भाववाचक संज्ञा में रूपान्तरण राष्ट्रीयता है।

8. 'सुन्दर' की भाववाचक संज्ञा है -
(a) सुन्दरता (b) सौन्दर्य
(c) केवल 'a' (d) 'a' व 'b' दोनों

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(d)

'सुन्दर' की भाववाचक संज्ञा 'सुन्दरता' तथा 'सौन्दर्य' दोनों होता है।

9. 'आज गणित के अध्यापक ने कक्षा नहीं ली' वाक्य में अर्थ के आधार पर वाक्य है-
(a) आज्ञावाचक वाक्य (b) निषेधवाचक वाक्य
(c) प्रश्नवाचक वाक्य (d) इच्छावाचक वाक्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

जिस वाक्य से किसी बात या कार्य के न होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य होता है। प्रस्तुत वाक्य में निषेधवाचक वाक्य है।

❑ सर्वनाम

1. कतिपय हिन्दी वैयाकरणों द्वारा 'संज्ञा प्रतिनिधि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
(a) क्रिया के लिए (b) विशेषण के लिए
(c) संज्ञा के भेद के लिए (d) सर्वनाम के लिए

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(d)

सर्वनाम को 'संज्ञा का प्रतिनिधि' भी कहा जाता है।

2. 'श्रोता' के लिए किस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है?
(a) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
(b) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
(c) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
(d) उपर्युक्त सभी गलत हैं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(b)

'पुरुषवाचक सर्वनाम' पुरुषों (स्त्री या पुरुष) के नाम के बदले आते हैं। उत्तम पुरुष में लेखक या वक्ता आता है, मध्यम पुरुष में पाठक या श्रोता और अन्य पुरुष में अन्य लोग आते हैं; इसके तीन भेद हैं–
उत्तमपुरुष - मैं, हम, मुझे, मुझको, हमारा।
मध्यमपुरुष - तू, तुम, आप, तुझे, तुझको, तुम्हारा।
अन्यपुरुष - वह, वे, यह, ये,इसे, इसको,उसे, उसको।

3. 'कोई' और 'कुछ' का प्रयोग इनमें से किस सर्वनाम में किया जाता है?
(a) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (b) निश्चयवाचक सर्वनाम
(c) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (d) निजवाचक सर्वनाम

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे-**कोई, कुछ इत्यादि।

4. 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे'–में कौन-सा सर्वनाम है?
(a) पुरुषवाचक सर्वनाम (b) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(c) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (d) निजवाचक सर्वनाम

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

प्रस्तुत वाक्य में सम्बन्धवाचक सर्वनाम है। जिस सर्वनाम से दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रकट होता है, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5. **'यह काम मैं आप कर लूँगा' पंक्तियों में 'आप' है-**
(a) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम
(c) निश्चयवाचक सर्वनाम (d) पुरुषवाचक सर्वनाम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' है। निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्न अर्थों में होता है-
1. निजवाचक 'आप' का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चय के लिए होता है।
2. निजवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है।
3. सर्वसाधारण के अर्थ में भी 'आप' का प्रयोग होता है।
4. अवधारण के अर्थ में कभी-कभी 'आप' के साथ 'ही' जोड़ा जाता है।

6. **हिन्दी के अन्य पुरुष के निश्चयवाचक सर्वनाम का अविकारी रूप है-**
(a) वह (b) उन
(c) उस (d) उन्हें

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी के अन्य पुरुष के निश्चयवाचक सर्वनाम का अविकारी रूप 'वह' है।

7. **निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द सर्वनाम नहीं है?**
(a) कौन (b) कोई
(c) उसने (d) दसगुना

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

'दसगुना' विशेषण है। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत आता है।

❑ क्रिया

1. **निम्नलिखित वाक्यों में से एक में संयुक्त क्रिया का प्रयोग नहीं हुआ है—**
(a) मेरे हाथ से गिलास गिरा और टूट गया।
(b) मैं अपने घर में रहूँगा।
(c) स्वस्थ होना है, तो तुमको दवा पीनी पड़ेगी।
(d) लड़का प्रसन्न होकर चलता बना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। संयुक्त क्रिया में प्रायः पहली क्रिया प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है। विकल्प (b) में संयुक्त क्रिया का प्रयोग नहीं हुआ है। अन्य विकल्पों में संयुक्त क्रिया का प्रयोग हुआ है।

2. **'चिड़िया आकाश में उड़ रही है' वाक्य में 'उड़ रही' क्रिया है—**
(a) प्रेरणार्थक क्रिया (b) अपूर्णकालिक क्रिया
(c) सकर्मक क्रिया (d) अकर्मक क्रिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'चिड़िया आकाश में उड़ रही है' वाक्य में 'उड़ रही' अकर्मक क्रिया है। यहाँ पर कर्ता (चिड़िया) द्वारा स्वयं क्रिया (उड़ना) संपन्न कराया जा रहा है। अतः यह अकर्मक क्रिया हुई।

3. **'उठाना' क्रिया का अकर्मक रूप है—**
(a) उठवाया (b) उठाएगा
(c) उठाया (d) उठना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

'उठाना' क्रिया का अकर्मक रूप 'उठना' है। दौड़ना, सोना, रोना, लजाना इत्यादि अकर्मक क्रिया हैं।

4. **निम्नलिखित में से एक अकर्मक क्रिया है—**
(a) काटना (b) बोना
(c) धोना (d) रोना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से एक में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है?**
(a) मैं चला। (b) वह नहाता है।
(c) लड़का सो रहा है। (d) लड़की सिल रही है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

विकल्प (d) के वाक्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है। अन्य विकल्पों में अकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है।

6. **सकर्मक क्रिया का उदाहरण है -**
(a) दौड़ना (b) हँसना
(c) पढ़ना (d) आना

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'पढ़ना' सकर्मक क्रिया का उदाहरण है। जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता करता है, परन्तु फल दूसरे पर पड़ता है, वहाँ सकर्मक क्रिया होती है।

❑ विशेषण एवं विशेष्य

1. 'राम की गाय बहुत काली है' वाक्य में 'काली' शब्द है-

(a) सर्वनाम (b) क्रिया
(c) विशेषण (d) प्रविशेषण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

जिन शब्दों से संज्ञा के गुण, दशा, स्वभाव आदि लक्षित हों, उसे गुणवाचक 'विशेषण' कहते हैं। 'राम की गाय बहुत काली है' वाक्य में 'काली' विशेषण है तथा 'बहुत' प्रविशेषण है। प्रविशेषण, विशेषण की विशेषता बताता है तथा यह विशेषण के पहले आता है।

2. सही युग्म पहचानिए-

(a) काले - टोपी (b) सुनहरी - पत्ता
(c) दुबला-पतला - लड़का (d) उड़ता हुआ - चिड़िया

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'दुबला-पतला' गुणवाचक विशेषण है। यह दशा का बोध कराता है। इसलिए 'दुबला-पतला-लड़का युग्म सुमेलित है। विकल्प (a) में टोपी के साथ 'काली' विशेषण तथा विकल्प (b) में पत्ता के साथ 'सुनहरा' विशेषण का प्रयोग उचित होगा। विकल्प (d) में क्रिया का प्रयोग लिंग के अनुसार नहीं किया गया है।

3. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण है—

(a) प्रपंच (b) सरपंच
(c) पहुँच (d) पाँचवाँ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पाँचवाँ' शब्द में क्रमवाचक विशेषण है। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत आता है।

4. निम्नलिखित में से कौन समुदायवाचक विशेषण है?

(a) चौगुना (b) चौथा
(c) चारों (d) चार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'चारों' में समुदायवाचक विशेषण है। इसे समूह-वाचक विशेषण भी कहते हैं। यह निश्चित संख्यावाचक विशेषण के प्रकार में आता है। इसके भेद इस प्रकार हैं-

गणनावाचक विशेषण	- एक, दो, तीन
क्रमवाचक विशेषण	- पहला, दूसरा, तीसरा
आवृत्तिवाचक विशेषण	- दूना, तिगुना, चौगुना
समुदायवाचक विशेषण	- दोनों, तीनों, चारों
प्रत्येकबोधक विशेषण	- प्रत्येक, हर एक

5. 'दूसरा लड़का कहाँ गया?' वाक्य में 'दूसरा' किस प्रकार का विशेषण है?

(a) समुदायवाचक (b) गणनावाचक
(c) क्रमवाचक (d) आवृत्तिवाचक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'उत्साह' शब्द का विशेषण है-

(a) अत्साह (b) उत्साहित
(c) उत्साव (d) उत्साही

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'उत्साह' शब्द का विशेषण उत्साहित है।

7. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है?

(a) दोनों बच्चे बहुत भूखे थे। (b) माँ ने गरमागरम खाना बनाया।
(c) बच्चों ने खाना खाया। (d) माँ ने कहा और रोटी लो।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है। विकल्प (a) में 'बहुत', विकल्प (b) में 'गरमागरम' तथा विकल्प (d) में 'और' विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है।

8. निम्नलिखित संज्ञा-विशेषण जोड़ी में कौन-सा सही नहीं है?

(a) विष-विषैला (b) पिता-पैतृक
(c) आदि-आदिम (d) प्रांत-प्रांतिक

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'प्रांत-प्रांतिक' संज्ञा-विशेषण जोड़ी में सही नहीं है। इसका शुद्ध रूप प्रांत-प्रांतीय है। अन्य विकल्पों के युग्म सही हैं।

9. निम्नलिखित में से परिमाणबोधक विशेषण है -

(a) भूखे लोग (b) सूखे पेड़
(c) सूनी धरती (d) कम आमदनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा नाप-तौल का बोध होता है, वे परिमाणबोधक विशेषण कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं- निश्चित परिमाणबोधक तथा अनिश्चित परिमाणबोधक। विकल्प (d) में 'कम' अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण का उदाहरण है।

10. निम्नलिखित शब्दों में से एक विशेषण है -

(a) शैशव (b) माधुर्य
(c) आर्थिक (d) बचपन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'आर्थिक' शब्द विशेषण है। शैशव, माधुर्य तथा बचपन संज्ञा है।

11. निम्नांकित वाक्यों में क्रिया-विशेषण युक्त वाक्य कौन-सा है?
(a) मैं कल नहीं जाऊँगा (b) यह फूल सुन्दर है
(c) लड़का रोते-रोते घर पहुँचा (d) आज शाम को मत आना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

जो उपवाक्य क्रिया विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं। इसमें समय, स्थान, कारण, उद्देश्य, फल, अवस्था, मात्रा इत्यादि का बोध होता है। प्रस्तुत वाक्य 'लड़का रोते-रोते घर पहुँचा' में रोते-रोते क्रिया-विशेषण उपवाक्य है।

12. विधान करने वाले शब्दों की विशेषता बतलाने वाला शब्द किसे कहते हैं?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) क्रिया-विशेषण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विधान करने वाले शब्दों की विशेषता बतलाने वाले शब्द को 'क्रिया-विशेषण' कहते हैं।

13. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों में से कौन-सा विशेषण उपवाक्य है?
(a) मैं कहता हूँ कि तुम भोपाल जाओ।
(b) लखनऊ, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है, एक ऐतिहासिक नगर है।
(c) जब मैं स्टेशन पहुँचा, तभी ट्रेन आयी।
(d) मैं चाहता हूँ कि आप यहीं रहें।

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे 'विशेषण-उपवाक्य' कहते हैं। इसमें 'जो', 'जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। 'लखनऊ, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है, एक ऐतिहासिक नगर है' में 'जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है', आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह कार्य कर रहा है। इसलिए यह विशेषण उपवाक्य है।

14. 'सीता की खोज के लिए हनुमान को अगाध सागर को पार करने के लिए पुल से नहीं, आकाश मार्ग से जाना पड़ा था।'
उपर्युक्त वाक्य में विशेष्य का चयन कीजिए।
(a) सीता (b) हनुमान
(c) सागर (d) आकाश

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त वाक्य में 'सागर' विशेष्य है और 'अगाध' विशेषण के रूप में प्रयोग किया गया है। जिस शब्द की विशेषता बतलायी जाती है, उसे 'विशेष्य' तथा विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण'कहते हैं।

15. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विशेषण है?
(a) मेजपोश (b) मिठास
(c) सौतेला (d) सरलता

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'सौतेला' शब्द विशेषण है।

❑ वर्तनी

1. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?
(a) पुष्पांजली (b) मंत्रीपरिषद
(c) वाल्मीकि (d) अध्यात्मिक

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से 'वाल्मीकि' शब्द शुद्ध है। अन्य शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। शुद्ध वर्तनी क्रमशः इस प्रकार है - पुष्पांजलि, मंत्रिपरिषद, आध्यात्मिक।

2. इनमें से शुद्ध वर्तनी का शब्द है -
(a) कृशांगिनी (b) कृषांगी
(c) कृशांगी (d) कृसांगी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

कृशांगी शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध वर्तनी के शब्द हैं।

3. वर्तनी की दृष्टि से इनमें से अशुद्ध शब्द है -
(a) ज्योत्स्ना (b) अहोरात्र
(c) भाष्कर (d) मिष्टान्न

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से 'भाष्कर' अशुद्ध शब्द है। इसका शुद्ध शब्द 'भास्कर' होता है। ज्योत्स्ना, अहोरात्र तथा मिष्टान्न की वर्तनी शुद्ध है।

4. इनमें से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है, वह है -
(a) द्वारिका (b) अहल्या
(c) आर्द्र (d) प्रव्रज्या

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'द्वारिका' अशुद्ध वर्तनी है। इसका शुद्ध वर्तनी 'द्वारका' होता है। शेष वर्तनी शुद्ध हैं।

5. निम्नलिखित में से किस शब्द की वर्तनी अशुद्ध है?
(a) ज्योत्सना (b) शृंगार
(c) उज्ज्वल (d) अध्यात्म

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'ज्योत्सना' शब्द की वर्तनी अशुद्ध है। इसका शुद्ध वर्तनी 'ज्योत्स्ना' होती है। अन्य विकल्पों में शुद्ध वर्तनी प्रयुक्त हुई है।

निर्देश (प्रश्न 6-8) : दिये गये विकल्पों में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द छाँटिये -

6. (a) शंशय (b) संश्य
(c) सन्शय (d) संशय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'संशय' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्प वर्तनी की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हैं।

7. (a) दृष्य (b) दृश्य
(c) द्रिष्य (d) दृश

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'दृश्य' वर्तनी शुद्ध है। अन्य विकल्प अशुद्ध हैं।

8. (a) उद्योगिक (b) औद्योगिक
(c) उद्योगिक् (d) ओद्योगिक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'औद्योगिक' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्प वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध हैं।

9. नीचे एक ही शब्द की चार वर्तनी दी गयी है, सही का चयन कीजिए-
(a) छतीस (b) छतिस
(c) छत्तिस (d) छत्तीस

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

शुद्ध वर्तनी की दृष्टिकोण से 'छत्तीस' सही शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

10. नीचे एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए—
(a) अनुग्रहीत (b) अनूगृहीत
(c) अनुगृहीत (d) अनुगृहित

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'अनुगृहीत' शुद्ध वर्तनी है, शेष त्रुटिपूर्ण हैं।

11. 'हस्ताक्षेप' का शुद्ध शब्द है—
(a) हस्थोक्षप (b) हस्तक्क्षेप
(c) हस्तक्षेप (d) हस्तेक्षप

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'हस्ताक्षेप' का शुद्ध शब्द 'हस्तक्षेप' होता है।

12. अहेतुकी का शुद्ध रूप है-
(a) अहितकी (b) अहैतुकी
(c) वेतुकी (d) अभितुकी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'अहेतुकी' का शुद्ध रूप 'अहैतुकी' है, शेष अशुद्ध हैं।

13. एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए-
(a) उपर्लिखित (b) उपरिलिखित
(c) ऊपरलिखित (d) ऊपर्लिखित

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'उपरिलिखित' वर्तनी शुद्ध है, शेष त्रुटिपूर्ण हैं।

14. 'हिन्दी कोश' में सर्वप्रथम कौन-सा शब्द आयेगा?
(a) अँकन (b) अकंठ
(c) अंकन (d) अर्क

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'हिन्दी कोश' में शब्दों का क्रम आने का इस प्रकार है - अंकन, अँकन, अकंठ तथा अर्क।

15. शुद्ध वर्तनी वाले शब्द का चयन कीजिये -
(a) प्रागेतिहासिक (b) प्रागैतिहासिक
(c) प्रागतिहासिक (d) प्रागइतिहासिक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'प्रागैतिहासिक' शब्द शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। अन्य विकल्पों में त्रुटिपूर्ण वर्तनी प्रयुक्त है।

16. निम्नलिखित में से अशुद्ध वर्तनी का शब्द है—
(a) ज्योत्स्ना (b) अहल्या
(c) मिष्ठान्न (d) अन्तर्धान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'मिष्ठान्न' अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द है। इसका शुद्ध वर्तनी 'मिष्टान्न' होगा। अन्य विकल्पों की वर्तनी शुद्ध है।

17. '66' अंक का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अनुसार मानक उच्चारण है—
(a) छाछट (b) छासठ
(c) छियाछठ (d) छियासठ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'66' अंक का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय अनुसार मानक उच्चारण 'छियासठ' है।

18. निम्नलिखित में से एक की वर्तनी शुद्ध है—

(a) आधीन (b) आकंठ
(c) आकस्मात् (d) आकांड तांडव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

विकल्प (b) की वर्तनी शुद्ध है। अन्य विकल्पों की शुद्ध वर्तनी इस प्रकार है- आधीन-अधीन, आकस्मात्-अकस्मात् तथा आकांड तांडव-अकांड तांडव। अकांड तांडव का अर्थ होता है-व्यर्थ का झगड़ा।

19. इनमें से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है, वह शब्द है:

(a) प्रदर्शित (b) अहोरात्र
(c) इकतारा (d) भाष्कर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

भाष्कर वर्तनी अशुद्ध है, शुद्ध वर्तनी भास्कर है। शेष शुद्ध वर्तनी के शब्द हैं।

20. इनमें से गलत वर्तनी का शब्द है:

(a) आधीन (b) ज्योत्स्ना
(c) अहर्निश (d) अनुगृहीत

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आधीन गलत वर्तनी है, शुद्ध वर्तनी अधीन है। शेष वर्तनी शुद्ध है।

21. निम्नलिखित शब्दों में से एक की वर्तनी शुद्ध है -

(a) आभ्यान्तरिक (b) अत्याधिक
(c) निरोग (d) निरपराधिनी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'निरपराधिनी' शुद्ध वर्तनी है। अन्य शुद्ध वर्तनी इस प्रकार हैं - आभ्यान्तरिक - आभ्यान्तर, अत्याधिक - अत्यधिक तथा निरोग - नीरोग।

22. निम्नलिखित में से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द का चयन करें-

(a) पूज्यनिय (b) उज्जल
(c) परिपार्श्विक (d) जोत्यसना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'परिपार्श्विक' शुद्ध शब्द है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं। इनके शुद्ध शब्द क्रमशः पूजनीय, उज्ज्वल तथा ज्योत्स्ना हैं।

23. कौन-सी वर्तनी ठीक है?

(a) रचैता (b) रचइता
(c) रचयिता (d) रचयता

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से रचयिता शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

24. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—

(a) कुमुदत्ती (b) कुमुदुनी
(c) कुमुदिनी (d) कुमदुनी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'कुमुदिनी' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

25. 'आलौकिक' का शुद्ध शब्द है-

(a) अलौकुक (b) अलोकिक
(c) अलौकिक (d) आलोकुक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'आलौकिक' का शुद्ध शब्द 'अलौकिक' है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शुद्ध है?

(a) अधिशासी (b) अधिशाषी
(c) अधिसाशी (d) अधिषाशी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'अधिशासी' शुद्ध शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

27. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द है-

(a) जीजीविषा (b) जिजीविषा
(c) जीजिविषा (d) जिजिविषा

P.G.T. परीक्षा, 2002
T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'जिजीविषा' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

निर्देश प्रश्न (28-32 के लिए)— इन प्रश्नों में स्वर या मात्रा की दृष्टि से शब्द को अशुद्ध रूप में लिया गया है। नीचे दिये गये चार विकल्पों में से शुद्ध रूप चुनिए-

28. (a) निलिप्त (b) निर्लप्त
(c) निर्लिप्त (d) निर्लीप्त

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शुद्ध रूप 'निर्लिप्त' है, शेष अशुद्ध हैं।

29. (a) इच्छादुम (b) इच्छाद्रुम
(c) इच्छाद्रम (d) इच्छादम्

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इच्छाद्रम शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

30. (a) द्विरुक्ति (b) द्विरूक्ति
(c) द्विरक्ती (d) द्विरूकती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

द्विरुक्ति शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

31. (a) विसमृत्ति (b) विसमरती
(c) विस्मती (d) विस्मृति

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वर्तनी की दृष्टि से 'विस्मृति' शुद्ध शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

32. (a) जगतापाण (b) जगतप्राण
(c) जगत्प्राण (d) जगर्त्पाण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जगत्प्राण' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

33. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) ज्योत्स्ना (b) ज्यौत्सना
(c) ज्योतसना (d) ज्योतस्ना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में प्रस्तुत 'ज्योत्स्ना' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

34. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?
(a) ज्योतसना (b) ज्योत्स्ना
(c) ज्योतिस्ना (d) जोत्स्ना

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है-
(a) सदृश्य (b) सदृश
(c) सदृष्य (d) सद्रश

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'सदृश' वर्तनी शुद्ध है जिसका अर्थ 'समान' होता है, शेष अशुद्ध हैं।

36. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है-
(a) उच्श्रृखल (b) उच्श्रृंखल
(c) उच्च्छृंखल (d) उच्छृंखल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'उच्छृंखल' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

37. निम्न में शुद्ध रूप कौन-सा है?
(a) प्रदर्शिनी (b) प्रदर्शनी
(c) प्रर्दशिनी (d) प्रर्दिशनी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'प्रदर्शनी' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

38. निम्नलिखित की सही वर्तनी होगी-
(a) आनुषंगिक (b) अनुषंगिक
(c) अनुसंगिक (d) आनुसंगिक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'आनुषंगिक' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

39. इनमें से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है-
(a) उज्जवल (b) उज्ज्वल
(c) उज्वल (d) उजवल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'उज्ज्वल' है, शेष अशुद्ध हैं।

40. निम्न में शुद्ध रूप कौन-सा है?
(a) हतोत्साह (b) हतोत्साहित
(c) हतोसाह (d) हतोतसाह

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'हतोत्साह' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

41. इनमें से कौन-सा शब्द शुद्ध है?
(a) यानी (b) बाल्मिकी
(c) उज्वल (d) द्वन्द

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'यानी' है, अन्य शब्द त्रुटिपूर्ण हैं। बाल्मिकी, उज्वल तथा द्वन्द शब्द के शुद्ध शब्द क्रमशः वाल्मीकि, उज्ज्वल तथा द्वन्द्व हैं।

42. शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है-
(a) मानविकरण (b) मानवीयकरण
(c) मानवीकरण (d) मानबीकरण

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'मानवीकरण' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

43. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द को चुनिए-
(a) सन्यास (b) संन्यास
(c) सन्नयास (d) संयास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

संन्यास शुद्ध शब्द है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं।

44. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?
(a) संन्यासी (b) सन्यासी
(c) सनियासी (d) सनयासी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'संन्यासी' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

45. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है?
(a) संन्यासी (b) सनयासी
(c) सन्यासी (d) संनयासी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है-
(a) पूज्यनीय (b) पुज्यनीय
(c) पूजनीय (d) पुजनीय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'पूजनीय' है, शेष अशुद्ध हैं।

47. इनमें से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है?
(a) आर्शीवाद (b) असीर्वाद
(c) आशीर्वाद (d) असीरवाद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

शुद्ध वर्तनी की दृष्टि से 'आशीर्वाद' सही शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

48. इनमें से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?
(a) आर्शीवाद (b) आर्शीबाद
(c) आशीर्वाद (d) आशीर्बाद

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. निम्नलिखित में से वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का चयन कीजिए-
(a) शरच्चंद्र (b) यानि
(c) श्मश्रु (d) कवयित्री

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

'यानि' अशुद्ध शब्द है। इसका 'शुद्ध रूप 'यानी' है। शेष शब्द शुद्ध हैं। विकल्प (a) में प्रस्तुत शब्द सन्धि के नियम व्यंजन संधि के अनुसार सही है।

50. वर्तनी की दृष्टि से इनमें अशुद्ध शब्द है-
(a) यानि (b) यानी
(c) सूची (d) शुष्क

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. वर्तनी की दृष्टि से निम्नलिखित में शुद्ध शब्द है-
(a) उपर्युक्त (b) ऊपरर्युक्त
(c) उपरियुक्त (d) ऊपरोक्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द 'उपर्युक्त' है, शेष अशुद्ध हैं।

52. नीचे एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए-
(a) कवियित्री (b) कवियत्री
(c) कवयित्री (d) कवइतृ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'कवयित्री' शुद्ध वर्तनी है, शेष अशुद्ध हैं।

53. वर्तनी की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए नीचे दिए गए विकल्पों में कौन शुद्ध है?
(a) कवियित्री (b) कवित्री
(c) कवीत्री (d) कवयित्री

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए-
(a) कवियित्री (b) कवित्री
(c) कवियत्री (d) कवयित्री

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. निम्नलिखित में से सही शब्द छाँटिए-
(a) कवियित्री (b) कवयित्री
(c) कवियत्री (d) कविइत्री

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. निम्नलिखित में से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है-
(a) उज्ज्वल (b) कवयित्री
(c) कवियित्री (d) मोक्ष

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'कवियित्री' अशुद्ध वर्तनी है, इसका शुद्ध वर्तनी 'कवयित्री' है, शेष वर्तनी शुद्ध हैं।

57. शुद्ध रूप कौन-सा है?
(a) तादात्म्य (b) तादात्मय
(c) तदात्म्य (d) तदात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'तादात्म्य' शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है, शेष अशुद्ध हैं।

58. 'कक्षा' शब्द का शुद्ध उच्चारण है—

(a) कच्छा (b) कछ्छ

(c) कक्षा (d) कक्छा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'कक्षा' शब्द का शुद्ध उच्चारण 'कक्षा' है।

❑ सन्धि

स्वर सन्धि

1. 'कल्पांत' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) गुण सन्धि (b) यण सन्धि

(c) दीर्घ सन्धि (d) व्यंजन सन्धि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'कल्पांत' में दीर्घ सन्धि है। इसका सन्धि विच्छेद 'कल्प + अंत' होता है। यहाँ 'अ + अ' मिलकर 'आ' हो जा रहा है।

2. 'अपीक्षते' का सही सन्धि-विच्छेद है -

(a) अपी + क्षते (b) अप + ईक्षते

(c) अपि + ईक्षते (d) अपि + इक्षते

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'अपीक्षते' का सन्धि-विच्छेद 'अपि + इक्षते' होता है। यहाँ 'इ + इ' मिलकर 'ई' हो जा रहा है। यह दीर्घ स्वर सन्धि है।

3. 'नैतत्' में सन्धि-विच्छेद होगा—

(a) न + ऐतत् (b) न + एतत

(c) ना + एतत् (d) ना + इतत्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नैतत्' का सन्धि विच्छेद 'न + ऐतत' होगा। यह वृद्धि स्वर सन्धि है।

4. 'अन्यान्य' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा-

(a) अ + न्यान्य (b) अन्य + अन्य

(c) अन् + यान्य (d) अन्या + आन्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

दीर्घ स्वर सन्धि में दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यदि 'अ','आ','इ','ई','उ','ऊ' और 'ऋ' के बाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आये, तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ','ई' 'ऊ' और 'ॠ' हो जाते हैं। **जैसे-**

अन्न + अभाव = अन्नाभाव	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
अन्य + अन्य = अन्यान्य	विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास
महा + आशय = महाशय	विद्या + आलय = विद्यालय
गिरि + ईश = गिरीश	मही + इन्द्र = महीन्द्र
पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश	भोजन + आलय = भोजनालय
भानु + उदय = भानूदय	पितृ + ऋण = पितृण

5. निम्नलिखित में से किस शब्द में स्वर सन्धि है?

(a) नमस्कार (b) जगदीश

(c) भानूदय (d) दुर्लभ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. सही सन्धि-विच्छेद का चयन कीजिए—

(a) वि + द्यार्थी (b) विद्या + अर्थी

(c) विद्या + आर्थी (d) विद्या + थीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'विद्यालय' का सही सन्धि विच्छेद कीजिए—

(a) विद्या + आलय (b) विद्य + आलय

(c) विद्य + ओलय (d) विद्यया + आलय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'विद्याभ्यास' का सन्धि विच्छेद क्या होगा?

(a) विद्या + अभयास (b) विद्य + अभ्यास

(c) विद्या + अभ्यास (d) विद्या + भ्यास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'व्याप्त' में सन्धि है—

(a) गुण सन्धि (b) दीर्घ सन्धि

(c) यण सन्धि (d) अयादि सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यण स्वर सन्धि में यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो 'इ' तथा 'ई' का 'य्', 'उ' तथा 'ऊ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र' हो जाता है। **जैसे—** प्रति + अंतर = प्रत्यंतर, प्रति + अभिज्ञ = प्रत्यभिज्ञ, त्रि + अक्षर = त्र्यक्षर आदि

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

यण स्वर सन्धि के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण इस प्रकार हैं—

इ + अ = य

समसामयिक घटना चक्र

गति + अवरोध = गत्यवरोध
यदि + अपि = यद्यपि
अति + अंत = अत्यंत
अभि + अर्थी = अभ्यर्थी
अति + अल्प = अत्यल्प
आदि + अंत = आद्यंत
स्वस्ति + अयन = स्वस्त्ययन
अधि + अक्ष = अध्यक्ष
अभि + अंतर = अभ्यंतर
परि + अंत= पर्यंत
परि + अटन = पर्यटन
वि + अग्र = व्यग्र
प्रति + अपकार = प्रत्यपकार
मति + अनुसार = मत्यनुसार
अति + अधिक = अत्यधिक
रीति + अनुसार = रीत्यनुसार
परि + अंक = पर्यंक
परि + अवेक्षण = पर्यवेक्षण
वि + अष्टि = व्यष्टि
वि + अय = व्यय
वि + अंजन = व्यंजन
वि + अर्थ = व्यर्थ
वि + अक्त = व्यक्त
प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष
अधि + अयन = अध्ययन
वि + असन = व्यसन
वि + अक्ति = व्यक्ति
वि + अवहार = व्यवहार
वि + अस्त = व्यस्त
वि + अभिचार = व्यभिचार
प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण
प्रति + अय = प्रत्यय
स्वस्ति + अस्तु = स्वस्त्यस्तु

इ + आ = या

अग्नि + आशय = अग्न्याशय
वि + आवर्तन = व्यावर्तन
प्रति + आभूति = प्रत्याभूति
प्रति + आशित = प्रत्याशित
प्रति + आख्यान = प्रत्याख्यान
नि + आय = न्याय
अति + आचार = अत्याचार
परि + आप्त = पर्याप्त
परि + आय = पर्याय
अभि+ आस = अभ्यास
अधि + आपक = अध्यापक
अधि + आय = अध्याय
प्रति + आशी = प्रत्याशी
वि + आस = व्यास
वि + आयाम = व्यायाम
वि + आप्त = व्याप्त
वि + आकुल = व्याकुल
प्रति + आरोपण = प्रत्यारोपण
प्रति + आशा = प्रत्याशा
इति + आदि = इत्यादि
परि + आवरण = पर्यावरण
अधि + आदेश = अध्यादेश
अधि + आत्म = अध्यात्म
अभि + आगत = अभ्यागत
अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
वि + आकरण = व्याकरण
वि + आख्यान = व्याख्यान

इ + उ = यु

अभि + उत्थान = अभ्युत्थान
प्रति + उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न
उपरि + उक्त = उपर्युक्त
अति + उक्ति = अत्युक्ति
प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
अति + उत्तम = अत्युत्तम
अभि + उदय = अभ्युदय
वि + उत्पत्ति = व्युत्पत्ति

इ + ऊ = यू

प्रति + ऊष = प्रत्यूष
वि + ऊह = व्यूह
प्रति + ऊह = प्रत्यूह
नि + ऊन = न्यून

इ + ए =ये

प्रति + एक = प्रत्येक

ई + अ = य

नदी + अर्पण = नद्यर्पण
देवी + अर्पण = देव्यर्पण

ई + आ = या

नदी + आमुख = नद्यामुख
सखी + आगमन = सख्यागमन

ई + उ = यु

नारी + उचित = नार्युचित
स्त्री + उचित = स्त्र्युचित
स्त्री + उपयोगी = स्त्र्युपयोगी

ई + औ = यौ

वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य

उ + अ = व

अनु + अय = अन्वय
मनु + अंतर = मन्वंतर
सु + अच्छ = स्वच्छ
सु + अल्प = स्वल्प
शिशु + अंग = शिश्वंग
समनु + अय = समन्वय
तनु + अंगी = तन्वंगी

उ + आ = वा

साधु + आचार = साध्वाचार
साधु + आचरण = साध्वाचरण
गुरु + आदेश = गुर्वादेश
सु + आगत = स्वागत

उ + इ = वि

धातु + इक = धात्विक
अनु + इष्ट = अन्विष्ट
अनु + इति = अन्विति

उ + ई = वी

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण
अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा

उ + ए = वे

अनु + एषण = अन्वेषण
अनु + एषक = अन्वेषक

उ + ओ = वो

लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ

ऊ + अ = व

वधू + अर्थ = वध्वर्थ

ऊ + आ = वा

वधू + आगमन = वध्वागमन

ऊ + इ = वि

पू + इत्र = पवित्र

ऋ + अ = र

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
पितृ + आदेश = पित्रादेश
मातृ + आनन्द = मात्रानन्द
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + इ = रि

मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

10. प्रति + आरोपण = ?
(a) प्रतिआरोपण (b) प्रतिरोपण
(c) प्रत्यारोपण (d) प्रत्आरोपण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'यद्यपि का सन्धि-विच्छेद है—
(a) यदि + अपि (b) यद्य + पि
(c) यद् + अपि (d) य + अपि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'अत्यावश्यक' का सन्धि-विच्छेद है—
(a) अति + आवश्यक (b) अत्य + आवश्यक
(c) अत्या + वश्यक (d) अत + आवश्यक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'अत्यावश्यक' में सन्धि-विच्छेद है—
(a) अति + आवश्यक (b) अत्य + आवश्यक
(c) अत्या + वश्यक (d) अत्या + आवश्यक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'इत्यादि' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद होगा—
(a) इति + आदि (b) इत्य + आदि
(c) इति + यादि (d) इत + आदि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'इत्यादि' का सही सन्धि-विच्छेद है—
(a) इत् + यादि (b) इति + यादि
(c) इत् + आदि (d) इति + आदि

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'प्रत्यक्ष' में सन्धि है—
(a) गुण (b) दीर्घ
(c) अयादि (d) यण

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'प्रत्येक' का सन्धि-विच्छेद होगा-
(a) प्रत्य + एक (b) प्रति + एक
(c) प्रति + ऐक (d) प्रत्ये + एक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'अन्वेषण' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है-
(a) अन्वेष + ण (b) अन्वे + षण
(c) अनु + वेषणा (d) अनु + एषण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'अन्वय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है :
(a) अनु + वय (b) अनु + अय
(c) अन् + अय (d) अनि +वय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'अन्वीक्षा' का सन्धि-विच्छेद है—
(a) अन + वीक्षा (b) अन् + वीक्षा
(c) अनु + ईक्षा (d) अन्व + ईक्षा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. स्वस्त्यस्तु का सन्धि-विच्छेद होगा-
(a) स्वस्ति + अस्तु
(b) स्वः + अस्त्यस्तु
(c) स्वस्त्य + अस्तु
(d) स्व + सत्यस्तु

T.G.T परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. यदि इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इनका परिवर्तन क्रमशः य्, व् और र् में हो, तो उसमें कौन-सी सन्धि होगी?

(a) गुण स्वर सन्धि (b) यण स्वर सन्धि
(c) वृद्धि स्वर सन्धि (d) अयादि स्वर सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. किस सन्धि में स्वरों का परिवर्तन य्, र्, ल्, व् में होता है?

(a) अयादि सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) यण सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. 'प्रत्येक' शब्द में कौन-सी स्वर सन्धि है?

(a) गुण सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) यण सन्धि (d) अयादि सन्धि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर–(c)

'प्रत्येक' में यण स्वर सन्धि है। इसका विच्छेद 'प्रति + एक' होता है।

25. इनमें से किस शब्द में यण सन्धि है?

(a) दंतौष्ठ (b) वसंतर्तुः
(c) देव्यागम (d) मदोन्मत्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

'देव्यागम' का सन्धि-विच्छेद 'देवी + आगम' है। यह यण सन्धि है। यहाँ 'ई + आ' मिलकर 'या' हो जा रहा है।

26. 'सु+आगतम्' में कौन-सी सन्धि है?

(a) गुण सन्धि (b) अयादि सन्धि
(c) वृद्धि सन्धि (d) यण सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

'सु + आगतम्' का सन्धि 'स्वागतम्' होता है। यह यण सन्धि के अन्तर्गत आता है।

27. 'रीति + अनुसार' से सन्धि के बाद शब्द बनेगा–

(a) रीत्यानुसार (b) रीतिअनुसार
(c) रीतोनुसार (d) रीत्यनुसार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'यण सन्धि' का सम्बन्ध किस सन्धि, विशेष से है?

(a) व्यंजन सन्धि (b) विसर्ग सन्धि
(c) स्वर सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं-(i) दीर्घ स्वर सन्धि, (ii) गुण स्वर सन्धि, (iii) वृद्धि स्वर सन्धि, (iv) यण स्वर सन्धि और (v) अयादि स्वर सन्धि। इस प्रकार स्पष्ट है कि यण सन्धि का सम्बन्ध स्वर सन्धि से है।

29. 'पवन' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) गुण सन्धि (b) यण सन्धि
(c) अयादि सन्धि (d) वृद्धि सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(c)

अयादि स्वर सन्धि में यदि 'ए','ऐ','ओ','औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय्', 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' हो जाता है। **जैसे-**

ने + अन = नयन   शे + अन = शयन   नै + अक = नायक
पो + अन = पवन   पौ + अन = पावन

30. 'पावन' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा–

(a) पा + वन (b) पो + वन
(c) पौ + अन (d) प + वन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'नायक' का सही सन्धि विच्छेद क्या है?

(a) ना + अक (b) नौ + अक
(c) ने + अक (d) नै + अक

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'पवन' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है-

(a) पो+अन (b) पव+अन्
(c) पः+अवन (d) पव+न्

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

व्यंजन सन्धि

1. व्यंजन सन्धि का उदाहरण नहीं है-

(a) उत् + चारणम् = उच्चारणम्

(b) रामस् + टीकते = रामष्टीकते

(c) गंगा + उदकम् = गंगोदकम्

(d) सत् + चित् = सच्चित्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'गंगा + उदकम् = गंगोदकम्' में गुण स्वर सन्धि है। शेष व्यंजन सन्धि के उदाहरण हैं।

2. 'अभिन्न' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा-

(a) अभि+न्न (b) अ + भिन्न

(c) अभित् + न (d) अनि् + न

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः न, म) से हो, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवां वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, य्) हो जाता है। **जैसे-**अभित् + न = अभिन्न।

3. 'अनंत' की सही सन्धि होगी-

(a) अन्+अंत (b) अन+अंत

(c) अनन्+त (d) अनना+त्

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'अनंत' का सन्धि-विच्छेद अन् + अंत होगा।

4. 'अनंत' का सही सन्धि-विच्छेद होगा-

(a) अन+अंत (b) अन्+अंत

(c) अ+नंत (d) अनं+त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'अनंत' शब्द की सही सन्धि होगी-

(a) अन+अंत (b) अन्+अंत

(c) अ+नंत (d) अनन्+त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'तदाकार' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है -

(a) तद + आकार (b) तत् + आकार

(c) तदा + कार (d) तदा + आकार

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

'तदाकार' का सन्धि-विच्छेद 'तत् + आकार' होता है।

7. 'उद्योग' का सन्धि होगा-

(a) उत् + योग (b) उद् + योग

(c) उध + योग (d) उत् + अयोग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन सन्धि कहते हैं। यदि क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प्, के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। **जैसे—**

दिक् + गज = दिग्गज	वाक् + जाल = वाग्जाल
अच् + अन्त = अजन्त	तत् + रूप = तद्रूप
जगत् + ईश = जगदीश	उत् + योग = उद्योग
षट् + दर्शन = षड्दर्शन	ऋक् + वेद = ऋग्वेद

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ व्यंजन सन्धि के नियम 2 के अनुसार यदि क्, च्, ट्, त्, तथा प् के बाद 'न' या 'म' आये तो क्, च्, ट्, त् तथा प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाता है। **जैसे—**जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + नति = उन्नति।

➲ यदि 'म' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन वर्ण आये, तो 'म' का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। **जैसे-**सम् + गम = संगम, पम् + चम = पंचम, किम् + चित = किंचित, सम् + सार = संसार, गम् + गा = गंगा ।

➲ यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज' अथवा 'झ' हो, तो 'त्' या 'द्' के स्थान पर 'ज्' हो जाता है। **जैसे—**उत् + ज्वल = उज्ज्वल, सत् + जन = सज्जन, विपद् + जाल = विपज्जाल।

➲ यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ल' हो, तो 'त्' या 'द्' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है। **जैसे—**उत् + लास = उल्लास, तत् + लीन = तल्लीन, उत् + लंघन = उल्लंघन।

➲ यदि 'त्', 'द्' के बाद 'श' हो, तो 'त्' या 'द्' का 'च्' और 'श' का 'छ' हो जाता है। **जैसे—**उत् + श्वास = उच्छ्वास, उत् + शृंखल = उच्छृंखल, उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट।

➲ यदि 'द' के पहले कोई स्वर हो, तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है। **जैसे-** वि + छेद = विच्छेद, परि + छेद = परिच्छेद, आ + छादन = आच्छादन।

8. **'ऋग्वेद' का सही सन्धि-विच्छेद है:**

(a) ऋग + वेद (b) ऋग् + वेद

(c) ऋक् + वेद (d) ऋ + वेद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **दिक् + गज' की सन्धि है-**

(a) दिकगज (b) दिग्गज

(c) दिगज (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **'तल्लीन' शब्द में सही सन्धि-विच्छेद है-**

(a) तल् + लीन (b) तद् + लीन

(c) तत + लीन (d) तत् + लीन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **'जगन्नाथ' शब्द में सही सन्धि है-**

(a) स्वर सन्धि (b) विसर्ग सन्धि

(c) व्यंजन सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **'जगन्नाथ' में कौन सन्धि है?**

(a) वृद्धि सन्धि (b) यण सन्धि

(c) स्वर सन्धि (d) व्यंजन सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **'उज्ज्वल' के चार सन्धि-विच्छेद दिये गये हैं, सही का चयन कीजिए-**

(a) उज् + ज्वल (b) उत् + ज्वल

(c) उद् + ज्वल (d) ऊत् + ज्वल

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **'उज्ज्वल' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद चुनिए-**

(a) उज् + ज्वल (b) उज्ज + वल

(c) उत् + ज्वल (d) उज + वल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **'उज्ज्वल' में प्रयुक्त सन्धि है-**

(a) गुण सन्धि (b) व्यंजन सन्धि

(c) विसर्ग सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. **'जगदीश' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद होगा—**

(a) जगत + ईश (b) जगत् + ईश

(c) जगद् + ईश (d) जगद + इश

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. **'षडानन' का सन्धि-विच्छेद होगा-**

(a) शड् + आनन (b) षड् + आनन

(c) षट् + आनन (d) षडा + नन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'षडानन' का सन्धि-विच्छेद 'षट् + आनन' होता है।

18. **किस शब्द में व्यंजन सन्धि है?**

(a) सज्जन (b) परोपकार

(c) विद्यालय (d) इत्यादि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सज्जन' में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'सत् + जन' होता है। परोपकार का सन्धि-विच्छेद 'पर + उपकार' होता है। यह गुण स्वर सन्धि है। विद्यालय का सन्धि-विच्छेद 'विद्या + आलय' होता है। यह दीर्घ स्वर सन्धि होता है। इत्यादि का सन्धि-विच्छेद 'इति + आदि' होता है। यह यण स्वर सन्धि है।

19 **भगवद्गीता का सन्धि-विच्छेद है-**

(a) भगवद् + गीता (b) भग + वद् + गीता

(c) भगवत् + गीता (d) भग + वद्गीता

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अघोष व्यंजन के बाद स्वर या सघोष व्यंजन हो, तो अघोष का सघोष हो जाता है, **जैसे-**

भगवत् + गीता = भगवद्गीता

भगवत् + भजन = भगवद्भजन

सत् + धर्म = सद्धर्म

जगत् + ईश = जगदीश

20. नवोढ़ा का सन्धि-विच्छेद है-

(a) नव + उढ़ा (b) नवो + ढ़ा

(c) नव + ऊढ़ा (d) न + ओढ़ा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' आये, तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं। यह गुण स्वर सन्धि कहलाती है। **जैसे-**

देव + इन्द्र = देवेन्द्र महा + इन्द्र = महेन्द्र

चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय जल + ऊर्मि = जलोर्मि

नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा। देव + ऋषि = देवर्षि

सूर्य + उदय = सूर्योदय प्र + ऊढ = प्रौढ़

अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

21. 'सूर्योदय' का सन्धि-विच्छेद क्या है?

(a) सूर्यो + दय (b) सूर्य + उदय

(c) सैय + उदय (d) सूर्य + उदयम

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आये तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। यह स्वर सन्धि कहलाती है-

(a) दीर्घ स्वर सन्धि (b) वृद्धि स्वर सन्धि

(c) गुण स्वर सन्धि (d) अयादि स्वर सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

विसर्ग सन्धि

1. किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

(a) अहंकार (b) हिमालय

(c) दुष्कर (d) उल्लास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'दुष्कर' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'दुः + कर' होता है। अहंकार में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'अहम् + कार' होता है। हिमालय में दीर्घ स्वर सन्धि है। इसका सन्धि विच्छेद 'हिम + आलय' होता है। उल्लास में व्यंजन सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'उत् + लास' होता है।

2. 'दुष्प्रकृति' शब्द का सन्धि-विच्छेद है-

(a) दुस् + प्रकृति

(b) दुः + प्रकृति

(c) दुश्य् + प्रकृति

(d) दुसप्र + कृति

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क,ख,प,फ हो, तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। **जैसे—**

निः + कपट = निष्कपट निः + फल = निष्फल

निः + पाप = निष्पाप दुः + कर = दुष्कर

दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

3. 'दुर्जन' का सन्धि-विच्छेद होगा-

(a) दुर् + जन (b) दुः + जन

(c) दु + अरजन (d) र्दु + जन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

विसर्ग सन्धि के अनुसार, यदि इः, उः के बाद सघोष ध्वनि हो, तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है। जैसे-

दुः + जन = दुर्जन निः + आशा = निराशा

दुः + बल = दुर्बल निः + मम = निर्मम

दुः + दशा = दुर्दशा निः + भय = निर्भय

निः + अपराध = निरपराध

4. किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

(a) मतैक्यम् (b) महौषधि

(c) तरोश्छाया (d) विष्णवे

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'तरोश्छाया' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'तरोः + छाया' होता है। मतैक्यम् में वृद्धि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'मत + ऐक्यम्' होता है। 'महौषधि' में वृद्धि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'महा + औषद्धि' होता है। 'विष्णवे' में अयादि स्वर सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद 'विष्णु + ए' होता है।

5. 'तेजोमय' का सही सन्धि-विच्छेद है-

(a) तेज + ओमय (b) तेजः + अमय

(c) तेजः + मय (d) तेजो + मय

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विसर्ग सन्धि के अनुसार, यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण को छोड़कर अन्य कोई वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह हो, तो अ और विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। **जैसे-**

तपः + बल = तपोबल तपः + मय = तपोमय

तेजः + मय = तेजोमय यशः + दा = यशोदा

मनः + ज्ञ = मनोज्ञ मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

6. मनोविज्ञान में कौन-सी सन्धि है?

(a) व्यंजन सन्धि (b) विसर्ग सन्धि

(c) यण सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'बृहस्पति' का सन्धि-विच्छेद है-

(a) बृहस + पति (b) बृहस् + पति

(c) बृहः + पति (d) बृहश + पति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यदि विसर्ग के बाद क, ख, प, फ, आता है, तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता, किन्तु कुछ शब्दों में विसर्ग का 'स' हो जाता है। यहाँ दोनों उदाहरण प्रस्तुत हैं। जैसे–

प्रातः + काल = प्रातःकाल पयः + पान = पयःपान

अन्तः + पुर = अन्तःपुर बृहः + पति = बृहस्पति

पुरः + कार = पुरस्कार परः + पर = परस्पर

वाचः + पति = वाचस्पति नमः + कार = नमस्कार

8. 'हरिश्चन्द्र' में प्रयुक्त किस सन्धि का नाम सही है?

(a) स्वर सन्धि

(b) व्यंजन सन्धि

(c) विसर्ग सन्धि

(d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यदि विसर्ग के बाद च, छ हो, तो विसर्ग का श् हो जाता है। **जैसे-**

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र निः + चल = निश्चल

हरिः + चन्द्र = हरिश्चन्द्र

निर्देश (प्रश्न 9 से 11 के लिए) : निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते समय दिए गए विकल्पों में से सही रूप छाँटिए-

9. निष्काम

(a) निष् + काम (b) निः + काम

(c) निश + काम (d) निस् + काम

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'निष्काम' का सन्धि-विच्छेद 'निः + काम' होता है। यह विसर्ग सन्धि है।

10. वीरोचित

(a) वीर + उचित (b) वीर + औचित

(c) वीरा + चित (d) वि + उचित

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'वीरोचित' का सन्धि-विच्छेद 'वीर + उचित' होता है। यह गुण सन्धि के अंतर्गत आता है।

11. मदोन्मत

(a) मदन + उन्मत्त (b) मदो + मत्त

(c) मद + उन्मत्त (d) मदन + मत्त

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'मदोन्मत' का सन्धि-विच्छेद 'मद् + उन्मत' होता है। यह गुण स्वर सन्धि है।

❑ समास

अव्ययीभाव समास

1. 'अनुरुप' में कौन-सा समास है?

(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष

(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जिस समास में पहला पद प्रधान हो और सामासिक पद या समास पद अव्यय हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। **यथा—**

समास	**विग्रह**
अनुरूप	जैसा रूप है वैसा
अनुकृति	जैसी कृति है वैसी
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथास्थान	जो स्थान निर्धारित है
यथोचित	जैसा उचित है वैसा
आमरण	मरण तक

आजीवन	जीवन भर
अनुसार	जैसा सार है वैसा
आपादमस्तक	पाद से लेकर मस्तक तक
प्रतिदिन	हर दिन
प्रतिक्षण	हर क्षण
प्रत्येक	हर एक
आकंठ	कंठ तक
यावज्जीवन	जब तक (यावत्) जीवन है
यथाविधि	जैसी विधि निर्धारित है
यथासाध्य	जितना साधा जा सके
आजन्म	जन्म से या जन्म भर

2. 'प्रतिदिन' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'यथाशक्ति' में कौन-सा समास है?

(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) अव्ययीभाव

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'आजन्म' शब्द में समास है-

(a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित में 'यथाविधि' का सही समास कौन-सा है?

(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'रातोंरात' शब्द में समास है -

(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'रातोंरात' (रात ही रात) में अव्ययीभाव समास है। जिस समास का प्रथम पद अव्यय हो या कोई उपसर्ग हो, वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है।

7. 'चक्रपाणिदर्शनार्थ' पद में मान्य समास है-

(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

यदि एक समस्त पद में अनेक समास वाले पदों का मेल हो, तो अलग-अलग या एक साथ भी विग्रह किया जा सकता है। जैसे—चक्रपाणिदर्शनार्थ- चक्र है पाणि में जिसके = चक्रपाणि (बहुव्रीहि समास); दर्शन के अर्थ = दर्शनार्थ (अव्ययीभाव समास), चक्रपाणि के दर्शनार्थ = चक्रपाणिदर्शनार्थ (अव्ययीभाव समास) । समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय है, इसलिए अव्ययीभाव समास है। एक साथ विग्रह इस तरह होगा—चक्र है पाणि में जिसके, उसके दर्शन के अर्थ = चक्रपाणिदर्शनार्थ। इसी तरह, 'पीताम्बरवनमाला' का विग्रह इस प्रकार होगा—पीत है अम्बर जिसका = पीताम्बर (बहुव्रीहि समास), वन के फूलों की माला = वनमाला(मध्यमपदलोपी); पीताम्बर की वनमाला = पीताम्बरवनमाला (सम्बन्धतत्पुरुष)। अथवा-वन के फूलों की माला = वनमाला, पीत है अम्बर जिसका, उसकी वनमाला। यहाँ यदि 'पीत है अम्बर जिसका उसकी वन के फूलों की माला' ऐसा विग्रह किया जाय, तो अच्छा नहीं मालूम होता।

तत्पुरुष समास

1. 'रसोईघर' का समास-विग्रह है -

(a) रसोई के लिए घर (b) रसोई का घर
(c) घर की रसोई (d) रसोई और घर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रसोईघर का समास- विग्रह 'रसोई के लिए घर' होता है। यह करणकारक तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आता है।

2. किस शब्द में तत्पुरुष समास नहीं है?

(a) विश्वविख्यात (b) आश्चर्यचकित
(c) विषधर (d) हिमपात

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'विश्वविख्यात' का समास विग्रह 'विश्व में विख्यात', 'आश्चर्यचकित' का समास विग्रह 'आश्चर्य से चकित' तथा 'हिमपात' का समास विग्रह 'हिम का पात' है। इन सभी में तत्पुरुष समास है, जबकि 'विषधर' में बहुव्रीहि समास है। इसका विग्रह 'विष को धारण करने वाला' अर्थात् सांप होता है।

3. **अधोलिखित शब्दों में से किस शब्द में तत्पुरुष समास है?**
(a) मुनिवर (b) सुसंग
(c) पराधीन (d) दत्तचित्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'पराधीन' शब्द में तत्पुरुष समास है। इसका समास विग्रह- 'पर (दूसरे) के अधीन' होता है। यह सम्बान्धकारक तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आता है।

4. **'ध्यानमग्न' में कौन-सा समास है?**
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'ध्यानमग्न' अधिकरण तत्पुरुष समास का उदाहरण है। इसका विग्रह है- 'ध्यान में मग्न'।

5. **जिस समास में उत्तरपद की प्रधानता है, उसे कहते हैं -**
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

जिस समास का प्रथम पद गौण तथा उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में सामान्यतः प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेषण होता है। पहले पद में द्वितीया से सप्तमी कारक तक विभक्ति का लोप होता है।

6. **'मुँहतोड़' शब्द में समास है -**
(a) तत्पुरुष समास (b) अव्ययीभाव समास
(c) कर्मधारय समास (d) द्विगु समास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'मुँहतोड़' शब्द में कर्म-तत्पुरुष समास है। इसका विग्रह 'मुँह को तोड़ने वाला' होता है।

7. **'पर्णकुटी' शब्द का समास है-**
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'पर्णकुटी' में करण तत्पुरुष समास है। जिसका विग्रह है-'पर्ण से बनी कुटी'।

8. **'गोशाला' शब्द में कौन-सा समास है?**
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'गोशाला' में सम्प्रदान तत्पुरुष समास है। इसका समास विग्रह होगा—'गो के लिए शाला'।

9. **'कठपुतली' में कौन-सा समास है?**
(a) सम्प्रदान तत्पुरुष (b) सम्बन्ध तत्पुरुष
(c) अधिकरण तत्पुरुष (d) कर्म तत्पुरुष

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैं- (1) कर्म तत्पुरुष, (2) करण तत्पुरुष, (3) सम्प्रदान तत्पुरुष, (4) अपादान तत्पुरुष, (5) सम्बन्ध तत्पुरुष तथा (6) अधिकरण तत्पुरुष। कठपुतली (काठ+पुतली) का विग्रह काठ की पुतली है। इसमें सम्बन्ध तत्पुरुष है।

10. **'सिंहद्वार' शब्द में समास है-**
(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

सिंहद्वार-किले, महल आदि का बड़ा फाटक। यह तत्पुरुष समास है।

11. **'सद्गति' शब्द में समास होगा-**
(a) तत्पुरुष समास
(b) कर्मधारय समास
(c) अव्ययीभाव समास
(d) द्विगु समास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

सद्गति-मरने के बाद अच्छे लोक में जाना। यह तत्पुरुष समास है।

12. **धनंजय में समास है-**
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) अव्ययीभाव

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(*)

'धनंजय' में तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि दोनों समास हैं। यदि इसका विग्रह धनंजय-वह जो धन का जय करता है (अर्जुन) किया जाय, तो बहुव्रीहि समास होगा, परन्तु यदि धनंजय का विग्रह 'धन (कुबेर) को जय करने वाला' है, तो यह तत्पुरुष समास होगा।

13. 'मनमाना' में कौन-सा समास है?
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

तत्पुरुष समास में पहला पद गौण तथा अन्तिम पद प्रधान होता है। सामान्यतया प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। करण तत्पुरुष समास में करण कारक के चिह्न-से, के द्वारा के लोप से बनने वाले समास इस प्रकार हैं—

समास	**विग्रह**
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य
रेखांकित	रेखा के द्वारा अंकित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दिया हुआ
मदमाता	मद से मत्त हुआ
मनगढ़ंत	मन से गढ़ा हुआ
प्रकाशयुक्त	प्रकाश से युक्त
मनमाना	मन से माना हुआ
शोकाकुल	शोक से आकुल
मदान्ध	मद से अन्धा

14. 'मदमाता' में कौन-सा समास है?
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'शोकाकुल' में समास है-
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) अव्ययीभाव

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'अकालपीड़ित' में समास होगा-
(a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

कर्मधारय समास

1. 'धर्मबुद्धि' में समास है—
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

धर्मबुद्धि अर्थात् धर्म विषयक बुद्धि में कर्मधारय समास है। कर्मधारय समास वह समास है, जिसमें उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद व उत्तर पद में उपमेय-उपमान या विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है, जैसे-चरणकमल, लालमणि, मृगनयन आदि।

2. निम्नलिखित में से एक में कर्मधारय समास है -
(a) हाथों-हाथ (b) प्रत्यक्ष
(c) आरामकुर्सी (d) भुजदंड

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

भुजदंड में कर्मधारय समास है। इसका विग्रह 'दंड (दंडे) के समान भुजा' है।

3. इनमें से कौन-सा शब्द कर्मधारय समास का उदाहरण है?
(a) अन्धकूप (b) गृहप्रवेश
(c) तिरंगा (d) सुख-दु:ख

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

जिस समास के पदों में विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान का सम्बन्ध होता है, उसे 'कर्मधारय समास' कहते हैं। इस समास में विशेषण पहले होता है। **जैसे—**

समास	**विग्रह**
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)
सज्जन	सत् है जो जन
अन्धकूप	अन्धा है जो कूप
परमानन्द	परम है जो आनन्द
मंदाग्नि	मंद है जो अग्नि
शिष्टाचार	शिष्ट है जो आचार
अन्धविश्वास	अन्ध है जो विश्वास
श्वेताम्बर	श्वेत है जो अम्बर
अधपका	आधा है जो पका
महाविद्यालय	महान् है जो विद्यालय
कापुरुष	कायर है जो पुरुष
निर्विवाद	विवाद से निवृत्त
नलकूप	नल से बना है जो कूप
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'गृहप्रवेश' अधिकरण तत्पुरुष समास का उदाहरण है। इसका विग्रह है- गृह में प्रवेश।

➲ 'सुख-दुःख' में द्वन्द्व समास है। इसका विग्रह है- सुख और दुःख

4. 'परमानन्द' शब्द में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) अव्ययीभाव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'नीलगाय' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

T.G.T. परीक्षा, 2011
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

जब कोई एक खण्ड विशेषण या उपमासूचक शब्द हो, तो कर्मधारय समास बनता है। इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं, क्योंकि विग्रह करने पर इसके दोनों पद एक ही कारक या विभक्ति में होते हैं। ये समास विशेषण-विशेष्य और उपमान-उपमेय की स्थिति के अनुसार बनते हैं। **जैसे-**महात्मा, दीर्घायु, महाराज, नीलगाय, नीलकमल, कालीमिर्च, कृष्णसर्प (सभी विशेषण और विशेष्य से मिलकर बने हैं)।

6. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है?

(a) द्विगु (b) कर्मधारय
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

नीलकमल का समास विग्रह है - नीला है जो कमल। यहाँ विशेष्य का सम्बन्ध विशेषण से है। अतः कर्मधारय समास है।

द्विगु समास

1. 'तिरंगा' शब्द में समास है-

(a) द्वन्द्व समास (b) अव्ययीभाव समास
(c) द्विगु समास (d) कर्मधारय समास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'तिरंगा' अर्थात् तीन रंगों वाला में द्विगु समास है। यदि इसका विग्रह 'तीन रंगों वाला भारतीय ध्वज' के रूप में किया जायेगा, तब यह बहुव्रीहि समास होगा।

2. किस समास का पूर्व पद संख्यावाची होता है?

(a) तत्पुरुष (b) द्विगु
(c) अव्ययीभाव (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

जिस समास में पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और जिसके समस्त पद से समूह का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। **जैसे—**

समास	**विग्रह**
नवरत्न	नौ रत्नों का समाहार
अष्टपदी	अष्ट पदों का समाहार
पंचवटी	पाँच वटों (वृक्षों) का समूह
चतुर्वर्ण	चार वर्णों का समाहार
षट्कोण	छः कोण वाला
त्रिभुवन	तीन भुवनों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
त्रियुगी	तीन युगों का समाहार
पंचरत्न	पाँच रत्नों का समाहार
त्रिलोक	तीनों लोकों का समाहार
सतसई	सात सौ का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार

3. द्विगु समास का उदाहरण है-

(a) राजा रानी (b) पीताम्बर
(c) त्रिभुवन (d) भूदेव

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. पंचवटी शब्द में कौन-सा समास है?

(a) कर्मधारय (b) द्विगु
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'पंचवटी' शब्द में प्रयुक्त समास का नाम बताइए-

(a) द्विगु समास (b) तत्पुरुष समास
(c) बहुव्रीहि समास (d) अव्ययीभाव समास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'त्रिभुज' शब्द में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) द्विगु समास
(c) द्वन्द्व समास (d) कर्मधारय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

जिस समास का प्रथम पद संख्यावाचक और अन्तिम पद संज्ञा हो, द्विगु समास कहलाता है। जैसे-इकतारा, इकहरा, दुगुना, दोपहर, दुधारा, दुपट्टा, त्रिदोष, त्रिभुज, तिकोना, त्रिगुण, चारपाई, पसेरी, षड्दर्शन, सप्तसिन्धु, अष्ठभुज, अठवारा आदि।

द्वन्द्व समास

1. जिस समास के पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पद समान रूप से प्रधान हों, उसे कहते हैं-

(a) तत्पुरुष समास (b) बहुव्रीहि समास
(c) द्विगु समास (d) द्वन्द्व समास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जिस समास के पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पद समान रूप से प्रधान हों, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इस समास के तीन भेद हैं-(i) इतरेतर द्वन्द्व, (ii) समाहार द्वन्द्व और (iii) वैकल्पिक द्वन्द्व। **जैसे-** गाय-बैल = गाय और बैल, भाई-बहन = भाई और बहन, माँ-बाप = माँ और बाप तथा थोड़ा-बहुत = थोड़ा या बहुत।

2. द्वन्द्व समास की प्रमुख विशेषता है-

(a) प्रथम पद प्रधान होता है (b) उत्तर पद प्रधान होता है
(c) दोनों पद प्रधान होते हैं (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. द्वन्द्व समास में कौन-सा पद प्रधान होता है?

(a) उत्तर पद (b) प्रथम पद
(c) दोनों पद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. जिस समास में सब पद अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) बहुव्रीहि समास (b) तत्पुरुष समास
(c) द्वन्द्व समास (d) द्विगु समास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

जिस समास में सब पद अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। द्वन्द्व समास के मुख्यतः तीन भेद होते हैं, इतरेतर द्वन्द्व, समाहार द्वन्द्व तथा वैकल्पिक द्वन्द्व।

5. निम्नलिखित में द्वन्द्व समास बताइए?

(a) शोकाकुल (b) सर्वोत्तम
(c) वीरपुरुष (d) पाप-पुण्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। **जैसे-**पाप-पुण्य = पाप या पुण्य। 'पाप-पुण्य' वैकल्पिक द्वन्द्व समास का उदाहरण है। इस समास में दो पदों के बीच 'या', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते हैं। थोड़ा-बहुत (थोड़ा या बहुत), आज-कल (आज या कल) में भी द्वन्द्व समास है।

6. निम्नलिखित में 'द्वन्द्व समास' का शब्द है-

(a) आज-कल (b) रातों-रात
(c) दिन-दिन (d) वीर पुरुष

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. कतर-ब्योंत में कौन-सा समास है?

(a) द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

कतर-ब्योंत में द्वन्द्व समास है। काटने और छाँटने की क्रिया या ढंग को कतर-ब्योंत कहते हैं। द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, लेकिन दोनों के बीच 'और' शब्द का लोप होता है। **जैसे-**हार-जीत, पाप-पुण्य आदि।

8. निम्नलिखित युग्मों में से एक समास की दृष्टि से अशुद्ध है -

(a) भरपेट - अव्ययीभाव (b) रसोईघर - तत्पुरुष
(c) दालरोटी - द्वन्द्व (d) चालचलन - अव्ययीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

चाल-चालन में द्वन्द्व समास है। शेष युग्म सही हैं।

9. 'जय-पराजय' में कौन-सा समास है?

(a) अव्ययीभाव (b) बहुव्रीहि
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'जय-पराजय' में द्वन्द्व समास है। जिसका विग्रह है- 'जय और पराजय'।

10. 'जय-पराजय' में कौन-सा समास है?

(a) द्वन्द्व समास (b) कर्मधारय समास

(c) द्विगु समास (d) तत्पुरुष समास

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'धनुर्बाण' में किस तरह का समास है?

(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि

(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

इतरेतर द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान तो होते ही हैं, साथ ही अपना अलग-अलग अस्तित्व भी रखते हैं। जैसे- अन्नजल = अन्न और जल,
धनुर्बाण = धनु और बाण

12. 'हानि-लाभ' में कौन-सा समास है?

(a) द्विगु समास (b) तत्पुरुष समास

(c) बहुव्रीहि समास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

द्वन्द्व का शाब्दिक अर्थ है—युग्म या जोड़ा। द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान रहते हैं अथवा उनके समूह का प्रधानत्व रहता हैं। जैसे—हानि-लाभ, दिन-रात, माता-पिता, पाप-पुण्य, भाई-बहन आदि।

बहुव्रीहि समास

1. 'कुसुमाकर' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'कुसुमाकर' का समास विग्रह 'कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो अर्थात् वसंत' है। अतः इसमें बहुव्रीहि समास है।

2. 'कूपमंडूक' में किस समास की योजना है?

(a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व

(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'कूपमंडूक' का समास विग्रह 'जिसका ज्ञान (कूप) सीमित हो अर्थात् 'व्यक्ति विशेष' होता है। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

3. 'निर्दय' में समास है—

(a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास

(c) द्विगु समास (d) बहुव्रीहि समास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'निर्दय' का समास विग्रह 'दया नहीं है जिसमें अर्थात् विशेष व्यक्ति' होता है। अतः निर्दय में बहुव्रीहि समास है।

4. 'महात्मा' शब्द में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव

(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

'महात्मा' शब्द का विग्रह यदि 'महान आत्मा' के रूप में किया जाय, तो कर्मधारय समास होगा, किन्तु यदि इसका विग्रह 'महान् है आत्मा जिसकी' (ऐसा व्यक्ति) के रूप में किया जाय, तो यह बहुव्रीहि समास होगा। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (d) को सही माना है।

5. लम्बोदर उदाहरण है—

(a) बहुव्रीहि समास का (b) द्वन्द्व समास का

(c) द्विगु समास का (d) कर्मधारय समास का

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जिस समास में दो शब्द मिलकर किसी तीसरे का विशेषण बन जाएँ, तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। इस समास में दोनों शब्दों में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है और समस्त पद किसी अन्य संज्ञा की ओर संकेत करता है। **जैसे—**

समास	**विग्रह**
लम्बोदर	लम्ब है उदर जिसका (गणेश)
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु)
चन्द्रशेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके (शिव)
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके (सरस्वती)
गिरिधर	गिरि को धारण किया जिसने (श्रीकृष्ण)
दशमुख	दस हैं मुख जिसके (रावण)
जलज	जल से उत्पन्न है जो (कमल)

6. 'कमलनयन' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष समास (b) द्विगु समास

(c) बहुव्रीहि समास (d) द्वन्द्व समास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

समास के कुछ उदाहरण हैं, जो कर्मधारय तथा बहुव्रीहि दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं। कमलनयन में पूर्व पद उपमान तथा उत्तर पद उपमेय है। यदि इसका विग्रह 'कमल के समान नयन' किया जाय, तो कर्मधारय समास होगा, परन्तु यदि इसका विग्रह 'कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात् विष्णु' किया जाय, तो बहुव्रीहि समास होगा।

7. 'पतझड़' में कौन-सा समास है?

(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि

(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'पतझड़' में बहुव्रीहि समास है। इसका विग्रह 'झड़ते हैं जिसमें पत्ते' अर्थात् विशेष ऋतु।

❑ लिंग

1. लिंग किस भाषा का शब्द है?

(a) हिन्दी (b) अंग्रेजी

(c) संस्कृत (d) जर्मन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

लिंग संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ चिह्न या निशान प्रतीक, आदि होता है। हिन्दी में लिंग दो होते हैं—पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग। सभी शब्द-चेतन और अचेतन-इन्हीं लिंगों में विभक्त हैं। संस्कृत में एक अन्य लिंग भी होता है—नपुंसकलिंग। सभी संज्ञाएँ इन्हीं तीन लिंगों में विभक्त हैं। संस्कृत में एक ही वस्तु या व्यक्ति के वाचक शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों के हैं **यथा**-''तटः-तटी-तटम्'' तीनों का अर्थ तट है। इसी प्रकार ''दारा, भार्या, कलत्रम्'' तीनों का अर्थ स्त्री है। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनका अर्थ भेद से लिंग भेद होता है। **यथा**-मित्र शब्द 'सखा' का बोधक होने से नपुंसकलिंग और 'सूर्य' का बोधक होने से पुल्लिंग है। संस्कृत के प्रत्येक शब्द का लिंग निश्चित है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?

(a) लगन (b) मीमांसा

(c) आहट (d) माधुर्य

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

माधुर्य पुल्लिंग शब्द है, जबकि लगन, मीमांसा एवं आहट स्त्रीलिंग शब्द हैं।

3. इनमें से पुल्लिंग शब्द कौन-सा है?

(a) दया (b) निर्धनता

(c) बुढ़ापा (d) दुर्घटना

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

बुढ़ापा, पुल्लिंग शब्द है शेष स्त्रीलिंग हैं। जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ना, आव, पन, वा, पा होता है, वहाँ पुल्लिंग शब्द होते हैं। **जैसे-** गाना, आना, बहाव, चढ़ाव, बड़प्पन, बढ़ावा इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ बन्दूक, बकवास, बगल, बचत, बदबू, बनावट, बरात, बधाई, बर्फ, बहार, बाँह, बातचीत, बागडोर, बारिश, बाढ़, बुद्धि, बूँद, बैठक, बोतल, बौछार आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

➲ दंगा, दण्ड, दबाव, दर्जा, दर्पण, दफ्तर, दरबार, दस्तखत, दहेज, दाँत, दाग, दानव, दाम, दही, दास, दिन, दिमाग, दिल, दीप, दीपक, दूध, दृश्य, देशाटन, दूतावास, देहात, दैत्य, देश, द्वार, द्वेष इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

➲ नकद, नक्षत्र, नगर, नमक, नल, नाखून, नियम, निवास, निवेदन, निशान, निष्कर्ष, नींबू, नीर, नीलम, नृत्य, नेत्र, नैहर, न्याय, न्यास इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

4. निम्नलिखित में पुल्लिंग शब्द है-

(a) सरसों (b) मकई

(c) सारस (d) मूँग

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

सारस, पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग शब्द हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अनाजों के नाम पुल्लिंग होते हैं। **जैसे-**गेहूँ, चावल, बाजरा इत्यादि, किन्तु अपवाद स्वरूप कुछ अनाज स्त्रीलिंग में आते हैं। **जैसे-** अरहर, सरसों, मकई, मूँग इत्यादि।

➲ संकट, संकलन, संकेत, संकोच, संखिया, संगठन, संगम, संगीत, संघटन, संचय, संचार, संयोग, सन्तुलन, सन्देह, संन्यास, सम्पर्क, सम्बन्ध, संयम, संवर्द्धन, संविधान, संस्थान, संहार, सत्तू, सत्र, सूत, सदन, सदावर्त, सफर, समीर, सर, सरकस, सरसिज, सरोहर, सलाम, सवैया, सहयोग, सहारा, साक्ष्य, साग, साधन, साया, सार, सिंगार, सिन्दूर, सियार, सिर, सिरका, सिल्क, सींग, सीप, सुधांशु, सुमन, सुर, सूअर, सूचीपत्र, सूत्र, सूना, सूद, सूप, सेतु, सेब, सेवन, सोच, सोना, सोफा, सोम, सोरठा, सोहर (गीत), सौजन्य, सौभाग्य, सौरभ, सौहार्द, स्तम्भन, स्तर, स्थल, स्पन्दन, स्पर्श, स्फोट, स्मारक, स्वत्व, स्वरूप, स्वर्ग, स्वर्ण, स्वांग, स्वाद इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

5. निम्न में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

(a) चना (b) अरहर

(c) बाजरा (d) उड़द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में गलत बताते हुए इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, जबकि पहले जारी उत्तर कुंजी में सही उत्तर था।

6. इनमें से कौन-सा शब्द पुल्लिंग नहीं है?

(a) बनावट (b) छाता
(c) सूर्य (d) अमरूद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

बनावट, पुल्लिंग शब्द नहीं, बल्कि स्त्रीलिंग शब्द है। शेष पुल्लिंग शब्द हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ बण्डल, बन्दरगाह, बखान, बबूल, बखिया, बचपन, बचाव, बड़प्पन, बरतन, बरताव, बल, बलात्कार, बहलाव, बहाव, बहिष्कार, बटेर, बाँध, बाँस, बाग, बाज, बाजा, बाट, बाजार, बादाम, बाल, बाहुल्य, बिछावन, बीज, बिल, बुखार, बूँद, बेंत, बेलन, बेला, बेसन, बोझ, बोल, ब्योरा इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

7. निम्नांकित में पुल्लिंग शब्द कौन-सा है?

(a) मजा (b) सजा
(c) कजा (d) रजा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

मजा पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

मंच, मंचन, मण्डन, मन्तव्य, मन्त्रिमण्डल, मकबरा, मकरन्द, मजमा, मजीरा, मटर, मसूर, मठ, मतलब, मद, मद्य, मच्छर, मनसूबा, मनोवेग, मरहम, मरोड़, मवेशी, मलय, मलयगिरि, मलाल, मवाद, महुआ, माघ, माजरा, मातम, मिजाज, मील, मुकदमा, मुरब्बा, मुकुट, मूँगा, मृग, मेघ, मेवा, मोक्ष, मोड़, मोती, मोतीचूर, मोम, मोर, मोह, मौन, म्यान इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

8. निम्नलिखित शब्दों में पुल्लिंग का चयन कीजिए-

(a) हवा (b) कोयल
(c) दारा (d) शिक्षा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

संस्कृत में भार्या, दारा एवं कलत्र तीनों शब्द पत्नी के लिए प्रयुक्त होते हैं, परन्तु दारा पुल्लिंग शब्द है। भार्या स्त्रीलिंग एवं कलत्र नपुंसकलिंग है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हकीकत, हड़प, हड़ताल, हत्या, हद, हलचल, हवा, हाँक, हाय, हाट, हालत, हिंसा, हिचक, हिदायत, हींग, हिम्मत, हल्दी, हैसियत, होड़ा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

➲ शंका, शपथ, शक्कर, शरण, शर्म, शर्त, शतरंज, शराब, शरारत, शहादत, शान, शाखा, शाम, शामत, शिखा, शिकायत, शिरा, श्रृंखला, शौकत इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

➲ कक्षा, कटार, कटुता, कड़क, कतरन, कतार, कथा, कन्या, कब्र, कमर, कमाई, कमान, कमीज, करवट, करुणा, कवायद, कसक, कसम, कसरत, कपास, कसौटी, कालिख, करतूत, किस्मत, किशमिश, कीमत, कील, कुंजी, कुटिया, कुल्हाड़ी, कृपा, कैद, कोख, कोयल, क्रिया, क्रीड़ा, क्षमा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

9. निम्नलिखित शब्दों में नपुंसकलिंग का चयन कीजिए-

(a) स्त्री (b) दारा
(c) कलत्र (d) पत्नी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. दिये गये विकल्पों में से 'ज्ञानवती' का पुल्लिंग शब्द छाँटिए -

(a) ज्ञानवत (b) ज्ञानवान्
(c) ज्ञानयुक्त (d) ज्ञानेय

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'ज्ञानवती' का पुल्लिंग 'ज्ञानवान्' होता है। शेष विकल्प असंगत हैं।

11. निम्नलिखित में से पुल्लिंग शब्द है-

(a) घास (b) आय
(c) व्यय (d) नहर

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

व्यय पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ वजन, वज्र, वन, वनवास, वर, वरण, वर्जन, वसन्त, वहिरंग, वाचन, वात, वार, वाष्प, विकल्प, विक्रय, विघटन, वित्त, विलम्ब, विमर्श, विलास, विष, विलयन, विवाद, विसर्जन, विस्फोट, वृत्त, वेश, वैभव, वैमनस्य, वैराग्य, वैष्णव, व्यंग्य, व्यंजन, व्यवधान, व्याख्यान, व्याघात, व्यास इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

➲ आग, आजीविका, आज्ञा, आत्मा, आन, आत्मजा, आत्महत्या, आदत, आपदा, आफत, आय, आयु, आराधना, आवाज, आशंका, आस्तीन, आह, आहट, आशीष इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

➲ घटा, घटिका, घास, घिन, घुड़दौड़, घुड़साल, घूस, घृणा, घोषणा इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

➲ नकल, नजर, नहर, नफरत, नफासत, नसीहत, नब्ज, नमाज, निद्रा, निराशा, निशा, निष्ठा, नींद, नीयत, नींव, नोक, नौबत, नेत्री इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

12. **निम्नलिखित में कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?**
(a) आय (b) व्यय
(c) नहर (d) लहर

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **लिंग की दृष्टि से 'दही' क्या है?**
(a) स्त्रीलिंग (b) पुल्लिंग
(c) नपुंसकलिंग (d) उभयलिंग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

लिंग की दृष्टि से 'दही' पुल्लिंग शब्द है। ईकारान्त संज्ञाएँ जैसे-नदी, रोटी, टोपी इत्यादि स्त्रीलिंग होती हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप घी, मोती, दही पुल्लिंग शब्द की श्रेणी में आते हैं।

14. **निम्नलिखित शब्दों में से एक पुल्लिंग शब्द है-**
(a) चाय (b) शिकंजी
(c) लस्सी (d) दही

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **निम्नलिखित में पुल्लिंग शब्द नहीं है-**
(a) रत्न (b) मोती
(c) नकल (d) बचपन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

नकल स्त्रीलिंग शब्द है, शेष पुल्लिंग हैं।

16. **निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिंग शब्द का चयन कीजिए-**
(a) सूची-पत्र (b) किताब
(c) गंगा (d) संसद

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

सूची-पत्र पुल्लिंग शब्द है, शेष स्त्रीलिंग के श्रेणी में आते हैं।

17. **निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग शब्द है -**
(a) टकसाल (b) दाग
(c) घर (d) खीरा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'टकसाल' स्त्रीलिंग शब्द है, जबकि दाग, खीरा, घर पुल्लिंग शब्द हैं।

18. **निम्नलिखित में से ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिंग) नहीं है -**
(a) नदी (b) टोपी
(c) उदासी (d) पहिया

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पहिया' ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिंग) नहीं है, बल्कि आकारान्त पुल्लिंग है। शेष विकल्पों में ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिंग) शब्द हैं।

19. **निम्नलिखित में से कौन-सा स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है?**
(a) ऋतु (b) पण्डित
(c) हंस (d) आचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

ऋतु स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया जाता है, शेष पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हुंकार, हज, हक, हठयोग, हड़कम्प, हमला, हरण, हरिण, हल, हवन, हवाला, हार (माला), हाशिया, हास्य, हित, हिम, हीरा, हुक्म, हुलास, हेतु, हैजा, होंठ, होटल, होश इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।
- आलस्य, आचार, आईना, आचरण, आखेट, आभार, आलू, आवेश, आविर्भाव, आश्रम, आश्वासन, आसन, आषाढ़, आस्वादन, आहार आसव, आशीर्वाद, आकाश, आयोग, आटा, आमंत्रण, आक्रमण, आरोप, आयात, आयोजन, आरोपण, आलोक, आवागमन, आविष्कार इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।
- रकम, रक्षा, रंग, रगड़, रचना, रज्जू, रसद, रफ्तार, रसना, रस्म, राख, रामायण, राय, रास, राह, राहत, रियासत, रियायत, रिपोर्ट, रिश्वत, रिमझिम, रीझ, रीढ़, रुकावट, रेखा, रेल, रोक, रौनक इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

20. **निम्नलिखित में से स्त्रीलिंग शब्द को चुनिए-**
(a) धुआँ (b) संध्या
(c) भत्ता (d) धावा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

संध्या स्त्रीलिंग है, शेष पुल्लिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- संतान, सम्पदा, संसद, सँभाल, संवेदना, संस्कृत (भाषा), संस्था, सजा, सजधज, सजावट, सड़क, सत्ता, सनक, सनद, सभ्यता, समझ, समस्या, सरसों, सरकार, सराय, सलामत, सल्तनत, ससुराल, साँझ, साध, साँस, साजिश, सिफारिश, सीक, सीध, सीमा, सुगन्ध, सुध, सुधा, सुरंग, सुलह, सुविधा, सुबह, सूजन, सूझ, सूरत, सेज, सेंध, सेना, सेवा, सेहत, सौगन्ध, सौगात, सौंफ, स्थापना इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

21. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

(a) हाथी (b) मोती

(c) पानी (d) नकेल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

नकेल स्त्रीलिंग है, जबकि हाथी, मोती तथा पानी पुल्लिंग शब्द हैं।

22. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

(a) झुरमुट (b) अन्त्येष्टि

(c) इच्छा (d) निराशा

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

झुरमुट स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग है, शेष स्त्रीलिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- झंझा, झंझावत, झकझोर, झकोर, झाड़ (झाड़ी), झंखाड़, झींगुर, झुण्ड, झुकाव तथा झूमर पुल्लिंग शब्द हैं।
- झंकार, झंझट, झख, झिझक, झड़प, झपक, झपट, झपास, झरझर, झकझक, झलमल, झाड़फूंक, झाड़, झाँझ, झाँझर, झाँप, झाड़न, झालर, झिड़क, झील, झूम इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।
- अँगड़ाई, अँतड़ी, अकड़, अक्ल, अड़चन, अदालत, अप्सरा, अपेक्षा, अपील, अफीम, अभिधा, अभीप्सा, अवज्ञा, अहिंसा, अरहर, अवस्था स्त्रीलिंग शब्द हैं।
- इंच, इन्द्रिय, इच्छा, इजाजत, इज्जत, इमारत, ईंट, ईद, ईख, ईर्ष्या स्त्रीलिंग शब्द हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

(a) उत्साह (b) चक्रव्यूह

(c) मृत्यु (d) संकल्प

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

मृत्यु स्त्रीलिंग शब्द है, शेष पुल्लिंग हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मंजिल, मँझधार, मन्त्रणा, मंशा, मचान, मजाल, मज्जा, मखमल, मटक, मणि, ममता, मरम्मत, मर्यादा, मलमल, मशाल, मशीन, मस्जिद, महक, महफिल, महिमा, माँग, माता, मात्रा, माया, माप, माला, मिठास, मिर्च, मिलावट, मीनार, मुद्रा, मुराद, मुलाकात, मुठभेड़, मुस्कान, मुसीबत, मुस्कराहट, मुहब्बत, मुद्दत, मुहर, मूँग, मूँछ, मूर्खता, मेखला, मेहनत, मैना, मैल, मौज, मौत इत्यादि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

24. निम्नलिखित शब्दों में से एक स्त्रीलिंग शब्द है -

(a) डोर (b) रस्सा

(c) धागा (d) सूत

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

डोर एक स्त्रीलिंग शब्द है तथा अन्य सभी धागा, रस्सा तथा सूत पुल्लिंग शब्द हैं।

25. निम्नलिखित शब्दों में से एक स्त्रीलिंग है -

(a) दूध (b) मक्खन

(c) मट्ठा (d) छाछ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

छाछ शब्द स्त्रीलिंग है। दूध, मट्ठा तथा मक्खन शब्द पुल्लिंग है।

26. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

(a) सुबह (b) दोपहर

(c) साँझ (d) दिन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

दिन स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग शब्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- दंगल, दम्भ, दंश, दबाव, दम, दमन, दर्प, दल, दलन, दलबल, दलाल, दस्त, दस्यु, दालान, दाद, दानपत्र, दामन, दाय, दारू, दाह, दिखावा, दिवाला, दियारा, दीया, दुःख, दुराव, दुर्ग, दुलार, दुशाला, दृग, दौर, दौरा, दौरान, द्वन्द्व, द्वारा, द्वीप, द्वेष इत्यादि पुल्लिंग शब्द हैं।

27. निम्नलिखित में कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?

(a) पानी (b) मानी

(c) कहानी (d) रानी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

पानी स्त्रीलिंग नहीं, बल्कि पुल्लिंग शब्द है। द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुल्लिंग की श्रेणी में आती हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप चाय, स्याही, शराब इत्यादि स्त्रीलिंग श्रेणी में आती हैं।

28. निम्नलिखित शब्दों में कौन स्त्रीलिंग नहीं है?

(a) रोटी (b) पूड़ी

(c) पानी (d) नदी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. 'ठाकुर' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?

(a) ठकुरानी (b) ठकुराइन
(c) ठकुरिन (d) ठाकुरी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'ठाकुर' शब्द का स्त्रीलिंग 'ठकुराइन' होता है।

30. 'कवि' का स्त्रीलिंग है-

(a) कविइत्री (b) कवित्री
(c) कवयित्री (d) कवियित्री

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कवि' का स्त्रीलिंग 'कवयित्री' होता है।

31. कवि का स्त्रीलिंग होगा-

(a) कवियत्री (b) कवियित्री
(c) कवयित्री (d) कवियत्रि

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित युग्मों में से एक लिंग की दृष्टि से शुद्ध है -

(a) सम्राट - सम्राटिनी (b) वीरांगने - वीरांगना
(c) गोप - गोपिनी (d) सुलोचन - सुलोचना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

लिंग की दृष्टि से विकल्प (d) युग्म शुद्ध है। अन्य शुद्ध युग्म हैं- सम्राट-सम्राज्ञी, वीर-वीरांगना, गोप-गोपी।

33. 'ऋषि' का स्त्रीलिंग है-

(a) ऋषिणी (b) ऋषि पत्नी
(c) ऋषिका (d) ऋषी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'ऋषि' का स्त्रीलिंग 'ऋषिका' है।

34. दिये गये विकल्पों में से 'सम्राट' शब्द का स्त्रीलिंग छाँटिये -

(a) सम्राटी (b) समराटिन
(c) सम्राज्ञी (d) स्त्री-सम्राट्

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'सम्राट' का स्त्रीलिंग 'सम्राज्ञी' होता है। शेष विकल्प असंगत हैं।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द है, जो सदैव स्त्रीलिंग से प्रयुक्त होता है?

(a) पक्षी (b) बाज
(c) मकड़ी (d) गेंडा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

कुछ प्राणी स्त्री रूप में जाने जाते हैं। जैसे- मक्खी, मछली, कोयल, चिड़िया, चील, मकड़ी आदि। इन्हें नित्य स्त्रीलिंग कहते हैं। यदि इनसे पुल्लिंग बनाना हो, तो इनसे पहले 'नर' लगाया जाता है।

36. 'युवा' शब्द का लिंग परिवर्तित करने के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही शब्द छाँटिये -

(a) युवी (b) युवराज्ञी
(c) युवती (d) युवराज

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'युवा' पुल्लिंग शब्द है। इसका स्त्रीलिंग शब्द 'युवती' होता है। अतः 'युवा' शब्द का लिंग परिवर्तन करने पर 'युवती' होगा।

37. निम्नलिखित शब्दों में किस एक का लिंग परिवर्तन हिन्दी भाषा में प्रचलित नहीं है?

(a) चाचा (b) बहन
(c) कोयल (d) भैंसा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी भाषा में कोयल का लिंग परिवर्तन प्रचलित नहीं है। कोयल शब्द सदा स्त्रीलिंग में होता है, किन्तु लिंग परिवर्तित करते समय आगे नर या मादा जोड़ दिया जाता है। **जैसे—**नर कौआ-मादा कौआ, नर कोयल-मादा कोयल। शेष में लिंग परिवर्तन होता है। जैसे- चाचा-चाची, बहन-भाई, भैंसा-भैंस इत्यादि।

38. अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग निर्णय का आधार है—

(a) उनके साथ प्रयुक्त क्रिया (b) उनके साथ प्रयुक्त विशेषण
(c) उनके साथ प्रयुक्त अव्यय (d) ए और बी दोनों सही हैं

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय सरल है, किन्तु अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है। कुछ अप्राणिवाचक सदैव पुल्लिंग रहते हैं, जैसे-**पर्वत—**हिमालय, सतपुड़ा। कुछ सदैव स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होंगे, जैसे- **नदियाँ—**गंगा, यमुना, कावेरी। अप्राणिवाचक शब्द के साथ प्रयुक्त क्रिया के साथ उसके लिंग का निर्णय कर सकते हैं, **जैसे-** यमुना बहती है। बहना क्रिया है और इससे यमुना का लिंग निर्धारण किया जा सकता है। इसी प्रकार विशेषण से भी लिंग निर्धारण हो सकता है। **जैसे-**

अच्छी गुड़िया। 'अच्छी' विशेषण के माध्यम से निर्धारित किया जा सकता है कि गुड़िया स्त्रीलिंग है। 'अव्यय' शब्द लिंग परिवर्तन में बदलते नहीं हैं। अतः इनके द्वारा लिंग निर्धारण नहीं किया जा सकता है।

39. क्रिया के किस रूप में कर्ता के अनुसार लिंग परिवर्तन नहीं होता है?

(a) वर्तमानकालिक रूप में (b) भविष्यकालिक रूप में
(c) भूतकालिक रूप में (d) आज्ञार्थक रूप में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणि प्रयोग होता है। जैसे-सीता ने पत्र लिखा, इसमें क्रिया के अनुसार लिंग परिवर्तन हुआ है, न कि कर्ता के अनुसार। इसमें क्रिया भूतकालिक रूप में है।

❑ कारक

1. आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के मत से हिन्दी में कितने कारक हैं?

(a) 6 (b) 7
(c) 8 (d) 5

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने किशोरीदास वाजपेयी ग्रन्थावली वैल्युम-I में लिखा है, हिन्दी में विभक्तियों की संख्या बिल्कुल कम है। 'ने', 'को', 'से', 'का', ('के'-'की') 'में' और 'पर'। विभक्तियों से 'कारक' आदि का बोध होता है। यदि ये विभक्तियाँ न हों, तो संज्ञा मात्र से कुछ काम न चले। कारक का लक्षण बहुत स्पष्ट है-क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे 'कारक' कहते हैं। इस लक्षण के अनुसार, कारक छह हैं, जिन्हें कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण कहते हैं। हिन्दी व्याकरणकारों ने आठ कारक लिखे हैं। सम्बन्ध तथा सम्बोधन को भी उन्होंने 'कारक' समझ लिया है। आप लक्षण पर उतारकर देखें, सम्बन्ध तथा सम्बोधन कारक नहीं हैं। उनका क्रिया से सम्बन्ध नहीं है।

2. कारक के भेद हैं-

(a) पाँच (b) छः
(c) सात (d) आठ

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गयी है-कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण तथा सम्बोधन, जबकि संस्कृत साहित्य में छः कारक माने जाते हैं जिसमें षष्ठी और सम्बोधन की गणना नहीं होती है।

3. कर्मकारक के लिए प्रयुक्त होने वाला चिह्न है—

(a) ने (b) के लिए
(c) से (d) को

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

किसी वाक्य में प्रयोग किए गए पदार्थों में जिसको कर्ता सबसे अधिक चाहता है उसे कर्म कारक कहते हैं। पाणिनि ने कर्म कारक की परिभाषा इस प्रकार दी है 'जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया का फल समाप्त होता है, उसे कर्म कहते हैं।' संस्कृत में सम्बोधन सहित 8 विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। उनके नाम और चिह्न इस प्रकार हैं (षष्ठी को कारक नहीं माना जाता है। सम्बोधन प्रथमा का ही भेद है)—

विभक्ति	कारक	चिह्न
1. प्रथमा	कर्ता	ने
2. द्वितीया	कर्म	को
3. तृतीया	करण	से, के द्वारा
4. चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
5. पंचमी	अपादान	से (अलग होने की स्थिति में)
6. षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, ना, ने, नी, रा, रे, री,
7. सप्तमी	अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अये, भोः हो, अरे

4. कर्मकारक की विभक्ति है -

(a) पर (b) ने
(c) को (d) से

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. ''दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा'' इस वाक्य में कौन-सा पद कारक बनने की सबसे कम योग्यता रखता है?

(a) राम (b) रावण
(c) दशरथ (d) पुत्र

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

कर्ता जिस साधन या माध्यम से कार्य करता है, उस साधन या माध्यम को करण कारक कहते हैं। कभी-कभी 'से' या 'के द्वारा' विभक्तियों के बिना भी करण कारक का प्रयोग होता है। ''दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा'' इस वाक्य में कारक बनने का सबसे कम गुण पद 'राम' है, क्योंकि दशरथ के पुत्र 'राम' ही हैं। इस वाक्य में संज्ञा का प्रयोग दो बार हुआ है, 'दशरथ के पुत्र' और 'राम'। अतः 'दशरथ के पुत्र' पद के प्रयोग से ये सिद्ध होता है कि 'राम' पद का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

6. **'उसने उसे छल से पराजित किया' में छल से में कौन-सा कारक है?**

(a) कर्त्ता (b) करण
(c) अपादान (d) कर्म

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य सम्पन्न हो, वह करण कारक कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में 'छल से' कार्य सम्पन्न हो रहा है। अतः यहाँ 'करण कारक' है।

7. **'करण कारक' किस वाक्य में है?**

(a) राम को फल दो
(b) वह कलम से लिखता है
(c) यह राम की पुस्तक है
(d) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में 'करण कारक' है। जिस वाक्य में क्रिया के सम्बन्ध का बोध होता है, इसे 'करण कारक' कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। प्रस्तुत वाक्य में लिखने का कार्य 'कलम से' हो रहा है। अतः यहाँ 'करण कारक' है।

8. **निम्नलिखित वाक्यों में से एक में करण कारक के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है -**

(a) पैरों से चलना यात्रा, प्राणों से चलना जीवन, समुदाय से चलना समाज तथा देश और काल से चलना इतिहास कहलाता है।
(b) आकाश से गिरी एक बूँद कहीं मोती, कहीं विष तो कहीं कीचड़ बनी।
(c) रेल से उतरा मुसाफिर ईश्वरचंद्र विद्यासागर को कुली समझ बैठा।
(d) पेड़ से गिरता सेब न्यूटन के द्वारा स्थापित गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत का आधार बना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में करण कारक का प्रयोग हुआ है। अन्य विकल्पों में अपादान कारक का प्रयोग हुआ है।

9. **'उससे अच्छे तो आप हैं' में कौन-सा कारक है?**

(a) अधिकरण (b) अपादान
(c) करण (d) सम्बोधन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाय, वह अपादान कारक कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में 'उससे' और 'आप' दोनों का तुलनात्मक होना अलग रूप है। अतः यह वाक्य 'अपादान कारक' होगा। माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने भी अपनी उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) अर्थात् 'अपादान' माना है।

10. **निम्नलिखित वाक्यों में से अपादान परसर्ग से युक्त वाक्य है-**

(a) हम कान से सुनते हैं।
(b) मोहन से उठा नहीं जाता।
(c) राम ने अपने पुत्र से नाता तोड़ लिया।
(d) रावण राम के बाण से मारा गया।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017उत्तर—(c)

प्रस्तुत वाक्य में 'राम' का 'पुत्र' से अलग होने का अर्थ प्रकट करता है। अतः इस वाक्य में अपादान परसर्ग है। विकल्प (a) तथा (d) में करण परसर्ग है। ज्ञात हो कि 'परसर्ग' को 'कारक' भी कहते हैं।

11. **'पेड़ से पत्ते गिरते हैं' में कारक है—**

(a) कर्ता कारक (b) अपादान कारक
(c) करण कारक (d) सम्बन्ध कारक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

जब संज्ञा जिस रूप में अलगाव की स्थिति होती है, तो अपादान कारक होता है। पेड़ से पत्ते का गिरना अलगाव की स्थिति प्रदर्शित करता है। अतः यह पंचमी विभक्ति का अपादान कारक है। इसका चिह्न 'से' है।

12. **'अपादान कारक' किस वाक्य में है?**

(a) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं
(b) धोबी को धुलने के लिए कपड़े दो
(c) उसकी गाय सुन्दर है
(d) वह फल खाता है

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **'वह घर से बाहर गया' - इस वाक्य में 'से' कौन-सा कारक है?**

(a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) अपादान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

प्रस्तुत वाक्य से घर से अलग होने का प्रतीक है। अतः इस अर्थ में यहाँ अपादान कारक होगा।

14. 'मेरे घर से आपका, घर पाँच किमी. दूर है' इस वाक्य में 'घर से' में कौन-सा कारक है?

(a) कर्म (b) करण

(c) सम्बन्ध (d) अपादान

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(d)

संज्ञा के जिस रूप से अलगाव का बोध हो उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है। 'मेरे घर से आपका, घर पाँच किमी. दूर है', में एक घर के दूसरे घर की दूरी या अलगाव की स्थिति है।

15. 'वह कार मेरी है' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

(a) करण (b) सम्बन्ध

(c) सम्प्रदान (d) अधिकरण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का सम्बन्ध दूसरी वस्तु से जाना जाये, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। प्रस्तुत वाक्य में 'कार' का सम्बन्ध 'मुझसे' (मेरी) है। अतः यहाँ सम्बन्ध कारक है।

16. क्रिया का आधार सूचित करने वाला कारक है -

(a) अपादान कारक (b) सम्बन्ध कारक

(c) अधिकरण कारक (d) सम्प्रदान कारक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

क्रिया का आधार सूचित करने वाला कारक 'अधिकरण कारक' कहलाता है। इसकी विभक्ति के रूप में 'पर' तथा 'में' का प्रयोग किया जाता है।

17. 'तोता डाल पर बैठा है' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

(a) करण (b) सम्बन्ध

(c) अधिकरण (d) अपादान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। अतः प्रस्तुत वाक्य में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है।

18. निम्नलिखित वाक्यों में से एक में करण कारण के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है–

(a) लड़का दर्द के मारे छटपटाता रहा

(b) भोजन के निमित्त पधारिये

(c) सिंह वन में या गुफा में रहते हैं

(d) सरकार गरीबों के वास्ते कई योजनाएँ चला रही है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर–(a)

विकल्प (a) में करण कारक के विभक्ति चिह्न का प्रयोग हुआ है। विकल्प (b) में सम्बन्ध कारक तथा विकल्प (c) में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है। विकल्प (d) में सम्प्रदान कारक का प्रयोग हुआ है।

❑ विराम चिह्न

1. 'सुख-दुःख' के बीच लगने वाला (-) चिह्न है–

(a) निर्देशक चिह्न (b) योजक चिह्न

(c) विवरण चिह्न (d) अपूर्ण विराम

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(b)

सुख-दुःख के बीच लगने वाला चिह्न योजक चिह्न (-) है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा अल्पविराम चिह्न है?

(a) (.) (b) (;)

(c) (,) (d) (।)

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

वाक्यों तथा शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने तथा किसी विषय-प्रसंग को भिन्न-भिन्न वर्गों में बांटने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है जो उच्चारण के समय प्रयोग करने से उस वाक्य अथवा शब्द का अर्थ स्पष्ट होता है। मुख्य विराम चिह्न इस प्रकार हैं-

विराम	चिह्न
पूर्ण विराम	।
अल्प विराम	,
अर्ध विराम	;
योजक चिह्न	–
प्रश्नवाचक चिह्न	?
विस्मयादिबोधक चिह्न	!
उद्धरण चिह्न	" "

3. मनोविकार सूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अंत में किस चिह्न का प्रयोग होता है?

(a) विस्मयबोधक (b) प्रश्नवाचक

(c) अर्धविराम (d) अल्पविराम

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

मनोविकार सूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अंत में विस्मयबोधक चिह्न का प्रयोग होता है। यह चिह्न, आश्चर्य, खुशी, सम्बोधन व्यक्त करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

4. जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, तब उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर कौन-सा विराम चिह्न लगाकर उसके ऊपर लिखा जाता है?

(a) अपूर्णसूचक विराम चिह्न (b) अर्ध विराम चिह्न

(c) अल्प विराम चिह्न (d) हंसपद विराम चिह्न

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(d)

जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, तब उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर हंसपद विराम चिह्न (^) लगाकर उसके ऊपर लिखा जाता है।

❑ अव्यय

1. 'अथवा' व्याकरण की दृष्टि है—

(a) सन्धि (b) उपसर्ग

(c) अन्वाय (d) अव्यय

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

जिन पदों या अव्ययों द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। इसके चार उपभेद हैं-

क. संयोजक-और, व, एवं, तथा।

ख. विभाजक- या, वा, अथवा, किंवा, कि, न कि, नहीं तो।

ग. विरोधदर्शक-पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन्, बल्कि।

घ. परिणामदर्शक-इसलिए, सो, अतः, अतएव।

2. 'भला मैं क्या कर सकता हूँ' वाक्य में 'भला' शब्द है—

(a) संज्ञा (b) सर्वनाम

(c) विशेषण (d) अव्यय

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

अव्यय वह शब्द होता है जिस पर लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है। प्रस्तुत वाक्य में 'भला' शब्द अव्यय है, क्योंकि इस पर लिंग, वचन, कारक आदि का प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

3. निम्नलिखित में से कृदन्त अव्यय का एक प्रकार नहीं है-

(a) पूर्वकालिक कृदन्त (b) भूतकालिक कृदन्त

(c) तात्कालिक कृदन्त (d) पूर्ण क्रियाद्योतक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अविकारी कृदन्त (अव्यय) चार प्रकार के होते हैं- पूर्वकालिक कृदन्त, तात्कालिक कृदन्त, अपूर्ण क्रियाद्योतक तथा पूर्ण क्रियाद्योतक। भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग सामान्यतः विशेषण की तरह होता है।

❑ काल

1. 'क्रिया के उस रूपान्तर को क्या कहते हैं जिससे उसके कार्य-व्यापार के समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो?

(a) संज्ञा (b) परिमाणबोधक विशेषण

(c) अव्यय (d) काल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'क्रिया' के उस रूपान्तर को 'काल' कहते हैं जिससे उसके कार्य-व्यापार के समय उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है। काल के तीन प्रकार होते हैं—वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यत् काल।

❑ वाच्य

1. 'मोहन से चला नहीं जाता' वाक्य में कौन-सा वाच्य है?

(a) कर्मवाच्य (b) भाववाच्य

(c) कर्तृवाच्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

भाववाच्य, क्रिया के उस रूपान्तर को कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो। जैसे-मोहन से चला नहीं जाता, मुझसे बैठा नहीं जाता। इन वाक्यों में कर्ता और कर्म के स्थान पर क्रियाएँ ही अधिक प्रधान हो गयी हैं।

2. 'मरम बचन जब सीता बोला' पँक्ति का प्रयोग हुआ है-

(a) कर्मवाच्य (b) कर्तृवाच्य

(c) गलत वाक्य (d) भाववाच्य

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

क्रिया के विशुद्ध रूप के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने जायसी ग्रन्थावली की भूमिका में लिखा है ''पद्य में कभी-कभी वर्तमान काल के रूप के स्थान पर संक्षेप के लिए धातु का रूप रख दिया जाता है, **जैसे—** (क) हौं अन्धा जेहि सूझ न पीठी। (सूझ = सूझती है) (ख) बिनु गय बिरिछ निपात जिमि ठाढ़-ठाढ़ पै सूख। (सूख = सूखता है)''। उक्ति-व्यक्ति प्रकरण में क्रिया के ऐसे शुद्ध रूपों की बहुतायत है। वहाँ पद्य लिखते समय क्रिया-रूप को संक्षिप्त करना आवश्यक न था। शुक्ल जी ने एक रोचक उदाहरण तुलसीदास जी से दिया-'मरम बचन जब सीता बोला'। यहाँ बोला वास्तव में बोल है। छन्द की दृष्टि से संक्षिप्त न होकर और विस्तृत हो गया है। ऐसे पदों का एक उदाहरण जायसी से दिया है—'देखि चरित पदमावति हँसा। शुक्ल जी कहते हैं ''बोला और हँसा वास्तव में 'बोल' और 'हँस' हैं, जो छन्द की दृष्टि से दीर्घान्त कर दिए गए हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि संक्षिप्त रूपों का व्यवहार दोनों लिंगों में समान रूप से हो सकता है।'' तुलसीदास और जायसी कर्मवाच्य प्रयोगों से परिचित थे और रामचरितमानस में ऐसे रूप भरे पड़े हैं। सम्भव है बोला का सम्बन्ध मरम बचन से हो, किन्तु जायसी ने हँसा का प्रयोग निस्सन्देह क्रिया का विशुद्ध रूप ध्यान में रखकर किया है। प्रस्तुत वाक्य में क्रिया में कर्म की प्रधानता है। अतः स्पष्ट है कि यह वाक्य कर्मवाच्य है।

❑ प्रत्यय

1. निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द तथा उसमें लगे प्रत्यय का एक युग्म गलत है, वह है -

(a) सुन्दरता - सुन्दर + ता (b) कठिनाई - कठिन + आई
(c) बचपन - बच + पन (d) पाँचवाँ - पाँच + वाँ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'पन' कोई प्रत्यय नहीं है। अतः विकल्प (c) में मूल शब्द में लगा प्रत्यय गलत है। शेष विकल्प में लगे प्रत्यय सही हैं।

2. 'प्रामाणिक' शब्द के मूल शब्द और प्रत्यय का सही अलगाव है -

(a) प्रमाणि + क (b) प्रमाण + इक
(c) प्रा : माणिक (d) प्रमा + आणिक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

मूल शब्द 'प्रमाण' में 'इक' प्रत्यय लगकर 'प्रामाणिक' शब्द बना है।

3. निम्नलिखित में से किस शब्द में तद्धित प्रत्यय लगा है?

(a) पठनीय (b) कृपालु
(c) गंतव्य (d) हँसोड़

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

'कृपालु' में गुणवाचक तद्धित प्रत्यय है। इसमें मूल शब्द 'कृपा' में 'आलु' प्रत्यय लगा है। शेष में कृत् प्रत्यय है।

4. 'पाण्डव' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

(a) कृदन्त (b) तद्धित
(c) स्त्री (d) प्रत्यय नहीं है

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को 'तद्धित' प्रत्यय कहा जाता है। 'पाण्डु' में 'य' तद्धित-प्रत्यय लगाने से पाण्डव बना है। व्यक्ति वाचक से अपत्यवाचक संज्ञाएँ किसी नाम के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़ने से बनती हैं। जैसे—वसुदेव-वासुदेव ('अ' तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), कुन्ती-कौन्तेय ('एय' तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), कुरु - कौरव ('अ' तद्धित-प्रत्यय जोड़कर), पृथा-पार्थ ('अ' तद्धित-प्रत्यय जोड़कर)।

5. 'गौरव' शब्द किस तद्धित प्रत्यय के योग से बना है?

(a) अ (b) इक
(c) आयन (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'गुरु' विशेषण में 'अ' तद्धित प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञा 'गौरव' बना है।

6. 'लौकिक' शब्द में प्रत्यय है-

(a) लोइक (b) किक
(c) अक (d) इक

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'लौकिक' शब्द में 'इक' प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत 'औ' का वृद्धि रूप ग्रहण कर रहा है।

7. 'ई' प्रत्यय किस शब्द में नहीं है?

(a) तेली (b) चमेली
(c) माली (d) अलबेली

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'चमेली' शब्द में 'ई' प्रत्यय नहीं है। शेष शब्दों में 'ई' प्रत्यय है।

8. निम्न में से प्रत्यय रहित शब्द है-

(a) दर्शनीय (b) दुर्गुण
(c) भिक्षुक (d) कर्त्तव्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'दुर्गुण' प्रत्यय रहित शब्द है, क्योंकि दुर्गुण में दुर् उपसर्ग है। दर्शनीय में 'दृश' धातु 'अनीय' प्रत्यय है। भिक्षुक में 'भिक्ष' धातु 'उक' प्रत्यय है। कर्त्तव्य में 'कृ' धातु 'तव्य' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

9. इनमें से ....कृदन्त है।

(a) मिठाई (b) लड़ाई
(c) दवाई (d) ताई

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

क्रिया (धातु) के पीछे लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दों की रचना करने वाले प्रत्ययों को 'कृत' प्रत्यय कहते हैं और इनके मेल से बने शब्दों को 'कृदन्त' शब्द कहते हैं। 'लड़ाई' भाववाचक संज्ञा है, जिसमें 'लड़' धातु में 'कृत' प्रत्यय 'आई' लगा। इसी प्रकार 'जुताई', 'सुनाई', 'पढ़ाई' में क्रमशः 'जुत','सुन' तथा 'पढ़' धातु में 'आई' 'कृत्' प्रत्यय लगा है।

10. 'कृत' प्रत्यय लगता है-

(a) क्रिया के अन्त में (b) संज्ञा के अन्त में
(c) सर्वनाम के अन्त में (d) विशेषण के अन्त में

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. **'प्रत्यय' रहित शब्द बताइए-**

(a) मर्मज्ञ (b) वैज्ञानिक

(c) कृपालु (d) अनुवाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रत्यय रहित शब्द 'अनुवाद' है। अनुवाद शब्द में 'अनु' उपसर्ग है। 'अनु' का अभिप्राय है क्रम, पश्चात, समानता। 'मर्मज्ञ' में 'ज्ञ' (जानने वाला अर्थ में) प्रत्यय है। कृपालु में 'कृप' धातु 'आलु' (वाला या युक्त अर्थ में) प्रत्यय के योग से 'कृपालु' शब्द बना है। वैज्ञानिक में 'इक' प्रत्यय लगा है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) अर्थात् मर्मज्ञ दिया है, जो कि गलत है।

12. **कौन देशज प्रत्यय का उदाहरण नहीं है?**

(a) फर्राटा (b) अड़ियल

(c) उच्चतर (d) घुमक्कड़

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

जनसाधारण की भाषा में विकसित तथा प्रचलित ऐसे शब्दों को देशज शब्द कहते हैं, जिनका स्रोत ज्ञात न हो, अर्थात् जिनकी उत्पत्ति न तो संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश स्रोत से हुई हो और न ही किसी विदेशी स्रोत से। जैसे-खिड़की, घपला, पेड़, चूहा, पेट, खाँसी, थैला। कुछ देशज शब्द अनुकरणात्मक भी होते हैं, जैसे-म्याऊँ-म्याऊँ, चिपचिपा, चूँ-चूँ, पिलपिला, फटफटिया, फर्राटा, अड़ियल, मरियल, सड़ियल, घुमक्कड़, भुलक्कड़ पियक्कड़ इत्यादि। उच्चतर, संस्कृत भाषा का विशेषण है। अतः उच्चतर तत्सम शब्द है।

❑ उपसर्ग

1. **निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं है?**

(a) मिलान (b) सुपुत्र

(c) अधर्म (d) सुकर्म

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'मिलान' शब्द में उपसर्ग नहीं है। इसमें 'मिल' शब्द में 'आन' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है, जबकि सुपुत्र में 'सु' उपसर्ग, अधर्म में 'अ' उपसर्ग तथा सुकर्म में 'सु' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है।

2. **'दुर्व्यवहार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-**

(a) दुः (b) वि

(c) अब (d) उपर्युक्त सभी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(*)

'दुर्व्यवहार' शब्द में 'दुर्' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। दुर्व्यवहार का विच्छेद दुर् + वि + अव + हार होता है।

3. **निम्नलिखित में से किस शब्द में 'उपसर्ग' है?**

(a) दशक (b) पराजय

(c) लालिमा (d) कारीगर

T.G.T. परीक्षा, 2005,2010

उत्तर—(b)

पराजय में 'परा' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। 'परा' उपसर्ग का अर्थ है-परे, पीछे अथवा उल्टा। पराजय का तात्पर्य है- हार। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

4. **'प्रत्युत्पन्न' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है -**

(a) प्र (b) प्रति

(c) प्रत्यु (d) प्रत्युत्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'प्रत्युत्पन्न' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग है। इसका विच्छेद प्रति + उद् + पन्न (जो ठीक समय पर प्रस्तुत हो जाय) है।

5. **'अनंग' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?**

(a) अन (b) अन्

(c) अ (d) अनन्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'अनंग' शब्द में 'अन्' उपसर्ग है। इसका विच्छेद अन् + अंग (कामदेव) है।

6. **निम्नलिखित में किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?**

(a) भरपूर (b) भरसक

(c) भरतार (d) भरपेट

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'भरतार' शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि भरपूर, भरसक, भरपेट में 'भर' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। 'भर' उपसर्ग का अर्थ 'पूरा' या 'भरा हुआ' होता है।

7. **किस शब्द में 'आ' उपसर्ग नहीं है?**

(a) आजन्म (b) आगमन

(c) आकर्षक (d) आदरणीया

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

आदरणीया शब्द में 'आ' उपसर्ग नहीं है, जबकि आजन्म, आगमन तथा आकर्षक शब्दों में 'आ' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर है।

8. निम्नलिखित शब्दों में से एक में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(a) कुख्यात (b) कुचाल

(c) कुलीन (d) कुयोग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

'कुलीन' शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि कुख्यात (कु + ख्यात), कुचाल (कु + चाल) तथा कुयोग (कु + योग) में 'कु' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

9. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं है?

(a) प्रश्न (b) प्रतिष्ठा

(c) अधिकार (d) संस्कार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'प्रश्न' शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, जबकि प्रतिष्ठा (प्रति + स्था) में 'प्रति' उपसर्ग, अधिकार (अधि + कार) में 'अधि' उपसर्ग तथा संस्कार (सम् + कार) में 'सम्' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

10. 'संस्कार' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?

(a) सम् (b) सन्

(c) सम्स (d) सन्स

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'संस्कार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। सम् का अर्थ है भली प्रकार उत्कृष्ट, साथ या पूर्ण संस्कार, पूर्णतया, संयोग, दोष दूर करना, सुधार, मन में पड़ने वाला प्रभाव, धार्मिक रीति-रिवाज आदि।

11. 'सम्' उपसर्ग से निष्पन्न शब्द कौन-सा है

(a) संस्कार (b) सामना

(c) समझौता (d) स्वयं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'उपसर्ग' से सम्बन्धित सूत्र है-

(a) प्रादयः (b) परश्च

(c) गतिश्च (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'प्राऽदयोऽसत्त्वे निपतसंज्ञा भवन्ति' उपसर्ग का सूत्र है। उपसर्ग गतिसंज्ञक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

13. 'उच्चारण' शब्द में उपसर्ग है—

(a) उ (b) उच्

(c) उत् (d) उच्च

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उच्चारण का सन्धि विच्छेद 'उत् + चारण' होता है। अतः उच्चारण में 'उत्', उपसर्ग है, किन्तु वास्तव में 'उत्', 'उद्' का सन्धि रूप है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है -

(a) निगाह (b) निवाला

(c) निढाल (d) निशाचर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

निढाल शब्द में 'नि' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है। अन्य शब्द उपसर्ग रहित हैं।

15. किस शब्द में 'अ' उपसर्ग है?

(a) अभिमान (b) अनजान

(c) अभाव (d) अवमान

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

अभाव में 'अ' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है, जबकि अभिमान में अभि, अनजान में 'अन' तथा अवमान में 'अव' उपसर्ग का प्रयोग किया गया है।

❑ पर्यायवाची

1. 'शाखामृग' शब्द का पर्यायवाची है -

(a) हिरण (b) वानर

(c) तोता (d) भौंरा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'शाखामृग', कपि, मर्कट, कपीश, हरि, कीश इत्यादि वानर के पर्यायवाची हैं।

2. 'सौदामिनी' का पर्यायवाची है -

(a) बिबुध (b) शक्र

(c) क्षणप्रभा (d) आसार

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

सौदामिनी का पर्यायवाची चपला, प्रभा, विद्युत, क्षणप्रभा, तड़ित इत्यादि होता है। बिबुध, देवता का; शक्र, इन्द्र का पर्यायवाची है।

3. इनमें से 'अज्ञ' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(a) विज्ञ (b) अनभिज्ञ

(c) मूर्ख (d) मूढ़

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'विज्ञ', 'अज्ञ' का विलोम है, शेष 'अज्ञ' के पर्यायवाची हैं।

4. अधोलिखित में कौन एक 'घर' का पर्यायवाची है?

(a) अयन (b) चयन

(c) मयन (d) घरन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'घर' का पर्यायवाची गृह, सदन, अयन, निकेतन, भवन, निलय, मन्दिर, धाम इत्यादि हैं।

निर्देश (प्रश्न 5-7) : नीचे दिए गए शब्दों के विकल्पों में से एक शब्द पर्यायवाची (समानार्थी) नहीं है, उसे छाँटिये -

5. तलवार

(a) खड्ग (b) असि

(c) करगल (d) कुठार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'कुठार', तलवार का पर्यायवाची नहीं, बल्कि फरसा का पर्यायवाची है। तलवार के पर्यायवाची हैं- खड्ग, कृपाण, असि, करगल, करवाल, शमशीर आदि।

6. गंगा

(a) भागीरथी (b) सुरसरि

(c) अवतरणी (d) मंदाकिनी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अवतरणी, गंगा का पर्यायवाची नहीं है। गंगा का पर्यायवाची भागीरथी, सुरसरि, मंदाकिनी, जाह्नवी, देवनदी, देवपगा, विष्णुपदी, त्रिपथगा है।

7. इन्द्र

(a) भूपेन्द्र (b) शक्र

(c) सुरपति (d) पर्वतारि

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'भूपेन्द्र' इन्द्र का नहीं, बल्कि राजा का पर्यायवाची शब्द है। इन्द्र के पर्यायवाची हैं - सुरपति, शचिपति, देवराज, शक्र, पर्वतारि, महेन्द्र, मघवा, देवेन्द्र आदि।

8. 'कलश' का पर्याय है-

(a) जल (b) कुम्भ

(c) पात्र (d) उपस्कर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

कलश का पर्याय कुम्भ, घट, घड़ा तथा गगरा होता है। पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, तोय, पय, जीवन, आब, उदक इत्यादि जल के पर्याय हैं।

9. 'सरस्वती' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें गलत कौन है?

(a) भारती (b) शारदा

(c) भामा (d) वागीश्वरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सरस्वती के पर्याय भारती, शारदा, वागीश्वरी, वाणी, गिरा, भाषा, ब्राह्मी, वीणापाणि, वागीश, महाश्वेता तथा निधात्री हैं, जबकि भामा स्त्री का पर्याय है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- लक्ष्मी के पर्यायवाची हैं-पद्मा, रमा, इंदिरा, कमला, पद्मासना, समुद्रजा, क्षोरोद, श्री आदि।
- पार्वती के पर्यायवाची हैं-गिरिजा, शैलसुता, अम्बिका, भवानी, गौरी, उमा, रूद्राणी, हेमवती, शैलसुता, मैनसुता, अम्बा आदि।
- सीता के पर्यायवाची हैं-वैदेही, जानकी, भूमिजा, रामप्रिया, जनकसुता आदि।

10. महाश्वेता किसका पर्यायवाची है?

(a) लक्ष्मी (b) सरस्वती

(c) पार्वती (d) सीता

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. चंद्रिका का पर्याय है-

(a) चन्द्रहास (b) रजत

(c) कौमुदी (d) स्वर्णकिरण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

चंद्रिका का पर्यायवाची, चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी, जुन्हाई, अंजोरिया आदि हैं।

12. 'वेश्या' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें त्रुटिपूर्ण कौन-सा है?

(a) गणिका (b) वारांगना

(c) कुलटा (d) रंडी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'वेश्या' के पर्याय गणिका, वारांगना, रंडी, मंगलमुखी, रामजनी, सदासुहागिन, पतुरिया इत्यादि हैं, जबकि कुलटा, स्वैरिणी, पुंश्चली, छिनाल इत्यादि व्यभिचारिणी के पर्याय हैं।

13. 'देवता' का पर्यायवाची शब्द है-

(a) अनीक (b) विबुध

(c) अलकेश (d) ज्योतिष्क

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

आदित्य, अमर्त्य, गीर्वाण, देव, अमर, सुर, विबधु, निर्जर इत्यादि 'देवता' का पर्यायवाची है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'नौका' है-

(a) तरणि (b) तरुण

(c) तरुणी (d) तरण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'नौका' का पर्यायवाची नाव, तरी, तरिणी, तरणी होता है। रामा गुप्ता की पुस्तक 'व्याकरण वाटिका' में तरणि को भी नाव के पर्यायवाची में शामिल किया गया है। तरुणी का अर्थ युवती तथा तरुण का अर्थ युवक होता है।

15. 'मोर' का पर्यायवाची इनमें से क्या है?

(a) कलापी (b) तड़ित

(c) विशिख (d) विलक्षण

T.G.T. परीक्षा, 2003

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

मोर का पर्यायवाची मयूर, शिखी, ध्वजी, नीलकण्ठ, कलापी, भुजंगारि, शिवसुतवाहन आदि हैं। तड़ित, दामिनी का, विशिख, बाण का तथा विलक्षण, पण्डित का पर्यायवाची है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्युत का पर्यायवाची है-चपला, प्रभा, बिजली, दामिनी, क्षणप्रभा, सौदामिनी आदि।
- बाण का पर्यायवाची है-इषु, शर, नाराच, शिलीमुख, आशुग आदि।
- विद्वान का पर्यायवाची है-सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषी आदि।

16. 'बसन्त' के चार पर्याय दिये गये हैं। इनमें त्रुटिपूर्ण कौन है?

(a) ऋतुपति (b) कुसुमाकार

(c) मधुमास (d) कांतार

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

बसन्त के पर्याय हैं-ऋतुपति, कुसुमाकर, मधुमास, ऋतुराज, बहार इत्यादि। कांतार, वन का पर्याय है।

17. 'स्थिर' शब्द का पर्याय है—

(a) स्थिरता (b) निश्चलता

(c) अडिग (d) दृढ़ता

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'स्थिर' शब्द का पर्यायवाची अडिग, निश्चल, दृढ़, स्थायी, स्थावर इत्यादि है।

18. 'देहधारी' शब्द पर्यायवाची है—

(a) जिह्वा का (b) जीव का

(c) जल का (d) जय का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'देहधारी' शब्द का पर्यायवाची प्राणी, जीवधारी, जीव, जीवनधारी इत्यादि है।

19. 'प्रतारक' किसका पर्यायवाची है?

(a) ठग का (b) टेक का

(c) टीका का (d) डर का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'प्रतारक' ठग का पर्यायवाची है। इसके अन्य पर्यायवाची हैं- वंचक, अड़ीमार, प्रवंचक, जालसाज इत्यादि।

20. निम्नलिखित शब्दों में से 'अर्थ' का अर्थ नहीं है -

(a) धन (b) मतलब

(c) कारण (d) विश्वास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'अर्थ' का अर्थ मतलब, धन, अभिप्राय, कारण इत्यादि होता है।

21. 'अंस' शब्द का अर्थ है -

(a) हिस्सा (b) भाग

(c) अंश (d) कन्धा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'अंस' शब्द का अर्थ 'कन्धा' होता है, जबकि 'अंश' का अर्थ हिस्सा या भाग होता है।

22. **'हिमवान्' का पर्याय है—**

(a) हिमवर्षा (b) हिम
(c) हिमाद्रि (d) हिममानव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हिमवान्' का पर्याय 'हिमाद्रि' होगा। इसके अन्य पर्याय हैं-हिमालय, हिमगिरि, गिरिराज, नगपति, नागेश इत्यादि।

23. **'उपानह्' शब्द किसका पर्यायवाची है?**

(a) जूता का (b) जोर का
(c) जादू का (d) ज्येष्ठ का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

पादुका, पदत्राण, उपानह, पनही, खड़ाऊ इत्यादि जूता का पर्यायवाची है।

24. **'ओघ' शब्द पर्यायवाची है—**

(a) ढेर का (b) ढोंग का
(c) ढीठ का (d) डेरा का

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'ओघ' शब्द का पर्यायवाची ढेर, समूह, जमाव, राशि, पुँज इत्यादि होता है।

25. **कौन-सा शब्द 'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है?**

(a) जाह्नवी (b) देवापगा
(c) सुरसरि (d) सरिता

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सरिता, गंगा का नहीं, बल्कि नदी का पर्यायवाची है। गंगा के पर्यायवाची हैं-जाह्नवी, सुरसरि, देवसरि, विष्णुपदी, देवापगा, देवनदी, त्रिपथगा, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, सुरध्वनि, नदीश्वरी, भागीरथी इत्यादि।

26. **'गंगा' का एक नाम है-**

(a) हंससुता (b) सुरसर
(c) विष्णुपदी (d) धेनुमती

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. **निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'बादल' का पर्यायवाची नहीं है?**

(a) जलद (b) नीरद
(c) वारिधि (d) मेघ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

वारिधि, बादल का नहीं, बल्कि समुद्र का पर्यायवाची है। सिन्धु, सागर, जलधि, उदधि, पारावार, नदीश, वारीश, पयोनिधि, रत्नाकर, नीरनिधि, पयोधि, तोयनिधि, जलधाम इत्यादि भी समुद्र के पर्यायवाची हैं, जबकि मेघ, नीरद, जलद, अभ्र, पयोदि, जलधर, पयोधर, वारिधर, वारिद इत्यादि बादल के पर्यायवाची हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जल के पर्यायवाची के अन्त में 'द' अक्षर जोड़ देने पर बादल का पर्यायवाची बन जाता है।
- जल के पर्यायवाची के अन्त में 'धि' अक्षर जोड़े देने पर समुद्र का पर्यायवाची बन जाता है।
- जल के पर्यायवाची के अन्त में 'ज' अक्षर जोड़ देने पर कमल का पर्यायवाची बन जाता है।

28. **इनमें से 'बादल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-**

(a) जलद (b) जलधि
(c) मेघ (d) वारिद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. **'बादल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है?**

(a) अभ्र (b) जीभूत
(c) वारिद (d) मर्कट

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

अभ्र, जीभूत, वारिद, नीरद, मेघ, पयोदि, जलधर, बलाधर, वारिधर इत्यादि बादल के पर्यायवाची हैं, जबकि मर्कट, बन्दर का पर्यायवाची है।

30. **निम्नलिखित में से ' अभ्र' का पर्यायवाची है-**

(a) रत्नाकर (b) बादल
(c) आकाश (d) पवन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b & c)

'अभ्र' बादल एवं आकाश दोनों का पर्यायवाची है।

31. **'अतिथि' का पर्यायवाची है-**

(a) अमृतफल (b) उन्नयन
(c) आगन्तुक (d) आजन्म

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'अतिथि' का पर्यायवाची है-आगन्तुक, अभ्यागत, पाहुना, गृहागत इत्यादि।

32. पर्यायवाची की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है -

(a) आकाश - पुष्कर (b) कमल - तामरस
(c) यमुना - जाह्नवी (d) कामदेव - मनोभव

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

विकल्प (c) युग्म अशुद्ध है। यमुना का पर्यायवाची जाह्नवी नहीं है, बल्कि गंगा का पर्यायवाची है। शेष युग्म सही हैं।

33. इनमें से किस शब्द के पर्यायवाची गलत हैं?

(a) कमल - जलज, पंकज, सरोज
(b) पुष्प - कुसुम, फूल, सुमन
(c) सरस्वती - गिरा, भारती, वाणी
(d) सूर्य - दिवस, याम, वासर।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

प्रस्तुत विकल्प (a), (b) तथा (c) के पर्यायवाची शब्द सही हैं, जबकि विकल्प (d) में प्रस्तुत सूर्य के पर्यायवाची गलत हैं। सूर्य के पर्यायवाची हैं- मार्तण्ड, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, रवि, मरीचि, प्रभाकर, सविता, पतंग, हंस, आदित्य, अंशुमाली इत्यादि। दिन के पर्यायवाची वासर, दिवस, दिवा, वार इत्यादि हैं।

34. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'पताका' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) झण्डा (b) निशान
(c) प्रस्तर (d) ध्वज

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(c)

झण्डा, ध्वज, निशान, ध्वजा इत्यादि 'पताका' के पर्यायवाची हैं, जबकि पाषाण, प्रस्तर, पाहन तथा अश्म पत्थर के पर्यायवाची हैं।

35. 'केतु' का पर्यायवाची है -

(a) राहु (b) नाग
(c) अंशुक (d) ध्वज

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'केतु' का पर्यायवाची 'ध्वज' है। इसके अन्य पर्यायवाची हैं- झण्डा, पताका, निशान इत्यादि, जबकि 'नाग' हाथी का पर्यायवाची है।

36. 'स्त्री' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(a) तरुणी (b) प्रमदा
(c) ललाम (d) ललना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'स्त्री' के पर्यायवाची शब्द नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी, अबला, कामिनी, भामिनी, प्रमदा, ललना, तरुणी, अंगना इत्यादि हैं। ललाम का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

37. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'स्त्री' है—

(a) अंगजा (b) अंगना
(c) आँगन (d) अंगार

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'हवा' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अनिल (b) अनल
(c) मारूत (d) पवन

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

अनिल, मारूत, पवन, वायु, समीर, वात, बयार, समीरण, मरूत, प्रकम्पन इत्यादि 'हवा' के पर्यायवाची हैं, जबकि अनल, अग्नि, पावक, दहन, वायुसखा, कृशानु, धूमकेतु, वह्नि इत्यादि 'आग' के पर्यायवाची हैं।

39. 'आकाश' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(a) गगन (b) नभ
(c) अम्बर (d) अवनि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

गगन, नभ, अम्बर, द्यौ, व्योम, अभ्र, अन्तरिक्ष, आसमान, अनन्त इत्यादि 'आकाश' के पर्यायवाची हैं, जबकि अवनि, भू, इला, भूमि, धरा, उर्वी, धरती, धरित्री, धरणी, वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, अचला, क्षिति, मही इत्यादि पृथ्वी के पर्यायवाची हैं।

निर्देश (प्रश्न 40-44 के लिए)—इन प्रश्नों में प्रत्येक में एक शब्द दिया गया है जिसके नीचे चार शब्द अंकित हैं। इनमें से एक शब्द दिए हुए शब्द का समानार्थी है। सही समानार्थी शब्द चुनिए—

40. कमल

(a) पारिजात (b) रजनी
(c) विभावरी (d) यामिनी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

पारिजात, कमल का समानार्थी शब्द है। रजनी, विभावरी तथा यामिनी रात्रि के पर्यायवाची हैं।

41. कलानिधि

(a) नीर (b) हिमाँशु

(c) अम्बु (d) आगार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा, हिमाँशु, सुधाँशु, सुधाकर, राकेश, शशि, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक इत्यादि कलानिधि के पर्यायवाची हैं।

42. तुंग

(a) उन्नत (b) प्रचण्ड

(c) नारियल (d) पुन्नांग

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

तुंग का पर्यायवाची ऊँचा, उन्नत, गगनचुम्बी, उच्च, लम्बा इत्यादि होता है। प्रचण्ड, उग्र का पर्यायवाची है।

43. शिखी

(a) शिखायुक्त (b) मयूर

(c) बुलबुल (d) बैल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

शिखी का पर्यायवाची मोर, मयूर, वर्ही, सारंग, केकी इत्यादि हैं।

44. मिलिन्द

(a) भुजंग (b) सरिता

(c) कगार (d) भ्रमर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

मिलिन्द का पर्यायवाची भौंरा, भ्रमर, अलि, षट्पद, मधुकर, द्विरेफ, मधुप इत्यादि हैं।

45. 'धूसर' किसका पर्याय है?

(a) अश्व (b) मेघ

(c) गर्दभ (d) अजा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(c)

खर, गर्दभ, रासभ, बेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन, धूसर इत्यादि गदहा के पर्यायवाची हैं।

46. 'अद्रि' शब्द का अर्थ है-

(a) दु:ख (b) गीला

(c) व्यर्थ (d) पर्वत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

'अद्रि' का पर्यायवाची है-पर्वत, पहाड़, शैल, गिरि, भूधर, अचल, महीधर, नग, भूभृत, धराधर, शृंगी इत्यादि।

47. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'एतराज' है -

(a) आफत (b) आपत्ति

(c) संकट (d) विपत्ति

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

'एतराज' का अर्थ 'आपत्ति' है। आफत, संकट तथा विपत्ति एक ही अर्थ प्रकट करते हैं।

48. 'बाण' का पर्याय है-

(a) हय (b) अर्चि

(c) उर्वी (d) आशुग

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(d)

तीर, शर, विशिख, आशुग, शिलीमुख, इषु, नाराच इत्यादि 'बाण' के पर्याय हैं। हय, घोड़ा का, अर्चि, किरण का तथा उर्वी, पृथ्वी का पर्यायवाची है।

49. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) अरविन्द (b) शतदल

(c) सरसिज (d) अमिय

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर–(d)

कमल के पर्यायवाची सरोज, जलज, पंकज, नीरज, अरविन्द, शतदल, सरसिज, अब्ज, पद्म, कंज, अम्बुज, नलिन, तामरस, वारिज, राजीव, पुण्डरीक, उत्पल, जलजात, इन्दीवर, कोकनद इत्यादि हैं, जबकि पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक इत्यादि अमृत के पर्यायवाची हैं।

50. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कमल का पर्यायवाची नहीं है?

(a) सरोज (b) जलद

(c) पंकज (d) जलजात

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. 'राजीव' शब्द का पर्याय है -

(a) तामरस (b) पारद

(c) रसाल (d) कुमुद

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

'राजीव' का पर्याय तामरस है। रसाल, आम का तथा कुमुद चाँदी का पर्यायवाची है।

52. **निम्नलिखित में घोड़ा का पर्यायवाची शब्द नहीं है-**
(a) अश्व (b) सैन्धव
(c) घोटक (d) यातुधान

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

अश्व, वाजि, हय, घोटक, सैन्धव, तुरग, तुरंग आदि घोड़ा के पर्यायवाची हैं, जबकि यातुधान, असुर, दनुज, दानव, दैत्य, निशिचर, निशाचर, रजनीचर आदि राक्षस के पर्यायवाची हैं।

53. **'तुरंग' शब्द का पर्यायवाची शब्द चुनिए—**
(a) कुरंग (b) शार्दूल
(c) वाजि (d) शश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. **'अश्व' का पर्यायवाची शब्द है—**
(a) घोटक (b) अनन्त
(c) सुरपति (d) दिनकर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **'वाजी' शब्द का पर्यायवाची है—**
(a) अश्व (b) बेसर
(c) श्रृगाल (d) किंकर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

घोड़ा, वाजी, घोटक, हय, बाजि, तुरंग, रविसुत इत्यादि अश्व के पर्यायवाची हैं। किंकर 'दास' का पर्यायवाची है।

निर्देश (प्रश्न 56-65 के लिए)— निम्न प्रश्नों में प्रत्येक में किसी सर्वाधिक उपयुक्त युग्म को चुनिए जो दिए गए शब्द का पर्यायवाची हो।

56. **अंतरिक्ष**
(a) पृथ्वी, आकाश (b) व्योम, आकाश
(c) सुरप, सिद्दपथ (d) अनन्त, गगन

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

अंतरिक्ष के पर्यायवाची व्योम, आकाश, गगन, नभ, अम्बर, अभ्र, आसमान, शून्य इत्यादि हैं।

57. **अम्बुज**
(a) कमल, शंख (b) कमला, ब्रह्मा
(c) बज्र, बेंत (d) मीन, जलकुम्भी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

अम्बुज का पर्यायवाची कमल, अरविन्द, राजीव, जलज, शंख, सरोज, पंकज, पद्म, पुण्डरीक, जलजात, नलिन इत्यादि होता है।

58. **खल**
(a) विश्वासघाती, निर्लज्ज (b) नीच, दुर्जन
(c) दुष्ट, धोखेबाज (d) खली, खरल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

खल का पर्यायवाची नीच, दुर्जन, दुष्ट, अधम, पाजी इत्यादि होता है।

59. **तृण**
(a) तुच्छ, अलप (b) घास, पत्ता
(c) तिनका, घास (d) लता, द्रुम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तिनका एवं घास तृण के पर्यायवाची हैं।

60. **क्षुद्र**
(a) कंजूस, कृपण (b) निर्धन, दरिद्र
(c) अल्प, मामूली (d) नीच, अधम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

क्षुद्र के पर्यायवाची नीच, अधम, घटिया, ओछा इत्यादि हैं।

61. **उग्र**
(a) तीव्र, रौद्र (b) प्रचण्ड, क्रोधी
(c) उत्कट, घोर (d) शिव, सूर्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उग्र के पर्यायवाची भयानक, क्रूर, क्रोधी, प्रचण्ड, तीक्ष्ण, तेज इत्यादि हैं।

62. **बटोही**
(a) बटमार, एकाकी (b) असहाय, दुर्गम
(c) पथिक, राहगीर (d) पाथेय, मेघ

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

बटोही के पर्यायवाची शब्द राही, पथिक, मुसाफिर, राहगीर, यात्री, पंथी इत्यादि हैं।

63. **विरद**
(a) यश, ख्याति (b) बीज, मूल
(c) वृक्ष, पौधा (d) विरही, वियोगी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विरद के पर्यायवाची ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति, यश इत्यादि हैं।

64. **यातुधान**
(a) पथिक, कष्ट (b) काल, हवा
(c) यातना, हिंसा (d) राक्षस, निशाचर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर इत्यादि यतुधान के पर्यायवाची हैं।

65. **विभु**
(a) सर्वव्यापक, नित्य (b) ब्रह्म, आत्मा
(c) महान, ईश्वर (d) चिरस्थायी, दृढ़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विभु के पर्यायवाची सर्वव्यापक, अनन्त, अजन्मा एवं नित्य इत्यादि हैं।

66. **सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिये गये कूट का सही उत्तर चुनिए-**

सूची-I (शब्द)	**सूची-II (अर्थ)**
क. जलज	(i) बादल
ख. जलद	(ii) कमल
ग. जलधि	(iii) समुद्र

कूटः	**क**	**ख**	**ग**
(a)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)
(c)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(ii)	(iii)	(i)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (शब्द)	**सूची-II (अर्थ)**
जलज	कमल
जलद	बादल
जलधि	समुद्र

67. **निम्न में से कौन-सा पर्यायवाची शब्द-युग्म सही नहीं है?**
(a) कमल-मृणाल (b) ओस-नीहार
(c) आकाश-अभ्र (d) गाय-द्विज

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

कमल का पर्यायवाची मृणाल, ओस का पर्यायवाची नीहार तथा आकाश का पर्यायवाची अभ्र होता है, जबकि द्विज ब्राह्मण, पक्षी तथा दाँत के पर्यायवाची हैं। गाय से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

68. **'द्विज' शब्द का अर्थ है-**
(a) ब्राह्मण (b) दाँत
(c) पक्षी (d) इनमें से सभी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. **'पक्षी' शब्द का पर्यायवाची है -**
(a) अंशुक (b) द्विज
(c) वरुण (d) तरुण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'पक्षी' शब्द का पर्यायवाची द्विज, विहग, विहंग, खग, पखेरू, परिंदा, पतंग, शकुन्त, चिड़िया आदि हैं।

70. **निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'हंस' का पर्यायवाची है?**
(a) कुरंग (b) भुजंग
(c) मराल (d) पंचबाण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हंस के पर्यायवाची मराल, मुक्तभुक्, सरस्वती वाहन इत्यादि हैं। कुरंग, हिरन का तथा भुजंग, सर्प का पर्यायवाची है। पंचबाण, कामदेव का पर्यायवाची है।

71. **'शिव' का कौन-सा अर्थ नहीं है?**
(a) महादेव (b) पशुपति
(c) चक्रपाणि (d) शंकर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

शिव के पर्यायवाची महादेव, पशुपति, शंकर, उमापति, कैलाशपति, शंभु, हर, महेश्वर, त्रिपुरारि, गंगाधर, चन्द्रशेखर, महेश, चन्द्रमौलि, मदनारि इत्यादि हैं। चक्रपाणि, विष्णु का पर्यायवाची है।

72. **'खेचर' का पर्याय होगा-**
(a) आकाश में चलने वाला (b) पक्षी
(c) ग्रह (d) इनमें से सभी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'खेचर' का पर्याय आकाशचारी, तारागण, वायु, देवता, विमान, पक्षी, बादल इत्यादि होता है।

73. 'कामदेव' का पर्यायवाची शब्द कौन-सा है?

(a) सरोज (b) उरोज
(c) मनोज (d) पाथोज

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मदन, मनोज, मार, मदन, मकरध्वज, मनोभव, पंचशर, स्मर, मनसिज, मन्मथ, मीनकेतु, कन्दर्प, अनंग, रतिपति, कुसुमशर इत्यादि कामदेव के पर्यायवाची हैं। सरोज, कमल का तथा उरोज, स्तन का पर्यायवाची है।

74. 'काँच' का पर्यायवाची शब्द है-

(a) शीशा (b) सीसा
(c) शिपा (d) शिसा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

काँच के पर्यायवाची शब्द शीशा तथा दर्पण हैं।

75. निम्नलिखित में अर्थ की दृष्टि से सही शब्द युग्म कौन है?

(a) जातवेद - लोहा (b) जातरूप - चाँदी
(c) परभृत - कौआ (d) ताम्रचूड़ - मुर्गा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

तमचुर, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट, चरणायुद्ध इत्यादि मुर्गा के पर्यायवाची हैं। अतः विकल्प (d) युग्म सही है। जातवेद 'अग्नि' का, जातरूप 'सोना' का तथा परभृत 'कोयल' का पर्यायवाची है।

76. निम्नलिखित शब्दों में से 'हनुमान' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(a) रामभक्त (b) पवनसुत
(c) बजरंगबली (d) कपीश्वर

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'हनुमान' का पर्यायवाची 'रामभक्त' नहीं है, जबकि पवनसुत, बजरंगबली, कपीश्वर, महावीर, रामदूत, कपीश, आंजनेय, मारुतिनन्दन, पवन कुमार, अंजनिपुत्र, केसरीनन्दन, जितेन्द्रिय, पवनपुत्र इत्यादि 'हनुमान' के पर्यायवाची हैं।

77. अलंकेश पर्यायवाची शब्द है-

(a) बादल का (b) कल्पवृक्ष का
(c) कुबेर का (d) चपला का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

धनद, यक्षराज, धनाधिप, राजराज, किन्नरेश, धनपति, धनेश, अलंकेश, धनपाल तथा धनेश्वर इत्यादि कुबेर के पर्यायवाची हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ देववृक्ष, कल्पद्रुम, हरिचन्दन, मन्दार, सुरतरु, पारिजात, कल्पतरु, कल्पशाल इत्यादि कल्पवृक्ष के पर्यायवाची हैं।

➲ विद्युत, चंचला, तड़ित, बिजली, क्षणप्रभा, दामिनी इत्यादि चपला के पर्यायवाची हैं।

78. 'तरकश' का पर्यायवाची शब्द है-

(a) तीर (b) धनुष
(c) प्रतिंचा (d) निषंग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'तरकश' का पर्यायवाची शब्द निषंग है। निषंग का अर्थ 'खड्ग' एवं 'तूणीर' भी है।

79. 'प्लवग' शब्द का अर्थ है-

(a) बन्दर (b) मेढ़क
(c) पक्षी (d) पानी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(*)

'प्लवग' का अर्थ बन्दर, हिरन, मेढ़क, जल-पक्षी, सिरस का पेड़, सूर्य के सारथी का एक नाम है।

80. 'सूर्य' का पर्यायवाची नहीं है-

(a) रवि (b) भास्कर
(c) हंस (d) सारंग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सारंग, अनेकार्थी शब्द है। इसके अर्थ हैं-कोयल, चातक, मोर, हंस, बाज, सिंह, घोड़ा, हाथी, मृग, सूर्य, चन्द्रमा, सोना, भौंरा, धनुष, बादल, समुद्र, शंख तथा कामदेव इत्यादि। अतः सारंग को सूर्य के पर्यायवाची शब्द में शामिल नहीं किया जा सकता, जबकि रवि, भास्कर, हंस इत्यादि सूर्य के पर्यायवाची हैं।

81. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द 'सूर्य' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) दिनकर (b) दिवाकर
(c) भास्वर (d) अंशुमाली

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(*)

मार्तण्ड, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, रवि, मरीचि, प्रभाकर, सविता, पतंग, हंस, आदित्य, अंशुमाली इत्यादि सूर्य के पर्यायवाची हैं। भास्वर भी सूर्य का पर्यायवाची है। अतः प्रस्तुत विकल्प में सभी सूर्य के पर्यायवाची हैं।

❑ विलोम

निर्देश (प्रश्न 1-2) : निम्नलिखित शब्दों के लिए इनका उपयुक्त विलोम शब्द (विपरीतार्थक) छाँटिए -

1. गणतन्त्र

(a) प्रजातन्त्र (b) हृदयन्त्र
(c) यन्त्रतन्त्र (d) राजतन्त्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'गणतन्त्र' शब्द का विलोम (विपरीतार्थक शब्द) राजतन्त्र होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

2. गुण

(a) सगुण (b) गुणातीत
(c) अवगुण (d) गान

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'गुण' का विलोम शब्द अवगुण होता है। इसका विलोम 'दोष' भी होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

3. सृष्टि का विलोम शब्द है-

(a) मरण (b) प्रलय
(c) वृष्टि (d) मोक्ष

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'सृष्टि' का विलोम 'प्रलय', 'मरण' का विलोम 'जन्म', 'मोक्ष' का विलोम 'बन्धन' होता है।

4. 'सृष्टि' शब्द का विलोम है-

(a) सन्धि (b) विग्रह
(c) प्रलय (d) उत्कृष्ट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'समष्टि' का विलोमार्थी शब्द है-

(a) विशिष्ट (b) व्यष्टि
(c) अशिष्ट (d) अपुष्टि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'समष्टि' का विलोमार्थी शब्द 'व्यष्टि' होता है। विशिष्ट का साधारण, अशिष्ट का शिष्ट तथा अपुष्टि का विलोम पुष्टि होता है।

6. 'स्वप्न' का विलोम है-

(a) दिवास्वप्न (b) खुमारी
(c) निद्रा (d) जागरण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

डॉ. हरदेव बाहरी (हिन्दी : शब्द- अर्थ-प्रयोग) के अनुसार 'स्वप्न' का विलोम 'जागरण' होता है। 'निद्रा' का विलोम भी 'जागरण' होता है।

7. 'आर्द्र' का विलोम शब्द है-

(a) नम (b) शुष्क
(c) गीला (d) लचीला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'आर्द्र' का विलोम 'शुष्क' होता है। 'गीला' का विलोम 'सूखा' तथा 'लचीला' का विलोम 'कड़ा' होता है।

8. 'कुटिल' का विलोम है-

(a) जटिल (b) रूढ़
(c) ऋजु (d) वक्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'कुटिल' का विलोम 'सरल' होता है। 'वक्र' तथा 'कठिन', 'कुटिल' के समानार्थी हैं। 'जटिल' तथा 'वक्र' दोनों का विलोम 'सरल' अथवा 'ऋजु' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कृत्रिम का विलोम प्रकृत होता है।
➲ कोप का विलोम कृपा होता है।
➲ कर्म का विलोम निष्कर्म अथवा अकर्म होता है।
➲ कृष्ण का विलोम श्वेत अथवा शुक्ल होता है।

9. 'आवाहन' का विलोम है-

(a) अवगाहन (b) तिरोभाव
(c) विसर्जन (d) धन्यवाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'आवाहन' का विलोम 'विसर्जन' होता है। आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।

10. 'परुष' शब्द का विलोम है-

(a) अपौरुष (b) सरल
(c) कठोर (d) कोमल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

परुष का विलोम कोमल अथवा अपरुष होता है। सरल का विलोम कठिन होता है। कोमल एवं कठोर परस्पर विलोम हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- परकीय का विलोम स्वकीय होता है।
- परमार्थ का विलोम स्वार्थ होता है।
- पराजेय का विलोम अपराजेय होता है।
- परिणत का विलोम अपरिणत होता है।
- परिपुष्ट का विलोम अपरिपुष्ट होता है।

11. परुष का विलोम शब्द है-

(a) बल (b) शक्ति
(c) कोमल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'आसक्त' का विलोम है-

(a) विरक्त (b) अनुरक्त
(c) संसक्ति (d) विभक्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'आसक्त' का विलोम अनासक्त अथवा विरक्त होता है। अनुरक्त का विलोम भी विरक्त होता है। विभक्त का विलोम अविभक्त होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आसान का विलोम मुश्किल होता है।
- आसीन का विलोम अनासीन होता है।
- आस्तिक का विलोम नास्तिक होता है।
- आस्था का विलोम अनास्था होता है।
- आहार्य का विलोम अनाहार्य होता है।

13. उपजाऊ का विलोम है-

(a) सिंचित (b) खाद
(c) ऊसर (d) बंजर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपजाऊ का विलोम अनुपजाऊ तथा ऊसर होता है। डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' में उपजाऊ का विलोम अनुपजाऊ लिखा है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- उपकारक का विलोम अनुपकारक होता है।
- उपमित का विलोम अनुपमित होता है।
- उपमेय का विलोम अनुपमेय होता है।
- उपयुक्त का विलोम अनुपयुक्त होता है।
- उपार्जित का विलोम अनुपार्जित होता है।

14. 'परिश्रम' शब्द का विलोम है -

(a) आश्रय (b) विश्राम
(c) विश्रांत (d) विश्रम

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'परिश्रम' शब्द का विलोम विश्राम होता है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

15. 'परिश्रम' का विलोम शब्द है -

(a) विश्रांत (b) अश्रम
(c) विश्रम (d) विश्राम

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'सुषुप्ति' का विलोम है -

(a) जागरित (b) जागना
(c) जगाना (d) जागरण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सुषुप्ति' का विलोम जागरित होता है। 'सोना' का विलोम 'जागना' तथा 'शयन' का विलोम 'जागरण' है।

17. 'उत्थान' का विलोम शब्द क्या है?

(a) प्रस्थान (b) पतन
(c) विस्थापन (d) अनुत्थान

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'उत्थान' का विलोम 'पतन' होता है।

18. 'स्वजाति' शब्द का विलोम है-

(a) अजाति (b) कुजाति
(c) सुजाति (d) विजाति

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'स्वजाति' शब्द का विलोम 'विजाति' है।

19. 'स्वधर्म' शब्द का विलोम है-

(a) अधर्म (b) परधर्म
(c) विधर्म (d) सुधर्म

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

'स्वधर्म' शब्द का विलोम 'परधर्म' होता है। अधर्म, विधर्म परस्पर समानार्थी हैं, जिनका विलोम धर्म होगा। सुधर्म, कुधर्म का विलोम है।

20. 'उल्लास' का विलोम शब्द क्या है?

(a) हर्ष (b) विषाद

(c) कष्ट (d) नैराश्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

'उल्लास' का विलोम 'नैराश्य' होता है। 'हर्ष', 'विषाद' का विलोम है।

21. 'अज्ञ' शब्द का विलोम है -

(a) विज्ञ (b) मूर्ख

(c) अनुज (d) अल्प

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

'अज्ञ' का विलोम शब्द 'विज्ञ' होता है। 'मूर्ख' का विलोम विद्वान, 'अनुज' का विलोम 'अग्रज' तथा 'अल्प' का विलोम 'बहु' होता है।

22. 'ऋजु' शब्द का विलोम होगा -

(a) सीधा (b) सरल

(c) वक्र (d) ऋज

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

'ऋजु' शब्द का विलोम वक्र होता है। 'सरल', 'कठिन' का तथा 'सीधा', टेढ़ा का विलोम है।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा विलोम शब्द है?

(a) अभिज्ञ (b) भिज्ञ

(c) विज्ञ (d) अनभिज्ञ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

अभिज्ञ, भिज्ञ, विज्ञ तीनों समानार्थी हैं, जबकि अनभिज्ञ इन तीनों का विपरीतार्थक है।

24. 'अभिज्ञ' शब्द का विलोम है-

(a) भिज्ञ (b) सभिज्ञ

(c) अनभिज्ञ (d) सुभिज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'अनभिज्ञ' शब्द का विलोम है-

(a) भिज्ञ (b) अज्ञ

(c) अभिज्ञ (d) अतिभिज्ञ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(a&c)

'अनभिज्ञ' शब्द का विलोम भिज्ञ तथा अभिज्ञ दोनों है।

निर्देश (प्रश्न सं. 26 से 30 तक)–इन प्रश्नों में प्रत्येक में एक शब्द दिया गया है जिसके नीचे चार शब्द अंकित हैं। इनमें से एक दिए हुए शब्द का विलोमार्थी शब्द है। सही विलोमार्थी शब्द को चुनिए–

26. दिवस

(a) विभावरी (b) अरविन्द

(c) प्रवाहिणी (d) विचक्षण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

दिवस का वास्तविक विलोम रात्रि होता है। उचित विकल्प के अनुपस्थिति में विभावरी हो सकता है। विभावरी, रात्रि का पर्यायवाची है।

27. निर्मल

(a) पवित्र (b) शुद्ध

(c) मलिन (d) मृदु

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

निर्मल का विलोम मलिन होता है।

28. उद्यम

(a) प्रवीण (b) आलस्य

(c) नीरज (d) नृप

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

उद्यम का विलोम आलस्य होता है।

29. महान

(a) मरण (b) चेतन

(c) क्षुद्र (d) मूढ़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

महान का विलोम क्षुद्र होता है। इसका विलोम तुच्छ भी होता है।

30. द्युति

(a) छवि (b) प्रभा

(c) ज्योति (d) अन्धकार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

द्युति का शुद्ध विलोम तम हो सकता है। उचित विकल्प के अनुपस्थिति में अन्धकार माना जा सकता है। छवि, प्रभा, ज्योति, द्युति के पर्यायवाची शब्द हैं।

31. उपत्यका का विलोम है–

(a) पर्वत (b) घाटी

(c) अधित्यका (d) विसर्जन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(c)

समसामयिक घटना चक्र

उपत्यका का विलोम अधित्यका होता है। विसर्जन, आवाहन का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- उदात्त का विलोम अनुदात्त होता है।
- उत्कर्ष का विलोम अपकर्ष होता है।
- ईद का विलोम मुहर्रम होता है।
- उद्यमी का विलोम निरुद्यम होता है।
- उग्र का विलोम सौम्य होता है।

32. 'अपव्यय' शब्द का विलोम है-

(a) अधिव्यय (b) व्यय
(c) मितव्यय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'अपव्यय' का विलोम 'मितव्यय' होता है। 'व्यय' का विलोम 'आय' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अपव्ययी का विलोम मितव्ययी होता है।
- अर्जन का विलोम व्ययन होता है।
- अनेकान्त का विलोम एकान्त होता है।
- अनैक्य का विलोम ऐक्य होता है।
- अवनि का विलोम अम्बर होता है।

33. निम्नलिखित युग्मों में से विलोम की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है -

(a) उन्मुख - विमुख (b) ऋत - अनृत
(c) गत - अनागत (d) मंद - द्रुत

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

गत का विलोम 'आगत' होता है। शेष युग्म सही हैं।

34. 'आवरण' शब्द का विलोम है-

(a) अनावरण (b) आचरण
(c) सुवारण (d) अवज्ञा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आवरण' का विलोम 'अनावरण' होता है। इसका विलोम 'निरावरण' भी होता है। 'अवज्ञा' का विलोम 'आज्ञा' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आवर्तक का विलोम अनावर्तक होता है।
- आवर्षण का विलोम अनावर्षण होता है।
- आवृत्त का विलोम अनावृत्त होता है।
- आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।
- आर्ष का विलोम अनार्ष होता है।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा विपरीतार्थक युग्म सही सुमेलित है?

(a) उद्योगी - अनुद्यत (b) औरस - जारज
(c) उन्मत्त - विमुख (d) उच्छवास - अनुच्छिष्ट

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

औरस-जारज विपरीतार्थक युग्म सही सुमेलित हैं। उद्योगी का विपरीतार्थक अनुद्योगी होता है, जबकि अनुद्यत, उद्यत का विलोम है। उन्मत्त का विलोम अनुन्मत्त तथा विमुख का विलोम उन्मुख होता है। इसी प्रकार उच्छवास का विलोम निःश्वास तथा अनुच्छिष्ट का विलोम उच्छिष्ट होता है।

36. 'महात्मा' शब्द का सही विलोम होगा-

(a) दुष्ट (b) दुर्जन
(c) दुरात्मा (d) पापी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'महात्मा' का सही विलोम दुरात्मा होता है। दुष्ट तथा दुर्जन दोनों समानार्थी हैं, इसका विलोम सज्जन है।

37. 'प्राचीन' शब्द का विलोम है-

(a) वर्तमान (b) अर्वाचीन
(c) समीचीन (d) नवीन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद की पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में 'प्राचीन' का विलोम नवीन तथा अर्वाचीन दोनों है। डॉ. हरदेव बाहरी भी अपनी पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' में डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद का अनुसरण करते हैं अर्थात् प्राचीन का विलोम नवीन तथा अर्वाचीन दोनों मानते हैं।

38. 'अर्वाचीन' शब्द का विलोम शब्द क्या है?

(a) नवीन (b) प्राचीन
(c) आदिकालीन (d) पाषण कालीन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'अर्वाचीन' का विलोम प्राचीन है। नवीन, अर्वाचीन का समानार्थी है।

39. 'स्वार्थ' का विलोम होगा-

(a) परमार्थ (b) निःस्वार्थ
(c) परोपकार (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुर्नपरीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

डॉ. हरदेव बाहरी की पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' के अनुसार, स्वार्थ का विलोम परमार्थ है। डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद की पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में स्वार्थ का विलोम निःस्वार्थ एवं परमार्थ दोनों ही उद्धृत हैं। स्वार्थ का सटीक विलोम निःस्वार्थ होगा, किन्तु यह कहना ठीक नहीं है कि परमार्थ, स्वार्थ का विलोम नहीं है।

40. निम्नलिखित में कौन शब्द 'राजा' का विलोम नहीं है?

(a) रानी (b) रंक

(c) सेना (d) प्रजा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रानी, रंक तथा प्रजा तीनों 'राजा' के विलोम हैं, जबकि सेना इससे भिन्न है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रत का विलोम विरत है।

➲ रागी का विलोम विरागी है।

➲ रक्षक का विलोम भक्षक है।

➲ राजतन्त्र का विलोम जनतन्त्र है।

➲ रिक्त अथवा अपूर्ण का विलोम पूर्ण है।

41. 'गमन' का विलोम है-

(a) आना (b) उतरना

(c) रुकना (d) आगमन

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'गमन' का विलोम 'आगमन' है। 'आना' का विलोम' जाना','उतरना' का विलोम 'चढ़ना' तथा 'रुकना' का विलोम 'चलना' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ गत का विलोम आगत होता है।

➲ गरल का विलोम सुधा होता है।

➲ गर्म का विलोम ठण्डा होता है।

➲ गण्य का विलोम अगण्य/नगण्य होता है।

➲ गगन का विलोम धरा होता है।

42. 'तिमिर' का शुद्ध विलोम शब्द होगा-

(a) अन्ध (b) निशा

(c) दिवा (d) आलोक

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'तिमिर' का शुद्ध विलोम 'आलोक' होता है। 'दिवा' का विलोम 'रात्रि' होता है, जबकि 'निशा', 'रात्रि' का पर्यायवाची है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ तिक्त का विलोम मधुर होता है।

➲ तीव्र का विलोम मन्द होता है।

➲ तुच्छ का विलोम महान होता है।

➲ तृप्त का विलोम अतृप्त होता है।

➲ तामसिक का विलोम सात्विक होता है।

43. जंगम का विलोम शब्द है-

(a) पुष्ट (b) स्थावर

(c) स्थिर (d) पूर्ण

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जंगम तथा स्थावर परस्पर विलोम हैं। पुष्ट का विलोम क्षीण अथवा अपुष्ट तथा स्थिर का विलोम चंचल अथवा अस्थिर होता है। पूर्ण का विलोम अपूर्ण अथवा रिक्त होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ जटिल का विलोम सरल होता है।

➲ जड़ का विलोम चेतन होता है।

➲ जन्म का विलोम मृत्यु होता है।

➲ जल का विलोम थल होता है।

➲ जारज का विलोम औरस होता है।

➲ जालिम का विलोम रहमदिल होता है।

44. 'स्थावर' का विलोम शब्द है-

(a) चेतन (b) जंगम

(c) जड़ (d) सचल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. निम्नलिखित में से विलोम शब्दों का कौन-सा एक युग्म गलत है?

(a) निषिद्ध - विहित

(b) वक्र - ऋजु

(c) कटु - तिक्त

(d) पाश्चात्य - प्राच्य

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c & d)

'कटु' का विलोम 'मधुर' होता है, जबकि 'तिक्त', 'कटु' का समानार्थी है। पाश्चात्य का विलोम पौर्वात्य तथा प्राच्य दोनों होता है। अतः विकल्प (c) तथा (d) दोनों सही हैं।

46. पाश्चात्य का विलोमार्थक शब्द है-

(a) पौर्वात्य (b) पूर्वी

(c) पूर्वीय (d) नवीन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'पाश्चात्य' का विलोम 'पूर्वीय' अथवा 'पौरस्त्य' होता है। पूर्वी का विलोम पश्चिमी तथा प्राचीन का विलोम नवीन होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पात्र का विलोम अपात्र होता है।
- पारदर्शी का विलोम अपारदर्शी होता है।
- पार्थिव का विलोम अपार्थिव होता है।
- पास का विलोम दूर होता है।
- पाप का विलोम पुण्य होता है।

47. 'प्रत्यक्ष' का विलोम है-

(a) समक्ष (b) विपक्ष
(c) परोक्ष (d) अदृश्य

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'प्रत्यक्ष' का विलोम 'परोक्ष' होता है। 'विपक्ष' पक्ष का तथा 'अदृश्य' दृश्य का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रमुख का विलोम सामान्य अथवा गौण होता है।
- प्रलय का विलोम सृष्टि होता है।
- प्रशंसा का विलोम निन्दा होता है।
- प्रवृत्ति का विलोम निवृत्ति होता है।
- प्रधान का विलोम गौण होता है।

48. 'आमिष' का विलोम शब्द होगा-

(a) सामिष (b) निरामिष
(c) मांसाहारी (d) शाकाहारी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'आमिष' का विलोम 'निरामिष' होता है। सामिष, आमिष का समानार्थी है। शाकाहारी का विलोम मांसाहारी होता है।

49. 'सामिष' का विलोमार्थक शब्द है:

(a) आमिष (b) अनमिष
(c) निरामिष (d) निरमिष

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. 'कृतज्ञ' का विलोम क्या है?

(a) कठिन (b) कृपण
(c) कृतघ्न (d) करुण

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कृतज्ञ' का विलोम 'कृतघ्न' होता है। कठिन, सरल का तथा कृपण, दाता का विलोम है। करुण का विलोम निष्ठुर है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कुरूप का विलोम सुरूप होता है।
- क्रय का विलोम विक्रय होता है।
- कायर का विलोम निडर होता है।
- कटु का विलोम मधु होता है।
- क्रोध का विलोम क्षमा होता है।

51. 'आचार' का विलोम शब्द है-

(a) अनाचार (b) आनाचार
(c) अत्याचार (d) विचार

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(a)

आचार का विलोम अनाचार होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आगामी का विलोम विगत होता है।
- आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।
- आकाश का विलोम पाताल होता है।
- आधुनिक का विलोम प्राचीन होता है।
- आकर्षण का विलोम विकर्षण होता है।

52. निम्नलिखित में कौन 'अथ' शब्द का विलोम है?

(a) इति (b) आदि
(c) अन्त (d) प्रारम्भ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'अथ' का विलोम 'इति' होता है, जबकि आदि, अन्त का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अधम का विलोम उत्तम होता है।
- आय का विलोम व्यय होता है।
- अस्त का विलोम उदय होता है।
- आयात का विलोम निर्यात होता है।
- आद्य का विलोम अन्त्य होता है।

53. 'अंतरंग' का सही विलोम है-

(a) बहुरंग (b) बहिरंग
(c) सबरंग (d) कुरंग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'अंतरंग' का विलोम 'बहिरंग' होता है।

सम-सामयिक घटना चक्र

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ आजादी का विलोम गुलामी होता है।
- ➲ आभ्यन्तर का विलोम बाह्य होता है।
- ➲ अति का विलोम अल्प होता है।
- ➲ अवनि का विलोम अम्बर होता है।
- ➲ अनुग्रह का विलोम विग्रह होता है।

54. 'मूक' का विलोम शब्द है-

(a) अमूक (b) शूक
(c) वाचाल (d) हूक

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'मूक' का विलोम 'वाचाल' अथवा 'मुखर' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ मृदुल का विलोम कठोर होता है।
- ➲ मिलन का विलोम विरह होता है।
- ➲ मुख का विलोम पृष्ठ अथवा प्रतिमुख होता है।
- ➲ मुनाफा का विलोम नुकसान होता है।

55. निम्नलिखित में कौन 'शाश्वत' शब्द का विलोम है?

(a) मृत्यु (b) मर्त्य
(c) नश्वर (d) क्षणिक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'शाश्वत' का विलोम क्षणिक होता है। 'मृत्यु' जन्म का विलोम है, जबकि नश्वर का विलोम शाश्वत अथवा अनश्वर होता है। मर्त्य, अमर का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➲ शकुन का विलोम अपशकुन होता है।
- ➲ शीत का विलोम उष्ण होता है।
- ➲ शुक्ल का विलोम कृष्ण होता है।
- ➲ शासक का विलोम शासित होता है।
- ➲ शुष्क का विलोम सिक्त होता है।

❑ श्रुति समभिन्नार्थक शब्द

1. 'आकृति' शब्द का समभिन्नार्थक क्या है?

(a) बनावट (b) वस्त्र
(c) चित्र (d) समरूप

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'आकृति' शब्द का समभिन्नार्थक, शक्ल, आकार तथा बनावट है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया।

2. शब्द युग्म 'पर्यन्त-पर्यंक' के सही अर्थ भेद का चयन कीजिए-

(a) तक - कीचड़ (b) तक - पलंग
(c) पर्याप्त - पलंग (d) समग्र-पीड़क

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

पर्यन्त का अर्थ 'तक' होता है तथा पर्यंक का अर्थ 'पलंग' होता है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

❑ अनेकार्थक शब्द

1. इनमें एक शब्द अनेकार्थी नहीं है -

(a) कर (b) वर्ण
(c) लज्जा (d) अर्क

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कर, वर्ण तथा अर्क अनेकार्थी शब्द हैं। कर का अनेकार्थी किरण, हाथ, टैक्स, सूँड़ इत्यादि, वर्ण का अनेकार्थी अक्षर, रंग, शब्द, रूप, चातुर्वर्ण्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र), अर्क का अनेकार्थी सूर्य, इन्द्र, ताँबा, विष्णु, काढ़ा, स्फटिक इत्यादि होता है, जबकि लज्जा अनेकार्थी शब्द नहीं है।

2. इनमें से शब्द और उसके सही अर्थ का एक युग्म गलत है, वह है-

(a) युयुत्सु - युद्ध करने का इच्छुक
(b) मुमुक्षु - मोक्ष प्राप्ति का अभिलाषी
(c) जिज्ञासु - जानने की इच्छा वाला
(d) तितीर्षु - तप करने में संलग्न

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

तैरने की इच्छा रखने वाले को 'तितीर्षु' कहते हैं। शेष युग्म सही हैं।

निर्देश (प्रश्न 3-7 के लिये)-इन प्रश्नों में प्रत्येक में चार शब्द दिये गये हैं। जिनमें से तीन अनेकार्थक शब्द की श्रेणी में आते हैं। जो शब्द इस श्रेणी में नहीं आता है, वही आपका उत्तर है।

3. (a) अम्बर (b) वस्त्र
(c) आकाश (d) किरण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

अम्बर, वस्त्र तथा आकाश अनेकार्थक शब्द की श्रेणी में आते हैं। किरण इससे भिन्न है।

4. (a) मधु (b) दूध
(c) शहद (d) शराब

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

मधु, शहद तथा शराब अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। दूध इससे भिन्न है।

5. (a) इन्द्र (b) सिंह
(c) ब्राह्मण (d) सूर्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इन्द्र, सिंह, सूर्य अनेकार्थक शब्द हैं, जबकि ब्राह्मण इससे भिन्न है।

6. (a) सजा (b) बल
(c) शक्ति (d) सेना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

बल, शक्ति तथा सेना तीनों अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। सजा इससे भिन्न है।

7. (a) तात (b) पूज्य
(c) पिता (d) मोती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

तात, पूज्य तथा पिता अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। मोती इससे भिन्न है।

8. अनेकार्थी शब्द 'नाग' का निम्नलिखित में से एक अर्थ है -
(a) हाथी (b) मोक्ष
(c) रथ (d) पारा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नाग' का अनेकार्थी शब्द साँप, हाथी, पर्वत, बादल, दुष्ट इत्यादि होता है।

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'तिरछी नजर' तथा 'आक्षेप' है—
(a) कटुक्ति (b) व्यंग्य
(c) ताना (d) कटाक्ष

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'तिरछी नजर' तथा 'आक्षेप' का एक अर्थ 'कटाक्ष' है।

10. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'धन', 'मतलब', 'कारण' और 'लिए' है -
(a) आशय (b) तात्पर्य
(c) अर्थ (d) अभिप्राय

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

अर्थ का अनेकार्थक 'धन', मतलब, 'आशय' इत्यादि होता है।

❑ वाक्यांश के लिए एक शब्द

1. 'जल में रहने वाला प्राणी' के लिए एक शब्द है -
(a) जलज (b) जलनिधि
(c) जलचर (d) जलधर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'जल में रहने वाला प्राणी' के लिए एक शब्द 'जलचर' है, जबकि 'जल में जन्म लेने वाला' 'जलज' कहलाता है। 'जल को धारण करने वाले' के लिए एक शब्द 'जलधर' तथा समुद्र को 'जलनिधि' कहते हैं।

2. 'जिसके पास कुछ न हो' के लिए एक शब्द है -
(a) अक्षम (b) अकिंचन
(c) अज्ञ (d) असमर्थ

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'जिसके पास कुछ न हो' के लिए एक शब्द 'अकिंचन' है। 'जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो' के लिए 'अक्षम' तथा 'जो कुछ नहीं जानता हो' के लिए एक शब्द 'अज्ञ' होता है। 'जिसमें सामर्थ्य न हो' के लिए शब्द 'असमर्थ' होगा।

3. 'जिसका निवारण न हो सके' के लिए एक शब्द है -
(a) अविकल (b) अनिर्धार्य
(c) अनिर्णीत (d) अनिवार्य

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'जिसका निवारण न हो सके' के लिए एक शब्द 'अनिवार्य' है। 'जिसका निर्णय न हो सके' उसके लिए एक शब्द 'अनिर्णीत' है। 'ज्यों का त्यों' के लिए एक शब्द 'अविकल' है।

4. समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला कहलाता है-
(a) सार्वभौमिक (b) सार्वकालिक
(c) सार्वदेशिक (d) सर्वज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

सम-सामयिक घटना चक्र

'समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला' अर्थात् 'समस्त भूमि या समस्त देशों से सम्बन्ध रखने वाला' सार्वभौमिक कहलाता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी विकल्प (a) सही माना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जिसे सारी बातों का ज्ञान हो' वह 'सर्वज्ञ' कहलाता है।
➲ 'सर्वसाधारण से सम्बन्धित' 'सार्वजनिक' कहलाता है।
➲ 'सब भूमि या सभी देशों में होने वाला' 'सार्वभौम' कहलाता है।

5. 'अतीन्द्रिय' शब्द का आशय है?

(a) इन्द्रियों की पहुँच से बाहर
(b) इन्द्रियों की रखवाली करने वाला
(c) इन्द्रियों का स्वामी
(d) इन्द्रियों के वश में रहने वाला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'अतीन्द्रिय' का आशय 'जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सकता हो' अर्थात् इन्द्रियों की पहुँच से बाहर हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'वर्षा की अधिकता' 'अतिवृष्टि' कहलाती है।
➲ 'कोई बात जो बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी हो' उसे 'अतिशयोक्ति' कहते हैं।
➲ 'जिसके आने की तिथि (ज्ञात) न हो' उसे 'अतिथि' कहते हैं।

6. 'न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा' कहलाता है-

(a) समशीत (b) समउष्ण
(c) उष्णकटिबन्ध (d) समशीतोष्ण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा' 'समशीतोष्ण' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जो सबको समान भाव से समझता, देखता हो' 'समदर्शी' कहलाता है।
➲ 'उसी समय में होने या रहने वाला' 'समसामयिक' कहलाता है।
➲ 'वर्तमान समय या ठीक समय पर होने वाला' 'सामयिक' कहलाता है।

7. 'जो अधिक बोलता है' उसे कहते हैं-

(a) मितभाषी (b) मृदुभाषी
(c) वक्ता (d) वाचाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'जो अधिक बोलता है' उसे 'वाचाल' कहते हैं। 'जो अपेक्षाकृत कम बोलता' है उसे 'मितभाषी' कहते हैं। इसी प्रकार 'मृदु (मीठा) बोलने वाला' 'मृदुभाषी' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'कम या नपा-तुला खर्च करने वाला 'मितव्ययी' कहलाता है।
➲ 'थोड़ा और नपा-तुला भोजन करने वाला' 'मिताहारी' कहलाता है।
➲ 'मतिमंद होने की अवस्था' मतिमांद्य कहलाती है।
➲ 'जो मद्यपान करने का आदी हो' 'मद्यप' कहलाता है।

8. 'कम बोलने वाले' के लिए एक शब्द क्या होगा?

(a) मितभाषी (b) वाचाल
(c) चपल (d) मूर्ख

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'जो शीघ्र ही किसी बात या युक्ति को सोच ले' उसे कहेंगे—

(a) सहमति (b) व्युत्पन्नमति
(c) प्रत्युत्पन्नमति (d) सम्मति

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'जो शीघ्र ही किसी बात या युक्ति को सोच ले' उसे 'प्रत्युत्पन्नमति' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'किसी के उत्तर में जो ठीक समय पर उत्पन्न हो' उसे 'प्रत्युत्पन्न' कहते हैं।
➲ 'उत्तर द्वारा खण्डन करके कहा हुआ' 'प्रत्युक्त' कहलाता है।
➲ 'जो कहीं जाकर लौट आया हो' उसे 'प्रत्यागत' कहते हैं।
➲ 'जिसकी प्रतारणा (ठगी) की गयी हो' उसे 'प्रतारित' कहते हैं।

10. 'जो मापा न जा सके' इसका सही अर्थ है-

(a) अमानक (b) अपरिग्रह
(c) अपरिमेय (d) अतुल्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'जो मापा न जा सके' उसे 'अपरिमेय' कहते हैं। इसके लिए एक शब्द 'अपरिमित' भी होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जो प्रमेय (प्रमाण से सिद्ध) न हो' उसे 'अप्रमेय' कहते हैं।
➲ 'आवश्यकता से अधिक धन का ग्रहण न करना' के लिए एक शब्द 'अपरिग्रह' है।
➲ 'जिसका परिहार/त्याग न हो सके' उसे 'अपरिहार्य' कहते हैं।

11. 'जिसने मृत्यु को जीत लिया है' कहलाता है-

(a) अमरत्व (b) मृत्युञ्जय
(c) अभयदान (d) अभयमुद्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'जिसने मृत्यु को जीत लिया है' वह 'मृत्युञ्जय' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जो मरण की ओर उन्मुख हो' वह 'मरणोन्मुख' कहलाता है।
- 'जिसे मोक्ष की कामना या इच्छा हो' उसे 'मुमुक्षु' कहते हैं।
- 'मर जाने की कामना' 'मुमूर्षा' कहलाती है।
- 'जिसे मर जाने की कामना हो' उसे 'मुमूर्षु' कहते हैं।
- 'मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा' 'मुमुक्षा' कहलाती है।
- 'मन को हर लेने वाला' को 'मनोहर' कहते हैं।
- 'किसी बात के मर्म (गूढ़ रहस्य) को जानने वाला' 'मर्मज्ञ' कहलाता है।
- 'जिसके हृदय को चोट पहुँची हो उसे' 'मर्माहत' कहते हैं।
- 'वह स्थिति जब मुद्रा का चलन अधिक हो' 'मुद्रास्फीति' कहलाती है।

12. 'मोक्ष की इच्छा रखने वाला' के लिए प्रयुक्त एक शब्द है-

(a) निर्वाण (b) मुमूर्षु
(c) मुमुक्षु (d) जिज्ञासु

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. अन्यमनस्क शब्द का आशय है-

(a) जिसका मन अपनी ओर हो
(b) जिसका मन किसी दूसरी ओर हो
(c) जिसका मन निर्मल हो
(d) जिसका मन केन्द्रित हो

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'अन्यमनस्क' का आशय है-जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'किसी और स्थान पर' के लिए एक शब्द 'अन्यत्र' है।
- 'जिसका अपकार किया गया हो' के लिए एक शब्द 'अपकृत' है।
- 'जिसके अंग दुरुस्त न हों' उसे 'अपंग' कहते हैं।
- 'जिसे मारना उचित न हो' उसे 'अवध्य' कहते हैं।
- 'जिसका वर्णन न हो सकता हो' उसे 'अवर्ण्य' कहते हैं।

14. 'हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले आसन' के लिए एक शब्द है -

(a) जीन (b) काठी
(c) हौदा (d) बख्तर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले 'आसन' के लिए एक शब्द 'हौदा' है। 'घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी' को 'जीन' कहते हैं। 'घोड़े आदि की पीठ पर कसने की जीन' को 'काठी' तथा लोहे के जाल का बना कवच, जिसे युद्ध के समय पहना जाता है, उसे 'बक्तर' या 'बख्तर' कहते हैं।

15. 'हमेशा रहने वाला' एक शब्द बतलायें—

(a) शाश्वत (b) समसामयिक
(c) प्राणदा (d) पार्थिव

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'हमेशा रहने वाला' के लिए एक शब्द शाश्वत है। 'एक ही समय में वर्तमान' को 'समसामयिक' कहते हैं। 'प्राण देने वाली' को प्राणदा तथा 'पृथ्वी से सम्बन्धित' पार्थिव कहलाता है।

16. 'छाती के बल चलने वाला' के लिए एक शब्द क्या होगा?

(a) उरग (b) भुजंग
(c) कुरंग (d) तुरंग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'छाती के बल चलने वाला' उरग कहलाता है। 'भुजा के बल चलने वाले' को भुजंग कहते हैं।

17. 'निष्फल न होने वाला' कहलाता है-

(a) निश्चित (b) सही
(c) सटीक (d) अमोघ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'निष्फल न होने वाला' के लिए एक शब्द 'अमोघ' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'बिना हल जोते उगने वाली फसल' 'अकृष्टपच्या' कहलाती है।
- 'वह भूमि जो पहले न जोती गयी हो' 'अकृष्टपूर्वा' कहलाती है।
- 'जो तर्क से सिद्ध न हों 'अतर्क्य' कहलाता है।
- 'पश्चिम दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है' उसे 'अथमना' कहते हैं।
- 'वह जिसने किसी से ऋण लिया हो', 'अधमर्ण' कहलाता है।
- 'वह वस्तु जिस पर अधिकार जताया जाय', 'अध्यर्थ' कहलाता है।
- 'जिसकी कीमत कम हो' उसे 'अनर्ध्य' कहते हैं।

18. 'दीन दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था' वाक्यांश के लिए एक शब्द है-

(a) भंडारा (b) दातव्य
(c) सदावर्त्त (d) धर्मार्थ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

'दीन दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था' को सदावर्त्त कहते हैं। 'एक साथ कई लोगों के लिए भोजन देने की व्यवस्था' भंडारा कहलाता है। 'धर्म के प्रति किया गया कार्य' धर्मार्थ कहलाता है।

19. **'जिसने ऋण चुका दिया हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द है—**

(a) मृण्मय (b) उत्ऋण
(c) उत्तीर्ण (d) भारहीन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

'जिसने ऋण चुका दिया हो' उसे 'उत्ऋण' कहते हैं। 'मिट्टी से बनी वस्तु' को 'मृण्मय' तथा 'जिसने परीक्षा पास कर ली हो', उसे 'उत्तीर्ण' कहते हैं। 'जिस वस्तु में भार न हो' उसे 'भारहीन' कहते हैं।

20. **'जिसका जन्म पहले हुआ हो' वाक्य के लिए एक उपयुक्त शब्द का विकल्प चुनिये-**

(a) अग्रज (b) ज्येष्ठ
(c) वरिष्ठ (d) श्रेष्ठ

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'जिसका जन्म पहले हुआ हो' उसके लिए उपयुक्त शब्द 'अग्रज' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जो आगे रहता हो' अग्रणी' कहलाता है।
➲ 'किसी कार्य को करने से पहले सोचने वाला' 'अग्रसोची' कहलाता है।
➲ जहाँ जाया न जा सके' उसे 'अगम्य' कहते हैं।
➲ 'किसी के गुण को भी अवगुण समझना' 'असूया' कहलाता है।
➲ 'जो वश में न हुआ हो' 'अनायत' कहलाता है।

21. **'जीतने की इच्छा' हेतु एक शब्द लिखिये-**

(a) जिजीविषा (b) जिगीषा
(c) विजयेच्छा (d) जयेच्छु

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'जीतने की इच्छा' को 'जिगीषा' कहते हैं। 'अधिक समय तक जीने की इच्छा' को 'जिजीविषा' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जान से मारने की इच्छा' 'जिघांसा' कहलाती है।
➲ 'अधिक समय तक जीते रहने का इच्छुक' 'जिजीविषु' कहलाता है।
➲ 'जो जन्म से ही अन्धा हो' उसे 'जन्मांध' कहते हैं।

22. **अन्न को पचाने वाली अग्नि है-**

(a) जठराग्नि (b) बड़वाग्नि
(c) दावाग्नि (d) दावानल

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

अन्न को पचाने वाली (पेट की) अग्नि को 'जठराग्नि' या 'जठरानल' कहते हैं। 'बड़वाग्नि','सागर में लगी आग' को कहते हैं। 'दावाग्नि' या 'दावानल' 'जंगल में लगी आग' कहलाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'धीमी गति से लगने वाली आग' 'मंदाग्नि' कहलाती है।
➲ 'विरह की आग' 'विरहाग्नि' कहलाती है।

23. **'जंगल में लगने वाली आग' वाक्यांश का एक शब्द बतलाएँ?**

(a) जठरानल (b) बड़वानल
(c) कामानल (d) दावानल

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. **'जो पहले कभी न हुआ हो' वाक्यांश के लिए प्रयुक्त शुद्ध एक शब्द है-**

(a) अपूर्व (b) अभूतपूर्व
(c) अद्वितीय (d) इनमें से कोई भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

'जो पहले कभी न हुआ हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द 'अभूतपूर्व' है। 'जो पहले न हो रहा हो या न हुआ हो' उसे 'अपूर्व' कहते हैं। 'जिसके समान कोई दूसरा न हो' उसे 'अद्वितीय' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जिस पर अभियोग लगाया गया हो' उसे 'अभियुक्त' कहते हैं।
➲ 'जो किसी पर अभियोग लगाये' उसे 'अभियोगी' कहते हैं।
➲ 'जो घबराने वाला न हो' 'अकातर' कहलाता है।
➲ 'अत्यंत सूक्ष्म होने की शक्ति प्राप्त होना' 'अणिमा' कहलाता है।

25. **जो पहले कभी न हुआ हो-**

(a) अद्भूत (b) अभूतपूर्व
(c) अपूर्व (d) अनुपम

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निर्देश (प्रश्न 26-28) : निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनिये—

26. **जिसके समान दूसरा न हो**

(a) अद्वितीय (b) अनोखा
(c) अकेला (d) असमान

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'जिसके समान दूसरा न हो' उसके लिए एक शब्द 'अद्वितीय' है।

27. जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हो -

(a) असफल (b) अनुत्तीर्ण

(c) अयोग्य (d) अवनति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हो' उसे 'अनुत्तीर्ण' कहते है। 'जो किसी कार्य में सफल न हो' वह असफल कहलाता है। 'जो योग्य न हो' उसे अयोग्य कहते हैं।

28. जो उपकार को न मानता हो -

(a) कृतघ्न (b) उपकारी

(c) कृतज्ञ (d) अनुपकारी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'जो उपकार को न मानता हो' उसे 'कृतघ्न' कहते हैं। 'जो उपकार करता हो' उसे 'उपकारी' कहते हैं। 'जो उपकार को मानता हो' उसे कृतज्ञ कहते हैं। 'जो उपकार न करता हो' उसे अनुपकारी कहते हैं।

29. 'जो पूजा के योग्य हो' उसे कहा जायेगा-

(a) पूज्यनीय (b) पूज्य

(c) पुज्यनीय (d) पूजनीय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'जो पूजा के योग्य हो' उसे 'पूजनीय' अथवा 'पूज्य' कहा जाएगा। व्याकरणिक दृष्टि से 'पूज्यनीय' शब्द अशुद्ध है। इसी प्रकार अन्य विकल्पों में भी त्रुटियाँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जिसकी कामना पूरी हो गयी हो' उसे 'पूर्णकाम' कहते हैं।
➲ 'एक बार कही बात को दुहराते रहना' 'पिष्टपेषण' कहा जाता है।
➲ 'पशुओं की तरह आचरण करने वाला' 'पाशविक' कहलाता है।
➲ पृथ्वी से सम्बन्धित या मिट्टी का बना हुआ 'पार्थिव' कहलाता है।

30. 'अन्त्यज' शब्द का सही अर्थ है-

(a) जो जन्म से अपंग हो

(b) जो जन्म के उपरान्त त्याग दिया गया हो

(c) जिसका जन्म निम्न (अछूत) वर्ग में हुआ हो

(d) जो जन्म से कुरूप हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'अन्त्यज' शब्द का सही अर्थ 'जिसका जन्म निम्न (अछूत) वर्ग में हुआ हो' अर्थात् 'जो अन्तिम वर्ण (शूद्र) में जन्मा हो' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'मन में होने वाला या स्वाभाविक ज्ञान' को 'अन्तर्ज्ञान' कहते हैं।
➲ 'किसी देश के अन्दर होने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला' के लिए एक शब्द 'अन्तर्देशीय' है।
➲ 'जो किसी वस्तु के अन्दर दृढ़तापूर्वक विद्यमान या स्थित है' उसे 'अन्तर्निविष्ट' कहते हैं।
➲ 'गुरु के समीप रहने वाला छात्र' 'अन्तेवासी' कहलाता है।

31. देवताओं का उपवन-

(a) नन्दन कानन (b) अशोक वाटिका

(c) स्वर्ग (d) कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'स्वर्ग में इन्द्र का उपवन' 'नन्दन' कहलाता है। अतः इन्द्र भी एक देवता हैं। इसलिए 'देवताओं का उपवन' 'नन्दन कानन' कहलायेगा।

32. 'बहुज्ञ' शब्द का सही अर्थ है-

(a) जो बहुत जानकार हो (b) जानने की इच्छा रखने वाला

(c) जो अध्ययनशील हो (d) जो कम जानता हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'जो बहुत जानकार हो' अर्थात् 'बहुत से विषयों का जानकार हो' उसे 'बहुज्ञ' कहते हैं। 'जानने की इच्छा रखने वाला' 'जिज्ञासु' कहलाता है। 'जो कम जानता हो' वह 'अल्पज्ञ' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जिसे समाज या जाति से बाहर निकाल दिया गया हो' उसे 'बहिष्कृत' कहते हैं।
➲ 'बहुत सी भाषाएँ जानने वाला' 'बहुभाषाविद्' कहलाता है।
➲ 'जिसने अनेक विषयों का ज्ञान सुना और स्मरण कर लिया हो' उसे 'बहुश्रुत' कहते हैं।
➲ 'जिसको किसी बात की खबर न हो' 'बेखबर' कहलाता है।
➲ 'सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का पवित्र समय' 'ब्रह्ममुहूर्त' कहलाता है।

33. 'जिसमें जानने की इच्छा हो' के लिए एक शब्द है-

(a) जितेन्द्रिय (b) अजेय

(c) जलचर (d) जिज्ञासु

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'जिसमें जानने की इच्छा हो' के लिए एक शब्द 'जिज्ञासु' है। 'जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो' उसे 'जितेन्द्रिय' कहते हैं। इसी प्रकार 'जिसे जीता न जा सके' उसे 'अजेय' तथा जो 'जल में विचरण करता हो' उसे 'जलचर' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जन्म से सौ वर्ष का समय' 'जन्मशती' कहलाता है।
- 'जो वृद्ध होने के कारण जर्जर हो गया हो' उसे 'जराजीर्ण' कहते हैं।
- 'जल में पैदा होने वाला' 'जलज' कहलाता है।
- 'सारे जीवन में किसी के कार्यों आदि का विवरण' 'जीवन-चरित्र' कहलाता है।

34. जो कुछ जानने की इच्छा रखता हो–

(a) जिज्ञासु (b) जननी
(c) जानकी (d) नीतिज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'जिसकी आशा न की गयी हो'-उसे कहा जाता है-

(a) निराशा (b) अप्रत्याशित
(c) उपेक्षा (d) असम्भव

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

'जिसकी आशा न की गयी हो' उसे 'अप्रत्याशित' कहा जाता है। जो सम्भव न हो' उसे 'असम्भव' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'सामान्य या व्यापक नियम के विरुद्ध बात' 'अपवाद' कहलाती है।
- 'जिसके लिए कोई बाधा या रोक-टोक न हो' उसे 'अबाध' कहते हैं।
- 'कोई काम स्वभाववश करते रहने की क्रिया' 'अभ्यास' कहलाती है।
- 'जो कभी प्रकाश में न आया हो' या 'जिसका प्रकाशन न हुआ हो' उसे अप्रकाशित कहते हैं।

36. जिसका कोई शत्रु पैदा ही नहीं हुआ हो, उसे कहते हैं-

(a) आजानुबाहु (b) अजातशत्रु
(c) अज्ञातशत्रु (d) अजातपूर्व

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

'जिसका कोई शत्रु पैदा ही नहीं हुआ हो' उसे 'अजातशत्रु' कहते हैं। 'जिसकी भुजाएँ जानु (घुटने) तक लम्बी हो' उसे 'आजानुबाहु' तथा 'जिस शत्रु की जानकारी न हो' उसे 'अज्ञातशत्रु' कहते हैं। 'जो इससे पूर्व पैदा ही न हुआ हो' उसे 'अजातपूर्व' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जिसके कुल का पता न हो' उसे 'अज्ञातकुल' कहते हैं।
- 'कई व्यक्तियों में एक' के लिए एक शब्द 'अन्यतम' है।
- 'ज्यों का त्यों' के लिए एक शब्द 'अविकल' है।
- 'जिस कल्पित पर्वत के पीछे सूर्य अस्त होता है' उसे 'अस्ताचल' कहते हैं।
- 'जहाजों को रात्रि में मार्ग दिखाने वाला प्रकाश स्तम्भ' 'आकाशदीप' कहलाता है।
- 'अपने ऊपर निर्भर रहने वाला' 'आत्मनिर्भर' कहलाता है।
- 'बालक से वृद्ध तक सभी' के लिए एक शब्द 'आबालवृद्ध' है।
- 'ऋषि का कहा हुआ वचन' 'आर्षवचन' कहलाता है।
- 'पाद (पैर) से मस्तक तक' 'आपादमस्तक' कहलाता है।

37. 'जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों' के लिये एक शब्द क्या होगा?

(a) आजानुबाहु (b) अनजान बाहु
(c) सम्बाहु (d) अग्रबाहु

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'आजानुबाहु' शब्द निम्नलिखित में से किस वाक्यांश के लिए सही है?

(a) जिसकी भुजाएँ छोटी हों
(b) जिसकी भुजाएँ लम्बी हों
(c) जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो' के लिए एक शब्द है-

(a) आगतपतिका (b) प्रवत्यपतिका
(c) प्रोषितपतिका (d) आगमिस्यतपतिका

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

'वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो' उसे 'आगमिस्यतपतिका' कहते हैं 'वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो' उसे 'आगतपतिका' कहते हैं। 'वह स्त्री जिसका पति विदेश गया हो' उसे 'प्रोषितपतिका' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'वह स्त्री जिसका पति विदेश जाने को हो' उसे 'प्रवत्यपतिका' कहते हैं।
- 'वह स्त्री जिसे उसके पति ने छोड़ दिया हो' उसे 'परित्यक्ता' कहते हैं।
- वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले उसे 'अध्यूढ़ा' कहते हैं।
- 'दुराचारिणी स्त्री' को 'कुलटा' कहते हैं।

40. 'वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले'-इस वाक्यांश के लिए एक शब्द है–

(a) अध्यूढ़ा (b) परित्यक्ता
(c) अनूढ़ा (d) खण्डिता

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. **वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो, कहलाता है-**

(a) अन्योदर (b) दूरस्थ
(c) औरस (d) सहोदर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो', 'अन्योदर' कहलाता है। 'जो विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो' उसे 'औरस' कहते हैं। 'एक ही माता से जन्म लेने वाला' 'सहोदर' कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जिसका जन्म अण्डे से हुआ हो' उसे 'अण्डज' कहते हैं।
- 'जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो' उसे 'अनवगत' कहते हैं।
- प्रासाद (महल) के अन्दर का भाग 'अन्तःपुर' कहलाता है।

42. **रजोगुण वाला-**

(a) तामसिक (b) राजसिक
(c) वाचिक (d) सात्विक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'रजोगुण वाला' 'राजसिक' कहलाता है। 'सत्वगुण वाला', 'सात्विक' कहलाता है। इसी प्रकार 'तमोगुण वाला', तामसिक कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सात्विक व्यक्ति में सुख, सन्तोष एवं ज्ञान निहित होता है।
- राजसिक व्यक्ति में दुःख तथा आसक्ति का निवास होता है।
- तामसिक व्यक्ति में अज्ञान एवं उदासीनता विद्यमान रहती है।

43. **'सद्यःस्नाता' शब्द निम्नलिखित में से किस वाक्यांश पर लागू होता है?**

(a) जो सदा स्नान करती हो
(b) जो सदा नत बनी रहती हो
(c) जिसने अभी-अभी स्नान किया हो
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'जिसने अभी-अभी स्नान किया हो' उसे 'सद्यःस्नाता' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जिसने अभी हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो' उसे 'सद्यःप्रसूता' कहते हैं।
- 'जिसमें स्नान किया जा सके' उसे 'स्नानीय' कहते हैं।
- 'सुजन (अच्छा मनुष्य) होने की अवस्था गुण या भाव' 'सौजन्य' कहलाता है।
- 'किसी सत्ता के विरुद्ध अपना सत्य मनवाने के लिए किया गया आन्दोलनात्मक आग्रह' 'सत्याग्रह' कहलाता है।

44. **सबके समानाधिकार पर विश्वास-**

(a) अधिकारी (b) समाजवाद
(c) प्रगतिवादी (d) अधिकारवाद

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'सबके समानाधिकार पर विश्वास' 'समाजवाद' कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, समाज की आर्थिक विषमता को दूर करके समता स्थापित करने की कोशिश की जाती है। 'वह जिसे कोई स्वत्व प्राप्त हो' 'अधिकारी' कहलाता है।

45. **जो बात लोगों से सुनी गयी हो-**

(a) अश्रुति (b) सर्वप्रिय
(c) लोकोक्ति (d) किंवदन्ती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'जो बात लोगों से सुनी गयी हो' उसे 'किंवदन्ती' कहते हैं। 'जो न सुनी गयी हो' उसे अश्रुति कहते हैं। जो सबको प्रिय हो' 'सर्वप्रिय' कहलाता है। 'लोक (लोगें) द्वारा कही गयी उक्ति य वाक्य' 'लोकोक्ति' कहलाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'जिसकी अब कीर्ति शेष रह गयी हो' 'कीर्तिशेष' कहलाता है।
- 'जिस लड़की का विवाह न हुआ हो' उसे 'कुमारी' कहते हैं।
- 'अपने ही कुल का नाश करने वाला व्यक्ति' 'कुलांगर' कहलाता है।
- 'जो अच्छे या ऊँचे कुल में उत्पन्न हुआ हो' उसे 'कुलीन' कहते हैं।

46. **'कृतघ्न' शब्द का सही अर्थ है-**

(a) जो उपकार नहीं करता
(b) जो किए हुए उपकार को नहीं मानता
(c) जो शत्रु को जीत लेता है
(d) जो मित्रता को नहीं मानता

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'जो किए हुए उपकार को नहीं मानता' अर्थात् 'किए हुए उपकार को भूल जाता है' उसे 'कृतघ्न' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'किए हुए उपकार को मानने वाला' 'कृतज्ञ' कहलाता है।
- 'जो अपना उद्देश्य सिद्ध होने पर सन्तुष्ट हो' उसे 'कृतार्थ' कहते हैं।
- 'जिसकी उत्पत्ति स्वभावगत न हो' उसे 'कृत्रिम' कहते हैं।
- 'जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो' उसे 'कूपमंडूक' कहते हैं।

47. **'जिस पर अनुग्रह किया गया हो' वाक्यांश के लिए प्रयुक्त शुद्ध एक शब्द है-**

(a) अनुग्रहीत (b) अनुगृहीत

(c) अनुग्रही (d) अनुग्रहित

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'जिस पर अनुग्रह किया गया हो' उसे 'अनुगृहीत' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'पर्वत के ऊपर की समतल भूमि' 'अधित्यका' कहलाती है।
➲ 'जिसकी उपमा न की जा सके' उसे 'अनुपम' कहते हैं।
➲ 'जो किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति आसक्त हो' उसे 'अनुरक्त' कहते हैं।
➲ 'कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली' 'अनामिका' कहलाती है।
➲ 'किसी के पीछे-पीछे चलने वाला' 'अनुगामी/अनुयायी' कहलाता है।

48. **'किंकर्त्तव्यविमूढ़' शब्द का सही अर्थ है-**

(a) जिसे अपने कर्त्तव्य का बोध न हो

(b) जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए

(c) जो कर्त्तव्य के प्रति सचेत हो

(d) जो कर्त्तव्य से विमुक्त हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'जिसे अपने कर्त्तव्य का बोध न हो' उसे 'किंकर्त्तव्यविमूढ़' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'जिसकी बुद्धि कुश के अग्र भाग के समान हो' उसे 'कुशाग्रबुद्धि' कहते हैं।
➲ 'इच्छानुसार रूप धारण करने वाला' 'कामरूप' कहलाता है।
➲ 'जो कर्त्तव्य से च्युत हो गया हो' उसे 'कर्त्तव्यच्युत' कहते हैं।

49. **'जिसमें धैर्य न हो' के लिए एक शब्द है-**

(a) अधर (b) धरातल

(c) अधीर (d) धीरता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'जिसमें धैर्य न हो' उसे 'अधीर' कहते हैं। 'अनिश्चय की दशा में पड़ा रहना' 'अधर' कहलाता है।

50. **जिसे किसी से लगाव न हो-**

(a) नश्वर (b) लिप्सु

(c) निर्लिप्त (d) अलगाववादी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जिसे किसी से लगाव न हो' अर्थात् 'जो किसी विषय में लिप्त या आसक्त न हो' उसे 'निर्लिप्त' कहते हैं। 'नष्ट हो जाने वाला' 'नश्वर' कहलाता है।

51. **'गतानुगतिक' शब्द का सही अर्थ है-**

(a) प्राचीन आदर्श के अनुसार चलने वाला

(b) पीछे चलने वाला

(c) अनुसरण करने वाला

(d) गति को नहीं मानने वाला

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'प्राचीन आदर्श के अनुसार चलने वाला' 'गतानुगतिक' कहलाता है।

52. **'दीर्घसूत्री' का अर्थ है -**

(a) लम्बी कद काठी वाला

(b) बहुत देर से प्रतीक्षारत

(c) दीर्घ प्रवचन करने वाला

(d) धीमी गति से कार्य करने वाला

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

विलम्ब अथवा धीमी गति से कार्य करने वाला 'दीर्घसूत्री' कहलाता है।

53. **'निशीथ' का उपयुक्त अर्थ है-**

(a) अर्धरात्रि का समय

(b) संध्या का समय

(c) प्रातः का समय

(d) इनमें से सभी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'निशीथ' का उपयुक्त अर्थ 'अर्धरात्रि का समय' होता है।

❑ लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे

1. **'गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास' - लोकोक्ति का सही अर्थ है -**

(a) न्यायप्रिय (b) सिद्धान्तहीन

(c) आदर्शवादी (d) चरित्रहीन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास' लोकोक्ति का सही अर्थ 'सिद्धान्तहीन' होता है।

2. **'छछून्दर के सिर में चमेली का तेल' का अर्थ है -**

(a) दान के लिए सुपात्र न होना

(b) गंजे व्यक्ति के सिर पर सुगन्धित तेल लगाना

(c) बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति को धन मिलना

(d) अयोग्य व्यक्ति का अच्छा पद मिलना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'छछून्दर के सिर पर चमेली का तेल' लोकोक्ति है। इसका अर्थ है- अयोग्य व्यक्ति को अच्छा पद मिलना।

3. **'ओछे की प्रीति बालू की भीति' का भाव है-**

(a) बालू की दीवार कमजोर होती है

(b) ओछे लोग बालू की दीवार बनाकर रहते हैं

(c) बालू की दीवार की भाँति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है

(d) बालू ओछा पदार्थ होता है

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'ओछे की प्रीति बालू की भीति' का भाव है-बालू की दीवार की भाँति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है।

4. **'सबै दिन होत न एक समाना' लोकोक्ति का अर्थ है -**

(a) समय परिवर्तनशील है

(b) समय अपरिवर्तनशील है

(c) समय बेकार है

(d) समय पर न पहुंचना श्रेयष्कर है

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सबै दिन होत न एक समाना' लोकोक्ति का अर्थ है- समय परिवर्तनशील है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

5. **'जिस पत्तल में खाना, उसी पत्तल में छेद करना' कहावत का अर्थ है-**

(a) अपने हाथों अपना ही नुकसान करना

(b) कृतघ्न होना

(c) परोसे गये भोजन का निरादर करना

(d) मूर्खतापूर्ण कार्य करना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

जिस पत्तल में खाना, उसी पत्तल में छेद करना कहावत का अर्थ है- उपकारी का ही अपकार करना अर्थात् 'कृतघ्न होना'। अन्य विकल्प असंगत हैं।

6. **'तुच्छ मनुष्य की मित्रता शीघ्र ही समाप्त हो सकती है'-भाव को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है-**

(a) अधजल गगरी छलकत जाय

(b) थोथा चना बाजे घना

(c) कबहुँ निरामिष होय न कागा

(d) ओछे की प्रीति बालू की भीति

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'तुच्छ मनुष्य की मित्रता शीघ्र ही समाप्त हो सकती है'-भाव को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है-ओछे की प्रीति बालू की भीति।

7. **'कड़ाही से गिरा चूल्हे में आ पड़ा' का भाव है-**

(a) एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में आ पड़ना

(b) कड़ाही और चूल्हा पास-पास होता है

(c) एक बार भूल होती है तो बार-बार होती है

(d) कड़ाही चूल्हे में गिर गई

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'कड़ाही से गिरा चूल्हे में आ पड़ा' का भाव है-एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में आ पड़ना।

8. **'नई जमीन तोड़ना' के चार अर्थ दिये गये हैं, सही का चयन कीजिए-**

(a) पुराने को मिटाना (b) लिखे हुए को काटना

(c) अनूठा प्रयोग (d) बड़ी लकीर खींचना

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'नई जमीन तोड़ना' मुहावरे का अर्थ है- किसी नये क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करना अर्थात् अनूठा प्रयोग।

9. **'गूलर का फूल होना' मुहावरे का अर्थ है -**

(a) लाल पीला होना (b) अत्यधिक सुन्दर होना

(c) विवर्ण होना (d) दुर्लभ होना

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'गूलर का फूल होना' मुहावरे का अर्थ होता है - दुर्लभ होना।

10. **'असंभव काम करना' का अर्थक मुहावरा है-**

(a) आसमान के तारे तोड़ना (b) आसमान सिर पर उठाना

(c) आसमान पर दिमाग होना (d) आसमान पर चढ़ा देना

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'आसमान के तारे तोड़ना' मुहावरा का अर्थ 'असंभव काम करना' होता है।

11. **'बरस पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है?**

(a) अत्यधिक क्रोधित होना (b) वर्षा का होना

(c) प्रेम करना (d) सम्मान देना

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'बरस पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ 'अत्यधिक क्रोधित होना' होता है।

12. **'छठी का दूध याद आना' का सही अर्थ क्या है?**

(a) बुरा हाल होना (b) पराजित होना

(c) बचपन को याद करना (d) भूख लगना

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'छठी का दूध याद आना' मुहावरे का सही अर्थ 'भारी संकट में पड़ना' या 'अत्यधिक कठिन या कष्टप्रद होना' होता है। डॉ. हरदेव बाहरी अपनी पुस्तक 'हिन्दी : 'शब्द-अर्थ-प्रयोग' में इसका अर्थ 'संकट में पिछले सुख की याद आना' मानते हैं। उचित विकल्प न होने के कारण विकल्प (a) को उत्तर माना जा सकता है।

13. **'ऊँट के मुँह में जीरा' का सही अर्थ है—**

(a) बहुत थोड़ा

(b) ऊँट के मुँह में पीड़ा होना

(c) ऊँट को जीरा खिलाना

(d) पेट भरने के लिये कुछ भी खाना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'ऊँट के मुँह में जीरा' मुहावरे का अर्थ है—बहुत थोड़ा या जरूरत से कम मात्रा।

14. **'सिर पर पाँव रखकर भागना' मुहावरे का सही अर्थ है-**

(a) सर्कस दिखाना (b) तुरंत भाग जाना

(c) करतूत दिखाना (d) चोट पहुँचाना

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

''सिर पर पाँव रखकर भागना'' मुहावरे का अर्थ 'तुरंत भाग जाना' होता है।

निर्देश (प्रश्न 15 से 19 के लिए) : उद्धृत किये गये मुहावरों का सही अर्थ बताइए।

15. **कान पकड़ना**

(a) प्रतिज्ञा करना

(b) कान पक जाना

(c) गलती करने पर दूसरे के कान पकड़ना

(d) यह मुहावरा नहीं है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'कान पकड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है - गलती स्वीकार करना। वैसे इस मुहावरे का एकदम सही विकल्प नहीं दिया गया है, किन्तु कुछ हद तक विकल्प (a) सही है।

16. **नाक रगड़ना**

(a) खुजली करना (b) माफ़ी माँगना

(c) नाक में फुंसी होने पर रगड़ना (d) अर्थ ज्ञात नहीं

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'नाक रगड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है - माफ़ी माँगना।

17. **सिर मढ़ना**

(a) ज़बरदस्ती आरोप लगाना (b) सिर को सजाना

(c) सिर में कुछ गूँथना (d) सिर में दर्द होना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'सिर मढ़ना' मुहावरे का अर्थ है- जबरदस्ती आरोप लगाना।

18. **बात बनाना**

(a) कहानी कहना (b) सोचना

(c) बातें करना (d) बहाना करना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'बात बनाना' मुहावरे का सही अर्थ है- बहाना करना।

19. **आँखें भर आना**

(a) आँसू आ जाना (b) भाव-विभोर होना

(c) नींद आना (d) आँख दुखना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'आँखे भर आना' मुहावरे का अर्थ है - भाव-विभोर होना।

निर्देश (प्रश्न 20-22) : दिए गए मुहावरे-लोकोक्तियों का सही अर्थ छाँटिये -

20. **रंग उड़ना**

(a) घबरा जाना (b) रंग फीका होना

(c) गुलाल बिखेरना (d) रंग में डूबना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'रंग उड़ना' मुहावरे का सही अर्थ 'घबरा जाना' होता है।

21. विपत्ति मोल लेना

(a) बिना पत्ते की सब्जी लेना (b) जान-बूझ कर संकट में पड़ना
(c) एक दवाई खरीदना (d) मुसीबत खरीदना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'विपत्ति मोल लेना' मुहावरे का सही अर्थ है जान-बूझकर संकट में पड़ना।

22. आगे कुआँ, पीछे खाई

(a) दोनों ओर विपत्ति होना
(b) दोनों ओर गड्ढे होना
(c) पहले कुआँ खोदना, फिर खाई
(d) सामने कुआँ, पीठ पीछे खाई होना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'आगे कुआँ, पीछे खाई' लोकोक्ति का सही अर्थ है 'दोनों ओर विपत्ति होना'।

23. 'अंडे का शहजादा' मुहावरे का अर्थ है -

(a) कमजोर व्यक्ति (b) चालाक व्यक्ति
(c) अनुभवी व्यक्ति (d) अनुभवहीन व्यक्ति

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'अंडे का शहजादा' मुहावरे का अर्थ है- अनुभवहीन व्यक्ति'।

24. 'चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना' का अर्थ है -

(a) तेजी से चलना (b) घबरा जाना
(c) जवाब न देना (d) क्रोधित होना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना' का अर्थ होता है - 'घबरा जाना'।

25. 'खेत रहना' मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है-

(a) सम्पत्ति का बचा रह जाना (b) इज्जत बच जाना
(c) वीरगति को प्राप्त हो जाना (d) शत्रु से मुकाबला होना

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'खेत रहना' या 'खेत आना' मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है- 'वीरगति को प्राप्त हो जाना' या 'युद्ध में शहीद होना' ।

26. 'खेत रहना' मुहावरे का अर्थ है-

(a) युद्ध में शहीद होना
(b) कानूनी विवाद से जमीन का बच जाना
(c) जमीन बिक जाना
(d) जमीन खरीदना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'फूँक-फूँक कर कदम रखना' मुहावरे का अर्थ है -

(a) धीरे-धीरे चलना (b) डर कर कदम रखना
(c) फूँक मारते हुए पैर रखना (d) सोच-विचार कर काम करना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'फूँक-फूँक कर कदम रखना' मुहावरे का अर्थ 'सोच-विचार कर काम करना' होता है।

28. 'एकमात्र सहारा' मुहावरे का सही अर्थ है-

(a) आँखों का तारा
(b) नाक का बाल होना
(c) अन्धे की लाठी होना
(d) आँखें बिछाना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'अन्धे की लाठी होना' मुहावरे का सही अर्थ 'एकमात्र सहारा' होता है।

29. 'मुंह की खाना' मुहावरे का अर्थ है-

(a) भोजन करना (b) चोट खाना
(c) बुरी तरह हारना (d) गिर पड़ना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'मुँह की खाना' मुहावरे का अर्थ है- बुरी तरह हारना। अन्य विकल्प असंगत हैं।

30. 'मेंढकी को जुकाम होना' का अर्थ है-

(a) बिना जान-पहचान के लेनदेन
(b) बिना योग्यता के योग्य होने का नखरा
(c) भयंकर बरसात होना
(d) भयंकर सर्दी होना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'मेंढकी को जुकाम होना' का अर्थ है - बिना योग्यता के योग्य होने का नखरा। अन्य विकल्प असंगत हैं।

31. **'आकाश-पाताल एक करना' मुहावरा किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?**
(a) घनघोर वर्षा होना
(b) बहुत अधिक उपद्रव करना
(c) बहुत भारी प्रयास करना
(d) नीचे स्थान से ऊँचे स्थान पर पहुँचना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'आकाश पाताल एक करना' मुहावरे का अर्थ है- बहुत भारी प्रयास करना। अन्य विकल्प असंगत हैं।

32. **'अन्धे की लकड़ी' से तात्पर्य है-**
(a) बैसाखी का सहारा (b) अन्धे की विशेष छड़ी
(c) कुमार्ग पर चलना (d) एक ही सहारा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'अन्धे की लकड़ी' से तात्पर्य है-एक ही सहारा या एकमात्र सहारा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अन्धे से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं-

मुहावरा	**अर्थ**
अन्धा बनाना	मूर्ख बनाकर धोखा देना
अन्धे के हाथ बटेर लगना	बिना प्रयास के अप्राप्य वस्तु को पा लेना
अन्धों में काना राजा	अयोग्य व्यक्तियों के बीच कम योग्य भी बहुत योग्य होता है।

33. **'कागजी घोड़े दौड़ाना' मुहावरे का अर्थ होगा-**
(a) नकली घोड़े दौड़ाना (b) बहुत परिश्रम करना
(c) व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना (d) जाँच पड़ताल करना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कागजी घोड़े दौड़ाना' मुहावरे का अर्थ 'व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना' है।

34. **'आँख का काजल चुराना' मुहावरे का अर्थ है -**
(a) सामने या पास की वस्तु चुरा लेना।
(b) आँख में लगाने वाले काजल की चोरी करना।
(c) मामूली वस्तु की चोरी करना।
(d) असम्भव प्रकार की चोरी का प्रयत्न करना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आँख का काजल चुराना' मुहावरे का अर्थ 'सामने या पास की वस्तु चुरा लेना' अथवा 'सफाई से चोरी करना' होता है।

35. **'आँख फेरना' मुहावरे का अर्थ है -**
(a) प्रेमपूर्ण दृष्टि डालना
(b) पहले जैसा प्रेम न रखना
(c) किसी वस्तु को ऊपर से नीचे तक देखना
(d) किसी वस्तु पर उड़ती नज़र डालना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'आँख फेरना' मुहावरे का अर्थ 'पहले जैसा प्रेम न रखना' है।

36. **'पौ बारह होना' का अर्थ है -**
(a) विरोध होना (b) समर्थन करना
(c) कष्ट झेलना (d) मजे में रहना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पौ बारह होना' मुहावरे का अर्थ 'मजे में रहना' अथवा 'अत्यधिक लाभ कमाना' होता है।

37. **'घड़ों पानी पड़ना' मुहावरे का अर्थ होगा-**
(a) नहाना (b) काँपना
(c) लज्जित होना (d) सर्दी लगना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

'घड़ों पानी पड़ना' मुहावरे का अर्थ लज्जित होना अथवा बहुत शर्मिंदा होना होता है।

38. **'जूतियों में दाल बाँटना' मुहावरे का सही अर्थ है-**
(a) दुःखी होना (b) अपमान करना
(c) चापलूसी करना (d) लड़ाई-झगड़ा हो जाना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'जूतियों में दाल बाँटना' मुहावरे का सही अर्थ है-लड़ाई-झगड़ा हो जाना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ जूतियाँ/जूते चाटना मुहावरा का अर्थ 'चापलूसी करना' होता है।

39. **'कान भरना' मुहावरे का अर्थ है-**
(a) धोखा देना (b) चाणक होना
(c) चुगली करना (d) असर न हो

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कान भरना' मुहावरे का अर्थ चुगली करना होता है।

40. **'कीचड़ उछालना' मुहावरा का सही अर्थ है-**
(a) मल फेंकना (b) दूसरे के कपड़े गन्दे करना
(c) बदनाम करना (d) दलदल में फँसना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कीचड़ उछालना' मुहावरा का सही अर्थ है-बदनाम करना अथवा निन्दा करना।

41. **'आग में घी डालना' मुहावरा का सही अर्थ है-**

(a) हवन करना

(b) देवता को प्रसन्न करना

(c) क्रोधी को और अधिक उत्तेजित करना

(d) क्रोध से आग बबूला होना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

'आग में घी डालना' मुहावरा का सही अर्थ क्रोधी को और अधिक उत्तेजित करना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'आग से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं-

मुहावरा	अर्थ
आग पर तेल छिड़कना	और भड़काना
आग पर पानी डालना	झगड़ा मिटाना
आग और फूल का बैर होना	स्वाभाविक शत्रुता होना
आग बबूला होना	बहुत गुस्सा होना
आग में कूदना	जान जोखिम में डालना
आग लगने पर कुआँ खोदना	पहले से कोई उपाय न कर रखना
आग लगाकर तमाशा देखना	झगड़ा पैदा करके खुश होना

42. **'घड़ी में तोला घड़ी में माशा' का अर्थ है-**

(a) बहुत ही नाजुक मिजाज

(b) डण्डी मारने में कुशल व्यापारी

(c) ऐसा व्यापार जिसमें एक पल मुनाफा हो, तो दूसरे पल कहीं नुकसान

(d) जरा सी बात पर खुश और नाराज होना

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(d)

घड़ी में तोला घड़ी में माशा का अर्थ है-जरा सी बात पर खुश और नाराज होना।

43. **'सिर उठाना' मुहावरे का सही अर्थ है-**

(a) रंग उतर जाना

(b) भेद प्रकट करना

(c) बहुत पछताना

(d) विद्रोह करना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

'सिर उठाना' मुहावरे का सही अर्थ है- विद्रोह करना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सिर से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं–

मुहावरा	अर्थ
सिर गंजा करना	बुरी तरह पीटना
सिर पर कफन बाँधना	बलिदान देने के लिए तैयार होना
सिर पर खून सवार होना	मरने-मारने पर उतारू होना
सिर पर पाँव रखकर भागना	तुरन्त भाग जाना
सिर पर भूत सवार होना	धुन लग जाना
सिर पर सवार रहना	पीछे पड़ना
सिर मुँड़ाते ओले पड़ना	कार्य शुरू होते ही बाधा आना

44. **'गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा' मुहावरा का सही अर्थ है?**

(a) छोटे शिशु को तलाशना

(b) अत्यधिक शरारती बालक

(c) पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना

(d) छोटे बालक की प्रशंसा करना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

'गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा' मुहावरा का सही अर्थ 'पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना' है।

45. **'सोने में सुगन्ध' मुहावरा का सही अर्थ है-**

(a) सुन्दर वस्तु में और गुण होना

(b) सुगन्ध से युक्त आभूषण

(c) सुन्दर आभूषण होना

(d) सुगन्धित सोना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

'सोने में सुगन्ध' मुहावरा का सही अर्थ 'सुन्दर वस्तु में और गुण होना' है।

46. **'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ है-**

(a) गणित में निष्णात होना (b) अधिक हो जाना

(c) भाग जाना (d) साथ-साथ रहना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ है-भाग जाना।

47. **'चैन की बंशी बजाना' का अर्थ है-**

(a) साइकिल की चैन की बाँसुरी बनाकर बजाना

(b) मौज करना

(c) फुर्सत में बंशी बजाना
(d) बेरोजगार होना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'चैन की बंशी बजाना' का अर्थ आनन्द या मौज करना अथवा शान्त और सुखमय जीवन बिताना है।

48. 'घी के दिये जलाना' मुहावरा का सही अर्थ है-
(a) दीपावली मनाना
(b) खुशी मनाना
(c) रईसी प्रकट करना
(d) अपने को विशिष्ट समझना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'घी के दिये जलाना' मुहावरा का सही अर्थ खुशी मनाना है।

49. 'अदृश्य शत्रु' अर्थ के अनुरूप उपयुक्त मुहावरा है-
(a) मीठी छुरी (b) मुँह में राम बगल में छुरी
(c) पेट में दाढ़ी (d) आस्तीन का साँप

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'अदृश्य शत्रु' या 'कपटी मित्र' अर्थ के अनुरूप उपयुक्त मुहावरा 'आस्तीन का साँप' है।

50. 'कपटी मित्र' किस मुहावरे का सही अर्थ है?
(a) काठ का उल्लू होना (b) अक्ल का दुश्मन
(c) आस्तीन का साँप (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. निम्नलिखित में से किस मुहावरे का अर्थ 'असम्भव होना' नहीं होगा?
(a) चाँद पर थूकना (b) खरगोश के सींग निकलना
(c) पानी से घी निकालना (d) बालू से तेल निकालना

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चाँद पर थूकना मुहावरे का अर्थ 'व्यर्थ निन्दा या सम्मानीय का अनादर करना' होता है। अन्य मुहावरे का अर्थ 'असम्भव होना' होता है।

52. 'अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना' मुहावरा है-
(a) अपनी बातें छिपाना (b) अपनी निन्दा स्वयं करना
(c) अपनी प्रशंसा स्वयं करना (d) अपनी चर्चा करना

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना' मुहावरा का अर्थ अपनी प्रशंसा स्वयं करना है।

53. 'कलई खुलना' मुहावरे का सही अर्थ है-
(a) रंग उतर जाना (b) सच्चाई का पता लगना
(c) भेद प्रकट होना (d) चमक का गायब होना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कलई खुलना' मुहावरे का सही अर्थ है-भेद प्रकट होना।

54. 'न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी' इसका अर्थ है-
(a) काम से जी चुराना (b) मन लगाकर काम करना
(c) बुरा सोचना (d) असम्भव कार्य

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी' इसका अर्थ न पूरी होने वाली शर्त अथवा असम्भव कार्य होता है।

55. निम्नलिखित में से लोकोक्ति को चुनिए-
(a) अन्धे की लकड़ी
(b) नौ दो ग्यारह होना
(c) गले पड़ना
(d) अधजल गगरी छलकत जाय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

प्रस्तुत विकल्प (d) में अधजल गगरी छलकत जाय, लोकोक्ति है, शेष मुहावरे हैं।

56. पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल-
(a) शिक्षित होकर बेकार रहना
(b) योग्यता होते हुए भी विवशता के कारण निम्न स्तर का कार्य करना
(c) विद्या का अपमान करना
(d) फारसी पढ़े लोगों को प्रायः तेल बेचना पड़ता है

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल' लोकोक्ति का अर्थ है- योग्यता होते हुए भी विवशता के कारण निम्न स्तर का कार्य करना अथवा गुणवान होने पर भी दुर्भाग्य से छोटा काम मिलना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'पढ़े तो हैं गुने नहीं' लोकोक्ति का अर्थ है-पढ़-लिखकर भी अनुभवहीन।
➲ 'पकाई खीर पर हो गया दलिया' का अर्थ है- दुर्भाग्य।
➲ 'पगड़ी रख, घी चख' लोकोक्ति का अर्थ है-मान-सम्मान से ही जीवन का आनन्द है।

➲ 'पहले घर में फिर मस्जिद में' लोकोक्ति का अर्थ है-पहले अपने-आप को फिर दूसरों को देखा जाता है।

➲ 'पहले तोलो, पीछे बोलो' लोकोक्ति का अर्थ है-बात सोच-समझकर करनी चाहिए।

57. जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि-

(a) कवि बहुत तर्कशील होते हैं

(b) कवि बहुत भाव प्रवण होते हैं

(c) कवि बहुत विचारशील होते हैं

(d) कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि' लोकोक्ति का अर्थ है—कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कुछ महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ तथा उनके अर्थ इस प्रकार हैं-

लोकोक्ति	**अर्थ**
जहाँ गुड़ होगा, वहीं मक्खियाँ होंगी	जहाँ कोई आकर्षण होगा वहाँ लोग जमा होंगे ही।
जहाँ चार बासन होंगे, वहाँ खटकेंगे भी	जहाँ कुछ व्यक्ति होते हैं वहाँ कभी- कभी झगड़ा हो ही जाता है।
जहाँ चाह वहाँ राह	इच्छा हो तो काम करने का रास्ता निकल ही आता है।
जहाँ देखे तवा परात, वहाँ गुजारे सारी रात	जहाँ कुछ प्राप्ति होती हो, वहाँ लालची आदमी जम जाता है।
जहाँ फूल वहाँ काँटा	अच्छाई के साथ बुराई लगी रहती है।
जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सबेरा नहीं होता	किसी के बिना काम नहीं रुकता है।

58. 'उपाय वही सही होता है जिसका लोहा विरोधी भी माने'-इसके लिए सही लोकोक्ति है-

(a) आधा तीतर, आधा बटेर (b) चमत्कार को नमस्कार

(c) जादू वही जो सिर चढ़कर बोले (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'उपाय वही सही होता है जिसका लोहा विरोधी भी माने' इसके लिए सही लोकोक्ति है-जादू वही जो सिर चढ़कर बोले।

59. निम्नलिखित में से लोकोक्ति चुनिए-

(a) अंक भरना (b) आस्तीन का साँप

(c) कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगू तेली (d) तूती बोलना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगू तेली' लोकोक्ति है। शेष मुहावरे हैं।

60. 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' से तात्पर्य है-

(a) नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना

(b) धीरे-धीरे चलना

(c) चलने की कोशिश करना

(d) अधिक परिश्रम का थोड़ा फल मिलना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' से तात्पर्य है-अधिक परिश्रम का थोड़ा फल मिलना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ नौ अंक से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं-

लोकोक्ति/कहावतें	**अर्थ**
नौ नकद, न तेरह उधार	नकद का काम उधार के काम से अच्छा है।
नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली	जीवन भर कुकर्म करते रहे, अन्त में भले बन बैठे।

61. 'आडम्बर बहुत किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं' के लिए सही लोकोक्ति है-

(a) आँख का अन्धा, नाम नयनसुख

(b) ऊँची दुकान, फीका पकवान

(c) ऊँट के मुँह में जीरा

(d) खोदा पहाड़, निकली चुहिया

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'आडम्बर बहुत किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं' के लिए सही लोकोक्ति है-ऊँची दुकान, फीका पकवान।

62. 'भई गति साँप छछून्दर केरी' लोकोक्ति का अर्थ है?

(a) साँप और छछून्दर जैसा होना

(b) साँप का छछून्दर जैसा होना

(c) दुविधा में पड़ जाना

(d) छछून्दर का साँप हो जाना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'भई गति साँप छछून्दर केरी' लोकोक्ति का अर्थ 'असमंजस या दुविधा में पड़ जाना' होता है।

63. **'तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता' का सही अर्थ होगा—**
(a) बुरी आदत का शिकार होना (b) झूठा दिखावा करना
(c) बहुत गरीब होना (d) रोब डालना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता' का सही अर्थ 'झूठी रईसी दिखाना' या 'झूठा दिखावा' करना होता है।

64. **'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' का अर्थ है-**
(a) खतरा उठाना
(b) आगे-आगे दौड़ना
(c) पेड़ पर चढ़कर खेलना
(d) चालाकी का जवाब चालाकी से देना

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' का अर्थ 'चालाकी का जवाब चालाकी से देना' है।

65. **'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' लोकोक्ति का सही अर्थ है-**
(a) अन्धा परन्तु विवेकशील होना (b) मूर्ख धनी
(c) अन्धे के पास धन होना (d) आँखों का रोग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' लोकोक्ति का सही अर्थ 'मूर्ख धनी' होता है।

66. **'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' – इस लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है-**
(a) एकदम मूर्ख
(b) जो अपना हित-अहित न समझे
(c) मूर्ख किंतु धनी
(d) बिना विचारे धन खर्च करने वाला

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

67. **'अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता' का अर्थ होगा-**
(a) स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है
(b) विपत्ति में पड़े बिना अच्छा फल नहीं मिलता
(c) प्रयत्न किये बिना वास्तविकता सामने नहीं आती
(d) स्वयं ही सब कार्य करना पड़ता है

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता' लोकोक्ति का अर्थ है-स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है।

निर्देश (प्रश्न 68-77 के लिये) इन प्रश्नों में एक वाक्य दिया गया है, जिसका एक भाग रेखांकित है। उस भाग का सही अर्थ नीचे दिये गये चार विकल्पों में से चुनिये।

68. **दुर्घटना का दृश्य देखकर नीलिमा का <u>कलेजा पसीज गया</u>।**
(a) दिल बैठ जाना (b) हालत खराब होना
(c) गर्मी लगना (d) दया उत्पन्न होना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'दया उत्पन्न होना' होता है।

69. **मन्त्री के आने पर जनता ने उन्हें <u>आँख उठाकर भी नहीं देखा</u>।**
(a) चुप रहना (b) जी चुराना
(c) ध्यान तक न देना (d) अनसुनी करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'ध्यान तक न देना' अथवा 'तिरस्कार करना' होता है।

70. **महाराज दशरथ <u>यथा नाम तथा गुण</u> थे।**
(a) नाम मात्र की उपयोगिता (b) जैसा नाम वैसे ही गुण
(c) उपयोगिता विहीन (d) गुणवान

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रेखांकित लोकोक्ति का अर्थ 'जैसा नाम वैसे ही गुण' है।

71. **<u>बार-बार नाक रगड़ने</u> पर भी पुलिस ने अशोक को नहीं छोड़ा।**
(a) विनती करना (b) खुशामद करना
(c) अधीन होना (d) बीमार पड़ना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'विनती करना' अथवा 'गिड़गिड़ाना' है।

72. **कोई काम न करके श्रीमती सन्ध्या दिन भर <u>मक्खी मारा</u> करती हैं।**
(a) जीव हत्या करना (b) कीड़े-मकोड़े मारना
(c) घिनौने काम करना (d) खाली बैठना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'खाली बैठना' अथवा 'बेकार रहना' होता है।

73. **<u>सब्ज बाग दिखा कर</u> निशीथ ने कपिल से एक हजार रुपये ठग लिये।**
(a) घुमाने ले जाना (b) बाग की हरियाली दिखाना
(c) प्रकृति निरीक्षण करना (d) झूठा आश्वासन देना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'झूठा आश्वासन देना' अथवा 'अच्छी बातें कहकर बहकाना' होता है।

74. एकाएक प्रधानाचार्य को आया देखकर आपस में लड़ रहे विद्यार्थी हक्का-बक्का हो गये।

(a) अचरज में पड़ना (b) भयभीत होना

(c) भाग जाना (d) छुप जाना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'अचरज में पड़ना' होता है।

75. मेरा इतना नुकसान हो गया और तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।

(a) दिल्लगी करना (b) मजे में रहना

(c) खेल खेलना (d) हँसना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'हँसी-दिल्लगी करना' होता है।

76. किसी अजनबी को देखकर कुत्ते आपे में नहीं रहते, भों-भों करने लग जाते हैं।

(a) होश में न रहना (b) मिथ्या बकवास करना

(c) क्रोध में भड़क उठना (d) अपनी सुध खो देना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'क्रोध में भड़क उठना' होता है।

77. विपिन को समझाना बेकार है, वह तो औंधी खोपड़ी है।

(a) बेवकूफ आदमी (b) निपट मूर्ख

(c) खोपड़ी उल्टी होना (d) सोते रहना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'निपट मूर्ख' अथवा 'मूर्खता' होता है।

निर्देश (प्रश्न 78-82 के लिये)—इन प्रश्नों में लोकोक्तियों/मुहावरे को सही विकल्प चुनकर पूर्ण कीजिए।

78. घर आया——भी नहीं निकाला जाता।

(a) मेहमान (b) कुत्ता

(c) रिश्तेदार (d) ब्राह्मण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'घर आया कुत्ता भी नहीं निकाला जाता' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'कुत्ता' होगा।

79. धोये जो सौ बार तो——होये ना सेत।

(a) कपड़ा (b) आदमी

(c) काजर (d) गन्दा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रिक्त स्थान पर 'काजर' होगा, क्योंकि 'धोये जो सौ बार तो काजर होये ना सेत' लोकोक्ति है।

80. ज्यों ज्यों भीजे——त्यों त्यों भारी होय।

(a) कामरी (b) कमली

(c) उधारी (d) कर्जा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों-त्यों भारी होय' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'कामरी' होगा।

81. ——के मुँह में हाथ डालना

(a) कुत्ते (b) बकरी

(c) शेर (d) गीदड़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रिक्त स्थान पर 'शेर' होगा, क्योंकि 'शेर के मुँह में हाथ डालना' मुहावरा है जिसका अर्थ वीरता का कार्य करना है।

82. दान की बछिया के——नहीं देखे जाते।

(a) कान (b) मुँह

(c) आँख (d) दाँत

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'दाँत' होगा।

निर्देश (प्रश्न 83 से 87 के लिये)—इन प्रश्नों में एक मुहावरा/लोकोक्ति दिया गया है, जिसके नीचे चार विकल्पों में उसके अर्थ दिए गए हैं। एक अर्थ सही है और यही सही विकल्प है। सही विकल्प चुनिए।

83. आँख के अन्धे गाँठ के पूरे-

(a) धनी परन्तु मूर्ख (b) गरीब किन्तु अक्लमन्द

(c) धनी परन्तु अक्लमन्द (d) गरीब परन्तु मूर्ख

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'आँख के अन्धे, गाँठ के पूरे' मुहावरा का अर्थ 'धनी परन्तु मूर्ख' है।

84. गागर में सागर भरना-

(a) संक्षिप्त बात को विस्तृत रूप में कहना

(b) संक्षिप्त बात को संक्षेप में कहना

(c) विस्तृत बात को संक्षेप में कहना

(d) विस्तृत बात को विस्तृत रूप में कहना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'गागर में सागर भरना' मुहावरे का अर्थ 'विस्तृत बात को संक्षेप में कहना' है।

85. चोर के पैर नहीं होते-

(a) पापी का मन स्थिर होता है

(b) पापी का मन अस्थिर होता है

(c) पवित्र व्यक्ति का मन अस्थिर होता है

(d) गरीब का मन अस्थिर होता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'चोर के पैर नहीं होते' मुहावरे का अर्थ है- 'पापी का मन अस्थिर होता है।'

86. पेट भरे मन-मोदक से कब

(a) पुरुषार्थ से किसी काम में सफलता न मिलना

(b) सच्चाई व ईमानदारी से किसी काम में सफलता मिलना

(c) केवल भगवान के नाम लेने से किसी काम में सफलता न मिलना

(d) केवल सोचते रहने से किसी काम में सफलता न मिलना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'पेट भरे मन-मोदक से कब' मुहावरे का अर्थ 'केवल सोचते रहने से किसी काम में सफलता न मिलना' है।

87. अरहर की टट्टी गुजराती ताला-

(a) बड़ी वस्तु के लिये अधिक व्यय करना

(b) बड़ी वस्तु के लिये कम व्यय करना

(c) छोटी वस्तु के लिये अधिक व्यय करना

(d) छोटी वस्तु के लिये कम व्यय करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'अरहर की टट्टी गुजराती ताला' मुहावरे का अर्थ 'छोटी वस्तु के लिए अधिक व्यय करना' है।

88. 'कान काटना' मुहावरे का अर्थ है-

(a) कटखाना होना (b) चतुर होना

(c) मूर्ख होना (d) विनम्र होना

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'कान काटना' मुहावरे का अर्थ 'चतुर होना' होता है।

89. 'बहती गंगा में हाथ धोना' का सही अर्थ है-

(a) चातुर्यवृत्ति से काम निकालना

(b) अपना काम निकालना

(c) पुण्य का कार्य कराना

(d) अवसर का लाभ उठाना

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'बहती गंगा में हाथ धोना' का सही अर्थ 'अवसर का लाभ उठाना' है।

90. 'अवांछित संवाद' अर्थ के लिए उपयुक्त मुहावरा है-

(a) सिर खपाना (b) सिर खाना

(c) सिर नीचा होना (d) सिर पड़ना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'सिर खाना' मुहावरा का अर्थ 'कोई बात बार-बार कहकर किसी को परेशान करना' अर्थात् 'अवांछित संवाद' होता है। 'सिर खपाना' मुहावरा का अर्थ ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लाभ न हो और व्यर्थ मस्तिष्क थक जाय। 'सिर नीचा होना' मुहावरा का अर्थ 'अपमानित होना' होता है। 'सिर पड़ना' मुहावरा का अर्थ उत्तरदायित्व या भार आकर पड़ना होता है।

91. निम्नलिखित में कौन गलत सुमेलित हैं?

(a) अँगूठे पर मारना - परवाह न करना

(b) कान काटना - मात देना

(c) नजर करना - भेंट करना

(d) नजर पर चढ़ना - आँख बचाना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'नजर पर चढ़ना' मुहावरे का अर्थ 'सन्देह होना' या 'पसन्द आना' होता है। शेष विकल्प सुमेलित हैं।

92. 'शैतान की आँत' का अर्थ है-

(a) अत्यन्त धूर्त व्यक्ति (b) नगण्य वस्तु

(c) बहुत लम्बी वस्तु (d) अत्यन्त लाभदायक वस्तु

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'शैतान की आँत' का अर्थ 'बहुत लम्बी-चौड़ी वस्तु या बात' है।

93. 'आँख की किरकिरी होने' का अर्थ है-
(a) अप्रिय लगना (b) धोखा देना
(c) कष्टदायक होना (d) बहुत प्रिय होना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आँख की किरकिरी होना' का अर्थ जिसे देखकर कष्ट हो अर्थात् 'अप्रिय लगना' होता है।

❑ शब्द रूप

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं?
(a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) सात

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द - भेद चार प्रकार के हैं - (i) तत्सम, (ii) तद्भव, (iii) देशज एवं (iv) विदेशी। वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहे जाते हैं। वे शब्द जो संस्कृत से विकृत कर हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव कहलाते हैं। वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता और आवश्यकतानुसार भाषा में प्रयुक्त होते हैं, देशज शब्द कहलाते हैं। वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से ग्रहण करके हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, विदेशी शब्द कहलाते हैं।

2. व्यवहार के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?
(a) पाँच (b) चार
(c) तीन (d) दो

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

शब्दों के भेद निम्नलिखित आधारों पर होते हैं-
1. वाक्य में प्रयोग के आधार पर - सार्थक शब्द तथा निरर्थक शब्द।
2. रचना या बनावट के आधार पर रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द तथा योगरूढ़ शब्द।
3. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर तत्सम तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द।
4. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर -विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द।
5. अर्थ की दृष्टि से-पर्यायवाची, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, एकार्थी शब्द तथा समानाभासी शब्द युग्म। इनके अतिरिक्त व्यवहार में दो तरह के शब्दों का भी प्रयोग होता है- सामान्य शब्द तथा तकनीकि शब्द । जो शब्द सामान्य रूप में दैनिक जीवन में बोल-चाल के रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे सामान्य शब्द होते हैं, जबकि वे शब्द जो किसी विशेष विषय, यथा विज्ञान, व्यवसाय इत्यादि में प्रयुक्त होते हैं और उनके विशेष अर्थ भी निकलते हैं, तकनीकि शब्द कहलाते हैं।

3. मुस्लिम शासकों के समय भारत में न्यायालयों की भाषा कौन-सी थी?
(a) उर्दू (b) संस्कृत
(c) हिन्दी (d) अरबी-फ़ारसी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

मुगल काल में अरबी-फारसी को राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त था। यह शिक्षा का माध्यम होने के साथ राजकीय कार्यों न्यायालयों एवं सरकारी कामकाज की भाषा थी।

4. 'कैंची' किस भाषा का शब्द है?
(a) हिन्दी (b) अंग्रेजी
(c) पुर्तगाली (d) तुर्की

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'कैंची', आका, कुली, तोप, बहादुर, मुगल, चेचक, सौगात, सुराग, लाश, चमचा, चुगुल, लफंगा, तलाश, तमगा, जाजिम, उर्दू, कालीन इत्यादि तुर्की भाषा के शब्द हैं।

5. 'अचार' शब्द किस भाषा से आकर हिन्दी में प्रयुक्त हुआ है?
(a) पुर्तगाली भाषा से (b) अरबी से
(c) फारसी से (d) फ्रेंच से

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'अचार' पुर्तगाली भाषा का शब्द है, जो हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होता है। पुर्तगाली भाषा के अन्य शब्द हैं- काफी, काजू, पपीता, आलपीन, आलमारी, गमला, पिस्तौल, इस्पात, कमीज, कमरा, बम्बा, बाल्टी, तम्बाकू, तौलिया, नीलाम, पादरी, सन्तरा इत्यादि।

6. निम्नलिखित में से एक युग्म अशुद्ध है, वह है -
(a) सौदागर - फारसी शब्द (b) समन - अंग्रेजी शब्द
(c) आलमारी - तुर्की शब्द (d) किताब - अरबी शब्द

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आलमारी, गोभी, अनन्नास, इस्त्री, इस्पात, कप्तान, कमरा, काज, काफी, काजू, गमला, गोदाम, पिस्तौल, आलपीन इत्यादि पुर्तगाली शब्द हैं। समन, मजिस्ट्रेट, वारंट, पेंशन, कौंसल, फीस, डिक्री, शेयर, अपील, पॉलिसी, वारंटी, रेल, जूरी, टैरिफ, रजिस्ट्रार, बैंक, चेक, ड्राफ्ट इत्यादि अंग्रेजी शब्द हैं। सौदागर, कारीगर, जादूगर, कलईगर इत्यादि फारसी शब्द हैं। किताब, हाकिम, हिरासत, फैसला, मुंशिफ इत्यदि अरबी शब्द हैं।

7. 'आलपीन' और 'गमला' किस विदेशी भाषा के शब्द हैं?
(a) फ्रेंच (b) पुर्तगाली

(c) अंग्रेजी (d) जापानी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'वकील' किस भाषा का शब्द है?

(a) फारसी का (b) अरबी का

(c) तुर्की का (d) पुर्तगाली का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'वकील' अरबी भाषा का शब्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अजब, अदा, अमीर, अजीब, अजायब, अदावत, अक्ल, असर, अहमक, अल्ला, आसार, आखिर, आदमी, आदत, इनाम, इजलास, इज्जत, इमारत, इस्तीफा, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औसत, औलाद, कसूर, कदम, कब्र, कसर, कमाल, कर्ज, किस्त, किस्मत, किस्सा, कसम, कीमत, कसरत, कुर्सी, किताब, कायदा, कातिल, खबर, खत्म, खत, खिदमत, खराब, खयाल, गरीब, गैर, जाहिल, जिस्म, जलसा, जनाब, जवाब, जहाज, जालिम, जिक्र, जिहन इत्यादि अरबी शब्द हैं।
- तमाम, तकाजा, तकदीर, तारीख, तकिया, तमाशा, तरफ, तै, तादाद, तरक्की, तजुरबा, दाखिल, दिमाग, दवा, दावा, दावत, दफ्तर, दगा, दुआ, दफा, दल्लाल, दुकान, दिक, दुनिया, दौलत, दान, दीन, नतीजा, नशा, नाल, नकद, नकल, नहर, फकीर, फायदा, फैसला, बाज, बहरु, बाकी, मुहावरा, मदद, मुद्दई, मरजी, माल, मिसाल, मजबूर, मुंसिफ, मालूम, मामूली, मुकदमा, मुल्क, मल्लाह, मवाद, मौसम, मौका, मौलवी, मुसाफिर, मशहूर, मजमून, मतलब, मानी, मात, यतीम, राय, तिहाज, लफ्ज, लहजा, लिफाफा, लियाकत, वारिस, वहम, शराब, हिम्मत, हैजा, हरामी, हद, हज्जाम, हक, हुक्म, हाजिर, हाल, हाशिया, हाकिम, हमला, हवालात, हौसला इत्यादि भी अरबी शब्द हैं।

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक फारसी भाषा का है -

(a) कबूतर (b) कठफोड़वा

(c) मोर (d) कौवा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

कबूतर, अफसोस, अदा, आराम, आवारा, चपरासी, अदालत, सिपाही, तहसीलदार, चौकीदार, कमीज, कुर्ता, पायजामा, मोजा, सलवार, चादर, रजाई, रूमाल, चूड़ी, बरफी, जलेबी, हलवा, बादाम, अनार, अंगूर, अंजीर, अन्दाज, आजाद, शिकायत, सिफारिश, जिन्दगी, चश्मा, जमीन, हजार, नापसन्द, नौका, बस्ता, हुनर, मजा, सब्जी, रेशम, सर्दी, खरगोश, कारखाना, परगना, तहसील, जिला, शहर, देहात, कस्बा, साबुन, आईना, कुर्सी, तख्त, मेज, बुखार, नमाज, इत्यादि फारसी शब्द हैं।

10. फलों के निम्नलिखित नामों में से कौन-सा फारसी भाषा का है?

(a) आम (b) जामुन

(c) केला (d) अंगूर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. निम्नलिखित शब्दों में फारसी भाषा का शब्द नहीं है -

(a) अदालत (b) सिफारिश

(c) चश्मा (d) तारीख

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. उद्गम की दृष्टि से 'अमीर' है-

(a) देशज शब्द (b) विदेशज शब्द

(c) तत्सम शब्द (d) तद्भव शब्द

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उद्गम की दृष्टि से 'अमीर' विदेशज शब्द है। यह अरबी शब्द है।

13. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विदेशी स्रोत का है?

(a) रोशनदान (b) आलस

(c) उलूक (d) आज

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'रोशनदान' फारसी शब्द है। अन्य फारसी शब्द हैं– शादी, शिकार, बाजार, बर्फ, जादू, चपरासी, कसूर, कारनामा, नमक, फैसला आदि। आलस तथा आज तद्भव शब्द एवं उलूक तत्सम शब्द है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक अंग्रेजी भाषा का नहीं है -

(a) लालटेन (b) रेल

(c) इंच (d) कूपन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

लालटेन, रेल, इंच अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं, जबकि कूपन, कारतूस तथा अंग्रेज, फ्रांसीसी (फ्रेंच) भाषा के शब्द हैं।

15. 'कारतूस' किस भाषा का शब्द है?

(a) अरबी (b) फारसी

(c) फ्रेंच (d) तुर्की

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित शब्दों में से एक विदेशी भाषा का नहीं है -

(a) औरत (b) कमीज

(c) गमला (d) बूँद

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

बूँद तद्भव शब्द है, इसका तत्सम बिन्दु है। गमला तथा कमीज पुर्तगाली शब्द हैं। औरत, अरबी शब्द है।

17. हिन्दी में प्रयुक्त शब्द 'बाल्टी' शब्द भण्डार की दृष्टि से किस तरह का शब्द है?

(a) तत्सम (b) तद्भव

(c) देशज (d) विदेशज

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

हिन्दी में प्रयुक्त शब्द 'बाल्टी' विदेशज (पुर्तगाली) शब्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ संतरा, साबुन, तौलिया आदि पुर्तगाली शब्द हैं।

➲ बजट, स्वेटर, फीस, टाई, कर्फ्यू आदि विदेशी शब्द हैं।

➲ दो भाषाओं के योग से बनने वाले शब्दों को संकर शब्द कहते हैं।

➲ टिकटघर (अंग्रेजी-हिन्दी), रेलगाड़ी (अंग्रेजी-हिन्दी), अजायबघर (अरबी-हिन्दी), अणुबम (संस्कृत-अंग्रेजी), सिनेमाघर (अंग्रेजी-हिन्दी), मालगोदाम, कपड़ा-मिल इत्यादि संकर शब्द हैं।

➲ फिजूलखर्च (अरबी-फारसी), बीमा-पॉलिसी (फारसी-अंग्रेजी), पार्टीबाजी (अंग्रेजी-फारसी), जेलखाना (अंग्रेजी-फारसी) डाकखाना (अंग्रेजी-फारसी) संकर शब्द हैं।

18. 'बाल्टी' कैसा शब्द है?

(a) तत्सम (b) तद्भव

(c) देशज (d) विदेशज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'अजायबघर' है-

(a) देशी शब्द (b) विदेशी शब्द

(c) तद्भव शब्द (d) संकर शब्द

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'संकर' शब्द का अर्थ है-

(a) तत्सम शब्द

(b) तद्भव

(c) विदेशी शब्द

(d) दो भाषाओं के शब्दों से मिलकर बना शब्द

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'रेलगाड़ी' शब्द है-

(a) तद्भव (b) विदेशी

(c) देशज (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'जमादार' शब्द स्रोत के आधार पर किस वर्ग का शब्द है?

(a) फारसी (b) अरबी

(c) तुर्की (d) संकर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'जमादार' संकर शब्द है। यह जमा (अरबी) + दार (फारसी) शब्दों से मिलकर बना है।

23. 'रिपोर्ताज' किस भाषा का शब्द है?

(a) फ्रांसीसी (b) अंग्रेजी

(c) पुर्तगाली (d) जापानी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी (फ्रेंच) भाषा का शब्द है।

24. 'रिपोर्ताज' शब्द किस भाषा का है?

(a) अंग्रेजी (b) हिन्दी

(c) फ्रेंच (d) जर्मनी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'रिक्शा' शब्द किस भाषा का है?

(a) अंग्रेजी (b) उर्दू

(c) तुर्की (d) जापानी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'रिक्शा' जापानी शब्द है।

सम-सामयिक घटना चक्र

26. 'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके।' उन्हें कहते हैं -
(a) रूढ़ (मूल) (b) योगरूढ़
(c) यौगिक (d) प्रयुक्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके' उन्हें रूढ़ या मूल शब्द कहते हैं। जैसे- हाथ, कलम, राम इत्यादि।

27. निम्नलिखित में यौगिक शब्द छाँटिए-
(a) दशानन (b) परोपकार
(c) चतुर्मुख (d) गोपाल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

गोपाल यौगिक शब्द है। यह दो सार्थक शब्दों गो+पाल से मिलकर बना है। दशानन, परोपकार तथा चतुर्मुख योगरूढ़ शब्द हैं।

28. योगरूढ़ शब्द कौन है?
(a) योद्धा (b) दशानन
(c) राक्षस (d) सुर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों से मिलकर बने हों, किन्तु जिनका प्रयोग सामान्य अर्थ के लिए न होकर किसी विशेष अर्थ के लिए होता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे-दशानन, पीताम्बर, वीणावादिनी आदि।

29. 'दशानन' निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द है?
(a) रूढ़ (b) योगरूढ़
(c) यौगिक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'पंकज' शब्द निम्न में से किससे सम्बन्धित है?
(a) रूढ़ शब्द (b) यौगिक शब्द
(c) योगरूढ़ शब्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

ऐसे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। जैसे-लम्बोदर, पंकज, चक्रपाणि, जलज इत्यादि। 'पंक+ज' का अर्थ है कीचड़ से (में) उत्पन्न; पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जायेगा, अतः 'पंकज' योगरूढ़ शब्द है।

31. निम्नांकित में योगरूढ़ शब्द है-
(a) विशालकाय (b) पुष्प
(c) कुमुदिनी (d) पंकज

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित शब्दों में योगरूढ़ शब्द कौन-सा है?
(a) चक्रपाणि (b) पाठशाला
(c) उपचार (d) अभिव्यक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द देशज है?
(a) धरती (b) पेड़
(c) पुस्तक (d) आग

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

पेड़, ,खादी, कबड्डी, गड़बड़, घपला, घूँट, चंपत, चूहा, झंझट, टट्टू, टीस, ठेठ, ठेस, तेंदुआ, थेथा, धब्बा, पेठा, भर्ता इत्यादि देशज शब्द हैं। धरती, पुस्तक तथा आग तद्भव शब्द हैं।

34. निम्नलिखित शब्दों में कौन देशज है?
(a) सुन्दर (b) अँगूठा
(c) फटाफट (d) सायकिल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

फटाफट देशज शब्द है। अँगूठा तद्भव तथा सायकिल विदेशी (अंग्रेजी) शब्द है।

35. 'गड़बड़ घोटाला' कौन-सा शब्द है?
(a) तद्भव (b) देशज
(c) तत्सम (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'गड़बड़ घोटाला' देशज शब्द है। जिन शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में पता नहीं चलता एवं बोलचाल की भाषा में स्वतः निर्मित होते हैं, उन्हें देशज या देशी शब्द कहते हैं। अन्य देशज शब्द इस प्रकार हैं—आस-पास, झिलमिल, झुग्गी, झाड़, काका, बाबा, लाला, पों-पों, खुसुर-फुसुर, तोंद, डकार, डिबिया, खर्राटा, धक्का, खटपट, जगमग, टक्कर, ठकठक,सरसर ऊंटपटांग, चपटा, अटकल, हल्ला, खचाखच, थप्पड़, भोंदू, झनकार टोंटी, भड़ास, हिचकी आदि।

36. निम्नलिखित में से 'तद्भव-तत्सम' का कौन-सा एक युग्म गलत है?

(a) हल्दी - हरिद्रा (b) अफीम - अहिफेन

(c) अदरक - आर्द्रक (d) सेठ - श्रेष्ठ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का तद्भव-तत्सम युग्म गलत है। इसका शुद्ध युग्म सेठ-श्रेष्ठी है। शेष विकल्पों के युग्म सही है।

37. जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें कहा जाता है-

(a) तत्सम (b) तद्भव

(c) देशज (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें देशज कहा जाता है। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिए उन्हें देशज कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ हेमचन्द्र ने उन शब्दों को 'देशी' कहा है, जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमों से नहीं हुई। लोकभाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता है।

➲ विदेशी विद्वान जॉन बीम्स ने देशज शब्दों को मुख्य रूप से अनार्यस्रोत से सम्बद्ध माना है।

➲ तेंदुआ, चिड़िया, कटरा, अण्टा, ठेठ, कटोरा, खिड़की, ठुमरी, खखरा, चमक, जूता, कलाई, फुनगी, खिचड़ी, पगड़ी, बियाना, लोटा, डिबिया, डोंगा, डाब इत्यादि देशज शब्द हैं।

38. निम्नलिखित में से तत्सम-तद्भव के मेल की दृष्टि से शुद्ध युग्म है-

(a) हरिद्रा - हरिद्वार (b) पृष्ठ - पन्ना

(c) पर्यंक - परख (d) चुल्लीक - चूल्हा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत शब्द क्रमशः तत्सम - तद्भव की दृष्टि से शुद्ध है। अन्य विकल्पों के तत्सम - तद्भव सही शब्द क्रमशः इस प्रकार हैं - हरिद्रा - हल्दी, पृष्ठ - पीठ तथा पर्यंक - पलंग।

39. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(a) ओझा - उपाध्याय (b) कपास - कर्पट

(c) केला - कदली (d) पसीना - प्रस्विन्न

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत युग्म सही सुमेलित नहीं है। कपास तद्भव शब्द है, इसका तत्सम कर्पास होता है। कर्पट तत्सम शब्द है, इसका तद्भव कपड़ा होता है।

40. निम्नलिखित शब्द-युग्मों में कौन-सा असंगत है?

(a) अफसोस - फारसी

(b) कैंची - तुर्की

(c) गमला - पुर्तगाली

(d) कारतूस - अंग्रेजी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

कारतूस, फ्रांसीसी शब्द है। शेष विकल्प सुमेलित हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ **फारसी शब्द**-चश्मा, दरबार, ज़मीन, ज़मीनदार, शादी, पज़ामा, मगर, बाज़ार, गिलावा, चालाक, रूमाल आदि।

➲ **तुर्की शब्द**-कुली, बावर्ची, गलीचा, चाकू, चम्मच, लाश आदि।

➲ **पुर्तगाली शब्द**-नीलाम, प्याला, बाल्टी, आलू, जंगला, बोतल आदि।

➲ **अंग्रेजी शब्द**-स्टेशन, टिकट, लालटेन, बस, रेल, पेट्रोल, मशीन, बटन, बिस्कुट, कॉलर, जेल, बल्ब, ब्लेड, स्कूल आदि।

➲ **अरबी शब्द**- अदालत, ताज्जुब, एतराज, फकीर, अहसान, कत्ल, खत, खजाना, किताब, तहसील आदि।

➲ **फ्रांसीसी शब्द**-अंग्रेज, कूपन, लाभ आदि।

➲ **ग्रीक शब्द**-रास, सुरंग आदि।

➲ **चीनी शब्द**-लीची, चाय आदि।

41. 'चाय' किस भाषा का शब्द है?

(a) चीनी (b) जापानी

(c) फ्रेंच (d) अंग्रेजी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. सूची-I को सूची-II के साथ सही सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) संकल्प	1. तद्भव
(B) सूरज	2. देशी
(C) काका	3. तत्सम
(D) मोटर	4. विदेशी

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	4	3
(c)	3	1	2	4
(d)	4	1	2	3

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
संकल्प	तत्सम
सूरज	तद्भव
काका	देशी
मोटर	विदेशी

43. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(A) खचाखच	(i) योगरूढ़ शब्द
(B) मुरलीधर	(ii) तद्भव शब्द
(C) टिकटघर	(iii) देशज शब्द
(D) साँप	(iv) संकर शब्द

	A	B	C	D
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
खचाखच	देशज शब्द
मुरलीधर	योगरूढ़ शब्द
टिकटघर	संकर शब्द
साँप	तद्भव शब्द

44. निम्नलिखित शब्द युग्मों में असंगत युग्म है-

(a) गोबर - तद्भव (b) नाक - रूढ़
(c) कमलनयन - यौगिक (d) मधुमास - योगरूढ़

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कमलनयन योगरूढ़ शब्द है। इसका विच्छेद कमल+नयन है, जो सामान्य अर्थ को प्रकट न करके विशेष अर्थ प्रकट करता है, जिसका अर्थ विष्णु होता है। शेष युग्म सही हैं।

45. संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, वे कहे जाते हैं -

(a) तद्भव (b) तत्सम
(c) संकर (d) देशज

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, वे तत्सम शब्द कहे जाते हैं।

46. निम्नलिखित में कौन 'देशज' शब्द है?

(a) जूता (b) कीमत
(c) हैजा (d) देहात

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. विसर्ग का प्रयोग किन शब्दों में नहीं होता है?

(a) तद्भव (b) तत्सम
(c) संकर (d) इनमें से सभी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

हिन्दी के अपने तद्भव शब्द-भण्डार की वर्तनी में विसर्ग नहीं होता, जबकि संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे तत्सम रूप में प्रयुक्त हों, तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाता है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?

(a) भ्रमर (b) व्याघ्र
(c) क्षीर (d) कोयल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'कोयल' तद्भव शब्द है। इसका तत्सम 'कोकिल' होता है। भ्रमर, व्याघ्र तथा क्षीर तत्सम शब्द है। इसका तद्भव क्रमश: भौंरा, बाघ तथा खीर है।

49. 'पतलून' किस भाषा का शब्द है?

(a) चीनी (b) जापानी
(c) हिन्दी (d) अंग्रेजी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'पतलून' शब्द अंग्रेजी भाषा के पैंटलून से बना है।

50. आँसू शब्द है-

(a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'आँसू' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम अश्रु' है।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तत्सम रूप है?

(a) अन्धकार (b) अंधियारा
(c) अन्धेरा (d) रात

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(a)

'अन्धकार' तत्सम शब्द है। इसका तद्भव अन्धेरा होता है।

52. नीचे दिये गये विकल्पों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए-

(a) बैंक (b) मुँह

(c) मर्म (d) प्रलाप

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'मुँह' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम 'मुख' होता है। बैंक विदेशी (अंग्रेजी) शब्द है।

53. 'गोधूम' का तद्भव है-

(a) गेहूँ (b) गोबर

(c) गाय (d) गोधन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

गोधूम तत्सम शब्द है, इसका तद्भव गेहूँ है। गाय तद्भव शब्द है, इसका तत्सम गो है।

54. 'स्फूर्ति' शब्द का तद्भव शब्द है-

(a) सुग्गा (b) सौत

(c) फुर्ती (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'स्फूर्ति' शब्द का तद्भव फुर्ती या फुरती है।

55. 'घोटक' का तद्भव रूप क्या है?

(a) हय (b) अश्व

(c) घोड़ा (d) तुरंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'घोटक' का तद्भव घोड़ा है। हय, अश्व तथा तुरंग, घोड़ा के पर्यायवाची हैं।

56. 'खेती' किस शब्द का तद्भव रूपान्तरण है?

(a) धरती (b) कृषि

(c) मैत्री (d) अक्षि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

'खेती' शब्द का तद्भव रूपान्तरण 'क्षेत्रित' है। धरती तद्भव शब्द है, इसका तत्सम धरित्री होता है। मैत्री तत्सम शब्द है, इसका तद्भव मित्रता होता है। अक्षि तत्सम शब्द है, इसका तद्भव आँख है। कृषि तत्सम शब्द है, जो खेती का पर्यायवाची है। उपर्युक्त विकल्पों में कोई भी उत्तर ग्राह्य नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना है।

57. 'डण्डा' शब्द है?

(a) तत्सम (b) तद्भव

(c) देशज (d) विदेशज

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

डण्डा तद्भव शब्द है। इसका तत्सम दण्ड होता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) सही माना है।

58. इनमें से कौन-सा शब्द तद्भव है?

(a) औरस (b) पावस

(c) दिगंत (d) पाश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'पावस' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम प्रावृष है, जो वर्षा ऋतु से सम्बन्धित है। शेष तत्सम शब्द हैं।

59. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?

(a) ताम्बूलिका (b) घट

(c) कपाट (d) मंजीठ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

मंजीठ तद्भव शब्द है। इसका तत्सम मञ्जिष्ठ है। ताम्बूलिका, घट, कपाट तत्सम शब्द है। इनका तद्भव क्रमशः तमोली, घड़ा, किवाड़ है।

60. निम्नलिखित शब्दों में से 'नया' का तत्सम रूप है—

(a) नव्य (b) नूतन

(c) नवल (d) नवीन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'नया' का तत्सम रूप 'नव्य' होता है। नूतन, नवीन, नवल, 'नया' का पर्यायवाची है।

61. निम्नलिखित शब्दों में से कौन तत्सम है?

(a) कुक्कुर (b) कुत्ता

(c) पिल्ला (d) कूकुर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

कुक्कुर तत्सम शब्द है, इसका तद्भव कुत्ता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) सही माना है।

62. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम कौन-सा है?**

(a) सिंगार (b) श्रृंगार

(c) शृंगार (d) पटार

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

शृंगार तत्सम शब्द है, इसका तद्भव सिंगार है। श्रृंगार वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध है।

63. **'मुकुट' शब्द निम्नलिखित में से किस कोटि का है?**

(a) तत्सम (b) देशज

(c) तद्भव (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'मुकुट' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव 'मौर' होता है।

64. **निम्नलिखित में तत्सम शब्द है-**

(a) मेघ (b) ठेस

(c) भौंरा (d) जेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'मेघ' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव 'मेह' होता है। भौंरा तथा जेठ तद्भव शब्द हैं, इसका तत्सम क्रमशः भ्रमर तथा ज्येष्ठ होता है।

65. **कौन-सा शब्द देशज नहीं है?**

(a) कंचन (b) कचोट

(c) कंजर (d) करवट

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

कंचन तत्सम शब्द है, शेष देशज शब्द हैं।

66. **नीचे दिये गये विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए-**

(a) पड़ोसी (b) गोधूम

(c) बहू (d) शहीद

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'गोधूम' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव गेहूँ है। पड़ोसी तथा बहू तद्भव शब्द हैं, इसका तत्सम क्रमशः प्रतिवेशी तथा वधू है।

67. **निम्नलिखित शब्दों में से कौन तत्सम है?**

(a) भौजी (b) भौजाई

(c) भ्रातृजाया (d) जोरू

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

भ्रातृजाया तत्सम शब्द है, इसका तद्भव भतीजी है। भौजी अथवा भौजाई तद्भव शब्द है इसका तत्सम भ्रातृभार्या है।

68. **'कन्धा' का तत्सम है-**

(a) इस्कन्ध (b) स्कन्ध

(c) कक्षु (d) कन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कन्धा' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम 'स्कन्ध' है।

69. **'उबटन' शब्द का तत्सम रूप है-**

(a) उर्द्वतन (b) उपलेपन

(c) उपः लेपन (d) उद्वर्तन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'उबटन' शब्द का तत्सम रूप उद्वर्तन है।

70. **इनमें से कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?**

(a) क्षीर (b) मयूर

(c) सफेद (d) शीर्ष

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सफेद तद्भव शब्द है, इसका तत्सम श्वेत है। क्षीर, मयूर तथा शीर्ष तत्सम शब्द हैं, इनका तद्भव क्रमशः खीर, मोर तथा सीस है।

71. **निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा तत्सम है?**

(a) छत्री (b) ठाकुर

(c) क्षत्री (d) क्षत्रिय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

क्षत्रिय तत्सम शब्द है, इसका तद्भव खत्री है। ठाकुर, क्षत्रिय का समानार्थी है।

❑ वाक्य शुद्धि

1. **इनमें से एक वाक्य अशुद्ध है, वह है—**

(a) मैं दर्शन करने आया हूँ।

(b) मैं अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हूँ।

(c) लड़का मिठाई लेकर दौड़ता हुआ घर आया।

(d) वहाँ भीड़ लगी थी।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

विकल्प (b) का वाक्य अशुद्ध है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा-मैं अपनी बात के स्पष्टीकरण के लिए तैयार हूँ।

2. **निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है-**

(a) मैं अपना कार्य स्वयं कर देता हूं।

(b) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होना चाहिए।

(c) शायद वह अवश्य आएगा।

(d) भारत में अनेक जाति के लोग रहते हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का वाक्य शुद्ध है। विकल्प (a) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है - मैं अपना कार्य स्वयं कर लेता हूं। विकल्प (b) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है – परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होनी चाहिए। विकल्प (c) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है – शायद वह आएगा अथवा वह अवश्य आएगा।

3. **इनमें से अशुद्ध वाक्य है-**

(a) कल, आज और कल अवकाश रहेगा।

(b) आज मौसम अच्छा है।

(c) अब परीक्षा होने वाली है।

(d) मैंने पत्र भेज दिया।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

विकल्प (a) अशुद्ध वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य है – आज और कल अवकाश रहेगा।

4. **निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?**

(a) मैंने पार्टी में आठ-दस रसगुल्ला खाया।

(b) प्रेम का मूल्य आँका नहीं जा सकता।

(c) इतने में हल्की-सी हवा का एक झोंका आया।

(d) प्रत्येक श्रमिकों को दो-दो रुपये मिले।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विकल्प (b) मे प्रस्तुत वाक्य शुद्ध वाक्य है। शेष सभी अशुद्ध वाक्य हैं। इनका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- (a) मैंने पार्टी में आठ-दस रसगुल्ले खायें। (c) इतने में हवा का एक झोंका आया। (d) प्रत्येक श्रमिक को दो-दो रुपये मिले।

5. **निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?**

(a) मैं गाने की कसरत करता हूँ।

(b) मैं गाने का शौक कर रहा हूँ।

(c) मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूँ।

(d) मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ।

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'गाने' का अभ्यास किया जाता है। अतः विकल्प (c) शुद्ध वाक्य है। अन्य विकल्पों के वाक्य अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 6 से 9 के लिए) : निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य छांटिए -

6. (a) यह प्रसंग 'सुख' नामक शीर्षक के अन्तर्गत मिलेगा।

(b) पिताजी गद्‌गद हो गए।

(c) बकरी घास चर रही है।

(d) आसमान में तारे चमक रहे हैं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- यह प्रसंग 'सुख' नामक शीर्षक से उद्‌धृत किया गया है।

7. (a) हमें यह काम नहीं करना चाहिए।

(b) इस समस्या का हल मेरे पास है।

(c) लताजी ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गाई।

(d) मेले में यात्रियों का ताँता लगा रहा।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

विकल्प (c) अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा - लताजी ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गाईं।

8. (a) यह संस्था का आठवाँ वार्षिक अधिवेशन है।

(b) सुषमा जल से पौधों को सींच रही थी।

(c) मकान ढह जाने का डर है।

(d) हम सब मेला देखने जाएँगे।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- सुषमा पौधों को सींच रही थी। यहाँ पर यह ध्यान देने की जरूरत है कि 'जल' का प्रयोग उचित नहीं है, क्योंकि पौधों को 'जल' से ही सींचा जाता है।

9. (a) मैं शनिवार को गाँव जाऊँगा।

(b) इस यन्त्र का आविष्कार अमरीका में हुआ था।

(c) गोलियों की बौछार हो रही है।

(d) पुस्तक छापने की व्यवस्था का प्रबन्ध करें।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य होगा - पुस्तक छापने का प्रबन्ध करें।

10. **'अपने हाथ से स्वयं काम करो' वाक्य का शुद्ध रूप क्या होगा?**
(a) अपना काम स्वयं करो।
(b) अपने से अपना काम करो।
(c) स्वयं से काम करो।
(d) हाथ से अपना काम करो।

T.G.T. परीक्षा, 2011
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त वाक्य का शुद्ध रूप है– अपना काम स्वयं करो।

11. **निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है -**
(a) स्नेहा ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।
(b) परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए।
(c) मुझे बड़ी भूख लगी है।
(d) केरल अहिन्दी भाषी प्रान्त है।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रयुक्त वाक्य शुद्ध है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण है। इन विकल्पों के शुद्ध वाक्य इस प्रकार होंगे - (a) स्नेहा ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गायीं। (b) परीक्षा - प्रणाली बदलनी चाहिए। (c) मुझे बहुत भूख लगी है।

12. **कौन-सा वाक्य सही है?**
(a) बैल और बकरी घास चरती हैं
(b) बैल और बकरी घास चरते हैं
(c) बैल और बकरी घास चरता है
(d) बैल और बकरी घास चरती है

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य शुद्ध है, क्योंकि इस वाक्य में दो कर्ता का प्रयोग हुआ है। अतः क्रिया भी बहुवचन होगी। अन्य विकल्पों में वाक्य अशुद्ध हैं। यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्तिरहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच 'और' संयोजक आये, तो उनकी क्रिया पुल्लिंग और बहुवचन में होगी।

13. **इनमें कौन-सा वाक्य शुद्ध है?**
(a) सीता ने यह कहा (b) सीता ने यह कही
(c) सीता यह कही (d) सीता यह कहा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'सीता ने यह कहा' वाक्य शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

14. **इनमें से शुद्ध वाक्य कौन-सा है?**
(a) मेरे प्राण निकल गये
(b) मेरा प्राण निकल गया
(c) मेरा प्राण निकल गये
(d) मेरी प्राण निकल गई

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'प्राण' सदैव बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होता है। अतः विकल्प (a) में प्रस्तुत वाक्य 'मेरे प्राण निकल गये' शुद्ध वाक्य है।

15. **निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य को चुनिये-**
(a) राम रोटी खाया है
(b) राम ने रोटी खाया है
(c) राम ने रोटी खायी है
(d) राम रोटी खा लिया है

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'रोटी' स्त्रीलिंग शब्द है। अतः 'राम ने रोटी खायी है' वाक्य शुद्ध है।

16. **शुद्ध वाक्य चुनिये-**
(a) मुरझाया हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा।
(b) मुरझाई हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा।
(c) मुरझाया हुई फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठी।
(d) मुरझाया हुआ फूल वर्षा के फुहार द्वारा अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठे।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'फूल' पुल्लिंग शब्द है और सभी विकल्पों में एकवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है। अतः विकल्प (a) 'मुरझाया हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा' वाक्य शुद्ध है।

17. **निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?**
(a) शास्त्री जी की मृत्यु से हमें बड़ा दुःख हुआ है।
(b) मुझसे यह काम संभव नहीं
(c) प्रायः ऐसे अवसर आते हैं, जिसमें लोगों को अपना मत बदलना पड़ता है
(d) किसी आदमी को कानपुर भेज दो

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

विकल्प (a) का वाक्य अशुद्ध है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- शास्त्री जी की मृत्यु से हमें बहुत दु:ख हुआ है। शेष विकल्पों के वाक्य शुद्ध हैं।

18. निम्न में अशुद्ध वाक्य बताइये-

(a) पुस्तक मेज पर रखी है

(b) कच्चे तेल की कीमत घट गया है

(c) यह मेरे सपनों का घर है

(d) कानपुर भारत की औद्योगिकी राजधानी है

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कीमत' स्त्रीलिंग शब्द है। अतः विकल्प (b) अशुद्ध वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य है- 'कच्चे तेल की कीमत घट गयी है।' शेष विकल्प में शुद्ध वाक्य हैं।

19. निम्नलिखित में से सही वाक्य चुनिये-

(a) श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं

(b) आपका पत्र सधन्यवाद मिला

(c) श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं

(d) बन्दूक एक बहुत ही उपयोगी शस्त्र है

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'अनेक' बहुवचन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, इसलिए विकल्प (a) में 'अनेकों' के स्थान पर 'अनेक' होगा। अतः विकल्प (a) अशुद्ध वाक्य है। विकल्प (b) भी अशुद्ध वाक्य है, क्योंकि पत्र के साथ सधन्यवाद का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ 'पत्र भी मिला और धन्यवाद भी' है। इसका शुद्ध वाक्य होगा-'आपका पत्र मिला, धन्यवाद।' विकल्प (d) भी अशुद्ध वाक्य है, क्योंकि बन्दूक के लिए 'शस्त्र' का प्रयोग हुआ है, जबकि हाथ से चलाये जाने वाले हथियार के लिए 'अस्त्र' का प्रयोग किया जाता है। अतः विकल्प (c) शुद्ध वाक्य है।

20. निम्न में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(a) मैं आपकी सौजन्याता पर मुग्ध हूँ

(b) मैं आपके सौजन्य पर मुग्ध हूँ

(c) मैं आपकी सुजन्य पर मुग्ध हूँ

(d) इनमें से तीनों वाक्य अशुद्ध हैं।

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'सौजन्य' शब्द शुद्ध है। अतः विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य शुद्ध है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 21-26 के लिए)—इन प्रश्नों में एक वाक्य दिया है जिसमें त्रुटि है। इसके नीचे चार विकल्प दिये गये हैं, जिसमें एक सही है। सही विकल्प चुनिये।

21. जो मिठाइयाँ पसन्द हों आप खा लो।

(a) जो मिठाई पसन्द हों आप खा लो

(b) जो मिठाई पसन्द हों तुम खा लो

(c) जो मिठाइयाँ पसन्द हों तुम खा लो

(d) जो मिठाइयाँ पसन्द हों उन्हें आप खाइये

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत वाक्य 'जो मिठाइयाँ पसन्द हों, उन्हें आप खाइये' शुद्ध है। शेष विकल्पों में अशुद्ध वाक्य हैं।

22. हम बचपन में वहाँ जाता रहा।

(a) हम बचपन में वहाँ जायेंगे

(b) हम बचपन में वहाँ जाते रहे है

(c) मैं बचपन में वहाँ जाता रहा

(d) मैं बचपन में वहाँ जाऊँगा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य 'मैं बचपन में वहाँ जाता रहा' शुद्ध है। शेष अशुद्ध हैं।

23. प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकते।

(a) प्रत्येक व्यक्ति कविता कर सकते हैं।

(b) प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकते हैं

(c) प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकता

(d) हर व्यक्ति कविता कर सकते हैं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य 'प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकता' शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

24. हेम नरेश को पुस्तक दिया

(a) हेम नरेश की पुस्तक दी

(b) हेम ने नरेश को पुस्तक दी

(c) हेम नरेश का पुस्तक देगा

(d) हेम ने नरेश का पुस्तक दिया

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य 'हेम ने नरेश को पुस्तक दी' शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

25. मन्त्री ड्राइवर को कार चलवाता है।

(a) मन्त्री ड्राइवर से कार चलवाता है

(b) मन्त्री ड्राइवर की कार चलवाता है

(c) मन्त्री ड्राइवर के लिये कार चलवाता है

(d) मन्त्री ड्राइवर पर कार चलवाता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में प्रस्तुत 'मन्त्री ड्राइवर से कार चलवाता है' शुद्ध वाक्य है, शेष अशुद्ध हैं।

26. निम्न में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(a) राम ने पेट भर मिठाई खाई

(b) राम ने पेट भर के मिठाई खाई

(c) राम ने भरपेट मिठाई खाई

(d) इनमें से सभी शुद्ध हैं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य 'राम ने भरपेट मिठाई खाई।' वाक्य शुद्ध है, शेष वाक्य अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 27-31 के लिए)—प्रत्येक प्रश्न में एक वाक्य दिया गया है, जो चार भागों में विभाजित है। प्रत्येक वाक्य को पढ़ कर यह पता लगाने का प्रयास करें कि इसके किसी भाग में भाषा, व्याकरण, वाक्य रचना या शब्दों के गलत प्रयोग का कोई दोष है या नहीं। यदि है तो वह वाक्य के किसी एक भाग में होगा। उस भाग का आपका उत्तर केवल नीचे लिखे a, b, c, d से ही होगा।

27. वीर सैनिक कहते हैं/कि हम विद्रोही शत्रु/का नाश करेंगे/कोई त्रुटि नहीं

(a) (b) (c) (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत 'विद्रोही' और 'शत्रु' दोनों का एक साथ प्रयोग किया गया है, जो त्रुटिपूर्ण है, दोनों में से किसी एक का प्रयोग होना चाहिए।

28. सच्चा मित्र है/जो आपत्ति के समय/सहायता करें/कोई त्रुटि नहीं

(a) (b) (c) (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में 'करें' का प्रयोग किया गया है, जो त्रुटिपूर्ण है। इसके स्थान पर 'करे' होना चाहिए।

29. तुम अपना कर्त्तव्य/अच्छी तरह निभाएँ/अन्यथा आपके मित्रों को हार्दिक दुख होगा/कोई त्रुटि नहीं

(a) (b) (c) (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में त्रुटि है। इस वाक्य में 'तुम' के स्थान पर 'आप' होना चाहिए।

30. हेम और नरेश/बालकों को भली भांति/पढ़ाते हैं/कोई त्रुटि नहीं

(a) (b) (c) (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य त्रुटिपूर्ण है। इस वाक्य में भली भांति में योजक चिह्न (-) का प्रयोग नहीं किया गया है। अतः इसका शुद्ध रूप 'भली-भांति' होगा।

31. प्रातः उठना लाभदायक है/और जल्दी सो जाना भी/अच्छी आदत है/कोई त्रुटि नहीं

(a) (b) (c) (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में 'सो जाना भी' का प्रयोग किया गया है। यहाँ 'भी' का निरर्थक प्रयोग है। अतः विकल्प (b) त्रुटिपूर्ण है।

सम-सामयिक घटना चक्र

❑ वाक्य रचना

1. 'उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा'-किस तरह का वाक्य है?

(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) प्रश्नवाचक वाक्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

वह वाक्य जिसमें एक उपवाक्य स्वतन्त्र होता है और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, मिश्र वाक्य कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में इसी तरह का वाक्य है। गौण वाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित रहता है। इसमें सामान्यतः 'कि', 'जैसा-वैसा' 'जो-वह', 'जब-तब', 'क्योंकि', 'यदि तो' आदि योजकों का प्रयोग किया जाता है।

2. वाक्य-विचार के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है?

(a) शब्दकोश का
(b) वर्णों का
(c) वाक्यों का
(d) ए और बी दोनों का

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

व्याकरण के तीन अंग हैं—वर्ण विचार, शब्द विचार तथा वाक्य विचार। वर्ण विचार में भाषिक ध्वनियों, शब्द विचार में शब्दों या पदों तथा वाक्य विचार में वाक्यों से सम्बन्धित नियमों का निर्देश किया जाता है।

3. रचना के आधार पर वाक्य के भेद हैं-

(a) 6 (b) 3
(c) 8 (d) 4

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रचना के आधार पर वाक्य के 3 भेद हैं-1. सरल या साधारण वाक्य, 2. मिश्र वाक्य और 3. संयुक्त वाक्य। जिस वाक्य में एक क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, उसे 'साधारण या सरल वाक्य' कहते हैं। जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त उसके अधीन कोई दूसरा अंग वाक्य हो, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अर्थ के अनुसार वाक्य के 8 भेद हैं-

1. विधिवाचक वाक्य (जिसमें किसी बात के होने का बोध हो),
2. निषेधवाचक वाक्य (जिसमें किसी बात के न होने का बोध हो),
3. आज्ञावाचक वाक्य (जिससे किसी तरह की आज्ञा का बोध हो),
4. प्रश्नवाचक वाक्य (जिससे किसी प्रकार के प्रश्न किए जाने का बोध हो),
5. विस्मयवाचक वाक्य (जिससे आश्चर्य, दुःख या सुख का बोध हो),
6. सन्देहवाचक वाक्य (जिससे किसी बात का सन्देह प्रकट हो),
7. इच्छावाचक वाक्य (जिससे किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो) तथा
8. संकेतवाचक वाक्य (जहाँ एक वाक्य दूसरे की सम्भावना पर निर्भर हो)।

4. निम्न में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिये—

(a) जो परिश्रम करता है, वहीं आगे बढ़ता है।
(b) मैं पढ़ता हूँ और वह गाता है।
(c) क्या मेरे बिना वह पढ़ नहीं सकता है।
(d) परिश्रमी व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में संयुक्त वाक्य है। जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।

5. ''वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र है।'' उपर्युक्त वाक्य का बिना अर्थ बदले निम्नलिखित में कौन-सा नकारात्मक वाक्य उपयुक्त होगा?

(a) वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र नहीं है
(b) उसके समान अपनी कक्षा में कोई प्रतिभाशाली छात्र नहीं है।
(c) प्रतिभा में वह अपनी कक्षा के किसी छात्र से कम नहीं है।
(d) अपनी कक्षा के प्रतिभाशाली छात्रों में उसकी गिनती नहीं होती

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) का वाक्य बिना अर्थ बदले नकारात्मक वाक्य है।

6. 'सीढ़ी के सहारे मैं जहाज पर जा पहुँचा' वाक्य में 'सीढ़ी के सहारे' क्या है?

(a) साधारण उद्देश्य (b) विधेय विस्तारक
(c) उद्देश्य वर्द्धक (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त वाक्य में 'सीढ़ी' के सहारे' उद्देश्य का विस्तार है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

7. निम्नलिखित वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए नीचे दिये गये विकल्पों में से एक उचित विकल्प चुनिये-
वाक्य : युवा-असंतोष का कारण निरंतर........वृद्धि है
विकल्प-

(a) अशिष्टता (b) भ्रष्टाचार
(c) दुराचार (d) राजनीति

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वाक्य पूर्ति हेतु रिक्त स्थान पर उचित विकल्प 'भ्रष्टाचार' होगा। पूर्ण वाक्य इस प्रकार होगा—युवा-असंतोष का कारण निरन्तर भ्रष्टाचार वृद्धि है।

❑ वचन

1. निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन है -

(a) प्राण (b) दर्शन
(c) ओठ (d) तेल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'तेल' शब्द एकवचन है, जबकि दर्शन, प्राण, लोग, दाम, ओठ, आँसू, अक्षत इत्यादि सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

2. इनमें से कौन-सा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है?

(a) प्राण (b) भक्ति
(c) शिशु (d) पुस्तक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'साधु आ रहे हैं' वाक्य में 'साधु का वचन निर्धारित कीजिये।

(a) एकवचन
(b) बहुवचन
(c) द्विवचन
(d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

हिन्दी में वचन दो होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन। शब्द के जिस रूप से एक से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। प्रस्तुत वाक्य में क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त हो रही है, अतः यहाँ 'साधु' बहुवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

4. 'चिड़िया' शब्द का प्रयोग बहुवचन में क्या होता है?

(a) चिड़ियाँ
(b) चिड़ियों
(c) चिड़िओ
(d) चिड़िये

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'चिड़िया' शब्द का प्रयोग बहुवचन में 'चिड़ियाँ' होता है।

5. निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें बहुवचन का प्रयोग हुआ है?

(a) लड़का कहता है।
(b) लड़के ने कहा।
(c) लड़के लड़के से कहते हैं।
(d) लड़के ने लड़के से कहा।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में बहुवचन का प्रयोग हुआ है, शेष में एकवचन प्रयुक्त है।

6. निम्न में कौन कथन सत्य नहीं है?

(a) संस्कृत में तीन वचन होते हैं
(b) हिन्दी में दो वचन होते हैं
(c) हिन्दी में दो लिंग होते हैं
(d) संस्कृत में हिन्दी की तरह दो लिंग होते हैं

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

सारी सृष्टि की तीन मुख्य जातियाँ हैं—पुरुष, स्त्री तथा जड़। अनेक भाषाओं में इन्हीं तीन जातियों के आधार पर लिंग के तीन भेद किये गये हैं-1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग तथा 3. नपुंसकलिंग। अंग्रेजी व्याकरण में लिंग का निर्णय इसी व्यवस्था के अनुसार होता है। मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि आधुनिक आर्यभाषाओं में भी यह व्यवस्था ज्यों की त्यों लागू है। इसके विपरीत हिन्दी में दो ही लिंग-पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हैं। संस्कृत में तीन वचन-एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन होता है, जबकि हिन्दी में दो वचन एकवचन तथा बहुवचन होता है।

7. हिन्दी भाषा में 'वचन' कितने प्रकार के हैं?

(a) 3 (b) 2
(c) 4 (d) 5

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

पत्र-पत्रिकाएँ

1. इनमें से कौन-सी पत्रिका 'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' द्वारा प्रकाशित है?

(a) तद्भव (b) पहल
(c) वसुधा (d) बहुवचन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा' द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बहुवचन' है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1999 से (सम्पादक-अशोक वाजपेयी) किया जा रहा है। 'तद्भव' पत्रिका के सम्पादक अखिलेश हैं। इस त्रैमासिक पत्रिका का भी प्रकाशन वर्ष 1999 से लखनऊ से प्रारम्भ हुआ। 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन भोपाल से होता है, जिसके स्थायी सम्पादक श्री हरिशंकर परसाई तथा सम्पादक स्वयं प्रकाश हैं। 'पहल' त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन वर्ष 1960 से जयपुर से किया जा रहा है। इसके सम्पादक ज्ञानरंजन हैं।

2. साप्ताहिक-पत्र 'प्रताप' के सम्पादक थे-

(a) मदनमोहन मालवीय (b) सुंदर लाल
(c) गणेश शंकर विद्यार्थी (d) अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

वर्ष 1910 में गणेश शंकर विद्यार्थी ने साप्ताहिक पत्रिका 'प्रताप' का प्रकाशन किया। यह पत्र उग्र एवं क्रान्तिकारी विचारधारा का पोषक था। उग्र नीतियों के समर्थक इस पत्र ने उत्साह एवं क्रांति के पोषण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन समाचार पत्रों का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना एवं भाषा नीति का प्रसार करना था।

3. निम्नलिखित में से किसने प्रसिद्ध पत्रिका 'आलोचना' का सम्पादन नहीं किया?

(a) डॉ. नामवर सिंह
(b) डॉ. धर्मवीर भारती
(c) श्री शिवदान सिंह चौहान
(d) उपर्युक्त सभी ने 'आलोचना' पत्रिका का सम्पादन किया।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

वर्ष 1951 में राजकमल प्रकाशन के तत्कालीन निदेशक ओमप्रकाश ने 'आलोचना पत्रिका' के प्रकाशन का निर्णय लेते हुए इसके सम्पादन का दायित्व उस समय के प्रखर आलोचक डॉ. शिवदान सिंह चौहान को सौंपा। अक्टूबर, 1951 में इसका पहला अंक प्रकाशित हुआ। यह एक त्रैमासिक पत्रिका थी। शिवदान जी ने अपने कुशल सम्पादन में आलोचना के छः अंक निकाले। बाद में इलाहाबाद के चार लेखकों डॉ. धर्मवीर भारती, रघुवंश, विजय देव नारायण साही और ब्रजेश्वर वर्मा को इसके सम्पादन का भार सौंपा गया। इन लोगों ने अप्रैल, 1953 से अप्रैल, 1956 तक (अंक 7 से 17 तक) इसका सम्पादन किया। जुलाई, 1957 से अप्रैल, 1959 (अंक 18 से 26 तक) आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी इसके सम्पादक रहे। बाद के वर्षों में काफी समय तक इसके सम्पादक डॉ. नामवर सिंह रहे। अतः उपर्युक्त सभी लेखकों ने 'आलोचना' पत्रिका का सम्पादन किया।

4. निम्न में किस पत्रिका से सम्बन्धित साहित्यकार नहीं हैं?

(a) नया ज्ञानोदय-रवीन्द्र कालिया
(b) पहल-ज्ञानरंजन
(c) तद्भाव-अखिलेश
(d) दस्तावेज-रामचन्द्र तिवारी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

'दस्तावेज' पत्रिका का सम्बन्ध रामचन्द्र तिवारी से नहीं, बल्कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से है। इस त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1978 से गोरखपुर से नियमित हो रहा है। यह रचना और आलोचना की पत्रिका है, शेष युग्म सही हैं। साहित्यकार रामचन्द्र तिवारी अमर सूक्ति कोश से सम्बन्धित हैं।

5. 'वागर्थ' पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

(a) मुम्बई (b) वाराणसी
(c) नई दिल्ली (d) कोलकाता

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

'वागर्थ' पत्रिका का प्रकाशन भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) द्वारा वर्ष 1995 से शुरू हुआ। यह एक मासिक पत्रिका है। प्रारम्भ में इसके सम्पादक रविन्द्र कालिया, ममता कालिया, प्रभाकर श्रोत्रिय थे। वर्तमान में इस पत्रिका के सम्पादक शंभुनाथ और प्रबन्ध सम्पादक डॉ. कुसुम खेमानी हैं। वस्तुतः यह साहित्य-संस्कृति की मासिक पत्रिका है।

6. हिन्दी भाषा की मासिक प्रमुख पत्रिका 'वागर्थ' कहाँ से प्रकाशित होती है?

(a) कलकत्ता (b) नई दिल्ली
(c) मुम्बई (d) चण्डीगढ़

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित पत्रिका है-**
(a) वसुमती (b) बहुवचन
(c) अकार (d) वागर्थ
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **'भारतीय भाषा-परिषद्' कोलकाता से प्रकाशित पत्रिका है—**
(a) वसुधा (b) वागर्थ
(c) माध्यम (d) अक्षत
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता द्वारा प्रकाशित पत्रिका है-**
(a) वसुधा (b) आलोचना
(c) साहित्य (d) वागर्थ
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **कचहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र किस पत्र को कहा जाता है?**
(a) कविवचन सुधा (b) समाचार सुधा वर्षण
(c) हिन्दी प्रदीप (d) इनमें से कोई नहीं
T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

भारत मित्र अपने समय का सबसे प्रभावशाली मुखपत्र था। यह पत्र सर्वप्रथम पाक्षिक रूप में, कलकत्ता से 17 अगस्त, 1878 से निकलना शुरू हुआ। इस पत्र को बालमुकुन्द गुप्त, लक्ष्मीनारायण गर्दे तथा अम्बिका प्रसाद वाजपेयी जैसे सिद्धहस्त सम्पादकों का संरक्षण प्राप्त हुआ। कचहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र भारत मित्र है। कलकत्ता में चलने वाले जुए के अड्डे बन्द कराने के लिए इसने सफल आन्दोलन चलाया। इस पत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के भी विचारोत्तेजक लेख छपते थे।

11. **निम्नलिखित में से एक कथन असत्य है-**
(a) धर्मवीर भारती 'धर्मयुग' के सम्पादक थे।
(b) कमलेश्वर 'सारिका' के सम्पादक थे।
(c) राजेन्द्र यादव 'हंस' के सम्पादक थे।
(d) मोहन राकेश 'कादम्बिनी' के सम्पादक थे।
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

कादम्बिनी पत्रिका के सम्पादक विष्णु नागर तथा राजेन्द्र अवस्थी थे। मोहन राकेश इससे सम्बन्धित नहीं थे।

12. **पत्रिका और सम्पादक की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है-**
(a) धर्मयुग-धर्मवीर भारती (b) हंस-राजेन्द्र यादव
(c) तद्भव-अखिलेश (d) नया प्रतीक-अमृतलाल सागर
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'नया प्रतीक' पत्रिका का सम्पादन 'अज्ञेय' द्वारा किया गया। अन्य विकल्पों के युग्म सही हैं।

13. **निम्नलिखित पत्रिकाओं में से एक का प्रकाशन स्थल असत्य है-**
(a) कथाक्रम-लखनऊ (b) हंस-नई दिल्ली
(c) वागर्थ-कोलकाता (d) नया ज्ञानोदय-मुंबई
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'नया ज्ञानोदय' पत्रिका का प्रकाशन नई दिल्ली से होती है। इस पत्रिका का आरंभ जनवरी, 1949 से फरवरी, 1970 तक 'ज्ञानोदय' नाम से प्रकाशन होता था। वर्ष 2003 से इसका पुनः नामकरण 'नया ज्ञानोदय' नाम से शुरू हुआ।

14. **निम्नलिखित में से एक पत्रिका में सम्प्रति कहानी प्रकाशित नहीं होती—**
(a) इंडिया टुडे (हिन्दी) (b) तद्भव
(c) नया ज्ञानोदय (d) वागर्थ
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'इंडिया टुडे' का हिन्दी में प्रकाशन 5 नवम्बर, 1986 को हुआ। यह मासिक पत्रिका है, जो दिल्ली से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में देश-विदेश की घटनाएँ तथा ज्वलंत मुद्दे के प्रश्न प्रकाशित होते हैं। इस पत्रिका में सम्प्रति कहानी प्रकाशित नहीं होते हैं।

15. **'प्रजा हितैषी' नामक पत्र के सम्पादक थे—**
(a) राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (b) राजा लक्ष्मण सिंह
(c) मुंशी सदासुखलाल (d) लल्लू लाल
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

राजा लक्ष्मण सिंह ने 1860 ई. में आगरा से 'प्रजा हितैषी' तथा 1863 ई. में 'लोकमित्र' नामक पत्र निकाला।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 1845 ई. में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने काशी से 'बनारस अख़बार' निकाला। इसकी लिपि देवनागरी थी, लेकिन भाषा उर्दू की ओर झुकी हुई। बनारस से ही 1850 ई. में 'सुधाकर' निकाला।

➲ 1867 ई. में नवीन चन्द्र ने 'ज्ञान प्रदायिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया।

16. **'बनारस अखबार' का प्रकाशन कब शुरू हुआ?**
(a) 1840 ई. (b) 1841 ई.

(c) 1844 ई. (d) 1845 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा सम्पादित पत्र है—

(a) प्रजा हितैषी (b) हिन्दी प्रदीप
(c) उदंत मार्तण्ड (d) विश्वामित्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. हिन्दी समाचार-पत्र 'बंगदूत' प्रकाशित हुआ था—

(a) 1826 में (b) 1829 में
(c) 1834 में (d) 1844 में

P.G.T. परीक्षा, 2004

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

हिन्दी समाचार-पत्र 'बंगदूत' 1829 ई. में आर. एम. मार्टिन और राजा राममोहन राय द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित किया गया। कहा जाता है कि यह बंगला, हिन्दी और फारसी में छपता था, पर कलकत्ता रीव्यू के अनुसार, यह बंगला और फारसी में छपता था। 1829 ई. में यह सरकारी आदेश से बन्द हो गया फिर यह दो रूपों में प्रकाशित हुआ। हिन्दू हेराल्ड (अंग्रेजी) और बंगदूत (बंगला और हिन्दुस्तानी यानी उर्दू) में सेठों के लाभार्थ बाजार भाव बंगला और नागरी दोनों में छपते थे।

19. 'बंगदूत' नामक पत्र हिन्दी में किसके द्वारा निकाला गया?

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) राजा राममोहन राय
(c) ईश्वर चन्द विद्यासागर (d) पण्डित जुगुल किशोर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'बंगदूत' का प्रकाशन वर्ष है :

(a) 1826 ई. (b) 1827 ई.
(c) 1828 ई. (d) 1829 ई.

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'राष्ट्रभाषा संदेश' पाक्षिक पत्र कहाँ से प्रकाशित होता है?

(a) इलाहाबाद से (b) वाराणसी से
(c) वर्धा से (d) उज्जैन से

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'राष्ट्रभाषा संदेश' पाक्षिक पत्र का प्रकाशन इलाहाबाद से होता है। जिसके प्रथम प्रधान सम्पादक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन थे। इन्होंने 'अभ्युदय' पत्र का भी सम्पादन किया है। वर्तमान में इस पत्र के सम्पादक श्री विभूति मिश्र है।

22. 'समाचार सुधावर्षण' किस प्रकार का पत्र था?

(a) साप्ताहिक (b) दैनिक
(c) पाक्षिक (d) मासिक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(b)

1854 ई. में कलकत्ता, से प्रकाशित 'समाचार सुधावर्षण' हिन्दी का पहला दैनिक पत्र था। इसके सम्पादक श्याम सुंदर सेन थे। यह द्विभाषी पत्र था। प्रारंभ में दो पृष्ठ हिन्दी के थे और शेष दो बंगला के।

23. 'आज' पत्र के प्रथम सम्पादक थे-

(a) बाबू शिवप्रसाद गुप्त (b) रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर
(c) बाबू श्रीप्रकाश जी (d) बाबूराव विष्णु पराड़कर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'आज' पत्र का प्रकाशन 5 सितम्बर, 1920 को वाराणसी से हुआ था। जिसके संस्थापक शिवप्रसाद गुप्त थे। प्रथम सम्पादक श्रीप्रकाश एवं प्रधान सम्पादक पं. बाबूराव विष्णु पराड़कर थे।

24. 'आज' समाचार-पत्र का प्रकाशन कब आरम्भ हुआ था?

(a) 15 जनवरी, 1920 (b) 22 अप्रैल, 1920
(c) 2 जुलाई, 1920 (d) 5 सितम्बर, 1920

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'आज' समाचार-पत्र के संस्थापक कौन थे?

(a) श्यामसुन्दर दास (b) बाबूराव विष्णु पराड़कर
(c) शिवप्रसाद गुप्त (d) रामचन्द्र शुक्ल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. निराला किस पत्रिका से सम्बन्धित नहीं थे?

(a) सुधा (b) इन्दु
(c) समन्वय (d) मतवाला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' इन्दु पत्रिका से सम्बन्धित नहीं थे। 'निराला' जी सुधा, मतवाला, समन्वय जैसी पत्रिकाओं से सम्बन्धित थे। जयशंकर प्रसाद जी 'इन्दु' पत्रिका से सम्बन्धित थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ छायावाद पर आक्रमण करने वाली पत्रिकाओं में सुधा ने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन, अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा तथा हिन्दी साहित्य की चतुर्दिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

➲ 'समन्वय' का प्रकाशन वर्ष 1922 में रामकृष्ण मिशन के स्वामी माधवानन्द के सम्पादन में आरम्भ हुआ। बाद में 'निराला' जी की नियुक्ति इसके सम्पादन-विभाग में हुई। इसमें धार्मिक आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों की प्रधानता होने पर भी उच्च कोटि की साहित्यिक सामग्री प्रकाशित हुआ करती थी।

➲ 'मतवाला' वर्ष 1923 में कलकत्ता से प्रकाशित हुई। उसके घोषित सम्पादक तो महादेव प्रसाद सेठ थे, पर इसके सम्पादन विभाग में शिवपूजन सहाय, नवजादिकलाल श्रीवास्तव और निराला भी थे। यह हिन्दी की पहली हास्य-व्यंग्य प्रधान साप्ताहिक पत्रिका थी।

27. 'मतवाला' पत्रिका के स्थायी स्तम्भ 'चाबुक' में निराला जी अपनी रचना किस नाम से लिखते थे?

(a) गरगज सिंह वर्मा (b) सूर्यकान्त
(c) निराला (d) रमता जोगी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'मतवाला' पत्रिका के स्थायी स्तम्भ 'चाबुक' में निराला जी अपनी रचना गरगज सिंह वर्मा नाम से लिखते थे। मतवाला में 'मतवाले की बहक','चलती चक्की', 'मतवाले का चाबुक' पत्र के स्थायी स्तम्भ थे। हिन्दी में उच्च कोटि के व्यंग्य-विनोद के साथ प्रखर राष्ट्र-भक्ति को प्रदीप्त करने वाला 'मतवाला' कलकत्ता से वर्ष 1923 में निकला। जिसके संस्थापक श्री महादेव प्रसाद सेठ, आचार्य शिवपूजन सहाय, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', मुंशी नवजादिक लाल तथा ईश्वरी प्रसाद शर्मा थे।

28. जयशंकर प्रसाद द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम था—

(a) कहानी (b) इन्दु
(c) सरस्वती (d) ब्राह्मण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद ने वर्ष 1909 में इन्दु नामक पत्रिका निकाली, विद्वानों का मत है कि इसी पत्रिका से छायावाद का जन्म हुआ। लगभग आठ वर्षों तक रसिक हृदय को तृप्त करने के बाद अगले दस वर्षों तक इसका प्रकाशन बन्द रहा। जनवरी, 1927 में इसे फिर से प्रकाशित किया गया।

29. अज्ञेय किस पत्र के सम्पादक रहे?

(a) विशाल भारत (b) दैनिक
(c) दिनमान (d) ये सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

अज्ञेय आरम्भ से ही पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने अनेक पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया। आगरा से निकलने वाले 'सैनिक' के सम्पादन-मण्डल में वे वर्ष 1936 में आये। वर्ष 1937 में वे कलकत्ता से निकलने वाला 'विशाल भारत' के सम्पादक-मण्डल में शामिल हुए। इलाहाबाद से निकलने वाले 'प्रतीक' का सम्पादन उन्होंने वर्ष 1946 से आरम्भ किया जो वर्ष 1952 तक चला 'थॉट और वॉक' (अंग्रेजी पत्रिका, दिल्ली) के सम्पादन से उनका सम्बन्ध वर्ष 1958 तक रहा। वर्ष 1965 की फरवरी से उन्होंने 'दिनमान' (साप्ताहिक, दिल्ली) का सम्पादन-भार सँभाला। वर्ष 1973 से 'प्रतीक' का पुनः प्रकाशन आरम्भ हुआ। वर्ष 1977 में उन्होंने 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादन का कार्यभार सँभाला। अतः स्पष्ट है कि विकल्प (c) सही उत्तर है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, क्योंकि प्रश्न ही गलत है। प्रश्न में पूछा गया है अजय किस पत्र के सम्पादक रहे? किन्तु विकल्प में कोई भी ऐसा पत्र नहीं है जिसके सम्पादक 'अजय' हों, वास्तव में 'अजय' के स्थान पर 'अज्ञेय' होना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'दिनमान' के सम्पादन की प्रशंसा करते हुए विद्यानिवास मिश्र ने लिखा है— ''अज्ञेय ने अपनी संगठन-शक्ति, कल्पना और मनोयोग के बल पर दिनमान को छः महीने के भीतर ही केवल हिन्दी का नहीं, भारत का अन्यतम साप्ताहिक समाचार-पत्र बना दिया। जहाँ उन्होंने इसके माध्यम से फैलते हुए विश्व की जानकारी सुलभ की, संस्कृति के परिमार्जन को व्यापक प्रसार दिया, वहाँ उन्होंने भारत की राष्ट्रीय विचारधारा को एक स्वयं पूर्ण मूर्त आकार प्रदान किया।''

30. 'प्रतीक' पत्रिका के सम्पादक थे—

(a) अमृतराय (b) भैरव प्रसाद गुप्त
(c) अज्ञेय (d) इलाचन्द्र जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'दिनमान' और 'प्रतीक' के सम्पादक के रूप में जिन्हें ख्याति प्राप्त हुई, वे हैं-

(a) बनारसी दास चतुर्वेदी (b) अज्ञेय
(c) अमृत राय (d) धर्मवीर भारती

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित में से एक तथ्य गलत है, वह है—

(a) 'कर्मवीर' पत्र के सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी थे।

(b) 'आजकल' दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका है।

(c) 'दिनमान' के प्रथम सम्पादक रघुवीर सहाय थे।

(d) 'पहल' पत्रिका जबलपुर से प्रकाशित होती है।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

अज्ञेय जी ने 'दिनमान' के प्रथम सम्पादक का कार्य किया। उनकी टीम में समाजवादी सोच के साहित्यकार, पत्रकार थे जिनमें मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रमुख थे। दिनमान' के लोगों पर डॉ. राममनोहर लोहिया के विचारों का जबरदस्त प्रभाव था। 'अज्ञेय' जी ने जब 'दिनमान' को विदा कहा, तो रघुवीर सहाय 'दिनमान' के सम्पादक बने। रघुवीर सहाय ने 'दिनमान' को शिखर पर भी पहुँचाया और उसे श्रीहीन भी किया। जवाहरलाल कौल, महेश्वर दयालु गंगवार, प्रयाग शुक्ल, जितेन्द्र गुप्त, बनवारी, 'तेजसिंह रावत विनोद भारद्वाज व नरेश कौशिक 'दिनमान' की इस टीम के प्रमुख सितारे थे।

33. 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम सम्पादक थे-

(a) मोहन सिंह सेंगर

(b) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(c) इलाचन्द जोशी

(d) पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'मार्डन रिव्यू' और 'प्रवासी' के सर्वस्व रामानन्द चट्टोपाध्याय ने हिन्दी जनता की सेवा के लिए वर्ष 1928 में मासिक 'विशाल भारत' का प्रकाशन किया, जिसके सम्पादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। इस पत्रिका में विष्णु दत्त शुक्ल, रुद्रदत्त शर्मा, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते थे। इस दीर्घजीवी पत्र को श्रीराम शर्मा और मोहन सिंह सेंगर ने भी संपादित किया। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन भी पत्र के सम्पादक पद पर प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

34. 'हंस' का सम्पादन किया—

(a) प्रेमचन्द ने (b) अमृत राय ने

(c) शिवदान सिंह चौहान ने (d) इनमें से सभी ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्यिक पत्रिका 'हंस' की स्थापना वर्ष 1930 में बनारस में की थी। प्रेमचन्द मृत्युपर्यन्त (8 अक्टूबर, 1936) मासिक रूप से इसे निकालते रहे। मृत्यु के उपरान्त प्रसिद्ध कथाकार जैनेन्द्र तथा प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी संयुक्त रूप से इसके सम्पादक रहे। बाद के वर्षों में इसके सम्पादक शिवदान सिंह चौहान, श्रीपत राय तथा अमृत राय और तत्पश्चात नरोत्तम नागर रहे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ कुछ समय तक हंस पत्रिका का सम्पादन बन्द रहा। फिर वर्ष 1959 में 'हंस' का वृहत संकलन हुआ, जिसे बालकृष्ण राव तथा अमृत राय ने संयुक्त रूप से सम्पादित करते हुए आधुनिक साहित्य एवं नवीन मूल्यों को सम्मिलित किया।

➲ वर्ष 1986 (प्रेमचन्द की मृत्यु की अर्द्धशती) में हंस के पुनः सम्पादन और प्रकाशन का दायित्व कथाकार-उपन्यासकार राजेन्द्र यादव ने सँभाला और अपनी मृत्यु (2013) तक हंस के 325 अंक निकाले। वर्तमान में हंस के सम्पादक कथाकार संजय सहाय हैं।

35. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम है—

(a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद

(c) राजेन्द्र यादव (d) मार्कण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. हिन्दी की कालजयी पत्रिका 'हंस' के संस्थापक का नाम है—

(a) पं. मदनमोहन मालवीय (b) प्रेमचन्द

(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. हंस पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से हुआ?

(a) मुम्बई (b) बनारस

(c) दिल्ली (d) जयपुर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. राजेन्द्र यादव 'हंस' के सम्पादक थे—

(a) 1980 से 2012 (b) 1985 से 2014

(c) 1986 से 2013 (d) 1987 से 2014

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम है—

(a) जयशंकर प्रसाद (b) प्रेमचन्द

(c) राजेन्द्र यादव (d) अमृत राय

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. निम्नलिखित पत्रिकाओं के प्रकाशन का सही अनुक्रम है-

(a) हंस, आलोचना, रविवार, सरस्वती
(b) आलोचना, सरस्वती, रविवार, हंस
(c) रविवार, हंस, सरस्वती, आलोचना
(d) सरस्वती, हंस, आलोचना, रविवार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पत्रिकाओं का सही अनुक्रम इस प्रकार है- सरस्वती (1900), हंस (1930), आलोचना (1951), रविवार (1977)।
नोट-रविवार साप्ताहिक का प्रथम प्रकाशन वर्ष 1977 में हुआ था। इसके प्रथम सम्पादक एम.जे. अकबर थे। वर्ष 1989 के अन्त में इस पत्रिका को बन्द कर दिया गया।

41. 'सम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन कहाँ से होता है?

(a) दिल्ली (b) बनारस
(c) कलकत्ता (d) इलाहाबाद

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'सम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन वर्ष 1913 में गिरिजा कुमार घोष तथा रामनरेश त्रिपाठी के सम्पादन में इलाहाबाद से हुआ था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा इस पत्रिका का प्रकाशन होता है। यह त्रैमासिक पत्र के रूप में आज भी शोध समीक्षा के क्षेत्र में सक्रिय है।

42. 'हिन्दी नवजीवन' साप्ताहिक का प्रकाशन कहाँ से आरम्भ हुआ?

(a) अहमदाबाद (b) कलकत्ता
(c) इलाहाबाद (d) लखनऊ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी नवजीवन साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1921 में नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद ने किया था। इस पत्रिका में 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' का अनुवाद दिया जाता था। इस पत्रिका के सम्पादक महात्मा गाँधी थे। इन्होंने वर्ष 1933 में 'हरिजन सेवक' पत्रिका हिन्दी में निकाली।

43. निम्नलिखित में से किसने किसी पत्रिका का सम्पादन नहीं किया है?

(a) राजेन्द्र यादव
(b) धर्मवीर भारती
(c) सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(d) भीष्म साहनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भीष्म साहनी ने किसी भी पत्रिका का सम्पादन नहीं किया है। भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द की परम्परा का अग्रणी लेखक माना जाता है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, आत्मकथा एवं बाल कथाएँ लिखी हैं। इनका प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' हैं। राजेन्द्र यादव ने वर्ष 1986 (अगस्त) से हंस पत्रिका का पुनः प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली से किया। धर्मवीर भारती ने धर्मयुग (8 अक्टूबर, 1950, साप्ताहिक) पत्रिका का सम्पादन किया था। अज्ञेय जी ने वर्ष 1947 में 'प्रतीक' नामक पत्रिका के सम्पादन पहले इलाहाबाद से फिर दिल्ली से किया। इसमें सहयोगी के रूप में रघुवीर सहाय भी जुड़े थे। 'प्रतीक' साहित्यिक पत्रिका थी।

44. हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' की प्रकाशन भूमि थी—

(a) दिल्ली (b) इलाहाबाद
(c) कलकत्ता (d) बनारस

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'उदन्त मार्तण्ड' (उगता सूर्य) का प्रकाशन पण्डित युगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से 1826 ई. में किया। इस साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक और मुद्रक दोनों ही स्वयं बाबू युगल किशोर शुक्ल थे। स्वतन्त्र रूप से इस प्रकार का कोई पत्र पहले हिन्दी में प्रकाशित नहीं होता था। इस प्रकार यह (उदन्त मार्तण्ड) हिन्दी का पहला समाचार-पत्र है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आर्थिक कठिनाइयों के कारण 4 दिसम्बर, 1827 को इस समाचार-पत्र को बन्द कर देना पड़ा।
- पण्डित युगल किशोर शुक्ल ने 1850 ई. में उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन पुनः शुरू किया।
- हिन्दी भाषा में सम्पूर्ण रूप से पहला हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र 'हिन्दोस्तान' माना जाता है, जो 1885 ई. में उत्तर प्रदेश के कालाकांकर (प्रतापगढ़ जनपद) नामक स्थान से राजा रामपाल सिंह ने प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक पण्डित मदन मोहन मालवीय थे।
- हिन्दी का दैनिक 'सुधावर्षण' 1854 में श्यामसुन्दर सेन के सम्पादन में कलकत्ता से ही निकला।
- 1829 ई. में संवाद कौमुदी का प्रकाशन हुआ। ताराचन्द्र इसके संचालक और भवानीचरण बंद्योपाध्याय सम्पादक थे। यह एक साप्ताहिक बंगला-पत्र था।

45. हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित होता था—

(a) दैनिक (b) साप्ताहिक
(c) मासिक (d) त्रैमासिक

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. **हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के सम्पादक थे—**

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) राधाकृष्ण दास
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) बाबू युगल किशोर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. **हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कौन-सा था?**

(a) संवाद कौमुदी (b) दिग्दर्शन
(c) उदन्त मार्तण्ड (d) बंगदूत

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. **हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?**

(a) 1826 में कलकत्ता से (b) 1828 में कलकत्ता से
(c) 1826 में बम्बई से (d) 1828 में मद्रास से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. **हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ—**

(a) 1840 ई. में (b) 1826 ई. में
(c) 1830 ई. में (d) 1844 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. **हिन्दी का पहला पत्र है—**

(a) कविवचन सुधा (b) बनारस अखबार
(c) अभ्युदय (d) उदन्त मार्तण्ड

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. **दैनिक 'हिन्दोस्तान' का प्रकाशन (मालवीय जी के सम्पादन में) होता था—**

(a) इलाहाबाद से (b) वाराणसी से
(c) प्रतापगढ़ से (d) पटना से

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. **इंग्लैंड से प्रकाशित होने वाले पत्र का नाम है-**

(a) हिन्दोस्थान (b) भारतमित्र
(c) सदादर्श (d) देशहितैषी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

1886 ई. में राजा रामपाल सिंह इंग्लैंड में 'हिन्दोस्थान' नामक समाचार-पत्र को अंग्रेजी में प्रकाशित करते थे। कुछ समय बाद इसे प्रतापगढ़ (उ.प्र.) के कालाकांकर राजभवन से हिन्दी व अंग्रेजी दोनों संस्करण में दैनिक रूप से प्रकाशित करने लगे।

53. **'कविवचनसुधा' थी—**

(a) एक कविता प्रतियोगिता (b) एक पत्रिका
(c) एक नाटक प्रतियोगिता (d) एक साहित्यिक संस्था

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 18 वर्ष की अल्पायु में ही 1868 ई. में काशी से 'कविवचनसुधा' नामक पत्रिका निकाली जिसमें तत्कालीन अच्छे विद्वानों के लेख निकलते थे। ये आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक के रूप में जाने जाते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा निकाली गयी अन्य पत्र-पत्रिकाएँ हैं—हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873), हरिश्चन्द्र चन्द्रिका (1874), बालबोधिनी (1874)। 'बालबोधिनी' महिलाओं की पत्रिका थी, जो नारी जागरण के उद्देश्य से निकाली गयी थी।

54. **भारतेन्दु जी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?**

(a) माधुरी (b) मर्यादा
(c) कविवचनसुधा (d) सरस्वती

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. **निम्नांकित में से किस पत्रिका के सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे?**

(a) सरस्वती (b) कविवचनसुधा
(c) नागरी-प्रचारिणी पत्रिका (d) सुकवि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. **हिन्दी समालोचना के सूत्रपात के लिये भारतेन्दु युग की कौन-सी पत्रिका उल्लेखनीय है?**

(a) कविवचनसुधा (b) हरिश्चन्द्र पत्रिका
(c) ब्राह्मण (d) आनन्द कादम्बिनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

भारतेन्दु युग में आधुनिक आलोचना का रूप यदि कहीं बीज रूप में सुरक्षित है, तो वह पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक समीक्षाओं में ही है। इस क्रम में सबसे पहला उल्लेखनीय नाम बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का है। उन्होंने श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' और गदाधर सिंह कृत 'बंग विजेता' के अनुवादों की विस्तृत आलोचना 'आनन्द कादम्बिनी' में की थी। इसके बाद बालकृष्ण भट्ट और बालमुकुन्द गुप्त ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया । भट्ट जी की 'नीलदेवी', 'परीक्षागुरु', 'संयोगिता स्वयंवर' और 'एकान्तवासी योगी' सम्बन्धी आलोचनाएँ तत्कालीन समीक्षा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

57. 'आनन्द कादम्बिनी' का सम्पादक कौन था?

(a) बालकृष्ण भट्ट (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (d) प्रताप नारायण मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का जन्म 1855 ई. में मिर्जापुर के एक सम्पन्न ब्राह्मण-कुल में हुआ था। इन्होंने साप्ताहिक पत्रिका 'नागरी नीरद' तथा मासिक पत्रिका 'आनन्द कादम्बिनी' का सम्पादन किया। आनन्द कादम्बिनी का प्रकाशन 1881 ई. में मिर्जापुर से हुआ था।

58. आनन्द कादम्बिनी का प्रकाशन बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने किया था–

(a) कलकत्ता से (b) प्रयाग से
(c) मिर्जापुर से (d) ग्वालियर से

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे–

(a) प्रेमघन (b) भारतेन्दु
(c) श्रीनिवास दास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

60. 'आनन्द कादम्बिनी' का प्रकाशन कहाँ से होता था?

(a) बनारस (b) कानपुर
(c) मिर्जापुर (d) इलाहाबाद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

61. 'आनंद कादम्बिनी' का प्रकाशन कहाँ से होता था?

(a) कोलकाता (b) प्रयागराज
(c) कानपुर (d) मिर्जापुर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

62. 'आलोचना' नामक प्रसिद्ध समीक्षा पत्रिका के सम्पादक कौन थे?

(a) डॉ. नामवर सिंह (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(a)

डॉ. नामवर सिंह 'आलोचना' नामक त्रैमासिक समीक्षा पत्रिका के प्रधान सम्पादक थे। इन्होंने 'जन युग' साप्ताहिक पत्रिका का भी सम्पादन कार्य किया।

63. सन् 1954 में प्रकाशित 'नयी कविता' पत्रिका के सम्पादक थे–

(a) अज्ञेय (b) धर्मवीर भारती
(c) श्री नरेश मेहता (d) जगदीश गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(d)

वर्ष 1954 में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ. जगदीश गुप्त के सम्पादन में 'नयी कविता' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ और जिस काव्य के ऊपर मात्र प्रयोगवाद का विवादग्रस्त आरोप और प्रत्यारोप लगाया जा रहा था, उससे भिन्न स्तर पर सर्वथा विषय-वस्तु की नवीनता को लेकर नयी कविता को प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता अनुभव करके वर्ष 1954 में प्रयाग (इलाहाबाद), अब प्रयागराज की 'साहित्य सहयोग' नामक सहकारी संस्था ने 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन किया। अतः जो काव्यधारा अब तक 'प्रयोगवाद' के नाम से प्रतिष्ठापित थी, 'नयी कविता' के नाम से प्रतिष्ठापित की जाने लगी।

64. 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से हुआ?

(a) इलाहाबाद (b) भोपाल
(c) दिल्ली (d) लखनऊ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

65. निम्नलिखित में से किस पत्रिका का सम्बन्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से नहीं है?

(a) कविवचनसुधा (b) हरिश्चन्द्र मैग्जीन
(c) बालबोधिनी (d) ब्राह्मण

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

'ब्राह्मण' पत्रिका का सम्पादन 1883 ई. में प्रतापनारायण मिश्र ने कानपुर से किया था, जबकि 'कविवचनसुधा (1867 ई.), हरिश्चन्द्र मैग्जीन (1873 ई.) एवं बालबोधिनी (1874 ई.) काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका थी। जिसके सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। बालबोधिनी पत्रिका स्त्री-शिक्षा के प्रचारार्थ निकाली गई थी।

66. 'ब्राह्मण' के सम्पादक थे–

(a) बालमुकुन्द गुप्त (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रतापनारायण मिश्र

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई. में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ था। इन्हें आधुनिक हिन्दी निर्माताओं में से एक माना जाता है। ये हिन्दी खड़ी बोली और भारतेन्दु युग के उन्नायक कहे जाते हैं। इन्होंने एक लेखक, कवि और पत्रकार के रूप में विशेष प्रसिद्धि पायी। 15 मार्च, 1883 को होली के दिन प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्रिका निकाली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसी रचना शैली, विषय-वस्तु और भाषागत विशेषताओं के कारण ही मिश्र जी को 'प्रतिभारतेन्दु' या 'द्वितीयचन्द्र' कहा जाता था।

➲ 1882 ई. के आस-पास इनकी 'प्रेम पुष्पावली' प्रकाशित हुआ, जिसकी प्रशंसा भारतेन्दु जी ने की थी।

67. 'ब्राह्मण' पत्रिका का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किससे है?

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) बालमुकुन्द गुप्त (d) राधाचरण गोस्वामी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

68. 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक थे–

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) बालमुकुन्द गुप्त (d) राधाचरण गोस्वामी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. 'साहित्य भारती' पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

(a) इलाहाबाद (b) लखनऊ
(c) वाराणसी (d) कानपुर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

'साहित्य भारती' (1996) पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी संस्थान, लखनऊ से होती है। साहित्य भारती समस्त भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि त्रैमासिक पत्रिका है, जिसके सम्पादक राजेश कुमार बैजल हैं।

70. 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' प्रकाशित होता था–

(a) कलकत्ता से (b) इलाहाबाद से
(c) लखनऊ से (d) बम्बई से

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

'श्री वेंकटेश्वर समाचार' बम्बई से प्रकाशित होता था। इस प्रेस की स्थापना 1871 ई. में संस्कृत एवं हिन्दी विषय के प्रचार एवं प्रसार के लिए की गयी थी।

71. 'भारत मित्र' पत्र प्रकाशित होता था–

(a) कलकत्ता से (b) पटना से
(c) कानपुर से (d) दिल्ली से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(a)

'भारत मित्र' पत्र कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) से प्रकाशित होने वाला समाचार-पत्र था, जिसे 17 मई, 1878 को प्रकाशित किया गया था। उस समय कलकत्ता से हिन्दी का कोई भी पत्र प्रकाशित नहीं होता था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ दुर्गा प्रसाद मिश्र ने 'भारत मित्र' का सम्पादन शुरू किया था, जो कश्मीर के रहने वाले थे।

➲ 16 जनवरी, 1899 को बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने 'भारत मित्र' के सम्पादन का कार्य-भार संभाला और अपने विवेक के अनुसार उसे रूपान्तरित कर दिया।

72. 'भारत मित्र' पत्रिका के सम्पादक थे–

(a) माधव प्रसाद मिश्र (b) बाबू बालमुकुन्द गुप्त
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) गोविन्द नारायण मिश्र

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के सम्पादक हैं–

(a) अशोक वाजपेयी (b) वीरेश्वर मिश्र
(c) जी. गोपीनाथन (d) विभूति नारायण राय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के सम्पादक विभूति नारायण राय हैं। यह पत्रिका साहित्य और कला के विकास से सम्बन्धित है। यह मासिक पत्रिका अलीगढ़ से प्रकाशित होती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विभूति नारायण राय आई.पी.एस. अधिकारी (सेवानिवृत्त) हैं, जो आजमगढ़ (उ.प्र.) के रहने वाले हैं।
- उपन्यास 'तबादला' के लिए उन्हें अन्तरराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान प्राप्त हुआ है।
- इनकी अन्य रचनाएँ हैं–'किस्सा लोकतन्त्र' (उपन्यास), 'एक छात्र का रोजनामचा' (व्यंग्य संग्रह), घर, शहर में कर्फ्यू, प्रेम की भूत कथा आदि।

74. 'नयी कहानी' पत्रिका का सम्पादक कौन था?

(a) प्रेमचन्द (b) मोहन राकेश
(c) कमलेश्वर (d) भैरव प्रसाद गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'विहान' जैसी पत्रिका का वर्ष 1954 में सम्पादन आरम्भ कर कमलेश्वर ने कई पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया, जिनमें 'नयी कहानियाँ' (1963-66), 'सारिका' (1967-78), 'कथा यात्रा' (1978-79), 'गंगा' (1984-88) इत्यादि प्रमुख हैं।

75. 'रूपाभ' के सम्पादक हैं–

(a) पन्त (b) प्रसाद
(c) निराला (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(a)

'रूपाभ' के सम्पादक सुमित्रानन्दन पन्त हैं। इसका प्रकाशन वर्ष 1938 में प्रारम्भ हुआ। वर्ष 1938 का 'रूपाभ' मुख्यत: प्रगतिशील विचारधारा का ही पत्र था, जिसमें 'प्रगतिवाद' शब्द नहीं प्रयुक्त हुआ है।

76. बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम था–

(a) ब्राह्मण (b) हिन्दी प्रदीप
(c) आनन्द कादम्बिनी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

'हिन्दी प्रदीप' का सम्पादन बालकृष्ण भट्ट ने 1877 ई. में किया था। यह एक मासिक पत्रिका थी। ब्राह्मण पत्रिका (1833) का सम्पादन प्रताप नारायण मिश्र तथा आनन्द कादम्बिनी का सम्पादन बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'हिन्दी प्रदीप' के मुख पृष्ठ पर छपा रहता था–'शुभ सरस देश, सनेह पूरित प्रकट ह्वै आनन्द भरे।'
- भट्ट जी का पहला निबन्ध 'कलिराज की सभा' 1872 ई. में 'कविवचनसुधा' में छपा।

77. 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे–

(a) अम्बिका दत्त व्यास (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. 'हिन्दी प्रदीप' के यशस्वी सम्पादक का नाम है–

(a) राधाकृष्ण गोस्वामी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) अम्बिकादत्त व्यास (d) लाल भगवान दीन

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. 'हिन्दी प्रदीप' नामक पत्र निम्न में से किसके द्वारा निकाला गया?

(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) ठाकुर जगमोहन सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

80. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ–

(a) सन् 1903 में (b) सन् 1900 में
(c) सन् 1930 में (d) सन् 1868 में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

1884 ई. में इंडियन प्रेस की स्थापना इलाहाबाद में चिन्तामणि घोष द्वारा की गई, उन्होंने 1899 ई. में हिन्दी में एक मासिक पत्रिका निकालने का निश्चय किया तथा सभा से अनुरोध किया कि उसका सम्पादन भार वह स्वयं ग्रहण करें। सभा ने इसके लिए एक सम्पादक-मण्डल गठित किया। इस मण्डल के सदस्य थे–श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथदास, कार्तिक प्रसाद और किशोरीलाल गोस्वामी। वर्ष 1900 में प्रयाग में 'सरस्वती' का प्रकाशन हुआ। एक वर्ष तक यह सम्पादक-मण्डल ने कार्य किया। तत्पश्चात वर्ष 1901 में इस कार्य का दायित्व श्यामसुन्दर दास को मिला। वर्ष 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके सम्पादक बने। अपनी अस्वस्थता के कारण उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद इस पत्रिका का कार्यभार देवीदत्त शुक्ल ने सँभाला। सरस्वती पत्रिका में जिन साहित्यकारों ने सम्पादन कार्य किया, उनमें प्रमुख हैं–जगन्नाथदास रत्नाकर, श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद, किशोरीलाल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, देवीदत्त शुक्ल, श्रीनाथ सिंह, देवी लाल चतुर्वेदी एवं श्रीनारायण चतुर्वेदी।

81. इंडियन प्रेस की स्थापना कब हुई थी?

(a) 1884 में (b) 1885 में

(c) 1893 में (d) 1900 में

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

82. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है-

(a) 1905 ई. (b) 1903 ई.

(c) 1902 ई. (d) 1900 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

83. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन वर्ष क्या था?

(a) 1843 (b) 1900

(c) 1902 (d) 1903

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. निम्नलिखित में कौन 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक नहीं रहे हैं?

(a) श्यामसुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) श्रीनारायण चतुर्वेदी (d) शान्तिप्रिय द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक हैं—

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) गणेश शंकर विद्यार्थी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

86. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक कौन थे?

(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) किशोरीदास वाजपेयी

(c) महावीरप्रसाद द्विवेदी (d) जयशंकर प्रसाद

K.V.S. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. इनमें से सरस्वती पत्रिका के सम्पादक का नाम क्या है?

(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय

(c) बालकृष्ण भट्ट (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी निम्नलिखित में किस पत्रिका के सम्पादक थे?

(a) साहित्य सन्देश (b) विशाल भारत

(c) सरस्वती (d) विनय पत्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

89. महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' के सम्पादक कब नियुक्त हुए?

(a) 1900 ई. (b) 1902 ई.

(c) 1903 ई. (d) 1905 ई.

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

90. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बने

(a) 1890 (b) 1893

(c) 1900 (d) 1903

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

91. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन शुरू किया—

(a) सन् 1900 से (b) सन् 1901 से

(c) सन् 1903 से (d) सन् 1914 से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

92. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन-भार ग्रहण किया गया था?

(a) 1900 ई. में (b) 1903 ई. में

(c) 1907 ई. में (d) 1909 ई. में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

93. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के सम्पादन का उत्तराधिकार अपने पश्चात किसे सौंपा था?

(a) गया प्रसाद शुक्ल

(b) पण्डित गौरी दत्त

(c) जगदम्बा प्रसाद मिश्र

(d) पण्डित देवीदत्त शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

94. 'सामयिक वार्ता' पत्रिका के सम्पादक हैं—

(a) किशन पटनायक (b) रमेश उपाध्याय

(c) पंकज विष्ट (d) नीलाभ

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'सामयिक वार्ता' पत्रिका के सम्पादक किशन पटनायक हैं। इसका प्रकाशन वाराणसी से होता है।

95. 'धर्मयुग' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक थे?

(a) रघुवीर सहाय

(b) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(c) राजेन्द्र यादव

(d) धर्मवीर भारती

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जनवरी, 1960 में डॉ. धर्मवीर भारती का 'धर्मयुग' के सम्पादकीय-विभाग में प्रवेश हुआ प्रधान सम्पादक के रूप में। 13 मार्च, 1960 यानी होली अंक में छोटी, किन्तु महत्वपूर्ण सम्पादकीय घोषणा प्रकाशित हुई थी। इसी अंक से सही अर्थ में भारती की परिकल्पना के अनुसार, 'धर्मयुग' का प्रकाशन शुरू होता है।

सम-सामयिक

गद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1-5)— नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों को सदा के लिये बांध देते हैं। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी लड़ने-मरने से, खून बहाने से, तोप-तलवार के सामने बलिदान करने से होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तःप्रेरणा है। जब कभी उसका विकास हुआ तभी एक रौनक, एक रंग, एक बहार संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं होते। वे तो देवदार के वृक्ष की भाँति जीवन रूपी वन में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं। 'जीवन के केन्द्र में निवास करो और सत्य की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर के अन्दर की तहों में पहुँचो तब नये रंग खिलेंगे।' यही वीरता का सन्देश है।

1. इस गद्यांश के लिये उपयुक्त शीर्षक होगा—

(a) वीरता संस्मरण

(b) सच्ची वीरता

(c) वीरों का उत्पन्न होना

(d) देवदार और वीर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

प्रस्तुत गद्यांश में 'सच्चे वीर' की चर्चा की गई है। अतः उपयुक्त शीर्षक 'सच्ची वीरता' होगा।

2. वीरता का सन्देश क्या है?

(a) यह संकल्प कि किसी भी हालत में युद्ध जीतना है

(b) बुद्ध जैसे राजा की भाँति विरक्त होना

(c) उद्देश्य के लिये सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना

(d) हमेशा नया और निराला रहना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

दिये गये गद्यांश के अन्तिम दो पंक्तियों से स्पष्ट है कि 'उद्देश्य के लिये सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना' वीरता का सन्देश है।

3. वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई है। क्योंकि दोनों—

(a) खाना-पीना मिलने पर ही बढ़ते हैं

(b) का दिल उदार होता है

(c) सत्य का हमेशा पालन करते हैं

(d) स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई है, क्योंकि दोनों स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं।

4. **निम्न में से कौन-सा रूप वीरता का नहीं है?**

(a) क्रोध (b) युद्ध

(c) त्याग (d) दान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश के पठन से यह ज्ञात होता है कि क्रोध, वीरता में सम्मिलित नहीं है, जबकि युद्ध, त्याग तथा दान वीरता का रूप है।

5. **वीरता का एक विशेष लक्षण है—**

(a) नयापन (b) नकल

(c) हास्य (d) करुणा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश से स्पष्ट है कि वीरता हमेशा निराली और नई होती है अर्थात् इसका एक विशेष लक्षण नयापन है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 6-10 के लिये)— नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

सामान्यतः दुष्टों की वन्दना में या तो भय रहता है या व्यंग्य। परन्तु जहाँ हम हानि होने के पहले ही हानि के कारण की वन्दना करने लगते हैं वहाँ हमारी वन्दना के मूल में भय नहीं, बल्कि उसकी स्थायी दशा की आशंका है। इस वन्दना में दुष्टों को थपकी देकर सुलाने की चाल है, जिससे विघ्न बाधाओं में जान बच सके। आशंका से उत्पन्न यह नम्रता गोस्वामी जी को आश्रय से आलंबन बना देती है। जब स्फुट अंशों के संचारीभावों तथा अनुभवों को छोड़कर वन्दना के पीछे निहित भावना की दृष्टि से देखते हैं, तो यह आश्रय से संक्रमित आलंबन का उदाहरण बन जाता है। सन्तों, देवताओं तथा राम की वन्दना पर्याप्त नहीं, इसलिये दुष्टों की भी वन्दना की जाती है। इससे दुष्टों के महत्व की भायिक सृष्टि होती है और वह उन्हें और भी उपहास्य बना देती है।

6. **दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य है—**

(a) दुष्टों को लज्जित करना

(b) दुष्टों को थपकी देकर सुलाना

(c) दुष्टों से अपना बचाव करना

(d) दुष्टों का सहयोग प्राप्त करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य दुष्टों को थपकी देकर सुलाना है।

7. **रामचरितमानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य है—**

(a) तुलसी की व्यापक दृष्टि

(b) तुलसी का सभी को राममय देखना

(c) तुलसी की उदारता

(d) तुलसी का शील-सौजन्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रामचरितमानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य तुलसीदास का सभी को राममय देखना है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने लिखा है—

बंदऊँ खल जस सेष सदोषा।
सहस बदन बरनई पर दोषा।।

अर्थात् मैं दुष्टों को (हजार मुख वाले) शेषजी के समान समझकर प्रणाम करता हूँ।

8. **उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है—**

(a) तुलसी की दुष्ट वन्दना

(b) तुलसी की उदारता

(c) तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण

(d) उपर्युक्त तीनों

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण' हो सकता है।

9. **देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिये सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसीदास-**

(a) सन्तकवि थे

(b) उदारचेता थे

(c) हित-अनहित और अपने-पराये की भावना से ऊपर उठ चुके थे

(d) निर्वरता चाहते थे

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिये सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसीदास निर्वरता चाहते थे।

10. जीवन में हास्य का महत्व इसलिये है कि वह जीवन को-

(a) प्रेरणा देता है

(b) आनन्दित करता है

(c) आगे बढ़ाता है

(d) सरस बनाता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जीवन में हास्य का महत्व इसलिये है कि वह जीवन को सरस बनाता है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 11-15 के लिये)—नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया है। शिवाजी और छत्रसाल जैसे महानुभावों के पवित्र चरित्रों का वर्णन करने वाले की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। शिवाजी ने एक जमींदार और बीजापुरधीश के नौकर के पुत्र होकर चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण सा कर दिखाया और छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया उस समय उसके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे। इसी सेना से इस महानुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों के लिये दो करोड़ वार्षिक मुनाफे का स्वतंत्र राज्य छोड़ा।

—भूषण ग्रन्थावली

11. महाकवि भूषण दरबारी कवि थे। उनके आश्रयदाता राजा का नाम था—

(a) शिवाजी (b) छत्रासाल

(c) औरंगजेब (d) वीर सिंह जूदेव

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

भूषण के प्रमुख आश्रयदाता शिवाजी तथा छत्रसाल बुन्देला थे। कविवर भूषण की पालकी में कंधा देकर तो छत्रसाल ने साहित्य के प्रति सत्ता के समर्पण का उदाहरण पेश किया।

12. छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रन्थों के नाम हैं—

(a) शिवा बावनी, शिवराज भूषण

(b) शिवा चरित, शिवा विलास

(c) शिवा वैभव, शिवा चिन्तन

(d) शिवा कथा, शिवा विक्रम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रन्थों के नाम हैं—शिवा बावनी और शिवराज भूषण। 'शिवराज भूषण' में 384 छन्द हैं। इसमें शिवाजी के कार्य-कलापों का वर्णन किया गया है। 'शिवा बावनी' में 52 छन्दों में शिवाजी की कीर्ति का वर्णन किया गया है।

13. इस गद्यांश का सार्थक शीर्षक हो सकता है—

(a) भूषण विवेक

(b) भूषण की बुद्धिमत्ता

(c) भूषण की कला

(d) भूषण का काव्यनायक चयन

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस गद्यांश का शीर्षक 'भूषण की बुद्धिमत्ता' हो सकता है।

14. 'छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना किया, उस समय उनके पास थे—

(a) दो सवार और पाँच पैदल

(b) पाँच सवार और पच्चीस पैदल

(c) पच्चीस सवार और दो पैदल

(d) पच्चीस सवार और पाँच पैदल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया, उस समय उनके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे।

15. भूषण का प्रिय काव्य रस था—

(a) करुण (b) शान्त

(c) वीर (d) श्रृंगार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

भूषण वीर रस के कवि हैं। चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने इन्हें कविभूषण की उपाधि दी थी।

समसामयिक घटना चक्र

पद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1-5 के लिये)— नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

1. उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है—
(a) झाँसी की रानी (b) 1857 का गदर
(c) अंग्रेजों पर आक्रमण (d) महाराष्ट्र कुल देवी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उक्त पद्यांश का सही शीर्षक 'झाँसी की रानी' होगा।

2. इस कविता की कवयित्री का नाम है—
(a) महादेवी वर्मा (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) तारा पाण्डेय (d) मीराबाई

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'झाँसी की रानी' कविता की कवयित्री का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान है।

3. इस कविता में प्रयोग किया गया रस है—
(a) भक्ति (b) करुण
(c) श्रृंगार (d) वीर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

इस कविता में वीर रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस से ओत-प्रोत इस कविता की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान को 'राष्ट्रीय बसन्त की प्रथम कोकिला' का विरुद दिया गया था।

4. कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ—
(a) सामाजिक हैं (b) वात्सल्यपूर्ण हैं
(c) देशभक्तिपूर्ण हैं (d) धार्मिक हैं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ देशभक्तिपूर्ण हैं। 'वीरों का कैसा हो बसन्त' उनकी प्रसिद्ध देश-प्रेम की कविता है। 'स्वदेश के प्रति', 'सेनानी का स्वागत', 'विदाई', 'जलियां वाले बाग में बसन्त' आदि श्रेष्ठ कवित्व से भरी उनकी अन्य सशक्त कविताएँ हैं। सुभद्रा जी ने मातृत्व से प्रेरित होकर बहुत सुन्दर बाल कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं में भी उनकी राष्ट्रीय भावनाएँ प्रकट हुई हैं।

5. 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में 'मरदानी' का अर्थ है-
(a) वीरांगना (b) पुरुषों जैसी
(c) पुरुषत्व वान (d) लड़ाकू

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

सुभद्रा कुमारी चौहान रचित इस रचना में मरदानी का अर्थ पुरुषों जैसी या पुरुषों जैसा वस्त्र पहनने वाली नहीं है। इस कविता में मरदानी का अर्थ वीर से है। अतः अभीष्ट विकल्प (a) है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 6-10 के लिये)—नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

अस्ताचल रवि, जल छल-छल छवि
स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन
मन्द पवन बहती सुधि रह रह
परिमल की कह कथा पुरातन
दूर नदी पर नौका सुन्दर
दीखी मृदु तर बहती ज्यों स्वर
वहाँ स्नेह की प्रतनु देह की
बिना गेह की बैठी नूतन
ऊपर शोभित मेघ सत्र सित
नीचे अमित नील जल दोलित
ध्यान-नयन मन चिन्त्य-प्राण-धन
किया शेष रवि ने कर अर्पण

6. इस कविता का सार्थक शीर्षक हो सकता है—
(a) दिवस का अवसान (b) दिवा-गमन
(c) अस्ताचल रवि (d) रवि कर अर्पण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

दिये गये कविता का सार्थक शीर्षक 'अस्ताचल रवि' हो सकता है।

7. इस कविता में छायावादी कवि निराला ने—
(a) प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है।
(b) अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है।
(c) मादक भावनाओं की अभिव्यक्ति की है।
(d) सूर्यास्त का चित्रण किया है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस कविता में छायावादी कवि निराला ने अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है।

8. इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' अर्थ रखता है—

(a) प्रमुदित (b) क्षीण
(c) मृत (d) प्रेत

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' क्षीण का अर्थ रखता है जिसका तात्पर्य कमजोर/दुर्बल से है।

9. पण्डित निराला हिन्दी के—

(a) श्रेष्ठ साहित्यकार थे
(b) लेखक तथा कवि दोनों थे
(c) समाजवादी कवि थे
(d) प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे।

10. उपर्युक्त पद्य में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का प्रयोग अर्थ रखता है—

(a) गेहूँ (b) एक जीव
(c) घर (d) द्वार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का अर्थ घर है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 11-15 के लिए)—निम्न पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

आज क्यों तेरी वीणा मौन
शिथिल-शिथिल तन थकित हुए कर
स्पन्दन भी भुला जाता डर
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन?

झुकती आती पलकें निश्चल
चित्रित निद्रित से तारक चल
सोता पारावार दृगों में
भर-भर लाया कौन?
आज क्यों तेरी वीणा मौन?

11. इस कविता के रचयिता हैं—

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इस कविता की रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

12. नीरजा से उद्धृत इस कविता का आशय है—

(a) न जाने आज क्यों उनकी हृदतंत्री बज नहीं रही
(b) दुखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है?
(c) विरह व्यथा की कसक तन मन को व्याकुल बना रही है, फिर भी आहें, नहीं भरी जाती। रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ।
(d) विरह व्यथा की कथा अकथनीय है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नीरजा से उद्धृत इस कविता का आशय है—दुखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है?

13. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक होगा—

(a) सुधि बन छाया कौन (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन
(c) हृदय में आन समाया कौन (d) मौन वीणा का रहस्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस कविता का उपयुक्त शीर्षक 'आज क्यों तेरी वीणा मौन' होगा।

14. कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह—

(a) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थीं।
(b) साधना में दूसरी मीरा थीं।
(c) छायावादी भावों में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थीं।
(d) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थीं।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

कवयित्री (महादेवी वर्मा) के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह साधना में दूसरी मीरा थीं। इन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। भक्तिकाल में जो स्थान कृष्ण भक्त मीरा को प्राप्त है, आधुनिक काल में वह स्थान महादेवी वर्मा को मिला है।

15. भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता-

(a) दुर्बोध रचना है।
(b) श्रेष्ठ रचनाओं में एक है।
(c) आरम्भिक रचना है।
(d) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता श्रेष्ठ रचनाओं में एक है। नीरजा उनकी आरम्भिक रचना नहीं है।

विविध

1. इनमें से डॉ. नगेन्द्र की कौन-सी पुस्तक साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुई है?

(a) आस्था के चरण (b) रस सिद्धान्त
(c) विचार और अनुभूति (d) रीतिकाव्य की भूमिका

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डॉ. नगेन्द्र मूलतः रसवादी आलोचक थे, रस-सिद्धान्त में उनकी गहरी आस्था थी। अपनी पुस्तक 'रस-सिद्धान्त' (काव्य-संग्रह) के लिए वर्ष 1965 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किए थे।

2. रामदरश मिश्र को उनकी किस कृति पर, वर्ष 2015 के लिए, 'हिन्दी साहित्य अकादमी' पुरस्कार दिया गया?

(a) कितने बजे हैं (b) आग की हँसी
(c) बबूल और कैक्टस (d) बिना दरवाजे का मकान

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य संसार के बहुआयामी रचनाकार हैं। इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास आलोचना और निबन्ध जैसी प्रमुख विधाओं में तो लिखा ही है, आत्म-कथा 'सहचर है समय' यात्रावृत्त तथा संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी रचना 'आग की हँसी' (कविता-संग्रह) के लिए इन्हें वर्ष 2015 में 'हिन्दी साहित्य अकादमी' पुरस्कार दिया गया। इनकी अन्य रचनाएँ हैं-बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ, पक गयी है धूप, कंधे पर सूरज, दिन एक नदी बन गया, जुलुस कहाँ जा रहा है, आग कुछ नहीं बोलती, बारिश में भीगते बच्चे, हंसी ओंठ पर आँखें नम हैं आदि।

3. प्रसिद्ध समीक्षक रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी किस कृति के लिए वर्ष 2017 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया?

(a) अथातो सौंदर्य जिज्ञासा
(b) साक्षी है सौंदर्य प्राश्निक
(c) क्योंकि समय एक शब्द है
(d) विश्वमिथकसरित्सागर

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2017' का पुरस्कार रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी साहित्यिक समालोचना 'विश्वमिथकसरित्सागर' पर प्रदान किया गया।

4. किस कृति को संगीत नाटक अकादमी का प्रथम पुरस्कार 1959 में प्राप्त हुआ है?

(a) आषाढ़ का एक दिन (b) आधे अधूरे
(c) लहरों का राजहंस (d) इनमें से कोई भी नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' यथार्थवादी नाटक है। इस त्रिखंडीय नाटक का प्रकाशन वर्ष 1958 में किया गया। इसे हिन्दी नाटक के आधुनिक युग का प्रथम नाटक भी कहा जाता है। इस नाटक को वर्ष 1959 में सर्वश्रेष्ठ नाटक होने के लिए 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'आषाढ़ का एक दिन' महाकवि कालिदास के निजी जीवन पर आधारित है, इस नाटक का शीर्षक कालिदास की कृति 'मेघदूतम' की शुरुआती पंक्तियों से लिया गया है।

5. कैलाश वाजपेयी की 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित काव्यकृति है-

(a) देहान्त से हटकर (b) महास्वप्न का मध्यान्तर
(c) हवा में हस्ताक्षर (d) पृथ्वी का कृष्ण पक्ष

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हवा में हस्ताक्षर' कैलाश वाजपेयी का कविता संग्रह है। यह वर्ष 2009 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

(a) 1960 ई. में (b) 1965 ई. में
(c) 1966 ई. में (d) 1955 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(*)

ज्ञानपीठ पुरस्कार साहित्य जगत का सर्वाधिक सम्मानित पुरस्कार है। इसकी स्थापना 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' समाचार-पत्र के सम्पादक 'साहू जैन परिवार' (साहू शान्ति प्रसाद जैन) द्वारा वर्ष 1961 में किया गया। इस पुरस्कार को सर्वप्रथम वर्ष 1965 में मलयालम लेखक श्री शंकर कुरूप को उनके साहित्य 'ओटक्कुषल' (बाँसुरी) के लिए दिया गया। प्रश्न में पुरस्कार की स्थापना पूछा गया है, जबकि विकल्प में प्रथम पुरस्कार प्रदान करने का वर्ष मौजूद है। अतः कोई भी विकल्प सही नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाली प्रथम महिला बंगाली लेखिका आशापूर्णा देवी थीं, जिन्हें यह पुरस्कार वर्ष 1976 में प्राप्त हुआ।
- वर्ष 2013 का केदारनाथ सिंह को हिन्दी साहित्य के लिए 49वाँ तथा वर्ष 2014 का मराठी साहित्य के लिए भालचन्द्र नेमाड़े को 50वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया है।
- वर्ष 2015 का 51वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने गुजराती लेखक डॉ. रघुवीर चौधरी को 11 जुलाई, 2016 को प्रदान किया।
- वर्ष 2016 का 52वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार 23 दिसम्बर, 2016 को बांग्ला साहित्य के कवि शंखा घोष को प्रदान किये जाने की घोषणा की गई।
- वर्ष 2017 का 53वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार हिन्दी लेखिका कृष्णा सोबती को प्रदान किया गया।

7. नरेश मेहता को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर प्राप्त हुआ?

(a) महाप्रस्थान (b) सम्पूर्ण रचना कर्म
(c) वनपाखी सुनो (d) संशय की एक रात

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नरेश मेहता को किसी एक रचना के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण रचना कर्म के लिए साहित्यिक सेवाओं में विशेष योगदान के लिए वर्ष 1992 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नरेश मेहता दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्व हैं, जो प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं। आर्ष परम्परा और साहित्य को नरेश मेहता के काव्य में नयी दृष्टि मिली।
- इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—अरण्या, उत्तर कथा, एक समर्पित महिला, कितना अकेला आकाश चैत्या, दो एकान्त, धूमकेतु : एक श्रुति, पुरुष, प्रति श्रुति प्रवाद पर्व, बोलने दो चीड़ को, यह पथ बन्धु था, हम अनिकेतन आदि।

8. निम्नलिखित में किस कवि को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ?

(a) दिनकर (b) पन्त
(c) अज्ञेय (d) सुरेन्द्र वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भारतीय भाषाओं (22) में से किसी एक सर्वोत्कृष्ट रचना के लिए प्रदान किया जाता है। सुरेन्द्र वर्मा को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ है। हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले सुमित्रानन्दन पन्त थे, जिन्हें यह पुरस्कार वर्ष 1968 में 'चिदम्बरा' के लिए प्रदान किया गया। तत्पश्चात रामधारी सिंह 'दिनकर' को वर्ष 1972 में 'उर्वशी' के लिए, वर्ष 1978 में अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए, वर्ष 1982 में महादेवी वर्मा को 'यामा' के लिए, वर्ष 1992 में नरेश मेहता को, वर्ष 1999 में निर्मल वर्मा को, वर्ष 2005 में कुँवर नारायण को, वर्ष 2009 में अमरकान्त एवं श्रीलाल शुक्ल को संयुक्त रूप से, वर्ष 2013 में केदारनाथ सिंह को 'अकाल में सारस' के लिए तथा वर्ष 2017 में कृष्ण सोबती को हिन्दी साहित्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस प्रकार अब तक कुल 11 हिन्दी रचनाकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया है।

9. निम्नलिखित में से किस लेखक को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' नहीं मिला है?

(a) नरेश मेहता (b) दिनकर
(c) नागार्जुन (d) निर्मल वर्मा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. वर्ष 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार निम्नलिखित में से किस लेखिका को दिया गया है?

(a) कृष्णा सोबती (b) मृदुला गर्ग
(c) चित्रा मुद्‌गल (d) मन्नू भंडारी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित कौन रचनाकार नहीं है?

(a) महादेवी वर्मा (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' किससे सम्बन्धित है?

(a) हिन्दी भाषा से (b) तमिल भाषा से
(c) संस्कृत भाषा से (d) सभी भारतीय भाषाओं से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित नहीं किये गये कवि हैं—**

(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) जयशंकर प्रसाद

(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) नरेश मेहता

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **रामधारी सिंह 'दिनकर' को किस कृति पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था?**

(a) उर्वशी (b) कुरुक्षेत्र

(c) सामधेनी (d) हुंकार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. **पन्त को किस काव्य कृति पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला था?**

(a) लोकायतन (b) चिदम्बरा

(c) पल्लव (d) ज्योत्सना

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. **'धूमिल' को किस काव्यकृति पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला था?**

(a) कल सुनना मुझे (b) सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र

(c) संसद से सड़क तक (d) किसी पर नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009, 2005

उत्तर—(a)

धूमिल को 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के लिए वर्ष 1979 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

17. **'उत्तर कबीर' पर व्यास सम्मान पाने वाले रचनाकार हैं—**

(a) कुँवर नारायण (b) केदारनाथ सिंह

(c) रामविलास शर्मा (d) भवानी प्रसाद मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' केदारनाथ सिंह की कृति है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1995 में हुआ। इस रचना पर इन्हें वर्ष 1997 में व्यास सम्मान प्राप्त हुआ है। 'अकाल में सारस' के लिए ये वर्ष 2013 का ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित हुए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ केदारनाथ सिंह के काव्य संग्रह हैं—अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, बाघ, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, टालस्टॉय और साइकिल आदि।

➲ कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान, मेरे समय के शब्द केदारनाथ सिंह की गद्य कृतियाँ हैं।

➲ केदारनाथ सिंह ने संकल्प कविता दशक (हिन्दी अकादमी, दिल्ली), तनी हुई प्रत्यंचा (बीसवीं शताब्दी की रूसी कविता) और ताना-बाना (स्वाधीनता के बाद की भारतीय कविताओं का संकलन) पुस्तकों का भी सम्पादन किया।

➲ 19 मार्च, 2018 को केदारनाथ सिंह का नई दिल्ली में निधन हो गया।

18. **'टालस्टॉय और साइकिल' किसकी काव्य कृति है?**

(a) लीलाधर जगूड़ी (b) अरुण कमल

(c) ज्ञानेन्द्र पति (d) केदारनाथ सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. **जगदीश गुप्त को 1997 में किस सम्मान से विभूषित किया गया?**

(a) भारत-भारती सम्मान से (b) ज्ञानपीठ सम्मान से

(c) सरस्वती सम्मान से (d) व्यास सम्मान से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

भारत-भारती उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार है। यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। पुरस्कार में भारत-भारती सम्मान के रूप में स्मृति चिह्न, अंगवस्त्रम् तथा 5 लाख, 2 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है। जगदीश गुप्त को वर्ष 1998 में भारत-भारती सम्मान से सम्मानित किया गया था, न कि वर्ष 1997 में। अब तक भारत-भारती पुरस्कार प्राप्तकर्ता इस प्रकार हैं—महादेवी वर्मा (1982), धर्मवीर भारती (1990), जगदीश गुप्त (1998), जानकी वल्लभ शास्त्री (2001), नामवर सिंह (2005), परमानन्द श्रीवास्तव (2006), रामदरश मिश्र (2007), केदारनाथ सिंह (2008), अशोक वाजपेयी (2008), महीप सिंह (2009), कैलाश वाजपेयी (2010), गोविन्द मिश्र (2011), गोपाल दास नीरज (2012), दूधनाथ सिंह (2013), काशीनाथ सिंह (2014), डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी (2015), डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित (2016)।

20. **प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन कहाँ हुआ था?**

(a) दिल्ली (b) नागपुर

(c) मॉरीशस (d) लंदन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10-12 जनवरी, 1975 को नागपुर (भारत) में आयोजित किया गया था।

21. जननाट्य मंच (IPTA) की स्थापना......में हुई है।

(a) 1939 (b) 1949

(c) 1959 (d) 1969

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

भारतीय जननाट्य मंच (Indian People's Theatre Association-IPTA) की स्थापना राष्ट्रीय स्तर पर 25 मई, 1943 को बम्बई (अब मुम्बई) में हुई थी। स्वर्णजयन्ती (50वां वर्ष) के अवसर पर वर्ष 1993 में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। इप्टा का नामकरण सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक होमी जहाँगीर भाभा ने किया था। इप्टा का प्रतीक चिह्न सुप्रसिद्ध चित्रकार चित्त प्रसाद की कृति 'नगाड़ावादक' है, जो संचार के सबसे प्राचीन माध्यम को याद दिलाता है।

22. 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर' में नावक का क्या अर्थ है?

(a) नायक (b) बहेलिया

(c) नाविक (d) नाव का

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

हिन्दी साहित्यकार सुधीश पचौरी ने 28 अगस्त, 2012 के 'लाइव हिन्दुस्तान डॉट कॉम' के एक साक्षात्कार वार्ता में प्रस्तुत दोहे के अर्थ को समझाते हुए कहा है कि यहाँ 'नावक' का मतलब 'नाविक' नहीं। नावक यानी तीरंदाज। छोटा-सा तीर, घाव गम्भीर! यही काव्यकला है। कहीं-कहीं पर कुछ विद्वानों ने 'नावक' का अर्थ 'नाविक' भी बताया है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) दिया था, किन्तु स्पष्ट न होने के कारण संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

23. विश्वनाथ के अतिरिक्त किस आचार्य ने 'साहित्य' शब्द को अपने ग्रन्थ-नाम में प्रयुक्त किया है?

(a) भामह (b) राजशेखर

(c) रूय्यक (d) आनन्दवर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

साहित्य शब्द का प्रयोग रूय्यक ने ग्यारहवीं शताब्दी में अपने दूसरे ग्रन्थ 'साहित्य मीमांसा' में 'साहित्य' शब्द का प्रयोग किया था। तत्पश्चात चौदहवीं शताब्दी के विश्वनाथ ने प्रयोग किया।

24. किस ग्रन्थ में कलचुरि राजवंश के किसी सामन्त की सात नायिकाओं का नखशिख वर्णन है?

(a) वर्ण रत्नाकर (b) उक्तिव्यक्ति प्रकरण

(c) राउलवेल (d) कुवलयमाला कथा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

उद्योतन सूरि द्वारा रचित कुवलयमाला कथा तीसरी शताब्दी से लेकर 8वीं तक के अपभ्रंश काव्य का वर्णन है। इस ग्रन्थ में कलचुरी राजवंश के सामन्त की सात नायिकाओं का नखशिख वर्णन मिलता है।

25. सन्त साहित्य में प्रयुक्त 'बंकनालि' का पर्याय निम्नांकित में से कौन नहीं है?

(a) त्रिकुटी (b) वक्रनालि

(c) राजदन्त (d) शंखिनी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

सन्त साहित्य में प्रयुक्त बंकनालि का पर्याय त्रिकुटी, राजदन्त तथा शंखिनी से है। यह हठयोग के अन्तर्गत आता है। वक्रनालि से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

26. केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो....... से सम्बन्धित है।

(a) शिक्षा मंत्रालय के अनुवाद विभाग

(b) गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग

(c) मानव संसाधन मंत्रालय

(d) प्राविधिक शिक्षा मंत्रालय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

वर्ष 1960 में शिक्षा मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना करके असांविधिक साहित्य के हिन्दी अनुवाद का कार्य आरम्भ किया गया। लेकिन राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का दायित्व गृह मंत्रालय पर होने के कारण केन्द्र सरकार के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य के अनुवाद का दायित्व भी गृह मंत्रालय को सौंपा गया। 1 मार्च, 1971 को गृह मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई और केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य का अनुवाद कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। अनुवाद में सरलता, सहजता और शब्दावली में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 1973 से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य भी कर रहा है।

27. 'हीनयान' और 'महायान' शाखा किस धर्म में सम्बन्धित रहे हैं?

(a) जैन धर्म (b) वैदिक धर्म

(c) इस्लाम धर्म (d) बौद्ध धर्म

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'हीनयान' और 'महायान' दोनों बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय हैं। दोनों के बीच अत्यधिक विषमता है। हीनयान और महायान में चरम लक्ष्य के विचार को लेकर विरोध है। हीनयान का लक्ष्य चरम लक्ष्य अर्हत पद की प्राप्ति है, जबकि महायान का चरम लक्ष्य बोधिसत्व को प्राप्त करना है।

28. 'उसने कहा था' के मुख्य पात्र का नाम है-

(a) खालसा सिंह (b) करतार सिंह
(c) लहना सिंह (d) परमिंदर सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा था' में पात्रों की संख्या अधिक है, किन्तु उसकी मूल आत्मा केवल लहना सिंह और सूबेदारनी से ही अधिक संवेदित दिखायी देती है। लेखक इन्हीं दोनों पात्रों के बीच एक ऐसी प्रेम कहानी का ताना-बाना बुनता है, जो लहना सिंह के जीवन को आदर्शवादी मूल्यों से जोड़ देता है। इसका कथानक प्रथम विश्व युद्ध से लिया गया है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने गिनी-चुनी कहानियाँ ही लिखीं, जिसमें बुद्धू का काँटा और सुखमय जीवन भी थी, किन्तु 'उसने कहा था' कहानी से वे हिन्दी के अमर कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

29. इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण प्रायः .... है।

(a) आध्यात्म परक (b) विकास परक
(c) यथार्थ परक (d) अनुसंधान परक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण प्रायः आदर्श मूलक एवं आध्यात्मवादी रहा है, इसीलिए उसमें भौतिक जगत की स्थूल घटनाओं में भी आध्यात्मिक तत्वों व प्रवृत्तियों के अनुसंधान की प्रवृति रही है। भारतीय सभ्यता में प्रायः सामाजिक तत्वों की अपेक्षा चिरंतन मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता रहा है। अतः यहाँ के प्राचीन इतिहासकारों ने अतीत की व्याख्या भी इसी दृष्टिकोण से की।

30. सुरति से आशय है-

(a) उन्माद (b) विरक्ति
(c) ध्यान (d) आनन्द का अनुभव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सुरति निरति का संयुक्त प्रयोग सबसे पहले नाथपंथी रचनाओं में मिलता है, जिसका महत्व सन्त साहित्य के अन्तर्गत बहुत माना गया है। सिद्धों में सुरति शब्द तो मिलता है, किन्तु सुरति निरति दोनों शब्दों का अर्थ विकास सिद्ध साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। डॉ. बड़थ्वाल सुरति शब्द की उत्पत्ति 'स्मृति' शब्द से मानते हैं। आचार्य क्षितिमोहन सेन ने सुरति का अर्थ प्रेम और निरति का वैराग्य किया है। हिन्दी में सुरति के कई अर्थ (प्रेम-क्रीड़ा, स्मृति) होते हैं। सन्तों ने सुरति का प्रयोग निस्सन्देह नाथ योगियों के शब्द सुरति-योग के अर्थ में किया है। सुरति साधना मानसिक साधना है, अजपाजाप है, लययोग है, यही ध्यानयोग है। इसके द्वारा साधक आन्तरिक अवस्थाओं का पर्यवेक्षण कर उपलब्ध ज्ञान द्वारा परम तत्व का साक्षात्कार करता है, जिससे उसे आत्मदर्शन की उपलब्धि होती है। विद्वानों में सुरति शब्द पर पर्याप्त मतभेद है। कबीर के मतानुसार सुरति शब्द योग महारस का आस्वादन कराने का साधन है। गोरखबानी में सुरति को साधन तथा निरति को सिद्धि कहा गया है। निरति का अर्थ वैराग्य वृत्ति नहीं है। डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी ने सुरति का अर्थ 'ध्यान' बताया है।

31. प्रयोजनमूलक भाषा का प्रमुख सम्बन्ध..... है।

(a) साहित्य (b) कला
(c) कल्पना (d) जीविकोपार्जन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजन मूलक भाषा कहते हैं, जो विशेष भाषा समुदाय के समस्त जीवन-संदर्भों को निश्चित शब्दों और वाक्य संरचना के द्वारा अभिव्यक्त करने में सक्षम हो। भाषिक उपादेयता एवं विशिष्टता का प्रतिपादक प्रयोजनमूलक भाषा से होता है।

32. 'समान्तर कहानी' के पुरस्कर्ता कमलेश्वर का मूल नाम है-

(a) नीरज सक्सेना (b) कैलाश सक्सेना
(c) गोपाल दास सक्सेना (d) प्रभाकर सक्सेना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'समान्तर कहानी' के पुरस्कर्ता कमलेश्वर का मूल नाम 'कैलाश सक्सेना' है। वर्ष 1974 में 'सारिका' के अक्टूबर अंक में 'समान्तर कहानी' का क्रम शुरू हुआ। 'मेरा पन्ना' स्तम्भ में कमलेश्वर ने इसकी पृष्ठभूमि और वैचारिकता का धारावाहिक परिचय दिया। इसके नामकरण के बारे में इब्राहिम शरीफ ने लिखा है-''आज की हिन्दी कहानी को हम लोगों ने समान्तर कहानी का नाम दिया है, डफली बजाकर लोगों को चौंकाने के लिए नहीं, सिर्फ अपनी पहचान के लिए। पहचाने जाने के लिए नाम भी तो चाहिए ही।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गोपाल दास सक्सेना को 'नीरज' के नाम से भी जानते हैं।
- कमलेश्वर जी ने कई पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया जिनमें विहान (1954), नई कहानियाँ (1963-66), सारिका (1957-78), कथा यात्रा (1978-79), गंगा (1984-88) आदि हैं।
- कमलेश्वर का नाम नई कहानी आन्दोलन से जुड़े अग्रणी कथाकारों में आता है। उनकी पहली कहानी वर्ष 1948 में प्रकाशित हो चुकी थी, परन्तु 'राजा निरबंसिया' (1957) से वे रातों-रात एक बड़े कथाकार बन गए।
- कमलेश्वर की प्रमुख कहानियाँ हैं-मांस का दरिया, नीली झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकांत, आसक्ति, जिन्दा मुर्दे, जॉर्ज पंचम की नाक, मुर्दों की दुनियाँ, कस्बे का आदमी एवं स्मारक आदि।

33. **समान्तर कहानी आन्दोलन.......................ने चलाया।**

(a) सुदर्शन (b) मोहन राकेश

(c) मुक्तिबोध (d) कमलेश्वर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. **इनमें से कौन-सा प्रकार समालोचना का नहीं है?**

(a) सैद्धान्तिक आलोचना (b) आलोचनात्मक आलोचना

(c) निर्णयात्मक आलोचना (d) व्याख्यात्मक आलोचना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(b)

सैद्धान्तिक आलोचना, निर्णयात्मक आलोचना, व्याख्यात्मक आलोचना, परिचयात्मक आलोचना, तुलात्मक आलोचना, मनोवैज्ञानिक आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना इत्यादि समालोचना के प्रकार हैं। आलोचनात्मक आलोचना, समालोचना का प्रकार नहीं है।

35. **'संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदन' सूत्र के प्रयोक्ता हैं-**

(a) रमेश कुन्तल मेघ

(b) विजयदेव नारायण साही

(c) गजानन माधव मुक्तिबोध

(d) मनोहर श्याम जोशी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

मुक्तिबोध ने अपनी चिन्तन प्रणाली से एक सूत्र को जन्म दिया, जो उनकी कविताओं और आलोचनाओं में पिरोया हुआ है। वह सूत्र है–संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदन। रचना की प्रक्रिया में चूँकि ऐन्द्रिय संवेदन की प्रधान भूमिका होती है और उसे दृश्य रूप में बोध को व्यक्त करना होता है, इसलिए ज्ञान को संवेदना में घोलने की जिम्मेदारी होती है। संवेदना ही दृश्यांकन में सक्षम होती है। रचना की आदि बिन्दु संवेदना और अन्तिम परिणति संवेदना होती है। ज्ञान की भूमिका मध्य में है। यह संवेदना को भी विश्लेषित करता हुआ तिरोहित हो जाता है। मुक्तिबोध इसे ''संवेदन शक्ति में विलक्षण विश्लेषण 'प्रवृत्ति का होना' कहते हैं।''

36. **'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' यह कथन किसका है?**

(a) रसखान का

(b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का

(c) आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का

(d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

रसखान का मूल नाम सैय्यद इब्राहीम था। वैष्णव धर्म से आशक्त होकर कृष्णभक्ति में लीन हो गये। इसी परम्परा का पालन वाहिद और आलम ने भी किया। इन मुस्लिम हरिभक्तों के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने उपर्युक्त उक्ति कही।

37. **'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' लिखने वाले कवि हैं-**

(a) अमीर खुसरो (b) जायसी

(c) आलम (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. **आचार्य शुक्ल ने एडविन आर्नल्ड के आख्यान काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का 'बुद्धचरित' नाम से किस भाषा में अनुवाद किया?**

(a) खड़ी बोली में (b) अवधी में

(c) ब्रजभाषा में (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एडविन आर्नल्ड के आख्यान काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का ब्रजभाषा में 'बुद्धचरित' के नाम से पद्यानुवाद किया। रामचन्द्र शुक्ल ने 'जायसी' तथा 'बुद्धचरित' की भूमिका में क्रमशः अवधी तथा ब्रजभाषा का भाषा-शास्त्रीय विवेचन करते हुए उनका स्वरूप भी स्पष्ट किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जोसेफ एडिसन के 'प्लेजर्स ऑफ इमेजिनेशन' का 'कल्पना का आनन्द' नाम से एवं राखालदास बन्द्योपाध्याय के 'शशांक' उपन्यास का हिन्दी में रोचक अनुवाद किया है।
- 'शशांक' मूल बंगला में दु:खान्त है, पर उन्होंने उसे सुखान्त बना दिया है।

39. **''ऋतुवर्णन तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है।''- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के लिए है?**

(a) बिहारी (b) घनानन्द

(c) सेनापति (d) पद्माकर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

''ऋतुवर्णन तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है। इनके ऋतु वर्णन में प्रकृति निरीक्षण पाया जाता है।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन सेनापति कवि के लिए है।

40. कवि त्रिलोचन का पूरा नाम है-

(a) राधिका रमण सिंह (b) शिव प्रसाद सिंह
(c) वासुदेव सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा का प्रमुख हस्ताक्षर माने जाने वाले कवि त्रिलोचन का मूल नाम वासुदेव सिंह था। वे आधुनिक हिन्दी कविता को प्रगतिशील त्रयी के तीन स्तम्भों (नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह तथा कवि त्रिलोचन) में से एक थे। उन्हें हिन्दी लघु कविता (सॉनेट) का साधक माना जाता है। इनका जन्म सुल्तानपुर जिले में वर्ष 1917 में तथा मृत्यु 9 दिसम्बर, 2007 को गाजियाबाद में हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- त्रिलोचन का पहला कविता संग्रह 'धरती' वर्ष 1945 में प्रकाशित हुआ।
- 'ताप के तापे हुए दिन' के लिए वर्ष 1981 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।
- वर्ष 1989-90 में हिन्दी अकादमी द्वारा शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा 'शास्त्री' और 'साहित्य रत्न' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है।
- इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं-धरती (1945), गुलाब और बुलबुल (1956), दिगंत (1957), शब्द (1980), मैं उस जनपद का कवि हूँ (1981), अरधान (1984), तुम्हे सौंपता हूँ (1985), चैती (1987) आदि।

41. त्रिलोचन का वास्तविक नाम है-

(a) वासुदेव सिंह (b) त्रिलोकी नाथ
(c) त्रिमूर्ति सिंह (d) मनमोहन सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'मैं उस जनपद का कवि हूँ' काव्य रचना किस कवि की है?

(a) नागार्जुन (b) रांगेय राघव
(c) त्रिलोचन (d) केदारनाथ अग्रवाल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. प्रेमचन्द की मृत्यु हुई थी-

(a) 1933 ई. में (b) 1934 ई. में
(c) 1935 ई. में (d) 1936 ई. में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

मुंशी प्रेमचन्द जिनका वास्तविक नाम धनपत राय था, का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के निकट लमही नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायब राय था। इनका निधन 8 अक्टूबर, 1936 को हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मुंशी प्रेमचन्द प्रारम्भ में नवाब राय के नाम से अपनी रचनाएँ उर्दू में लिखते थे।
- 'प्रेमचन्द' नाम दयानारायण निगम द्वारा दिया गया था।
- 'प्रेमचन्द' उपनाम इन्हें प्रथम पाँच कहानियों के संग्रह 'सोजेवतन' के बाद मिला।
- 'गोदान' इनकी समस्त रचनाओं में सर्वाधिक प्रसिद्ध हुई।
- 'कफन' उनकी अन्तिम कहानी मानी जाती है।
- प्रेमचन्द को 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी गयी है।

44. मुंशी धनपत राय को 'प्रेमचन्द' नाम से सुशोभित करने वाले व्यक्ति का नाम है—

(a) मुंशी दयानरायन (b) मुंशी अजायबलाल
(c) मुंशी देवनारायण (d) इनमें से कोई नहीं

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. कवि धूमिल का पूरा नाम था-

(a) गोरख पाण्डेय (b) सुधाकर पाण्डेय
(c) सुदामा पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

कवि धूमिल का पूरा नाम सुदामा पाण्डेय था। इनका जन्म 9 नवम्बर, 1936 को खेवली (वाराणसी) में हुआ था। इनका निधन 10 फरवरी, 1975 को हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-संसद से सड़क तक (1972), कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र (1983)।

46. इनमें से कौन 'भ्रमरानन्द' उपनाम से लिखा करते थे?

(a) विद्यानिवास मिश्र (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (d) कुबेरनाथ राय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

विद्यानिवास मिश्र 'भ्रमरानन्द' उपनाम से भी रचनाएँ करते थे। जब भी ये भ्रमरानन्द नाम से लिखते हैं, तो इनके लेखन और भाषा में एक प्रकार का व्यंग्य आ जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्यानिवास मिश्र के अनुसार, ''हिन्दी में यदि आंचलिक बोलियों के शब्दों को प्रोत्साहन दिया जाये तो दुरूह राजभाषा से बचा जा सकता है, जो बेहद संस्कृतनिष्ठ है।''

47. 'कुट्टिचातन' के उपनाम से किसके व्यक्तिपरक निबन्ध छपे हैं?

(a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय

(c) भारत भूषण अग्रवाल (d) नेमिचन्द्र जैन

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'कुट्टिचातन' के नाम से अज्ञेय के ललित निबन्धों का संग्रह 'सब रंग' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। अज्ञेय जी अपने निबन्धों में अपना अनुभूत लिखते हैं। 'त्रिशंकु', 'आत्मने पद' और 'हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य' में संग्रहीत निबन्धों में अनुभूत का वैचारिक विश्लेषण है।

48. इनमें से कौन-सा गुण अथवा दोष समालोचक में नहीं होना चाहिए?

(a) आलोच्य विषय का सम्यक् ज्ञान

(b) निष्पक्षता

(c) सहृदयता

(d) ईर्ष्या की भावना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

समालोचक के आवश्यक गुण इस प्रकार हैं-

(i) अन्तर्दृष्टि या पैंठ ((Insight)

(ii) सहानुभूति

(iii) बहुज्ञता

(iv) औचित्य

(v) धैर्य एवं निष्पक्षता

(vi) प्रभावोत्पादक अभिवृत्ति

ईर्ष्या की भावना समालोचक में नहीं होना चाहिए।

49. 'वीथी' क्या है-

(a) वृत्ति (b) सन्धि

(c) अभिनय (d) रूपक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराज ने रूपक के दस प्रकार बताये हैं- नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समविकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। इनमें नाटक सर्वाधिक प्रचलित है।

50. निम्नलिखित में जो कथन रचित नहीं है, उसे छाँटिए:-

(a) एक भाषा में प्रकट किए गए भावों व विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट करना 'अनुवाद' कहलाता है।

(b) अनुवादक के लिए केवल किसी एक भाषा का ज्ञान पर्याप्त है।

(c) जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोतभाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाए उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।

(d) 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' का पर्याय है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

अनुवाद के लिए कम से कम दो भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जा सके।

51. अनपेक्षित व कामुकतादर्शी समाचारों को किस वर्ग में रखा जाता है?

(a) एकांगी समाचार (b) डायरी समाचार

(c) सनसनीखोज समाचार (d) गर्म समाचार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

अनपेक्षित व कामुकतादर्शी समाचारों को 'गर्म समाचार' (Hot News) में रखा जाता है।

52. रेडियो के ब्रॉडकास्टिंग कमर्शियल और टी.वी. कमर्शियल में क्या अन्तर है?

(a) रेडियों में सारा सन्देश, शब्द, संगीत और ध्वनि के प्रभावों में होता है, जबकि टी.वी. में सारे प्रभाव पर्दे पर दिखाई देते हैं।

(b) टी.वी. की तुलना में रेडियो कॉपी लेखक को समय की पूरी स्वतंत्रता नहीं होती।

(c) रेडियो विज्ञापनों में संवाद अधिक होते हैं।

(d) रेडियो विज्ञापन अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, जबकि टी.वी. के कम।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रेडियो में सारा सन्देश शब्द, संगीत और ध्वनि के प्रभावों में होता है, जबकि टी.वी. में सारे प्रभाव पर्दे पर दिखाई देते हैं। यही रेडियो के ब्रॉडकास्टिंग कमर्शियल और टी.वी. कमर्शियल में अंतर है।

53. भारत की सर्वप्रमुख और एशिया की सबसे बड़ी संवाद-समिति कौन सी है?

(a) नेशनल न्यूज एजेंसी (b) प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया

(c) यूनिवार्ता (d) हिन्दुस्तान समाचार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

भारत की सर्वप्रमुख और एशिया की सबसे बड़ी संवाद-समिति 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' (PTI) है।

54. रिपोर्टर बनने के लिए क्या आवश्यक है?

(a) सहजबुद्धि व भाषा पर अधिकार

(b) उच्च शिक्षा व दो भाषाओं पर अधिकार

(c) उत्सुकता की भावना

(d) भावुक व चंचल व्यक्तित्व

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रिपोर्टर (संवाददाता) बनने के लिए सहज बुद्धि व भाषा पर अधिकार होना आवश्यक है, जिससे वह तात्कालिक घटना को पूर्णतः सत्यता एवं समझदारी के साथ एकत्र कर सके।

55. डेस्क के लिए समाचारों की आपूर्ति कौन करता है?

(a) संपादक (b) रिपोर्टर

(c) कंपोजिटर (d) प्रूफरीडर

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डेस्क के लिए समाचारों की आपूर्ति रिपोर्टर (संवाददाता) करता है।

56. समाचार का प्रमुख तत्व क्या है?

(a) रोचकता (b) उत्तेजकता

(c) महत्त्वपूर्णता (d) सत्यता व नवीनता

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

सत्यता व नवीनता समाचार का प्रमुख तत्व है, जो पाठक के ज्ञान वृद्धि में सहायक होता है।

57. अक्षरों अथवा शब्दों को जोड़ने के लिए प्रूफ रीडर किस चिह्न का प्रयोग करते हैं?

(a) () (b) x

(c) ? (d) :

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

अक्षरों अथवा शब्दों को जोड़ने के लिए प्रूफ रीडरों द्वारा ( ) चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

58. पत्रकार मोरिस फेगस के अनुसार, समाचारों को पाठक के लिए बोधगम्य कौन बनाता है?

(a) संपादक (b) संवाददाता

(c) कंपोजर (d) संशोधक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

पत्रकार मोरिस फेगस के अनुसार, समाचारों को पाठक के लिए बोधगम्य संवाददाता बनाता है, क्योंकि वह पाठकों के रुचियों को ध्यान में रखता है।

59. इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है।

(a) संचार माध्यमों में अनेक भाषाओं का प्रयोग होता है।

(b) विदेशों के कार्यक्रम भी भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनमें पात्र और दृश्य विदेशी हैं, केवल भाषा भारतीय है।

(c) विदेशों में भी भारतीय कार्यक्रमों को भारतीय पात्र और कथानकों के साथ वहाँ की भाषा में प्रसारित किया जाता है।

(d) संचार माध्यमों में एक ही भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संचार माध्यमों में अनेक भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए। अन्य विकल्पों के कथन सही हैं।

60. संचार माध्यमों का प्रमुख प्रयोजन क्या है?

(a) सूचना को जनसामान्य तक पहुँचाना।

(b) सूचना को विशिष्ट वर्ग तक पहुँचाना।

(c) सूचना को पढ़े-लिखे लोगों तक पहुँचाना।

(d) सूचना को केवल साहित्य-प्रेमियों तक पहुँचाना।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

संचार माध्यमों का प्रमुख प्रयोजन सूचना को जनसामान्य तक पहुँचाना है, जिससे वे लाभ प्राप्त कर सकें।

61. दृश्य-श्रव्य काव्य से क्या अभिप्राय है?

(a) जो साहित्य दिखाई दे (जैसे पुस्तकें) वह दृश्य है।

(b) जो साहित्य सुना जा सके (जैसे उपन्यास) वह श्रव्य है।

(c) देखने के साथ-साथ जिसे सुन भी सकें (जैसे चलचित्र) वह दृश्य-श्रव्य है।

(d) दृश्य काव्य (जैसे नाटक), श्रव्य काव्य (जैसे कविता, कहानी)

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

दृश्य-श्रव्य काव्य से अभिप्राय है, जो देखने के साथ-साथ सुन भी सके (जैसे चलचित्र)। इसके अन्तर्गत टेलीविजन, फिल्म आदि आते हैं।

62. इनमें से जो श्रव्य संचार का माध्यम नहीं है, उसे चिह्नित कीजिये -

(a) दूरदर्शन (b) टेपरिकॉर्डर

(c) कैसेट (d) रेडियो

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'दूरदर्शन' श्रव्य संचार का माध्यम नहीं, बल्कि दृश्य-श्रव्य संचार का माध्यम है। टेपरिकॉर्डर, कैसेट, रेडियो श्रव्य संचार के माध्यम हैं।

63. **आप किस कथन को असंगत मानते हैं?**

(a) एक भाषा के साहित्य को विश्व के दूसरे क्षेत्रों में पहुँचाने में अनुवाद पुल का कार्य करता है।

(b) अनुवाद के माध्यम से संसार का समस्त ज्ञान और साहित्य हमारे पास आ जाता है।

(c) अनुवाद में 'अनु' का अर्थ पहले, 'वाद' का अर्थ है उसे पुनः बाद में लिख देना।

(d) एक भाषा में व्यक्त भावों व विचारों को दूसरे भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद कहलाता है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

विकल्प (c) का कथन असंगत है। अनुवाद दो शब्दों के (अनु+वाद) के योग से बना है। अनु का अर्थ बाद या पुनः होता है, जबकि वाद का अर्थ कथन।

64. **इनमें से कौन तत्व रेडियो विज्ञापन में नहीं होता?**

(a) चित्र (b) वाचन

(c) सन्देश (d) संगीत

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रेडियो विज्ञापन में वाचन, सन्देश तथा संगीत शामिल होता है। इसमें चित्र का कोई स्थान नहीं है।

65. **बाल-साहित्य के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?**

(a) उसकी भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए।

(b) वह बालकों के लिए प्रेरणाप्रद होना चाहिए।

(c) वह मनोरंजक और रोचक होना चाहिए।

(d) वह बालकों द्वारा ही लिखा जाना चाहिए।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत कथन सही नहीं है। अन्य विकल्प बाल-साहित्य के विषय में सही हैं।

66. **इनमें से जो शब्द-संचार का माध्यम नहीं है, उसे चिह्नित कीजिये -**

(a) समाचार-पत्र (b) पुस्तक

(c) पत्र-पत्रिका (d) रेडियो

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संचार वह व्यवस्था है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात दूसरों तक पहुँचाता है। इसमें समाचार-पत्र, पुस्तक, पत्र-पत्रिका शामिल हैं, जबकि रेडियो श्रव्य संचार का माध्यम है।

67. **संचार के दो प्रमुख रूपों मुद्रित माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के विषय में जो कथन सत्य नहीं है, उसे छाँटिए-**

(a) इन दोनों माध्यमों से संचार क्षेत्र में अभूतपूर्व गति आयी।

(b) मुद्रित माध्यम लगभग 500 वर्ष पूर्व प्रकाश में आया, जबकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बीसवीं शताब्दी की देन है।

(c) वैज्ञानिकों की सूझबूझ से दोनों माध्यम अस्तित्व में आए।

(d) ये दोनों माध्यम अन्ततः मानव जाति का विनाश करेंगे।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का कथन असत्य है। शेष सभी कथन सत्य हैं।

68. **सूरदास जी को 'जीवनोत्सव' का कवि किसने कहा?**

(a) पं. रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

पं. रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है ''वृन्दावन के उसी सुखमय जीवन के हास-परिहास के बीच गोपियों के प्रेम का उदय होता है। गोपियाँ कृष्ण के दिन-दिन खिलते हुए सौन्दर्य और मनोहर चेष्टाओं को देख मुग्ध होती चली जाती हैं और कृष्ण कौमार्य अवस्था की स्वाभाविक चपलतावश उनसे छेड़छाड़ आरम्भ करते हैं। हास-परिहास और छेड़छाड़ के साथ-साथ प्रेम व्यापार का अत्यन्त स्वाभाविक आरम्भ सूर ने दिखाया है। किसी की रूप चर्चा सुन या अकस्मात् किसी की एक झलक पाकर हाय-हाय करते हुए इस प्रेम का आरम्भ नहीं हुआ है। नित्य अपने बीच चलते-फिरते, हँसते- बोलते, वन में गाय चराते देखते-देखते गोपियाँ कृष्ण में अनुरक्त होती हैं और कृष्ण गोपियों में। इस प्रेम को हम **जीवनोत्सव के रूप में** पाते हैं, सहसा उठ खड़े हुए तूफान या मानसिक विप्लव के रूप में नहीं, जिसके अनेक प्रकार के प्रतिबन्धों और विघ्न-बाधाओं को पार करने की लम्बी-चौड़ी कथा खड़ी होती है।'' अतः स्पष्ट है कि पं. रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास को 'जीवनोत्सव' का कवि कहा है।

69. **किसकी कविताएँ स्वाधीन भारत का इस्पाती दस्तावेज हैं?**

(a) अज्ञेय (b) गिरिजा कुमार माथुर

(c) मुक्तिबोध (d) दिनकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

क्रान्तिकारी कवियों में 'निराला' के बाद स्थान प्राप्त गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविताएँ स्वाधीन भारत की इस्पाती दस्तावेज कहलाती हैं। ये प्रगतिशील/प्रयोगवादी कवि थे। इनकी प्रथम कहानी 'खलील काका' थी।

70. 'कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।'
यह प्रशंसापरक उक्ति किसने लिखी है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त
(b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) रामचन्द्र शुक्ल
(d) बालमुकुन्द गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त उक्ति तुलसीदास जी की प्रशंसा में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने लिखी है।

71. 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।' तुलसीदास जी के लिए यह प्रशस्ति-वचन इनमें से किसका है?

(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(b) जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी'
(c) नाभादास
(d) जगन्नाथ 'रत्नाकर'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

72. 'इतना सुनके पातसाहिजी श्री अकबरसाहिजी
आद सेर सोना नरहरदास चारन को दिया।
इनके डेढ़ सेर सोना हो गया। रास बंचना पूरन भया।
आमखास बरखास हुआ।' इन पंक्तियों का सम्बन्ध है-

(a) 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' से
(b) 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' से
(c) 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' से
(d) 'आईने अकबरी की भाषा वचनिका' से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

खड़ी बोली में गद्य की पहली पुस्तक अकबर के समकालीन कवि 'गंग' लिखित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' है। उपर्युक्त पंक्तियाँ इसी कृति से ली गयी हैं।

73. पालि भाषा की समय-सीमा मानी जाती है-

(a) 1000 ई.पू. से 500 ई. तक
(b) 500 ई. पू. से प्रथम शताब्दी ई. तक
(c) 1000 ई. पू. से 500 ई. पू. तक
(d) प्रथम शताब्दी ई. से 500 ई. तक

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्राकृत का प्रारम्भिक रूप पालि कहलाया, दूसरा रूप साहित्यिक प्राकृत तथा तीसरा रूप अपभ्रंश। यद्यपि प्राकृत भी अपने शब्द-संसार को भरने के लिए संस्कृत का आश्रय लेती रही, तथापि उसमें एक प्रकार की प्रकृति जन्य सहजता तथा सरलता छायी रही। अतः वह जनसाधारण के अतिनिकट रही तथा उसका रूप निरन्तर परिवर्तित होता रहा। प्राकृत का काल-विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है—
(क) प्रथम प्राकृत काल (पालि काल)—ईस्वी पूर्व 500 से पहली ईस्वी तक।
(ख) द्वितीय प्राकृत काल (साहित्यिक काल)-ईस्वी 1से 500 ईस्वी तक।
(ग) अपभ्रंश काल (तृतीय प्राकृत काल)-500 ईस्वी से 1000 ईस्वी तक।
बौद्ध काल में संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत को महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुआ और बौद्ध धर्म के अधिकांश ग्रन्थों-धम्मपद, जातकों तथा कथा साहित्य की रचना पालि नामक प्राकृत में ही हुई।

74. 'कर्म के बिना वह लूला-लँगड़ा, ज्ञान के बिना अन्धा और भक्ति के बिना हृदयविहीन क्या निष्प्राण रहता है।'—में 'वह' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(a) धर्म
(b) ब्रह्म
(c) भक्ति
(d) श्रद्धा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश 'लोक जागरण और हिन्दी साहित्य' से लिया गया है जिसका सम्पादन रामविलास शर्मा ने किया है। इसमें उल्लिखित है- 'धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लँगड़ा, ज्ञान के बिना अन्धा और भक्ति के बिना हृदयविहीन क्या निष्प्राण रहता है।' अतः स्पष्ट है कि इस गद्यांश में 'वह' धर्म के लिए प्रयुक्त हो रहा है।

75. निम्नलिखित में धीरोद्धत नायक कौन है?

(a) युधिष्ठिर
(b) दुष्यन्त
(c) माधव
(d) भीमसेन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार, नायक के चार भेद होते हैं-

(1) धीरोदात्त- यह शोक, क्रोध आदि से अविचलित अत्यन्त गम्भीर, क्षमावान, आत्मश्लाघा न करने वाला अहंकार शून्य तथा दृढ़व्रत होता है **जैसे-**राम, युधिष्ठिर आदि।

(2) धीरललित- यह बड़े कोमल स्वभाव वाला, कलाविद्, सुखान्वेषी और भोग-विलास तथा सुखद ललित क्रीड़ाओं में लगे रहने वाला नायक होता है। **जैसे-**दुष्यन्त, अहमदशाह रंगीला आदि।

(3) धीर प्रशान्त- यह शान्त स्वभाव वाला, परन्तु क्षत्रिय नहीं होता। ऐसा नायक अधिकतर ब्राह्मण या वैश्य होता है **जैसे-**गौतम आदि।

(4) धीरोद्धत- यह मायावी, आत्म-प्रशंसा सुनने वाला, प्रचण्ड स्वभाव, धोखेबाज और चपल अहंकार तथा दर्प से भरा रहता है **जैसे-** परशुराम, भीम, मेघनाद, रावण आदि।

76. शृंगार रस की दृष्टि से कृष्ण किस प्रकार के नायक हैं?

(a) अनुकूल (b) दक्षिण
(c) शठ (d) धृष्ट

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शृंगार-विचार या नायिका के प्रति नायक के दृष्टिकोण के आधार पर नायक चार प्रकार के बताये गये हैं—1. अनुकूल, 2. दक्षिण, 3. शठ और 4. धृष्ट। अनुकूल नायक पत्नीव्रती होता है। परनारी को माँ-तुल्य मानता है। वह एक ही नायिका में अनुरक्त रहता है। दक्षिण नायक कई नायिकाओं का प्रणयी होता है, फिर भी वह पूर्व प्रणयिनी को नहीं भूलता। प्रधान महिषी का सबसे ज्यादा ध्यान रखता है। सभी नायिकाओं के प्रति उसका व्यवहार सरल, भद्र तथा दयावान होता है। वह एक साथ सभी को प्रसन्न रख सकता है। **जैसे-**राम 'अनुकूल' नायक हैं, एक पत्नीव्रत हैं, जबकि कृष्ण 'दक्षिण' नायक। दुष्यन्त भी दक्षिण नायक हैं। शठ नायक वह है, जो छल, कपट और प्रवंचना से परिपूर्ण होता है। वह अन्य नायिकाओं से प्रेम तो अवश्य करता है, किन्तु प्रकट रूप से नहीं। वह निर्लज्ज नहीं होता। इसके विपरीत धृष्ट नायक खुले रूप में दुराचरण करता है और निर्लज्ज होता है। वह अपनी प्रधान महिषी का मन दुखाने में नहीं चूकता और उसकी प्रताड़ना की भी परवाह नहीं करता।

77. 'रज्जुः' शब्द का हिन्दी में अर्थ है-

(a) मछली (b) मेढ़क
(c) रस्सी (d) घोड़ा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रज्जुः शब्द का हिन्दी में अर्थ रस्सी होता है।

78. फन्तासी के बारे में कौन-सा वक्तव्य सही नहीं है?

(a) फन्तासी का प्रयोग यथार्थ सृष्टि के निषेध के लिए होता है।
(b) फन्तासी का प्रयोग अतिरंजनापूर्ण वर्णन के लिए होता है।
(c) फन्तासी का प्रयोग एक समानान्तर संसार के निर्माण के लिए होता है।
(d) फन्तासी का प्रयोग सत्य निरूपण के लिए होता है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

फान्तासी में चरित्र पूर्णतः यथार्थ नहीं होते, किन्तु उनका चित्रण कुछ इस प्रकार किया जाता है कि वे यथार्थ का भ्रम पैदा करते हैं और कभी-कभी तो यथार्थ को पूरी ईमानदारी से व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। फन्तासी में लोक कल्पना का पूरा इस्तेमाल होने के कारण 'फन्तासी' लोक जीवन के विविध रंगों को उभारने में पर्याप्त सहायक होती है। अतः विकल्प (a) सही नहीं हैं। शेष विकल्प सही हैं।

79. भारतीय नारी की समस्याओं को आधार बनाकर महादेवी वर्मा ने कौन-सा ग्रन्थ लिखा है?

(a) पथ के साथी (b) शृंखला की कड़ियाँ
(c) अतीत के चलचित्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी की समस्याओं को आधार बनाकर 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक ग्रन्थ लिखा। इसमें नारी-संवेदना के बौद्धिक एवं सामाजिक पक्ष का उद्घाटन हुआ है। रूढ़िवादी समाज और पुरुष-प्रधान परम्परावादी दृष्टिकोण का इन्होंने तीव्र प्रतिवाद किया है।

80. 'त्रिवेणी' में किन तीन महान कवियों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है?

(a) कबीर, सूर, तुलसी
(b) जायसी, सूर, तुलसी
(c) पन्त, प्रसाद , निराला
(d) केशव, बिहारी, घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'त्रिवेणी' में तीन महान कवियों-गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास तथा जायसी की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है। तुलसीदास उनके प्रिय कवि थे। अतः सर्वप्रथम उन्होंने 'तुलसी-ग्रन्थावली' (1923) का सम्पादन किया और उसकी भूमिका में 'रामचरितमानस' तथा तुलसी के अन्य ग्रन्थों के काव्यसौन्दर्य का विस्तारपूर्वक उद्घाटन किया।

81. खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई?

(a) चित्र लिपि (b) कीलाक्षर लिपि
(c) अरमाइक लिपि (d) ब्राह्मी लिपि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति 'अरमाइक' लिपि से हुई है। खरोष्ठी लिपि गांधारी लिपि के नाम से जानी जाती है, जो गांधारी और संस्कृत भाषा को लिपिबद्ध प्रयोग करने में आती है। इसका प्रयोग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक प्रमुख रूप से एशिया में होता रहा है। खरोष्ठी लिपि दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती थी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आरम्भ में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए चित्रों के प्रयोग किए गए, जिन्हें चित्र लिपि कहते हैं। 'ललित विस्तार' नामक ग्रन्थ में कहा गया है कि बोधिसत्व ने 64 लिपियाँ सीखी थी।

➲ कीलक्षर लिपि लिखने के लिए मिट्टी के छोटे-छोटे फलक प्रयोग में लाए जाते थे। गीली चिकनी मिट्टी को गूँथकर और थापकर एक फलक अथवा पट्टी का आकार दे दिया जाता था। तत्पश्चात् लिपिक इसकी नम एवं चिकनी सतह पर सरकंडे की तीली की तीखी नोक से कीलाक्षर चिह्न (Cuneiform) बना देता था। बाद में उन फलकों को धूप में सुखा लिया जाता था अथवा भट्टी में पका लिया जाता था।

➲ सुमेरियाइयों की लिपि को कीलक्षर अथवा क्यूनीफार्म के नाम से जाना जाता था।

82. 'चूलिका' किसका भेद है-

(a) पालि (b) प्राकृत
(c) अपभ्रंश (d) पारसी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'प्राकृत' नाम के अन्तर्गत वैयाकरणों के अनुसार कई भाषाएँ आती हैं। सबसे प्राचीन वैयाकरण वररुचि हैं, जिन्होंने चार प्राकृतों का उल्लेख किया है—महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी और शौरसेनी। 12वीं शती के अन्त के जैन लेखक हेमचन्द्र ने तीन और प्राकृतों का उल्लेख किया है—आर्ष, जो अन्य लोगों की अर्द्धमागधी ही है, चूलिका, पैशाचिका और अपभ्रंश। परवर्ती वैयाकरणों ने सामान्यतया हेमचन्द्र का अनुसरण किया है। वररुचि ने अपभ्रंश को एक पृथक् प्राकृत नहीं माना है और सम्भवतः यह ठीक भी है। यह वही है जिसे बहुत से काव्यशास्त्रियों ने 'देशभाषित' कहा। 'देशभाषित' का अर्थ है—देश में अथवा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा। दण्डी के काव्यादर्श से पता चलता है कि काव्य में अपभ्रंश से अभिप्राय है-चरवाहों और इस प्रकार के अन्य लोगों की भाषा। व्याकरण अथवा छन्दशास्त्र की पुस्तकों में जो कुछ भी संस्कृत से भिन्न था, अपभ्रंश कहा जाता था। प्राकृत के अन्तर्गत उन्होंने महाराष्ट्री, जो श्रेष्ठ प्राकृत है, शौरसेनी, गौड़ी और लाटी को लिया है। गौड़ी प्रत्यक्ष ही मागधी का दूसरा नाम था; लाटी से उनका क्या अभिप्राय है, यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है।

83. निबद्ध या निबन्ध-काव्य कौन नहीं है?

(a) विनय पत्रिका (b) प्रलय की छाया
(c) शिवाजी को पत्र (d) राम की शक्तिपूजा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

विनय पत्रिका निबन्ध-काव्य नहीं, बल्कि गीतकाव्य है। निबन्ध काव्यों की श्रेणी में जयशंकर प्रसाद की 'प्रलय की छाया',शेर सिंह का 'शस्त्र समर्पण', निराला का 'शिवाजी का पत्र' आते हैं। निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' भी निबन्ध काव्य है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

84. प्रगीत काव्य में प्रधानता होती है-

(a) भावना और गीतात्मकता की
(b) संगीतात्मकता की
(c) प्रकृति चित्रण की
(d) उपर्युक्त में से किसी की नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

प्रगीत काव्य में संगीतात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगीत में अन्तर्जगत का स्वाभाविक रागात्मक स्फुरण होता है। अतः संगीतात्मकता एक आवश्यक तत्व माना गया है। प्रगीत काव्य की तात्विक विवेचना आधुनिक युग में हुई। आलोचनाशास्त्रियों ने प्रगीत के छः मुख्य तत्व संगीतात्मकता, आत्माभिव्यक्ति, रागात्मक अनुभूति का समत्व, जीवन के एक अंश का चित्रण, भावाभिव्यंजना और संक्षिप्तता निर्धारित किये हैं।

85. चम्पू के दो भेद हैं-

(a) विरुद और कपालक (b) विरुद और कुलक
(c) विरुद और व्रज्या (d) विरुद और करम्बक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

सामान्य तौर पर काव्य के दो भेद होते हैं—दृश्य काव्य (जिसका अभिनय किया जा सके, नाटक/रूपक इत्यादि) और श्रव्य काव्य (जिसका अभिनय न हो सके यानी जिसे पढ़कर या सुनकर आनन्द लिया जाय)। श्रव्य काव्य के तीन भेद हैं—पद्य (छन्द में रचित), गद्य (छन्द रहित) तथा चम्पू (गद्य और पद्यमय काव्य)। पद्य काव्य की दो शैलियाँ हैं—प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक या निर्बंध शैली। प्रबन्ध काव्य के तीन उपभेद-महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा एकार्थ और मुक्तक काव्य। मुक्तक काव्य के दो उपभेद-पाठ्य तथा गेय हैं। चम्पू दृश्य नहीं, किन्तु श्रव्य ही होता है, मिश्र होने से ही दृश्य काव्य चम्पू नहीं होता है। गद्य पद्यमयी राजस्तुति को विरुद तथा अनेक भाषाओं से निर्मित काव्य को करम्बक कहते हैं।

86. कालक्रम की दृष्टि से इनमें सबसे पुराने कवि हैं-

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) बिहारी (d) विद्यापति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

विद्यापति ठाकुर का जन्म 1380 ई. में ग्राम विसपी, मधुबनी, बिहार में तथा निधन 1460 ई.में हुआ था। बिहारी लाल का जन्म 1595 ई. बसुआ गोविन्दपुर, ग्वालियर में तथा निधन 1663 ई. में हुआ था। सूरदास जी का जन्म 1483 ई. तथा निधन 1573 ई. में हुआ था। तुलसीदास जी का जन्म 1532 ई. में ग्राम राजापुर जिला बाँदा (अब जिला चित्रकूट) में तथा निधन 1623 ई. में हुआ था। कालक्रम की दृष्टि से इनमें से सबसे पुराने कवि विद्यापति हैं।

87. हिन्दी आलोचना में 'जातीय' शब्द का राष्ट्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राम विलास शर्मा
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'हिन्दी जाति की अवधारणा' डॉ. राम विलास शर्मा की एक मौलिक अवधारणा है। उनकी सभी स्थापनाओं में से यह स्थापना सर्वाधिक विवादग्रस्त रही है। अपनी इस स्थापना में वे जाति शब्द का प्रयोग 'नेशन' (राष्ट्र) के अर्थ में करते हैं। इस अर्थ में जाति शब्द का प्रयोग सबसे पहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया। उसके बाद कार्तिक प्रसाद व महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी किया, जिसकी चर्चा करते हुए रामविलास जी लिखते हैं, ''हिन्दी में तथा भारत की अन्य भाषाओं में जाति शब्द पेशेवर बिरादरी (Caste), नस्ल (Race) और कौम (Nationality) के लिए प्रयुक्त होता रहा है।'' कौम के लिए उसका प्रयोग अपेक्षाकृत नया नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'जातीय संगीत' नामक निबन्ध में प्रदेशगत जाति के संगीत की चर्चा की थी, किसी पेशेवर बिरादरी के संगीत की नहीं। श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित जनवरी, 1902 की 'सरस्वती' में कार्तिक प्रसाद के लेख का शीर्षक था 'महाराष्ट्रीय जाति का अभ्युदय'। जाति और साहित्य के सम्बन्ध में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने वर्ष 1923 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कानपुर अधिवेशन में कहा था, ''जिस जाति विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको दिखाई पड़े, आप यह निश्चित समझिए कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है उसका साहित्य भी ठीक वैसा ही होता है।'' अतः स्पष्ट है कि हिन्दी आलोचना में 'जातीय' शब्द का राष्ट्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया।

88. 'रूपकों का बादशाह' किसे कहा जाता है?

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) परमानन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

बच्चन सिंह अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में लिखते हैं कि रूपकों के बादशाह गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। रूपक सादृश्यमूलक होता है पर इसमें विसादृश्य भी होता है। विसादृश्य पर सादृश्य के आरोप में कल्पना की आवश्यकता के साथ अवधारणा की जरूरत होती है। अवधारणा विसादृश्य में निहित होती है। इसके लिए मानस के अयोध्या-काण्ड का 'कैकेयि रोष तरंगिनी ठाढ़ी' और कवितावली के लंका-दाह के रूपक देखे जा सकते हैं।

89. बिहारी सतसई पर 'फिरंगे सतसई' नाम से फारसी भाषा में एक टीका लिखी गयी, जिसके टीकाकार हैं-

(a) फिराक गोरखपुरी (b) आनन्दी लाल शर्मा
(c) अमीर खुसरो (d) मिर्जा गालिब

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'बिहारी सतसई' पर 'फिरंगे सतसई' नामक फारसी में टीका आनन्दी लाल शर्मा ने लिखी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सूरति मिश्र ने बिहारी सतसई पर टीका 'अमरचन्द्रिका' नाम से तथा लल्लू लाल जी ने 'लाल चन्द्रिका' नाम से लिखी।

**90. 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।'
कविता किस पत्र में छपी थी?**

(a) ब्राह्मण (b) हिन्दी प्रदीप
(c) आनन्द कादम्बिनी (d) नागरी नीरद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त कविता हिन्दी प्रदीप में छपी थी। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने भी इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) अर्थात् 'हिन्दी प्रदीप' माना है।

91. 'सिवा को बखानौं कि बखानौं छत्रसाल को' में सिवा का अर्थ क्या है?

(a) शिवजी (b) शिवाजी
(c) महादेव (d) बालाजी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने 'भूषण' को 'कविभूषण' की उपाधि दी थी। ये कई राजाओं के आश्रय में रहे। कहा जाता है कि भूषण, शिवाजी के यहाँ कुछ दिनों तक रहकर अपने घर लौटते समय महाराज छत्रसाल के दरबार में गये। इन्हें शिवाजी का राजकवि समझकर महाराज छत्रसाल ने इनका बड़ा आदर किया और यथोचित सम्मान करने के लिये विदा करते समय इनकी पालकी को कंधा लगाया। 'भूषण' यह देखकर पालकी से कूद पड़े और उनकी प्रशंसा में 'सिवा को बखानौं कि बखानौं छत्रसाल को' कवित्त पढ़ा। स्पष्ट है कि यहाँ 'सिवा' का अर्थ 'शिवाजी' है।

92. 'यदि प्रेम स्वप्न है, तो श्रद्धा जागरण है' यह पंक्ति किस निबन्ध से ली गयी है?

(a) भाव या मनोविकार (b) श्रद्धा-भक्ति
(c) कविता क्या है? (d) करुणा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कृति 'चिन्तामणि' (निबन्ध संग्रह) के द्वितीय निबन्ध 'कविता क्या है?' से 'यदि प्रेम स्वप्न है, तो श्रद्धा जागरण है' पंक्ति उद्धृत है।

93. 'अधैर्य का कवि' किसे कहा गया है?

(a) दिनकर (b) त्रिलोचन
(c) अज्ञेय (d) गिरिजा कुमार माथुर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रामधारी सिंह दिनकर को 'अधैर्य का कवि' कहा जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व उन्हें 'विद्रोही कवि' भी कहा जाता था, किन्तु स्वतंत्रता के बाद वे 'राष्ट्रकवि' कहलाएँ।

94. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'लघु कथा' की विशेषता है?

(a) कहानी को लघु रूप में लिखना ही लघु कथा है।
(b) लघु आकार के कारण लघु कथा उद्देश्यहीन होती है।
(c) बालकों द्वारा लिखी गई कहानी लघु कथा होती है।
(d) लघु कथा का ताना-बाना किसी एक मर्मान्तक बिन्दु पर केन्द्रित होता है और यह आकार में लघु होती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

अधिक तीक्ष्ण दृष्टि और सूक्ष्म मानवीय संवेदना, लघु कथा के सन्दर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है। कथ्य की गहन और सूक्ष्म चयन तथा उसकी उचित अभिव्यक्ति उसे मानवीय संवेदना से जोड़ती है और उसकी निष्पत्ति उसे अतिरिक्त महत्व दिला जाता है। लघुकथा के आकार पर लघु होना उसके विशिष्ट शिल्प विधान का अनिवार्य परिणाम है। अतः विकल्प (d) में लघु कथा की विशेषता समाहित है।

95. उपन्यास और कहानी के अन्तर को व्यक्त करने वाला जो कथन सही नहीं है, उसे छाँटिए-

(a) उपन्यास में कथानक होता है, कहानी में वह अनिवार्य नहीं है। कहानी में चरित्र, वातावरण आदि की प्रधानता होती है।
(b) उपन्यास में जीवन के समग्र रूप का चित्रण होता है, जबकि कहानी में किसी एक अंश का।
(c) उपन्यास में अनेक स्थलों पर इतिवृत्तात्मक वर्णन मिलते हैं, जबकि कहानी में छोटे आकार के कारण ऐसे स्थल नहीं होते।
(d) उपन्यास कहानी का लघु संस्करण होता है, कहानी उपन्यास का दसवाँ भाग होती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

लघु कथा से बड़ी कहानी होती है। कहानी से बड़ा उपन्यास। कहानी, उपन्यास का लघु संस्करण होती है, जो एक घटना को समेटते हुए उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वरूप को विस्तारपूर्वक कहने की चेष्टा करती है। अतः विकल्प (d) असत्य है।

96. उपन्यास और कहानी का मूल अन्तर है, उसका-

(a) आकार-प्रकार (b) विषय निरूपण
(c) घटना का चयन (d) पात्रों की विविधता

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपन्यास और कहानी का मूल अन्तर उसका विषय निरूपण होता है। कहानी लघु आकार की होती है, जबकि उपन्यास काफी विस्तृत होता है। कहानी में प्रायः किसी मनोदशा या एक घटना का वर्णन होता है, जबकि उपन्यास में समग्र मानव जीवन से सम्बन्धित विविध घटनाओं का समावेश होता है।

97. अनुकरण सिद्धान्त के प्रणेता हैं -

(a) अरस्तू (b) कॉलरिज
(c) रिचर्ड्स (d) वर्ड्सवर्थ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

अनुकरण का सिद्धान्त (Theory of Mimesis) प्लेटो और उनके शिष्य अरस्तू का बहुचर्चित सिद्धान्त है। अरस्तू के अनुसार, कलाकार तीन प्रकार की वस्तुओं में से किसी एक का अनुकरण कर सकता है- 'जैसी वे थीं या हैं', 'जैसी वे कही या समझी जाती हैं' और 'जैसी वे होनी चाहिए'।

98. **आचार्य शुक्ल का निबन्ध संग्रह 'चिन्तामणि' सर्वप्रथम किस नाम से प्रकाशित हुआ?**

(a) विचार-कौस्तुभ (b) विचार-मणि
(c) विचार-बैन (d) विचार-वीथी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मनोवैज्ञानिक एवं साहित्यिक विषयों पर बहुत से उच्च कोटि के निबन्ध लिखे हैं। ऐसे निबन्धों का एक संग्रह 'विचार-वीथी' और दूसरा 'चिन्तामणि' के नाम से प्रकाशित हुआ। शुक्ल जी जब 'विचार-वीथी' के बाद अपने निबन्ध संग्रह के नाम के लिए चिन्तित थे, तो उन्होंने पण्डित जी से नामकरण संस्कार के लिए कहा 'पूछते ही पण्डित जी चट बोल उठे-पायउ नाम चारू उर करते न खसैहों' शुक्ल जी उछल पड़े। इस 'चिन्तामणि' नाम से शुक्ल जी का चिन्तन और रागात्मिका वृत्ति दोनों का मेल तो हुआ ही, उनके श्रद्धेय कवि तुलसीदास का भी समावेश हो गया, जिनके आधार पर उन्होंने अपने सिद्धान्तों का भवन खड़ा किया। अतः स्पष्ट है कि 'चिन्तामणि' ही पूर्व नाम से 'विचार-वीथी' था।

99. **'भ्रमर गुफा' के लिए दूसरा उपयुक्त नाम है-**

(a) ब्रह्मरंध्र (b) हृदेश
(c) नाभिचक्र (d) मूलाधार

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'भ्रमर गुफा' जिसके अन्तर्गत 'हठ योग' आता है। इसका दूसरा उपयुक्त नाम ब्रह्मरंध्र भी है।

100. **''साहित्य मनुष्य के अन्तर का उच्छलित आनन्द है।'' यह कथन किसका है?**

(a) आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ''साहित्य वस्तुतः मनुष्य का वह उच्छलित आनन्द है, जो उसके अन्तर में अँटाए नहीं अट सका था।'' प्रस्तुत पंक्ति इसी का संक्षिप्त रूप है। द्विवेदी जी का कथन है- ''साहित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होकर सीधे मानव जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवन्त विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।''

101. **'लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन किसका है?**

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नन्ददुलारे बाजपेयी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) ग्रियर्सन

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

''भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। तुलसी में केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है, वैराग्य और गृहस्थ का निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेश और अनासक्त चिन्तन का, ब्राह्मण और चाण्डाल का, पंडित और अपंडित का समन्वय है।'' तुलसीदास के सम्बान्ध में यह कथन हजारी प्रसाद द्विवेदी का है।

102. **हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना का शुभारम्भ......ने किया।**

(a) भगवानदीन (b) पद्मसिंह शर्मा
(c) मिश्र बन्धु (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

तुलनात्मक मूल्यांकन आलोच्ययुगीन समीक्षा की प्रमुख प्रवृत्ति कही जा सकती है। तुलनात्मक आलोचना का आरम्भ वर्ष 1907 में पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी और सादी की तुलना द्वारा किया। वर्ष 1908-1912 तक वे 'सरस्वती' में संस्कृत और हिन्दी-कविता के बिम्ब-प्रतिबिम्ब-भाव की परीक्षा करते रहे। वर्ष 1910 में मिश्र बन्धुओं का 'हिन्दी-नवरत्न' प्रकाशित हुआ। इसमें भी तुलनात्मक आलोचना का महत्व दिया गया था। आगे चलकर तुलनात्मक आलोचना की धूम मच गयी। लाला भगवानदीन और कृष्णबिहारी मिश्र ने देव और बिहारी की विशद तुलना करते हुए एक को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

103. **मनोवैज्ञानिक आलोचना के मूल में है-**

(a) आध्यात्मिकता (b) सामाजिक यथार्थ
(c) निर्वैयक्तिकता (d) वैयक्तिक चिंतन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

मनोवैज्ञानिक आलोचना के मूल में वैयक्तिक चिंतन है। मनोवैज्ञानिक आलोचना में काव्यानुभूति के विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाता है और रचना के मूल्यांकन पर कम। मनोवैज्ञानिक आलोचना के अनुसार, कविता कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यंजना तक ही सीमित हो गयी। मनोवैज्ञानिक आलोचना की प्रक्रिया व्यक्तिमानस से रचना की ओर गतिशील होती है, रचना के यथार्थ से रचनाकार की सामाजिक चेतना के सम्बन्ध की उपेक्षा करती है, इसलिए उसका व्यक्तिवादी स्वरूप इतिहास विरोधी होता है। मनोवैज्ञानिक आलोचना लेखक के व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्व देती है लेकिन फ्राई की आलोचना में रचनाकार की चेतना और उसके अभिप्रायों की चर्चा के लिए कोई स्थान नहीं है।

104. एलियट का मूर्तविधान भारतीय काव्यशास्त्र के किस तत्व से तुलनीय है?

(a) साधारणीकरण (b) रीति
(c) विभावन-व्यापार (d) प्रतिभा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

एलियट ने अपने बहुचर्चित निबन्ध 'हेमलेट एंड हिज प्रॉब्लम्स' में 'मूर्त विधान' की व्याख्या एवं प्रतिपादन किया है। उनकी 'मूर्त विधान' की अवधारणा को भारतीय काव्यशास्त्र की 'विभावन-व्यापार' से सम्बन्धित अवधारणा के एकदम निकट माना जाता है। मूलतः यह प्रक्रिया अमूर्त के मूर्त अथवा वैयक्तिक के निर्वैयक्तिक में रूपान्तरण की प्रक्रिया है।

105. साधारणीकरण की सही व्याख्या है-

(a) जब कोई भी पाठक किसी साधारण काव्य या साधारण नाटक का रसास्वादन करे तब यह क्रिया साधारणीकरण कहलाती है।
(b) जब कोई पाठक किसी कृति को पढ़ते समय स्वयं का साधारण ही समझें तो यह क्रिया साधारणीकरण कहलाती है।
(c) जब कोई पाठक या श्रोता किसी असाधारण व्यक्ति की तुलना या मूल्यांकन साधरण व्यक्ति को लेकर करता है, तब उसे साधारणीकरण कहते हैं।
(d) साधारणीकरण वह व्यापार है, जिसके द्वारा काव्य सृष्टि में कविनिर्मित पात्र व्यक्ति विशेष न बनकर सामान्य बन जाते हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

किसी काव्य का श्रोता या पाठक जिन विषयों को मन में लाकर रति, करुणा, क्रोध, उत्साह इत्यादि भावों तथा सौन्दर्य, रहस्य, गांभीर्य आदि भावनाओं का अनुभव करता है, वे अकेले उसी के हृदय से सम्बन्ध रखने वाले नहीं होते; मनुष्य मात्र की भावात्मक सत्ता पर प्रभाव डालने वाले होते हैं। उसी से उक्त काव्य को एक साथ पढ़ने या सुनने वाले सहस्रों मनुष्य उन्हीं भावों या भावनाओं का थोड़ा बहुत अनुभव कर सकते हैं। जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता है कि वह सामान्यतः सबसे उसी भाव का आलम्बन हो सके, तब तक उसने रसोद्बोधान की पूर्ण शक्ति नहीं आती। इसी रूप में 'लाया जाना' 'साधारणीकरण' कहलाता है। यह सिद्धान्त यह घोषित करता है कि सच्चा कवि वही है, जिसे लोक हृदय की पहचान हो, जो अनेक विशेषताओं और विचित्रताओं के बीच मनुष्य जाति के सामान्य हृदय को देख सके। इसी लोक हृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस दशा है। अतः साधारणीकरण वह व्यापार है, जिसके द्वारा काव्य सृष्टि में कवि निर्मित पात्र व्यक्ति विशेष न बनकर सामान्य बन जाते हैं।

106. 'उन्नतमना' शब्द का सही अर्थ है-

(a) अच्छे भावों एवं विचारों से युक्त
(b) समान भावों एवं विचारों से युक्त
(c) सामान्य भावों एवं विचारों से युक्त
(d) उच्च भावों एवं विचारों से युक्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

जो उच्च भावों एवं विचारों से युक्त होता है, उसे 'उन्नतमना' कहते हैं।

107. ''यद्यपि मैं खुद उर्दू का बड़ा पक्षपाती हूँ, लेकिन मेरे विचार में हिन्दी को विभाषा या बोली कहना उचित नहीं।'' किसका कथन है?

(a) शिव प्रसाद सितारे हिंद (b) गार्सा द तासी
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) राजा लक्ष्मण सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

गार्सा द तासी ने संवत् 1909 के आस-पास हिन्दी और उर्दू दोनों का रहना आवश्यक समझा था और कहा भी था ''यद्यपि मैं खुद उर्दू का बड़ा पक्षपाती हूँ, लेकिन मेरे विचार में हिन्दी को विभाषा या बोली कहना उचित नहीं।'' वहीं गार्सा द तासी आगे चलकर मजहबी कट्टरपन की प्रेरणा से सर सैयद अहमद की भरपेट तारीफ करके हिन्दी के सम्बन्ध में फरमाते हैं- ''इस वक्त हिन्दी की हैसियत भी एक बोली की-सी रह गयी है, जो हर गाँव में अलग-अलग ढंग से बोली जाती है।''

108. हिन्दी का ऐसा कौन निबन्धकार है जिसके ध्यान में लिखते समय बाण और दण्डी रहा करते थे?

(a) रामचन्द्र शुक्ल
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) गोविन्द नारायण मिश्र
(d) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

गोविन्द नारायण मिश्र यद्यपि हिन्दी के बहुत पुराने लेखकों में थे, पर उस पुराने समय में वे अपने फुफेरे भाई पं. सदानन्द मिश्र के 'सारसुधा निधि' पत्र में कुछ सामयिक और कुछ साहित्यिक लेख ही लिखा करते थे, जो पुस्तकाकार छपकर स्थायी साहित्य में परिगणित न हो सके। इनकी लेख शैली का पता इनके सम्मेलन के भाषण और 'कवि और चित्रकार' नामक लेख से लगता है। गद्य के सम्बन्ध में इनकी धारणा प्राचीन 'गद्यकाव्य' की-सी थी। लिखते समय बाण और दण्डी इनके ध्यान में रहा करते थे। इनके गद्य को समास अनुप्रास में गुथे 'शब्दगुच्छों का अटाला' कहा गया है।

109. ''कविता मनुष्य को स्वार्थ संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है'' यह कथन किसका है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुंदर दास (d) डॉ. नगेन्द्र

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'कविता क्या है?'' शीर्षक के अंतर्गत लिखा है कि ''कविता मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडलों से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार होता है और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।''

110. ''कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।'' किसने कहा है?

(a) वर्ड्सवर्थ (b) टेनीसन
(c) शेली (d) मैथ्यू आर्नल्ड

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मैथ्यू अर्नाल्ड ने कहा है ''कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।'' वर्ड्सवर्थ का विचार है ''कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है जिसका स्रोत शान्ति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है।'' शेली के विचार से ''सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनों के सर्वोत्तम और सर्वाधिक सुखपूर्ण क्षणों का लेखा कविता है।''

111. ''कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है'' किसने कहा है?

(a) निराला (b) प्रसाद
(c) पन्त (d) महादेवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

पन्त जी ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है ''कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।'' परिपूर्ण क्षण से उनका क्या तात्पर्य है– यह स्पष्ट नहीं होता। सम्भवतः उनका आशय भाव और भाषा की पूर्ण संगति तथा रचनाकार की तन्मयता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ छन्दों के चुनाव के विषय में पन्त जी लिखते हैं ''हिन्दी का संगीत केवल मात्रिक छन्दों में ही अपना स्वाभाविक विकास तथा स्वास्थ्य की सम्पूर्णता प्राप्त कर सकता है।
➲ बंगला भाषा का संगीत आलाप-प्रधान होने से ''बंगला के छन्द भी हिन्दी कविता के लिए सम्यक् वाहन नहीं हो सकते।''
➲ पन्त जी कहते हैं, ''कवित्त छन्द मुझे ऐसा जान पड़ता है हिन्दी का औरस जात नहीं पोष्यपुत्र है, न जाने, यह हिन्दी में कैसे और कहाँ से आ गया, अक्षर मात्रिक छन्द बंगला में मिलते हैं, हिन्दी के उच्चारण संगीत की ये रक्षा नहीं कर सकते।''

112. ''सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है'' किसने कहा है?

(a) वर्ड्सवर्थ (b) कीट्स
(c) कॉलरिज (d) टेनीसन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

''सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है।'' यह कथन अंग्रेजी साहित्यकार सैमुअल टेलर कॉलरिज का है।

113. ''हमारे सबसे मधुर गान वे हैं जिनमें विषादपूर्ण भाव व्यक्त किये जाते हैं।'' पंक्ति किसकी है?

(a) शेली (b) टेनीसन
(c) वर्ड्सवर्थ (d) कीट्स

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

''हमारे सबसे मधुर गान वे हैं जिनमें विषादपूर्ण भाव व्यक्त किये जाते हैं।'' यह पंक्ति शेली की है।

114. आलोचना को 'कला की सजगता' किसने कहा है?

(a) मिडिलटन मरे (b) वार्ड
(c) हर्बर्ट रीड (d) नारमन फोस्टर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

मिडिलटन मरे ने कहा है कि 'कला यदि जीवन की सजगता है, तो आलोचना कला की सजगता है।'

115. 'चिन्ता एक—है' वाक्यांश में रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु सही शब्द है-

(a) रोग (b) कष्ट
(c) व्याधि (d) आधि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

मानसिक पीड़ा की संज्ञा 'आधि' है, जबकि शारीरिक पीड़ा को 'व्याधि' कहते हैं। अतः चिन्ता एक मानसिक पीड़ा है। कष्ट प्रायः शारीरिक होता है, किन्तु अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। रग (नस) की व्यथा 'रोग' कहलाती है।

116. ''इनकी-सी विशुद्ध सरस एवं शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ।''
आचार्य शुक्ल ने किस कवि के बारे में यह टिप्पणी की है?

(a) देव (b) ठाकुर
(c) घनानन्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

घनानन्द की प्रशंसा करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है ''इनकी-सी विशुद्ध सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता एवं माधुर्य भी अपूर्व ही है। विप्रलम्भ शृंगार ही अधिकतर उन्होंने लिखा है। ये शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं। 'प्रेम की पीर' को लेकर ही इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।''

117. प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत-यात्रा का विस्तृत और ब्यौरेवार वर्णन 'युवराज की यात्रा' शीर्षक से किसने किया है?

(a) सत्यदेव परिव्राजक (b) मौलवी महेश प्रसाद
(c) चण्डी प्रसाद सिंह (d) भगवानदीन दूबे

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

चण्डी प्रसाद सिंह द्वारा 1886 ई. में लिखित 'युवराज की यात्रा' शीर्षक से लिखा गया, जो खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर से प्रकाशित हुआ था। इस रचना में उन्होंने 'प्रिंस ऑफ वेल्स' की भारत-यात्रा का जीवंत रूप से चित्रण किया है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार, ''इतिहास की प्रधानता इसमें जरूर है, पर सूक्ष्म ब्यौरे आधुनिक रिपोर्ताज जैसे ही दिये गये हैं। हाँ शैली में प्रभावाभिव्यंजना की ओर ध्यान कम है पर महत्वपूर्ण बात तो उस काल में इस ढंग के वृत्त की उपस्थिति ही है।''

118. हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का कवि कौन कहा जाता है?

(a) हरिऔध (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) श्रीधर पाठक (d) राधाकृष्ण दास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b&c)

1887 ई. में प्रकाशित श्रीधर पाठक की मौलिक काव्यकृति 'जगत सचाई सार' और वर्ष 1904 में छपी 'कश्मीर सुषमा' में स्वच्छन्दतावादी भावानुभूति और कल्पना-रंजित दृश्यप्रसार के मधुर कवित्तपूर्ण चित्र दर्शनीय हैं। श्रीधर पाठक की 'स्वर्गीय वीणा' कविता में प्रकृति की गतिमयता परोक्ष दिव्य संगीत की ओर रहस्यमय संकेत करती है। डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने श्रीधर पाठक को आधुनिक काव्यधारा में 'सच्चे स्वच्छन्तावाद के प्रवर्तक' के रूप में स्वीकार किया है। आचार्य शुक्ल ने रामनरेश त्रिपाठी मुकुटधर पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', उदयशंकर भट्ट प्रभृति कवियों को मान्यता दी और इस प्रकार की 'सच्ची नैसर्गिक स्वच्छन्दता' के लिए 'स्वच्छन्दतावाद' संज्ञा प्रदान की। चूँकि विकल्प में दो उत्तर (श्रीधर पाठक तथा रामनरेश त्रिपाठी) सही है, यही कारण है, कि उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी तृतीय संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। इससे पूर्व अपनी प्रारंभिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) सही माना था।

119. रोमेन्टिसिज्म' के लिए हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?

(a) भारतेन्दु (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) सुमित्रानन्दन पन्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

120. स्वच्छन्दतावाद की विशेषता नहीं है—

(a) प्रकृति पर्यवेक्षण (b) प्रेम चित्रण
(c) कथा गीत प्रयोग (d) ब्रजभाषा में रचना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

स्वच्छन्दतावादी काव्य वह काव्य है, जिसमें उस भावुकतामय जीवन की प्रधानता हो, जो कल्पना की दृष्टि से उदीप्त अथवा निर्दृष्ट हुआ हो और जिसमें स्वयं कवि की आत्मा इस कल्पना दृष्टि को सशक्त बनाती एवं निर्देश करती रहती हो।

स्वच्छन्दतावाद की विशेषता—

1. शास्त्रवहिर्मूत कल्पित देशों, मध्य युग या अतीत युग के राष्ट्रीय गौरव के आकर्षण दृश्य तथा मोहक संस्कृति का मनोहर चित्रण।
2. रंग गत सामंजस्य की अपेक्षा उत्तेजक एकांगी रंगों पर बल देना।
3. प्रकृति को व्यक्तिगत और अव्यवहृत प्रत्यक्ष अनुभूति का विषय समझना और विशेष भाव से उसके उद्धत और उद्दाम वेग वाले रूप पर बल देना।
4. रहस्यवाद और अति प्राकृत तत्व में विश्वास।
5. स्वप्नलोक, अवचेतन चित्त और आवेशावस्था की बातें।

121. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन स्वच्छन्दतावाद की विशेषता नहीं है?

(a) बाह्य भावावेग पर बल (b) कल्पना-व्यापार का महत्व
(c) व्यक्ति-स्वातंत्र्य पर बल (d) मानवतावादी जीवन-दृष्टि पर बल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

स्वच्छन्दतावादी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. यह आंतरिक अनुभूतियों का काव्य होता है, फलतः इसमें भावावेग का उच्छल प्रवाह बहता है।
2. यह मूलतः आत्मप्रधान और व्यक्तिपरक होता है, अर्थात् कवि बाह्य जगत को उतना महत्व नहीं देता, जितना अपने को देता है।
3. यह सभी प्रकार की रूढ़ियों से युक्त होता है, इसलिए इसमें अभिनवत्व और अद्भुतता के तत्व निहित रहते हैं।
4. अभिव्यंजना में यह सांकेतिक और व्यंजनाप्रधान होता है, इसलिए कहीं-कहीं 'रहस्यात्मकता का पुट' भी इसमें आ जाता है।

5. इसमें कल्पना और असाधारणता का प्राचुर्य रहता है।
6. यह भावप्रधान अधिक और रूप प्रधान कम होता है। कवि की प्रवृत्ति अपने हृदय की पर्त खोलने की अधिक होती है अपनी उक्ति को सजाने संवारने की कम।

122. निम्नलिखित में से कौन 'नवगीत' के प्रसिद्ध उन्नायक कवि हैं?

(a) वीरेन्द्र मिश्र (b) दुष्यंत कुमार
(c) भवानी प्रसाद मिश्र (d) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

वर्ष 1950-55 के मध्य जिन गीतकारों के कविता संग्रह प्रकाशित हुए उनमें शिल्प की नवीनता, लोकतत्व, प्रकृति साहचर्य तथा सामाजिक मनःस्थिति का सूत्रपात हुआ। गीत का स्वभाव एक नये फैलाव, एक नये परिवेश की माँग करने लगा। वर्ष 1951-52 की काशी में आयोजित नवगीत की नौका गोष्ठी, वर्ष 1955 में वीरेन्द्र मिश्र का हालावाद के साहित्यकार सम्मेलन में नवगीत के आविर्भाव का संकेत मिलता है। मूर्धन्य नवगीतकारों में वीरेन्द्र मिश्र, धर्मवीर भारती, रवीन्द्र भ्रमर, नचिकेता, देवेन्द्र शर्मा, महेन्द्र शंकर, सूर्यभानु गुप्त, कैलाश गौतम, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, शान्ति सुमन आदि के नाम हैं।

123. हिन्दी के काव्यभाषा-परक समीक्षक का नाम है-

(a) विजयदेव नारायण साही (b) डॉ. रघुवंश
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) रामस्वरूप चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार, काव्यभाषा वह है, जो काव्य के परम्परागत भेदक लक्षण तुक, छन्द, अलंकरण, लय, रस आदि के विलुप्त हो जाने के बाद शेष रह जाती है। यदि थोड़ी देर के लिए आधुनिक कविता की चर्चा छोड़कर प्राचीन कविता की भाषा को ही लें, जिसे प्राचीन आलोचकों ने छन्द, अलंकार, रस आदि के द्वारा समझने-समझाने की कोशिश की थी, तो क्या उस युग की कोई 'काव्य-भाषा' न थी? स्पष्ट है कि डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी छन्द, अलंकार, रस आदि को प्राचीन 'काव्य-भाषा' को समझने का शास्त्रीय उपकरण न मानकर काव्य-भाषा का वास्तविक अंग मानते हैं। इसीलिए वे कवियों की भाषा में यह कहते हुए पाये जाते हैं कि आप की कविता सचमुच 'प्रास के रजत पाश' से मुक्त हो चुकी है, अलंकारों की उपयोगिता अस्वीकार कर चुकी है और छन्दों की पायलें उतार चुकी हैं।

124. नानक दर्शन का सारतत्व है-

(a) असा दी वार (b) रहिरास
(c) सोहिला (d) जपुजी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

नानक ने अनेक पदों की रचना की, जो 'ग्रन्थ साहिब' में संकलित हैं। 'जपुजी' नानक दर्शन का सारतत्व है। 'असा दी वार', 'रहिरास' तथा 'सोहिला' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। नानकदेव की काव्य भाषा के तीन रूप हैं- हिन्दी, फारसी बहुल पंजाबी और पंजाबी। 'नसीहतनामा' की भाषा में खड़ी बोली का रूप व्यक्त है। नानक का अधिकांश साहित्य पंजाबी में है, किन्तु उन्होंने ब्रजभाषा की शब्दावली का भी प्रयोग किया है।

125. तुलसीदास किस दार्शनिक मत के भक्त कवि थे?

(a) अद्वैतवाद (b) शुद्धाद्वैतवाद
(c) द्वैतवाद (d) विशिष्टाद्वैतवाद

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

तुलसी के काव्य का अनुशीलन करने वाले अध्येताओं ने तुलसी को विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों से जोड़ा है। यथा-पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, श्री विजयानन्द त्रिपाठी, श्री नरेन्द्र नाथ बसु, पं. रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुन्दर दास और डॉ. बड़थ्वाल ने तुलसी को शंकर के अद्वैतवाद के निकट, पं. जयरामदास तथा श्रीकान्त शरण ने विशिष्टाद्वैतवाद के अनुकूल, पं. केशवप्रसाद मिश्र ने द्वैत सिद्धान्त के अनुरूप व पं. बलदेव प्रसाद मिश्र, डॉ. राजपति दीक्षित तथा डॉ. रामदत्त भारद्वाज आदि ने समन्वयवादी कहा है। अधिकतर विद्वानों के मत के अनुसार, तुलसीदास को अद्वैतवाद का समर्थक माना जा सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अद्वैत वेदांत में तत्व केवल एक है-ब्रह्म। तुलसी के मत में अंशी राम ही मूलभूत तत्व हैं, जीव-जगत उसी से आविर्भूत हैं-जड़-चेतन गुणदोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।

➲ तुलसी ने राम को साक्षात ब्रह्म रूप में माना है। वे कहते हैं-

राम ब्रह्म परमारथ रूपा।
अविगत अलख अनादि अनूपा।

➲ विशिष्टाद्वैतवाद में तीन तत्व माने गये हैं-चित्त, अचित और ईश्वर। रामानन्द ने भी प्रकृति, जीव और राम के रूप में तीन तत्व स्वीकार किये हैं।

126. अद्वैतवाद के अनुसार—

(a) जीव और ब्रह्म एक है।
(b) संसार सत्य है।
(c) जीव और ब्रह्म अलग-अलग हैं।
(d) ब्रह्म विशेषणयुक्त है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

127. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	**सूची-II**
(A) शुद्धाद्वैतवाद	**(i) बल्लभाचार्य**
(B) अद्वैतवाद	**(ii) शंकराचार्य**
(C) विशिष्टाद्वैतवाद	**(iii) रामानुजाचार्य**
(D) द्वैतवाद	**(iv) मध्वाचार्य**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	**सूची-II**
शुद्धाद्वैतवाद	बल्लभाचार्य
अद्वैतवाद	शंकराचार्य
विशिष्वद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	मध्वाचार्य

128. 'द्वैतवाद' किस आचार्य द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है?

(a) निम्बार्काचार्य (b) विष्णुस्वामी
(c) रामानुजाचार्य (d) मध्यवाचार्य

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

129. 'शुद्धाद्वैतवाद दर्शन' के प्रवर्तक हैं-

(a) शंकराचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) बल्लभाचार्य (d) विष्णु स्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

130. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट द्वारा सही उत्तर चुनिए-

सूची-I	**सूची-II**
(a) विशिष्टाद्वैत	(1) निम्बार्काचार्य
(b) द्वैत	(2) विष्णुस्वामी
(c) शुद्धाद्वैत	(3) रामानुजाचार्य
(d) द्वैताद्वैत	(4) मध्वाचार्य

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	1	4	3
(b)	4	3	1	2
(c)	1	2	3	4
(d)	3	4	2	1

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I		**सूची-II**
विशिष्टाद्वैत	-	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	-	मध्वाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	-	विष्णुस्वामी
द्वैताद्वैतवाद	-	निम्बार्काचार्य

131. रामानुज के श्रीसम्प्रदाय में किसकी उपासना होती थी?

(a) शंकर (b) ब्रह्मा
(c) विष्णु (d) लक्ष्मी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रामानुज के श्रीसम्प्रदाय में भगवान विष्णु की उपासना की जाती है। श्रीसम्प्रदाय वैष्णव धर्म के चार सम्प्रदायों में से एक है। श्रीसम्प्रदाय को रामानुज मत के नाम से भी जाना जाता है।

132. कविता के लिए खड़ी बोली के पक्ष में आन्दोलन की शुरुआत की—

(a) प्रेमघन ने
(b) भारतेन्दु ने
(c) जगन्नाथदास रत्नाकर ने
(d) अयोध्या प्रसाद खत्री ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

कविता के लिए खड़ी बोली के पक्ष में आन्दोलन की शुरुआत अयोध्या प्रसाद खत्री ने की। ये हिन्दी खड़ी बोली के आरम्भिक प्रबल समर्थक थे। 1887-89 ई. में इन्होंने 'खड़ी बोली का पद्य' नामक संग्रह दो भागों में प्रस्तुत किया। 'सरस्वती' पत्रिका के मार्च, 1905 में प्रकाशित ''अयोध्या प्रसाद खत्री'' शीर्षक जीवनी के लेखक पुरुषोत्तम प्रसाद ने लिखा था कि खड़ी बोली का प्रचार करने के लिए उन्होंने इतना द्रव्य खर्च किया कि राजा-महाराजा भी कम करते हैं। 1888 ई. में उन्होंने 'खड़ी बोली का आन्दोलन' नामक पुस्तिका प्रकाशित कराई।

133. भारत में सबसे पहला पश्चिमी रंगमंच की स्थापना....... में हुई हैं।

(a) मुंबई (b) उज्जैन
(c) बंगाल (d) कर्नाटक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

पारसी व्यावसायियों ने सर्वप्रथम नये रंगमंच का आयोजन किया। भाषा मिश्रित थी। इन्द्र सभा, चित्रा-बकावली, चन्द्रावली और हरिश्चन्द्र आदि अभिनय होते थे, अनुकरण था रंगमंच में शेक्सपीरियन स्टेज का; क्योंकि वहाँ भी विक्टोरियन युग की प्रेरणा ने रंगमंच में विशेष परिवर्तन कर लिया। भारतीय रंगमंच पर पिछली धारा का प्रभाव सर्वप्रथम बंगाल पर हुआ, किन्तु इन दोनों प्रभावों के बीच में दक्षिण में भारतीय रंगमंच निजी स्वरूप में अपना अस्तित्व रख सका।

134. नाटक का अभिनय रंगमंच के जिस अगले स्थान पर होता है उसका नाम क्या है?

(a) रंगपीठ (b) रंगशीर्ष
(c) नेपथ्य (d) मत्तवारिणी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(a)

रंगमंच में दो भाग होते हैं। पिछले भाग को रंगशीर्ष, जबकि सबसे आगे वाले भाग को रंगपीठ कहा जाता है। इन दोनों के बीच में जवनिका रहती है। अभिनय का मुख्य स्थल 'रंगपीठ' होता है।

135. रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान क्या कहलाता है?

(a) पृष्ठमंच (b) दर्शक दीर्घा
(c) नेपथ्य (d) कलाकार दीर्घा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

नेपथ्य, रंगमंच का वह भाग होता है जो दर्शकों की दृष्टि से ओझल रहता है अर्थात् पर्दे के पीछे का वह स्थान होता है, जहाँ अभिनेता रंगमंच पर आने से पूर्व उपयुक्त वेश-भूषा धारण करते हैं।

136. इनमें से कौन नाट्य-वृत्तियों के अन्तर्गत नहीं है?

(a) सात्विक (b) कैशिकी
(c) आरभटी (d) भारती

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(a)

नाट्य-वृत्तियों के अन्तर्गत सात्विक नहीं आता है। 'नाट्य' के सन्दर्भ में वृत्तियों का विशेष महत्व होता है। इन्हें नाट्य की माताएँ कहा जाता है। वृत्तियाँ चार प्रकार की होती हैं- भारती, कैशिकी, सात्वती और आरभटी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ भारती को ऋग्वेद से उत्पन्न माना गया है।
➲ सात्वती को यजुर्वेद से उत्पन्न माना गया है।
➲ कैशिकी को सामवेद से उत्पन्न माना गया है।
➲ आरभटी को अथर्ववेद से उत्पन्न माना गया है।
➲ भारती वृत्ति वाचिक होती है। इसमें अभिनय का सारा कौशल वचन-भंगिमा पर ही निर्भर होता है। इसलिए इसे शब्द-वृत्ति कहते हैं।
➲ कैशिकी वृत्ति में गीत, नृत्य तथा विलास चेष्टाओं की योजना होती है। इसमें स्त्रियों के कार्य-व्यापार भी सम्मिलित होते हैं।
➲ सात्वती वृत्ति में नायक के सत्व, शौर्य, त्याग आदि व्यापारों की योजना होती है।
➲ आरभटी वृत्ति में युद्ध, माया, इन्द्रजाल, क्रोध आदि व्यापारों की योजना होती है।

137. ''नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए, रंगमंच के लिए नाटक नहीं'' यह कथन किसका है?

(a) मोहन राकेश (b) मुद्राराक्षस
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

जयशंकर प्रसाद ने कहा था ''नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए, न कि रंगमंच के लिए नाटक''। रंगमंच के विकास का इतिहास इस बात का साक्षी है कि पहले कहानी, कथानक अथवा आलेख का जन्म हुआ और उसके मंचन के लिए एक उपयुक्त स्थान की जरूरत आयी।

138. 1965 में आयोजित कथा समारोह में......को 'जेबी आलोचक' कहा गया है।

(a) मोहन राकेश (b) धनंजय वर्मा
(c) मन्नू भण्डारी (d) राजेन्द्र यादव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(b)

वर्ष 1965 में आयोजित कलकत्ता कथा समारोह में धनंजय वर्मा को 'जेबी आलोचक' कहा गया है।

139. राजस्थानी परिवेश में प्रेम की निगूढ़ अभिव्यक्ति...............कहानी में हुई है।

(a) गदल (b) मृगतृष्णा
(c) कुत्ते की दुम और शैतान (d) धूल की आँधी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

रांगेय राघव द्वारा कृति 'मेरी कहानियाँ' कहानियों का एक संग्रह है। इसमें ऊँट की करवट, कुत्ते का दुम और शैतान : नए टेक्नीकस, गदल, जाति और पेशा, तबेले का धुँधलका, देवदासी, नारी का विक्षोभ, पंच परमेश्वर, बिल और दाना, भय शीर्षक नामक कहानियाँ हैं। गदल कहानी में राजस्थानी परिवेश में प्रेम की निगूढ़ अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गई है।

140. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और दिये गये कूट से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) आदिकाल	(i) आलम
(B) भक्तिकाल	(ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(C) रीतिकाल	(iii) अमीर खुसरो
(D) आधुनिक काल	(iv) जायसी

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
आदिकाल	अमीर खुसरो
भक्तिकाल	जायसी
रीतिकाल	आलम
आधुनिक काल	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

141. नाटक को पंचम वेद की मान्यता प्रदान की—

(a) भरतमुनि ने (b) विश्वनाथ ने
(c) दशरथ ओझा ने (d) पाणिनी ने

P.G.T. परीक्षा, 2004
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

नाटक को पंचम वेद की मान्यता भरतमुनि ने प्रदान किया था। नाटक के उद्भव के सम्बन्ध में भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में एक घटना का उल्लेख किया है, जिसमें त्रेता युग में मनुष्य क्रोध, दुःख और ईर्ष्या, द्वेष आदि से पीड़ित था, तब देवराज इन्द्र ने ब्रह्मा जी से मनोरंजन के लिये क्रीडा युक्त साधन के लिये प्रार्थना किया तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर पाँचवें वेद के रूप में नाट्यशास्त्र की रचना की। आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र को अभिनय का विस्तृत-विवेचन करने वाला विश्व का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

142. नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का तत्व है-

(a) अभिनेता (b) कथावस्तु
(c) रस (d) उपरोक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

रूपकों के भेदों का विश्लेषण करते हुए आचार्य धनंजय ने कहा है- 'वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः। 'यानी रूपकों को एक -दूसरे से भिन्न करने वाले तत्व हैं, बल्कि यह कि ये भेदक तत्व हैं। वस्तु को कथावस्तु या इतिहास कहा गया। नेता से नायक का अर्थ लिया गया। रस तो नाटक की वह मूलभूत चेतना ही है, जो नाटक के सभी अंगों में व्याप्त रहती है और नाटक के प्रदर्शित होने पर दर्शकों के मन में अपेक्षित प्रभाव की सृष्टि करती है। अभिनवगुप्त ने लिखा है कि रस ही नाट्य है। इस प्रकार नाटक के तत्व के रूप में वस्तु, नेता और रस की गणना संस्कृत नाट्यशास्त्र में होती रही। धनंजय जब यह कहते हैं कि नाटक की प्रकृति को देखते हुए कथावस्तु तीन प्रकार की मानी जा सकती है- सर्वश्राव्य, नियतश्राव्य और अश्राव्य, तो वे संवाद को भी वस्तु के अन्तर्गत मान लेते है। नाटक के तत्व हैं- कथानक, चरित्र, संवाद, देशकाल, शैली और जीवन दर्शन।

143. भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का मुख्य उद्देश्य है-

(a) व्यक्तित्व का परिशोधन (b) चरित्रचित्रण
(c) दृश्यों का प्रस्तुतीकरण (d) रसास्वादन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

आचार्य भरत ने 'लोकमंगल' तथा 'रसास्वादन' को नाटकों का मुख्य उद्देश्य माना है। इसीलिए नाटक के तत्वों में केवल तीन ही प्रमुख माने गए वस्तु, नेता और रस, जिसमें रस एक प्रमुख तत्व है।

144. स्कूल बुक सोसाइटी की स्थापना हुई थी—

(a) 1733 में (b) 1780 में
(c) 1833 में (d) 1880 में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अंग्रेज शासकों और मिशनों के प्रयास से बहुत-सी टेक्स्ट-बुक सोसाइटियाँ खुलीं। उनमें कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी (1817 ई.), मद्रास स्कूल बुक सोसाइटी (1828 ई.), आगरा बुक सोसाइटी (1820 ई.), आगरा स्कूल बुक सोसाइटी (1833 ई.) और नार्दर्न इंडियन क्रिश्चियन बुक सोसाइटी आगरा-बनारस (1848 ई.) प्रमुख है। (1840 ई.) में 'ज्ञान प्रकाश' आगरा बुक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित हुआ।

145. ईसाई मिशनरियों का प्रधान केन्द्र.....में था।

(a) इलाहाबाद (b) दिल्ली
(c) मुम्बई (d) सिरामपुर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

अंग्रेजी शासनकाल में ईसाई मिशनरियों ने धर्मप्रचार के लिए हिन्दी गद्य को अपनाया। अतः हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशन की सुदृढ़ नींव पड़ी। श्रीरामपुर (सिरामपुर) इसका प्रधान केंद्र था। डॉ. गणपति चन्द्र के कथनानुसार, ''ईसाई धर्म प्रचारकों ने गद्य शैली के विकास की दृष्टि से भले ही विशेष सफलता न प्राप्त की हो, किन्तु हिन्दी गद्य को विषय-विस्तार प्रदान करने एवं गद्य लेखन के प्रयासों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया।''

146. सही आरोही क्रम चुनिए–

(a) प्रयोगवाद, छायावाद, नई कविता, प्रगतिवाद

(b) प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता

(c) छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता

(d) नई कविता, छायावाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(c)

द्विवेदी युग के पश्चात हिन्दी साहित्य में छायावाद का विकास हुआ। छायावाद की कालावधि वर्ष 1918 से 1938 तक मानी जाती है। छायावाद के गर्भ से नवीन सामाजिक चेतना से युक्त प्रगतिवादी (प्रगतिशील) साहित्य धारा का उदय वर्ष 1936 में हुआ, जो वर्ष 1943 तक प्रभावित रहा। प्रयोगवाद की वर्ष 1943 से 1953 तक मानी जाती है, जबकि वर्ष 1953 के बाद की कविता को नई कविता की संज्ञा दी जाती है।

147. 'निबन्ध' को गद्य की कसौटी किसने माना है?

(a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामविलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

'निबन्ध' को गद्य की कसौटी रामचन्द्र शुक्ल ने माना है। 'गद्य कवीनां निकष वदन्ति' संस्कृत की इस उक्ति में गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। हिन्दी में निबन्ध लेखन का आगाज भारतेन्दु युग से ही माना गया है।

148. ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी हैं'' - यह कथन किसका है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(c) श्याम सुन्दर दास (d) वनमाली

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

149. 'आत्माराम' के छद्म नाम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की आलोचना किसने की थी?

(a) बाबू श्यामसुन्दर दास

(b) बाबू बालमुकुन्द गुप्त

(c) झाबर मल शर्मा

(d) पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(b)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जब 'सरस्वती' (भाग 6, संख्या 11) के प्रसिद्ध 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक लेख में 'अनस्थिरता' शब्द का प्रयोग किया, तब बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने 'आत्माराम' के छद्म नाम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की आलोचना करते हुए लेखमाला निकाली जिसमें चुहलबाजी का पुट पूरा था।

150. मुद्राराक्षस द्वारा प्रणीत 'तिलचट्टा' नाटक में 'तिलचट्टा' प्रतीक है–

(a) यौन कुण्ठाओं का

(b) मानव मन की पाशविक प्रवृत्तियों का

(c) अधिकारी वर्ग का स्वार्थपरता व क्रूरता का

(d) समाजव्यापी संत्रास का

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(a)

मुद्राराक्षस द्वारा प्रणीत नाटक 'तिलचट्टा' में तिलचट्टा यौवन कुण्ठाओं का प्रतीक है। इनके प्रसिद्ध नाटक हैं–योर्स फेथफुली, मरजीवा, तेन्दुआ, प्रथम स्तुति, आलाअफसर (1979), गुफाएँ (1979), सन्तोला (1980) आदि। आलाअफसर से इन्हें ख्याति प्राप्त हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मुद्राराक्षस का मूल नाम सुभाष चन्द्र था। इनका जन्म 21 जून, 1933 को लखनऊ में तथा मृत्यु 13 जून, 2016 को हुई।
- ये हिन्दी के मशहूर उपन्यासकार, नाट्य लेखक तथा आलोचक थे।
- इन्होंने 'अनुवार्ता' पत्रिका तथा कलकत्ता से निकलने वाली पत्रिका 'ज्ञानोदय' का सम्पादन भी किया।
- दो स्वप्न-दृश्यों की कल्पना द्वारा भी काम कुण्ठा एवं नैतिक वर्जनाओं को उद्घाटित किया गया है।
- 'योर्स फेथफुली' में अधिकारी वर्ग की क्रूरता और स्वार्थपरता को उजागर किया गया है।
- 'मरजीवा' में वर्तमान समाज की पूरी विसंगति और उसमें जीने के लिए अभिशप्त मनुष्य की नियति को मूर्त किया गया है। इस नाटक में पुलिस की मक्कारी, नेताओं का प्रपंच, मन्त्रियों की स्वार्थपरता, नक्सलवादियों की ध्वंसकारी राजनीति तथा समाजव्यापी संत्रास, नैराश्य, द्वन्द्व, कुण्ठा एवं हिंसा को दृश्यांकित किया गया है।
- 'तेन्दुआ' मानव की पाशविक प्रवृत्तियों का प्रतीक है। इसमें नाटककार ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि आज के सभ्य सफेदपोश और अभिजात कहे जाने वाले वर्ग में भी हिंसात्मक और पाशविक प्रवृत्तियाँ पूरी आक्रामकता के साथ जीवित हैं।

➲ 'आलाअफसर' रूसी नाटककार 'गोगोले' के नाटक 'इन्स्पेक्टर जनरल' का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें नौकरशाही के क्रूर, कुटिल रूप और नेताओं से उनकी साँठ-गाँठ पर चोट की गयी है। नाटक, नौटंकी शैली में लिखा गया है।

➲ 'गुफाएँ' में मानव की आदिम प्रवृत्तियों-क्रूरता, भय, हिंसा, यौनावेग, जंगलीपन की स्थिति का बोध कराया गया है।

➲ 'सन्तोला' में नाटककार ने वर्तमान जीवन-स्थितियों के भीतर से ही नये बेहतर समाज रचना की सम्भावना की खोज का प्रयत्न किया है।

151. 'तिलचट्टा' नाटक के लेखक हैं—

(a) मुद्राराक्षस (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) सत्यव्रत सिन्हा (d) मोहन राकेश

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

152. 'हिन्दी नई चाल में ढली' भारतेन्दु की यह पंक्ति किस पुस्तक से ली गई है?

(a) भारत दुर्दशा (b) अंधेर नगरी
(c) कालचक्र (d) बादशाह दर्पण

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने 'कालचक्र' नामक ग्रन्थ में लिखा है ''हिन्दी नये चाल में ढली-1873 ई.।'' इस वर्ष के सम्बन्ध में राधा कृष्णदास ने लिखा है, ''यद्यपि भारतेन्दु जी ने 1864 ई. से हिन्दी गद्य-पद्य को लिखना प्रारम्भ किया था और 1868 ई. में 'कविवचनसुधा' का उदय हुआ, परन्तु इसे स्वयं भारतेन्दु जी हिन्दी के उदय का समय नहीं मानते। वह 'मैगजीन' के उदय (1873 ई.) से हिन्दी का पुनर्जन्म मानते हैं।''

153. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेहूँ और गुलाब' में गुलाब किसका प्रतीक है?

(a) सुगन्ध (b) कला और संस्कृति
(c) राजतन्त्र (d) पूंजीवाद

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेहूँ और गुलाब' में गेहूँ को आर्थिक और राजनीतिक प्रगति का प्रतीक माना है तथा गुलाब को सांस्कृतिक प्रगति का। इसमें लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि राजनीतिक और आर्थिक प्रगति सदा एकांगी रहेगी और उसे पूर्ण बनाने के लिए सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकता होगी। मानव संस्कृति के विकास के लिए साहित्यकारों एवं कलाकारों की भूमिका गुलाब की भूमिका है और अपना इसका महत्व है। भावपूर्ण शैली में लिखित यह 'प्रतीकात्मक निबन्ध' अत्यन्त ही प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। अतः स्पष्ट है कि यहाँ गुलाब, कला और संस्कृति का प्रतीक है।

154. हिन्दी काव्य में........मांसलवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं।

(a) रामेश्वर शुक्ल अंचल
(b) हरिवंशराय बच्चन
(c) सुमित्रानन्दन पन्त
(d) जयशंकर प्रसाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

हिन्दी काव्य में रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' मांसलवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनकी रचनाओं में मांसल प्रणय की आवेशमयी अभिव्यक्ति मिलती है। इसलिए इनकी कविताओं में कोमल भावों की अनुभूति भी आवेशमयी और ओजपूर्ण हो उठी है। 'अंचल' के काव्य में छायावादी प्रणय के व्यापक और उदात्त रूप की कोई छाया नहीं दिखायी देती। वे प्रणय के उस छोर पर खड़े हैं, जो शारीरिक और वासना से आक्रांत है।

155. भक्तिकाल में गृहस्थ जीवन का जैसा सुन्दर चित्रण सूरदास में मिलता है, वैसा ही आधुनिक काल के किस कवि में यह मिलता है?

(a) हरिऔध (b) जगन्नाथ दास रत्नाकर
(c) निराला (d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

मैथिलीशरण गुप्त की महत्ता इस बात में है कि व्यापक आलोचकीय अनिच्छा के बावजूद वे आधुनिक काल के एक बड़े कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के पीछे कई कारण बताये जाते हैं। जैसे-सीधी सरल भाषा, पौराणिक कथानकों का चुनाव, गृहस्थ जीवन की महिमा का आख्यान, व्यापक हिन्दू नैतिक मूल्यों का समर्थन और राष्ट्रीय भाव-धारा की अभिव्यक्ति।

156. धनिया और झुनिया प्रेमचन्द के किस उपन्यास के पात्र हैं?

(a) गबन (b) गोदान
(c) कर्मभूमि (d) प्रेमाश्रम

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' में होरी, धनिया, झुनिया, गोबर, हीरा, सोभा और रूपा आदि पात्र एक परिवार के ही हैं। भोली, दुलारी, झिंगुरी साहू, दातादीन, मंगरू साहू, पटेश्वरी, मातादीन, वगैरह भी आस-पास के लोग हैं। शहर के राय साहब, मेहता, खन्ना, तनखा, मिर्जा, मालती आदि पात्र भी हैं।

157. रामचन्द्र वर्मा प्रसिद्ध हैं—

(a) कवि के रूप में (b) आलोचक के रूप में
(c) भाषाविद् के रूप में (d) कोशकार के रूप में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिन्दी कोश का उपयोग पिछले 50 वर्षों से किया जा रहा है। वे एक हिन्दी के कोशकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी दर्जनों शब्दकोष कृतियाँ आज उपलब्ध हैं।

158. अब तक निम्नलिखित में से किस साहित्यकार की जन्म शताब्दी नहीं मनाई गई है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रश्नकाल में रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की जन्म शताब्दी नहीं मनायी गयी थी, लेकिन वर्ष 2013 में उज्जैन में उनकी जन्म शताब्दी मनायी गयी। अत: वर्तमान में उपर्युक्त सभी की जन्म शताब्दी मनायी गयी है।

159. 'आर्य समाज' के संस्थापक हैं—

(a) स्वामी विवेकानन्द (b) महात्मा गाँधी
(c) केशवचन्द्र सेन (d) दयानन्द सरस्वती

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

आर्य समाज की स्थापना दयानन्द सरस्वती द्वारा अप्रैल, 1875 में बम्बई (अब मुम्बई) में किया गया था। इनका वास्तविक नाम 'मूलशंकर' था। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुन: स्थापना करना था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- दयानन्द सरस्वती मूल रूप से गुजरात के रहने वाले थे। इन्हें वैदिक परम्परा में पूर्ण विश्वास था जिससे प्रभावित होकर इन्होंने 'वेदों की ओर चलो' (Back to the Vedas) का नारा दिया।
- 1863 ई. में झूठे धर्मों का खण्डन करने के लिए ''पाखण्ड खण्डिनी पताका'' लहरायी।
- 1877 ई. में आर्य समाज लाहौर की स्थापना की थी।
- उनका उद्देश्य धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से भारत की एकता पर बल देना था।
- उन्होंने मानव कर्म पर बल दिया और कहा ''मानव भाग्य का खिलौना नहीं, अपितु अपने भाग्य का निर्माता है।''
- उनके सभी विचार उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित हैं।
- दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक संस्थाएँ उनके द्वारा 1886 ई. में प्रारम्भ की गयी।
- वर्ष 1902 में हरिद्वार में उनके द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की गयी, जहाँ वैदिक रीति से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

160. 'सत्यार्थ प्रकाश' के लेखक का नाम क्या है?

(a) स्वामी दयानन्द (b) स्वामी श्रद्धानन्द
(c) स्वामी विवेकानन्द (d) केशवचन्द्र सेन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

161. खड़ी बोली को प्रधानता देने में सर्वाधिक योगदान रहा-

(a) ब्रह्म समाज (b) प्रार्थना समाज
(c) थियोसोफिकल सोसाइटी (d) आर्य समाज

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'आर्य समाज' के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अहिन्दी-भाषी होने पर भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में प्रकाशित कर उसको 'आर्य भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित किया। उपर्युक्त सभी संस्थानों में खड़ी बोली को प्रधानता देने में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का था।

162. हिन्दी को आर्य भाषा का दर्जा देने वाले हैं—

(a) दयानन्द सरस्वती (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (d) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

163. 'वियोगी हरि' का वास्तविक नाम क्या है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) हरि प्रसाद द्विवेदी
(c) लल्लन प्रसाद व्यास (d) सुदामा प्रसाद

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार 'वियोगी हरि' का जन्म 1896 ई. में छतरपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'हरि प्रसाद द्विवेदी' था। ये आधुनिक ब्रज भाषा के प्रमुख कवि, हिन्दी के सफल गद्यकार एवं गाँधीवादी तथा समाजसेवी सन्त थे। इनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति 'वीर सतसई' थी, जिसके लिए इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वियोगी हरि ने 'हरिजन सेवक संघ' का सम्पादन किया था तथा बाद में इसके अध्यक्ष भी रहे।
- इन्होंने वर्ष 1925 में पुरुषोत्तम दास टण्डन के साथ मिलकर प्रयाग में 'हिन्दी विद्यापीठ' की स्थापना की थी।
- वियोगी हरि की महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में लिखी गयी पुस्तक 'श्रद्धा के कण' है।

➲ वियोगी हरि की प्रमुख रचनाएँ हैं—साहित्य विहार (1922), छद्मयोगिनी नाटिका (1922), ब्रज माधुरी सार (1923), कवि कीर्तन (1923), सूरदास की विनयपत्रिका (1924), अन्तर्नाद (1926), भावना (1928), प्रार्थना (1929), वीर सतसई (1927), विश्वधर्म (1930), योगी अरविन्द की दिव्यवाणी, छत्रसाल ग्रन्थावली, मन्दिर प्रवेश, प्रबुद्ध यामुन अथवा यामुनाचार्य चरित (1929), अनुरागवाटिका, मेवाड़ केशरी, चरखा स्तोत्र , मेरा जीवन प्रवाह, तरंगिणी, चरखे की गूँज, प्रेम शतक, प्रेम पथिक, प्रेमांजलि, प्रेम परिषद इत्यादि।

164. वियोगी हरि का वास्तविक नाम क्या था?

(a) हरिहर प्रसाद (b) हरि प्रसाद
(c) राम प्रसाद (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

165. 'वियोगी हरि जी का पूर्ण नाम था—

(a) श्री राम प्रसाद द्विवेदी
(b) श्री हरिहर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्री हरि प्रसाद द्विवेदी
(d) श्री गिरधर द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

166. इनमें से कौन-सा कवि सतसईकार है?

(a) केशवदास (b) पद्माकर
(c) सियारामशरण गुप्त (d) वियोगी हरि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

167. किस कवि की 'सतसई' पर हिन्दी का प्रसिद्ध मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया?

(a) बिहारी (b) मतिराम
(c) दुलारेलाल भार्गव (d) वियोगी हरि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

168. सतसई, काव्य-परम्परा को आगे बढ़ाने वालों में कौन हैं?

(a) गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही'
(b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) वियोगी हरि
(d) अनूप शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

सतसई काव्य-परम्परा को आगे बढ़ाने वाले वियोगी हरि हैं। वियोगी हरि ने 'वीर सतसई' नामक ग्रन्थ की रचना की। सतसई मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। इसके अन्तर्गत कविगण 700 या उससे अधिक दोहे लिखकर एक ग्रन्थ के रूप में संकलित करते हैं। 'सतसई' शब्द 'सत' और 'सई' से बना है, 'सत' का अर्थ सात और सई का अर्थ 'सौ' है। इस प्रकार सतसई काव्य वह काव्य है जिसमें सात सौ छन्द होते हैं।

169. 'कलाधर' उपनाम से कविता लिखते थे—

(a) भगवती चरण वर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) माखनलाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद पहले ब्रजभाषा में 'कलाधर' उपनाम से कविता लिखा करते थे। ये कविताएँ 'चित्राधार' (1918) में संकलित हैं। इनके भाव, भाषा शैली आदि पर रीतिकालीन काव्य-बोध की स्पष्ट छाप है। 'प्रेमपथिक' में रीतिकालीन काव्य-बोध देखा जा सकता है। 'प्रेमपथिक' पहले ब्रजभाषा में लिखा गया। वह श्रीधर पाठक के एकान्तवासी योगी की छाया से मुक्त नहीं है। बाद में उन्होंने बहुत कुछ इसी को परिवर्तित, परिवर्धित रूप में खड़ी बोली में प्रस्तुत किया। 'कानन-कुसुम' खड़ी बोली का उनका पहला काव्य-संग्रह है।

170. 'कलाधर' किस कवि का आरम्भिक उपनाम है?

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) रामकुमार वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) निराला

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

171. 'कलाधर'..........कवि का आरम्भिक उपनाम है।

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) रामकुमार वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) निराला

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

172. 'कलाधर' उपनाम से रचना करने वाले का नाम है—

(a) सुमित्रानन्दन पन्त
(b) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
(c) महादेवी वर्मा
(d) जयशंकर प्रसाद

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

173. 'त्रिशूल' उपनाम किसका है?

(a) सुमित्रानन्दन पन्त
(b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) रामनरेश त्रिपाठी
(d) गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

गया प्रसाद शुक्ल का उपनाम 'त्रिशूल' एवं 'सनेही' था। शृंगार आदि परंपरागत विषयों पर जहाँ ये 'सनेही' उपनाम से लिखते थे, वही राष्ट्रीय भावनाओं की कविता को इन्होंने 'त्रिशूल' उपनाम से लिखा है। ये उर्दू के भी अधिकारी विद्वान थे और हिन्दी के साथ-साथ उर्दू में भी अच्छी कविता करते थे। हिन्दी में इन्होंने प्राचीन और नवीन दोनों शैलियों की कविता लिखी है। खड़ी बोली में कवित्त और सवैया छन्दों का प्रयोग करने में ये बड़े माहिर थे। ये 'सुकवि' नामक काव्य पत्रिका के सम्पादक भी थे। कृषक-क्रंदन, प्रेम पचीसी, राष्ट्रीय-वीणा, त्रिशूल-तरंग, करुणा-कादंबिनी आदि इनकी मुख्य काव्य रचनाएँ हैं।

174. 'ब्रजकोकिल' के नाम से प्रसिद्ध कवि -

(a) हरिऔध
(b) सत्यनारायण कविरत्न
(c) श्रीधर पाठक
(d) रत्नाकर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ब्रजकोकिल के नाम से प्रसिद्ध कवि पंडित सत्यनारायण कविरत्न हैं। बनारसीदास चतुर्वेदी ने सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी 'कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी' नामक शीर्षक से वर्ष 1926 में लिखी। यह हिन्दी की एक बहुप्रशंसित कृति है। इसमें कविरत्न के सीधे-साधे जीवन वृत्त को लेखक ने बड़े आत्मीय भाव से प्रस्तुत किया है। 'कविरत्न' जी की कविताओं का एक संग्रह 'हृदयतरंग' नाम से प्रकाशित हुआ है। 'भ्रमरदूत' में राष्ट्रीय भावना की सशक्त व्यंजना हुई है। लॉर्ड मैकाले की प्रसिद्ध रचना 'होरेशस' का भी इन्होंने बहुत अच्छा अनुवाद किया है।

175. 'एक भारतीय आत्मा' किस कवि का उपनाम था?

(a) सोहनलाल द्विवेदी
(b) रामचरित उपाध्याय
(c) मैथिलीशरण गुप्त
(d) माखनलाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। इनकी रचनाओं में देश के प्रति गंभीर प्रेम और देश-कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग की उत्कट भावना दिखायी देती है। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक इनकी प्रसिद्ध कविता है। ये 'कर्मवीर' राष्ट्रीय दैनिक के सम्पादक थे। इन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इनका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। इनका परिवार राधावल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1913 में माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा' पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया। वर्ष 1919 में जबलपुर से 'कर्मवीर' का प्रकाशन किया।
- चतुर्वेदी जी ने वर्ष 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी की गिरफ्तारी के बाद 'प्रताप' का सम्पादकीय कार्यभार संभाला। वर्ष 1927 में भरतपुर में सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष बने और वर्ष 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्यभार संभाला।
- चतुर्वेदी जी की रचनाओं को प्रकाशन की दृष्टि से इस क्रम में रखा जा सकता है— कृष्णार्जुन युद्ध (1918), हिमकिरीटिनी (1941), साहित्य देवता (1942), हिमतरंगिनी (1949), माता (1952)। युगचरण, समर्पण और वेणु लो गूँजे धरा आदि उनकी कहानियों का संग्रह 'अमीर इरादे', 'गरीब इरादे' नाम से छपा है।
- हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा इन्हें वर्ष 1955 में अपनी कविता-संग्रह 'हिमतरंगिनी' के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।
- हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने वाले ये प्रथम व्यक्ति थे।

176. हिन्दी के किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' नाम से अभिहित किया गया है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त
(b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(d) माखनलाल चतुर्वेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

177. 'एक भारतीय आत्मा' निम्न में से किस कवि का उपनाम था?

(a) नागार्जुन
(b) माखनलाल चतुर्वेदी
(c) सुमित्रानन्दन पन्त
(d) इनमें से किसी का भी नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

178. इनमें से किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से जाना जाता है?

(a) माखनलाल चतुर्वेदी

(b) बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन

(c) मैथिलीशरण गुप्त

(d) श्रीधर पाठक

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

179. राष्ट्रीय काव्य धारा के किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' कहकर सम्बोधित किया गया?

(a) माखनलाल चतुर्वेदी

(b) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

(d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

180. 'पुष्प की अभिलाषा' नामक प्रसिद्ध कविता किसने लिखी है?

(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) राम नरेश त्रिपाठी

(c) रत्नाकर (d) नवीन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

181. रामानन्द ने किस पुस्तक में अपनी पूरी गुरु परम्परा का उल्लेख किया है—

(a) आनन्दभाष्य (b) पंचस्तवी

(c) सहरुगीति (d) रामार्चन पद्धति

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

श्री रामार्चन पद्धति में रामानन्द जी ने अपनी पूरी गुरु परम्परा दी है। उनके अनुसार, रामानुजाचार्य जी रामानन्द से 14 पीढ़ी ऊपर थे। रामानुजाचार्य के मतावलम्बी होने पर भी अपनी उपासना पद्धति का उन्होंने विशेष रूप रखा। उन्होंने उपासना के लिए बैकुंठ के 'विष्णु' का स्वरूप न लेकर लोक में लीला विस्तार करने वाले उनके अवतार'राम' का आश्रय लिया।

182. तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति हेतु लिखा गया ग्रन्थ है—

(a) रामलला नहछू (b) बरवै रामायण

(c) हनुमान बाहुक (d) विनयपत्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति हेतु हनुमान बाहुक ग्रन्थ लिखा गया है। हनुमान बाहुक की रचना सन्त प्रवर गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी दाहिनी बाहु में हुई असह्य पीड़ा के निवारण के लिये की थी। इसमें श्रीमारुति महिमा का चिन्तन तथा उनसे सर्व अंगों में होने वाली पीड़ा की निवृति की प्रार्थना है।

183. तुलसीदास ने कौन-सी रचना कलिकाल से मुक्ति पाने हेतु लिखी?

(a) कवितावली (b) विनयपत्रिका

(c) रामाज्ञा प्रश्न (d) हनुमान बाहुक

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपनी कृति 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में लिखा है कि वेणीमाधवदास ने 'विनयपत्रिका' (विनयावली) का रचनाकाल सं. 1639 के लगभग दिया है। उसमें लिखा है कि कलियुग से सताए जाने पर तुलसीदास ने अपने कष्ट के निवारणार्थ इस ग्रन्थ की रचना की। ग्रन्थ में यह तो अवश्य ज्ञात होता है कि तुलसी ने अपनी दारुण व्यथा प्रकट करने के लिए यह ग्रन्थ लिखा, पर रचनाकाल का निर्णय अन्तर्साक्ष्य से नहीं होता। रचना इतनी प्रौढ़ है कि वह हनुमान बाहुक के समय लिखी हुई ज्ञात होती है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'तुलसी ग्रन्थावली' के दूसरे खण्ड में 'विनयपत्रिका' की पद संख्या 279 दी गई है। 'विनयपत्रिका' के प्रारम्भ में गणेश, सूर्य, शिव, पार्वती आदि की स्तुति की गई है। इसकी रचना गीति-काव्य के रूप में है। इस रचना में शान्त रस का प्रयोग हुआ है। 'हनुमान बाहुक' तुलसीदास की अंतिम रचना है। आधुनिक शब्दावली में इसे मृत्युपीड़ा की चीख कहा जा सकता है। गोस्वामी जी की मृत्यु बाहुपीड़ा में ही हुई थी। इस पीड़ा के निवारण हेतु उन्होंने 'हनुमान बाहुक' की रचना की थी।

184. तुलसीदास-रचित 'विनयपत्रिका' में पदों की कुल संख्या है -

(a) 269 (b) 272

(c) 279 (d) 289

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

185. अमीर खुसरो किस नाम से जाने जाते थे?

(a) तूतिए हिन्द (b) तोता-ए-हिन्द

(c) सितारे हिन्द (d) सरहिन्द

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

अमीर खुसरो का पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था। इनके पिता का नाम सैफुद्दीन था। इनका जन्म 1523 ई. में एटा (उ.प्र.) के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था। वर्तमान में पटियाली कासगंज जनपद में स्थित है। ये सूफी सम्प्रदाय के साधक तथा सन्त हजरत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। हजरत औलिया इन्हें 'तुर्क-ए-अल्लाह' कहकर पुकारते थे। खुसरो को हिन्दी खड़ी बोली का पहला लोकप्रिय कवि माना जाता है। ये मुख्य रूप से फारसी कवि थे। इन्हें 'तूतिए हिन्द' की उपाधि दी गयी। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) को सही माना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ अमीर खुसरो की प्रमुख रचनाएँ हैं—ताज-उल-फतह, तुगलकनामा, शारीन-ओ खुसरो, लैला-ओ मजनूँ आदि।

➲ फारसी काव्य शैली 'सबक-ए-हिन्दी' अथवा हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता अमीर खुसरो थे।

➲ अमीर खुसरो ने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासनकाल देखा था।

186. अमीर खुसरो का पूरा नाम है—

(a) अब्दुल रईस खुसरो (b) अब्दुल खालिक खुसरो

(c) अब्दुल फजल खुसरो (d) अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

187. ''मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी में पूछो, जिससे कि मैं कुछ अद्भुत बातें बता सकूँ।'' यह किसका कथन है?

(a) अमीर खुसरो (b) कण्डपा

(c) मौलवी करीम (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

अमीर खुसरो ने कहा है, '' मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी (हिन्दी) में पूछो : मैं तुम्हें हिन्दवी में अनुपम बातें बता सकूँगा।'' मनसदी किरानुस्सादैन में भी हिन्दवी के संबंध में इसी प्रकार की उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण इनके उद्‌गार उपलब्ध हैं।

188. ''पुस्तक जल्हण हत्थ दै, चलि गज्जन नृप काज'' में जल्हण को कौन-सी पुस्तक देने का उल्लेख है?

(a) वीसलदेव रासो (b) हम्मीर रासो

(c) पृथ्वीराज रासो (d) विजयपाल रासो

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

प्रस्तुत उक्ति में जल्हण को 'पृथ्वीराज रासो' देने का उल्लेख है। यह वर्णन उस समय का है, जिस समय पृथ्वीराज को मुहम्मद गोरी बन्दी बनाकर अपने देश ले जा रहा था, उस समय चन्दबरदाई महाराज के साथ गया था तथा अपने पुत्र जल्ल को 'पृथ्वीराज रासो' सौंप गया था। कहा जाता है कि जल्ल ने चन्द के अधूरे महाकाव्य को पूरा किया था।

189. 'नीमा' किस कवि की माता का नाम था?

(a) रहीमदास (b) सूरदास

(c) कबीरदास (d) मलूकदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कहा जाता है कि कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था, जिसे उसने वाराणसी के समीप 'लहरतारा' तालाब के पास फेंक दिया था। वहाँ से गुजरने वाले जुलाहा दम्पत्ति 'नीरू-नीमा' ने बालक के रूप में विद्यमान सत्पुरुष को अपने घर लाकर पालन-पोषण किया। वैसे कबीर ने अपने माता-पिता का कहीं भी उल्लेख नहीं किया, किन्तु जाति 'जुलाहा' एवं 'बनारस' का रहने वाला बताया है। जनश्रुतियों में प्रसिद्ध है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई था। उनकी संतान के रूप में पुत्र कमाल और पुत्री कमाली का उल्लेख मिलता है। कबीरदास की मृत्यु मगहर में हुई थी। इन्हीं के नाम पर उ.प्र. सरकार ने वर्ष 1997 में सन्त कबीर नगर के नाम से एक नये जनपद का गठन किया है। जिसका मुख्यालय खलीलाबाद (मगहर से लगभग 7 किमी. पश्चिम में) है। खोज रिपोर्टों, सन्दर्भ-ग्रन्थों पुस्तकालयों आदि विवरणों के अनुसार उनके विरचित तिरसठ (63) ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है, जिनमें प्रमुख हैं—अगाध मंगल, अनुराग सागर, अमरमूल, अक्षरखण्ड की रमैनी, अक्षरभेद की रमैनी, उग्रगीता, कबीर की बानी, कबीर गोरख की गोष्ठी, कबीर की साखी, बीजक, ब्रह्म निरूपण, मुहम्मदबोध, रेखता, विचारमाला, विवेकसागर, शब्दावली, हंसमुक्तावली और ज्ञान सागर इत्यादि। बीजक जिसमें साखी, सबद, रमैनी शामिल हैं, इनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

190. कबीरदास की मृत्यु कहाँ हुई?

(a) काशी (b) मगहर

(c) बनारस (d) इलाहाबाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

191. सिकन्दर लोदी ने किसके कहने पर कबीरदास को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबाया था?

(a) गुलाम हसनैन (b) मुहम्मद शाह
(c) शेख तकी (d) शेख फिदा हुसैन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

कबीरदास, सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखा है कि वैरागियों की परम्परा में रामानन्द जी का मानिकपुर के शेख तकी पीर के साथ वाद-विवाद होना माना जाता है। ये शेख तकी दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के समय में थे। कुछ लोगों का मत है कि ये सिकन्दर लोदी के पीर (गुरु) थे और उन्हीं के कहने से उसने कबीर साहब को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबाया था। कबीर के शिष्य धर्मदास ने भी इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—

साह सिकन्दर जल में बोरे, बहुरि अग्नि परजारे।
मैमत हाथी आनि झुकाये , सिंहरूप दिखराये।।
निरगुन कथैं, अभयपद गावैं जीवन को समझाये।
काजी पण्डित सबै हराए, पार कोउ नहिं पाये।।

शेख तकी और कबीर के संवाद प्रसिद्ध ही हैं। उससे सिद्ध होता है कि रामानन्द जी दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। 'कबीर परिचई' में अनन्तदास ने कबीर के व्यक्तित्व और जीवनी से सम्बन्धित कुछ तथ्यों का उल्लेख स्पष्ट शब्दों में किया है। उनके अनुसार, वे जन्म से जुलाहे थे, उनका निवास स्थान काशी था, उनके गुरु रामानन्द थे, सिकन्दर लोदी ने उन्हें अनेक प्रकार से यातना दी तथा उन्होंने 120 वर्ष का पवित्र जीवन पाया।

192. कबीर किस शासक के समकालीन थे?

(a) हुमायूँ (b) अकबर
(c) सिकन्दर लोदी (d) बहादुरशाह जफर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

193. कबीरदास दिल्ली सल्तनत के शासकों में किसके समकालीन थे?

(a) इल्तुतमिश
(b) बहलोल लोदी
(c) सिकन्दर लोदी
(d) अलाउद्दीन खिलजी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

194. ''सन् नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरंभ बैन कवि कहा'' में नौ सै सत्ताइस का ईसवी सन् क्या होगा?

(a) 1525 ई. (b) 1550 ई.
(c) 1540 ई. (d) 1520 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

''सन् नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरंभ बैन कवि कहा'' में नौ सै सत्ताइस का ईसवी सन् 1520 होगा। पद्मावत का यह प्रारम्भिक वचन कवि ने 927 हिजरी सन् 1520 ईसवी के लगभग में कहे थे।

195. 'कवित कह्यो दोहा कह्यो, तुलै न छप्पय छंद।
बिरच्यो यहै बिचारि कै, यह बखै रस कंद।।' यह काव्यपंक्तियाँ किसकी हैं?

(a) तुलसीदास
(b) रहीम
(c) त्रिलोचन शास्त्री
(d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त काव्यपंक्तियाँ रहीम की हैं। यह बरवै-नायिका भेद से लिया गया है।

196. स्थापना (Assertion) (A) : अनुभव की प्रमाणिकता दलित और स्त्री लेखन की मूल शर्त है।
कारण (Reason) (R) : क्योंकि साहित्यकार वर्ग चेतना से प्रतिबद्ध होता है।
उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में सही उत्तर चुनिए

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं।
(b) (A) गलत (R) सही है।
(c) (A) सही (R) गलत है।
(d) (A) तथा (R) दोनों गलत हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अनुभव की प्रमाणिकता दलित और स्त्री लेखक की मूल शर्त है। लेकिन साहित्यकार वर्ग किसी विचारधारा विशेष से प्रतिबद्ध नहीं होता है। अतः (A) सही (R) गलत है।

197. स्थापना (Assertion) (A) : पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद को बढ़ावा दिया।

कारण (Reason) (R) : उसी कारण साहित्य में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी।

उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में सही उत्तर चुनिए

(a) (A) सही (R) गलत है।

(b) (A) गलत (R) सही है।

(c) (A) और (R) दोनों सही हैं

(d) (A) तथा (R) दोनों गलत हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद को बढ़ावा दिया, उसी कारण साहित्य में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। अतः (A) और (R) दोनों सही हैं।

198. 'नारी-विमर्श' पर लिखने वाली पहली लेखिका हैं—

(a) महादेवी वर्मा (b) बंग महिला

(c) शिवानी (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'नारी-विमर्श' पर लेखन की शुरुआत का श्रेय बंग महिला (वास्तविक नाम-राजेन्द्रबाला घोष) को जाता है। ये हिन्दी नवजागरण की पहली छापामार लेखिका थीं। वे 'बंग महिला' के छद्मनाम से लिखती थीं। ये मिर्जापुर के एक प्रतिष्ठित बंगाली महाशय राम प्रसन्न घोष की पुत्री और पूर्णचन्द्र की धर्मपत्नी थीं। मिर्जापुर में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सम्पर्क में आने के बाद ये हिन्दी लिखने लगीं। 'दुलाई वाली' कहानी इनकी मौलिक कहानी है। इस कहानी को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी होने का श्रेय दिया जाता है। यह वर्ष 1907 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई।

199. बंग महिला का असली नाम क्या था?

(a) मामूनी (b) राजेन्द्रबाला घोष

(c) विद्यावती (d) रामेश्वरी देवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

200. 'फरिश्ते निकले' की मुख्य पात्र है—

(a) चम्पा बहू (b) बेला बहू

(c) नरगिस बहू (d) चमेली बहू

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित उपन्यास 'फरिश्ते निकले' एक तरह से यौन हिंसा की शिकार ग्रामीण स्त्रियों की कहानियों का कोलॉज है। उपन्यास में दो मुख्य पात्र हैं—बेला बहू और उजाला। ये दोनों स्त्रियाँ चाहती तो प्रेम हैं, पर उन्हें प्रेम नहीं मिलता; यौन प्रताड़ना मिलती है। यह कितनी दुःखदायी बात है कि प्रेम चाहने वाली स्त्री को समाज यौन हिंसा का पुरस्कार देता है। कही ईसुरी फाग, चाक, मैत्रेयी, बेतवा बहती रही, चिह्नार, अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा के प्रमुख उपन्यास हैं।

201. ''घूरे क लत्ता बीनै, कनातन क डौल बाँधै'' जैसा शीर्षक किस लेखक ने दिया था?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रताप नारायण मिश्र

(c) बालकृष्ण भट्ट (d) बदरीनारायण चौधरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

''घूरे क लत्ता बीनै, कनातन क डौल बाँधै'', ''समझदार की मौत है'', ''बात'', ''मनोयोग'', ''वृद्ध'' तथा ''भौं'' जैसे शीर्षकों से प्रताप नारायण मिश्र जी लिखते थे, जिससे इनके विषयों की अनेकरूपता के बारे में पता चलता है।

202. कीरति भनिति भूति भलि सोई।

सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

—तुलसीदास की इस पंक्ति में कौन-सा काव्य प्रयोजन स्पष्ट है?

(a) यश की प्राप्ति (b) स्वान्तः सुखाय

(c) लोकमंगल (d) धनार्जन

P.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(c)

कवि के रूप में तुलसीदास ने यद्यपि काव्य प्रयोजन में 'स्वान्तः सुखाय' की चर्चा की है, किन्तु उनकी दृष्टि से 'लोकहित' या 'लोकमंगल' काव्य का मुख्य प्रयोजन है। इसीलिए उन्होंने काव्य को 'सुरसरि' के समान सबका कल्याण करने वाला कहा है। प्रस्तुत पंक्ति का यही निहितार्थ है।

203. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' यह किसने कहा?

(a) ध्रुवस्वामिनी (b) देवसेना

(c) कार्नेलिया (d) मधुलिका

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद कृति 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है जिसमें भारत देश के विषय में कहा जा रहा है। कहने वाली यूनानी शासक सेल्युकस की पुत्री कार्नेलिया है, जो मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त से प्रेम करती है और उसका विवाह चन्द्रगुप्त से हो जाता है। भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक वैभव से प्रसन्न होकर कार्नेलिया भारत को अपना देश मानने लगती है। देश-प्रेम के इस गीत में प्रसाद ने एक विदेशिनी के माध्यम से भारत भूमि की प्रशंसा की है।

204. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा'-गीत 'प्रसाद' जी की किस कृति में है?

(a) झरना (b) लहर

(c) ध्रुवस्वामिनी (d) चन्द्रगुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

205. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' नामक गीत प्रसाद के किस नाटक का है?

(a) स्कन्दगुप्त (b) अजातशत्रु

(c) चन्द्रगुप्त (d) ध्रुवस्वामिनी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

206. जयशंकर प्रसाद के किस नाटक में कार्नेलिया विदेशी पात्र है?

(a) स्कन्दगुप्त (b) चन्द्रगुप्त

(c) विशाख (d) अजातशत्रु

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

207. निम्नलिखित में से एक कथन गलत है -

(a) 'कामायनी' प्रसाद द्वारा लिखा गया महाकाव्य है।

(b) 'आँसू' प्रसाद द्वारा रचित खण्डकाव्य है।

(c) 'काव्यकला तथा अन्य निबन्ध' प्रसाद द्वारा रचित निबन्ध संग्रह है।

(d) 'इरावती' प्रसाद द्वारा लिखी गयी कहानी है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'इरावती' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया उपन्यास है, न कि कहानी। काल कलवित होने के कारण वे इस रचना को पूर्ण न कर सकें। अन्य कथन सत्य है।

208. ''वे पूरबीपन की परवाह न करके अपने बैसवारे की ग्राम्य कहावतें और शब्द भी बेधड़क रख दिया करते थे'' शुक्लजी की इन पंक्तियों का सम्बन्ध किससे है?

(a) भारतेन्दु (b) बालकृष्ण भट्ट

(c) प्रेमघन (d) प्रताप नारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्तियों के सम्बन्ध में शुक्ल जी प्रताप नारायण मिश्र के बारे में कहते हैं। इन्होंने भी उर्दू के उन्हीं शब्दों को लिया है, जिनका चलन हिन्दी में पूर्व काल से था। इनकी भाषा में विशेष सजीवता और बोल-चाल का चलतापन है, इनमें विनोद-प्रियता अधिक है, इसी विनोद-प्रियता के कारण ये पूर्वीपन की परवाह न करके बैसवारे की ग्रामीण कहावतों और शब्दों का प्रयोग नि:संकोच करते थे।

209. ''आठ मास बीते, जजमान ।
अब तौ करौ दच्छिना दान ।।''
पंक्तियों का सम्बन्ध किस सम्पादक से है?

(a) भारतेन्दु (b) प्रताप नारायण मिश्र

(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रेमघन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रताप नारायण मिश्र ने 'हरिगंगा' गीत के माध्यम से उस समय लिखा और 'ब्राह्मण' में छापा था, जब अनेक ग्राहकों ने 'ब्राह्मण' का शुल्क नहीं भेजा था। इसी तरह उन्होंने विज्ञापन में लिखा था–
''दाता जजमान! प्यारे पाठक! अनुग्राहक ग्राहक!
चार महीने हो चुके 'ब्राह्मण' की सुधि लेव।''

210. ''मोहिका हँसेसि कि कोहरहि'' किसने किससे कहा है?

(a) केशवदास ने अकबर से

(b) तुलसीदास ने अकबर से

(c) जायसी ने शेरशाह से

(d) सूरदास ने वल्लभाचार्य से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पंक्ति जायसी ने शेरशाह से कहा है। एक बार जायसी शेरशाह के दरबार में गये, तो बादशाह ने इनका मुँह देखकर हँस दिया। जायसी ने शान्त भाव से पूछा–मोहिका हँसेसि कि कोहरहि? अर्थात तू मुझ पर हँसा या उस कुम्हार पर, इस पर शेरशाह ने लज्जित होकर क्षमा माँगी।

211. ''भक्ति आन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है''। यह कथन किसका है?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

(d) डॉ. भगीरथ मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

''भक्ति आन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है''। यह कथन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का है।

212. ''मै पुनि निज गुरु सुन सुनी कथा सो सूकर खेत''—यह कथन किस कवि का है?

(a) तुलसीदास (b) कबीरदास
(c) नाभादास (d) सूरदास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त कथन कवि तुलसीदास जी का है। लाला सीताराम, गौरीशंकर द्विवेदी एवं अन्य विद्वानों ने गोस्वामी जी की इस उक्ति को प्रमाणिक मानते हुए सूकर खेत का अभिप्राय 'सोरों' माना है। आचार्य शुक्ल का अभिमत है कि 'सूकर खेत' को 'सोरों' समझ लिया गया। 'सूकरछेत्र' गोंडा जिले में सरयू के किनारे एक पवित्र तीर्थ है, जहाँ आस-पास के कई जिलों के लोग स्नान करने जाते हैं और मेला लगता है। सूकरछेत्र मध्यकाल में तथा उसके पश्चात् तीर्थ रूप से मान्य रहा है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण की कथा सर्वप्रथम सूकरछेत्र में ही सुनी थी।

213. ''जब हम प्रीति, उदारता और भलमनसाहत का बरताव करते हैं तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना ही उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।'' यह कथन किस निबन्ध से लिया गया है?

(a) घृणा (b) प्रीत और लोभ
(c) ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से (d) मित्रता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

प्रस्तुत गद्यांश रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबन्ध 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' लिया गया है।

214. ''साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है''। इस पंक्ति के सही लेखक हैं—

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) गुलाब राय
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

''साहित्य जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिम्ब है''। इस पंक्ति के लेखक रामचन्द्र शुक्ल हैं। यह पंक्ति 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखी गयी है।

215. 'भक्तन को कहा सीकरी सों काम/आवत जात पन्हैया टूटी विसरि गयो हरिनाम'' ये किसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं?

(a) कुम्भनदास (b) नन्ददास
(c) चतुर्भुजदास (d) कृष्णदास

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

कुम्भनदास अष्टछाप के एक कवि हैं। किंवदन्ती है कि एक बार अकबर ने इन्हें फतेहपुर सीकरी बुलाया था। सम्राट की भेजी हुई सवारी पर न जाकर ये पैदल ही गये और जब सम्राट ने इनका कुछ गायन सुनने की इच्छा प्रकट की, तो इन्होंने उपर्युक्त पंक्तियाँ सुनायी। इस पर अकबर ने प्रसन्न होकर कुछ मांगने को कहा, तो उन्होंने सबसे पहले यह इच्छा प्रकट की कि भविष्य में मुझे 'सीकरी' न बुलाया जाय।

216. 'भक्तन को कहा सीकरी सों काम'' यह अभिकथन किसका है?

(a) सन्त कबीरदास (b) सन्त रैदास
(c) कुम्भनदास (d) मलूकदास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

217. दिनकर की कौन-सी काव्य कृति भीष्म पितामह एवं धर्मराज के संवाद के रूप में रचित है?

(a) रश्मिरथी (b) कुरुक्षेत्र
(c) उर्वशी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

'कुरुक्षेत्र' रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित विचारात्मक काव्य है। इसमें भीष्म पितामह तथा धर्मराज युधिष्ठिर के संवाद हैं। इस रचना में महाभारत (कुरुक्षेत्र) के भीषण नरसंहार के पश्चात युधिष्ठिर कहते हैं कि यदि अपने अहंकार और अपमान के प्रतिशोध में आकर हम युद्ध में लिप्त न होते, तो नरसंहार बचाया जा सकता था, पर जब वे उस पश्चाताप की अभिव्यक्ति शर-शय्या पर पड़े नीति-निपुण भीष्म पितामह से करते हैं, तो उनका उत्तर होता है कि अकीर्ति और अन्याय के विरुद्ध युद्ध करना ही धर्म है। क्षमा भी उसे ही शोभा देती है, जिसमें शक्ति हो।

218. बिहारी के दोहों की चमत्कारपूर्ण तुलना संस्कृत, उर्दू फारसी के कवियों से किसने की?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) पद्मसिंह शर्मा (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

पद्मसिंह शर्मा को तुलनात्मक समीक्षा का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने जुलाई, 1907 में 'सरस्वती' में बिहारी और फारसी कवि सादी की तुलना की थी। इसके बाद 'संस्कृत और हिन्दी कविता में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव', 'भिन्न-भिन्न भाषाओं में समानार्थी पद्य' आदि निबन्धों में वे तुलनात्मक आलोचना के कार्य को आगे बढ़ाते रहे। इसी क्रम में उनकी प्रसिद्ध कृति 'बिहारी सतसई : तुलनात्मक अध्ययन' प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने बिहारी की तुलना संस्कृत, प्राकृत, उर्दू तथा हिन्दी के कवियों से की।

219. भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग निम्नलिखित में से किस कवि ने किया है?

(a) बिहारी (b) चिन्तामणि

(c) भूषण (d) घनानन्द

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

आचार्य शुक्ल जी की शब्दावली का प्रयोग करते हुए हम कह सकते हैं कि सफल मुक्तककार के लिए जो कल्पना की समाहार-शक्ति और भाषा की समास-शक्ति वांछनीय है, वह बिहारी में पूरी तौर से वर्तमान थी। बिहारी की यह विशेषता है कि वे कल्पना के सहारे बहुत से चित्रों को एक साथ उपस्थित कर भाषा की समास शक्ति के कारण दोहे जैसे छन्द में उन्हें गुम्फित कर देते हैं।

220. कामायनी को 'मानवता के रसात्मक इतिहास' की संज्ञा प्रदान की है—

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(b) नलिनविलोचन शर्मा

(c) नन्ददुलारे बाजपेयी

(d) रामनाथ लाल शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिवादी कवियों के साहित्य को दरबारी कवियों का साहित्य मानकर उसमें जो अच्छा लिखा गया था, उसकी दाद दी और जो अंश चमत्कारी था, उसकी कड़ी आलोचना की। इसी दृष्टि से उन्होंने अपने युग के नये साहित्य छायावाद का नीर-क्षीर विवेक किया। उसकी अच्छाइयों की तारीफ की, 'कामायनी' को 'मानवता का रसात्मक इतिहास' भी कहा और दूसरी ओर उसकी 'मधुचर्या' की निन्दा भी की।

221. ''शहर में कोई किसी की जाति नहीं पूछता शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना है, लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।'' यह कथन किस रचना से लिया गया है?

(a) परती परिकथा

(b) रतिनाथ की चाची

(c) बलचनमा

(d) मैला आँचल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रस्तुत कथन फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल से लिया गया है। इस कथन का सन्दर्भ डॉ. प्रशान्त के जाति के बारे में लोगों की जिज्ञासा है।

222. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा था?

(a) भूषण (b) केशव

(c) देव (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

केशव की कविता में अलंकरण, चमत्कार प्रदर्शन एवं पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रमुखता है। उनकी कविता में क्लिष्टता आ गयी है, जिसके कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। उनकी कविता की क्लिष्टता के विषय में यह उक्ति प्रायः कही जाती है—

''कवि को देन न चहै विदाई।
पूछे केशव की कविताई।।''

आचार्य शुक्ल ने उनके सम्बन्ध में कहा है—''केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी, जो एक कवि में होनी चाहिए। कवि कर्म में सफलता के लिए भाषा पर जैसा अधिकार चाहिए, वैसा उन्हें प्राप्त न था। केशव केवल उक्ति वैचित्र्य एवं शब्द क्रीडा के प्रेमी थे।''

223. रीतिकालीन कवियों में 'कठिन काव्य का प्रेत' किसे कहा जाता है?

(a) बिहारीलाल (b) भूषण

(c) घनानन्द (d) केशवदास

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

224. 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता है?

(a) सेनापति को (b) चिन्तामणि को

(c) मतिराम को (d) केशवदास को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

225. चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता मूल रूप से—

(a) जीवनवृत्त है (b) कथा-कहानी है

(c) आत्मकथा है (d) निबन्ध है

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का मूल रूप जीवनवृत्त है। कृष्ण भक्त कवियों की जीवनवृत्त की चर्चा जिन ग्रन्थों में है, उनके नाम हैं–

कृति	लेखक
1. चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
3. भक्तमाल	नाभादास
4. भाव प्रकाश	हरिराय
5. बल्लभ दिग्विजय	यदुनाथ

226. 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' के लेखक कौन हैं?

(a) सूरदास (b) नन्ददास
(c) नामदास (d) गोकुलनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

227. 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' किस लेखक की रचना है?

(a) नामदास (b) वल्लभाचार्य
(c) नन्ददास (d) गोस्वामी गोकुलनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

228. गोकुलनाथ की रचना का नाम है–

(a) चौरासी वैष्णवन की वार्ता (b) भक्तमाल
(c) छिताईवार्ता (d) गोसाईचरित

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

229. ''चौरासी वैष्णवन की वार्ता'' के लेखक हैं–

(a) नाभादास (b) नन्ददास
(c) गोकुलदास (d) सूरदास

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

230. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में किस युग के लेखकों की दृष्टि व्याकरण के नियमों पर अच्छी तरह नहीं जमी थी?

(a) द्विवेदी युग (b) भारतेन्दु युग
(c) छायावाद युग (d) प्रगतिवाद युग

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, भारतेन्दु और उनके सहयोगी लेखकों की दृष्टि व्याकरण के नियमों पर अच्छी तरह जमी नहीं थी। यह कथन भारतेन्दु युग से सम्बन्धित है। इस सन्दर्भ में कहा जाता है कि वे 'इच्छा किया', 'आशा किया' ऐसे प्रयोग भी कर जाते थे और वाक्य विन्यास की सफाई पर उतना ध्यान नहीं रखते थे, पर उनकी भाषा हिन्दी ही होती थी, मुहावरे के खिलाफ प्रायः नहीं जाती थी।

231. निम्नलिखित में से कौन मार्क्सवादी विचारधारा का आलोचक नहीं है?

(a) नामवर सिंह
(b) शिवदान सिंह चौहान
(c) रामविलास शर्मा
(d) विजयदेव नारायण साही

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

विजयदेव नारायण साही मार्क्सवादी विचारधारा के आलोचक नहीं हैं। मार्क्सवादी आलोचक में सर्वप्रथम शिवदान सिंह चौहान का नाम आता है। इनके प्रमुख आलोचना ग्रन्थ हैं–प्रगतिवाद (1946), साहित्य की परख (1948), आलोचना के मान (1958), साहित्य की समस्याएँ और साहित्यानुशीलन। सर्वविख्यात मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा हैं। उनके आलोचना ग्रन्थ हैं–प्रगति और परम्परा (1948), प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ (1954), आस्था और सौन्दर्य (1956) आदि। इस वर्ग के अन्य उल्लेखनीय आलोचक हैं–अमृतराय (नयी समीक्षा), नामवर सिंह (इतिहास और आलोचना, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ)।

232. विख्यात मार्क्सवादी समीक्षक हैं–

(a) रामविलास शर्मा
(b) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) रामस्वरूप चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

233. संकलन-त्रय में कौन नहीं है?

(a) स्थान (b) काल
(c) वस्तु (d) कथानक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में नाटक के कथा-विन्यास एवं औचित्य के सम्बन्ध में तीन प्रकार के ऐक्य विधान का प्रावधान है। ये हैं—स्थान, काल तथा कार्य के ऐक्य। इसे परिभाषिक शब्दावली में 'संकलन-त्रय' कहते हैं। जो घटनाएँ नाटक में दिखाई जाएँ, उनका सम्बन्ध एक ही स्थान से हो, यह नहीं कि एक दृश्य आगरा का हो, तो दूसरा कोलकाता का। इसी को स्थान की एकता (Unity of Place) कहते हैं। जो घटना नाटक में दिखाई जाए वह वास्तव में उतने समय की हो जितना कि नाटक के अभिनय में लगता हो, इसे समय की एकता (Unity of Time) कहते हैं। कथावस्तु एक रस हो। इस एकरसता को निभाने के लिए प्रासंगिक कथाओं को स्थान नहीं मिलता। इस नियम को कार्य एकता (Unity of Action) कहते हैं। कार्य की एकता हर समय के नाटकों में एक आवश्यक तत्व रहता है, किन्तु एकता का मतलब शुष्क वैविध्यहीन एकता नहीं। समय की एकता, स्थान की एकता तथा कार्य की एकता का उल्लेख अरस्तू ने त्रासदी का विवेचन करते हुए लिखा है ''त्रासदी को यथासंभव सूर्य की एक परिक्रमा या इससे कुछ अधिक समय तक सीमित रखने का प्रयत्न किया जाता है।'' यहीं से कालान्विति का तत्व सामने आया। स्थान की एकता का तत्व कालान्विति से ही उद्भूत माना जाता है। कार्यान्विति के सम्बन्ध में अरस्तू का कथन है ''कथानक को, जो कार्यव्यापार की अनुकृति होता है—एक तथा सर्वांगपूर्ण कार्य का अनुकरण करना चाहिए और उसमें अंगों का संगठन ऐसा होना चाहिए कि यदि एक अंग को भी अपनी जगह से इधर-उधर करें, तो सर्वांग ही छिन्न-भिन्न और अस्त-व्यस्त हो जाए।'' कथानक का आरम्भ, मध्य और अन्त एक सूत्र में बंधा होना चाहिए। अतः स्पष्ट है कि संकलन-त्रय में कथानक शामिल नहीं है। इस प्रश्न के विकल्प (c) में वस्तु दिया गया है, जबकि वास्तविक रूप से कथावस्तु होना चाहिए।

234. संकलन-त्रय के अंतर्गत कौन-सा तत्व सम्मिलित नहीं है?

(a) स्थान (b) काल
(c) घटना (d) गीत

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

235. विज्ञापन के सम्बन्ध में क्या नैतिक है?

(a) शर्त को छोटे टाइप में छापना
(b) भ्रामक चित्र बनाना
(c) अधूरी जानकारी
(d) सही जानकारी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विज्ञापन के सम्बन्ध में 'सही जानकारी' देना ही नैतिकता है। जिससे उपभोक्ता उत्पादों का सही क्रय कर सकें। अन्य विकल्पों में अनैतिकता प्रदर्शित है।

236. निम्नलिखित में से कौन-सा फीचर लेखन का उद्देश्य नहीं है?

(a) मनोरंजन (b) शून्य पठनीयता
(c) ज्ञानवर्धन (d) मार्गदर्शन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

फीचर लेखन का उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञानवर्धन तथा मार्गदर्शन होता है। शून्य पठनीयता इसमें शामिल नहीं है।

237. रेडियो आलेख लिखते समय किस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए?

(a) बातचीत (b) है
(c) था (d) निम्नलिखित

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

रेडियो संचार का श्रव्य माध्यम है। अतः रेडियो आलेख लिखते समय 'निम्नलिखित' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह मुद्रण तकनीक में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। शेष रेडियो आलेख लिखते समय प्रयोग करना चाहिए।

238. टी.वी चैनलों पर कॉमर्शियल ब्रेक से तात्पर्य है—

(a) फ्रेशन्यूज (b) विज्ञापन
(c) हाई न्यूज (d) सॉफ्ट न्यूज

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विभिन्न कम्पनियाँ अपने उत्पाद के विक्रय हेतु श्रव्य-दृश्य संचार के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुँचाती हैं, जो कार्यक्रमों के प्रसारण के मध्य में कुछ समय के लिए प्रसारित की जाती है।

239. साहित्य-

1. शिवेतर रक्षते है।
2. सामान्य के लिए है।
3. सबका हित चाहता है।
4. का कार्य बिम्ब का निर्माण करना है।

(a) 1, 2 (b) 1, 2, 3
(c) 1, 3, 4 (d) 3, 4

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

काव्य निर्माण में शत-प्रतिशत कल्पना शक्ति का विशेष हाथ रहता है और यही कल्पना अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका बिम्ब निर्माण के क्षेत्र में अदा करती है। उसका महत्वपूर्ण कार्य बिम्ब प्रस्तुत करना है। शेष कथन साहित्य के बारे में सत्य हैं।

संस्कृत साहित्य

❑ संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ

1. 'कादम्बरी' किसकी रचना है?

(a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भवभूति (d) भास

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

कादम्बरी बाणभट्ट की प्रौढ़ और अंतिम कृति है। यह उनकी ही नहीं समस्त संस्कृत वाङ्मय की अनूठी गद्य-रचना है। कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड तथा वैशम्पायन के तीन जन्मों से सम्बद्ध है। कादम्बरी की कथा दो भागों में विभक्त है– पूर्व भाग तथा उत्तर भाग। पूर्व भाग बाणभट्ट की रचना है और उत्तर भाग उनके पुत्र भूषणभट्ट (पुलिनभट्ट) की।

2. 'कुवलयानन्द' के रचयिता हैं—

(a) भामह (b) दण्डी
(c) पण्डितराज जगन्नाथ (d) अप्पय दीक्षित

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

अप्पय दीक्षित (1525-1598 ई.) संस्कृत के काव्यशास्त्री, दार्शनिक और व्याख्याकार थे। 'अद्वैतवादी' होते हुए भी 'शैवमत' की ओर इनका विशेष झुकाव था। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें 'कुवलयानन्द', 'चित्रमीमांसा' इत्यादि प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ सुप्रसिद्ध वैयाकरण भट्टोजि दीक्षित इनके शिष्य थे। इनके करीब 400 ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।

➲ शंकरानुसारी अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन करने के अलावा इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र' के शैव भाष्य पर भी शिव की 'मणिदीपिका' नामक 'शैव सम्प्रदायानुसारी' टीका लिखी थी।

3. 'दशरूपकम्' के लेखक हैं—

(a) धनिक (b) धनंजय
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'दशरूपकम्' नाट्य के दशरूपों के लक्षण और उनकी विशेषताओं का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ है। अनुष्टुप श्लोकों द्वारा प्रणीत दसवीं शती का यह ग्रन्थ धनंजय की कृति है। दशरूपकम् में कुल चार अध्याय हैं जिन्हें 'आलोक' कहा गया है।

4. 'ध्वन्यालोक' किस तत्व से सम्बन्धित ग्रन्थ है?

(a) अलंकार (b) रस
(c) नाट्य (d) ध्वनि

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

आनन्दवर्धनाचार्य ने विषमबाणलीला, अर्जुनचरित, देवी शतक, तत्वालोक तथा ध्वन्यालोक नामक पाँच ग्रन्थों की रचना की। इस ग्रन्थ में काव्य के आत्मभूत 'ध्वनितत्व' का प्रतिपादन किया गया है। ग्रन्थ में चार 'उद्योत' हैं। ध्वन्यालोक में तीन भाग हैं—मूलकारिका, वृत्ति तथा उदाहरण। प्रथम दो भागों के निर्माता स्वयं आनन्दवर्धनाचार्य ही हैं, जबकि 'उदाहरण' में कुछ उदाहरण उन्होंने स्वयं अपने बनाए, जो 'विषमबाणलीला' और 'अर्जुनचरित' आदि ग्रन्थों से दिए हैं, किन्तु अधिकांश उदाहरण अन्य प्रसिद्ध कवियों के ग्रन्थों से दिए हैं। ध्वन्यालोक 'ध्वनितत्व' से सम्बन्धित है।

5. आनन्दवर्धन का सम्बन्ध इनमें से किससे है?

(a) अलंकार सम्प्रदाय (b) रीति सम्प्रदाय
(c) वक्रोक्ति सम्प्रदाय (d) ध्वनि सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रवर्तक		सम्प्रदाय
आनन्दवर्धन	-	ध्वनि सम्प्रदाय
भामह	-	अलंकार सम्प्रदाय
वामन	-	रीति सम्प्रदाय
कुन्तक	-	वक्रोक्ति सम्प्रदाय
क्षेमेन्द्र	-	औचित्य सम्प्रदाय

6. 'मुद्राराक्षस' नाटक का रचयिता कौन है?

(a) कुमारदास (b) शूद्रक
(c) अमर सिंह (d) विशाखदत्त

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

मुद्राराक्षस संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है, जिसके रचयिता विशाखदत्त हैं। इस नाटक में इतिहास और राजनीति का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ के चरित्र-चित्रण में विशेष निपुणता का प्रदर्शन मिलता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ विशाखदत्त की दो और रचनाएँ हैं—देवीचन्द्रगुप्त तथा अभिसारिकावंचितक।

➲ विशाखदत्त के इस नाटक में चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य सम्बन्धी ख्यात वृत्त के आधार पर चाणक्य की राजनीतिक सफलताओं का अपूर्व विश्लेषण मिलता है।

➲ इस महत्वपूर्ण नाटक को हिन्दी में सर्वप्रथम अनूदित करने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को प्राप्त है।

➲ मुद्राराक्षस में साहित्य और राजनीति के तत्वों का मणि-कांचन-योग मिलता है, जिसका कारण सम्भवत: यह है कि विशाखदत्त का जन्म राजकुल में हुआ था। वे सामन्त बटेश्वरदत्त के पौत्र और महाराज पृथु के पुत्र थे।

7. 'मुद्राराक्षस' किसकी नाट्य कृति है?

(a) कालिदास (b) भारवि

(c) भवभूति (d) विशाखदत्त

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. श्रीहर्ष के पिता का नाम बताइये?

(a) सुधीर (b) सुशील

(c) हरि (d) कृष्ण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर और माता का नाम मामल्ल देवी था। कन्नौज के राजा जयन्तचन्द्र (प्रचलित नाम जयचन्द) उनके आश्रयदाता थे। हर्ष के पिता श्रीहीर को प्रसिद्ध नैयायिक आचार्य उदयन ने शास्त्रार्थ में हराया था। प्रश्न विकल्प में हरि दिया है, जबकि वास्तव में श्रीहीर है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) माना है।

9. श्रीहर्ष का ग्रन्थ है—

(a) हितहरिवंश (b) नैषध काव्य

(c) राजतरंगिणी (d) मेघदूत

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है। हालांकि प्रश्न विकल्प में 'नैषध-काव्य' दिया है, किन्तु वास्तविक रचना नैषधीयचरितम् ही है। श्रीहर्ष की अन्य रचनाएँ हैं– स्थैर्यविचारप्रकरण, श्रीविजयप्रशस्ति, खण्डनखण्डखाद्य, गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णववर्णन, छिन्दप्रशस्ति, शिवशक्तिसिद्धि, नवसाहसांकचरितचम्पू। राजतरंगिणी कल्हण की रचना है, जबकि मेघदूत कालिदास की रचना है।

10. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना श्रीहर्ष की नहीं है?

(a) शिशुपालवध (b) अर्णववर्णन

(c) छिन्दप्रशस्ति (d) नवसाहसांकचरितचम्पू

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'नवसाहसांकचरितचम्पू' कृति के रचनाकार हैं—

(a) श्रीहर्ष (b) दण्डी

(c) भास (d) बाणभट्ट

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से कृति और उसके रचनाकार का एक युग्म गलत है, वह है—

(a) स्वप्नवासवदत्ता-भासद्ध

(b) हर्षचरित-बाणभट्ट

(c) दशकुमारचरित-दण्डी

(d) नवसाहसांकचरितचम्पू-राजशेखर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'नवसाहसांकचरित चम्पू' काव्यकृति के रचनाकार हैं—

(a) दण्डी (b) भारवि

(c) श्रीहर्ष (d) अश्वघोष

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'नैषधीयचरितम्' रचना के लेखक का नाम बताइये?

(a) श्रीहर्ष (b) दण्डी

(c) भास (d) भवभूति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए औषधि माना गया है?

(a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्

(c) रघुवंशम् (d) नैषधीयचरितम्

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है। यह महाकाव्य की बृहत्त्रयी में गिना जाता है। इसमें कुल 22 सर्ग स्वीकार किए गए हैं। श्रीहर्ष के प्रौढ़ पाण्डित्यपूर्ण काव्य ने पण्डितविद्वत्मण्डली में यह कहने के लिए बाध्य कर दिया कि 'नैषधं विद्वदौषधम्' अर्थात् नैषध विद्वानों के लिए औषध है।

16. 'उज्ज्वलनीलमणि' रचना है—

(a) जीवगोस्वामी (b) रूपगोस्वामी

(c) भवभूति (d) इनमें से कोई नहीं

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'उज्ज्वलनीलमणि' के रचनाकार रूपगोस्वामी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार से हैं- 'हंसदूत' काव्य, 'उद्धव सन्देश' काव्य, भक्तिरसामृतसिन्धु, 'विदग्धमाधव' नाटक, 'ललितमाधव' नाटक, 'दानकेलिकौमुदी' भाणिका, 'नाटकचन्द्रिका' ये आठ ग्रन्थ विशेष महत्वपूर्ण हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ रूपगोस्वामी वृन्दावन की विभूति हैं।
➲ 'भक्तिरसामृतसिन्धु' तथा 'उज्ज्वलनीलमणि' ये दोनों ग्रन्थ रस विषय पर हैं।
➲ ये चैतन्य महाप्रभु के शिष्य प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य हैं।

17. 'उज्ज्वलनीलमणि' किसका ग्रन्थ है?

(a) रूपगोस्वामी (b) विश्वनाथ
(c) वात्स्यायन (d) केशव मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. राजतरंगिणी किस कवि की रचना है?

(a) कल्हण (b) बिल्हण
(c) आचार्य हेमचन्द्र (d) क्षेमेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

राजतरंगिणी कवि कल्हण की रचना है। इतिहास लेखन के विकास के लिए राजतरंगिणी ने कश्मीरी लेखकों के लिए प्रेरणास्रोत का भी काम किया, क्योंकि हमें ज्ञात है कि कल्हण की राजतरंगिणी के बाद कम-से कम तीन राजतरंगिणियों का प्रणयन इसी परम्परा में हुआ, जिसका श्रेय क्रमशः जोनराज, श्रीवर तथा संयुक्त रूप से प्राज्यभट्ट तथा शुक को जाता है और जो कल्हणकृत राजतरंगिणी के 'पारम्परिक नैरंतर्य' का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है।

19. 'कविकण्ठाभरण' के रचनाकार हैं -

(a) दण्डी (b) क्षेमेन्द्र
(c) केशव मिश्र (d) धनंजय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

'कविकण्ठाभरण' के रचनाकार क्षेमेन्द्र हैं। इस रचना में कवि-शिक्षा के विषय में लिखा गया है। इसमें पांच संधि या अध्याय है और 55 कारिकाएं हैं। इसमें कवित्वप्राप्ति के उपाय, कवियों के भेद, काव्य के गुण-दोष का विवेचन संक्षेप में, परंतु सुबोध रीति से किया गया है। 'औचित्य-विचार-चर्चा' एवं कविकर्णिका' इनके अन्य ग्रंथ हैं।

20. 'चन्द्रालोक' के रचनाकार हैं-

(a) विश्वनाथ (b) राजशेखर
(c) दण्डी (d) जयदेव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जयदेव प्रणीत 'चन्द्रालोक', प्रसन्नराघव और गीतगोविन्द ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं। 'चन्द्रालोक' में 10 मयूख हैं। 'गीतगोविन्द' में उन्होंने अपने आश्रयदाता लक्ष्मणसेन तथा अपने सहयोगी पञ्चरत्नों का परिचय दिया हैं— आर्यासप्तशतीकार गोवर्धनाचार्य, जयदेव, शरणकवि, उमापति और कविराज। राजा लक्ष्मणसेन के सभा भवन के द्वार पर 'सभा रत्नों' के नाम शिलापट्ट पर एक श्लोक के रूप में निम्नलिखित प्रकार अंकित था—
गोवर्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य तु।।
'चन्द्रालोक' एवं 'प्रसन्नराघव' नाटक में अपने माता-पिता का परिचय दिया हैं, उनके पिता का नाम महादेव और माता का नाम सुमित्रा था।

21. 'गीतगोविन्द' के रचयिता हैं—

(a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भारवि (d) जयदेव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. इनमें से कौन-सी एक रचना महाकाव्य नहीं है?

(a) प्रसन्नराघव (b) शिशुपालवध
(c) कुमारसंभव (d) किरातार्जुनीय

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'प्रसन्नराघव' जयदेव का नाटक है, शेष महाकाव्य हैं।

23. इनमें से सही अनुक्रम कौन-सा है?

(a) काव्यानुशासन, साहित्य दर्पण, रस मंजरी, रस गंगाधर
(b) साहित्य दर्पण, काव्यानुशासन, रस गंगाधर, रस मंजरी
(c) रस मंजरी, साहित्य दर्पण, रस गंगाधर, काव्यानुशासन
(d) काव्यानुशासन, साहित्य दर्पण, रस गंगाधर, रस मंजरी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

सही अनुक्रम इस प्रकार से हैं— काव्यानुशासन (हेमचन्द्र : 1080 ई. से 1172 ई.), साहित्य दर्पण (कविराज विश्वनाथ : चौदहवीं शताब्दी), रसमंजरी (भानुदत्त : 14वीं शताब्दी), रस गंगाधर (पण्डितराज जगन्नाथ : 1600 ई. से 1660 ई.)।

24. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. ऋतुसंहारम्
B. भवभूति	2. दशकुमारचरितम्
C. दण्डी	3. नैषधीयचरितम्
D. बाणभट्ट	4. उत्तररामचरितम्
E. श्रीहर्ष	5. कादम्बरी

कूट :

	A	B	C	D	E
(a)	1	4	2	5	3
(b)	2	3	4	5	1
(c)	1	4	3	2	5
(d)	4	1	5	3	2

P.G.T. परीक्षा, 2009

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
कालिदास	-	ऋतुसंहारम्
भवभूति	-	उत्तररामचरितम्
दण्डी	-	दशकुमारचरितम्
बाणभट्ट	-	कादम्बरी
श्रीहर्ष	-	नैषधीयचरितम्

25. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. स्वप्नवासवदत्तम्
B. भास	2. मेघदूतम्
C. मम्मट	3. साहित्यदर्पण
D. विश्वनाथ	4. काव्यप्रकाश

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	3	4	1	2
(d)	4	3	2	1

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
कालिदास	-	मेघदूतम्
भास	-	स्वप्नवासवदत्तम्
मम्मट	-	काव्यप्रकाश
विश्वनाथ	-	साहित्यदर्पण

26. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही विकल्प चुनिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. मालतीमाधवम्
B. भवभूति	2. दशकुमारचरितम्
C. दण्डी	3. नैषधीयचरितम्
D. श्रीहर्ष	4. मालविकाग्निमित्रम्

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	3	2	4	1
(c)	4	1	2	3
(d)	1	3	2	4

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
कालिदास	-	मालविकाग्निमित्रम्
भवभूति	-	मालतीमाधवम्
दण्डी	-	दशकुमारचरितम्
श्रीहर्ष	-	नैषधीयचरितम्

27. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I (कृति)	सूची-II (लेखक)
A. दशकुमारचरितम्	1. श्रीहर्ष
B. नैषधीयचरितम्	2. भवभूति
C. उत्तररामचरितम्	3. दण्डी

कूट :

	A	B	C
(a)	1	2	3
(b)	3	2	1
(c)	3	1	2
(d)	2	1	3

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I (कृति)		सूची-II (लेखक)
दशकुमारचरितम्	-	दण्डी
नैषधीयचरितम्	-	श्रीहर्ष
उत्तररामचरितम्	-	भवभूति

28. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. दशकुमारचरितम्
B. माघ	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
C. भवभूति	3. शिशुपालवधम्
D. दण्डी	4. उत्तररामचरितम्

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	1	2	4
(d)	4	2	3	1

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है–

सूची-I		सूची-II
कालिदास	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
माघ	-	शिशुपालवधम्
भवभूति	-	उत्तररामचरितम्
दण्डी	-	दशकुमारचरितम्

भास

1. निम्नलिखित में से कौन भास द्वारा रचित नाटक नहीं है?

(a) मृच्छकटिकम् (b) ऊरुभंगम्
(c) दूतवाक्यम् (d) मध्यम व्यायोग

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

संस्कृत नाटककारों में भास का नाम उल्लेखनीय है। भास, कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। भास, लौकिक संस्कृत के प्रथम साहित्यकार थे। सबसे पहले वर्ष 1909 में गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की थी, जो इस प्रकार हैं–प्रतिमानाटकम्, अभिषेक, पंचरात्र, मध्यम व्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्यम्, ऊरुभंग, बालचरित, चारूदत्त, अविमारक, प्रतिज्ञायौगन्ध-रायण, स्वप्नवासवदत्तम्।

2. इसमें से भास की कृति है -

(a) बालभारत (b) बालचरित (c) नैषधचरित (d) नागानंद

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'प्रतिमानाटकम्' के रचयिता हैं—

(a) शूद्रक (b) भास (c) कालिदास (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. भास की रचना है—

(a) विक्रमोर्वशीय (b) मृच्छकटिकम्
(c) रत्नावली (d) प्रतिमानाटकम्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. इनमें से कौन-सा नाटक भास का नहीं है?

(a) प्रतिमानाटकम् (b) ऊरुभंग
(c) दूतवाक्यम् (d) मालविकाग्निमित्रम्

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

(a) कालिदास (b) भास
(c) भवभूति (d) व्यास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. इनमें से महाकवि भास की रचना है—

(a) कर्पूरमंजरी (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) मालविकाग्निमित्र (d) मालतीमाधव

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. निम्नलिखित में से एक कृति भास रचित नहीं है-

(a) प्रतिमानाटकम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (d) महाभाष्यम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'महाभाष्यम्' भास की कृति नहीं है, जबकि शेष रचनाएँ भास की हैं। महाभाष्यकार पतंजलि (150 ई.पू.) ने भी इसी शृंखला में 'महानन्द-काव्य' लिखा है। समुद्रगुप्त ने 'कृष्णचरित' की प्रस्तावना में लिखा है कि पतंजलि ने योगशास्त्र की व्याख्या के रूप में 'महानन्द' नामक काव्य लिखा है।

9. कौन-सा नाटक भास का नहीं है?

(a) स्वप्नवासवदत्तम् (b) प्रतिज्ञा
(c) प्रतिमानाटकम् (d) मुद्राराक्षस

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भास का नाटक 'मुद्राराक्षस' नहीं है। यह विशाखदत्त की प्रथम रचना है। शेष रचना भास की हैं। भाष द्वारा रचित कुल 13 नाटक हैं। जिसमें दो रामकथाश्रित नाटक- 1. प्रतिमानाटकम्, 2. अभिषेक तथा सात महाभारतकथाश्रित नाटक–(1) उरुभङ्गम (2) दूतवाक्यं, (3) पंचरात्रम् (4) दूतघटोत्कच (5) कर्णभार (6) मध्यम व्यायोग (7) बाल चरित्र तथा दो लोककथाश्रित नाटक-(1) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (2) स्वप्नवासवदत्तम तथा इसके अतिरिक्त दो कल्पनाश्रित नाटक (1) अविमारक (2) चारुदत्तम् की रचना की है।

कालिदास

1. **महाकवि कालिदास किस अलंकार के लिए प्रसिद्ध हैं?**
   (a) उपमा (b) श्लेष
   (c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक
   T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(a)

महाकवि कालिदास उपमा अलंकार के लिए प्रसिद्ध हैं। यह इस उक्ति से स्पष्ट होता है—
उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।।
अर्थात् कालिदास उपमा के लिए, भारवि अर्थगौरव के लिए, दण्डी पदलालित्य के लिए तथा माघ इन तीनों (उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य) गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. **निम्नलिखित में से कौन कवि कालिदास के पूर्ववर्ती हैं?**
   (a) भारवि (b) भास
   (c) दण्डी (d) भवभूति
   P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

भारतीय नाटककारों में सबसे प्राचीन रचनाएँ महाकवि भास की प्राप्त होती है। तत्पश्चात शूद्रक, कालिदास, अश्वघोष, हर्ष, भवभूति आदि के नाटक हैं। अतः स्पष्ट है कि भास कालिदास के पूर्ववर्ती हैं।

3. **'रघुवंशम्' किसकी रचना है?**
   (a) व्यास (b) भरतमुनि
   (c) कालिदास (d) चाणक्य
   T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कालिदास रचित 'रघुवंशम्' एक चरित्र महाकाव्य है। यह उन्नीस सर्गों में विभक्त है। इसमें मनु से लेकर सूर्यवंशी दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम आदि सहित कुल 31 राजाओं के जीवन का वर्णन है। इसी प्रकार इन्दुमती, सीता, कुमुद्वती आदि रानियों का भी वर्णन है। इस रचना के वैशिष्ट्य के कारण ही कवियों और आलोचकों को कहना पड़ा है कि 'क इह रघुकारे न रमते'। व्यास द्वारा वेद, भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र तथा चाणक्य द्वारा अर्थशास्त्र की रचना की गई।

4. **'रघुवंशम्' के रचयिता हैं—**
   (a) कालिदास (b) बाण
   (c) भवभूति (d) माघ
   G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **संस्कृत के निम्नलिखित ग्रन्थों में कौन-सा ग्रन्थ 'नाटक' नहीं है?**
   (a) उभयामिसारिका (b) रघुवंशम्
   (c) मालतीमाधव (d) वेणीसंहार
   G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **कालिदास की रचना 'रघुवंशम्' है—**
   (a) एक खण्ड काव्य (b) एक मुक्तक काव्य
   (c) एक गीति काव्य (d) एक महाकाव्य
   T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **'रघुवंशम्' महाकाव्य में सर्ग हैं—**
   (a) अट्ठारह (b) उन्नीस
   (c) बीस (d) इक्कीस
   P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **कालिदास की प्रथम काव्यकृति है—**
   (a) मेघदूत (b) ऋतुसंहार
   (c) रघुवंश (d) नैषध
   आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

कालिदास की प्रथम काव्य कृति ऋतुसंहार है। इसमें 6 सर्ग और 144 श्लोक हैं। इन 6 सर्गों में 6 ऋतुओं का क्रमशः वर्णन हैं-ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और बसन्त। संस्कृत साहित्य में केवल यही ग्रन्थ है, जिसमें 6 ऋतुओं का पूरे विवरण के साथ वर्णन है। कवि की प्रथम काव्यकृति होने पर भी ऋतुसंहार में कुछ मनोरम पद्य, रमणीय कल्पनाएँ और सुन्दर पद-शय्या मिलती हैं।

9. **इनमें से कालिदास की प्रथम काव्यकृति है -**
   (a) रघुवंश (b) मेघदूत
   (c) कुमारसम्भव (d) ऋतुसंहार
   G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **निम्नलिखित में से कौन-सी रचना लघुत्रयी में नहीं आती है?**
    (a) रघुवंशम् (b) कुमारसम्भवम्
    (c) मेघदूतम् (d) ऋतुसंहार
    P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

कालिदास द्वारा रचित रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् तथा मेघदूतम् 'लघुत्रयी' के नाम से जाने जाते हैं। ऋतुसंहार लघुत्रयी के अन्तर्गत नहीं आती है। इसमें 6 सर्ग और लगभग 144 श्लोक हैं। इसमें ग्रीष्म से बसन्त तक छह ऋतुओं का सुन्दर चित्रण है और मानवीय प्रेम एवं नैसर्गिक सुषमा का सुन्दर समन्वय किया गया है।

11. संस्कृत का महाकाव्य 'कुमारसम्भव' किसकी रचना है?

(a) भारवि (b) कालिदास
(c) भवभूति (d) भरतमुनि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्न में कौन-सा ग्रन्थ कालिदास प्रणीत है?

(a) उत्तररामचरितम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) मुद्राराक्षस

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कालिदास प्रणीत 'मालविकाग्निमित्रम्' प्रथम नाटक है। इसमें पाँच अंकों में मालविका और अग्निमित्र के प्रणय तथा विवाह का वर्णन है। 'उत्तररामचरितम्' भवभूति का अन्तिम सर्वश्रेष्ठ नाटक है। 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक का एवं 'मुद्राराक्षस' विशाखदत्त द्वारा रचित है।

13. 'मृच्छकटिकम्' के रचयिता का नाम है—

(a) भास (b) शूद्रक (c) कालिदास (d) भारवि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

(a) कालिदास (b) भवभूति (c) भास (d) भारवि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. कालिदास की किस रचना को 'दूतकाव्य' माना जाता है?

(a) अभिज्ञानशाकुंतलम् (b) विक्रमोर्वशीयम्
(c) मेघदूतम् (d) मालविकाग्निमित्रम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'मेघदूतम्' महाकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात 'दूतकाव्य' है। 'मेघदूतम्' काव्य दो खंडों में विभक्त है – पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ।

16. 'बृहत्त्रयी' में कौन-सा महाकाव्य नहीं आता है?

(a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्यों की गणना की जाती है। ये महाकाव्य हैं– भारवि प्रणीत–किरातार्जुनीयम्, माघ प्रणीत–शिशुपालवधम् तथा श्रीहर्ष प्रणीत–नैषधीयचरितम्। कालिदास प्रणीत महाकाव्य 'कुमारसम्भवम्', रघुवंशम् तथा मेघदूतम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं, बल्कि लघुत्रयी के अन्तर्गत आते हैं।

17. बृहत्त्रयी में कौन-सा महाकाव्य नहीं आता है?

(a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) रघुवंशम्

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना कालिदास की नहीं है?

(a) मेघदूतम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) दशकुमारचरितम् (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है। जिसमें 8 उच्छ्वास हैं। काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरी कथा, छन्दोविचित, कलापरिच्छेद और द्विसन्धानकाव्य दण्डी की रचनाएँ हैं, जबकि मेघदूतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् ऋतुसंहार, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम् कालिदास की प्रमुख रचना है।

19. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

(a) भवभूति (b) भास
(c) कालिदास (d) भारवि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है?

(a) ऋतुसंहार (b) कुमारसम्भव
(c) बुद्धचरित (d) रघुवंश

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

कालिदास की रचना 'बुद्धचरित' नहीं, बल्कि यह अश्वघोष का एक महाकाव्य है, इसमें बुद्ध का जीवन चरित तथा उनके सिद्धान्त का उल्लेख है। इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। शेष रचना कालिदास की हैं।

21. इनमें से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है?

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मालविकाग्निमित्रम्
(c) विक्रमोर्वशीयम् (d) प्रतिमानाटकम्

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

प्रतिमानाटकम् भास की रचना है, शेष रचनाएँ कालिदास की हैं।

22. निम्नलिखित में से एक रचना कालिदास की नहीं है—

(a) ऋतुसंहार (b) मेघदूत
(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (d) नैषधीयचरित

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

कालिदास की रचना नैषधीयचरित नहीं है। यह श्रीहर्ष की रचना है। शेष रचनाएँ कालिदास की हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति कालिदास कृत नहीं है?

(a) कुमारसम्भवम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) उत्तररामचरितम् (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

उत्तररामचरितम् भवभूति की कृति है। यह करुण रस प्रधान नाटक है। इसमें 7 अंकों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। शेष कृतियाँ कालिदास की हैं।

भवभूति

1. भवभूति का मूल नाम क्या था?

(a) श्रीपति (b) दामोदर (c) श्रीकण्ठ (d) नीलकंठ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(c)

भवभूति का मूल नाम 'श्रीकण्ठ' था। ये कवि रूप में भवभूति के नाम से विख्यात हुए। भवभूति की पाँचवीं पीढ़ी (अर्थात् पितामह के पितामह) का नाम 'महाकवि' था। इनके पितामह का नाम भट्टगोपाल था। भवभूति के पिता का नाम नीलकण्ठ तथा माता का नाम 'जतुकर्णी' था। कुछ विद्वान् इनकी माता का नाम 'जातूकर्णी' मानते हैं। भवभूति को 'श्रीकण्ठपदलाञ्छन' कहा गया है। भवभूति पदवाक्यप्रमाणज्ञ थे। इसका अभिप्राय यह है कि वे पद (व्याकरण), वाक्य (न्यायशास्त्र) और प्रमाण (मीमांसा दर्शन) के महाविद्वान् थे। इनके गुरु का नाम 'ज्ञाननिधि' था, जो कि यथार्थ नाम वाले थे।

2. 'मालतीमाधव' के रचनाकार हैं–

(a) भारवि (b) कालिदास (c) श्रीहर्ष (d) भवभूति

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

भवभूति द्वारा विरचित 'मालतीमाधव' शृंगार रस प्रधान नाटक है। यह 10 अंकों का प्रकरण रूपक है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।

3. 'मालतीमाधव' किसकी रचना है?

(a) भास की (b) भरतमुनि की
(c) भारवि की (d) भवभूति की

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'मालतीमाधव' रचना के लेखक का नाम बताइये–

(a) भवभूति (b) कालिदास (c) भास (d) श्रीहर्ष

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. कौन-सी कृति भवभूति की नहीं है?

(a) महावीरचरित (b) मालतीमाधव
(c) उत्तररामचरित (d) कर्पूरमंजरी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(d)

भवभूति की रचना 'कर्पूरमंजरी' नहीं है। राजशेखर प्रणीत 'कर्पूरमंजरी' चार अंकों का 'सट्टक' नामक रूपक है। सट्टक की भाषा प्राकृत होती है। शेष रचना भवभूति की हैं।

6. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक का सम्बन्ध किससे है?

(a) वाल्मीकि के आश्रम से (b) अयोध्या से
(c) सरयू के तट से (d) पंचवटी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक का सम्बन्ध पंचवटी से है। उत्तररामचरितम् भवभूति का सबसे प्रसिद्ध नाटक है। इसमें कुल सात अंक हैं तथा राम कथा का वर्णन किया गया है। प्रथम अंक की घटनाओं का स्थान अयोध्या है। द्वितीय अंक का स्थान दण्डकारण्य का जनस्थान नामक प्रदेश है जबकि तृतीय अंक का सम्बन्ध दण्डकारण्य का पंचवटी प्रदेश से है चतुर्थ, पंचाम, षष्ठ एवं सप्तम् अंक का सम्बान्ध वाल्मीकि के आश्रम से है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

अंक	अंक का नाम
➲ प्रथम अंक	चित्रदर्शन
➲ द्वितीय अंक	पंचवटी प्रवेश
➲ तृतीय अंक	छाया
➲ चतुर्थ अंक	कौशल्या-जनक मिलन
➲ पंचम् अंक	कुमार विक्रम
➲ षष्टम् अंक	कुमार प्रत्यभिज्ञान
➲ सप्तम् अंक	सम्मेलन (गर्भांक)

7. भवभूति की रचना का नाम है–

(a) उत्तररामचरितम् (b) उत्तररामायण
(c) रामचरित (d) हर्षचरितदर्शन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(a)

भवभूति द्वारा प्रणीत 'उत्तररामचरितम्' करुण रस प्रधान नाटक है। इसमें 7 अंकों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। महावीरचरितम् और उत्तररामचरितम् में कवि ने अपने आपको 'वश्यवाक्' और 'परिणतप्रज्ञ' कहा है।

8. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना भवभूति की है?

(a) उत्तररामचरितम् (b) कादम्बरी
(c) किरातार्जुनीयम् (d) नैषधीयचरितम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. भवभूति की रचना है—

(a) मृच्छकटिकम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) उत्तररामचरितम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'उत्तररामचरितम्' के रचनाकार हैं—

(a) वाल्मीकि (b) भारवि
(c) श्रीहर्ष (d) भवभूति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. संस्कृत के किस कवि ने 'एको रसः करुण एव' कहकर करुण रस को रसराज घोषित किया?

(a) कालिदास (b) भवभूति
(c) माघ (d) भास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

भवभूति द्वारा विरचित उत्तररामचरितम् के तृतीय अंक में वर्णित 47वें श्लोक के माध्यम से भवभूति स्पष्ट रूप से इसे करुण रस नाटक मानते हैं। इतना ही नहीं वह करुण रस को अन्य रसों का आधारभूत मानते हैं। उनके मतानुसार, करुण रस ही रूपान्तरित होकर श्रृंगार, वीर आदि रसों के रूप में परिणत है। सर्वत्र रसों की आत्मा के रूप में करुण रस है। करुण रस प्रकृति है और श्रृंगार रस आदि विकृति है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भवभूति ने करुण रस को रसराज घोषित किया।

12. 'करुण रस' को एकमात्र रस किसने माना?

(a) भरतमुनि (b) भवभूति
(c) मम्मट (d) आचार्य विश्वनाथ

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'करुण' के रसराजत्व का प्रतिष्ठापक ग्रन्थ है—

(a) किरातार्जुनीयम् (b) मेघदूतम्
(c) उत्तररामचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'करुण' रस राजत्व की प्रतिष्ठापना उत्तररामचरितम् ग्रन्थ के द्वारा की गई है। भवभूति ने तीन नाटक लिखे हैं—मालतीमाधवम् (श्रृंगार रस प्रधान), महावीरचरितम् (वीर रस प्रधान), उत्तररामचरितम् (करुण रस प्रधान), लेकिन उनमें से उत्तररामचरित के बारे में कहा गया है—उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते (उत्तररामचरित में भवभूति कालिदास से विशिष्ट हो गए हैं)। इनके तीनों नाटकों में विदूषक का सर्वथा अभाव है। साहित्य शास्त्र के नौ रसों में करुण रस एक है। भवभूति ने उत्तररामचरित में करुण रस को अपूर्व प्रतिष्ठा दिलाकर उसे सभी रसों का मूल स्रोत बना दिया।

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान् ।
आवर्तबुद्बुद्तरङ्गमयान्विकारा नम्भो यथा, सालिलमेव हि तत्समस्तम्।।

अर्थात् रस तो एक ही है—करुण, जो भिन्न-भिन्न प्रयोजनों से पृथक-पृथक परिणामों (रसों) का आश्रय लेता है। जैसे वही जल, भँवर, बुलबुला और लहर जैसे अनेक रूपों को प्राप्त होकर भी रहता जल ही है।

14. 'एको रसः करुण एव' किस कवि की उक्ति है?

(a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भवभूति (d) माघ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'एको रसः करुण एव' किसका कथन है?

(a) विश्वनाथ (b) भवभूति
(c) भारवि (d) जयदेव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'करुण के रसराजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई?

(a) रघुवंशम् (b) उत्तररामचरितम्
(c) प्रतिमानाटकम् (d) किरातार्जुनीयम्

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'उत्तररामचरितम्' का प्रधान रस क्या है?

(a) करुण (b) श्रृंगार (c) वीर (d) शान्त

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भारवि

1. 'भारवि' की माता का क्या नाम था?

(a) सुशीला (b) गीता
(c) सुनीता (d) मीता

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

भारवि के माता का नाम सुशीला तथा पिता का नाम श्रीधर था। उनकी पत्नी का नाम रसिकवती या रसिका था। उनका वास्तविक नाम दामोदर था और 'भारवि' उनकी उपाधि थी।

2. **निम्नलिखित में से कौन कवि 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं?**
(a) भारवि (b) भास (c) कालिदास (d) श्रीहर्ष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

महाकवि भारवि 'अर्थगौरव' शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं। भारवि के महाकाव्य का सर्वश्रेष्ठ वैशिष्ट्य उनका अर्थगाम्भीर्य है, जिसका तात्पर्य है–अल्प शब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश। इसीलिए यह कथन युक्ति संगत है कि–
उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।।

3. **'सहसा विदधीत न क्रियाम्' इस सूक्ति से युक्त रचना है—**
(a) शिशुपालवधम् (b) किरातार्जुनीयम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'सहसा विदधीत न क्रियाम्' (अचानक कार्य न करें) प्रस्तुत श्लोकांश महाकवि भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का 30वां श्लोक है। यह भारवि का अति प्रिय श्लोक था, उन्होंने अपने शयनकक्ष में इसे लगा रखा था।

4. **'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है—**
(a) लक्ष्मी (b) विभु (c) शिव (d) श्री

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'किरातार्जुनीयम्' महाकवि भारवि प्रणीत एक महाकाव्य है। इसमें कुल 18 सर्ग और 1040 श्लोक हैं। इसकी कथावस्तु को महाभारत के वनपर्व से लिया गया है। किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ महाराज युधिष्ठिर द्वारा भेजे गए एक गुप्तचर के आगमन से प्रारम्भ होता है, जो कि ब्रह्मचारी वेश धारण किए हुए हैं। इसमें अर्जुन और 'किरात' वेशधारी शिव के बीच युद्ध का वर्णन हैं। अन्ततोगत्वा शिव प्रसन्न होकर अर्जुन को 'पाशुपतास्त्र' प्रदान करते हैं। वस्तुतः भारवि संस्कृत काव्यों में रीति शैली के जन्मदाता हैं। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में 'श्री' शब्द तथा प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग उसकी प्रमुख विशेषता है।

5. **इनमें से कौन-सी रचना भारवि की है?**
(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) रघुवंश महाकाव्यम्
(c) दशकुमार चरितम् (d) किरातार्जुनीयम्

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **'किरातार्जुनीयम्' के रचनाकार हैं—**
(a) राजशेखर (b) श्रीहर्ष (c) भारवि (d) माघ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **निम्नलिखित कृतियों में से कौन-सी भारवि द्वारा रचित है?**
(a) शिशुपालवधम् (b) कुमारसम्भवम्
(c) किरातार्जुनीयम् (d) नैषधीयचरितम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस है—**
(a) वीर रस (b) शृंगार रस
(c) करुण रस (d) शान्त रस

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर रस है।

9. **किस कवि की वाणी 'नारिकेल फल' के समान है?**
(a) घटकर्पर (b) भर्तृहरि (c) कालिदास (d) भारवि

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भारवि की रचना की उपमा नारियल के फल से की है; जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि भारवि की वाणी 'नारिकेल फल' के समान है।

माघ

1. **काव्य-रचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किये जाते हैं?**
(a) सत्व, रज, तम (b) ओज, प्रसाद, माधुर्य
(c) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य (d) गौड़ी, वैदर्भी, पांचाली

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

महाकवि माघ द्वारा प्रणीत 'शिशुपालवधम्' बृहत्त्रयी के अन्तर्गत द्वितीय रत्न है। यह महाभारत के 'सभा पर्व' से लिया गया है। काव्य रचना की दृष्टि से महाकवि माघ 'उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य' तीनों गुणों से विभूषित स्वीकार किए जाते हैं। इसीलिए यह कथन युक्तिसंगत है कि–
उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।।
अर्थात् कालिदास की उपमा, भारवि का अर्थगौरव तथा दण्डी का पदलालित्य इन तीनों गुणों का एकत्र सन्निवेश बताया गया। माघ की विशेषता यह है कि उसने तीनों गुणों का मणि-कांचन-संयोग प्रस्तुत किया।

2. **काव्य-रचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किए जाते हैं?**
(a) सत्व, रज, तम (b) ओज, प्रसाद, माधुर्य
(c) गौड़ी, वैदर्भी, पांचाली (d) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **उपमा, पदलालित्य और अर्थगौरव की दृष्टि से एक साथ तीनों गुणों से युक्त कौन-सा संस्कृत-कवि प्रसिद्ध है?**
(a) कालिदास (b) भारवि (c) दण्डी (d) माघ
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' के अनुसार, माघ कवि में समाविष्ट तीनों गुण क्रमशः किन तीन कवियों में है—**
(a) कालिदास, भारवि, दण्डी (b) कालिदास, श्रीहर्ष, दण्डी
(c) कालिदास, भास, दण्डी (d) भारवि, भास, कालिदास
G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **'शिशुपालवध' के रचनाकार का नाम है—**
(a) भामह (b) भारवि (c) कुन्तक (d) माघ
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

'शिशुपालवध' के रचनाकार माघ हैं। शिशुपालवध में 20 सर्ग हैं, यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें देवर्षि नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्व जन्म का विवरण देते हुए उसके अत्याचारों का उल्लेख, श्रीकृष्ण से उसके संहार की प्रार्थना, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ पहुँचना, शिशुपाल का अभद्र व्यवहार और क्रुद्ध श्रीकृष्ण द्वारा उसका वध करना वर्णित है। शिशुपालवध में वंशस्थ छन्द है।

6. **'शिशुपालवध' किसकी रचना है?**
(a) माघ (b) भारवि (c) श्री हर्ष (d) बाण
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **'शिशुपालवध' के लेखक का नाम बताइये?**
(a) माघ (b) कालिदास (c) हर्ष (d) भास
T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **'शिशुपालवध' रचना के लेखक का नाम बताइये?**
(a) माघ (b) कालिदास (c) श्रीहर्ष (d) भवभूति
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **निम्नलिखित में से माघ विरचित कृति है-**
(a) बुद्धचरितम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) रघुवंशम् (d) शिशुपालवधम्
U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. **संस्कृत के किस कवि के लिए 'घण्टा' विशेषण प्रयुक्त हुआ है?**
(a) बाणभट्ट (b) माघ (c) भारवि (d) श्रीहर्ष
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

महाकवि माघ द्वारा विरचित शिशुपालवधम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत द्वितीय रत्न है। माघ ने अपनी अपूर्व कल्पना का परिचय देते हुए निदर्शना अलंकार का उपयोग करते हुए चतुर्थ सर्ग में रैवतक पर्वत के एक ओर सूर्योदय और दूसरी ओर चन्द्रास्त को देखकर महाकाय हाथी के दोनों ओर लटकते हुए दो विशाल घण्टों की कल्पना की है। इस कल्पना की उत्कृष्टता के आधार पर माघ का नाम ही 'घण्टामाघ' पड़ गया।

दण्डी

1. **संस्कृत काव्य में पदलालित्य के लिए किसकी प्रसिद्धि सर्वाधिक है?**
(a) कालिदास (b) माघ (c) भारवि (d) दण्डी
T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(d)

महाकवि दण्डी संस्कृत साहित्य में अपने पदलालित्य के लिए विख्यात हैं। इनकी शैली समास रहित एवं प्रसाद गुण से युक्त है। उनके पात्र सांसारिक प्राणी हैं, जो सीधी और सरल भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा में कहीं भी दुर्बोधता नहीं आने पायी है। दण्डी की शैली की विशेषताएँ हैं–1. अर्थ की स्पष्टता, 2. पद-लालित्य, 3. शब्दों के दिन-प्रतिदिन की क्षमता तथा 4. रस की सुन्दर अभिव्यक्ति। इन विशेषताओं के कारण कुछ विद्वान् दण्डी को वाल्मीकि तथा व्यास की कोटि का तीसरा कवि मानते हैं।

2. **'काव्यादर्श' के रचनाकार निम्नलिखित में से कौन हैं?**
(a) माघ (b) भास (c) भवभूति (d) दण्डी
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(d)

काव्यादर्श के रचनाकार दण्डी हैं। यह संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति है। दण्डी के अन्य प्रचलित ग्रन्थ हैं– दशकुमारचरितम्, अवन्तिसुन्दरी कथा, छन्दोविचित, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य।

3. **'काव्यादर्श' किसकी रचना है?**
(a) मम्मट (b) दण्डी (c) विश्वनाथ (d) भरतमुनि
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **इनमें से कौन-सी रचना दण्डी की है?**
(a) दशकुमारचरितम् (b) शिवराजविजय
(c) मेघदूत (d) हर्षचरित
T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. **'दशकुमारचरितम्' के लेखक का नाम बताइये?**
(a) दण्डी (b) हर्ष (c) व्यास (d) भारवि
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **दण्डी के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का नाम है—**
(a) प्रतिदर्श (b) काव्यशास्त्र
(c) काव्यादर्श (d) भाषादर्श
T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **'कलापरिच्छेद' के रचनाकार हैं—**
(a) दण्डी (b) भवभूति (c) श्रीहर्ष (d) बाण
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. **'कलापरिच्छेद' के लेखक कौन हैं?**
(a) कालिदास (b) भवभूति (c) दण्डी (d) भारवि
T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. **इनमें से कौन-सी रचना दण्डी की नहीं है?**
(a) दशकुमारचरितम् (b) सुबन्धु
(c) वासवदत्ता (d) कादम्बरी
P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है, जबकि कादम्बरी बाणभट्ट की कृति है। सुबन्धु स्वयं संस्कृत गद्यकार हैं। इनकी एकमात्र रचना वासवदत्ता प्राप्त होती है। सुबन्धु की शैली श्लेष प्रधान है। सुबन्धु संस्कृत-गद्यकारों की 'बृहत्त्रयी' में गिने जाते हैं। अन्य दो महाकवि दण्डी और बाण हैं। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का प्रारूप त्रुटिपूर्ण है। प्रश्न में रचना के बारे में उल्लेख है, जबकि इसमें एक रचनाकार का नाम विकल्प में उपस्थित है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

10. **''काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारन् प्रचक्षते।'' किसने कहा है?**
(a) विश्वनाथ (b) भरत (c) जगन्नाथ (d) दण्डी
P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

अलंकार के सम्बन्ध में प्रथम काव्यशास्त्रीय परिभाषा आचार्य दण्डी की है– **''काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारन् प्रचक्षते''।**
अर्थात् काव्य के शोभाकारक धर्म का नाम अलंकार है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में सर्वप्रथम अलंकार को परिभाषित तो नहीं किया, लेकिन चार अलंकारों उपमा, रूपक, यमक तथा दीपक का उल्लेख किया। काव्यशास्त्र का विषय काव्य सौन्दर्य के प्रतिमानों का विवेचन करना है। अतः इसके प्रारम्भिक चरण में कई काव्यशास्त्रियों ने अपने ग्रन्थों का नाम 'काव्यालंकार' अर्थात् 'काव्य सौन्दर्य' ही रखा। 'काव्यसौन्दर्यलंकार' के अनुसार 'अलंकार' शब्द सौन्दर्य का वाचक है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (d) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

11. **'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते – अलंकार की यह परिभाषा किस आचार्य की है?**
(a) भामह (b) दण्डी (c) उद्भट (d) रुद्रट
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. **''काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारत् प्रचक्षते'' अलंकार की यह परिभाषा किसकी है?**
(a) आचार्य दण्डी (b) आचार्य वामन
(c) आचार्य कुन्तक (d) आचार्य मम्मट
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. **''काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारत् प्रचक्षते''-उक्ति के लेखक हैं—**
(a) आचार्य भामह (b) आचार्य विश्वनाथ
(c) आचार्य मम्मट (d) आचार्य दण्डी
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. **दण्डी निम्नलिखित में से किस प्रकार के आचार्य हैं?**
(a) अलंकारवादी (b) रसवादी
(c) रीतिवादी (d) ध्वनिवादी
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मम्मट

1. **'काव्यप्रकाश' नामक ग्रन्थ के प्रणेता हैं—**
(a) रूद्रट (b) भामह (c) विश्वनाथ (d) मम्मट
P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'काव्यप्रकाश' (10 उल्लास) नामक ग्रन्थ के प्रणेता मम्मट हैं, जबकि भामह ने 'काव्यालंकार' की रचना की है। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' (10 परिच्छेद) ग्रन्थ की रचना की है। काव्यालंकार भामह को अमरता प्रदान करने वाला ग्रन्थ है।

2. **'काव्यप्रकाश' के रचनाकार हैं—**
(a) मम्मट (b) दण्डी (c) विश्वनाथ (d) राजशेखर
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **इनमें से आचार्य मम्मट की रचना है—**
(a) नाट्यशास्त्र (b) व्यक्ति विवेक
(c) काव्यालंकार (d) काव्यप्रकाश
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।' किसका काव्य लक्षण है?**
(a) जयदेव (b) दण्डी (c) मम्मट (d) हेमचन्द्र
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण है—**तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।**

5. **''तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'' यह काव्यलक्षण किस आचार्य द्वारा निरूपित है?**
(a) पंडितराज जगन्नाथ (b) मम्मट
(c) दण्डी (d) महिमभट्ट
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

विश्वनाथ

1. **'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' उक्ति के लेखक हैं—**
(a) मम्मट (b) विश्वनाथ
(c) पण्डितराज जगन्नाथ (d) वामन
P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने काव्य लक्षण को परिभाषित करते हुए 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहा है। रसगंगाधरकार पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य के विषय में कहा कि '**रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्**', जबकि वामन ने काव्य लक्षण को परिभाषित करते हुए '**रीतिरात्मा काव्यस्य**' कहा है।

2. **'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किसका कथन है?**
(a) विश्वनाथ (b) राजशेखर (c) श्रीहर्ष (d) भास
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'-काव्य-परिभाषा के प्रस्तोता हैं—**
(a) पण्डितराज जगन्नाथ (b) आचार्य भामह
(c) आचार्य दण्डी (d) आचार्य विश्वनाथ
T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'रसो वै सः' को अपनी परिचर्चा में किस आचार्य ने सम्मिलित किया है?**
(a) पण्डित जगन्नाथ (b) आचार्य विश्वनाथ
(c) आचार्य अभिनवगुप्त (d) आचार्य भट्ट नायक
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'रसो वै सः' को अपनी परिचर्चा में आचार्य विश्वनाथ ने सम्मिलित किया है। तैतिरीय उपनिषद में रस का वर्णन इस प्रकार से है- 'रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।' अर्थात् रस वह ईश्वरीय अनुभूति है, जिसे प्राप्त करके आत्मा आनन्दित हो जाता है। साहित्यशास्त्र में रस के विषय में यह कथन भरतमुनि एवं आचार्य विश्वनाथ का है। भारतीय साहित्य शास्त्र में काव्य का मूल प्रयोजन इसी रस-रूप आनन्द की प्राप्ति है।

5. **'रसापकर्षका दोषाः' उक्ति किस आचार्य की है?**
(a) वामन (b) विश्वनाथ (c) मम्मट (d) भरत
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में दोष के लक्षण का वर्णन करते हुए कहते हैं—**रसापकर्षका दोषाः** अर्थात् रस का अपकर्ष करने वाले कारक दोष कहलाते हैं। रस को साहित्य की आत्मा मानने वाले विश्वनाथ प्रथम संस्कृत आचार्य थे। साहित्यदर्पण में उनका सूत्र वाक्य 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' आज भी साहित्य का मूल माना जाता है और बार-बार उद्धृत किया जाता है।

6. **'सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः, क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमक विनिगद्यते।' 'यमक' की यह परिभाषा किस आचार्य ने दी है?**
(a) मम्मट
(b) विश्वनाथ

(c) राजशेखर
(d) उपर्युक्त में से किसी ने भी नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने यमक अलंकार को परिभाषित करते हुए कहा है कि भिन्न-भिन्न अर्थों वाले सार्थक स्वर-व्यंजन समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति होने को यमक अलंकार कहते हैं।

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।

इसका तात्पर्य यह है कि जिस स्वर-व्यंजन समुदाय की आवृत्ति हो, उसका कोई एक अंश अथवा समूचा अंश यदि निरर्थक हो, तो कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु यदि उस समुदाय का कोई अंश या सर्वांश सार्थक है, तो आवृत्त (दुहराया गया) अंश अवश्य ही भिन्न अर्थ वाला होना चाहिए। समानार्थक शब्दों की आवृत्ति को यमक नहीं माना जाता है, इस प्रकार यमक के उदाहरण में—
(क) कहीं दोनों पद सार्थक होते हैं, (ख) कहीं दोनों पद निरर्थक होते हैं, (ग) कहीं एक पद सार्थक होता है तथा एक निरर्थक, (घ) यमक में आवृत्ति उसी क्रम में होनी चाहिए, जिस क्रम में पूर्ववर्ती पद प्रयुक्त हुआ है।
उदाहरणार्थ—

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकवत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

(क) यहाँ पर दोनों पद सार्थक हैं जैसे पलाश-पलाश तथा सुरभिं सुरभिम्। परन्तु दोनों ही सार्थक शब्दों के अर्थ भिन्न हैं। यहाँ एक पलाश का अर्थ पत्र से तथा दूसरे पलाश का अर्थ वृक्ष विशेष से है। इसी प्रकार एक सुरभि का अर्थ सुगन्धित तथा दूसरे सुरभि का अर्थ बसंत ऋतु से है।
(ख) इन दोनों पदों में रभिंसु-रभिंसु निरर्थक है।
(ग) कहीं एक पद सार्थक है, दूसरा निरर्थक है, जैसे लतान्त-लतान्त में दूसरा 'लतान्त' शब्द ही सार्थक है पहले 'लतान्त' में लकार मृदुल शब्द का अंश है। इसी प्रकार 'पराग-पराग' में बाद वाला पराग शब्द परागत का अंश होने से निरर्थक है।
(घ) उपर्युक्त शब्दों की आवृत्ति एक ही क्रम में हुई है।

7. वक्रोक्ति के विरोधी आचार्य है-
(a) भामह (b) रुद्रट (c) मम्मट (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

वक्रोक्ति के विरोधी आचार्य साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ आचार्य विश्वनाथ संस्कृत काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य थे। इनका पूरा नाम आचार्य विश्वनाथ महापात्र था।
➲ इनके पिता का नाम चन्द्रशेखर और पितामह का नाम नारायणदास था। महापात्र इनकी उपाधि थी।
➲ ये कलिंग के रहने वाले थे। इन्होंने अपने आपको 'सन्धिविग्रहिक', 'अष्टादशभाषावारविलासनी भुजंग' कहा है।
➲ ये अलाउद्दीन के शासनकाल में थे।

राजशेखर

1. 'काव्यमीमांसा' के रचनाकार हैं—
(a) भारवि (b) भास (c) श्रीहर्ष (d) राजशेखर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

राजशेखर मुख्य रूप से कवि और नाटककार हैं। उन्होंने चार नाटकों—बालरामायण, बाल भारत, विद्धशालभंजिका और कर्पूरमंजरी की रचना की। 'कर्पूरमंजरी' संस्कृत भाषा में न लिखकर प्राकृत भाषा में लिखा गया 'सट्टक' है। इनका पाँचवां ग्रन्थ 'काव्यमीमांसा' है। यह ग्रन्थ साहित्य समीक्षा से सम्बन्ध रखता है। इसी ग्रन्थ के कारण अलंकारशास्त्र के इतिहास में उनको गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ काव्यमीमांसा में अट्ठारह अध्याय हैं।
➲ नाट्यशास्त्र के टीकाकार अभिनवगुप्त ने सबसे पहले सट्टक की परिभाषा की और इसे 'नाटिका' के निकट रखा।
➲ हेमचन्द्राचार्य ने अपने काव्यानुशासन में लिखा है कि सट्टक एकभाषीय होता है। प्रायः सट्टकों का नाम उसकी नायिकाओं के नाम पर दिया गया है।

2. राजशेखर के नाटक का नाम है—
(a) बालरामायण (b) चण्डकौशिक
(c) नेषधानन्द (d) आचार्य चूड़ामणि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं -
(a) भरतमुनि (b) विश्वनाथ
(c) राजशेखर (d) दण्डी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं—
(a) रुद्रट (b) भामह (c) राजशेखर (d) दण्डी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. सट्टक है—
(a) एक प्रकार का छन्द (b) एक प्रकार की युद्ध शैली
(c) एक प्रकार का नाटक (d) एक प्रकार का गीत

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. **राजशेखर की निम्नलिखित रचनाओं में से कौन रचना अधूरी है?**

(a) बालरामायण (b) काव्यमीमांसा
(c) कर्पूरमंजरी (d) विद्धशालभंजिका

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' नामक अपूर्ण ग्रन्थ लिखा।

7. **............भारतीय समीक्षा के जनक हैं।**

(a) भरतमुनि (b) राजशेखर
(c) विश्वनाथ (d) मम्मट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(b)

राजशेखर भारतीय समीक्षा के जनक माने जाते हैं। संस्कृत में रस, अलंकार, ध्वनि, वक्रोति, रीति आदि सम्प्रदायों के आधार पर सैद्धान्तिक समीक्षा का व्यापक रूप से क्रमबद्ध ढंग से विकास हुआ, किन्तु व्यावहारिक समीक्षा लक्षणों के उदाहरणों तक सीमित रही।

कुन्तक

1. **निम्न में से कौन किसके लिए प्रसिद्ध नहीं है?**

(a) उपमा के लिए कालिदास (b) करुणा के लिए भवभूति
(c) अलंकार के लिए भामह (d) वक्रोक्ति के लिए क्षेमेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' कहकर वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले आचार्य कुन्तक हैं, जबकि औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में क्षेमेन्द्र प्रसिद्ध हैं।

2. **'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' के रचयिता हैं–**

(a) आनन्दवर्द्धन (b) कुन्तक (c) दण्डी (d) भामह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' कहकर वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले आचार्य हैं–**

(a) विश्वनाथ (b) मम्मट (c) कुन्तक (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के कितने भेद माने हैं?**

(a) पाँच (b) छह (c) सात (d) आठ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(b)

आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के छह भेद माने हैं। कुन्तक ने वक्रोक्ति को अति व्यापक रूप से ग्रहण किया है। इनकी वक्रता वर्ण से लेकर प्रबन्ध रचना तक व्याप्त है। इन्होंने 'वक्रोक्तिजीवितम्' में वक्रता के छह प्रकारों का वर्णन किया है-वर्ण विन्यास वक्रता, पदपूर्वार्द्ध वक्रता, पदपरार्द्ध वक्रता (प्रत्याश्रित वक्रता), वाक्य वक्रता, प्रकरण वक्रता एवं प्रबन्ध वक्रता है। इस षट् वक्रता प्रकारों का भी भेदोपभेदपूर्वक सविस्तार वर्णन किया है।

पण्डित जगन्नाथ

1. **'रमणीयर्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' परिभाषा किसने दी है?**

(a) भरत (b) जगन्नाथ (c) भामह (d) विश्वनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(b)

पण्डित जगन्नाथ के अनुसार काव्य का लक्षण है–रमणीयर्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

2. **'रमणीयर्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' निम्नलिखित में से किसका काव्य लक्षण है?**

(a) हेमचन्द्र (b) पण्डितराज जगन्नाथ
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **'रमणीयर्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' के प्रवर्तक हैं–**

(a) दण्डी (b) पण्डितराज जगन्नाथ
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'रस गंगाधर' किसकी रचना है?**

(a) अभिनव गुप्त (b) भट्ट नायक
(c) पण्डितराज जगन्नाथ (d) भरतमुनि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(c)

'रस गंगाधर' पण्डितराज जगन्नाथ की रचना है। पण्डितराज जगन्नाथ जी की कृतियों को विषय की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जाता है-(i) काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ (ii) व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ (iii) साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ। 'रस गंगाधर' 'साहित्य शास्त्रीय ग्रन्थ के अन्तर्गत आता है। यह आलोचना की दृष्टि से सबसे अधिक प्रौढ़ और पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ है। पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा विरचित कृतियाँ हैं-प्रस्तावित विलास, शृंगार विलास, करुण विलास, शान्त विलास, गंगा लहरी, अमृत लहरी, लक्ष्मी लहरी, करुणा लहरी, रस गंगाधर, मनोरमा कुचमर्दन, चित्र मीमांसा खण्डन, आसफ विलास, यमुना वर्णन।

वामन

1. **'काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः' काव्यगुण का यह सूत्र लिखा है—**
(a) आचार्य भरत ने (b) आचार्य दण्डी ने
(c) आचार्य वामन ने (d) आचार्य मम्मट ने
P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

वामन (8-9वीं शती ई.) जिनका स्थान भामह के समान ही साहित्य शास्त्र के इतिहास में विशेष महत्वपूर्ण है। इन्होंने 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहकर 'रीति' को काव्य की आत्मा माना और साहित्य शास्त्र में रीति सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। इनका एकमात्र ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्र' है, जो सूत्र शैली में उपनिबद्ध है। इन सूत्रों पर 'कविप्रिया' नाम की वृत्ति भी वामन ने लिखी है। वामन ने 'काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्मा गुणाः' तथा 'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्कारा:' इन दो सूत्रों को लिखकर गुण अलंकारों के बीच भेदक-रेखा का दिग्दर्शन किया। इससे पूर्व उद्भट आदि विद्वानों का मत था कि संसार में शौर्यादि गुण तथा हारादि अलंकारों में तो विभेद किया जा सकता है, क्योंकि शौर्यादि गुण आत्मा में समवाय सम्बन्ध से तथा हारादि अलंकार शरीर पर संयोग सम्बन्ध से रहते हैं, किन्तु काव्य में ओज आदि गुण तथा उपमादि अलंकार दोनों समवाय सम्बन्ध से ही रहते हैं। अतः उनमें कोई भेद नहीं हो सकता।

2. **'काव्यशोभायाः कत्तारो धर्माः गुणाः'- काव्यगुण के संदर्भ में यह कथन किस आचार्य का है?**
(a) भामह (b) वामन
(c) मम्मट (d) दण्डी
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. **'काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः'**
काव्यगुण के सम्बन्ध में यह कथन है—
(a) आचार्य मम्मट का (b) आचार्य वामन का
(c) आचार्य भामह का (d) आचार्य कुन्तक का
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. **'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्' किसका कथन है?**
(a) दण्डी (b) वामन
(c) कुन्तक (d) मम्मट
आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

8वीं शती ईसवी में रीति सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य वामन ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति में उल्लेख किया है-'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्'। सौन्दर्यमलंकारः। अर्थात् काव्य अलंकार के कारण ही ग्रहण करने योग्य है तथा सौन्दर्य ही अलंकार है।

5. **रीति सम्प्रदाय से सम्बन्धित काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ है—**
(a) काव्यालंकार सूत्र (b) काव्यालंकार
(c) काव्यालंकार सूत्रवृत्ति (d) काव्यादर्श
P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

रीति सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य वामन हैं, जिन्होंने अपनी कृति 'काव्यालंकार सूत्र' में रीति को स्पष्ट शब्दों में काव्य की आत्मा माना है (रीतिरात्मा काव्यस्य)। वामन काव्यशास्त्र में रीति सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। चूँकि 'काव्यालंकार' सूत्र मूलतः सूत्रों में रचित है। अतः उसको अधिकाधिक सुबोध बनाने के लिए स्वयं आचार्य वामन ने ही 'कविप्रिया' नाम से इसका एक भाष्य भी लिखा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'रीति' शब्द 'रीङ' धातु से 'क्ति' प्रत्यय लगा देने पर बनता है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, पद्धति, प्रणाली या मार्ग है। परन्तु वर्तमान में 'शैली' के रूप में यह अधिक समाहृत है।
- रीति सम्प्रदाय में रीति का अर्थ लगभग वैसा ही है जैसा अंग्रेजी साहित्य में Style का है। हिन्दी में इसका निकटतम पर्याय 'शैली' है। इस प्रकार रीति या शैली को काव्य की आत्मा मानकर काव्य पर विचार करने वाला सम्प्रदाय ही 'रीति सम्प्रदाय' है।

6. **रीति सम्प्रदाय से सम्बन्धित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है—**
(a) काव्यालंकार सूत्र (b) काव्यादर्श
(c) काव्यदर्पण (d) काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. **रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं—**
(a) भरतमुनि (b) कुन्तक (c) वामन (d) क्षेमेन्द्र
P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भामह

1. **अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं—**
(a) दण्डी (b) भामह (c) मम्मट (d) भरतमुनि
P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

भारतीय काव्य-सम्प्रदायों में रस के अतिरिक्त शेष सम्प्रदायों में सबसे पुराना अलंकार-सम्प्रदाय ही है। वैसे तो स्वयं भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में चार अलंकारों—उपमा, दीपक, रूपक तथा यमक की विवेचना की है, किन्तु इन्हें अधिक महत्व नहीं दिया। अलंकारों को काव्य की आत्मा घोषित करते हुए पृथक रूप में अलंकार सम्प्रदाय की स्थापना करने का श्रेय 'काव्यालंकार' के रचयिता भामह को ही प्राप्त है। भरत और भामह

के बीच में राम शर्मा, मेघाविन, राजमित्र आदि विद्वान हो चुके थे, जिन्होंने अलंकारों की चर्चा की थी, किन्तु अनेक ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। इन विद्वानों के नाम केवल भामह के ही 'काव्यालंकार' में आये हैं। ऐसी स्थिति में अलंकार-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भामह ही माने जाते हैं।

2. 'अलंकार सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य थे—

(a) दण्डी (b) भामह (c) उद्‌भट्ट (d) राजशेखर

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन थे?

(a) जयदेव (b) भामह (c) कुन्तक (d) केशव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. निम्नलिखित में से किस आचार्य ने अलंकार और अलंकार्य में अभेद माना है?

(a) भामह (b) कुन्तक
(c) विश्वनाथ (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

किसी पदार्थ या वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को अलंकार्य कह सकते हैं, अर्थात् स्वभाव वर्णन ही अलंकार्य है। प्राचीन आलंकारिक भामह, दण्डी, वामन आदि ने अलंकार और अलंकार्य में अभेद स्थापित कर सम्पूर्ण काव्यसौन्दर्य को 'अलंकार' में समाहित किया है। उन्होंने लिखा है, 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते' तथा 'सौन्दर्यमलंकारः'। स्पष्ट है कि इन आचार्यों के अनुसार, काव्य-शोभा की आर्यवृद्धि में सहायक सभी तत्व अलंकार हैं। इसी से उन्होंने रस को भी रसवत आदि अलंकारों में अन्तर्भूत कर दिया है। भामह के अनुसार, काव्य का प्रस्तुत पक्ष चमत्कार रहित होने के कारण, काव्य न होकर वार्ता मात्र है।

रस और ध्वनि-सम्प्रदाय के अनुयायियों ने शब्द-अर्थ को प्रत्यक्षतः तथा रस को मूलतः अलंकार्य कहा है और उपमा-रूपकादि को अलंकार के नाम से अभिहित किया है। उन्होंने उपमा-रूपक आदि अलंकारों को रस-रूपी अंगी का उत्कर्ष-विधायक कहा है अर्थात उपमादि अलंकार रस-रूप अलंकार्य को अलंकृत करते हैं।

मम्मट और विश्वनाथ ने प्रकारान्तर से इसी मत का समर्थन किया है। कुन्तक ने अलंकार्य और अलंकार की पृथकता का निर्देश अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में किया है। उनके अनुसार, शब्द और अर्थ अलंकार्य होते हैं और चतुरतापूर्ण शैली से कथन रूप वक्रोक्ति ही उन दोनों का अलंकार होती है। हिन्दी के आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी काव्य के प्रस्तुत अर्थ को अलंकार्य कहा है उनके अनुसार, अलंकार्य और अलंकार में अनिवार्य भेद है, जो सर्वथा अमिट है। प्राचीन पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी इस तथ्य को इसी रूप में स्वीकृत किया गया है। अतः स्पष्ट है कि अलंकार और अलंकार्य में भामह ने अभेद माना है।

5. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्' यह अभिमत है—

(a) आचार्य रुद्रट का (b) पीयूषवर्षी जयदेव का
(c) आचार्य भामह का (d) आचार्य मम्मट का

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

भामह पहले आचार्य हैं, जिन्होंने विधिवत् 'साहित्यशास्त्र' की रचना की। अलंकारों को प्रधानता देते हुए कहा-**न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्।** भामह ने 38 प्रकार के अलंकार माने हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य भामह ने सभी अलंकारों में वक्रोक्ति को प्रधानता दी है।
- अलंकार सम्प्रदाय का प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ भामह का 'काव्यालंकार' है। इस ग्रन्थ के व्यवस्थित प्रतिपादन को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह किसी पूर्ववर्तिनी परम्परा पर आधारित है।
- भामह के मन से काव्यत्व के निमित्त अलंकार प्रयोग में एक प्रकार की उक्ति वैचित्र्य अपेक्षित होता है, जिसका सम्पादन कवि प्रतिमा से किया जाता है।

6. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुख' यह कथन किसका है?

(a) रुद्रट (b) भामह
(c) दण्डी (d) मम्मट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्' इस उक्ति के लेखक हैं—

(a) भामह (b) दण्डी
(c) उद्‌भट (d) रुद्रट

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्' परिभाषा किनके द्वारा दी गई है?

(a) आचार्य दण्डी (b) आचार्य रुद्रट
(c) आचार्य भामह (d) आचार्य विश्वनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

साहित्यशास्त्र के भीष्मपितामह 'भामह' का काव्य लक्षण सबसे अधिक प्राचीन है। उन्होंने कहा है—'शब्दार्थो सहितौ काव्यम् गद्य पद्यं च तद् द्विधा।' उन्होंने शब्द और अर्थ दोनों के सहभाव को काव्य माना है। वे सहभाव या 'सहितौ' शब्द का क्या अर्थ लेते हैं, इसकी व्याख्या भी उन्होंने नहीं की, पर उनका अभिप्राय यह है कि जिस रचना में वर्णित अर्थ के अनुरूप शब्दों का प्रयोग हो या शब्दों के अनुरूप अर्थ का वर्णन हो। वे शब्द और अर्थ ही 'सहितौ' पद से विवक्षित हैं। वही शब्द और अर्थ का 'साहित्य' है।

9. 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्' किसने कहा है?

(a) भरत (b) विश्वनाथ
(c) भामह (d) जगन्नाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने संशोधित उत्तर-पत्रक में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। प्रारम्भिक उत्तर-पत्रक में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) ही दिया गया था।

10. 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'-किसका कथन है?

(a) कुन्तक (b) वामन
(c) दण्डी (d) भामह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

❑ काव्यलक्षण

1. 'ननु शब्दार्थौ काव्यम्' किस आचार्य का काव्यलक्षण है?

(a) भामह (b) दण्डी
(c) जयदेव (d) रुद्रट

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'ननु शब्दार्थौ काव्यम्' यह काव्यलक्षण आचार्य रुद्रट का है। आचार्य भामह ने कहा था ''शब्दार्थौ सहितो काव्यम''। तब से यह विवाद चलता रहा कि काव्य शब्द में या अर्थ में या दोनों में। इस विवाद को एक निर्णयात्मक मोड़ दिया आचार्य रुद्रट ने काव्य का लक्षण करते हुए कहा–'ननु शब्दार्थौ काव्यम' अर्थात् शब्दार्थ निश्चाय ही काव्य है। यह विवाद आगे भी चलता रहा है। हेमचन्द्र, विद्यानाथ, वाग्भट्ट, जयदेव, भोज आदि शब्दार्थ के सौन्दर्य को काव्य मानते रहें, हाँ यह स्पष्ट था कि ये सभी भामह और मम्मट के काव्यलक्षण को थोड़े बहुत फेर-बदल के साथ प्रस्तुत करते रहे बाद में अग्निपुराणकार ने कहा, ''ध्वनि वर्ण, पद और वाक्य का ही नाम वाङ्मय है, जिसके अन्तर्गत शास्त्र, इतिहास तथा काव्य का समावेश होता है, किन्तु अभिधा के कारण काव्यशास्त्र और इतिहास से अलग होता है।'' काव्यलक्षण को उन्होंने परिभाषित करते हुए कहा, ''जिस वाक्य समूह में अलंकार स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो तथा जो गुणों से युक्त और दोषों से मुक्त हो, उसे काव्य कहते हैं।''

2. निम्नलिखित आचार्यों को उनके द्वारा निरुपित काव्यलक्षण के साथ सुमेलित कीजिए—

सूची-I (आचार्य)	सूची-II (काव्यलक्षण)
(क) हेमचन्द्र	(अ) रमणीयर्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(ख) विश्वनाथ	(ब) अदोषौ सगुणौ सालंकारो च शब्दार्थो काव्यम्
(ग) पण्डितराज जगन्नाथ	(स) शब्दार्थो सहितौ काव्यम्
(घ) भामह	(द) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

कूट :

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(a)	(ब)	(स)	(अ)	(द)
(b)	(स)	(द)	(ब)	(अ)
(c)	(ब)	(द)	(अ)	(स)
(d)	(अ)	(ब)	(द)	(स)

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I (आचार्य)		सूची-II (काव्यलक्षण)
हेमचन्द्र	–	अदोषौ सगुणौ सालंकारो च शब्दार्थो काव्यम्'
विश्वनाथ	–	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
पण्डितराज जगन्नाथ	–	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
भामह	–	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्

❑ सन्धि

स्वर सन्धि

1. 'दैत्य + अरिः = दैत्यारिः' एक उदाहरण है—

(a) व्यंजन सन्धि का (b) स्वर सन्धि का
(c) विसर्ग सन्धि का (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'दैत्य + अरिः = दैत्यारिः' दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है। 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र के अनुसार, यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ ही आवे, तो उनके स्थान पर 'सवर्ण दीर्घ' स्वर होता है।

2. 'कृष्णैकत्वम्' शब्द में सन्धि है—

(a) गुण (b) वृद्धि
(c) अयादि (d) दीर्घ

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'कृष्णैकत्वम्' का सन्धि विच्छेद कृष्ण + एकत्वम् होगा। यह वृद्धि स्वर सन्धि है। 'वृद्धिरेचि' सूत्र के अनुसार, जब 'अ' अथवा 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आये, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आये, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

3. 'सु + आगतम् = स्वागतम्' इस सन्धि में निम्नलिखित में से कौन-सा सूत्र लागू होगा?

(a) अकः सवर्णे दीर्घः (b) आद् गुणः

(c) इकोयणचि (d) वृद्धिरेचि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

इकोयणचि (यण सन्धि) –इक् = (इ, उ, ऋ, लृ) को यण् = (य्, व्, र् ल्) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आने पर क्रमशः य्, व्, र् तथा ल् हो जाता है।

जैसे–

सु + आगतम् = स्वागतम्

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

गुरु + आज्ञाः = गुर्वाज्ञा

पितृ + आदेशः = पित्रादेशः

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

पितृ + आकृतिः = पित्राकृतिः

धातृ + अंशः = धात्रंशः

4. 'पित्राकृतिः' का शुद्ध सन्धि विच्छेद है–

(a) पितृ + आकृतिः (b) पित्र + आकृतिः

(c) पित्रृ + आकृतिः (d) पितृ + आकृतिः

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'इत्यलम्' में कौन-सी सन्धि है?

(a) यण (b) गुण (c) वृद्धि (d) दीर्घ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर–(a)

'इत्यलम्' में यण स्वर सन्धि है। 'इकोयणचि' सूत्रानुसार यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ तथा लृ के बाद असवर्ण स्वर आवे तो इ, उ, ऋ, लृ के स्थान पर क्रमशः य व र ल हो जाते हैं। जैसे-

इति + अलम = इत्यलम्

इति + आह = इत्याह

दधि + अत्र = दध्यत्र

6. महोत्सवः शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) दीर्घ (b) गुण (c) यण (d) वृद्धि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

महोत्सवः शब्द का सन्धि विच्छेद महा + उत्सवः होता है। यह गुण सन्धि है। गुण संधि (सूत्र-आद्गुणः) में अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ऋ तथा लृ हो, तो क्रमशः ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है जैसे- तथा + इति = तथेति, हित + उपदेशः = हितोपदेशः, गंगा + उद्कम = गंगोदकम्, ग्रीष्म + ऋतुः = गीष्मर्तुः।

7. यदि ए, ओ, ऐ, औ के आगे कोई भी स्वर हो, तो इसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है, तो यह कौन-सी स्वर सन्धि कहलाती है?

(a) वृद्धि स्वर सन्धि (b) यण स्वर सन्धि

(c) अयादि स्वर सन्धि (d) दीर्घ स्वर सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

यदि ए, ओ, ऐ, औ के आगे कोई स्वर हो, तो इसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है, यह अयादि (एचोऽयवायावः) स्वर सन्धि कहलाता है। जैसे–

नै + अकः = नायकः

पौ + अकः = पावकः

विष्णो + ए = विष्णवे

8. 'यदि ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो इनके स्थान पर क्रमशः 'अय्', 'आय्', 'अव्', 'आव्' हो जाता है। यह सन्धि कौन-सी है?

(a) दीर्घ (b) गुण (c) वृद्धि (d) अयादि

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'विष्णवे' का सन्धि विच्छेद है–

(a) विष्णु + ए (b) विष्णो + ए

(c) विष्णु + अए (d) विष्णु + अवे

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

व्यंजन/हल् सन्धि

1. 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र के अनुसार, श्चुत्व सन्धि का निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण सही है?

(a) रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

(b) रामस् + टीकते = रामष्टीकते

(c) रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(a)

श्चुत्वव्यंजन सन्धि– 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र के अनुसार, जब सकार या त वर्ग शकार या च वर्ग के स्थान पर क्रमशः शकार और च वर्ग हो जाता है, तो वहाँ श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः) या व्यंजन सन्धि होता है जैसे–

रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

हरिस् + शेते = हरिश्शेते

सत् + चित् = सच्चित्।

2. 'हरिश्शेते' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) श्चुत्व सन्धि (b) गुण

(c) विसर्ग (d) चर्त्व सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'सच्चित्' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) वृद्धि (b) गुण

(c) यण (d) श्चुत्व सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'उड्डयनम्' का सन्धि विच्छेद होगा—

(a) उत् + डयनम् (b) उद् + डयनम्

(c) उड् + अयनम् (d) उड् + डयनम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

ष्टुत्व (सूत्र-ष्टुनाष्टुः) के अनुसार, यदि 'स' या 'त' वर्ग का 'ष' या 'ट' वर्ग के साथ योग हो, तो 'स' को 'ष' और 'त' वर्ग के स्थान पर 'ट' वर्ग हो जाता है। जैसे—

रामस् + टीकते = रामष्टीकते

रामस् + षष्ठ = रामषष्ठः

तत् + टीका = तट्टीका

उत् + डयनम् = उड्डयनम्

आकृष् + तः = आकृष्टः

यत् + टीका = यट्टीका।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ जश्त्व (सूत्र-झलां जशोऽन्ते) के अनुसार, पद के अन्त में झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ श्, ष्, स् तथा ह कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर (ज, ब, ग, ड, द, श) होता है। इसके अतिरिक्त वर्ग के प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ वर्णों के स्थान पर वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह् में ष् के स्थान पर 'ड' आते हैं। जैसे—

वाक् + ईशः = वागीशः

जगत् + ईशः = जगदीशः

सुप् + अन्त = सुबन्तः

अच् + अन्तः = अजन्तः

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

दिक् + गजः = दिग्गजः

षट् + एव = षडेव

षट् + आननः = षडाननः।

5. गृहं गच्छति शब्द का सन्धि विच्छेद कीजिये?

(a) गृहम् + गच्छति (b) गृह + गच्छति

(c) गृहय + गच्छति (d) गृह + आगच्छति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

गृहं गच्छति का सन्धि विच्छेद गृहम् + गच्छति होता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

विसर्ग सन्धि

1. 'पितुरिच्छा' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

(a) स्वर सन्धि (b) व्यंजन सन्धि

(c) विसर्ग सन्धि (d) गुण सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

ससजुषो रुः—पद के अन्तिम स् को रु (र्) होता है तथा सजुष् शब्द के ष् को भी रु होता है। [**विशेष**-इस रु (र्) को साधारणतया अगले नियम में विसर्ग (:) होकर विसर्ग ही शेष रहता है।] **यथा**-राम + स् = रामः, कृष्ण + स् = कृष्णः। इसी विसर्ग को ''अतोरोरप्लुतादप्लुते'' हशि च ''भो भगो'' सूत्र से उ या य् होता है। जहाँ उ या य् नहीं होगा, वहाँ र् शेष रहता है। अतः अ, आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद स् या विसर्ग का र् शेष रहता है, बाद में कोई स्वर या व्यंजन (वर्ग के द्वितीय, तृतीय, पंचम अक्षर) हों तो। **यथा**-पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा, हरिः + अवदत् = हरिरवदत्, शिशुः + आगच्छत् = शिशुरागच्छत्, वधूः + एषा = वधूरेषा, गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम्, हरेः + द्रव्यम् = हरेर्द्रव्यम्।

2. मनोरम का सन्धि विच्छेद है—

(a) मनः + ओरम (b) मन + रम

(c) मनो + रम (d) मनः + रम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे- मनः + रम = मनोरम

मनः + रथ = मनोरथ

सरः + ज = सरोज

पयः + द = पयोद

यशः + धरा =यशोधरा

मनः + योग = मनोयोग

यशः + दा = यशोदा

सरः + वर = सरोवर

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

3. 'कः + अपि' की सन्धि होगी—

(a) कपि (b) कपिः (c) कर्पि (d) कोऽपि

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

अतो रोरप्लुतादप्लुते सूत्र के अनुसार, ह्रस्व अ के बाद रु (ः या र्) को उ हो जाता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो।
नोट—इस उ को पूर्ववर्ती अ के साथ गुण संधि करके ओ हो जाता है और बाद के अ का पूर्वरूप सन्धि हो जाता है (अतएव अः + अ = ओऽ होता है)। जैसे—
कः + अपि = कोऽपि
सः + अपि = सोऽपि
सः + अपठत् = सोऽपठत्
देवः + अधुना = देवोऽधुना
नृपः + अगच्छत् = नृपोऽगच्छत्।

❑ समास

1. 'अनुदिनम्' में कौन-सा समास है?

(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'अनुदिनम्' में अव्ययीभाव समास है। दिनं दिनम् = अनुदिनम्। अत्रापि तेनैव सूत्रेण यथार्थे वीप्सांया समासः। यद्यप्यत्र दिनस्य पश्चादनुदिनमिति पश्चादर्थेऽपि अव्ययीभावस्य सत्वात् अर्थमनुसृत्य वीप्सार्थे समासः।

2. 'प्रतिदिनम्' शब्द का समास विग्रह कीजिये।

(a) दिनं दिनं च (b) दिनं दिनं प्रति
(c) दिनम् दिनम् (d) दिनं च दिनं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'प्रतिदिनम्' शब्द का समास विग्रह दिनं दिनं प्रति' होगा। यह अव्ययीभाव समास है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना है।

3. 'कष्टापन्नः' शब्द में समास है—

(a) अव्ययी भाव (b) तत्पुरुष
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

तत्पुरुष समास वह होता है, जिसमें प्रथम शब्द द्वितीय शब्द की विशेषता बताए (प्रायेणोत्तरपदार्थ प्रधानोतत्पुरुषः)। द्वितीया जब श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यन्त, प्राप्त, आपन्न शब्दों के संयोग में आती है, तब द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। जैसे—
कृष्णं श्रितः = कृष्णाश्रितः
अग्निं पतितः = अग्निपतितः
कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः
जीवनं प्राप्तः = जीवनप्राप्तः
प्रलयं गतः = प्रलयगतः
मेघम् अत्यस्तः = मेघात्यस्तः।

4. 'हरित्रातः' समास-पद का विग्रह होगा :

(a) हरे त्रातः (b) हरौ त्रातः
(c) हरिणा त्रातः (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'हरित्रातः' समास पद का विग्रह' हरिणा त्रातः' होगा। इसमें तृतीया तत्पुरुष समास है। इस समास के अन्य उदाहरण हैं—
पित्रा युक्तः = पितृयुक्तः
सर्पेण दष्टः = सर्पदष्टः
शरेण बिद्धः = शरविद्धः
अग्निना दग्धः = अग्निदग्धः
धनेन हीनः = धनहीनः
विद्यया हीन = विद्याहीनः

5. निम्नलिखित शब्द में नञ् तत्पुरुष समास कौन है?

(a) रोगमुक्तः (b) राजपुरुषः
(c) अभावः (d) पुत्रहितम

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

नञ् तत्पुरुष के पूर्वपद में निषेधार्थक 'अ' या 'अन्' शब्द का प्रयोग होता है। 'अभावः' में नञ् तत्पुरुष समास है। 'रोगमुक्तः' में अपादान तत्पुरुष, 'राजपुरुषः' में सम्बन्ध तत्पुरुष तथा 'पुत्रहितम्' में सम्प्रदान तत्पुरुष समास है।

6. 'अकृतम्' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'अकृतम्' में नञ् तत्पुरुष समास है। नञ् तत्पुरुष समास में जब तत्पुरुष में प्रथम शब्द 'न' (नञ्) रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण रहे, तो उसे यह नाम दिया जाता है। यह 'न' व्यञ्जन के पूर्व 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है। जैसे-
न ब्राह्मणः = अब्राह्मण
न गर्दभः = अगर्दभः
न अब्जम् = अनब्जम्
न सत्यम् = असत्यम्
न चरम् = अचरम्
न कृतम् = अकृतम्
न आगतम् = अनागतम्

7. 'युधिष्ठिरः' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) अलुक (d) कर्मधारय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

जिस समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता, वह अलुक तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे—मनसागप्ता, जनुषान्ध (जन्मान्ध), परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्, दूरागतः, देवानांप्रियः पश्यतोहरः (देखते-देखते चुराने वाला) , युधिष्ठिरः, अन्तेवासी, सरसिजम्, खेचरः आदि।

8. निम्नलिखित में से कर्मधारय समास किसमें है?

(a) चक्रपाणि (b) चतुर्युगम्
(c) नीलोत्पलम् (d) माता-पिता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

जब कोई एक खण्ड विशेषण या उपमासूचक शब्द हो, तो कर्मधारय समास बनता है। इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं, क्योंकि विग्रह करने पर इसके दोनों पद एक ही कारक या विभक्ति में होते हैं। जैसे-नीलोत्पलम्, नीलकलम् आदि।

9. 'नीलोत्पलम्' शब्द में समास है-

(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. नीलोत्पलम् में कौन-सा समास है-

(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. निम्नलिखित में से 'पितरौ' शब्द का कौन-सा समास विग्रह उपयुक्त है?

(a) माता पिता च (b) माता च पिता
(c) पिता च माता (d) माता च पिता च

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान रहते हैं अथवा उनके समूह का प्रधानत्व रहता है (उभयपद प्रधानो द्वन्द्वः)। द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है—इतरेतर द्वन्द्व, 2. समाहार द्वन्द्व तथा 3. एकशेष द्वन्द्व। पितरौ शब्द का विग्रह 'माता च पिता च' होता है, यह एकशेष द्वन्द्व समास के अन्तर्गत आता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जहाँ दो या दो से अधिक पदों का योग होता है, वहाँ दो पदों के लिए द्विवचन और अधिक पदों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। लिंग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। वहाँ इतरेतर द्वन्द्व समास होता है। जैसे—भीमश्च अर्जुनश्च = भीमार्जुनौ, पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ, नरश्च नारी च = नरनार्यौ, रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ।
- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। इसमें समास करते समय नपुंसकलिंग एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे—पाणी च पादौ च = पाणिपादम्,
 रथाश्च अश्वाश्च = रथाश्वम्
 अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्,
 मथुरा च पाटलिपुत्र च = मथुरापाटलिपुत्रम्,
 अहः च रात्रि च = अहोरात्रम्।
- जिस सामासिक पद में समान रूप से प्रयुक्त होने वाले शब्दों में से केवल एक पद शेष रह जाता है और अपने भाव को विभक्ति व वचन के अनुसार प्रकट करता है, वहाँ एकशेष द्वन्द्व समास होता है। जैसे—पुत्रश्च पुत्री च = पुत्रौ, हंसश्च हंसी च = हंसौ, युवा च युवती च = युवनौ।

12. 'गोधूमचणकम्' में समास है -

(a) इतरेतर द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) एकरोष द्वन्द्व (d) समाहार द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'गोधूमचणकम्' में समाहार द्वन्द्व समास है। इसका विग्रह है-गोधूमश्च चणकश्च = गोधूमचणकम्। इस समास के अन्य उदाहरण हैं—
पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (हाथ और पैर)
गङ्गा च यमुना च = गङ्गायमुने (गङ्गा और यमुना)
गङ्गा च शोणश्च = गङ्गाशोणम्
मार्दङ्गिकाश्च पाणविकाश्च = मार्दङ्गिकपाणविकम्
यूका च लिक्षा च = यूकालिक्षम्

13. 'पाणिपादम्' का विग्रह है-

(a) पाणि च पादम् चे (b) पाणौ च पादौ च
(c) पाणिम् च पादम् च (d) पाणी च पादौ च

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'चन्द्रकान्तिः' शब्द में समास है—

(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जब समास में आये हुए दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य शब्द के विशेषण स्वरूप रहते हैं, तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि शब्द का यौगिक अर्थ है—बहुः व्रीहिः (धान्यं) यस्य अस्ति सः बहुव्रीहिः (जिसके पास बहुत चावल हों)। इसमें दो शब्द हैं—'बहु' और 'व्रीहि'। प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण है और दोनों मिलकर किसी तीसरे के विशेषण हैं। इसलिए इस समास का नाम 'बहुव्रीहि' पड़ा। बहुव्रीहि समास दो प्रकार के होते हैं– 1. समानाधिकरण तथा 2. व्यधिकरण। समानाधिकरण बहुवीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का एक ही अधिकरण (विभक्ति) हो अर्थात् वे प्रथमान्त हों, जैसे– पीताम्बरः = पीतम् अम्बरं यस्य सः (जिसका कपड़ा पीला हो अर्थात् श्री कृष्ण)। व्यधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसमें दोनों शब्द प्रथमान्त न हों; केवल एक ही शब्द प्रथमान्त हो, दूसरा षष्ठी या सप्तमी में हो, जैसे– चन्द्रकान्तिः = चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः, चन्द्रशेखरः = चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिवः), चक्रपाणिः = चक्रं पाणौ यस्य सः (विष्णुः)।

15. 'चक्रपाणिः में समास है—

(a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इन युग्मों में से कौन-सा सही नहीं है?

(a) नीलोत्पलम् - कर्मधारय समास
(b) दशाननः - बहुव्रीहि समास
(c) रामलक्ष्मणौ - अव्ययीभाव समास
(d) दिवारात्रि - द्वन्द्व समास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'रामलक्ष्मणौ' में अव्ययीभाव समास नहीं है, बल्कि द्वन्द्व समास है। शेष युग्मों का सुमेलन सही है।

❑ विभक्ति

1. 'विद्यालयं निकषा नदी अस्ति' में कौन-सी विभक्ति है?

(a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पंचमी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि अर्थात् अभितः (चारों ओर या सब ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा, प्रति (ओर, तरफ) शब्द जिस शब्द के सम्बन्ध में प्रयुक्त हों, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। प्रस्तुत वाक्य में निकषा का प्रयोग हुआ है। अतः यह द्वितीया विभक्ति है।

2. 'सह' के योग में कौन-सी विभक्ति प्रयुक्त होती है?

(a) तृतीया (b) चतुर्थी
(c) पंचमी (d) षष्ठी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सह' के योग में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र का अभिप्राय यह है कि 'सह' के योग में अ प्रधान अर्थात्' जो प्रधान (क्रिया के कर्ता) का साथ देता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे पुत्रेण सह पिता गच्छति। यहाँ 'पुत्रेण' में तृतीया इसलिए लगी है कि गमन क्रिया के साथ पिता का मुख्य सम्बन्ध है। इसी प्रकार 'पित्रा सह पुत्रः गच्छति में पुत्र प्रधान है और पिता अप्रधान रूप से उसका साथ देता है। अतः उसमें तृतीया हुई। इसी प्रकार साथ' अर्थ वाले साकम्, सार्धम् और समम् के योग में तृतीया होती है।

3. 'भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति' में कौन-सी विभक्ति है?

(a) प्रथमा विभक्ति (b) द्वितीया विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) षष्ठी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

येनाङ्गविकारः अर्थात् शरीर का जो अंग विकार से विकृत दिखाई पड़े, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। 'भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति' में तृतीया विभक्ति है।

4. 'गणेशाय नमः' में प्रयुक्त विभक्ति है—

(a) प्रथमा (b) द्वितीया
(c) चतुर्थी (d) षष्ठी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च अर्थात् नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। अतः 'गणेशाय नमः' में सूत्रानुसार चतुर्थी विभक्ति है।

5. ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा........'' के योग में प्रयुक्त होती है।

(a) द्वितीया विभक्ति (b) चतुर्थी विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) पंचमी विभक्ति

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

6. 'नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा.....'के योग में कौन विभक्ति होती है?

(a) प्रथम विभक्ति (b) द्वितीया विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) चतुर्थी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'नमः शिवाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?

(a) चतुर्थी विभक्ति (b) पंचमी विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) षष्ठी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'सर्वस्य, सर्वयोः, सर्वेषाम् - किस विभक्ति के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन के रूप हैं?

(a) पंचमी (b) षष्ठी
(c) सप्तमी (d) चतुर्थी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

सर्वस्य, सर्वयोः एवं 'सर्वेषाम्' सर्व पुल्लिंग शब्द के षष्ठी विभक्ति के एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन का रूप है। पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप क्रमश; सर्वस्मात् सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः है। चतुर्थी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप क्रमशः है-सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः है। 'सर्वस्मिन', सर्वयोः एवं सर्वेषु सप्तमी विभक्ति के तीनों वचनों के रूप हैं।

9. 'जगति', जगत् शब्द के किस विभक्ति का रूप है -

(a) चतुर्थी (b) पंचमी
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'जगति, 'जगत्' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'जगत्' शब्द का षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन में 'जगतोः' और सप्तमी विभक्ति बहुवचन में 'जगत्सु' रूप होता है। 'जगत्' शब्द का पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन में 'जगतः' षष्ठी विभक्ति बहुवचन में 'जगताम्' रूप होता है। 'जगत्' का चतुर्थी विभक्ति एकवचन में 'जगते' रूप होता है।

10. निम्नलिखित में से एक वाक्य में क्रिया 'भक्षण' करने के अर्थ में प्रयुक्त हुई है। यह वाक्य है—

(a) वह हराम का पैसा खाता है।
(b) वह जूते खाता है।
(c) वह कसम खाता है।
(d) वह आम खाता है।

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'भक्षण' का अर्थ किसी खाद्य पदार्थ को खाने से होता है। प्रस्तुत विकल्पों में विकल्प (d) में आम खाद्य पदार्थ है। अतः इस वाक्य में 'भक्षण' क्रिया का सर्वोत्तम अर्थ प्राप्त होता है।

❑ प्रत्यय

1. 'कृति' शब्द का निर्माण किस प्रत्यय के योग से हुआ है?

(a) क्त (b) क्तिन
(c) तव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

कृ (करणे) + क्तिन् > कृति (स्त्री.)। संस्कृत में 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय जुड़कर शब्द 'कृति' बनता है, जिसका अर्थ है– क्रिया से प्राप्त वस्तु।

2. विभक्तिसूचक प्रत्यय को कहते हैं -

(a) टिप् (b) सुप्
(c) गुप् (d) टुप्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विभक्तिसूचक प्रत्यय को 'सुप्' कहते हैं। 'विभक्तिश्च सुपतिङ् विभक्तिसंज्ञौ स्तः' सूत्र के अनुसार, विभिन्न कारक को प्रकट करने के लिए प्रतिपदिकों में जो प्रत्यय लगाये या जोड़े जाते हैं, इन्हें 'सुप्' कहते हैं। इस प्रकार विभिन्न काल की क्रियाओं का अर्थ प्रकट करने के लिए धातुओं में जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उन्हें 'तिङ्' कहते हैं। इन्हीं सुप् और तिङ् को विभक्ति कहते हैं।

3. 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग निम्नलिखित में से किस अर्थ में होता है?

(a) चाहिए (b) योग्य
(c) के लिए (d) करके

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

तुमुन् प्रत्यय 'को', 'के लिए' अर्थ में होता है। जैसे– पठ् + तुमुन् = पठितुम् (पढ़ने के लिए)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ काल-समय वेलासु तुमुन् इस सूत्र के अनुसार काल, समय और बेला, इन शब्दों के उपपद रहते धातु से तुमुन प्रत्यय होता है। 'तुमुन' में मकारोत्तरवर्ती उकार एवं नकार की इत्संज्ञा होने से केवल 'तुम्' ही शेष बचता है।

➲ तुमुन-प्रत्यान्त अव्यय होता है। अतः रूप नहीं चलते।

4. 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग होता है—

(a) करने के अर्थ में
(b) चाहिए के अर्थ में
(c) चुका है के अर्थ में
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'तव्यत्' तथा 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय्) शेष रहता है। जैसे–

दा + अनीयर् = दानीयम्

पठ् + तव्यत् = पठितव्यम्

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➲ 'कर्ता' या 'वाला' अर्थ में–ण्वुल्/तृच्-प्रत्यय

➲ 'कर' या 'करके' अर्थ में– क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय

➲ तव्यत् कृत्य प्रत्यय है, जो विभिन्न धातु से जुड़कर 'योग्य' अथवा 'चाहिए' अर्थ का बोध कराते हैं।

5. करणीयः शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

(a) क्त्वा (b) तव्यत्

(c) अनीयर् (d) तद्धित प्रत्यय

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

विधिलिङ्ग लकार के अर्थ में विधि कृदन्त (तव्यत् तथा अनीयर् इत्यादि) प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है। **जैसे–**आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः (यह आश्रम का मृग है, इसे नहीं मारना चाहिए, नहीं मारना चाहिए) तथा गृहमागतोऽपि शत्रुर्न सम्माननीयः (घर में आए हुए भी शत्रु का सम्मान नहीं करना चाहिए)। 'चाहिए' के अर्थ में 'तव्यत्' तथा 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में अनीयर् प्रत्यय होता है। तव्यत् का तव्य तथा अनीयर् का अनीय रूप ही धातु के साथ जुड़ता है।

धातुओं से तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होने पर धातु के स्वर (इ, उ, ऋ, लृ) को गुण (ए, ओ, अर्' अल्) हो जाता है। **जैसे-** नो + तव्यत्ः = नेतव्यः, श्रु + तव्यत्ः = श्रोतव्यः, कृ + तव्यत्ः = कर्तव्यः, नी + अनीयर् = नयनीयः, श्रु + अनीयर् = श्रवणीयः, कृ + अनीयर् = करणीयः।

❑ शब्द-रूप

1. 'राज्ञा' शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

(a) तृतीया (b) चतुर्थी

(c) पंचमी (d) षष्ठी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(a)

'राज्ञा' शब्द तृतीया विभक्ति का एकवचन है। इसका द्विवचन राजभ्याम् तथा बहुवचन राजभिः होता है।

2. 'राम' शब्द का तृतीया द्विवचन रूप है–

(a) रामाभ्याम् (b) रामान्

(c) रामैः (d) रामेभ्यः

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(a)

'राम' शब्द का तृतीया' द्विवचन रूप 'रामाभ्याम्' है, जबकि एकवचन एवं बहुवचन रूप क्रमशः रामेण तथा रामैः है। 'रामान्' द्वितीया विभक्ति का बहुवचन का रूप है, जबकि 'रामेभ्यः' चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप है।

3. 'रामेण' शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

(a) प्रथमा (b) द्वितीया

(c) तृतीया (d) पंचमी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'राम' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है–

(a) रामौ (b) रामस्य

(c) रामे (d) रामेषु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

रामस्य 'राम' अकारान्त पुल्लिंग शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है। 'रामौ' प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन का रूप है। 'रामे' सप्तमी एकवचन और 'रामेषु' सप्तमी बहुवचन का रूप है।

5. 'गुरोः' गुरु शब्द के किस विभक्ति का रूप है?

(a) पंचमी (b) तृतीया

(c) द्वितीया (d) चतुर्थी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर–(a)

'गुरोः' उकारान्त पुल्लिंग गुरु शब्द के पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। पंचमी विभक्ति के द्विवचन में 'गुरुभ्याम्' एवं बहुवचन में 'गुरुभ्यः' रूप है। द्वितीया विभक्ति के क्रमशः रूप हैं-गुरुम्,गुरु, गुरुन् । तृतीया विभक्ति एकवचन में 'गुरुणा' और बहुवचन में 'गुरुभिः' रूप है। चतुर्थी विभक्ति एकवचन में 'गुरुवे' और बहुवचन में 'गुरुभ्यः' रूप है।

6. 'मुनि' शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन रूप है–

(a) मुनये (b) मुनेः

(c) मुनौ (d) मुन्योः

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

'मुनेः', 'मुनि' इकारान्त पुल्लिग शब्द का पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'मुनये' चतुर्थी विभक्ति एकवचन, 'मुनौ' सप्तमी विभक्ति एकवचन, 'मुन्योः' षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन का रूप है।

7. ''अर्थवैमल्यं प्रसादः– अर्थ कि विमलता ही प्रसाद गुण है।'' उपर्युक्त परिभाषा किस आचार्य की है-

(a) आनंदवर्धन (b) रुद्रट

(c) वामन (d) दण्डी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड)परीक्षा, 2018

उत्तर–(c)

वामन ने 10 अर्थ गुण बताए हैं, वे हैं–
अर्थस्यप्रौढ़िरोजः।अर्थवैमल्यं प्रसादः। घटनाश्लेषः। अवैभ्यं समता। अर्थदृष्टिः समाधिः।उक्तिवैचित्र्यं माधुर्यम्। अपारुष्यं सौकुमार्यम्। अग्राम्यत्‌-मुदारता। वस्तुस्वभावस्फुटत्वमर्थव्यक्तिः। दीप्तरसत्वं कान्तिः। 'अर्थवैमल्यं प्रसादः'' का अर्थ है- विमलता ही प्रसाद गुण है।

8. 'पितृ' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है—

(a) पितृः (b) पितराः
(c) पितरः (d) पितारः

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

पितरः, पितृ (पिता) ऋकारान्त पुंल्लिंग शब्द के प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप है, जबकि प्रथम तीनों वचनों के रूप हैं—पिता, पितरौ, पितरः।

9. इनमें से किस शब्द में सप्तमी विभक्ति एकवचन है?

(a) जगते (b) नाम्ना
(c) सरिति (d) हरेः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

सरित् (नदी) स्त्रीलिंग शब्द में सप्तमी विभक्ति एकवचन में 'सरिति' रूप होता है, जबकि इसका द्विवचन में 'सरितोः' और बहुवचन में सरित्सु रूप होता है। 'जगते' चतुर्थी विभक्ति एकवचन, 'नाम्ना' तृतीया विभक्ति एकवचन, 'हरेः', 'हरि' शब्द के पंचमी और षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

10. 'रमा' शब्द के रूप की सप्तमी विभक्ति के बहुवचन में होगा—

(a) रमासु (b) रमाणाम्
(c) रमयोः (d) रमायाम्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'रमासु', रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के सप्तमी विभक्ति का बहुवचन है। 'रमाणाम्' षष्ठी विभक्ति बहुवचन, 'रमयोः' षष्ठी और सप्तमी विभक्ति द्विवचन, 'रमायाम्' सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है।

11. 'मति' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है—

(a) मत्या (b) मत्याः
(c) मतयः (d) मतये

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'मत्याः तथा मतेः', 'मति' (बुद्धि) इकारान्त स्त्रीलिंग पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'मत्या' तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है। 'मतयः' प्रथमा बहुवचन तथा 'मत्यै एवं मतये' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। इसी प्रकार मत्याम् अथवा मतौ सप्तमी विभक्ति एकवचन एवं मतिषु सप्तमी विभक्ति बहुवचन का रूप है।

12. 'मत्याम्' शब्द रूप है—

(a) 'मति शब्द' के द्वितीया एकवचन का
(b) 'मति शब्द' के द्वितीया बहुवचन का
(c) 'मति शब्द' के षष्ठी बहुवचन का
(d) 'मति शब्द' के सप्तमी एकवचन का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'नामन्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन का रूप है—

(a) नाम्ना नामभ्याम् नामभिः (b) नाम्नः नामभ्याम् नामभिः
(c) नाम्नः नाम्नोः नाम्नम् (d) नाम्ने नामभ्याम् नामभ्यः

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'नामन्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन में 'नाम्ने', द्विवचन में 'नामभ्याम्' एवं बहुवचन में 'नामभ्यः' रूप है। 'नाम्नः, नाम्नोः तथा नाम्नाम्', 'नामन्' शब्द के पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप है। 'नाम्ना, 'नामभ्याम् तथा नामभिः' तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों का रूप है।

14. 'स्वसृ' शब्द के चतुर्थी विभक्ति में दिए हुए रूपों में गलत कौन-सा है?

(a) स्वस्रे (b) स्वसुः
(c) स्वसृभ्याम् (d) स्वसृभ्यः

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'स्वसृ' शब्द के चतुर्थी विभक्ति में दिए हुए रूपों में स्वसुः गलत है। 'स्वसुः' पंचमी और षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

15. 'आत्मन्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप है—

(a) आत्मनः (b) आत्मभ्यः
(c) आत्मने (d) आत्मनी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

नकारान्त आत्मन् शब्द के चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप 'आत्मभ्यः' है। जबकि इसका एकवचन में 'आत्मने' एवं द्विवचन में 'आत्मभ्याम्' रूप है। 'आत्मनः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

16. 'आत्मन्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति द्विवचन में रूप होगा—

(a) आत्मभ्याम् (b) आत्माभ्याम्
(c) आत्मानम् (d) आत्मनोः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. सही जोड़ी कौन है?

(a) रमायाम्-प्रथमा बहुवचन (b) गौर्याः-पंचमी एकवचन

(c) वारिणि-द्वितीया द्विवचन (d) गावः-षष्ठी एकवचन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

रमायाम्—रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है।
गौर्याः—गौरी, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का पंचमी एकवचन का रूप है।
वरिणि—वारि (पानी) इकारान्त नपुंसकलिंग शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है।
गावः—गो (गाय या बैल) ओकारान्त पुल्लिंग शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है।

18. 'जगत' शब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है—

(a) जगते (b) जगतः

(c) जगतोः (d) जगद्भ्यः

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

जगते—'जगत्' शब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है।
जगतः—पंचमी और षष्ठी एकवचन का रूप है।
जगतोः—षष्ठी और सप्तमी द्विवचन का रूप है।
जगद्भ्यः—चतुर्थी और पंचमी बहुवचन का रूप है।

19. जगतः शब्द रूप में कौन-सा वचन है?

(a) एकवचन (b) द्विवचन

(c) बहुवचन (d) सभी सही है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'सरिते' शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

(a) प्रथमा (b) द्वितीया

(c) तृतीया (d) चतुर्थी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

'सरिते' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। इसका द्विवचन सरिद्भ्याम् तथा बहुवचन सरिदभ्यः होता है।

21. 'अस्मभ्यम्' शब्द रूप है—

(a) 'अस्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का

(b) 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का

(c) 'अस्मद्' शब्द के षष्ठी एकवचन का

(d) 'अस्मद्' शब्द के षष्ठी बहुवचन का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'अस्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप 'अस्मभ्यम्'/'नः', तृतीया एकवचन का रूप 'मया', षष्ठी एकवचन का रूप 'मम'/मे' तथा षष्ठी बहुवचन का रूप 'अस्माकम्'/'नः' है।

22. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के रूप हैं—

(a) अहम्, आवाम, वयम्। (b) मया, आवाभ्याम, अस्माभिः

(c) मत्, आवाभ्यम्, अस्मत् (d) मम्, आवयोः, अस्माकम्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति का रूप हैं—मया, आवाभ्याम्, अस्माभिः। अहम्, आवाम्, वयम् प्रथमा विभक्ति, मत्, आवाभ्याम्, अस्मत् पंचमी विभक्ति तथा मम/मे, आवयोः/नौ, अस्माकम्/नः, षष्ठी विभक्ति के रूप हैं।

23. 'अस्मद' (मैं) शब्द का तृतीया बहुवचन रूप है—

(a) अस्मान (b) वयम्

(c) अस्मत् (d) अस्माभिः

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. अस्मद् शब्द के पंचमी विभक्ति में दिए हुए रूपों में गलत कौन-सा है?

(a) मत् (b) आवाभ्याम्

(c) अस्मत् (d) अस्मभ्यम्

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'युष्मद' शब्द का तृतीया में एकवचन होगा—

(a) त्वम् (b) त्वाम्

(c) त्वया (d) त्वत्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'युष्मद' शब्द का तृतीया विभक्ति एकवचन में 'त्वया' होगा। 'त्वम्', 'युष्मद' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है। 'त्वाम्' 'युष्मद' शब्द का द्वितीया विभक्ति एकवचन का रूप है, जबकि इसका द्विवचन में 'युवाम्, वाम् तथा बहुवचन में 'युष्मान्'/'वः' रूप होता है। 'त्वत्' युष्मद शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन तथा बहुवचन में 'युष्मत्' रूप होता है।

26. युष्मद् शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिए रूपों में गलत कौन-सा है?

(a) तव (b) त्वयि

(c) युवयोः (d) युष्मासु

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'युष्मद्' शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिए गए रूपों में 'तव' गलत है। 'तव/ते' षष्ठी विभक्ति का एकवचन का रूप है।

27. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होगा—

(a) त्वयि (b) तव

(c) त्वम् (d) त्वत्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'हरि' शब्द का सप्तमी बहुवचन रूप है—

(a) हरिभिः (b) हरिभ्यः

(c) हरिषु (d) हरीन्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हरि' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप 'हरिषु' है, जबकि इसका एकवचन में 'हरौ' तथा द्विवचन में 'हर्योः' रूप होता है। 'हरिभिः' तृतीया बहुवचन का रूप है, इसका एकवचन में 'हरिणा' एवं द्विवचन में हरिभ्याम् रूप होता है। 'हरिन्' द्वितीया बहुवचन का रूप है, इसका एकवचन में 'हरिम्' एवं द्विवचन में 'हरी' है। 'हरेः' पंचमी एवं षष्ठी एकवचन का रूप है।

29. 'हरिणा' 'हरिभ्याम्' हरिभिः - किस विभक्ति के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के रूप हैं?

(a) पंचमी (b) चतुर्थी

(c) तृतीया (d) सप्तमी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'हरि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का सही रूप है—

(a) हरये (b) हरे

(c) हरी (d) हरयोः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'हरि' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन का सही रूप 'हरये' है, जबकि द्विवचन में 'हरिभ्याम्' और बहुवचन में 'हरिभ्यः' रूप होता है।

31. 'इदम्' शब्द (स्त्रीलिंग) के तृतीया विभक्ति एकवचन में रूप होगा—

(a) अस्यै (b) अस्याः

(c) अनया (d) अनयोः

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'इदम्' शब्द (स्त्रीलिंग) के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप 'अनया' अथवा 'एनया' होता है। 'अस्यै' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अस्याः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अनयोः अथवा एनयोः' षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन का रूप है।

32. 'अदस्' (वह) शब्द के स्त्रीलिंग, पंचमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा—

(a) अमूभ्यः (b) अमुष्याः

(c) अमूः (d) अमुया

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'अमूभ्यः', अदस् (वह) शब्द के स्त्रीलिंग चतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति बहुवचन का रूप है। 'अमुष्याः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अमूः' प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति बहुवचन, 'अमुया' तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है।

33. 'सर्वस्य' रूप है—

(a) चतुर्थी का (b) पंचमी का

(c) षष्ठी का (d) सप्तमी का

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सर्व (सब) सर्वनाम पुल्लिंग एव नपुंसकलिंग का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप सर्वस्य है। चतुर्थी एकवचन में सर्वस्मै, पंचमी विभक्ति एकवचन में सर्वस्मात्, सप्तमी एकवचन में सर्वस्मिन् रूप है।

❑ धातु रूप

1. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
A. लट् लकार	1. भविष्यत काल
B. लोट लकार	2. वर्तमान काल
C. लङ्ग लकार	3. आज्ञार्थक
D. लृट् लकार	4. भूतकाल

कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	4	1	2
(b)	3	1	2	4
(c)	1	2	3	4
(d)	2	3	4	1

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
लट् लकार	-	वर्तमान काल
लोट् लकार	-	आज्ञार्थक
लङ्ग लकार	-	भूतकाल (अनद्यतन भूत)
लृट् लकार	-	भविष्यत काल

2. **'लृट्' लकार किस काल का बोधक है?**

(a) वर्तमान काल का
(b) भूतकाल का
(c) भविष्यत् काल का
(d) किसी काल का नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

लृट् लकार भविष्यत् काल का बोधक है। संस्कृत में धातु के 10 लकार (वृत्तियाँ) होते हैं। ये दसों लकार इस प्रकार से हैं–

लकार	**काल का बोधक**
लट् लकार	वर्तमान काल
लङ्ग लकार	भूतकाल (अनद्यतन भूत)
लृट् लकार	भविष्यत् काल
लोट् लकार	आज्ञार्थक
विधिलिङ्ग	आज्ञा या चाहिए अर्थ
लिट् लकार	अनद्यतन परोक्ष भूत
लुट् लकार	अनद्यतन भविष्यत्
आशीर्लिङ्ग	आशीर्वाद
लङ्ग लकार	सामान्य भूतकाल
लृङ्ग लकार	हेतुहेतुमद् भूत या भविष्यत्

नोट—'लेट् लकार' वेदों में प्राप्त होता है।

3. **लोट् लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है?**

(a) भूतकाल के लिए
(b) वर्तमान काल के लिए
(c) आज्ञा व आशीर्वाद के लिए
(d) चाहिए के अर्थ में

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में लोट् लकार के बारे में हैं, किन्तु उत्तर विकल्प में लोट् लकार एवं आशीर्लिङ्ग के अर्थ 'आज्ञा व आशीर्वाद के लिए' दिया गया है, जबकि उत्तर रूप में केवल 'आज्ञार्थक' होना चाहिए।

4. **'वेत्सि' आख्यात पद में कौन-सा लकार है?**

(a) लट् (b) लोट्
(c) लुट् (d) लङ्ग

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'वेत्सि' आख्यात पद में लट् लकार है।

5. **'पिब्' धातु का लोट् लकार, में प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप होगा—**

(a) पिबत (b) पिबन्तु
(c) पिबन्ति (d) पिबथः

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'पिबन्तु', 'पिब्' धातु का लोट् लकार के प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है। 'पिबथः' लट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है। 'पिबन्ति' लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप तथा पिबत लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है, **नोट**—'पा' को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पिब् हो जाता है।

6. **'अपिबत्' धातु रूप में कौन-सा लकार है?**

(a) लङ्ग लकार (b) लट् लकार
(c) लोट् लकार (d) लृट् लकार

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'अपिबत्', 'पा' धातु लङ्ग लकार (भूतकाल) प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है तथा प्रथम पुरुष द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः अपिबताम् और अपिबन् है।

7. **'अकरोः' रूप है—**

(a) 'कृ' धातु, लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(b) 'कृ' धातु, लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(c) 'कृ' धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(d) 'कृ' धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

अकरोः 'कृ' धातु लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है।
करोतु 'कृ' धातु लोट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।
कुर्वन्ति 'कृ' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है।
करिष्यावः 'कृ' धातु लृट् लकार, उत्तम पुरुष द्विवचन का रूप है।

8. **'नी' धातु के 'लङ्ग लकार' मध्यम पुरुष एकवचन में रूप होगा—**

(a) अनयम् (b) अनयन्
(c) अनयत् (d) अनयः

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'अनयः', 'नी' धातु उभयपदी लङ्ग लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। मध्यम पुरुष के तीनों वचनों का रूप अनयः, अनयतम्, अनयत है। लङ्ग लकार प्रथम पुरुष तीनों वचनों का रूप अनयत्, अनयताम्, अनयन् है।

9. **स्पर्श धातु के लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष के दिए रूपों में गलत कौन है?**

(a) स्पर्क्ष्यसि (b) स्पर्क्ष्यावः
(c) स्पर्क्ष्यथः (d) स्पर्क्ष्यथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का स्वरूप ही गलत है। प्रश्न में स्पर्श् धातु के लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष का गलत रूप पूछा गया है, जबकि तीन विकल्पों में लृट् लकार के मध्यम पुरुष के तीनों रूप दिए गये हैं और एक विकल्प में स्पर्क्ष्यावः दिया गया है, जो उत्तम पुरुष के द्विवचन का रूप है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (b) बताया गया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

10. स्पर्श् धातु के लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष में दिए रूपों में गलत कौन है?

(a) अस्पृशः (b) अस्पृशताम्

(c) अस्पृशतम् (d) अस्पृशत

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'स्पर्श्' धातु परस्मैपदी लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष में दिए रूपों में 'अस्पृशताम्' गलत है। यह लङ्ग लकार के प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है।

11. 'हस' धातु के लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन में रूप होगा—

(a) अहसः (b) अहसतम्

(c) अहसन् (d) अहसताम्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2015

उत्तर—(b)

'हस' धातु के लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन में 'अहसतम्' रूप होगा, जबकि इसका एकवचन में 'अहसः' एवं बहुवचन में 'अहसत' रूप है। 'अहसन्' लङ्ग लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है, जबकि इसका एकवचन में 'अहसत्' एवं द्विवचन में 'अहसताम्' रूप होता है।

12. पठ् धातु के लङ्ग लकार, उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन-सा होगा?

(a) अपठाम (b) अपठाव

(c) अपठम (d) अपठन

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अपठाम पठ् धातु के लङ्ग लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है। पठ् धातु के लङ्ग लकार के उत्तम पुरुष तीनों वचनों का रूप है—अपठम्, अपठाव, अपठाम।

13. 'पठ्' धातु के वर्तमान काल में मध्यम पुरुष के एकवचन का रूप है—

(a) पठति (b) पठसि

(c) पठन्ति (d) पठामि

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'पठ्' धातु परस्मैपदी वर्तमान काल (लट् लकार) में मध्यम पुरुष एकवचन का रूप 'पठसि' है। मध्यम पुरुष के तीनों वचनों के रूप 'पठसि, पठथः, पठथ' है। प्रथम पुरुष के तीनों वचनों के रूप 'पठति, पठतः, पठन्ति' हैं, जबकि 'पठामि, पठावः, पठामः' उत्तम पुरुष का तीनों वचनों का रूप है।

14. पठ् धातु (परस्मैपदी) लृट् लकार के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है—

(a) पठिष्यतः (b) पठिष्यामः

(c) पठिष्यथ (d) पठिष्यामि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पठ्' धातु (परस्मैपदी) लृट् लकार के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप 'पठिष्यामि' है; जबकि इसका द्विवचन में 'पठिष्यावः' एवं बहुवचन में 'पठिष्यामः' रूप है।

15. 'दुह्' धातु के लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप है—

(a) धोक्षि (b) दोहि

(c) दुग्धसि (d) दुहसि

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'दुह्' धातु का लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप धोक्षि होता है, जबकि इसका द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः दुग्धः एवं दुग्ध होता है।

16. 'स्था' धातु का लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप होगा—

(a) तिष्ठत् (b) अतिष्ठति

(c) अतिष्ठन् (d) अतिष्ठत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'स्था' धातु का लङ्ग लकार' परस्मैपद मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है—अतिष्ठत। इसका एकवचन एवं द्विवचन में क्रमशः अतिष्ठः तथा अतिष्ठतम्, होता है।

नोट—स्था का लट्, लोट्, लङ्ग और विधिलिङ्ग में तिष्ठ हो जाता है। स्था का अर्थ है—रुकना या ठहरना।

17. 'तिष्ठति' धातु रूप में कौन-सा लकार है?

(a) लट् लकार (b) लोट् लकार

(c) लङ्ग लकार (d) विधिलिङ्ग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'स्था' (रुकना) धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) 'तिष्ठति' प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। इसके द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः तिष्ठतः एवं तिष्ठन्ति हैं।

18. 'बभूव' धातु रूप किस लकार का है?

(a) लङ्   (b) लुङ्
(c) लिट्   (d) लिङ्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'बभूव' भ्वादिगण की परस्मैपदी 'भू' (होना) धातु का लिट् लकार (परोक्ष भूत) का प्रथम पुरुष, एकवचन, मध्यम पुरुष, बहुवचन और उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है। 'लङ् लकार', अनद्यतन भूतकाल में होता है। आज का भूतकाल होगा, तो लङ् नहीं होगा, अपितु लुङ् होगा।

19. 'वन्द' धातु के लङ् लकार के प्रथम पुरुष के दिए रूपों में गलत कौन सा है?

(a) वन्दते   (b) वन्देते
(c) वन्देये   (d) वन्दन्ते

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का स्वरूप ही गलत है। प्रश्न में 'वन्द' धातु के लङ् लकार के प्रथम पुरुष का गलत रूप पूछा गया है, जबकि प्रश्न के तीनों विकल्पों में लट् लकार का रूप दिया है। यदि प्रश्न का स्वरूप सही होता अर्थात् लट् लकार के प्रथम पुरुष के लिए गलत रूप पूछा गया होता, तो इसका उत्तर विकल्प (c) अर्थात् वन्देये होता। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चायन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) दिय था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

20. 'गमिष्यति' धातु रूप में कौन-सा काल है?

(a) वर्तमान काल   (b) भूतकाल
(c) भविष्यकाल   (d) लोट् लकार

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

'गमिष्यति' (गम् धातु) लृट् लकार (भविष्यत् काल) के एकवचन का प्रथम पुरुष है। इसका मध्यम पुरुष गमिष्यसि तथा उत्तम पुरुष गमिष्यामि होता है।

❑ कारक

1. 'प्रजाभयः स्वस्ति' शब्द में कौन-सा कारक है?

(a) करण   (b) सम्प्रदान
(c) अपादान   (d) कर्ता

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(b)

'प्रजाभयः स्वस्ति' शब्द में सम्प्रदान कारक है जिसका सूत्र 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च' अर्थात् नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थ वाले अन्य अर्थ) वषट् के साथ चतुर्थी (सम्प्रदान कारक) होती है। **जैसे–**गुरवे नमः। शिष्याय स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा आदि।

2. 'सहयुक्तेप्रधाने' में कौन-सा कारक है?

(a) कर्ता   (b) कर्म
(c) करण   (d) अपादान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर–(c)

क्रिया की सिद्धि में कर्ता के साधकतम को करण कहते हैं और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।
सहार्थे तृतीया अथवा 'सहयुक्तेऽप्रधाने'–सह, साकम्, समम्, और सार्धम् के योग से (साथ अर्थ में) अप्रधान पद (गौणपद) में तृतीया विभक्ति होती है। क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रहने पर शब्द प्रधान और पारस्परिक सम्बन्ध रहने पर अप्रधान होता है। **यथा-**रामेण सह (साकं साधं समं वा) सीता वनं जगाम (राम के साथ सीता बन गई)। यहाँ सह के योग में 'रामेण' में तृतीया विभक्ति हुई।

3. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है–

(a) मातरं निलीयते कृष्णः   (b) मातरि निलीयते कृष्णः
(c) मातुर्निलीयते कृष्णः   (d) मात्रा निलीयते कृष्णः

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(c)

'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' सूत्रानुसार, जब कोई अपने को किसी से छिपाता है, तो जिससे छिपाता है, वह अपादान होता है। जैसे–मातुर्निलीयते कृष्णः (कृष्ण अपनी माता से छिपता है) यहाँ पर कृष्ण अपने को 'माता से' छिपाता है, इसलिए 'माता से' अपादान कारक हुआ।

4. 'अर्जुनस्य वचनं द्वयम्' वाक्य में 'अर्जुनस्य' का कारक है–

(a) करण   (b) सम्प्रदान
(c) सम्बान्ध   (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर–(c)

षष्ठी शेषे 2/3/50 (पाणिनीसूत्र) इस सूत्र का अर्थ यह है कि जो बात विभक्तियों से नहीं बताई जा सकती, उनको बताने के लिए षष्ठी होती है।
उदाहरण–अर्जुनस्य वचनं द्वयम् अर्थात् अर्जुन का दुविधापूर्ण मत। यहाँ पर अर्जुन द्वारा बोला गया वचन दुविधापूर्ण है अर्थात् इसमें सम्बन्ध कारक है, इसी को दिखाने के लिए अर्जुनस्य में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग करते हुए सम्बन्ध कारक का प्रयोग किया गया है।

❑ अनुवाद

1. 'छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं।' इसका सही संस्कृत अनुवाद है–

(a) छात्रः द्वे पुस्तकौ क्रीतः।   (b) छात्रः पुस्तकौ अक्रीणात्।
(c) छात्रः द्वौ पुस्तकौ क्रीतः।   (d) छात्रः द्वे पुस्तकाणि क्रीयन्ते।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर–(c)

'छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं।' इसका सही संस्कृत अनुवाद 'छात्रः द्वौ पुस्तकौ क्रीतः' है।

2. 'विद्यालयं निकषा जलाशयः अस्ति' का सही अर्थ है?

(a) विद्यालय से दूर जलाशय है।

(b) विद्यालय के समीप जलाशय है।

(c) विद्यालय के थोड़ी दूरी पर विद्यालय है।

(d) विद्यालय के कोने में जलाशय है।

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'विद्यालयं निकषा जलाशयः अस्ति' इसका सही अर्थ है— विद्यालय के समीप जलाशय है।

3. 'रामः गृहं गच्छति' शब्द का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

(a) राम घर जाता है। (b) राम घर से आता है।

(c) राम घर पर आता है। (d) राम घर को जाता है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'रामः गृहं गच्छति' शब्द का हिन्दी अनुवाद है—'राम घर जाता है।'

4. 'हम महान राष्ट्र के नागरिक हैं' का संस्कृत में अनुवाद होगा—

(a) वयं भारत राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।

(b) वयं भारत राष्ट्रे नागरिकः अस्ति।

(c) वयं महतः भारतस्य नागरिकाः स्म।

(d) वयं महतः राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'हम महान् राष्ट्र के नागरिक हैं' का संस्कृत अनुवाद होगा—वयं महतः राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।

5. ज्ञानिभिः सार्धं कदापि न दुह्यते' का अनुवाद है—

(a) ज्ञानी के साथ बैर अच्छा नहीं होता है।

(b) ज्ञानियों के साथ बैर नहीं करना चाहिए।

(c) ज्ञानी के साथ कभी भी बैर नहीं करना चाहिए।

(d) ज्ञानी जनों के साथ बैर अनुचित है।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

ज्ञानिभिः सार्धं कदापि न दुह्यते का हिन्दी में अनुवाद है—ज्ञानी के साथ कभी भी बैर नहीं करना चाहिए।

6. 'वह बालक उद्यान में विचरण करता है' - इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—

(a) सः बालकाः उद्यानात् विहरति।

(b) सः बालकाः उद्याने विहरति।

(c) सः बालकाः उद्याने विहरन्ति।

(d) सः बालकः उद्याने विहरति।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'वह बालक उद्यान में विचरण करता है'-इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा-सः बालकः उद्याने विहरति। जिस पुरुष और जिस वचन में कर्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन की होगी।

7. 'वह स्नान करके जाती है'-वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—

(a) सा स्नानं कृत्वा गच्छति।

(b) सा स्नानं कृत्वा गच्छसि।

(c) सा स्नानं कृत्वा गमिष्यसि।

(d) सा स्नानं कृत्वा गच्छाव।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'वह स्नान करके जाती है'-वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा-सा स्नानं कृत्वा गच्छति।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

1. क्त्वा प्रत्यय का 'त्वा' शेष रहता है।
2. यह भूतकाल में प्रयोग किया जाता है।
3. 'क्त्वा' प्रत्यय 'करके' अर्थ में प्रयोग किया जाता है।
4. 'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

8. 'राम दशरथ के पुत्र थे' का संस्कृत मूल है—

(a) रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

(b) रामः दशरथस्य पुत्र अस्मिन।

(c) दशरथ रामस्य जनकः आसीत्।

(d) रामस्य दशरथः जनक अस्मिन।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'राम दशरथ के पुत्र थे', का संस्कृत अनुवाद है-रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

9. 'मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष हैं' का संस्कृत में अनुवाद होगा—

(a) मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

(b) मार्गस्य उभयतः वृक्षः सन्ति।

(c) मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।

(d) मार्गे वृक्षाः सन्ति।

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(a)

उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।

द्वितीयाम्रेडितान्तेषु, ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।

अर्थात् उभयः, सर्वतः, धिक् , उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अध्यधि शब्दों का जिसमें संयोग हो, तो उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। अतः स्पष्ट है कि 'मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष हैं' का संस्कृत अनुवाद मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति होगा।

10. **गाँव के चारों ओर जल है,**
उपर्युक्त वाक्य का निम्नलिखित में से कौन-सा संस्कृत अनुवाद सही है?
(a) ग्रामम् परितः जलम् अस्ति।
(b) ग्रामस्य परितः जलम् अस्ति।
(c) ग्रामस्य चहुँदिशासु जलम् अस्ति।
(d) ग्रामस्य चहुँदिशासु जलम् सन्ति।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि अर्थात् अभितः (चारों ओर या सब ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा, प्रति (ओर, तरफ) शब्द जिस शब्द के सम्बन्ध में प्रयुक्त हों, उसमें द्वितीया होती है। जिसका अनुवाद इस नियम के आधार पर 'गाँव के चारों ओर जल है' का संस्कृत में अनुवाद 'ग्रामम् परितः जलम् अस्ति' होगा।

11. **शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—**
(a) ग्रामे परितः वृक्षाः सन्ति। (b) ग्रामस्य परितः वृक्षाः सन्ति।
(c) ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति। (d) ग्रामं परितः वृक्षाः अस्ति।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त विकल्पों में 'ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति' वाक्य शुद्ध है। शेष व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है।

12. **''गांव के दोनों ओर रास्ते हैं''.......का संस्कृत में सही अनुवाद होगा-**
(a) ग्रामस्य परितः मार्गाणि सन्ति
(b) ग्रामम् उभयतः मार्गो स्तः
(c) ग्रामम् उभयतः मार्गः सन्ति
(d) ग्रामस्य उभयतः मार्गो स्तः

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

''गांव के दोनों ओर रास्ते हैं'' का संस्कृत अनुवाद है-ग्रामस्य परितः मार्गाणि सन्ति।

13. **'गंगा हिमालय से निकलती है' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिए गए हैं, सही वाक्य का चयन कीजिए—**
(a) गंगा हिमालयोः प्रभवति। (b) गंगा हिमालयम् प्रभवति।
(c) गंगा हिमालयेण प्रभवति। (d) गंगा हिमालयात् प्रभवति।

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'भुवः प्रभवश्च' सूत्र के अनुसार, उत्पन्न वाले का जो 'प्रभव' अर्थात् उत्पत्ति स्थान होता है, वह अपादान कहलाता है।
'गंगा हिमालय से निकलती है' का संस्कृत में अनुवाद होगा—
गंगा हिमालयात् प्रभवति।

14. **'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिए गए हैं, सही वाक्य का चयन करिए—**
(a) वृक्षस्य पत्राणि पतंति। (b) वृक्षेण पत्राणि पतंति।
(c) वृक्षत् पत्राणि पतंति। (d) वृक्षे पत्राणि पतंति।

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं के लिए अनुवाद 'वृक्षात् पत्राणि पतंति' होगा। यह अपादान पंचमी के अन्तर्गत आता है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में विकल्प (c) सही उत्तर होता, किन्तु वर्तनी त्रुटि के कारण यह त्रुटिपूर्ण है। विकल्प (c) में वृक्षत् के स्थान पर वृक्षात् होना चाहिए। चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

विविध

1. **'सुखदुःखात्मकोरसः कहने वाले आचार्य हैं—**
(a) भरतमुनि (b) रामचन्द्र गुणचन्द्र
(c) आचार्य विश्वनाथ (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नाट्यदर्पण की 109वीं कारिका है-सुखदुःखात्मककोरसः अर्थात् रस सुख-दुःख स्वभाव वाले होते हैं। नाट्यदर्पण की रचना आचार्य रामचन्द्र और गुणचन्द्र ने किया था। ये दोनों भारतीय नाट्यशास्त्र के आचार्य थे। आचार्य रामचन्द्र और आचार्य गुणचन्द्र दोनों ही जैन विद्वान हेमचन्द्राचार्य के शिष्य थे। दोनों की सम्मिलित रचना 'नाट्यदर्पण' है।

2. **''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः''—यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है?**
(a) नीतिशतकम् (b) उत्तररामचरितम्
(c) कादम्बरी-शुकनासोपदेश (d) स्वप्नवासवदत्तम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

प्रस्तुत सूक्ति बाणभट्ट द्वारा प्रणीत कादम्बरी-शुकनासोपदेश से अवतरित है। यह प्रसंग चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर शुकनास द्वारा उपदेश देने के समय का है—''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः'' अर्थात् नवयुवकों की आँखें (अपनी) सफेदी को न छोड़ती हुई भी (सफेद रहती हुई भी) 'सराग' (लाल-कामोन्माद से प्रभावित) हो जाती हैं।

3. **कालिदास ने 'सुलभकोपो महर्षिः' किसे कहा है?**
(a) दुर्वासा को (b) परशुराम को
(c) वशिष्ठ को (d) विश्वामित्र को

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक में शकुन्तला की सखी प्रियंवदा दुर्वासा को–'एषः दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः' (यह हैं अति क्रोधी दुर्वासा) कहती है।

4. 'वामाः कुलस्याधयः' में 'वामाः' शब्द का अभिप्राय है–
(a) मनोनुकूल व्यवहार करने वाली स्त्रियाँ
(b) विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ
(c) सामान्य युवतियाँ
(d) वक्र स्वभाव वाली स्त्रियाँ

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर–(b)

'वामाः' शब्द का अभिप्राय है– 'विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ' तथा 'आधयः' का अर्थ है, 'विपत्ति के कारण स्वरूप'। अर्थात् 'वामाः कुलास्याधयः, का अभिप्राय है–'विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ कुल के लिए अभिशाप होती हैं'। यह प्रकरण अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक के 18वें श्लोक में वर्णित है।

5. 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'–यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है?
(a) नीतिशतकम् (b) शृंगारशतकम्
(c) मेघदूतम् (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(c)

प्रस्तुत सूक्ति कालिदास कृत 'पूर्व मेघदूतम्' से अवतरित है। इस सूक्ति का तात्पर्य है–कामपीड़ित (व्यक्ति) चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से दीन (विवेकशून्य) होते हैं।

6. 'समास की अधिकता ओज कहलाती है' (ओजस्समास-भूयस्त्वम्) यह किसका कथन है?
(a) भरत (b) वामन
(c) रूय्यक (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(b)

'ओजस्समास-भूयस्त्वम् यह कथन आचार्य वामन का है। काव्य में रीति का विशेष महत्व है, क्योंकि वह काव्य शरीर का एकमात्र आधार है। वामन ने वैदर्भी, गौडी एवं पांचाली तीन रीतियाँ मानी हैं। प्रायः यह तीनों ही अधिकांश आचार्यों को मान्य है।

वैदर्भी–माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त, दीर्घ समासों से रहित अथवा छोटे समासों वाली ललितपद रचना का नाम वैदर्भी है।

गौडी–ओज प्रकाश वर्णों से सम्पन्न, दीर्घसमास वाली शब्दाडम्बरवती रीति गौडी होती है।

पांचाली–ओज एवं कान्तिसमन्वित पदों की मधुर सुकुमार रचना को पांचाली कहते हैं।

7. संस्कृत व्याकरण के अनुसार इनमें से एक ही शब्द शुद्ध है -
(a) नीरोग (b) मृत्योपरान्त
(c) श्राप (d) षष्ठम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर–(a)

संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'नीरोग' शब्द शुद्ध है। इसका सन्धि विच्छेद 'निः + रोग' होता है। मृत्योपरान्त, श्राप तथा षष्ठम् अशुद्ध वर्तनी है। इसका शुद्ध वर्तनी क्रमशः मृत्यूपरान्त, शाप तथा षष्टम् हैं।

8. इनमें से किनके अनुसार 73 अलंकार हैं?
(a) रुद्रट (b) दण्डी
(c) भामह (d) विश्वनाथ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर–(*)

भरत नाट्यशास्त्र में उपमा, रूपक, दीपक तथा यमक केवल इन चार ही अलंकारों का वर्णन पाया जाता है। रुद्रट ने अपने काव्यालंकार में 52 प्रकार के, दण्डी ने 35 प्रकार के, भामह ने 39 प्रकार के, विश्वनाथ ने 78 प्रकार के, वामन ने 33 प्रकार के, उद्भट ने 40 प्रकार के काव्यप्रकाशकार मम्मट ने 67 प्रकार के, जयदेव ने 'चन्द्रालोक' में 100 प्रकार के, और अप्पय दीक्षित ने अपने ग्रन्थ 'कुवलयानन्द' में 124 प्रकार के अलंकारों का वर्णन किया है।

9. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' में कर्ता कौन है?
(a) मध्याः (b) उत्तमाः
(c) नीचैः (d) साधारणः

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(c)

'प्रारभ्यते न खलु, विघ्नभयेन नीचैः' नीतिशतक में संकलित अथ धैर्य पद्धतिः से अवतरित है। जिसके लेखक भर्तृहरि हैं। इस उक्ति का अर्थ है कि अधम (नीच) लोग विघ्नों के भय से किसी कार्य को प्रारम्भ नहीं करते हैं। यह सूक्ति विशाखदत्त विरचित 'मुद्राराक्षस' में भी प्राप्त होती है।

10. उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' यह किस उपनिषद' का मन्त्र है?
(a) कठ (b) छान्दोग्य
(c) प्रश्न (d) मुण्डक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(a)

प्रस्तुत मन्त्र 'कठोपनिषद्' के तृतीय वल्ली से अवतरित है। इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषों के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो।

11. 'काशिका' है–
(a) पतंजलि कृत 'महाभाष्य' की टीका
(b) पतंजलि कृत 'योगसूत्र' की टीका

(c) पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' की टीका
(d) भर्तृहरि कृत 'वाक्यपदीय' की टीका

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर–(c)

अष्टाध्यायी की टीकाओं में सबसे महत्वपूर्ण है। जयादित्य और वामन द्वारा लिखित काशिका है। काशिका के व्याख्याता हरदत्त के अनुसार, काशिका की रचना काशी में हुई थी, इसलिए उसे काशिका कहा गया (काशीषु भवा काशिका)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- काशिका पाणिनी के सूत्रों की वृत्ति प्रस्तुत करती है अर्थात् सूत्रों की संक्षिप्तता के कारण अर्थ में जो अस्पष्टता है, उसका निराकरण करती है।
- काशिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उसके पहले अष्टाध्यायी पर और भी अनेक वृत्तियाँ थीं, जिनके मतों को काशिका में उपन्यस्त किया गया है, जो अन्यत्र अप्राप्य है।
- गणपाठ का समावेश काशिका की अन्यतम विशेषता है।
- काशिका में सूत्रों के उदाहरण अधिकतर प्राचीन वृत्तियों से लिए गए हैं। अतः उन उदाहरणों का ऐतिहासिक महत्व है।

12. किस रचना में कुट्टनियों का वर्णन किया गया है?

(a) कादम्बरी (b) मृच्छकटिकम्
(c) दशकुमारचरितम् (d) रत्नावली

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर–(b)

कुट्टनी वेश्याओं को कामशास्त्र की शिक्षा देने वाली वृद्धा होती थी। वेश्या संस्था के अनिवार्य अंग के रूप में इसका अस्तित्व पहली बार पाँचवीं शती ई. के आस-पास ही देखने में आता है। इससे अनुमान होता है कि इसका आविर्भाव गुप्त साम्राज्य के वैभवशाली और भोग विलास के युग में हुआ। 'मृच्छकटिकम्' नाटक इसका प्रमाण है, इसमें 10 अंक हैं। इसके रचनाकार महाराज शूद्रक हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कश्मीर नरेश जयापीड के प्रधानमंत्री दामोदर गुप्त ने 'कुट्टनीमतम्' नामक काव्य की रचना की थी। यह काव्य अपनी मधुरिमा, शब्दसौष्ठव तथा अर्थगांभीर्य के निमित्त आलोचनाजगत् में पर्याप्त विख्यात है, परन्तु कवि का वास्तविक अभिप्राय सज्जनों को कुट्टनी के हथकंडों से बचाना है।
- इसी उद्देश्य से कश्मीर के प्रसिद्ध कवि क्षेमेन्द्र ने भी 'एकादश शतक' में 'समयमातृका' तथा 'देशोपदेश' नामक काव्यों का प्रणयन किया था। इन दोनों काव्यों में कुट्टनी के रूप, गुण तथा कार्य का विस्तृत विवरण है।
- क्षेमेन्द्र ने कुट्टनी की तुलना अनेक हिंसक जंतुओं से की है–वह खून पीने तथा माँस खाने वाली व्याघ्री है, जिसके न रहने पर कामुक जन गीदड़ों के समान उछल-कूद मचाया करते हैं।

13. गद्य-पद्य मिश्रित काव्य को कहते हैं–

(a) खण्डकाव्य (b) नाट्यकाव्य
(c) चम्पूकाव्य (d) मुक्तककाव्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर–(c)

'सहैव गमयति प्रयोजयति गद्यपद्ये इति चम्पू:' अर्थात् जिस रचना में गद्य और पद्य का समान भाव से तथा सहयोगपूर्वक प्रयोग किया जाता है, उसे चम्पू कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में चम्पू को इस प्रकार परिभाषित किया है–गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते अर्थात् गद्य और पद्य मिश्रित रचना को चम्पू कहते हैं। अग्नि पुराण में भी चम्पू का प्रयोग मिलता है। चम्पू परम्परा का आरम्भ हमें 'अथर्ववेद' में प्राप्त होता है। उसमें गद्य और पद्य का मिश्रित रूप से प्रयोग मिलता है। चम्पू का सर्वप्रथम पारिभाषिक विश्लेषण दण्डी के काव्यादर्श में प्राप्त होता है। अब तक उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नलचम्पू के रचयिता त्रिविक्रम भट्ट ही सर्वप्रथम काव्य में इस पद्धति के प्रवर्तक हैं।

14. निम्नलिखित में कौन-सा अर्थ-प्रकृतियों के अन्तर्गत नहीं आता?

(a) कार्य (b) पताका
(c) प्रकरी (d) विषादांत

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर–(d)

कथानक की एक अवस्था से दूसरी अवस्था के विकास का पता उसकी कुछ प्रमुख घटनाओं से चलता है, जिन्हें 'अर्थ-प्रकृति' कहते हैं। कथा-वस्तु की अवस्थाओं के अनुसार, इसकी संख्या पाँच मानी जाती है–बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य। प्रत्येक अवस्था और अर्थ-प्रकृति में मेल कराने का कार्य सन्धियों द्वारा सम्पन्न होता है, जिनकी संख्या भी 5 मानी गई है– 1. मुख, 2. प्रतिमुख, 3. गर्भ, 4. अवमर्श और 5. निर्वहण या उपसंहार। निम्नलिखित तालिका द्वारा अर्थ-प्रकृति, अवस्था एवं संधियों के पारस्परिक सम्बन्ध को अधिक स्पष्टतापूर्वक ग्रहण किया जा सकता है–

अर्थ-प्रकृति	अवस्था	सन्धि
1. बीज	प्रारम्भ	मुख
2. बिन्दु	प्रयत्न	प्रतिमुख
3. पताका	प्रत्याशा	गर्भ
4. प्रकरी	नियताप्ति	विमर्श (अवमर्श)
5. कार्य	फलागम	निर्वहण या उपसंहार

15. नाटक में अर्थ प्रकृतियाँ कितनी मानी गई हैं?

(a) सात (b) दस
(c) पाँच (d) तीन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित में कौन-सा अर्थोपक्षेपक नहीं है—

(a) प्रवेशक (b) चूलिका

(c) नियताप्ति (d) विष्कंभक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

नियताप्ति अर्थोपक्षेपक नहीं, बल्कि नाटक की पाँच अवस्थाओं में से एक है। नाटक में सारी कथावस्तु को प्रत्यक्ष रूप से रंगमंच पर प्रस्तुत करना कठिन होता है। अतः उसके कुछ अंश की केवल सूचना ही किसी प्रकार दे दी जाती है। इस सूच्य वस्तु की सूचना देने वाले साधनों को 'अर्थोपक्षेपक' कहते हैं। ये पाँच प्रकार के होते हैं।

1. **विष्कंभक-** नाटक के आरम्भ में या दो अंकों के बीच में दो गौण पात्रों के वार्तालाप द्वारा जब सूचना दी जाती है, तो उसे विष्कंभक कहते हैं।
2. **चूलिका-** पर्दे के पीछे से दी जाने वाली सूचना को चूलिका कहा जाता है।
3. **अंकास्य-** अंक के अन्त में जहाँ बाहर जाने वाले पात्रों द्वारा अगले अंक की कथा की सूचना दिलाई जाती है, उसे अंकास्य कहते हैं।
4. **अंकावतार-** अंक की समाप्ति के पहले ही अगले अंक की कथा वस्तु को प्रारम्भ करना अंकावतार कहलाता है।
5. **प्रवेशक-** नवागन्तुक निम्नकोटि के पात्र द्वारा दी जाने वाली सूचना को प्रवेशक कहते हैं।

17. सूच्य कथानक को प्रस्तुत करने वाले अर्थोपक्षेपकों की संख्या कितनी होती है?

(a) तीन (b) चार

(c) पाँच (d) छः

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्नलिखित में कौन कार्यावस्था के अन्तर्गत नहीं है?

(a) प्रयत्न (b) प्राप्त्याशा

(c) फलागम (d) उत्पाद्य

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'उत्पाद्य' कार्यावस्था के अन्तर्गत नहीं आता है। नाटक में जो कार्य प्रारम्भ किया जाता है, उसकी प्रगति के विभिन्न विश्रामों को कार्यावस्थाएँ कहते हैं। ये अवस्थाएँ उसकी गतिविधि को सूचित करती हैं। ये पाँच अवस्थाएँ हैं—आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागम। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना है।

19. 'हे प्रभो' में 'प्रभु' शब्द में कौन-सी विधि है?

(a) वृद्धि (b) दीर्घ

(c) गुण (d) सम्प्रसारण

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

वेद में 'ऋच' शब्द परे होने पर त्रिका सम्प्रसारण होता है और उत्तरपद के आदि का लोप हो जाता है। 'तिस्त्र ऋचो यस्मिन् तत तृचं सूक्तम्'। जिसमें तीन ऋचाएँ हों, उस सूक्त का नाम 'तृच' है। त्रि + ऋच इस अवस्था में 'वि' का सम्प्रसारण होने पर 'तृ' बना और ऋच् के ऋ का लोप हो गया, तो 'तृचम्' सिद्ध हो गया। अतः प्रभु शब्द में सम्प्रसारण विधि है।

20. वेणीसंहार नाटक का अंगी रस है—

(a) वीर (b) शृंगार

(c) रौद्र (d) शान्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

नाट्यशास्त्र की नियमावली का विधिवत पालन करने के कारण नाट्यशास्त्र के आचार्यों ने भट्ट नारायण को बहुत महत्व दिया है। नाटककार निस्सन्देह घटना-संयोजन में अत्यन्त दक्ष हैं। उनके वर्णन सार्थक और स्वाभाविक हैं। नाटक का प्रधान रस वीर है। गौड़ी रीति, ओज गुण और प्रभावी भाषा इनकी अन्य विशेषताएँ हैं। वेणीसंहार नाटक को नाट्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वेणीसंहार में छः अंक हैं। इसके पात्र इतिहास प्रसिद्ध हैं।
- नाटक का नायक दुर्योधन है, क्योंकि उसको लक्ष्य में रखकर समस्त घटनाएँ चित्रित हैं। इसीलिए उसके दुःख पराभव और मृत्यु का वर्णन होने से यह एक दुःखान्त नाटक माना जाता है।
- वेणीसंहार की प्रस्तावना में विष्णु, कृष्ण और शिव की स्तुति है।
- शास्त्रीय दृष्टि से 'रत्नावली' के बाद इसी का अत्यधिक महत्व है।

21. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा भाव वाच्य है?

(a) सः गृहं गतवान्। (b) तेन गृहं गतम्।

(c) सः गृहः अगच्छत्। (d) तेन गृहं गतानि।

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

जिन वाक्यों में कथ्य के तौर पर भाव अर्थात् अनुभवजन्य स्थिति को प्राधान्य दिया जाता है और उसे क्रिया द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, उन्हें भाव-वाच्य या भाव प्रधान वाक्य कहा जाता है। भाव का अर्थ है वे अनुभव जिन्हें आँख, नाक, कान इत्यादि ज्ञानेन्द्रियों, हाथ, पाँव आदि कर्मेन्द्रियों और मन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। भाषा के माध्यम से इनका सही-सही वर्णन नहीं किया जा सकता केवल इशारा किया जाता है। यथा—तेन गृहं गतम्।

हिन्दी

NET/JRF परीक्षा

चयनित विषय आधारित प्रश्न

जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक

सम्पन्न

---

34 प्रश्न-पत्र

तथ्यात्मक प्रस्तुति

यहाँ जून, 2009 से जुलाई, 2018 के मध्य सम्पन्न NET/JRF के 34 प्रश्न-पत्रों का सार तथ्य रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी प्रश्नों के उत्तरों का मिलान UGC/CBSE द्वारा प्रस्तुत उत्तर-पत्रकों से कर लिया गया है। उत्तर-पत्रकों की त्रुटियों को यथा स्थान उल्लेख किया गया है। इन्हें परीक्षार्थी स्वयं ही जाँच कर देख सकते हैं।

जुलाई - 2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(8 जुलाई, 2018 को सम्पन्न)

☞ ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली एवं मगही में से पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है **— मगही**

☞ सिद्ध-साहित्य के अंतर्गत चौरासी सिद्धों की वे साहित्यिक रचनाएं आती हैं जो **— तत्कालीन लोक-भाषा हिन्दी में लिखी गई हैं**

☞ कबीर के 'निर्गुण पंथ' का आधार भारतीय वेदांत और 'सूफियों का प्रेम तत्व' है।' यह विचार है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'केवल 'प्रेम लक्षणा भक्ति' का आधार ग्रहण करने के कारण कृष्ण भक्ति शाखा में अश्लील विलासिता की प्रवृत्ति जाग्रत हुई। यह विचार है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ प्राणचंद चौहान का संबंध है **— राम भक्ति शाखा से**

☞ 'भंवर गीत' रचना है **— नंददास की**

☞ राजनीतिक रूप से रीतिकाल है **— मुगल काल के वैभव के चरमोत्कर्ष के बाद उत्तरोत्तर ह्रास और पतन का युग**

☞ प्रेम संपत्तिलता, श्यामालता, श्यामा सरोजिनी एवं प्रेम प्रलाप में से ठाकुर जगन्मोहन सिंह की रचना नहीं है **— प्रेम प्रलाप**

नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में 'प्रेम संपत्तिकला' दिया गया है, जो गलत है। वास्तव में यह 'प्रेम संपत्तिलता' है। 'प्रेम प्रलाप' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृति है। यही कारण है कि सीबीएसई ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किया है।

☞ 'बगियान बसंत बसेरो कियो, बसिए, तेहि त्यागि तपाइए ना।
दिन काम-कुतूहल के जो बने, तिन बीच बियोग बुलाइए ना।।'
पंक्तियों के रचनाकार हैं **— बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**

☞ 'आज रात इससे परदेशी चल कीजे विश्राम यहीं।
जो कुछ वस्तु कुटी में मेरे करो ग्रहण, संकोच नहीं।।
पंक्तियों के रचनाकार हैं **— श्रीधर पाठक**

☞ 'आवारा मसीहा आधारित है **— शरत्चन्द्र के जीवन पर**

☞ 'बर्बरता की पहली सीढ़ी से सभ्यता की अंतिम सीढ़ी तक युद्ध मनुष्य जाति का साथ देता आया है।' यह कथन उद्धृत है **— युद्ध और नारी निबंध से**

☞ ग्रामोफोन का रिकॉर्ड, नीलम देश की राजकन्या, बाहुबली एवं दृष्टिपात कहानी में अति व्यस्त कामकाजी आदमी की असंतुष्ट पत्नी को विषयवस्तु बनाया गया है **— ग्रामोफोन का रिकॉर्ड कहानी में**

☞ नूतन ब्रह्मचारी, परीक्षा गुरु, आदर्श दम्पती एवं प्रणयिनी परिणय उपन्यास में ''रईस साहूकार मदनमोहन के अंग्रेजी सभ्यता की नकल और अपव्यय की कथा'' है **— परीक्षा गुरु में**

☞ कल्याणी परिणय, राज्यश्री, स्कन्दगुप्त एवं अजातशत्रु में से पर्णदत्त पात्र है, जयशंकर प्रसाद के नाटक **— स्कन्दगुप्त का**

☞ 'हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी'-आलोचना ग्रंथ के लेखक हैं **— नंददुलारे बाजपेयी**

☞ आचार्य भरत के रससूत्र के व्याख्याता शंकुक के सिद्धांत का नाम है **— अनुमितिवाद**

☞ प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म, नोट्स टुवर्ड्स द डेफिनिशन ऑफ कल्चर, प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म एवं कॉलरिज आन इमैजिनेशन में से आई.ए. रिचर्ड्स द्वारा लिखित नहीं है **— नोट्स टुवर्ड्स द डेफिनिशन ऑफ कल्चर**

☞ रीतिमुक्त कविता की विशेषताएं हैं **— यह आंतरिक अनुभूतियों का काव्य है, यह मूलतः आत्मप्रधान और व्यक्तिगत है तथा यह सभी प्रकार की रुढ़ियों से मुक्त है।**

☞ मीराबाई के पदों में मुख्य है**— अपूर्व भाव विह्वलता, आत्म समर्पण एवं भगवद्विरह की पीड़ा की उत्कट अभिव्यक्ति**

☞ 'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग **— साहित्यिक हिन्दी के अर्थ में होता है, दिल्ली-मेरठ के आस-पास की लोक-बोली के अर्थ में होता है तथा खड़ी बोली का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है।**

☞ रामधारी सिंह 'दिनकर' का संबंध है **— कामाध्यात्म की समस्या, पौराणिक प्रसंग में भारत-चीन युद्ध का युगीन संदर्भ एवं युद्धदर्शन**

☞ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' से संबंध है **— आत्मचेतस बावरा अहेरी एवं जापानी लोक कथा के रचनात्मक उपयोग**

☞ लहना सिंह, पंडित बुद्धिराम, अमीना एवं सुनन्दा में से प्रेमचन्द्र की कहानियों के पात्र हैं **— पंडित बुद्धिराम एवं अमीना**

☞ कृष्णचन्द्र, सोफिया, हरिप्रसन्न एवं गजाधर में से प्रेमचन्द के उपन्यासों के पात्र हैं **— कृष्णचन्द्र (सेवा सदन), सोफिया (रंगभूमि), गजाधर (सेवा सदन)**

☞ आलोक पर्व, माटी हो गई सोना, विचार और वितर्क एवं कुछ उथले कुछ गहरे में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध-संग्रह हैं **— आलोक पर्व एवं विचार और वितर्क**

☞ अपने-अपने पिंजरे, मुड़-मुड़ कर देखता हूं, मेरी पत्नी और भेड़िया एवं गर्दिश के दिन में से दलित आत्मकथाएं हैं **— अपने अपने पिंजरे एवं मेरी पत्नी और भेड़िया**

☞ मादाम बावेरी, जॉन लॉक, सैमुअल पी. हटिंगटन एवं क्लाड लेवी-स्त्रॉस में से यथार्थवाद से सम्बद्ध हैं**— मादाम बावेरी एवं जॉन लॉक**

☞ डिक्टेटर, संग्राम, बड़े खिलाड़ी एवं प्रेम की वेदी में से प्रेमचन्द द्वारा रचित नाटक हैं **— संग्राम एवं प्रेम की वेदी**

☞ साधारणीकरण के विषय में सही कथन है **— साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है, साधारणीकरण के लिए भोजकत्व व्यापार अनिवार्य है**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से सूफी रचनाओं का सही अनुक्रम है **— चांदायन, मृगावती, चित्रावली, अनुराग बाँसुरी**

☞ जन्मकाल के आधार पर संत कवियों का सही अनुक्रम है **— गुरुनानक (1469 ई.), दादू (1544 ई.), मलूकदास (1574 ई.), सुन्दरदास (1596 ई.)**

☞ जन्मकाल के आधार पर रीतिग्रन्थकारों का सही अनुक्रम है
— भूषण, जसवंत सिंह, देव, सूरति मिश्र

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
— श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' एवं रामनरेश त्रिपाठी

☞ प्रकाशन काल के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
— यशोधरा, कामायनी, कनुप्रिया, उर्वशी

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से हरिवंशराय बच्चन की रचनाओं का सही अनुक्रम है**— निशा निमंत्रण, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, जाल समेटा**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कविताओं का सही अनुक्रम है
— प्रलय की छाया, मधुबाला, असाध्य वीणा, पटकथा

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— दिव्या, जहाज का पंछी, अमृत और विष, पहला पड़ाव

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
— एक टोकरी भर मिट्टी, उसने कहा था, राजा निरबंसिया, परिंदे

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध-संग्रहों का सही अनुक्रम है
— शृंखला की कड़ियां, अशोक के फूल, आस्था और सौन्दर्य, कला का जोखिम

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार जीवनीपरक ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
— कलम का सिपाही, कलम का मजदूर, आवारा मसीहा, व्योमकेश दरवेश

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है
— सेतुबंध, आठवाँ सर्ग, एक दूनी एक, रति का कंगन

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर आलोचनात्मक कृतियों का सही अनुक्रम है
— हिन्दी साहित्य का आदिकाल, कवि सुमित्रानंदन पंत, मिथक और साहित्य, भारतीय सौन्दर्यबोध और तुलसीदास

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की आलोचनात्मक कृतियों का सही अनुक्रम है
— जयशंकर प्रसाद, आधुनिक साहित्य, कवि निराला, नई कविता

☞ कालक्रम की दृष्टि से आचार्यों का सही अनुक्रम है
— वामन, कुन्तक, मम्मट, विश्वनाथ

☞ **स्थापना (A) :** जिस प्रकार हमारी आँखों के सामने आए हुए कुछ रूप व्यापार हमें रसात्मक भावों में मग्न करते हैं उसी प्रकार भूतकाल में प्रत्यक्ष की हुई कुछ परोक्ष वस्तुओं का वास्तविक स्मरण भी कभी-कभी रसात्मक होता है।
तर्क (R) : क्योंकि तब हमारी मनोवृत्ति स्वार्थ या शरीर यात्रा के रूखे विधानों से हटकर शुद्ध भावक्षेत्र में स्थित हो जाती है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य का इतिहास वस्तुतः मनुष्य-जीवन के अखंड प्रवाह का इतिहास है।
तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य ही साहित्य का अन्तिम लक्ष्य है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** भूमंडलीकरण विश्व की पूँजीवादी व्यवस्था है।
तर्क (R) : क्योंकि इसमें पूरा विश्व एक बाज़ार है और व्यक्ति उपभोक्ता। **— (A) सही (R) सही**

☞ **स्थापना (A) :** दलित साहित्य का वैचारिक आधार मार्क्सवाद है।
तर्क (R) : क्योंकि इसमें वर्ग-संघर्ष की हिमायत की गई है।
— (A) गलत (R) गलत

☞ **स्थापना (A) :** अस्तित्ववाद सामाजिक कल्याण और सह अस्तित्व का दर्शन है।
तर्क (R) : क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतन्त्रता और चयन की आजादी का पक्षधर है। **— (A) गलत (R) सही**

☞ **स्थापना (A) :** वासना या संस्कार वंशानुक्रम से चली आती हुई दीर्घ भाव परम्परा का मनुष्य जाति की अन्तः प्रकृति में निहित संचय नहीं है।
तर्क (R) : इसी कारण भारतीय आचार्यों की यह मान्यता पश्चिम की मनोविश्लेषणवादी सामूहिक अवचेतन की अवधारणा से पुष्ट है।
— (A) गलत (R) गलत

☞ **स्थापना (A) :** किसी काव्य का श्रोता या पाठक जिन विषयों को मन में लाकर रति, करुणा, क्रोध, उत्साह इत्यादि भावों तथा सौन्दर्य, रहस्य, गांभीर्य आदि भावनाओं का अनुभव करता है, वे अकेले उसी के हृदय से संबंध रखने वाले होते हैं।
तर्क (R) : क्योंकि उपर्युक्त सभी विषय और भाव मनुष्य मात्र की भावात्मक सत्ता पर प्रभाव डालने वाले होते हैं।**— (A) गलत (R) सही**

☞ **स्थापना (A) :** यह दृष्टिकोण पूर्णतः स्थापित है कि 'एकांकी' नाटक का लघु संस्करण है।
तर्क (R) : क्योंकि पूर्णकालिक नाटक को काट छाँट कर नाट्यकार्य अथवा नाटकीय संघर्ष का पूर्ण विकास प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है। **— (A) गलत (R) गलत**

☞ **स्थापना (A) :** वस्तु में सौन्दर्य एक ऐसी शक्ति या ऐसा धर्म है जो द्रष्टा को आन्दोलित और हिल्लोलित कर सकता है और द्रष्टा में भी ऐसी शक्ति है, एक ऐसा संवेदन है, जो द्रष्टव्य के सौन्दर्य से चालित और हिल्लोलित होने की योग्यता देता है।
तर्क (R) : क्योंकि द्रष्टा और द्रष्टव्य में एक ही समानधर्मी तत्व अंतर्निहित है। **— (A) सही (R) सही**

☞ **स्थापना (A) :** नाटक जड़ या रूढ़ नहीं, एक गतिशील पाठ है।
तर्क (R) : क्योंकि वह लिखा कभी जाए, खेला वर्तमान में जाता है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** कविता में चित्रित प्रेम निजी होता है।
तर्क (R) : क्योंकि प्रेम सामाजिक भाव नहीं है।
— (A) गलत (R) गलत

☞ **स्थापना (A) :** चेतना अनुभूति की सघनता और चिन्तन की पराकाष्ठा है।
तर्क (R) : क्योंकि अनुभूति और चिन्तन का संबंध शुद्ध हृदय के संवेदन से है। **— (A) सही (R) गलत**

☞ **स्थापना (A) :** श्रद्धा में कारण अनिर्दिष्ट और आलम्बन अज्ञात होता है।
तर्क (R) : क्योंकि श्रद्धा में दृष्टि व्यक्ति के कर्मों से होती हुई श्रद्धेय तक पहुंचती है। **— (A) गलत (R) सही**

☞ **स्थापना (A) :** छायावाद शुद्ध लौकिक प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है।
तर्क (R) : इसीलिए उसमें राष्ट्रबोध और आध्यात्मिक चेतना न के बराबर है। **— (A) गलत (R) गलत**

☞ **स्थापना (A) :** भक्ति को 'सा परानुरक्तिरीश्वरे।' कहा गया है।
तर्क (R) : इसीलिए भक्ति को साध्यस्वरूपा माना गया है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** मानव और प्रकृति के बीच समानता, पूर्व सम्पर्क, पूरकता या विरोध भाव में मिथक सृजन के सूत्र विद्यमान होते हैं।
तर्क (R) : क्योंकि प्रकृति में अलौकिकता और दिव्यशक्ति है और मानव कल्पना तथा प्रकृति के मध्य सीधा और अनिवार्य संबंध है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** स्वच्छन्दतावाद छायावाद और रहस्यवाद का पर्याय ही है।
तर्क (R) : क्योंकि यह द्विवेदी युगीन शास्त्रीयता की प्रतिक्रिया स्वरूप वैयक्तिक कल्पनातिरेक और निजी रहस्यानुभूति का प्रतिफलन है।
— (A) गलत (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** अद्वैतवाद आत्मतत्व का विस्तार है।
तर्क (R) : क्योंकि वह जीव और जगत की पृथक सत्ता को स्वीकार करता है। **— (A) सही (R) गलत**

☞ **स्थापना (A) :** आधुनिकता कोई शाश्वत मूल्य नहीं, वह मूल्यों के परिवर्तन का पर्याय है।
तर्क (R) : क्योंकि बदलाव की प्रक्रिया में हर युग आधुनिक होता है।
— (A) सही (R) सही

☞ **स्थापना (A) :** देश भक्ति, संस्कृति-राग, चरित्रों की उदात्तता, भाषिक गरिमा और लम्बी कालावधि के विस्तृत कथानक के कारण जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' महाकाव्योचित औदात्य से परिपूर्ण नाटक है।
तर्क (R) : साथ ही उसमें ब्रेख्त के महानाट्य (एपिक थियेटर) की सम्पूर्ण विशेषताएँ भी मिलती हैं। **— (A) सही (R) गलत**

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
खड़ीबोली	–	बिजनौर
ब्रजभाषा	–	आगरा
बांगडू	–	करनाल
अवधी	–	सुल्तानपुर

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
अवहट्ठ	–	कीर्तिलता
ब्रजभाषा	–	भंवर गीत
अवधी	–	मधुमालती
खड़ीबोली	–	प्रिय प्रवास

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छाइ	–	कण्हपा
काआ तरुवर पंच बिड़ाल	–	लूहिपा
कड़ुवा बोल न बोलिस नारि	–	नरपति नाल्ह
मोरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल	–	खुसरो

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
ओनई घटा, परी जग छाहाँ	–	जायसी
आवत जात पनहियाँ टूटी	–	कुंभनदास
अति मलीन वृषभानु कुमारी	–	सूरदास
कीरति भनिति भूतिभल सोई	–	तुलसीदास

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
अद्वैतवाद	–	रैदास
विशिष्टद्वैतवाद	–	तुलसीदास
शुद्धाद्वैतवाद	–	कुंभनदास
सखी संप्रदाय	–	हरिदास

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
जपुजी	–	नानक
रसमंजरी	–	नंददास
बरवै नायिका भेद	–	रहीम
वैराग्य संदीपनी	–	तुलसीदास

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
शिवराज भूषण	–	अलंकार निरूपण
छत्र प्रकाश	–	जीवन चरित
बिरहवारीश	–	रीति स्वच्छंदवृत्ति
काव्य निर्णय	–	सर्वांग निरूपण

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
रस सागर	–	श्रीपति
रस चंद्रोदय	–	कवीन्द्र
रसराज	–	मतिराम
रसपीयूष निधि	–	सोमनाथ

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
दु:ख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं।	–	निराला
मैं दिन को ढूँढ रही हूँ जुगुनू की उजियाली में; मन माँग रहा है मेरा सिकता हीरक-प्याली में!	–	महादेवी वर्मा
रोज-सबेरे मैं थोड़ा-सा अतीत में जी लेता हूँ क्योंकि रोज शाम को मैं थोड़ा-सा भविष्य में मर जाता हूँ।	–	अज्ञेय
बिखरी अलकें ज्यों तर्क-जाल वह विश्व मुकुट-सा उज्ज्वलतम शशिखंड सदृश्य था स्पष्ट भाल।	–	प्रसाद

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
कर्ण	–	रश्मिरथी
कमला	–	प्रलय की छाया
औशीनरी	–	उर्वशी
राहुल	–	यशोधरा

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
अज्ञेय	–	पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ
बच्चन	–	सतरंगिनी
रघुवीर सहाय	–	सीढ़ियों पर धूप में
सुमित्रानंदन पंत	–	कला और बूढ़ा चाँद

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
लक्ष्मीकांत वर्मा	–	अकविता
नरेश	–	नकेनवाद
शंभुनाथ सिंह	–	नवगीत
केदारनाथ अग्रवाल	–	प्रगतिवाद

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
आकाशदीप	–	बुद्धगुप्त
दिल्ली में एक मौत	–	अतुल
उसने कहा था	–	बोधासिंह
गैंग्रीन	–	मालती

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
अजय की डायरी	–	विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि
अन्तराल	–	स्त्री-पुरुष संबंधों में जटिलता
बसन्ती	–	महानगरों में बसी गंदी बस्तियों का चित्रण
महाभोज	–	समकालीन राजनीतिक परिवेश

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
कहनी-अनकहनी	–	धर्मवीर भारती
गंधमादन	–	कुबेर नाथ राय
जीप पर सवार इल्लियां	–	शरद जोशी
मिट्टी की ओर	–	रामधारी सिंह दिनकर

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
उर्वी	–	पहला राजा
सुन्दरी	–	लहरों के राजहंस
वेनुरती	–	सूर्यमुख
देवसेना	–	स्कंदगुप्त

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I (उपन्यास)		सूची-II (पात्र)
सूरज का सातवाँ घोड़ा	–	माणिक मुल्ला
मैला आंचल	–	विश्वनाथ प्रसाद
एक इंच मुस्कान	–	रंजना
तमस	–	इला

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
हम-हशमत	–	कृष्णा सोबती
बच्चन निकट से	–	अजित कुमार
माटी की मूरतें	–	रामवृक्ष बेनीपुरी
चीड़ों पर चाँदनी	–	निर्मल वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I (काव्यांश)		सूची-II (अलंकार)
''रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चून।''	–	श्लेष
''बंसी धुन सुनि बृज वधू चली बिसार विचार भुज भूषन पहिरे पगनि भुजन लपेटे हार।	–	असंगति
''जिन दिन देखे वे कुसुम गई सु बीति बहार अब अलि रही गुलाब की अपत कँटीली डार।''	–	अन्योक्ति
''उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग, बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।''	–	रूपक

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
उत्तर-संरचनावाद	–	लुई अल्थ्युसर
यथार्थवाद	–	जार्ज लुकाच
स्वच्छंदतावाद	–	राबर्ट बर्न्स
उत्तर-आधुनिकतावाद	–	फ्रेडरिक जेमसन

जुलाई - 2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(22 जुलाई, 2018 को सम्पन्न)

☞ संस्कृत, प्राकृत, फ़ारसी एवं अरबी में से आर्यभाषा-परिवार की भाषा नहीं है **– अरबी**

☞ विद्यापति के अनुसार पुरानी हिन्दी, देशी भाषा, प्राकृताभास हिन्दी एवं राजस्थानी में से अपभ्रंश से भिन्न, प्रचलित बोलचाल की भाषा है **– देशी भाषा**

☞ 'पद्मावती समय' एक अंश है **– पृथ्वीराज रासो काव्यग्रंथ का**

☞ 'कवित्त सवैया' के विषय में हजारी प्रसाद द्विवेदी की मान्यता है कि मूलतः ये छंद **– बंदीजन के हैं**

☞ सखी-संप्रदाय का उपास्य तत्त्व है **– रूप और प्रेम**

☞ 'पुष्टि मार्ग' है **– भगवान के अनुग्रह का मार्ग**

☞ श्रीसंप्रदाय, सखी संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय एवं गौड़ीय संप्रदाय में से 'रसखान' का संबंध है **– किसी भी संप्रदाय से नहीं**

नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का उत्तर परीक्षा संस्था ने निम्बार्क संप्रदाय दिया है, जबकि डॉ. नगेन्द्र की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं बच्चन सिंह की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में रसखान को संप्रदाय निरपेक्ष कवि बताया गया है।

☞ 'रामायण' काव्य के रचयिता हैं **– विश्वनाथ सिंह**

☞ वृन्द द्वारा रचित सतसई का नाम है **– यमक सतसई**

☞ 'गीतिका' का रचनाकाल है **– 1936 ई.**

☞ 'उद्धव-शतक' के रचनाकार हैं **– जगन्नाथ दास 'रत्नाकार'**

☞ 'और अब छीनने आए हैं वे,
हमसे हमारी भाषा
यानी हमसे हमारा रूप,
जिसे हमारी भाषा ने गढ़ा है।

'प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों के रचयिता हैं — **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना**

☞ 'घर की बात' आत्मकथा है — **रामविलास शर्मा की**

☞ ''अनुभूति के द्वन्द्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है। उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है।'' उक्त कथन है — **भाव या मनोविकार निबंध से**

☞ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित पहली कहानी है — **ग्राम**

☞ लाला भगवानदास और उनके परिवार की कथा वर्णित है — **वामशिक्षक उपन्यास में**

☞ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी रचना को नाट्यरासक कहा है — **भारत दुर्दशा को**

☞ रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा रचित आलोचना ग्रंथ नहीं है — **साहित्य क्यों?**

☞ हिन्दी जाति का साहित्य, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, यथार्थवाद एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण में से रामविलास शर्मा द्वारा लिखित नहीं है — **यथार्थवाद**

☞ आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्यावहारिक आलोचना का आदर्श रूप मिलता है — **उनकी पुस्तक गोस्वामी तुलसीदास में**

☞ हठयोग में प्रयुक्त 'सहस्रार चक्र' के लिए इस्तेमाल होने वाले अन्य शब्द हैं — **शून्य चक्र, गगन मंडल एवं कैलास**

☞ कवि सुमित्रानन्दन पंत से सम्बन्ध है— **प्रकृति प्रेम, छायावाद, अरविन्द दर्शन**

☞ जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में चित्रित किया है कि— **श्रद्धा प्रेम और करुणा का प्रवर्तन करने वाली है, इड़ा या बुद्धि कर्मों में उलझाने वाली है।**

☞ हरिवंशराय बच्चन से संबंधित हैं — **विषादकाव्य एवं मधुकाव्य**

☞ जनवादी कवि हैं

— धूमिल (अन्य कवि- वेणु गोपाल, विजेन्द्र, ज्ञानेन्द्र एवं कुमार विकल)

☞ पिसनहारी का कुआँ, परदा, मनोवृत्ति एवं प्रतिध्वनि में से प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी नहीं है — **परदा एवं प्रतिध्वनि**

☞ सत्यधन, श्रीकान्त, रामेश्वर एवं जितेन में से जैनेन्द्र द्वारा रचित उपन्यासों के पात्र हैं — **सत्यधन, श्रीकान्त एवं जितेन**

☞ हरिशंकर परसाई द्वारा रचित निबन्ध-संग्रह है— **अपनी-अपनी बीमारी**

नोट- यूजीसी/सीबीएसई ने इस प्रश्न का उत्तर निबंध-संग्रह के रूप में 'अपनी-अपनी बीमारी' तथा 'हँसते हैं रोते हैं' माना है, 'जबकि हँसते हैं रोते हैं, कहानी संग्रह है।

☞ आचार्य दण्डी द्वारा रचित पुस्तकें हैं — **अवन्तिसुन्दरी-कथा एवं काव्यादर्श**

☞ अन्या से अनन्या, वट वृक्ष की छाया में, गालिब छुटी शराब एवं अपनी खबर में से आत्मकथाएँ हैं — **अन्या से अनन्या, गालिब छुटी शराब एवं अपनी खबर**

☞ काव्यात्मक शैली में लिखे गए नाटक हैं — **अंधा युग, सूखा सरोवर एवं एक कंठ विषपायी**

☞ लक्षणा शक्ति के लिए आवश्यक कथन हैं— **मुख्यार्थ या वाच्यार्थ की बाधा, लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से संबंधित होना**

☞ टी.एस. इलियट, फ्रैंक करमोड, सी.डी. लेविस, कलीन्थ ब्रुक्स में से मुख्यतः बिम्ब से संबंधित ग्रंथों के लेखन से संबंधित हैं — **फ्रैंक करमोड, सी.डी. लेविस**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से काव्य-कृतियों का सही अनुक्रम है

— माधवानल कामकंदला, हित तरंगिणी, प्रेम वाटिका एवं वृंद सतसई

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है — **बीजक, साहित्य-लहरी, रामचरित मानस, रसिक प्रिया**

☞ प्रकाशन-काल की दृष्टि से सुमित्रानंदन पंत के काव्य-संग्रहों का सही अनुक्रम है — **उत्तरा, अतिमा, लोकायतन, सत्यकाम**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कविता-संग्रहों का सही अनुक्रम है — **आँगन के पार द्वार, चाँद का मुँह टेढ़ा है, आत्महत्या के विरुद्ध, चुका भी हूँ नहीं मैं**

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कविताओं का सही अनुक्रम है — **परिवर्तन, सरोज स्मृति, ब्रह्म राक्षस, बाघ**

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार, उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— आधा गाँव, लाल टीन की छत, मय्यादास की माड़ी, समय-सरगम

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है — **फाँसी, शरणार्थी, एक और जिन्दगी, मांस का दरिया**

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है — **पश्यन्ती, तमाल के झरोखे से, वाद विवाद-संवाद, शब्दिता**

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार, संस्मरण-ग्रंथों का सही अनुक्रम है — **सृजन के हेतु, सप्तपर्णी, वे देवता नहीं हैं, चिड़िया रैन बसेरा**

☞ प्रकाशन-वर्ष के अनुसार भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है — **हानूश, माधवी, मुआवजे, आलमगीर**

☞ रामविलास शर्मा की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियों का प्रथम प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से सही अनुक्रम है — **आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, भाषा और समाज, नई कविता और अस्तित्ववाद, भारत में अंग्रेजीराज और मार्क्सवाद**

☞ कालक्रम की दृष्टि से अवधारणाओं का सही अनुक्रम है — **विलियम ब्लेक , फर्डिनांड द सास्युर, माइकेल फूको, जॉक देरिदा**

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		**सूची-II**
पूर्वी हिन्दी	–	बघेली
बिहारी हिन्दी	–	मगही
पश्चिमी हिन्दी	–	कन्नौजी
राजस्थानी हिन्दी	–	मेवाती

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I	**सूची-II**
हिन्दी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	– रामकुमार वर्मा
हिन्दी-साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	– गणपति चन्द्र गुप्त
हिन्दी-साहित्य का आधा इतिहास	– सुमन राजे
हिन्दी-साहित्य का दूसरा इतिहास	– बच्चन सिंह

नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में 'रामकुमार वर्मा' के स्थान पर 'राजकुमार वर्मा' दिया गया है, जो गलत है। हालांकि परीक्षा संस्था ने इसी को आधार मानते हुए उत्तर विकल्प का चयन किया है।

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
चर्यापद	–	शबरपा
श्रावकाचार	–	देवसेन
योगचर्या	–	डोंबिपा
दोहाकोष	–	सरहपा

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
बिगसा कुमुद देखि सति रेखा	–	जायसी
मेरे नयना विरह की बेल बई	–	सूरदास
कबित बिबेक एक नहिं मोरें	–	तुलसीदास
कायानगरी बनी अति सुंदर	–	कबीर

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
गौड़ीय सम्प्रदाय	–	चैतन्य महाप्रभु
राधावल्लभ सम्प्रदाय	–	हित हरिवंश गोस्वामी
सखी सम्प्रदाय	–	स्वामी हरिदास
मध्व सम्प्रदाय	–	मध्वाचार्य

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
रणमल्ल छंद	–	श्रीधर
विजयपाल रासो	–	नल्हसिंह
राणा रासो	–	दयालदास
रतन रासो	–	कुंभकर्ण

नोट : यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में विकल्प में दयाराम दिया है, जो गलत है।

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
जगद्विनोद	–	पद्‌माकर
भाषा भूषण	–	जसवंत सिंह
भाव विलास	–	देव
अलंकार माला	–	सुरति मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
आरस सो आरत, संभारत न शीश पर....	–	पद्‌माकर
अलि हौं तो गई जमुना जल को....	–	मंडन
जा थल कीने बिहार अनेकन...	–	आलम
वा निरमोहिनि रूप की रासि...	–	ठाकुर

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
नचिकेता	–	आत्मजयी
जाम्बवंत	–	राम की शक्ति पूजा
मानव	–	कामायनी
वज्रकीर्ति	–	असाध्य वीणा

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
विष्णुप्रिया	–	मैथिलीशरण गुप्त
आराधना	–	निराला
दीपशिखा	–	महादेवी वर्मा
लोग भूल गए हैं	–	रघुवीर सहाय

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
दिनकर	–	परशुराम की प्रतीक्षा
निराला	–	सांध्य-काकली
पंत	–	लोकायतन
महादेवी	–	नीरजा

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली	–	कामायनी
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण कर, करता मैं तेरा तर्पण	–	सरोज-स्मृति
रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं तो और क्या है?	–	उर्वशी
पिस गया वह भीतर औ, बाहरी दो कठिन पाटों बीच, ऐसी ट्रेजडी है नीच !!	–	ब्रह्मराक्षस

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
गजाधर बाबू	–	वापसी
सिद्धेश्वरी	–	दोपहर का भोजन
बिरजू	–	लाल पान की बेगम
जोखू	–	ठाकुर का कुआँ

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I (वर्ण्य विषय)	सूची-II (उपन्यास)
मृत्यु से साक्षात्कार	– अपने-अपने अजनबी
करनट जाति का जीवन-यथार्थ	– कब तक पुकारूँ
जमींदारों द्वारा किसानों की बेदखली	– रतिनाथ की चाची
दलित जीवन की नाटकीय वास्तविकताओं का चित्रण	– नाच्यौ बहुत गोपाल

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
नन्द दुलारे वाजपेयी	–	राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	–	हिन्दी का सामयिक साहित्य
इन्द्रनाथ मदान	–	कुछ उथले कुछ गहरे
भगीरथ मिश्र	–	कला साहित्य और समीक्षा

सम-सामयिक घटना चक्र

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
कोर्ट मार्शल	–	जातिवाद
कामना	–	भोगवाद
आठवाँ सर्ग	–	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
माधवी	–	स्त्री-विडम्बना

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
रिशि	–	रात का रिपोर्टर
मोतीराम	–	राग दरबारी
भवेशनाथ	–	परती परिकथा
कुन्तल	–	अर्धनारीश्वर

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
अरे यायावर रहेगा याद	–	अज्ञेय
देहरि भई विदेस	–	राजेन्द्र यादव
वसन्त से पतझर तक	–	रवीन्द्रनाथ त्यागी
मेरी तिब्बत यात्रा	–	राहुल सांकृत्यायन

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
उद्भट	–	काव्यालंकार सार संग्रह
वामन	–	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
रुद्रट	–	काव्यालंकार
मम्मट	–	काव्यप्रकाश

☞ सही सुमेलित हैं–

सूची-I		सूची-II
''धर्मार्थ काममोक्षेषु वैचक्षण्य कलासु च करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबंधनम्।।''	–	भामह
''धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्। लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति।।''	–	भरत
''धर्मादिसाधनोपाय: सुकुमारक्रमोदित:। काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारक:।।''	–	कुन्तक
''काव्यं यशसेऽर्यकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्य: परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।''	–	मम्मट

नवम्बर - 2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ गुजराती, पंजाबी, मराठी एवं सिन्धी भाषा में से विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ **— गुजराती भाषा का**

☞ शिवसिंह-सरोज का प्रकाशन हुआ **— 1883 ई. में**
नोट-शिवसिंह सरोज का सर्वप्रथम प्रकाशन 1878 ई. में हुआ। 1883 ई. में इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ।

☞ आदिकालीन काव्यग्रन्थों में कथा कहने की परम्परा को लक्ष्य करके 'पृथ्वीराज रासो' के सन्दर्भ में आलोचक ने लिखा है–''कथा की परीक्षा इतिहास की दृष्टि से नहीं, काव्य की दृष्टि से होनी चाहिए। पुरानी कथाएँ काव्य ही अधिक हैं, इतिहास वे एकदम नहीं हैं।''
— हजारी प्रसाद द्विवेदी

☞ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी के हिन्दुओं-मुसलमानों, सामंतों, शहरों, सेना के सिपाहियों और लड़ाइयों का जीवंत और यथार्थ वर्णन हुआ है **— कीर्तिलता**

☞ 'सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा'–इस तथ्य को तुलसीदास ने कहलवाया है **— शिव के द्वारा**

☞ वल्लभाचार्य की मृत्यु के बाद कहा था–'पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेउ।' **— विट्ठलनाथ**

☞ ''सूरसागर' में जगह-जगह दृष्टिकूट वाले पद मिलते हैं। यह भी विद्यापति का अनुकरण है।'' सूरदास से संबंधित उक्त विचार है।
— रामचन्द्र शुक्ल का

☞ ''हय रथ पालकी गयंद गृह ग्राम चारु
आखर लगाय लेत लाखन के सामा हीं।''
यह उक्ति कवि की है **— पद्माकर**

☞ ''सावन आवन हेरि सखी, मनभावन-आवन-चोप बिसेखी।
छाए कहूँ घन आनन्द जान सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।
बूँदें लगैं सब अंग दगैं उलटी गति आपने पापनि पेखी।
पौन सों जागति आगि सुनी ही पै पानि तें लागति आँखिन देखी।।''
इस सवैया में विरहिणी नायिका की मन: स्थिति का चित्रण किया गया है **— मार्मिक स्थिति**

☞ ''प्रिय की सुधि-सी ये सरिताएँ, ये कानन कांतार सुसज्जित।
मैं तो नहीं, किन्तु है मेरा हृदय किसी प्रियतम से परिचित।
जिसके प्रेमपत्र आते हैं प्राय: सुख-संवाद-सन्निहित।''
उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ हैं। **— रामनरेश त्रिपाठी की**

☞ 'नाटक जारी है' काव्य-संग्रह के रचयिता हैं **— लीलाधर जगूड़ी**

☞ दिनकर, निराला, पंत एवं प्रसाद में से 'आग और राग' का कवि कहा जाता है **— रामधारी सिंह दिनकर को**

☞ दीर्घतपा, कितने चौराहे, मैला आँचल एवं परती परिकथा उपन्यास में से 'विश्वनाथ प्रसाद' पात्र हैं **— मैला आँचल के**

☞ बाल, वय: सन्धि और किशोर मन का मनोवैज्ञानिक अंकन हुआ है
— शेखर : एक जीवनी उपन्यास में

☞ 'अ-कहानी' के प्रमुख प्रवक्ता हैं **— गंगाप्रसाद विमल**

☞ जय पराजय, रुपया तुम्हें खा गया, कृष्णार्जुन युद्ध एवं कर्बला में से प्रेमचन्द का नाटक है **— कर्बला**

☞ नाथ सम्प्रदाय, प्रबन्ध प्रभाकर, साहित्य का मर्म एवं लालित्य मीमांसा में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबन्ध संग्रह नहीं है
— प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाब राय द्वारा रचित)

☞ 'प्रगतिवाद' शीर्षक पुस्तक के लेखक हैं
— शिवकुमार मिश्र एवं शिवदान सिंह चौहान

नोट-सीबीएससी/नेट ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में शिवकुमार मिश्र मान था, परंतु संशोधित उत्तर कुंजी में शिवदान सिंह चौहान को भी मान लिया है।

☞ ''त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः'' यह कथन है **— आचार्य रुद्रट का**

☞ वक्रोक्ति का भेद नहीं है **— उक्ति विन्यास वक्रता**

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है **— कबीर, नानक, दादू, सुन्दरदास**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से रचनाओं का सही अनुक्रम है**— ललितललाम (1716-45 सं. के मध्य), शिवराज भूषण (सं.1730), पद्माभरण (1867 सं. के आस-पास), नवरस तरंग (सं. 1874)**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है **— श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897-1962 ई.)**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है **— बच्चन (1907-2003 ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), मुक्तिबोध (1917-1964 ई.), रघुवीर सहाय (1929-1990 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है **— अपनी खबर (1960 ई.), नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.), जूठन (1999 ई.), शिकंजे का दर्द (2012 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है **— शरणार्थी (1948 ई.), परिन्दे (1959 ई.), कामरेड का कोट (1993 ई.), डायन (1998 ई.)**

☞ कुबेरनाथ राय के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— गंधमादन (1972 ई.), कामधेनु (1990 ई.), मराल (1993 ई.), आगम की नाव (2008 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है **— सज्जन (1910-11 ई.), विशाख (1921 ई.), जनमेजय का नागयज्ञ (1926 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)**

☞ रससूत्र के व्याख्याकारों का सही अनुक्रम है **— भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त**

☞ ग्रंथों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है **— रसमीमांसा (1949 ई.), आलोचना के मान (1958 ई.), नयी कविता (1976 ई.) नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

लेखक		**रचना**
(a) विजयसेन सूरि	–	रेवन्तगिरि रास
(b) नरपति नाल्ह	–	बीसलदेव रासो
(c) शालिभद्र सूरि	–	भरतेश्वर बाहुबली रास
(d) आसगु	–	चन्दनबाला रास

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्प्रदाय		**प्रवर्तक**
(a) श्रीसम्प्रदाय	–	रामानुजाचार्य
(b) ब्राह्म सम्प्रदाय	–	मध्वाचार्य
(c) रुद्रसम्प्रदाय	–	विष्णुस्वामी
(d) सनकादि सम्प्रदाय	–	निम्बार्काचार्य

☞ सही सुमेलित हैं–

प्रबन्धकाव्य		**रचनाकार**
(a) चंडीचरित्र	–	गोविंद सिंह
(b) द्रोणपर्व (संग्राम सार)	–	कुलपति मिश्र
(c) सुजान चरित	–	सूदन
(d) हिम्मतबहादुर विरुदावली		–पद्माकर

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) प्रेमवाटिका	–	रसखान
(b) कवित्तरत्नाकर	–	सेनापति
(c) रसरतन	–	पुहकर कवि
(d) तिलशतक	–	मुबारक

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचयिता**
(a) बेला	–	सूर्यकान्त त्रिपाठी
(b) उत्तरा	–	सुमित्रानन्दन पंत
(c) परिक्रमा	–	महादेवी वर्मा
(d) चित्राधार	–	जयशंकर प्रसाद

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य पंक्तियाँ		**रचनाकार**
(a) प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।	–	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(b) इस पार प्रिये मधु है तुम हो उस पार न जाने क्या होगा।	–	हरिवंशराय बच्चन
(c) अरे कहीं देखा है तुमने मुझे प्यार करने वाले को	–	जयशंकर प्रसाद
(d) यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो	–	महादेवी वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**उपन्यास**
(a) जयदेव पुरी	–	झूठा-सच
(b) चन्द्रमाधव	–	नदी के द्वीप
(c) फूल बाबू	–	बलचनमा
(d) निर्गुनिया	–	नाच्यौ बहुत गोपाल

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**कहानी**
(a) आनन्दी	–	बड़े घर की बेटी
(b) दीनदयाल	–	जुलूस
(c) डॉ. जयपाल	–	मूठ
(d) शंकर	–	सवासेर गेहूँ

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**नाट्यरूप**
(a) चन्द्रावली	–	नाटिका
(b) विषस्य विषमौषधम्	–	भाण
(c) एक घूँट	–	एकांकी
(d) करुणालय	–	गीतिनाट्य

युवा सामयिक चक्र

☞ सही सुमेलित हैं–

आचार्य		ग्रन्थ
(a) अभिनव गुप्त	–	ध्वन्यालोकलोचन
(b) राजशेखर	–	काव्यमीमांसा
(c) महिम भट्ट	–	व्यक्तिविवेक
(d) भोजराज	–	सरस्वतीकण्ठाभरण

☞ **स्थापना (A) :** कविता आत्म प्रकाशन है, जो केवल कवि के हृदय को आनन्द प्रदान करती है।

तर्क (R) : इसीलिए कविता को कवि की आत्मा का आलोक माना गया जो समस्त लोक को प्रकाशित करता है। **— (A) गलत, (R) सही है**

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य समाज के सामूहिक हृदय का विकास है।

तर्क (R) : इसीलिए समाज में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों की चित्तवृत्ति का इसमें अलग-अलग विकास होता है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक सार्वकालिक और सर्वदेशिक होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि सभी देशों की जातीय अस्मिता और विश्वास एक जैसे हैं।

— (A) गलत, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** रहस्यभावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी।

तर्क (R) : क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असम्भव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है।

— (A) सही, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन साहित्य में पश्चिमी संस्कृति के संघात से शुद्ध भारतीयता का उदय हुआ।

— (A) सही, (R) गलत है

नवम्बर - 2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ सिद्धों में प्रचलित 'महामुद्रा' शब्द का अभिप्राय है

— सिद्धि प्राप्त हेतु स्त्री संसर्ग

☞ 'जायसी के श्रृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है।'' यह कथन है **— आलोचक रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ ''इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर को 'राम-नाम' रामानन्द जी से ही प्राप्त हुआ। पर आगे चल कर कबीर के 'राम' रामानन्द के 'राम' से भिन्न हो गए।'' यह कथन है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ विट्ठलनाथ ने वल्लभ सम्प्रदाय में पूजा-पद्धति का समावेश किया

— युगलोपासना

☞ ''सचिव बैद गुरु तीनि ज्यों प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म तन तीनि कर होहिं बेगिहीं नास।।''
यह दोहा है

— 'रामचरितमानस' के सुन्दरकाण्ड में

☞ डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल के अनुसार 'रामचन्द्रिका' है

— फुटकर कवित्तों का संग्रह

☞ रीतिमुक्त कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है **— स्वानुभूति और स्वच्छंदता**

☞ ''सीख सिखाई न मानति है, बर ही बस संग सखीन के आवै।
खेलत खेल नए जल में, बिना काम बृथा कत जाम बितावै।।
छोड़ि कै साथ सहेलिन को, रहि के कहि कौन सवा दहि पावै।
कौन परी यह बानि, अरी! नित नीर भरी गगरी ढरकावै।।''
इस सवैया में नायिका की सखी का भाव व्यक्त हुआ है

— उपालंभ

☞ ''घुसती है लाल-लाल मशाल अजीब सी,
अन्तराल-विवर के तम में
लाल-लाल कुहरा,
कुहरे में, सामने, रक्तालोक-स्नात पुरुष एक
रहस्य साक्षात् !!''
उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता से हैं

— अंधेरे में

☞ 'प्रियंवद' कविता से संबंधित पात्र है **— असाध्यवीणा**

☞ 'मधुशाला' का प्रकाशन वर्ष है **— 1935**

☞ 'भारतेन्दु ने जिस प्रकार हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया, उसी प्रकार काव्य की ब्रजभाषा की भी।' **— रामचन्द्र शुक्ल**

☞ खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है **—प्रियप्रवास**

☞ कामाध्यात्म की समस्या उठाई गई है **उर्वशी रचना में**

☞ ''क्षत्रिय! उठो अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो।
निज देश को जीवन सहित तन मन तथा धन भेंट दो।
वैश्यो सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का।
सब धन विदेशी हर रहे हैं, पार है क्या क्लेश का''।।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं

— मैथिलीशरण गुप्त

☞ 'हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें कवितावादी कहना।''
उक्त कथन है **— सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का**

☞ ''आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह-सम्पदा और वास्तविक सम्मान के साथ आई है। औरतें अब औरतें हैं, वे झूठी सती या वेश्याएं नहीं हैं, इसलिए नयी कहानी खलनायिकाओं में शून्य है।'' नयी कहानी के सम्बन्ध में उपर्युक्त कथन किसका है? **— कमलेश्वर का**

☞ ''सिख अमलदारी को उखाड़ती हुई ब्रिटिश साम्राज्यशाही'' का चित्रण हुआ है **— मय्यादास की माड़ी उपन्यास में**

☞ 'भारतीय काव्य-शास्त्र का नवनिर्माण'-शीर्षक निबन्ध के लेखक हैं **— नन्ददुलारे वाजपेयी**

☞ ''साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध'' ग्रन्थ के रचनाकार हैं **— महादेवी वर्मा**

☞ कलम का मजदूर, कलम का सिपाही, मेरी पत्नी और भेड़िया 'प्रेमचन्द' घर में इनमें से जीवनी नहीं है **— मेरी पत्नी और भेड़िया**

☞ पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित होकर बिहार के पूर्णिया जिले में आए हिन्दू शरणार्थियों की दारुण कथा का चित्रण है **— फणीश्वरनाथ रेणु के जुलूस उपन्यास में**

☞ ''अतएव, दो बालुकापूर्ण कगारों के बीच में एक निर्मल-स्रोतस्विनी का रहना आवश्यक है।'' यह संवाद है **—चन्द्रगुप्त नाटक के पात्र चाणक्य का**

☞ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न सुरेन्द्र वर्मा के नाटक में आया है **— आठवाँ सर्ग में**

☞ रससूत्र 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पतिः' ग्रन्थ में आया है **— नाट्यशास्त्र में**

☞ जहाँ बिना कारण के ही कार्य की सम्भावना व्यक्त की गई हो, वहाँ अलंकार होता है **—विभावना**

☞ भाव, विभाव, अनुभाव एवं संचारीभाव में से रस का अवयव नहीं हैं **— भाव**

☞ श्लेष, माधुर्य, शक्ति एवं समाधि में से काव्य गुण नहीं है **— शक्ति**

☞ ''काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है।'' उक्त कथन है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ अरस्तू द्वारा रचित 'पोएटिक्स (On Poetics) नामक ग्रन्थ में अध्याय हैं **— 26**

☞ मॉर्क्सवादी सिद्धान्त के अनुकूल नहीं है **— साम्यवादी व्यवस्था में भी राज्य तथा समस्त राजनीतिक और कानूनी ढांचे बने रहेंगे।**

☞ जॉक देरिदा, डेनियल बेल, रोलां बार्थ एवं रेमण्ड विलियम्स में से उत्तर-आधुनिकता का सम्बन्ध नहीं है **— रेमण्ड विलियम्स का**

☞ ''पीर भरो जिय धीर धरै नहिं
कैसे रहे जल जाल के बाँधे?''
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में स्त्री की मनःस्थिति का संकेत किया गया है **— दुःखातिरेक**

☞ तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में कलियुग का वर्णन किया है **— उत्तरकाण्ड में**

☞ ''स्नेह-निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।''
उपरोक्त गीत है **— सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का**

☞ 'आत्मजयी' की कथावस्तु आधारित है **— कठोपनिषद् से**

☞ 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास के लेखक हैं **— श्रीलाल शुक्ल**

☞ 'काम और राम' का द्वन्द्व चित्रित है **— मानस का हंस उपन्यास में**

☞ ''कि मैं इस घर से ही अपने अन्दर कुछ ऐसी चीज लेकर गयी हूँ जो किसी भी स्थिति में मुझे स्वाभाविक नहीं रहने देती।''
'आधे-अधूरे' नाटक के प्रस्तुत संवाद का सम्बन्ध है **— बड़ी लड़की पात्र से**

☞ 'कारवाँ' एकांकी संग्रह है **— भुवनेश्वर प्रसाद का**

☞ रचनाकाल के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है **— कुवलयमाला कथा (9वीं शताब्दी), राउलवेल (10वीं शताब्दी), उक्ति व्यक्तिप्रकरण (12वीं शताब्दी), वर्णरत्नाकर (14वीं शताब्दी)**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है **— पुहुपावती (1725 ई.), हंस जवाहिर (1726 ई.), अनुराग बाँसुरी (1744 ई.), यूसुफ जुलेखा (1790 ई.)**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है **— कीर्तिलता (1331 ई.), छिताईवार्ता (1590 ई.) भक्तमाल (1600 ई.), चित्रावली (1613 ई.)**

नोट- विकल्प में कोई उत्तर सही नहीं है। सीबीएससी/यूजीसी ने इसका क्रम माना है-कीर्तिलता, भक्तमाल, छिताईवार्ता, चित्रावली

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार अज्ञेय की रचनाओं का सही अनुक्रम है **— इत्यलम (1946 ई.), हरी घास पर क्षण भर (1949 ई.), आँगन के पार द्वार (1961 ई.), कितनी नावों में कितनी बार (1967 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है **— प्रेम-माधुरी (1875 ई.), श्रांतपथिक (1902 ई.), प्रियप्रवास (1914 ई.), मिलन (1917 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार महादेवी वर्मा की रचनाओं का सही अनुक्रम है **— नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), दीपशिखा (1942 ई.)**

☞ जन्मकाल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है **— शमशेर बहादुर सिंह (1911 ई.), भवानी प्रसाद मिश्र (1913 ई.), गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (1917 ई.), भारत भूषण अग्रवाल (1919 ई.)**

यूथ-सामयिक घटना चक्र

☞ प्रकाशन के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— आपका बंटी (1971 ई.), चित्तकोबरा (1979 ई.), शाल्मली (1987 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है

— दो बैलों की कथा (1931 ई.), बड़े भाई साहब (1934 ई.), कफन (1936 ई.), क्रिकेट मैच (1937 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है

— मादा कैक्टस (1959 ई.) द्रौपदी (1972 ई.), सिंहासन खाली है (1974 ई.), एक और द्रोणाचार्य (1977 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1973 ई.), साहित्य और इतिहास दृष्टि (1981 ई.), वाद विवाद संवाद (1989 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है

—कस्तूरी कुंडल बसै (2002 ई.), हादसे (2005 ई.), एक कहानी यह भी (2008 ई.), और-और औरत (2010 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है

— भारत जननी (1877 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.) अन्धायुग (1955 ई.), आधे-अधूरे (1969 ई.)

☞ निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है

— ध्वन्यालोक, वक्रोक्तिजीवितम्, कविकण्ठाभरण, साहित्यदर्पण

☞ मार्क्सवादी चिन्तकों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है

— कार्ल मार्क्स (1818-1883 ई.), फ्रेडरिक एंगेल्स (1820-1895 ई.) व्लादीमीर इलिच लेनिन (1870-1924 ई.), माओ-त्से-तुंग (1893-1976 ई.)

☞ **स्थापना (A) :** काव्य हृदय का परम उत्थान है और विज्ञान मस्तिष्क का चरम उत्कर्ष है।

तर्क (R) : क्योंकि विज्ञान हृदय को शान्ति तो नहीं दे पाता लेकिन काव्य का उत्कर्ष जीवन की सभी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** लोक आख्यान की निर्मिति सामूहिक अचेतन की प्रक्रिया है।

तर्क (R) : क्योंकि लोक में इसके निर्माण की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है।

— (A) सही, (R) सही है।

☞ **स्थापना (A) :** जयशंकर प्रसाद के नाटकों में रस और द्वन्द्व का समन्वय है।

तर्क (R) : क्योंकि उनके नाटकों की संरचना पश्चिमी और आत्मा भारतीय है।

— (A) सही (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** कलाकार सत्य को सुन्दर बनाकर शिवत्व की उपलब्धि करता है।

तर्क (R) : इसीलिए सृजन व्यापार कलाकार का आत्मकल्याण है, लोकमंगल नहीं।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** भूमण्डलीय विश्व की पूँजीवादी सांस्कृतिक व्यवस्था है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था ने स्थानीय संस्कृति को सम्पूर्णतः नष्ट कर दिया है और अब पूरा विश्व ही एक परिवार है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद का निषेध किया।

तर्क (R) : इसी कारण साहित्यक चेतना में न केवल विखण्डन समाप्त हुआ, बल्कि एकात्मकता को बढ़ावा मिला।

— (A) गलत (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** सांस्कृतिक एकरूपता साहित्य के लोकतंत्र में अनिवार्य है।

तर्क (R) : क्योंकि बहुलतावाद साहित्यक संवेदना को खण्डित करता है।

— (A) गलत (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** हिन्दी अभिव्यक्ति की एक सम्पूर्ण और सशक्त सर्वसमावेशी बहुलतावादी सांस्कृतिक इकाई है।

तर्क (R) : क्योंकि भारत के एक बड़े भू-भाग की बोलियों का समूह इसकी शक्ति को बढ़ाता है।

— (A) सही (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** जैसे वीरकर्म से पृथक कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। जो भीतर है वही बाहर है।

— (A) सही (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य की श्रेष्ठसाधनाएँ ही संस्कृति है।

तर्क (R) : क्योंकि इन्हीं साधनाओं के माध्यम से मनुष्य अविरोधी सत्य तक पहुंच सका है। संस्कृति इसी अविरोधी सत्य का पर्याय है।

— (A) सही (R) सही है

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		संबद्ध ग्रन्थ
(a) राघवचेतन	–	पद्मावत
(b) श्रीदामा	–	सूरसागर
(c) शबरी	–	रामचरितमानस
(d) चन्दा	–	चंदायन

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) वैराग्य संदीपनी	–	तुलसीदास
(b) विरह मंजरी	–	नंददास
(c) इंद्रावती	–	नूर मुहम्मद
(d) वीरसिंह देवचरित	–	केशवदास

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		रचनाकार
(a) मधुमालती	–	मंझन
(b) रासपंचाध्यायी	–	नन्ददास
(c) भक्ति प्रताप	–	चतुर्भुजदास
(d) प्रेमवाटिका	–	रसखान

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) मिलन यामिनी	–	हरिवंशराय 'बच्चन'
(b) दिल्ली	–	रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) सागर मुद्रा	–	स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(d) इतने पास अपने	–	शमशेर बहादुर सिंह

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		उपन्यास
(a) लाला मदनमोहन	–	परीक्षागुरु
(b) नाहर सिंह	–	नूतन ब्रह्मचारी
(c) लाला भगवानदास	–	वामा शिक्षक
(d) वासुदेव शास्त्री	–	भाग्यवती

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटककार		नाटक
(a) विष्णु प्रभाकर	–	युगे-युगे क्रान्ति
(b) जगदीशचन्द्र माथुर	–	दशरथ नन्दन
(c) लक्ष्मीनारायण लाल	–	सूर्यमुख
(d) भीष्म साहनी	–	रंग दे बसंती

☞ सही सुमेलित हैं–

आचार्य		ग्रन्थ
(a) दण्डी	–	काव्यादर्श
(b) उद्भट	–	काव्यालंकारसारसंग्रह
(c) मम्मट	–	काव्यप्रकाश
(d) पण्डितराज जगन्नाथ	–	रसगंगाधर

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धान्तकार		कृति
(a) सास्युर दे फर्डीनाड	–	कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक्स
(b) जॉर्ज लूकाच	–	स्टडीज इन यूरोपियन रियलिज्म
(c) एलेन टेट	–	टेंशन इन पोयट्री
(d) हावर्ड फास्ट	–	लिटरेचर एण्ड रियलिटी

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		कवि
(a) तू है गगन विस्तीर्ण तो मैं एक तारा क्षुद्र हूँ।	–	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(b) निकल रही है उर से आह, ताक रहे सब तेरी राह।	–	मैथिलीशरण गुप्त
(c) जल उठा स्नेह दीपक-सा, नवनीत हृदय था मेरा।	–	जयशंकर प्रसाद
(d) अरुण अधरों की पल्लव प्रात, मोतियों सा हिलता हिम हास।	–	सुमित्रानन्दन पंत

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		पात्र
(a) चन्द्रगुप्त	–	संसार-भर की नीति और शिक्षा का अर्थ मैंने यही समझा है कि आत्मसम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है।
(b) दाण्ड्यायन	–	भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते।
(c) कार्नेलिया	–	मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है।
(d) चाणक्य	–	भाषा ठीक करने से पहले मैं मनुष्यों को ठीक करना चाहता हूँ।

समसामयिक घटना चक्र

जनवरी - 2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ अपभ्रंश का व्यवहार लोकभाषा के अर्थ में होने लगा था

— ग्यारहवीं शताब्दी में

☞ 'पुरुष परीक्षा' रचना है **— विद्यापति की**

☞ रामचन्द्र शुक्ल, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, गौरी शंकर हीरानन्द ओझा एवं डॉ. बूलर में से 'पृथ्वीराज रासो' को सर्वथा अप्रमाणिक मानने वालों में शामिल नहीं हैं **— मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या**

☞ ''मोरा जोबना नवेल रा भयो है गुलाल
कैसे घर दीनी बकस मोरी माल।'' पंक्तियों के रचयिता हैं

— अमीर खुसरो

☞ मीराबाई की उपासना थी **— माधुर्य भाव की**

☞ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, कबीर ने अपनी साखियों में 'सधुक्कड़ी' भाषा का प्रयोग किया है। 'सधुक्कड़ी' से उनका अभिप्राय है **— राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली से**

☞ 'सुजान कुमार' नायक है **— सूफी प्रेमाख्यान चित्रावली का**

☞ 'सखी हौं स्याम रंग रँगी। देखि बिकाय गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी।'' काव्य पंक्तियां हैं **— गदाधर भट्ट की**

☞ ''तिय सैसव जोबन मिले, भेद न जान्यो जात।
प्रात समय निसि द्योस के दुवौ भाव दरसात।।''
दोहे में नायिका की अवस्था का वर्णन किया गया है

— नवोढ़ा अवस्था का

☞ ''जगत जनायो जिहिं सकल, सो हरि जान्यो नाहिं।
ज्यों आँखिन सब देखियै, आँखि न देखी जाहिं।।''
उक्त दोहे में है **— उदाहरण अलंकार**

☞ मैथिलीशरण गुप्त की प्रतिभा का विकास सर्वाधिक देखने को मिलता है **— प्रबन्धकार रूप में**

☞ '.......रचना न तो दर्शन है और न किसी ज्ञानी के प्रौढ़ मस्तिष्क का चमत्कार। यह तो अन्ततः, एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय ही है, जो मस्तिष्क के स्तर पर चढ़कर बोल रहा है।'
रामधारी सिंह दिनकर द्वारा कहा गया कथन काव्य के संबंध में है

— कुरुक्षेत्र के

☞ ''उड़ गया गरजता यंत्र-गरुड़
बन बिन्दु, शून्य में पिघल गया
पर साँप'' ये पंक्तियां 'अज्ञेय' की कविता से हैं

— 'हवाई अड्डे पर विदा' से

☞ 'ठंडा लोहा' कविता संग्रह के रचनाकार हैं **— धर्मवीर भारती**

☞ उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्गीय बनिया समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है **— देवरानी जेठानी की कहानी उपन्यास में**

☞ कामकुंठा की शिकार स्त्री के चरित्र का चित्रण किया गया है

— सूरजमुखी अंधेरे के उपन्यास में

☞ हिन्दू-मुस्लिम एकता को प्रतिपादित करने वाला नाटक है

— रक्षाबन्धन

☞ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक क्षेमीश्वर कृत 'चंडकौशिक' के आधार पर लिखा गया है **— सत्य हरिश्चन्द्र**

☞ अर्थोपक्षेपक होते हैं **पाँच प्रकार के**

☞ कल्चर एण्ड अनार्की, लिटरेचर एण्ड ड्रामा, एसेस ऑन चर्च एण्ड स्टेट तथा द कॉकलेट पार्टी में से मैथ्यू ऑर्नाल्ड की रचना नहीं है

— द कॉकलेट पार्टी

☞ रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार लेखन-काल की दृष्टि से विद्यापति की रचनाओं का सही अनुक्रम है

— कीर्तिलता, भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, कीर्तिपताका

☞ रचनाकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

— चिन्तामणि (1609 ई.), महाराज जसवन्त सिंह (1626 ई.), देव (1673 ई.), भिखारीदास (1721 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार श्रीधर पाठक की रचनाओं का सही अनुक्रम है

— एकांतवासी योगी, ऊजड़ ग्राम, श्रांत पथिक, सांध्य अटन

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की रचनाओं का सही अनुक्रम है **— गीतिका (1936 ई.), अणिमा (1943 ई.), अर्चना (1950 ई.), आराधना (1953 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार हिन्दी नाटकों का सही अनुक्रम है

— अन्धा कुआँ, बकरी, इक तारे की आँख, कोर्ट मार्शल

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

— रानी केतकी की कहानी (1803 ई.), वामा शिक्षक (1872 ई.), भाग्यवती (1877 ई.), परीक्षा गुरु (1885 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष (1961 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1961 ई.), अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), वाद विवाद संवाद (1989 ई.)

☞ ऐतिहासिक दृष्टि से पाश्चात्य साहित्य चिन्तकों का पूर्वापर अनुक्रम है

— अरस्तू-कॉलरिज-मैथ्यू ऑर्नाल्ड-टी.एस. इलियट

☞ भरतमुनि के अनुसार नाट्य वृत्तियों का सही क्रम है

— भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी

☞ जन्मकाल के अनुसार हिन्दी आलोचकों का सही क्रम है

— रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.), नन्ददुलारे वाजपेयी (1906-1967 ई.), रामविलास शर्मा (1912-2000 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं-

पंक्ति		कवि
(a) हौं सब कबिन्ह केर पछिलगा	–	जायसी
(b) कबित्त बिवेक एक नहिं मोरे	–	तुलसी
(c) प्रभुजी, हौं पतितन कौ टीको	–	सूरदास
(d) अब तो अजपा जपु मन मेरे सुर नर असुर टहलुआ जाके मुनि गंध्रब हैं जाके चेरे	–	मलूकदास

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		रचनाकार
(a) राउलवेल	–	रोड कवि
(b) खुमाण रासो	–	दलपति विजय
(c) चंदनबाला रास	–	आसगु
(d) योगचर्या	–	डोम्भिबा

☞ सही सुमेलित हैं-

कवि		काव्यकृति
(a) सियारामशरण गुप्त	–	मौर्य विजय
(b) बालकृष्ण शर्मा नवीन	–	विप्लव गायन
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान	–	राखी की चुनौती
(d) गया प्रसाद शुक्ल सनेही	–	राष्ट्रीय मंत्र

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में काव्यकृति 'राष्ट्रीय तरंग' दिया गया है, जबकि वास्तव में 'राष्ट्रीय मंत्र' है, जो गया प्रसाद शुक्ल सनेही की रचना है।

☞ सही सुमेलित हैं-

पंक्ति		कवि
(a) श्रेय नहीं कुछ मेरा/मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में वीणा के माध्यम से अपने को मैंने/ सब कुछ को सौंप दिया था।	–	अज्ञेय
(b) परम अभिव्यक्ति/लगातार घूमती है जग में/पता नहीं जाने कहाँ, जाने कहाँ/वह है।	–	मुक्तिबोध
(c) पर एक तत्व है बीज रूप स्थित मन में साहस में, स्वतंत्रता में, नूतन सर्जन में	–	धर्मवीर भारती
(d) मैं उनका आदर्श जो व्यथा न खोल सकेंगे पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।	–	दिनकर

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		रचनाकार
(a) मधूलिका	–	रामेश्वर शुक्ल अंचल
(b) प्रभातफेरी	–	नरेन्द्र शर्मा
(c) प्रण-भंग	–	रामधारीसिंह दिनकर
(d) काठमांडू की पहली सांझ	–	शिवमंगल सिंह सुमन

☞ सही सुमेलित हैं-

उपन्यास		विषय-वस्तु
(a) अपना मोर्चा	–	छात्र आन्दोलन
(b) मुझे चाँद चाहिए	–	रंगमंच और सिनेमा संसार
(c) दिलो दानिश	–	मुस्लिम संस्कृति
(d) अनामदास का पोथा	–	औपनिषदिक आख्यान

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		नाटक
(a) मालविका	–	चन्द्रगुप्त
(b) मल्लिका	–	आषाढ़ का एक दिन
(c) वेनुरति	–	सूर्यमुख
(d) देवयानी	–	देहान्तर

☞ सही सुमेलित हैं-

आलोचना ग्रन्थ		आलोचक
(a) साहित्य क्यों	–	विजयदेव नारायण साही
(b) भाषा और संवेदना	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी
(c) लोकवादी तुलसीदास	–	विश्वनाथ त्रिपाठी
(d) कविता की तीसरी आँख	–	प्रभाकर श्रोत्रिय

☞ सही सुमेलित हैं-

ग्रन्थ		रचनाकार
(a) रस मीमांसा	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) हिन्दी साहित्य का आदिकाल	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) निराला की साहित्य साधना	–	राम विलास शर्मा
(d) आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा	–	नन्ददुलारे वाजपेयी

सम-सामयिक घटना चक्र

☞ सही सुमेलित हैं-

उक्ति		आचार्य
(a) शब्दार्थो सहितौ काव्यम्	–	भामह
(b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	–	विश्वनाथ
(c) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	–	पण्डितराज जगन्नाथ
(d) तद्‌तोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि	–	मम्मट

☞ **स्थापना (A) :** रीतिकाल में जन-साधारण का जीवन सामन्ती विलासपूर्ण आकांक्षाओं और भोगपूर्ण शृंगार से ओत-प्रोत था।

तर्क (R) : इसीलिए नैतिकता की दृष्टि से जन-साधारण का आचरण और चरित्र दरबारी संस्कृति से अलग नहीं हो पाया था।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य एवं कलाएँ वर्ग-हितों का ही प्रतिबिम्बन और प्रतिनिधित्व करती हैं।

तर्क (R) : चूँकि साहित्य की चेतना शासन और सत्ता की विचारधारा से प्रतिबद्ध होती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** बिम्ब अतीन्द्रिय होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि उनमें ऐन्द्रिकता का होना अनिवार्य है।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** हृदय सहित समाज में उत्पन्न होने वाला हर व्यक्ति 'सहृदय' और 'सामाजिक' होता है।

तर्क (R) : इसीलिए साहित्यशास्त्र में उनके लिए किसी गुण अथवा लक्षणों का उल्लेख नहीं किया गया।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** रस कार्य (कारणजन्य) रूप वस्तु नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि वह तो विभावादि समूहालम्बनात्मक अनुभव है, न कि विभावादि द्वारा उत्पन्न की गई वस्तु। कारण-ज्ञान और कार्य ज्ञान का एक समय में होना कदापि सम्भव नहीं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जनवरी - 2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ हुज्वेरी के अनुसार 'फना' का अर्थ है **— किसी वस्तु की अपूर्णता का ज्ञान और उसे पाने की इच्छा से विरत होना।**

☞ 'रास पंचाध्यायी' लिखी गई है **— रोला छन्द में**

☞ 'मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि-पाहि सरनहिं आई।।
'रामचरितमानस' की उक्त चौपाई में व्यक्त विचार हैं

— अहल्या पात्र के

☞ राम और सीता के विवाह के अवसर पर कवि ने मिथिला की स्त्रियों से 'गारी गीत' गवाया है **—केशवदास ने**

☞ ''अच्युत-चरन तरंगिनी, शिव-सिर मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव भाल।।''
इस दोहे के रचनाकार का नाम है **—रहीम**

☞ चंडीचरित्र, रामचरित, सुजानचरित एवं सुजानहितप्रबन्ध में से प्रबन्ध काव्य कृति नहीं है **— सुजानहितप्रबन्ध**

☞ ''लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।''
इस दोहे में 'सबी' शब्द का अर्थ है **— चित्र (नायिका के समान)**

☞ 'गीति संग्रह' के रचनाकार हैं **— रसनिधि**

☞ 'शकुन्तला नाटक' रचना है **— नेवाज की**

☞ 'सूरसागर' के पदों का भावानुसरण करते हुए कृष्ण के जीवन का चित्रण किया है **— कवि ब्रजवासीदास ने**

☞ हिंडोला, गंगावतरण, भ्रमरदूत एवं उद्धवशतक में से जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की रचना नहीं है **— भ्रमरदूत**

☞ कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, आज अभी आँखों से एवं काल तुमसे होड़ है मेरी, में से काव्य-संग्रह शमशेर बहादुर सिंह का नहीं है

— आज अभी आँखों से

☞ ''कहाँ हो ऐ हमारे प्राण प्यारे।
किधर तुम छोड़कर हमको पधारे।।
बुढ़ापे में यह दुख भी देखना था।
इसी को देखने को मैं बचा था।''
ये काव्य पंक्तियाँ हैं **— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की**

☞ ''फिर परियों के बच्चे से हम सुभग सीप के पंख पसार।
समुद्र पैरते शुचि ज्योत्स्ना में पकड़ इन्द्र के कर सुकुमार।।''
इन काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं

— सुमित्रानन्दन पन्त

☞ ''सब का निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन-सा
आँसू इस विश्व-सदन में।''
उक्त काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं **—जयशंकर प्रसाद**

☞ युगपथ, अतिमा, उत्तरा एवं गीतगुंज में से सुमित्रानन्दन पन्त की रचना नहीं है **— गीतगुंज**

☞ वीणा, गीतिका, निशा एवं नीरजा में से महादेवी वर्मा की रचना है **— नीरजा**

☞ ''कहाँ जाऊँ/हर दिशा में/मृत्यु से भी बहुत आगे की/अपरिमित दूरियाँ हैं।'' कविता की ये पंक्तियाँ कुँवर नारायण की हैं **— आत्मजयी रचना से**

☞ 'चौपट चपेट' और 'मयंक मंजरी' नाटकों के लेखक हैं **—किशोरीलाल गोस्वामी**

☞ डॉ. गोपाल राय के अनुसार, हिन्दी में 'नॉवेल' के अर्थ में उपन्यास पद का प्रथम प्रयोग किया **— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने**

☞ चन्द हसीनों के खतूत, दिल्ली का कलंक, बुधुआ की बेटी एवं दिल्ली का दलाल में से पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा रचित उपन्यास नहीं है **— दिल्ली का कलंक**

☞ करनट कबीलों के जीवन यथार्थ के विविध पक्षों पर आधारित उपन्यास है **—कब तक पुकारूँ**

☞ 'अरुण' और 'मधूलिका' पात्र हैं **— पुरस्कार कहानी के**

☞ भाग्यरेखा, काठ का सपना, वाङ्चू एवं निशाचर में से भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी-संग्रह नहीं है **— काठ का सपना**

☞ आधुनिक ईरान की पृष्ठभूमि पर रक्त रंजित इस्लामी क्रांति का चित्रण किया गया है **— सात नदियाँ एक समुन्दर उपन्यास में**

☞ इन्सान के खण्डहर, पाजेब, नीलम देश की राजकन्या एवं वातायन में से जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी-संग्रह नहीं है **— इन्सान के खण्डहर**

☞ ''वैदिक सूक्तों के गरिमामय उद्‌गम से लेकर लोकगीतों के महासागर तक जिस अविच्छिन्न प्रवाह की उपलब्धि होती है, उस भारतीय भाव धारा का मैं स्नातक हूँ।''
उपर्युक्त विचार विद्यानिवास मिश्र ने अपने निबन्ध संग्रह की भूमिका में लिखे हैं **— छितवन की छाँह में**

☞ अज्ञेय ने 'शेखर' के संदर्भ में अपने निबन्ध में स्वीकार किया कि 'ज्याँ' क्रिस्तोफ के अनवरत आत्मशोध और आत्म-साक्षात्कार का जो चित्र 'रोलाँ' ने प्रस्तुत किया है, उससे कुछ अवश्य प्रेरणा मिली **—आत्मनेपद में**

☞ ''आज इस पराजय की बेला में
सिद्ध हुआ
झूठी थी सारी अनिवार्यता भविष्य की
केवल कर्म सत्य है
मानव जो करता है, इसी समय
उसी में निहित है भविष्य
युग-युग तक का।''
'अन्धा युग' नाटक का उक्त संवाद अंक से उद्‌धृत है **— पशु का उदय से**

☞ ''समझदारी आने पर यौवन चला जाता है, जब तक माला गूँथी जाती है फूल कुम्हला जाते हैं।'' जयशंकर प्रसाद कृत 'चन्द्रगुप्त' नाटक का उक्त संवाद पात्र द्वारा बोला गया है **— चाणक्य द्वारा**

☞ 'काव्यशोभाया: कर्तारो धर्मः गुणाः।' यह उक्ति है **— आचार्य वामन की**

☞ जहाँ समानार्थक विशेषणों से प्रस्तुत के वर्णन द्वारा अप्रस्तुत का बोध कराया जाय, वहाँ होता है **— समासोक्ति अलंकार**

☞ 'मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।' यह उक्ति है **— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की**

☞ अलंकार को काव्य की आत्मा मानकर रस का महत्व गौण कर दिया **— भामह ने**

☞ जब वक्रोक्ति वक्ता की कंठ ध्वनि पर आश्रित होती है, तब उसे कहा जाता है **— काकुवक्रोक्ति**

☞ काव्यालंकार, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक एवं साहित्य दर्पण में से आचार्य भामह का है **—काव्यालंकार**

☞ स्वाधीनता-प्राप्ति के अवसर पर लिखी गई निम्नलिखित कविता है
''मुक्त गगन है, मुक्त पवन है, मुक्त साँस गरबीली
लाँघ सात लाँबी सदियों को हुई शृंखला ढीली।
टूटी नहीं कि लगा अभी तक, उपनिवेश का दाग?
बोल तिरंगें, 'तुझे उड़ाऊँ या कि जगाऊँ आग?''
— माखनलाल चतुर्वेदी

☞ नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश एवं गिरिजा कुमार माथुर में से प्रपद्यवादी कवि नहीं हैं **— गिरजा कुमार माथुर**

☞ ''कविता तो कवि की आत्मा का आलोक है, उसके हृदय का रस है, जो बाहर की वस्तु का अवलम्ब लेकर फूट पड़ती है'' यह कथन है **— रामधारी सिंह दिनकर का**

☞ प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित नाटक है **— सूरदास**

☞ 'भक्तमाल' में रामानन्द के प्रथम चार शिष्यों का सही अनुक्रम है **— अन्नतानन्द, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द**

☞ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार सम्प्रदायों का सही अनुक्रम है– **श्री सम्प्रदाय, ब्राह्म सम्प्रदाय, रुद्र सम्प्रदाय, सनकादि सम्प्रदाय**

☞ कालक्रम की दृष्टि से काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है

— अंगदर्पण, विरहवारिश, व्यंग्यार्थकौमुदी, मधुरप्रिया

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

— रश्मिरथी, कनुप्रिया, संशय की एक रात, द्रौपदी

☞ रचनाकाल के अनुसार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं का सही अनुक्रम है **— भक्त सर्वस्व, प्रेमतरंग, सतसई सिंगार, मधु मुकुल**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रबन्धकाव्यों का सही अनुक्रम है

— विष्णुप्रिया, उर्वशी, लोकायतन, आत्मजयी

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

— राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, केदारनाथ सिंह, धूमिल

☞ जन्मकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है

— बालमुकुन्द गुप्त, श्यामसुन्दर दास, सरदार पूर्ण सिंह, गुलाबराय

☞ जन्मकाल के अनुसार उपन्यासकारों का सही अनुक्रम है

—यशपाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, रांगेय राघव

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है

—शरणार्थी, ठुमरी, सतह से उठता आदमी, शोभायात्रा

☞ जन्मकाल के अनुसार नाटककारों का सही अनुक्रम है

— हरिकृष्ण प्रेमी, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, शंकर शेष

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध-संग्रहों का सही अनुक्रम है

— अंगद का पांव (1958 ई.), अद्यतन (1977 ई.), विकलांग श्रद्धा का दौर (1980 ई.) , मराल (1993 ई.)

☞ नाटक के कथानक में कुछ दृश्य सूच्य होते हैं। पाँच प्रकार के इन सूच्य कथानकों का सही अनुक्रम है

— विष्कंभक, प्रवेशक, चूलिका, अकांस्य, अंकावतार

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार हजारी प्रसाद द्विवेदी के आलोचना ग्रन्थों का सही क्रम है **— हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, लालित्य मीमांसा, मध्यकालीन बोध का स्वरूप**

☞ सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है

—द्रौपदी (1972 ई.), आठवाँ सर्ग (1976 ई.), एक दूनी एक (1987 ई.), रति का कंगन (2011 ई.)

☞ **स्थापना (A) :** जहाँ व्यक्ति जीवन का लोक जीवन में लय हो जाता है, वही भाव की पवित्र भूमि है।

तर्क (R) : इसीलिए कविता में विश्व हृदय का यह आभास कविता की यथार्थवादी अवस्था है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का आनन्द लोकोत्तर और अनिर्वचनीय होता है।

तर्क (R) : क्योंकि रस को ब्रह्मानन्द का समानार्थी कहा गया है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** रस ज्ञान द्वारा ग्राह्य होता है।

तर्क (R) : क्योंकि हृदय की अनुभूति के साथ उसकी बौद्धिक सत्ता भी होती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** छायावादोत्तर कविता विचार-प्रधान काव्य है।

तर्क (R) : क्योंकि उसमें कवि के निजी संवेदनानुभवों को अभिव्यक्त होने का अवसर नहीं मिला।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** कला माध्यम के द्वारा कलाकार सत्य को सुन्दर बनाकर निजत्व की उपलब्धि करता है।

तर्क (R) : क्योंकि सत्य कलाकार की संचित पूँजी होती है, सौन्दर्य-सृजन उसका व्यापार और लोकमंगल का प्रसार उसकी उपलब्धि।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य सौन्दर्य भाव और कला की एकान्विति में है।

तर्क (R) : क्योंकि काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों असम्बद्ध होते हैं।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक मनुष्य के आदिम मस्तिष्क की सृजनशील शक्तियों का मूल्यवान सांस्कृतिक उपहार है।

तर्क (R) : क्योंकि आदिम मन और मस्तिष्क द्वारा प्रकृति के तत्वों और घटनाओं के मानवीकरण की अचेतन प्रक्रिया ही मिथक रचना का मूल बनी।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** कविता में शृंगार-चित्रण अनिवार्य है।

तर्क (R) : क्योंकि शृंगार की सरस वाग्धारा ही पाठक को आनन्दित कर सकती है, अन्य भावधारा नहीं।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** कविता एक अलौकिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

तर्क (R) : इसीलिए जीवन का लौकिक-पक्ष उसमें नहीं आ सकता।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** छायावादी काव्य आत्मनिष्ठता के कारण अहंवादी बन गया।

तर्क (R) : इसी कारण छायावादी कवियों ने सामाजिक नैतिकताओं की उपेक्षा की।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (काव्य पंक्तियाँ)	सूची-II (रचनाकार)
(a) जेहि पंखी के नियर होइ, करै बिरह कै बात। सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात।।	– जायसी
(b) हमको सपनेहू में सोच। जा दिन में बिछुरे नंदनंदन ता दिन ते यह पोच।	– सूरदास
(c) अब जीवन की है कपि आस न कोय। कनगुरिया की मुदरी कंगना होय।।	– तुलसीदास
(d) जिभिया ऐसी बावरी कहि गई सरग-पताल। आपुहिं कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।	– रहीम

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (पात्र)		सूची-II (रचना)
(a) मैना	–	चांदायन
(b) ऋतुवर्ण	–	सत्यवती कथा
(c) रुक्मिणी	–	मृगावती
(d) राघवचेतन	–	पद्मावत

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (कविता)		सूची-II (रचयिता)
(a) इशारे जिन्दगी के	–	अज्ञेय
(b) बूंद टपकी एक नभ से	–	भवानी प्रसाद मिश्र
(c) चार ईमानदार	–	कुँवर नारायण
(d) मेरा प्रतिनिधि	–	रघुवीर सहाय

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (रचना)		सूची-II (रचनाकार)
(a) प्रेमपथिक	–	जयशंकर प्रसाद
(b) गीतिका	–	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(c) सांध्यगीत	–	महादेवी वर्मा
(d) गुंजन	–	सुमित्रानन्दन पन्त

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (कहानी)		सूची-II (केन्द्रीय विचार)
(a) पूस की रात	–	ऋण की समस्या
(b) शतरंज के खिलाड़ी	–	राष्ट्रीय चेतना
(c) ठाकुर का कुआँ	–	जाति भेद
(d) पंच परमेश्वर	–	न्यायप्रियता

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (पात्र)		सूची-II (उपन्यास)
(a) सेल्मा	–	अपने अपने अजनबी
(b) निर्गुनिया	–	नाच्यौ बहुत गोपाल
(c) माणिक मुल्ला	–	सूरज का सातवाँ घोड़ा
(d) सरस्वती	–	यह पथ बन्धु था

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (नाटक)		सूची-II (नाटककार)
(a) रेशमी टाई	–	रामकुमार वर्मा
(b) लाटरी	–	भुवनेश्वर प्रसाद
(c) पर्दे के पीछे	–	उदयशंकर भट्ट
(d) रीढ़ की हड्डी	–	जगदीश चन्द्र माथुर

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (पात्र)		सूची-II (कहानी)
(a) चम्पा-बुद्धगुप्त	–	आकाश दीप
(b) अलोपीदीन-वंशीधर	–	नमक का दारोगा
(c) सिरचन-मानू	–	ठेस
(d) बाबा भारती-खडगसिंह	–	हार की जीत

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (सिद्धान्त)		सूची-II (सिद्धान्तकार)
(a) वक्रोक्ति सिद्धांत	–	कुन्तक
(b) रीति सिद्धांत	–	वामन
(c) औचित्य सिद्धांत	–	क्षेमेन्द्र
(d) ध्वनि सिद्धांत	–	आनन्दवर्द्धन

☞ सही सुमेलित हैं-

सूची-I (नाट्यगीत)	सूची-II (पात्र)
(a) ''अरुण यह मधुमय देश हमारा...''	– कार्नेलिया
(b) ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती...''	– अलका
(c) ''तुम कनक किरण के अन्तराल में लुप-छिपकर चलते हो क्यों....''	– राक्षस
(d) ''आह वेदना मिली विदाई...''	– देवसेना

सम-सामयिक घटना चक्र

जुलाई - 2016 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(28 अगस्त, 2016 को सम्पन्न)

☞ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, अपभ्रंश को लोकभाषा न कहकर देश भाषा कहा है **— भरतमुनि ने**

☞ वज्रयान में 'महासुख' दशा की प्राप्ति मानी गई **— प्रज्ञा और उपाय के योग से**

☞ 'हिन्दू पूजै देहरा, मुसलमान मसीद' पंक्ति है **— नामदेव की**

☞ 'ज्ञानदीप' के रचयिता हैं **— शेखनबी**

☞ 'गोस्वामी के प्रादुर्भाव को हिन्दी काव्य क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए।' यह कथन है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'रामध्यान मंजरी' के रचयिता हैं **— स्वामी अग्रदास**

☞ अपना परिचय देते हुए स्वीकार किया है कि
'हय, रथ, पालकी, गयंद, गृह, ग्राम, चारू
आखर लगाय लेत लाखन की सामा हौं। **— पद्माकर ने**

☞ 'तिय सैसव जोबन मिले, भेद न जान्यो जात।
प्रात समय निसि द्यौस के दुवौ भाव दरसात।।'
उक्त दोहे में नायिका की अवस्था का वर्णन हुआ है **— वयः सन्धि की (रसलीन)**

☞ मिलन, पथिक, स्वप्न एवं नहुष में से रामनरेश त्रिपाठी का खण्डकाव्य नहीं है **— नहुष (मैथिलीशरण गुप्त)**

☞ 'समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड घना था।'
जयशंकर प्रसाद की उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ 'कामायनी' की हैं **— आनन्द सर्ग की**

☞ बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित उपन्यास है **— सौ अजान एक सुजान**

☞ 'सूखा बरगद' उपन्यास के लेखक हैं **— मंजूर एहतेशाम**

☞ भारतेन्दु ने अपने नाटक को 'नाट्य रासक वा लास्य रूपक' की संज्ञा दी **— भारत दुर्दशा को**

☞ सज्जन, कामना, करुणालय एवं प्रायश्चित में से जयशंकर प्रसाद का नाटक कृष्ण मिश्र के संस्कृत नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' की अन्यापदेशिक शैली पर आधारित है **— कामना**

☞ 'अपनी खबर' लेखक की आत्मकथा है **— पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की**

☞ डिप्टी कलक्टरी, जिन्दगी और जोंक, एक और जिन्दगी एवं मौत का नगर में से अमरकान्त द्वारा रचित कहानी नहीं है **— एक और जिन्दगी (मोहन राकेश)**

☞ 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' उक्ति है **— विश्वनाथ की**

☞ 'ध्वन्यालोक' के रचयिता हैं **— आनन्दवर्द्धन**

☞ 'विरेचन' सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य हैं **— अरस्तू**

☞ 'लघुमानव' की अवधारणा रचना है **— विजयदेव नारायण साही की**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है–
— अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), कबीर (1398-1518 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.), सुन्दरदास (1596-1689 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है–
— आलम, घनानन्द, ठाकुर, द्विजदेव

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
— राष्ट्रीय मंत्र, स्वदेश संगीत, रेणुका, कुंकुम

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है
— जगन्नाथदास रत्नाकर, (1866-1932 ई.), सत्यनारायण 'कविरत्न' (1880-1918 ई.), गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', (1883-1972 ई.), मुकुटधर पाण्डेय (1895-1988 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्यग्रन्थों का सही अनुक्रम है
— कश्मीर सुषमा (1904 ई.), भारत भारती (1912 ई.) प्रिय प्रवास (1914 ई.), मिलन (1918 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है
— शुतुरमुर्ग (1968 ई.), रसगन्धर्व (1975 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.), विषवंश (1999 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— रंगभूमि (1925 ई.), प्रतिज्ञा, (1929 ई.), गबन (1931 ई.), कर्मभूमि (1932 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— चाक (1997 ई.), अल्मा कबूतरी (2000 ई.), कही ईसुरी फाग (2008 ई.), गुनाह-बेगुनाह (2011 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
— इंदुमती (1900 ई.), प्लेग की चुड़ैल (1903 ई.), ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई.), दुलाईवाली (1907 ई.)

☞ जीवनकाल की दृष्टि से पाश्चात्य आलोचकों का सही अनुक्रम है
— कॉलरिज (1772-1834 ई.), मैथ्यू ऑर्नाल्ड (1822-1888 ई.), क्रोचे (1866-1952 ई.) आई.ए. रिचड्र्स (1893-1979 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं-

कवि		आश्रयदाता राजा
(a) घनानंद	–	मोहम्मद शाह रंगीला
(b) पद्माकर	–	जगतसिंह
(c) केशवदास	–	ओरछा नरेश
(d) देव	–	आजमशाह

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		काव्य
(a) कैमास	–	पृथ्वीराज रासो
(b) परमाल	–	आल्ह खण्ड
(c) राघव चेतन	–	पद्मावत
(d) इब्राहीम शाह	–	कीर्तिलता

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति		कवि
(a) हे मेरी तुम! आओ बैठें पास-पास हम हास और परिहास करें	–	केदारनाथ अग्रवाल
(b) और वह सुरक्षित नहीं है जिसका नाम हत्यारों की सूची में नहीं है	–	धूमिल
(c) साम्यवाद के पथ में लीद किया करते हैं मानवता का पोस्टर देखा लगे रेंकने	–	त्रिलोचन शास्त्री
(d) कर गई चाक/तिमिर का सीना जोत की फाँक/यह तुम थीं	–	नागार्जुन

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति		कवि
(a) जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन माला में सौदामिनी संधि-सा सुन्दर क्षणभर रहा उजाला में।	–	जयशंकर प्रसाद
(b) जो सोए स्वप्नों के तम में वे जागेंगे यह सत्य बात जो देख चुके जीवन निशीथ वे देखेंगे जीवन प्रभात।	–	सुमित्रानन्दन पन्त
(c) बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु पूछेगा सारा गाँव बन्धु।	–	निराला
(d) पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला।	–	महादेवी वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्य ग्रन्थ		कवि
(a) अमोला	–	त्रिलोचन शास्त्री
(b) पलाशवन	–	नरेन्द्र शर्मा
(c) दीपशिखा	–	महादेवी वर्मा
(d) धूप के धान	–	गिरिजा कुमार माथुर

☞ सही सुमेलित हैं-

नाट्य-उक्ति		नाटक
(a) प्यारी! वे अधर्म्म से लड़े हम तो अधर्म्म नहीं न कर सकते। हम आर्यवंशी लोग धर्म छोड़कर लड़ना क्या जानें?	–	नीलदेवी
(b) कोऊ नहिं पकरत मेरो हाथ बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ।	–	भारत दुर्दशा
(c) चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।।	–	अन्धेर नगरी
(d) हमने माना कि उसको स्वर्ग लेने की इच्छा न हो तथापि अपने कर्मों से वह स्वर्ग का अधिकारी तो हो जाएगा।	–	सत्य हरिश्चन्द्र

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		उपन्यास
(a) भुवन	–	नदी के द्वीप
(b) जोहरा	–	गबन
(c) कालीचरन	–	मैला आँचल
(d) रैक्व	–	अनामदास का पोथा

☞ सही सुमेलित हैं-

कहानी		रचनाकार
(a) कसाईबाड़ा	–	शिवमूर्ति
(b) तिरिछ	–	उदय प्रकाश
(c) एक प्लेट सैलाब	–	मन्नू भंडारी
(d) डेफोडिल जल रहे हैं	–	मृदुला गर्ग

सम-सामयिक घटना चक्र

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		रचनाकार
(a) शृगार प्रकाश	–	भोज
(b) व्यक्ति विवेक	–	महिमभट्ट
(c) दशरूपक	–	धनंजय
(d) शृंगार तिलक	–	रुद्रभट्ट

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		रचनाकार
(a) सेक्रेड वुड	–	टी.एस. इलियट
(b) रिवैल्यूएशन	–	एफ.आर. लीविस
(c) लैंग्वेज एज जैस्चर	–	आर.पी. ब्लैकमर
(d) ए ग्रामर ऑफ मोटिव्ज़	–	केनेथ बर्क

☞ **स्थापना (A) :** कविता बाह्य प्रकृति से निरपेक्ष मनुष्य की अन्तः प्रकृति का प्रकाशन है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मनुष्य की भावात्मक सत्ता का सृष्टि में विस्तार करती है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक जातीय जीवन की संयुक्त धरोहर है।

तर्क (R) : इसीलिए उसका रचनात्मक उपयोग सामाजिक जिम्मेदारी है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** वैचारिक प्रतिबद्धता रचनात्मक व्यक्तित्व की प्राथमिक अनिवार्यता है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्यकार का रचनात्मक विचार सामाजिक परिवर्तन का बीजवपन करता है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** चमत्कार वह प्रक्रिया है, जिससे चित्त का विस्तार होता है, रसास्वाद और चमत्कार की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

तर्क (R) : इसीलिए भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य में कई चमत्कार बिन्दुओं का उल्लेख हुआ है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' अर्थात् अवस्था की अनुकृति को नाटक कहते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि नाटक में लोक के सुख-दु:ख का अनुकरण आंगिक अभिनय द्वारा किया जाता है।

— (A) सही और (R) गलत है

जुलाई - 2016 : तृतीय प्रश्न-पत्र

(28 अगस्त, 2016 को सम्पन्न)

☞ 'संधा भाषा' से अभिप्राय है— **ऊपर से लोक विरोधी अर्थ देने वाली, किन्तु साधना के विशुद्ध अर्थ को स्पष्ट करने वाली भाषा**

☞ नीरसता, गृहस्थ के प्रति अनादर का भाव, रागात्मकता का विरोध एवं इन्द्रियनिग्रह में से नाथ साहित्य की कमजोरी नहीं है— **इन्द्रियनिग्रह**

☞ रामकथा में व्याप्त अतिप्राकृत तत्वों के प्रति संशयग्रस्त होकर ब्राह्मणी रामकथा की प्रतिक्रिया में नई रामकथा गढ़ ली **— पुष्पदंत ने**

☞ गीतावली, रामचन्द्रिका, विनयपत्रिका तथा दोहावली में से तुलसीदास का ग्रन्थ नहीं है **— रामचन्द्रिका**

☞ ''रैण गँवाई सोइ कै, दिवसु गवाँइया खाई।
हीरे जैसे जनमु है, कउड़ी बदले जाई।।'' ये काव्य पंक्तियाँ हैं

— गुरु नानक की

☞ ध्रुवदास ने 'भक्त नामावली' में प्रशंसा की है **— गोसाईं विट्ठलनाथ की**

☞ मधुमालती के रचयिता हैं **— मंझन**

☞ 'रतनखान' और 'ज्ञानबोध' रचनाएँ हैं **— मलूकदास की**

☞ ''गुन निर्गुन कहियत नहिं जाके'' पंक्ति है **— रैदास की**

☞ 'कालदर्शी भक्त कवि जनता के हृदय को संभालने और लीन रखने के लिए दबी हुई भक्ति को जगाने लगे। क्रमशः भक्ति का प्रवाह ऐसा विकसित और प्रबल होता गया कि उसकी लपेट में केवल हिन्दू जनता ही नहीं, देश में बसने वाले सहृदय मुसलमानों में से भी न जाने कितने आ गए।' यह कथन है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'सोहैं घनस्याम मग हेरति हथेरी ओट
ऊँचे धाम बाम चढ़ि आवत उतरि जात।'
इन पंक्तियों में नायिका की मनोदशा का वर्णन हुआ है

— उत्कंठा का

☞ 'रीतिकाल में 'लला' के लिलाट पर महावर दिखाई पड़ने लगी। 'बीर' सखी हो गया। रणनात्मक ध्वनियों की बहार आ गई। 'नाद योजना' से मादकता को बढ़ावा मिला।' यह कथन है **— बच्चन सिंह का**

☞ 'बानी को सार बखान्यो सिंगार
सिंगार को सार किसोर-किसोरी।' उक्त पंक्तियाँ हैं **— देव की**

☞ ''नायिका-भेद की संकीर्ण सीमा में जितना लोकचित्त आ सकता था, इस काल (रीति) का उतना चित्र निश्चय ही विश्वसनीय और मनोरम है।'' यह कथन है **— हजारी प्रसाद द्विवेदी का**

☞ मतिराम के 'ललितललाम' का मुख्य वर्ण्य विषय है
— अलंकार निरूपण

☞ बरवै छन्द में नायिका-भेद का निरूपण किया है **— रहीम ने**

☞ ''मैंने श्रीकृष्णचन्द्र को इस ग्रन्थ में एक महापुरुष की भाँति अंकित किया है, ब्रह्म करके नहीं।'' यह आख्यान है
— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का

☞ 'दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।' यह कथन है **— निराला का**

☞ नीरजा, नीहार, गीतिका तथा दीपशिखा में से महादेवी वर्मा का काव्यसंग्रह नहीं है **— गीतिका (सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')**

☞ 'कलगी बाजरे की' कविता है **— अज्ञेय की**

☞ 'भूलकर जब राह-जब जब राह....भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि,
सघन तम की आँख बन मेरे लिए।'
महाकवि निराला का उपर्युक्त स्तवन किया है
— शमशेर बहादुर सिंह ने

☞ अनन्तदेवी पात्र है **— जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कन्दगुप्त की**

☞ छठां बेटा, सिन्दूर की होली, अंजो दीदी तथा अलग-अलग रास्ते नाटकों मे से उपेन्द्रनाथ अश्क का नहीं है
— सिन्दूर की होली (लक्ष्मीनारायण मिश्र)

☞ नायक खलनायक विदूषक, शकुन्तला की अंगूठी, द्रौपदी एवं आठवाँ सर्ग में से सुरेन्द्र वर्मा के अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रश्न उठाया गया है **— 'आठवाँ सर्ग' नाटक में**

☞ फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित कहानी 'ठेस' का नायक है**— सिरचन**

☞ 'राग दरबारी' उपन्यास में वर्णित गाँव है **— शिवपालगंज**

☞ पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा एवं चारु चंद्रलेख में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पहला उपन्यास है
— बाणभट्ट की आत्मकथा

☞ पहला गिरमिटिया, तोड़ो कारा तोड़ो, अभिज्ञान एवं मृत्युंजय में से महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित उपन्यास है**— पहला गिरमिटिया**

☞ 'पीली आंधी' उपन्यास की लेखिका हैं **— प्रभा खेतान**

☞ 'घुमक्कड़शास्त्र' यात्रावृत्त के लेखक हैं **— राहुल सांकृत्यायन**

☞ 'ऋणजल धनजल' रिपोर्ताज के लेखक हैं **— फणीश्वरनाथ रेणु**

☞ 'प्रवास की डायरी' के लेखक हैं **— हरिवंशराय बच्चन**

☞ वृन्दावनलाल वर्मा की आत्मकथा है **— अपनी कहानी**

☞ अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी एवं माटी की मूरतें में से महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र नहीं है
— माटी की मूरतें (रामवृक्ष बेनीपुरी)

☞ 'काव्यालंकार सार संग्रह' रचना है **— उद्भट की**

☞ भामह, दण्डी, उद्भट एवं कुन्तक में से अलंकारवादी नहीं हैं
— कुन्तक

☞ काव्य को प्रकृति की अनुकृति कहा है **— अरस्तू ने**

☞ रसनिष्पत्ति के संदर्भ में उत्पत्तिवाद का सिद्धान्त हैं**— भट्टलोल्लट का**

☞ 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' के लेखक हैं**— शिवदानसिंह चौहान**

☞ 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज़्म' के लेखक हैं
— आई.ए. रिचर्ड्स

☞ जन्मकाल की दृष्टि से सूफी संतों का सही अनुक्रम है
— मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, शेख चिश्ती, शेख सलीम चिश्ती

☞ जन्मकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है
— रैदास, मीराबाई, रज्जब, मलूकदास

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है
— ठण्डा लोहा (1952 ई.), आत्महत्या के विरुद्ध (1967 ई.), संसद से सड़क तक (1972 ई.), उदिता (1980 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से भिखारीदास की रचनाओं का सही अनुक्रम है
— रस सारांश (1742 ई.), छन्दार्णव पिंगल (1742 ई.), काव्य निर्णय (1746 ई.), शृंगार निर्णय (1750 ई.)

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है
—माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.), सियारामशरण गुप्त (1895-1963 ई.), बालकृष्ण शर्मा नवीन (1897-1960 ई.), भगवती चरण वर्मा (1903-1981 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
— ग्रन्थि (1920 ई.), अनामिका (1923 ई.), आँसू (1925 ई.), नीहार (1930 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का सही अनुक्रम है **— मादा कैक्टस (1959 ई.), दर्पन (1962 ई.), मिस्टर अभिमन्यु (1971 ई.), एक सत्य हरिश्चन्द्र (1976 ई.)**

☞ रूपक के कार्य की पाँच अवस्थाएँ होती हैं तथा इनके द्वारा नाटकीय इतिवृत्त की गति प्रकट होती है। इन कार्यावस्थाओं का सही अनुक्रम है

— प्रारम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम

☞ प्रकाशन काल के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है

— मिट्टी की ओर (1946 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1952 ई.), वेणुवन (1958 ई.), वटपीपल (1961 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— मैला आँचल (1954 ई.), आधा गाँव (1966 ई.), रागदरबारी (1968 ई.), लोकऋण (1977 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— रुकोगी नहीं राधिका (1966 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), शाल्मली (1987 ई.), छिन्नमस्ता (1993 ई.)

☞ प्रकाशन काल के अनुसार प्रेमचन्द की कहानियों का सही अनुक्रम है

— नमक का दारोगा (1913 ई.), शतरंज के खिलाड़ी (1925 ई.), पूस की रात (1930 ई.), कफ़न (1936 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1961 ई.), अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), दूसरी परम्परा की खोज (1982 ई.)

☞ जीवनकाल के अनुसार काव्यचिंतकों का सही अनुक्रम है

— आनन्दवर्धन (9वीं शताब्दी), अभिनव गुप्त (10वीं शताब्दी), विश्वनाथ (14वीं शताब्दी), पण्डितराज जगन्नाथ (16वीं शताब्दी)

☞ जन्मकाल के अनुसार साहित्यकारों का सही अनुक्रम है

— प्रकाशचन्द्र गुप्त (1908-1970 ई.), रामविलास शर्मा (1912-2000 ई.), शिवदानसिंह चौहान (1918-2000 ई.), रांगेय राघव (1923-1962 ई.)

☞ **स्थापना (A) :** पश्चिमी दृष्टि से सभी कलाओं में गुणों का अनुसंधान ही तो सौन्दर्यशास्त्र है।

तर्क (R) : इसीलिए सौन्दर्यानुभव हेतु भारतवर्ष में काव्य को ललितकलाओं के अन्तर्गत रखा गया।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का न्याय, शास्त्र के न्याय (तर्क) से अलग नहीं होता।

तर्क (R) : काव्यार्थ की प्रतीति केवल शास्त्रगत वाच्यार्थ से ही संभव नहीं। इसके लिए काव्य के अपने न्याय का सहारा लेना होगा, क्योंकि काव्य न्याय का मूल आधार वक्रोक्ति है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** कवि का दर्शन जीवन के प्रति उसकी आस्था का दूसरा नाम है, जो उसकी सर्जनात्मकता को प्रेरित करता है।

तर्क (R) : क्योंकि कवि-कर्म को प्रभावित करने वाला केंद्रीय बिन्दु यही आस्था है और आस्था वस्तुतः निर्दिष्ट सत्य की रागात्मक स्वीकृति है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** कविता दो शब्दों के बीच की नीरवता में रहती है।

तर्क (R) : इसीलिए मौन भी अभिव्यंजना है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में किसी न किसी रूप में पाई जाती है।

तर्क (R) : क्योंकि मनुष्यता को समय-समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य के लिए आवश्यक है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** भारतेन्दु युग और उसका साहित्य आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : इसीलिए उसके केन्द्र में मनुष्य है, ईश्वरीय आस्था लेशमात्र भी नहीं।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** पश्चिम के ज्ञानोदय से ही भारतीय साहित्य में अस्मिताओं का उदय हुआ।

तर्क (R) : कारण कि भारतीय समाज से कोई विचार प्रेरणा उन्हें नहीं मिली।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** युद्ध और प्रेम पारसी थियेटर के दो मूल भाव थे।

तर्क (R) : क्योंकि राष्ट्रप्रेम और जनता में संघर्ष चेतना जागृत करने में पारसी नाटककार आगे थे।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** परिवर्तन सृष्टि का अटूट नियम है।

तर्क (R) : लेकिन यह नियम साहित्य पर लागू नहीं होता, क्योंकि मनुष्य की संवेदना अपरिवर्तित है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** शब्द का वास्तविक अर्थ वाक्य की गति में ध्वनित होता है।

तर्क (R) : क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त होकर शब्द, विषय का सम्मूर्तन करते हैं और नई अर्थ छवियों का उद्घाटन करके अपनी सार्थकता सिद्ध करते हैं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ सही सुमेलित हैं-

ग्रन्थ		**रचनाकार**
(a) गंगालहरी	–	पद्माकर
(b) शिवाबावनी	–	भूषण
(c) रस रहस्य	–	कुलपति मिश्र
(d) शृंगार निर्णय	–	भिखारीदास

☞ सही सुमेलित हैं-

पंक्ति		**कवि**
(a) जाके कुटुम्ब सब ढोर ढोवंत फिरहिं अजहुँ बानारसी आसपासा	–	रैदास
(b) जेई मुख देखा तेइ हँसा सुना ते आयउ आँसु	–	जायसी
(c) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए समुझी बात कहत मधुकर जो समाचार कछु पाए।	–	सूरदास
(d) संतन को कहा सीकरी सो काम	–	कुम्भनदास

☞ सही सुमेलित हैं-

रचनाकार		**रचना**
(a) उद्योतन सूरि	–	कुवलयमाला कथा
(b) रोड कवि	–	राउलबेल
(c) दामोदर शर्मा	–	उक्तिव्यक्तिप्रकरण
(d) ठाकुर ज्योतिरीश्वर	–	वर्णरत्नाकर

☞ सही सुमेलित हैं-

कविता संग्रह		**प्रकाशन वर्ष**
(a) कितनी नावों में कितनी बार	–	1967
(b) चाँद का मुँह टेढ़ा है	–	1964
(c) काल तुझसे होड़ है मेरी	–	1971
(d) लोग भूल गए हैं	–	1982

☞ सही सुमेलित हैं-

कविता		**प्रकाशन वर्ष**
(a) विष्णुप्रिया	–	1957
(b) स्वप्न	–	1929
(c) हिमकिरीटिनी	–	1941
(d) श्रांत पथिक	–	1902

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		**रचना**
(a) आकुलि किलात	–	कामायनी
(b) अश्वसेन	–	रश्मिरथी
(c) युयुत्सु	–	अंधायुग
(d) औशीनरी	–	उर्वशी

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		**नाटक**
(a) विलोम	–	आषाढ़ का एक दिन
(b) गालव	–	माधवी
(c) आत्मन	–	मिस्टर अभिमन्यु
(d) पृथु	–	पहला राजा

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		**कहानी**
(a) अलोपीदीन	–	नमक का दारोगा
(b) झुरिया	–	सद्गति
(c) जोखू	–	ठाकुर का कुआं
(d) अमीना	–	ईदगाह

☞ सही सुमेलित हैं-

उपन्यासकार		**उपन्यास**
(a) कृष्णा सोबती	–	समय सरगम
(b) चन्द्रकान्ता	–	कथा सतीसर
(c) चित्रा मुद्गल	–	एक जमीन अपनी
(d) अलका सरावगी	–	कोई बात नहीं

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		**रचनाकार**
(a) रसमंजरी	–	भानुदत्त
(b) भाव प्रकाशन	–	शारदा तनय
(c) साहित्यदर्पण	–	विश्वनाथ
(d) नाट्य दर्पण	–	रामचन्द्र गुणचन्द्र

सम-सामयिक घटना चक्र

जुलाई - 2016 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ तालु, मूर्धा, वर्त्स तथा कंठ में से 'ण' वर्ण का उच्चारण स्थान है **—मूर्धा**

☞ आगम वे अ पुराणे पंडित मान बहंति।
पक्क सिरिफल अलि अ जिम वाहेरित भ्रमयंति।।
काव्य पंक्तियाँ हैं **—कण्हपा की**

☞ सूर समाना चंद में दहूँ किया घर एक।
मन का चिंता तब भया कछू पुरबिला लेख।।
पंक्तियों के रचनाकार हैं **—कबीरदास**

☞ द्वैतवाद के प्रणेता हैं **—मध्वाचार्य**

☞ 'रौजतुल हकायक' के रचयिता हैं **—नूर मुहम्मद**

☞ ग्वाल कवि, रामसहाय दास, पद्माकर भट्ट तथा सम्मन में से प्रबंधात्मक वीर काव्य की भी रचना की है **—पद्माकर भट्ट ने**

☞ रसनिधि, वृन्द, भूपति एवं बेनी 'प्रवीन' में से सतसई की रचना नहीं की है **—बेनी 'प्रवीन'**

☞ 'भ्रमरदूत' के रचनाकार हैं **—सत्यनारायण कविरत्न**

☞ काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल, बनाते हो असफल भवधाम।।
पंक्तियाँ 'कामायनी' के सर्ग से हैं **—श्रद्धा सर्ग से**

☞ कल्हण की 'राजतरंगिणी' पर आधारित जयशंकर प्रसाद का नाटक है **—विशाख**

☞ 'मुड़ मुड़कर देखता हूँ' आत्मकथा है **—राजेन्द्र यादव की**

☞ 'मणिकर्णिका' के लेखक हैं **—तुलसीराम**

☞ 'महाकाल' उपन्यास के लेखक हैं **—अमृतलाल नागर**

☞ 'कामरेड का कोट' कहानी के लेखक हैं **—सृंजय**

☞ भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रूपकों में से 'भाण' है **—विषस्य विषमौषधम्**

☞ 'सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं, तो मानो अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।' कथन है **—हजारीप्रसाद द्विवेदी का**

☞ भरतमुनि के रस सूत्र के व्याख्याता भट्टनायक के सिद्धान्त का नाम है **—भुक्तिवाद**

☞ वक्रोक्ति सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य हैं **कुन्तक**

☞ अभिव्यंजनावादी सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं **—क्रोचे**

☞ 'प्रेमचन्द और उनका युग' के लेखक हैं **—रामविलास शर्मा**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है **—स्वयंभू (8वीं शती), पुष्पदंत (10वीं शती), अद्दहमाण (12वीं शती), हेमचंद्र (12वीं शती)**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है **—बिहारी (1603 ई.), देव (1673 ई.), भिखारीदास (1721 ई.), पद्माकर (1753 ई.)**

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है **—हरिवंशराय बच्चन (1907-2003 ई.), गोपाल सिंह नेपाली (1911-1963 ई.), नरेन्द्र शर्मा (1913-1989 ई.), रामेश्वर शुक्ल अंचल (1915-1995 ई.)**

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है **—पंचवटी (1925 ई.), साकेत (1931 ई.), यशोधरा (1932 ई.), द्वापर (1936 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्य संग्रहों का सही अनुक्रम है **— अभी बिल्कुल अभी (1960 ई.), जमीन पक रही है (1980 ई.), उत्तर कबीर और अन्य कविताएं (1995 ई.), बाघ (1996 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है **—नारद का वीणा (1946 ई.), कोणार्क (1951 ई.), अंधा कुआँ (1955 ई.), बकरी (1974 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही अनुक्रम है **—परती परिकथा (1957 ई.), दीर्घतपा (1964 ई.), जुलूस (1965 ई.), पल्टू बाबू रोड (1979 ई.)**

☞ रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का सही क्रम है **—गोबर गणेश (1978 ई.), किस्सा गुलाम (1986 ई.), पूर्वापर (1990 ई.), विनायक (2011 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उषा प्रियंवदा के उपन्यासों का सही क्रम है **—पचपन खंभे लाल दीवारें (1961 ई.), रुकोगी नहीं राधिका (1966 ई.), शेष यात्रा (1984 ई.), अंतर्वशी (2000 ई.)**

☞ लेखनकाल के अनुसार पाश्चात्य आलोचकों का सही अनुक्रम है **—वर्ड्सवर्थ (1770 ई.), क्रोचे (1866 ई.), टी.एस. इलियट (1888 ई.), आई.ए. रिचर्ड्स (1893 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं-

पात्र		**ग्रन्थ**
(a) चंदा	–	चंदायन
(b) नागमती	–	पद्मावत
(c) राजमती	–	बीसलदेव रासो
(d) मालवणी	–	ढोला-मारू रा दूहा

☞ सही सुमेलित हैं-

रचनाकार		आश्रयदाता राजा
(a) चन्दबरदाई	–	पृथ्वीराज चौहान
(b) बिहारी	–	जयसिंह
(c) जगनिक	–	परमाल
(d) भूषण	–	छत्रसाल

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्यकृति		कवि
(a) मुक्तिप्रसंग	–	राजकमल चौधरी
(b) खुशबू के शिलालेख	–	भवानीप्रसाद मिश्र
(c) अनुभव के आकाश में चाँद	–	लीलाधर जगूड़ी
(d) रेणुका	–	रामधारी सिंह 'दिनकर'

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्यकृति		कवि
(a) आत्मजयी	–	कुँवर नारायण
(b) खूँटियों पर टँगे लोग	–	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
(c) मगध	–	श्रीकान्त वर्मा
(d) पहाड़ पर लालटेन	–	मंगलेश डबराल

☞ सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति		रचनाकार
(a) पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है। वह अपमान जगत में	–	रामनरेश त्रिपाठी
(b) केवल पशु ही रह सकता है। धरती हिल कर नींद भगा दे। वज्रनाद से व्योम जगा दे। दैव, और कुछ लाग लगा दे।	–	मैथिलीशरण गुप्त
(c) दिवस का अवसान समीप था गगन था कुछ लोहित हो चला।	–	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(a) भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की, सुधि ब्रज-गाँवनि मैं पावन जबै लगीं।	–	जगन्नाथदास रत्नाकर

☞ जयशंकर प्रसाद के नाट्यगीतों को उनके नाटकों के साथ सही सुमेलित हैं-

नाट्यगीत		नाटक
(a) आह वेदना मिली विदाई, मैंने भ्रमवश जीवन संचित मधुकरियों की भीख लुटाई।	–	स्कन्दगुप्त
(b) यौवन तेरी चंचल छाया इसमें बैठ घूँट भर पी लूँ जो रस तू है लाया	–	ध्रुवस्वामिनी
(c) कैसी कड़ी रूप की ज्वाला पड़ता है पतंग-सा इसमें मन हो कर मतवाला।	–	चन्द्रगुप्त
(d) स्वर्ग है नहीं दूसरा और सज्जन हृदय परम करुणामय यही एक है ठौर।	–	अजातशत्रु

☞ सही सुमेलित हैं-

निबंध संग्रह		लेखक
(a) आस्था और सौंदर्य	–	रामविलास शर्मा
(b) अपनी अपनी बीमारी	–	हरिशंकर परसाई
(c) कला का जोखिम	–	निर्मल वर्मा
(d) तमाल के झरोखे से	–	विद्यानिवास मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं-

उपन्यास		चित्रित गाँव
(a) रागदरबारी	–	शिवपालगंज
(b) आधा गाँव	–	गंगौली
(c) मैला आँचल	–	मेरीगंज
(d) गोदान	–	बेलारी

☞ सही सुमेलित हैं-

सम्प्रदाय		आचार्य
(a) औचित्य	–	क्षेमेन्द्र
(b) वक्रोक्ति	–	कुन्तक
(c) ध्वनि	–	आनन्दवर्द्धन
(d) रस	–	भरत मुनि

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		रचनाकार
(a) चर्च एण्ड स्टेट	–	कॉलरिज
(b) लिटरेचर एण्ड डोगमा	–	मैथ्यू आर्नाल्ड
(c) द फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स	–	आई.ए. रिचर्ड्स
(d) आर्स पोएतिका	–	होरेस

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में लिटरेचर एण्ड ड्रामा दिया गया है, जबकि वास्तव में यह लिटरेचर एण्ड डोगमा है जिसके लेखक मैथ्यू आर्नाल्ड हैं।

☞ **अभिकथन (A) :** परम्परा आधुनिकता की विरोधी है।

कारण (R) : क्योंकि परम्परा पुरातनता को पोषित कर भविष्य का मार्ग अवरुद्ध करती है।

— (A) गलत (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** धर्म और विज्ञान की तरह साहित्य में प्रतीक एक निश्चित अर्थ का प्रतिपादक होता है।

कारण (R) : इसीलिए रचनात्मक स्तर पर साहित्यिक प्रतीक के सम्बन्ध में पाठक और प्रयोक्ता के बीच मतभेद नहीं हो सकता।

— (A) सही (R) सही है

जुलाई - 2016 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ 'चौपाई' छंद का पूर्व रूप है **—अरिल्ल**

☞ ''डिंगल कवियों की वीर-गाथाएं, निर्गुणिया संतों की वाणियाँ, कृष्ण भक्त या रागानुगा भक्तिमार्ग के साधकों के पद, राम-भक्त या वैधी भक्तिमार्ग के उपासकों की कविताएँ, सूफी साधना से पुष्ट मुसलमान कवियों के तथा ऐतिहासिक हिन्दू कवियों के रोमांस और रीति-काव्य ये छः धाराएँ अपभ्रंश कविता का स्वाभाविक विकास हैं। '' यह कथन है **—हजारी प्रसाद द्विवेदी का**

☞ कुंडलिनी के उद्‌बुद्ध होने पर जो स्फोट होता है, उसे कहते हैं **—नाद**

☞ स्वामी अग्रदास का सम्बन्ध है **—रामभक्ति शाखा से**

☞ जायसी ने अपनी काव्यकृति में कयामत का वर्णन किया है **—आखिरी कलाम में**

☞ विशिष्टाद्वैत के प्रस्तोता आचार्य हैं **—रामानुजाचार्य**

☞ गौड़ीय सम्प्रदाय के संस्थापक हैं **—चैतन्य महाप्रभु**

☞ 'हितचौरासी' के रचयिता हैं **—हितहरिवंश**

☞ ''यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं है कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।'' यह कथन है **—रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'गिरा अरथ, जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदौं सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्न।।'
उक्त काव्य पंक्तियाँ हैं **—तुलसीदास की**

☞ ''धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है।'' यह कथन है **—रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ कुलपति मिश्र, सूरति मिश्र, नृपशम्भू तथा पजनेस कवि में से 'नखशिख' शीर्षक से काव्य ग्रन्थ की रचना नहीं की **—पजनेस ने**

☞ 'अंग दर्पण' रचना है **—रसलीन की**

☞ 'चिरजीवो जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर।।'
'वृषभानुजा' और 'हलधर' में है **—श्लेष अलंकार**

☞ ''अष्टछाप में सूरदास के पीछे इन्हीं का नाम लेना पड़ता है। इनकी रचना भी बड़ी सरस और मधुर है। इनके सम्बन्ध में यह कहावत प्रसिद्ध है कि ''और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।'' यह कथन है **—रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ यशोधरा, पंचवटी, साकेत एवं विष्णुप्रिया में से मैथिलीशरण गुप्त की नायिका प्रधान रचना नहीं है **—पंचवटी**

☞ 'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले ! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?'
इन काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं **—सुमित्रानन्दन पन्त**

☞ दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा तथा उर्वशी में से कथानायक कर्ण है **—रश्मिरथी में**

☞ 'अब तक क्या किया,
जीवन क्या जिया,
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम.....'
उपर्युक्त पंक्तियों के रचयिता हैं **—मुक्तिबोध**

☞ 'मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है
उतना ही कहो।'
'मौन' के इस रचनात्मक संदर्भ की अभिव्यक्ति अज्ञेय ने की है **—'इंद्रधनुष रौंदे हुए ये' में**

☞ 'विद्रोहिणी अम्बा' नाटक के रचयिता हैं **—उदयशंकर भट्ट**

☞ अजातशत्रु, विक्रमादित्य, लहरों के राजहंस एवं दशाश्वमेध नाटक में से प्रच्छन्न नायक गौतम बुद्ध हैं **—लहरों के राजहंस में**

☞ ज्ञानदेव अग्निहोत्री, लक्ष्मीनारायण लाल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं सर्वेश्वरदयाल सक्सेना में से सर्वाधिक नाटकों के रचयिता हैं **—लक्ष्मीनारायण लाल**

☞ 'पूस की रात' कहानी का प्रमुख पात्र है **—हल्कू**

☞ 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के लेखक हैं **—धर्मवीर भारती**

☞ औपन्यासिक जीवनी 'आवारा मसीहा' आधारित है **—शरतचन्द्र के जीवन पर**

☞ झरोखे, कड़ियाँ, बसंती तथा पीढ़ियाँ उपन्यास में से भीष्म साहनी द्वारा रचित नहीं है **—पीढ़ियाँ**

☞ नागार्जुन द्वारा रचित मछुआरों के जीवन पर आधारित उपन्यास है **—वरुण के बेटे**

☞ 'माटी की मूरतें' के लेखक हैं **—रामवृक्ष बेनीपुरी**

☞ 'कर्मवीर' पत्रिका के सम्पादक थे **—माखनलाल चतुर्वेदी**

☞ महात्मा गाँधी की जीवनी 'अकाल पुरुष गाँधी' के लेखक हैं **—जैनेन्द्र कुमार**

☞ कृष्णा सोबती द्वारा रचित संस्मरणात्मक ग्रन्थ है **—हम हशमत**

समसामयिक घटना चक्र

☞ 'कविता कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।' यह कथन है **–टी.एस. इलियट का**

☞ 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' के लेखक हैं **–कॉलरिज**

☞ 'पेरिइप्सुस' के आधार पर 'काव्य में उदात्त तत्व' की अवधारणा का प्रवर्तन किया **–लौंजाइनस ने**

☞ 'श्रेष्ठ कविता प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन है, किन्तु इसके पीछे कवि की विचारशीलता और गहन चिन्तन होना चाहिए।' यह विचार है **–पाश्चात्य चिंतक वर्ड्सवर्थ का**

☞ 'नया साहित्य : नये प्रश्न' ग्रन्थ के लेखक हैं **–नन्ददुलारे वाजपेयी**

☞ प्रतिभा का सम्बन्ध है **–काव्य हेतु से**

☞ 'कविवचनसुधा' के सम्पादक हैं **–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

☞ रचनाकाल के आधार पर रचनाओं का सही अनुक्रम है **–ज्ञानदीप (1619 ई.), प्रेमरतन (रचनाकाल अज्ञात), हंसजवाहिर (1736 ई.), इन्द्रावती (1744 ई.)**

☞ रचनाकाल के आधार पर रचनाकारों का सही अनुक्रम है **–चंदायन, मृगावती, मधुमालती, चित्रावली**

☞ जन्मकाल के आधार पर रचनाकारों का सही अनुक्रम है **–केशवदास (1555 ई.), सेनापति (1589 ई.), चिंतामणि (1600 ई.), भूषण (1613 ई.)**

☞ जन्मकाल के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है **– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 ई.), बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन (1855 ई.), प्रतापनारायण मिश्र (1856 ई.), जगमोहन सिंह (1857 ई.)**

☞ जयशंकर प्रसाद की काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है **–कानन कुसुम (1913 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.)**

☞ जन्मकाल के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है **–नागार्जुन (1910 ई.), भवानी प्रसाद मिश्र (1914 ई.), त्रिलोचन (1917 ई.), नरेश मेहता (1922 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है **–हानूश (1977 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), माधवी (1984 ई.), आलमगीर (1999 ई.)**

☞ कथावस्तु को प्रधान फल की प्राप्ति की ओर अग्रसर कराने वाले चमत्कारपूर्ण अंश को अर्थ प्रकृति कहा जाता है। पांच अर्थ प्रकृतियों का सही अनुक्रम है **–बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी, कार्य**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार मृदुला गर्ग के उपन्यासों का सही अनुक्रम है- **–उसके हिस्से की धूप (1975 ई.), चित्तकोबरा (1979 ई.), मैं और मैं (1984 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर जयशंकर प्रसाद के कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है **–छाया (1912 ई.), प्रतिध्वनि (1926 ई.), आकाशदीप (1929 ई.), इन्द्रजाल (1936 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है **–सूनी घाटी का सूरज (1957 ई.), सीमाएँ टूटती हैं (1973 ई.), मकान (1976 ई.), विस्रामपुर का संत (1998 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है **–क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), बसेरे से दूर (1978 ई.), टुकड़े टुकड़े दास्तान (1986 ई.), जो मैंने जिया (1992 ई.)**

नोट-यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में एक आत्मकथा का नाम 'जो मैंने किया' दिया गया है जो कि गलत है। सही आत्मकथा 'जो मैंने जिया' है, जिसे कमलेश्वर ने वर्ष 1992 में लिखा है।

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है **– अशोक के फूल (1948 ई.), कल्पलता (1951 ई.), कुटज (1964 ई.), आलोक पर्व (1972 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		**रचनाकार**
(a) रास पंचाध्यायी	–	नंददास
(b) प्रेमवाटिका	–	रसखान
(c) कवित्व रत्नाकर	–	सेनापति
(d) बरवै नायिका भेद	–	रहीम

☞ सही सुमेलित हैं-

पंक्ति		**रचनाकार**
(a) कौन परी यह बानि, अरी। नित नीर भरी गगरी ढरकावै।।	–	प्रताप साहि
(b) यह प्रेम को पंथ कराल महा। तरवारि की धार पै धावनौ है।	–	बोधा
(c) चोजिन के चोजी, मौजिन के महाराज हम कविराज हैं, पैचाकर चतुर के	–	ठाकुर
(d) चांदनी के भारन दिखात उनयो सो चंद, गंध ही के भारन बहत मंद मंद पौन।।	–	द्विजदेव

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना		**रचनाकार**
(a) प्रबंध चिंतामणि	–	जैनाचार्य मेरुतुंग
(b) रणमल्ल छंद	–	श्रीधर
(c) जयचंद प्रकाश	–	भट्ट केदार
(d) जयमयंक जसचन्द्रिका	–	मधुकर कवि

☞ सही सुमेलित हैं-

कविता		प्रकाशन वर्ष
(a) प्रेम माधुरी	–	1875
(b) एकांतवासी योगी	–	1886
(c) हिमतरंगिणी	–	1949
(d) नीहार	–	1930

☞ सही सुमेलित हैं

कविता		प्रकाशन वर्ष
(a) कुकुरमुत्ता	–	1942
(b) हुंकार	–	1939(1940)
(c) भग्नदूत	–	1933
(d) प्रेमसंगीत	–	1937

नोट–हुंकार का प्रकाशन वर्ष 1940 में हुआ था।

☞ सही सुमेलित हैं

पात्र		रचना
(a) राधा	–	प्रियप्रवास
(b) जाम्बवान	–	राम की शक्ति पूजा
(c) युधिष्ठिर	–	महाप्रस्थान
(d) केशकंबली	–	असाध्य वीणा

☞ सही सुमेलित हैं-

स्त्री चरित्र (पात्र)		नाटक
(a) शीलवती	–	सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
(b) शर्मिष्ठा	–	देहान्तर
(c) सुरेखा	–	द्रौपदी
(d) उर्वी	–	पहला राजा

☞ सही सुमेलित हैं

उपन्यास		लेखक
(a) भाग्यवती	–	श्रद्धाराम फिल्लौरी
(b) नूतन ब्रह्मचारी	–	बालकृष्ण भट्ट
(c) अधखिला फूल	–	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) आदर्श दंपति	–	लज्जाराम मेहता

☞ सही सुमेलित हैं

आत्मकथा		लेखक
(a) पानी बिच मीन पियासी	–	मिथिलेश्वर
(b) आज के अतीत	–	भीष्म साहनी
(c) पिंजरे की मैना	–	चंद्रकिरण सौनरेक्सा
(d) हादसे	–	रमणिका गुप्ता

☞ सही सुमेलित हैं

रचनाकार		रचना
(a) भरत	–	नाट्य शास्त्र
(b) धनंजय	–	दशरूपक
(c) सागरनंदी	–	नाटक लक्षण रत्नकोष
(d) रामचंद्र गुणचंद्र	–	नाट्य दर्पण

☞ **अभिकथन (A) :** 'रसौ वै सः।'

कारण (R) : इसीलिए रस को ब्रह्मास्वाद सहोदर कहा गया है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** छायावाद केवल व्यक्ति के प्रेम, सौन्दर्य और यौवन की कविता है।

कारण (R) : इसीलिए उसमें सामाजिक नैतिकता की उपेक्षा मिलती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **अभिकथन (A) :** रहस्य-भावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी।

कारण (R) : क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असम्भव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **अभिकथन (A) :** प्रसाद के अनुसार, काव्य मन और आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।

कारण (R) : क्योंकि काव्य आत्मा की मनन-शक्ति की वह असाधारण अवस्था है, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारुत्व में सहसा ग्रहण कर युगों की समष्टि अनुभूतियों में अन्तर्निहित शाश्वत चेतनता का काव्यमय सृजन करती है। इसीलिए छायावादी काव्य की मूल चेतना रहस्यवादी है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **अभिकथन (A) :** शुद्ध वियोग का दुख केवल प्रिय के अलग हो जाने की भावना से उत्पन्न क्षोभ या विषाद है, जिसमें प्रिय के दुख या कष्ट आदि की कोई भावना नहीं रहती है।

कारण (R) : क्योंकि जिस व्यक्ति से किसी की घनिष्ठता और प्रीति होती है, वह उसके जीवन के बहुत से व्यापारों तथा मनोवृत्तियों का आधार होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **अभिकथन (A) :** दार्शनिकता और अनुभूति सम्पन्नता से ही व्यक्तित्व का समाजीकरण नहीं हो जाता।

कारण (R) : क्योंकि व्यक्तित्व के समाजीकरण के लिए अपनी शक्तियों को मानव कल्याण और सामाजिक कार्य की ओर उन्मुख करना होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

सम-सामयिक घटना चक्र

दिसम्बर - 2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ अवधी, मगही, भोजपुरी तथा मैथिली बोली में से बिहारी हिन्दी से सम्बन्ध नहीं है **— अवधी का**

☞ ''हिन्दी साहित्य का अतीत'' रचना के लेखक हैं **— विश्वनाथ प्रसाद मिश्र**

☞ दोहा (दूहा) मूलतः छंद है **— अपभ्रंश का**

☞ संदेशडउ सवित्थरउ हउँ कहणहँ असमत्थ।
भण पिय इक्कति बलियडइ बेवि समाणा हत्थ।।
दोहा है **— अब्दुर्रहमान का**

☞ जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै।।
काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं **— गुरुनानक**

☞ कुम्भनदास, कृष्णदास, छीतस्वामी तथा ध्रुवदास में से 'अष्टछाप' के कवि नहीं हैं **— ध्रुवदास**

☞ तुम नीके दुहि जानत गैया।
चलिए कुँवर रसिक मनमोहन लागौं तिहारे पैयाँ।
काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं **— कुम्भनदास**

☞ 'हनुमच्चरित' के रचयिता हैं **— रायमल्ल पांडे**

☞ 'ललित ललाम' किसका ग्रन्थ है **— मतिराम का**

☞ डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच
लोगन कबित्त कीबो खेल करि जानो है। ये काव्य पंक्तियाँ हैं **— ठाकुर की**

☞ भारतेन्दु-मण्डल के लेखक नहीं हैं **— राजा लक्ष्मण सिंह**

☞ 'रसकलस' रचना है **— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की**

☞ ''क्या कहा मैं अपना खंडन करता हूँ?
ठीक है तो, मैं अपना खंडन करता हूँ;
मैं विराट् हूँ-मैं समूहों को समोये हूँ।'' पंक्तियाँ हैं **— सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की**

☞ ''आज मैं अकेला हूँ, अकेले रहा नहीं जाता
जीवन मिला है यह, रतन मिला है
यह'' पंक्तियाँ हैं **— त्रिलोचन की**

☞ स्त्री लेखन का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है **— मित्रो मरजानी उपन्यास को**

☞ दो समान्तर कथा-प्रसंगों पर चलने वाला शंकरशेष का नाटक है **— एक और द्रोणाचार्य**

☞ ''कविता करना अनन्त पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनन्त उत्कण्ठा से कवि जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई।''
यह संवाद-पंक्ति है **— स्कन्दगुप्त से**

☞ 'ठेस' कहानी के लेखक हैं **— फणीश्वरनाथ रेणु**

☞ ''अर्थ सौरस्य ही कविता का प्राण है।'' कथन है **— महावीर प्रसाद द्विवेदी का**

☞ आई.ए. रिचर्ड्स की कृति नहीं है **— कल्चर एण्ड अनार्की**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
— दोहाकोश (8वीं शताब्दी), श्रावकाचार (10वीं शताब्दी), संदेशरासक (12वीं-13वीं शताब्दी), कीर्तिलता (14वीं- 15वीं शताब्दी)

☞ रचनाकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
— कुतुबन (16वीं शताब्दी), उसमान (1613 ई.), नूर मुहम्मद (1644 ई.) कासिमशाह (1793 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार काव्यकृतियों का सही क्रम है
— ललितललाम (संवत् 1716-1745), भावविलास (संवत् 1746), शृंगार निर्णय (संवत् 1809), जगद् विनोद (संवत् 1810)

☞ जन्मकाल के अनुसार कथाकारों का सही अनुक्रम है
— भगवतीचरण वर्मा (1903-1981 ई.), जैनेन्द्र (1905-1988 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979 ई.), अमृतलाल नागर (1916- 1990 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
— इन्दुमती (1900 ई.), उसने कहा था (1915 ई.), मक्रील (1934 ई.), कफन (1936 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है
— आजकल (1945 ई.), सारिका (1960 ई.), समकालीन भारतीय साहित्य (1980 ई.), नया ज्ञानोदय (2002 ई.)

नोट— ज्ञानोदय पत्रिका का प्रकाशन सन् 1955 से हो रहा है, अब इसका नाम 'नया ज्ञानोदय' है।

☞ प्रकाशन काल के आधार पर भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है
— हानूश (1977 ई.), माधवी (1985 ई.), मुआवजे (1993 ई.), आलमगीर (1999 ई.)

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से महिला नाटककारों के नाटकों का सही अनुक्रम है

— बिना दीवारों का घर (1965 ई.), ठहरा हुआ पानी (1975 ई.), जो राम रचि रखा (1981 ई.), नेपथ्य राग (2004 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर रचनाओं का सही अनुक्रम है

— सम्पत्तिशास्त्र (1908 ई.), साहित्यालोचन (1949 ई.), संस्कृति के चार अध्याय (1956 ई.), मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— काव्यादर्श (650 ई.), ध्वन्यालोक (9वीं शताब्दी), काव्यमीमांसा (880-920 ई.), साहित्यदर्पण (14वीं शताब्दी)

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	–	रामकुमार वर्मा
(c) उत्तरी भारत की संत परम्परा	–	परशुराम चतुर्वेदी
(d) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	–	बच्चन सिंह

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्प्रदाय		**प्रवर्तक**
(a) श्री सम्प्रदाय	–	रामानुजाचार्य
(b) रुद्र सम्प्रदाय	–	विष्णु स्वामी
(c) सनकादि सम्प्रदाय	–	निम्बार्काचार्य
(d) राधा वल्लभी सम्प्रदाय	–	श्री हितजी

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) कुमारपाल प्रतिबोध	–	सोमप्रभु सूरि
(b) प्रबन्ध चिंतामणि	–	जैनाचार्य मेरुतुंग
(c) कुमारपाल चरित	–	हेम चंद्र
(d) हम्मीर रासो	–	शारंगधर

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्पादक		**पत्रिका**
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	कविवचन सुधा
(b) प्रेमचन्द	–	हंस
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी	–	सरस्वती
(d) अज्ञेय	–	प्रतीक

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		**रचनाकार**
(a) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध	–	जयशंकर प्रसाद
(b) शेष स्मृतियाँ	–	रघुवीर सिंह
(c) मेरी जीवन यात्रा	–	राहुल सांकृत्यायन
(d) शृंखला की कड़ियाँ	–	महादेवी वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्तियाँ		**कवि**
(a) कर्म का भोग भोग का कर्म यही जड़ का चेतन आनन्द	–	जयशंकर प्रसाद
(b) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन! कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।	–	निराला
(c) मौन भी अभिव्यंजना है: जितना तुम्हारा सच है उतना ही कहो।	–	अज्ञेय
(d) परम अभिव्यक्ति लगातार घूमती है जग में पता नहीं जाने कहाँ, जाने कहाँ वह है।	–	मुक्तिबोध

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**नाटक**
(a) पर्णदत्त	–	स्कन्दगुप्त
(b) हेरुप	–	कलंकी
(c) ओक्काक	–	सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
(d) गालव	–	माधवी

☞ सही सुमेलित हैं–

एकांकी		**एकांकीकार**
(a) जोंक	–	उपेन्द्रनाथ अश्क
(b) शिवाजी का सच्चा स्वरूप	–	सेठ गोविन्ददास
(c) प्रतिभा का विवाह	–	भुवनेश्वर प्रसाद
(d) पृथ्वीराज की आँखें	–	रामकुमार वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) काव्य में अभिव्यंजनावाद	–	लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'
(b) रसपीयूषनिधि	–	सोमनाथ
(c) रसकलस	–	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) हिन्दी नवरत्न	–	मिश्रबन्धु

दिसम्बर - 2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ग, घ, ड, ढ़, प, फ तथा द, ध में से अघोष ध्वनि है — **प, फ**
- रामदहिन मिश्र की कृति है — **प्रवेशिका हिन्दी व्याकरण**
- 'हिन्दी रीति ग्रन्थों की परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए' कथन है — **रामचन्द्र शुक्ल का**
- हिन्दी साहित्य के रीतिकाल का 'श्रृंगार काल' नाम रखा — **विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने**
- बालचंद विज्जावइ भासा
  दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।
  काव्य पंक्तियाँ हैं — **विद्यापति की**
- शुक और शुकी द्वारा कथा का वर्णन किया गया है — **पृथ्वीराज रासो में**
- संत मत के अलावा 'शब्द' (सबद) का प्रचलन और पंथ में हुआ था — **नाथ पंथ में**
- कुछ नाहीं का नाँव धरि भरमा सब संसार।
  साँच झूठ समझे नहीं, ना कुछ किया विचार।।
  उपर्युक्त दोहा है — **दादूदयाल का**
- 'ब्राह्म सम्प्रदाय' के प्रवर्तक हैं —**मध्वाचार्य**
- कहा करौं बैकुंठहि जाय?
  जहँ नहिं नंद, जहाँ न जसोदा, नहिं जहं गोपी ग्वाल न गाय।
  उपर्युक्त काव्य पक्तियाँ हैं — **परमानन्ददास की**
- 'ज्ञानदीप' के रचनाकार हैं — **शेख नबी**
- गगन हुता नहिं महि हुती हुते चंद नहिं सूर।
  ऐसे अन्धकार महँ रचा मुहम्मद नूर।।
  यह दोहा जायसी के इस काव्य कृति से है — **अखरावट**
  नोट—यूजीसी/सीबीएसई ने इस प्रश्न का उत्तर 'आखिरी कलाम' माना है।
- कमलदल नैननि की उनमानि।
  बिसरत नाहिं, सखी! मो मन तें मंद-मंद मुस्कानि।
  पंक्तियों के रचनाकार हैं — **रहीम**
- गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।
  यह पंक्ति है — **तुलसीदास की**
- 'हिन्दू हृदय और मुसलमान हृदय आमने-सामने करके अजनबीपन मिटाने वालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा'-रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन है —**जायसी के सम्बन्ध में**
- हीन भएं जल मीन अधीन कहा कति मो अकुलानि समानै।
  नीर सनेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।।
  'नीर सनेही' में अलंकार है — **सभंगपद श्लेष**
- भिखारीदास ने 'काव्य निर्णय' में विवेचन किया है —**सर्वांग विवेचन**
- रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी की भाषा के बारे में लिखा है — **बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है**
- जहाँ कलह तहँ सुख नहीं, कलह सुखन को सूल।
  सबै कलह इक राज में, राज कलह को मूल।।
  इस दोहे के द्वारा अतीतकालीन चित्तवृत्ति का वर्णन किया है — **नागरीदास ने**
- ''भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया।'' यह कथन है — **रामचन्द्र शुक्ल का**
- 'क्या हिन्दी नाम की कोई भाषा ही नहीं' लेख के रचनाकार हैं — **महावीर प्रसाद द्विवेदी**
- ''सुधि मेरे आगम की जग में
  सुख की सिहरन को अंत खिली!'' पंक्तियाँ हैं —**महादेवी वर्मा की**
- 'देहाती दुनिया' के लेखक हैं —**शिवपूजन सहाय**
- ''यद्यपि 1942 के जन-आन्दोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आन्दोलन की लहर ही इस गाँव में पहुँच पायी थी, किन्तु जिले भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी।'' पंक्तियाँ हैं — **मैला आँचल उपन्यास से**
- लियो लावेंथल, जॉर्ज लूकाच, जॉक देरिदा तथा इप्पोलित तेन में से मॉर्क्सवादी विचारक हैं — **जॉर्ज लूकाच**
- निर्मल वर्मा का यात्रा-संस्मरण 'चीड़ों पर चाँदनी' आधारित है — **यूरोप प्रवास से**
- 'अछूत की शिकायत' कविता का प्रकाशन वर्ष है —**1914**
- उपन्यासों 'वे दिन, लाल पसीना, लेकिन दरवाजा तथा निर्वासन' में से किसका सम्बन्ध आप्रवासी जीवन से है — **लाल पसीना का**
- 'स्त्रीत्व का मानचित्र' रचना है — **अनामिका की**

☞ विषस्य विषमौषधम, नीलदेवी, अन्धेर नगरी तथा भारत दुर्दशा में से भारतेन्दु ने नाट्य रासक व लास्य रूपक कहा है

— भारत दुर्दशा नाटक को

☞ नाटक बाल भगवान, जलता हुआ रथ, कोर्ट मार्शल तथा सबसे उदास कविता नाटक में से जातिवाद की समस्या को उठाया गया है

— कोर्ट मार्शल में

☞ बेन जॉनसन के नाटक 'वालपोनि' या 'दी फॉक्स' का हिन्दी रूपान्तर रामेश्वर प्रेम का नाटक है **— लोमड़ वेश**

☞ अधिकार का रक्षक, बहनें, सूखी डाली तथा तौलिए एकांकी में से संयुक्त परिवार की समस्या को उठाया गया है **— सूखी डाली में**

☞ 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' का प्रकाशन वर्ष है **— 1817 ई.**

☞ रेम्बलर, साइंस एंड पोइट्री, इल्यूजन एंड रियलिटी तथा एस्थेटिक में से डॉ. जॉनसन की कृति है **— रेम्बलर**

☞ आचार्य विश्वनाथ का कथन नहीं है

— रस अपने आकार से भिन्न रूप में आस्वादित किया जाता है

☞ 'ध्वन्यालोक' ग्रन्थ है **— नौवीं शताब्दी का**

☞ ''सौन्दर्य की वस्तुगत सत्ता होती है, इसलिए यह शुद्ध सौन्दर्य नाम की कोई चीज नहीं होती'' कथन है **— रामविलास शर्मा का**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से सही क्रम है

— जयचन्द प्रकाश (12वीं सदी), मृगावती (1500 ई.), मधुमालती (1543 ई.) तथा हंसजवाहिर (1726 ई.)

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही क्रम है

— चन्दबरदाई (12वीं सदी), जगनिक (1173 ई.), खुसरो (1255-1315 ई.), श्रीधर (1859-1928 ई.)

☞ जन्मकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही क्रम है–

— बिहारी, चिन्तामणि, मतिराम, घनानंद

☞ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में रामचन्द्र शुक्ल ने कृष्णभक्ति शाखा के कवियों का क्रम प्रस्तुत किया है

— परमानंददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी

☞ रचनाकाल के अनुसार विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों का सही क्रम है

— ढलतीरात (1951 ई.), स्वप्नमयी (1956 ई.), कोई तो (1980 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1992 ई.)

☞ कथाकारों का जन्मकाल के आधार पर सही अनुक्रम है

— विष्णु प्रभाकर (21 जून, 1912-11 अप्रैल, 2009 ई.), धर्मवीर भारती (25 दिसम्बर, 1926-4 सितम्बर, 1997 ई.), मन्नू भण्डारी (3 अप्रैल, 1931 ई.), नरेन्द्र कोहली (6 जनवरी, 1940 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— नूतन ब्रह्मचारी (1886 ई.), अधखिला फूल (1907 ई.), सेवासदन (1919 ई.), बूँद और समुद्र (1956 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है

— सतह से उठता आदमी (1957 ई.), ये तेरे प्रतिरूप (1961 ई.), भूख के तीन दिन (1965 ई.), एक धनी व्यक्ति का बयान (1997 ई.)

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में रचनाकाल के आधार पर कहानी संग्रहों का अनुक्रम स्पष्ट करना कठिन है, क्योंकि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित मुक्तिबोध की कहानी संग्रह 'सतह से उठता आदमी' का प्रथम संस्करण वर्ष 1957 में दर्शित है, जबकि कई पुस्तकों में यह लिखा है कि 'सतह से उठता आदमी' मुक्तिबोध की मृत्यु (1964) के बाद प्रकाशित हुई। कहीं-कहीं इस कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष (1971) माना गया है। सम्भवत: इस आधार पर यूजीसी/सीबीएसई ने अपने उत्तर कुंजी में यह अनुक्रम दर्शित किया है—ये तेरे प्रतिरूप, भूख के तीन दिन, सतह से उठता आदमी, एक धनी व्यक्ति का बयान।

☞ जयशंकर प्रसाद के काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम हैं **—प्रेमपथिक (1910 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1926 ई.), लहर (1935 ई.)**

☞ काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है **—युगांत (1936 ई.), स्वर्णधूलि (1947 ई.), लोकायतन (1964 ई.), सत्यकाम (1975 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार पुस्तकों का सही अनुक्रम है

— मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970 ई.), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (1986 ई.), हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (1996 ई.), हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास (2003 ई.)

☞ कालक्रम की दृष्टि से नाटकों का सही अनुक्रम है

—त्रिशंकु (1973 ई.), आला अफसर (1979 ई.), भूख आग है (1998 ई.), विषवंश (1999 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— एस्थेटिक (1902 ई.), द सेक्रेड वुड (1920 ई.), प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म (1929 ई.), रिवेल्युशन (1966 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से आलोचना-ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— कालिदास की निरंकुशता (1911 ई.), रस मीमांसा (1950 ई.), शुद्ध कविता की खोज (1966 ई.), महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण (1977 ई.)

☞ **स्थापना (A) :** काव्येषु नाटकं रम्यम्।

तर्क (R) : क्योंकि उसमें काव्य के साथ-साथ सभी ललित कलाओं का समन्वय होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** काव्यानुभूति का मूल आधार लोकानुभूति ही है।

तर्क (R) : क्योंकि केवल लोक जीवन का यथार्थ ही उसके ज्ञान और भाव-क्षेत्रों का विस्तार करता है, कल्पना नहीं।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** केवल सुन्दरता ही कविता का लक्ष्य और उसका एकमात्र नियम है और सौन्दर्य ही अनन्तकाल तक कविता में गूँजता है।

तर्क (R) : क्योंकि सत्य और शिव कविता कामिनी के सौन्दर्यवर्द्धन के लिए न तो उतने उपयोगी हैं और न कालजयी।

— (A) गलत और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** आधुनिक मनुष्य को इतिहास और समय के नियमों-कानूनों का जितना ज्ञान है, उतना पहले किसी युग में प्राप्त नहीं था।

तर्क (R) : क्योंकि मध्यकालीन संस्कृति में धर्म का जो केन्द्रीय स्थान था, उसने धीरे-धीरे पीछे हटते हुए अपनी जगह इतिहास को समर्पित कर दी।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य-सर्जना का एक आधार सामूहिक अचेतन को माना गया है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मूलत: सामूहिक वाचन के लिए ही होती है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** आधुनिकता परम्परा का विलोम नहीं है, क्योंकि यह प्राचीन और नवीन के द्वन्द्व का परिणाम है।

तर्क (R) : क्योंकि आधुनिकता ने मानव-ज्ञान को निरन्तरता और नूतनता प्रदान की है, संस्कृति को गतिशीलता दी है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** भारतेन्दु युगीन गद्य की भाषा तो खड़ी बोली हो गई पर कविता की भाषा ब्रज भाषा ही रही।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन अधिकांश कवि ब्रज क्षेत्र के थे।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** शब्द को सुनते ही संकेत के बल पर जो अर्थ साक्षात् समझ में आता है, उसे वाच्यार्थ कहते हैं। इस अर्थ को सूचित करने वाली शब्दवृत्ति अभिधावृत्ति कहलाती है।

तर्क (R) : क्योंकि भाषा में अर्थ-ग्रहण अभिधावृत्ति से ही होता है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है, उसका साहित्य भी वैसा ही होता है।

तर्क (R) : क्योंकि जाति साहित्य का निर्णायक तत्व है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** उत्तर आधुनिकता, पूँजीवादी विकास की नई स्थिति और विश्व की नई अर्थव्यवस्था का परिणाम है।

तर्क (R) : क्योंकि नवपूँजीवाद की नाना विकृतियों और नाना रूपों से सामाजिक साक्षात्कार ही उत्तर आधुनिकता है।

— (A) सही और (R) सही है

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धान्त		**सिद्धान्तकार**
(a) द्वैत	–	मध्वाचार्य
(b) द्वैताद्वैत	–	निम्बार्काचार्य
(c) शुद्धाद्वैत	–	वल्लभाचार्य
(d) विशिष्टाद्वैत	–	रामानुजाचार्य

☞ सही सुमेलित हैं–

रचनाकार		**रचना**
(a) चतुर्भुजदास	–	द्वादशयश
(b) मीराबाई	–	रागगोविन्द
(c) श्रीभट्ट	–	युगलशतक
(d) नन्ददास	–	अनेकार्थमंजरी

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		**लेखक**
(a) हिततरंगिणी	–	कृपाराम
(b) सुदामाचरित्र	–	नरोत्तमदास
(c) माधवानलकामकंदला	–	आलम
(d) विज्ञानगीता	–	केशवदास

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) अर्द्धकथानक	–	बनारसीदास
(b) काव्यकल्पद्रुम	–	सेनापति
(c) अलकशतक	–	मुबारक
(d) बारहमासा	–	सुन्दरदास

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) राठौड़ाँ री ख्यात	–	दयालदास
(b) विराट पुराण	–	गोरखनाथ
(c) पुष्पदंत	–	उत्तर पुराण
(d) जिनदत्त सूरि	–	उपदेशरसायनरास

नोट–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार विराट पुराण की रचना गोरखनाथ के अनुयायी शिष्यों द्वारा की गयी है।

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		पंक्ति
(a) मैथिलीशरण गुप्त	–	वैश्यो! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का, सब धन विदेशी हर रहे हैं पार है क्या क्लेश का?
(b) जयशंकर प्रसाद	–	तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की। समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।।
(c) पन्त	–	प्रथम रश्मि का आना रंगिणि! तू ने कैसे पहचाना? कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनि? पाया तू ने यह गाना?
(d) महादेवी वर्मा	–	क्या अमरों का लोक मिलेगा तेरी करुणा का उपहार? रहने दो हे देव! अरे यह मेरा मिटने का अधिकार।

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		रचनाकार
(a) साहित्य का समाजशास्त्र	–	नगेन्द्र
(b) प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	–	रामविलास शर्मा
(c) आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान	–	केदारनाथ सिंह
(d) अद्यतन	–	अज्ञेय

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) छप्पर	–	जयप्रकाश कर्दम
(b) शिकंजे का दर्द	–	सुशीला टाकभोरे
(c) अपने-अपने पिंजरे	–	मोहनदास नैमिशराय
(d) झोंपड़ी से राजभवन	–	माताप्रसाद

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		रचनाकार
(a) यारों के यार	–	कृष्णा सोबती
(b) मछली मरी हुई	–	राजकमल चौधरी
(c) सपाट चेहरे वाला आदमी	–	दूधनाथ सिंह
(d) कोसी का घटवार	–	शेखर जोशी

नोट–यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कुछ त्रुटियाँ हैं। रामकमल चौधरी द्वारा लिखित 'मछली मरी हुई' उपन्यास है, न कि कहानी। 'सपाट चेहरे वाला आदमी' शीर्षक से बच्चन सिंह ने भी एक कहानी संग्रह लिखा है।

☞ सही सुमेलित हैं–

संवाद-पंक्ति		नाटक
(a) मैंने भावना में भावना का वरण किया है........	–	आषाढ़ का एक दिन
(b) अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है...........	–	स्कन्दगुप्त
(c) समझदारी आने पर यौवन चला जाता है जब तक माला गूँथी जाती है फूल कुम्हला जाते हैं.............	–	चन्द्रगुप्त
(d) नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनाता है और उसका अपकर्षण उसे गौतम बुद्ध.....	–	लहरों के राजहंस

जून - 2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ स्वयंभू, सरहपाद, पुष्पदंत तथा गोरखनाथ में से महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का पहला कवि माना है **– सरहपाद को**

☞ ''संदेसडउ सबित्थरउ पइ मइ कहणु न जाइ।
जे कालंगुलि मूंदडऊ सो बाँहडी समाइ।'' पंक्तियों के रचनाकार हैं **– अद्दहमाण**

☞ ''कबीर की अपेक्षा खुसरो का ध्यान बोलचाल की भाषा की ओर अधिक था'', कथन है **– रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ वैराग्य संदीपनी, कृष्ण गीतावली, हनुमच्चरित तथा पार्वती मंगल ग्रन्थों में से तुलसीदास की रचना नहीं है **– हनुमच्चरित**

☞ ''जायसी पहले कवि हैं, सूफी बाद में'', कथन है **– विजयदेव नारायण साही**

☞ ''जसोदा! कहा कहौं हौं बात?
तुम्हारे सुत के करतब मो पै कहे नहिं जात'' पंक्तियों के रचयिता हैं **– चतुर्भुजदास**

☞ ''अधर-मधुरता, कठिनता-कुच, तीक्षनता-त्यौर।
रस-कवित्त-परिपक्वता जाने रसिक न और।।'' उक्त दोहे द्वारा काव्य-रसिक को परिभाषित किया है **— भिखारीदास ने**

☞ स्वच्छंदता, सामाजिकता, निर्वैयक्तिकता तथा ऐतिहासिकता में से रीतिमुक्त कविता की विशेषता है **— स्वच्छंदता**

☞ 'एकांत संगीत' रचना है **— हरिवंशराय बच्चन की**

☞ 'दु:खिनी बाला' नाटक के लेखक हैं **— राधाकृष्णदास**

☞ प्रेमपचीसी, प्रेमद्वादशी, मुहब्बात की राहें तथा सप्त सरोज में से प्रेमचन्द का कहानी-संग्रह नहीं है **— मुहब्बात की राहें**

☞ आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, अच्छे आदमी तथा गरीबी हटाओ में से फणीश्वरनाथ रेणु का कहानी-संग्रह नहीं है

— गरीबी हटाओ

☞ मृणाल किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है **— त्यागपत्र का**

☞ बम्बई के मजदूर संगठनों के जीवन-संघर्ष पर आधारित उपन्यास है

— आवाँ

☞ 'शिवशंभु के चिट्ठे' के रचनाकार हैं **— बालमुकुंद गुप्त**

☞ काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रथम सभापति थे

— बाबू राधाकृष्णदास

☞ कामा (,), अल्पविराम (;), प्रश्नवाचक (?) तथा पूर्ण विराम (।) में से कौन-सा विराम चिह्न ऐसा है जो हिन्दी में अंग्रेजी भाषा से नहीं लिया गया है **— पूर्ण विराम (।)**

☞ पार्श्विक, उत्क्षिप्त, प्रकंपित तथा संघर्षहीन में से प्रयत्न के आधार पर 'ल' ध्वनि है **— पार्श्विक**

☞ श्लेष, वीप्सा, उपमा तथा वक्रोक्ति में से शब्दालंकार नहीं है **—उपमा**

☞ रस-सूत्र की व्याख्या करते हुए 'अभिव्यक्तिवाद' की स्थापना की

— अभिनव गुप्त ने

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

— श्रावकाचार (933 ई.), **भरतेश्वर बाहुबली रास** (1184 ई.), **चंदनबाला रास** (1200 ई.) **रेवंतगिरि रास** (1231 ई.)

☞ अलंकार सम्प्रदाय से सम्बद्ध अलंकार ग्रन्थों का सही कालानुक्रम है

— काव्यालंकार (7वीं शताब्दी), काव्यालंकार सार संग्रह (8वीं शताब्दी), अलंकार सर्वस्य (12वीं शताब्दी), अलंकार कौस्तुभ (17वीं-18वीं शताब्दी)

☞ जन्मकाल के अनुसार पाश्चात्य आलोचकों का सही कालानुक्रम है

— जॉन ड्राइडन (1631-1700 ई.), **कॉलरिज** (1772-1834 ई.), **मैथ्यू आर्नाल्ड** (1822-1888 ई.),**क्रोचे** (1866-1952 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है **— घराऊ घटना** (1893 ई.), **स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी** (1899 ई.), **अद्भुत प्रायश्चित** (1905 ई.), **अँगूठी का नगीना** (1918 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है

—अपने-अपने पिंजरे (1995 ई.), **जूठन** (1997 ई.), **मुर्दहिया** (2010 ई.), **शिकंजे का दर्द** (2012 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही अनुक्रम है **— मैला आँचल** (1954 ई.), **परती परिकथा** (1957 ई.), **दीर्घतपा** (1963 ई.), **जुलूस** (1965 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी-संग्रहों का सही अनुक्रम है

—फाँसी (1929 ई.), **बिखरे मोती** (1932 ई.), **सतमी के बच्चे** (1935 ई.), **दो बाँके** (1936 ई.)

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

—सियाराम शरण गुप्त (1895-1963 ई.), **सोहनलाल द्विवेदी** (1906-1988 ई.), **श्याम नारायण पाण्डेय** (1907-1991 ई.), **रामधारी सिंह दिनकर** (1908-1974 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है

— हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873 ई.), **आनंदकादंबिनी** (1881 ई.), **नागरी प्रचारिणी** (1897 ई.), **सरस्वती** (1900 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) जयमयंक जसचन्द्रिका	–	मधुकर कवि
(b) पृथ्वीराज रासो	–	चंदबरदाई
(c) श्रावकाचार	–	देवसेन
(d) नेमिनाथ रास	–	सुमति मणि

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		**लेखक**
(a) साहित्य लहरी	–	सूरदास
(b) प्रेम वाटिका	–	रसखान
(c) रसमंजरी	–	नंददास
(d) भक्त नामावली	–	ध्रुवदास

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		**रचना**
(a) आलम	–	माधवानल कामकंदला
(b) घनानंद	–	सुजानहित प्रबंध
(c) ठाकुर	–	ठाकुर ठसक
(d) द्विजदेव	–	शृंगारलतिका सौरभ

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) एक पतंग अनंत में	–	अशोक वाजपेयी
(b) यहाँ से देखो	–	केदारनाथ सिंह
(c) बात बोलेगी	–	शमशेर बहादुर सिंह
(d) आत्मजयी	–	कुँवर नारायण

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) सूखी डाली	–	उपेन्द्रनाथ अश्क
(b) कारवाँ	–	भुवनेश्वर प्रसाद
(c) बादल की मृत्यु	–	रामकुमार वर्मा
(d) एक घूँट	–	जयशंकर प्रसाद

☞ सही सुमेलित हैं

रचना		रचनाकार
(a) मेरी आत्म कहानी	–	श्यामसुन्दर दास
(b) स्मृति की रेखाएँ	–	महादेवी वर्मा
(c) माटी की मूरतें	–	रामवृक्ष बेनीपुरी
(d) हरिश्चन्द्र	–	शिवनंदन सहाय

☞ सही सुमेलित हैं–

लेखिका		रचना
(a) ममता कालिया	–	एक पत्नी के नोट्स
(b) नासिरा शर्मा	–	जिंदा मुहावरे
(c) चित्रा मुद्गल	–	एक जमीन अपनी
(d) अलका सरावगी	–	शेष कादंबरी

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य शास्त्रीय कृति		आचार्य
(a) औचित्य विचार चर्चा	–	क्षेमेन्द्र
(b) ध्वन्यालोक	–	आनन्दवर्धन
(c) शृंगार प्रकाश	–	भोजराज
(d) काव्य मीमांसा	–	राजशेखर

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचना ग्रन्थ		आलोचक
(a) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	–	शिवदान सिंह चौहान
(b) शब्द और मनुष्य	–	परमानन्द श्रीवास्तव
(c) अज्ञेयः वागर्थ-वैभव	–	रमेशचन्द्र शाह
(d) लोकवादी तुलसीदास	–	विश्वनाथ त्रिपाठी

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटककार		नाटक
(a) हरिकृष्ण प्रेमी	–	रक्षाबंधन
(b) गोविन्द वल्लभ पंत	–	अंगूर की बेटी
(c) लक्ष्मी नारायण मिश्र	–	संन्यासी
(d) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	–	अशोक

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली मूल प्रवृत्ति भावात्मिका है। केवल तर्कबुद्धि या विवेचना के बल से हम किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि जहाँ जटिल बुद्धि-व्यापार के अनंतर किसी कर्म का अनुष्ठान देखा जाता है, वहाँ भी तह में कोई भाव या वासना छिपी रहती है।

– (A) और और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** अभिव्यंजनावादियों के अनुसार कवि या कलाकार अपने अंतर की भावना को बाहर प्रकाशित करता है, बाह्य वस्तु को नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि अभिव्यंजनावादी अंतर की भावना की जगह बाह्य वस्तु को अधिक महत्व देता है।

– (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मन को अनुरंजित करना, उसे सुख या आनन्द पहुँचाना ही कविता का अंतिम लक्ष्य मानना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मनोविलास की सामग्री है जिससे सहृदय पाठक अपनी कुंठाओं से मुक्त होता है। इसे ही सहृदय की मुक्तावस्था कहा गया है।

– (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** फ्रायड के अनुसार, कला और धर्म, दोनों का उद्भव अचेतन मानस संचित प्रेरणाओं और इच्छाओं में ही होता है। इस कामशक्ति के उन्नयन के फलस्वरूप कलाकार सर्जन करता है।

तर्क (R) : क्योंकि अवचेतन मानस में कामशक्ति के उन्नयन के फलस्वरूप कलाकार सर्जन करता है।

– (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का जो चरम लक्ष्य सर्वभूत को आत्मभूत कराके अनुभव कराना है, उसके साधन में भी अहंकार का त्याग आवश्यक है।

तर्क (R) : क्योंकि जब तक इस अहंकार से पीछा न छूटेगा, तब तक प्रकृति के सब रूप मनुष्य की अनुभूति के भीतर नहीं आ सकते।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

सम-सामयिक घटना चक्र

जून - 2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ अंग्रेजी, हिन्दी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा में से हिन्दी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम लिखा गया **— फ्रेंच भाषा में**

☞ 'पंडिअ सअल सत्त बक्खाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणइ।' इस पंक्ति के रचनाकार हैं **— सरहपा**

☞ 'आध्यात्मिक रंग के चश्में आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं।' आचार्य शुक्ल का यह कथन सम्बन्धित है **— विद्यापति से**

☞ मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की पहली पुस्तक है **— वर्णरत्नाकर**

☞ 'राजमती' नायिका है **— बीसलदेव रासो की**

☞ 'शाश्वती' डायरी के लेखक हैं **— अज्ञेय**

☞ काव्य कृतियों गीतगोविन्द टीका, प्रेमतत्वनिरूपण, राग गोविन्द तथा नरसी जी का मायरा में से मीराबाई की रचना नहीं है **— प्रेमतत्वनिरूपण**

☞ रीतिकालीन कवियों बिहारी, घनानन्द, देव तथा पद्‌माकर में से अपनी कविताओं में ऋतुओं और त्योहारों के साथ जीवन को खूबसूरती के साथ मिलाया है **— पद्‌माकर ने**

☞ कविकुलकल्पतरु, भावविलास, भवानीविलास तथा अष्टयाम में से देव की रचना नहीं है **— कविकुलकल्पतरु**

☞ 'सूर समाना चन्द में दहूँ किया घर एक' काव्य पंक्ति है **— कबीरदास की**

☞ रासपंचाध्यायी लिखी गयी है **— रोला छन्द में**

☞ 'प्रकृति के नाना रूपों के साथ केशव के हृदय का सामंजस्य कुछ भी न था' कथन है **— रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या?
रहै आजाद या जग में, हमन दुनियाँ से यारी क्या?
काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं **— कबीरदास**

☞ ''हिन्दू मग पर पाँव न राख्यौ।
का बहुतैं जो हिन्दी भाख्यौ।।''
काव्य पंक्तियाँ हैं **— अवधी बोली में**

☞ 'एक तनी हुई रस्सी है जिस पर मैं नाचता हूँ।' पंक्ति के रचनाकार हैं **— अज्ञेय**

☞ 'युगधारा' के रचयिता हैं **— नागार्जुन**

☞ 'शब्द जादू हैं।
मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है।'
इन पंक्तियों के रचनाकार हैं
— सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

☞ 'बीती विभावरी जाग री।
अम्बर पनघट में डुबो रही, तारा-घट उषा-नागरी।।'
उपर्युक्त पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के काव्य संग्रह में संकलित हैं **— लहर में**

☞ 'अन्धा कुआँ' नाट्यकृति है **— लक्ष्मीनारायण लाल की**

☞ 'मल्लिका' पात्र है **— आषाढ़ का एक दिन नाटक की**

☞ समान्तर चलते हुए, अपने दायरे, गलत होता पंचतंत्र तथा जाह्नवी में से राजी सेठ की कहानी नहीं है **— जाह्नवी**

☞ 'आधा गाँव' उपन्यास में चित्रित गाँव है **— गंगौली**

☞ महिला पुलिस कर्मियों के जीवन पर आधारित उपन्यास है **— गुनाह बेगुनाह**

☞ छप्पर के लेखक हैं **— जयप्रकाश कर्दम**

☞ नादान दोस्त, चोरी, कजाकी तथा दो सखियाँ में से शिशु संवेदना की कहानी नहीं है **— दो सखियाँ**

☞ भुवनेश्वर प्रसाद की एकांकी है **— स्ट्राइक**

☞ 'भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द्र का जीवन-चरित' ग्रन्थ के रचनाकार हैं **— राधाकृष्णदास**

☞ 'विभक्ति विचार' नामक पुस्तक की रचना की है **— गोविन्द नारायण ने**

☞ 'जादुई यथार्थवाद' (Magical Realism) शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया था **— फ्रेन्ज रोह ने**

☞ जोसेफ एडीसन, लुकाच, राल्फ फॉक्स तथा कॉडवेल में से मार्क्सवादी विचारक नहीं हैं **— जोसेफ एडीसन**

☞ 'विरुद्धों का सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है' धारणा है **— रामचन्द्र शुक्ल की**

☞ स्वकीया नायिका का भेद नहीं है **— वासकसज्जा**

☞ ध्वनि सिद्धान्त के आचार्य हैं **— आनन्दवर्धन**

☞ संवेदनशीलता का असाहचर्य (Dissociation of Sensibility) अवधारणा है **— टी.एस. इलियट की**

☞ महादेवी वर्मा की कृति में जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों से सम्बन्धित संस्मरण है **— मेरा परिवार**

☞ भारतीय काव्य शास्त्र में रसगत दोषों की संख्या है **— 10**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है
— कबीरदास (1398-1518 ई.), गुरुनानक (1469-1539 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.), मलूकदास (1574-1682 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर रचनाओं का सही क्रम है

— **रसिकप्रिया (1485 ई.), कविकुलकल्पतरु (1650 ई.), ललित ललाम (1659-1688 ई.), अलंकारमाला (1766 ई.),**

☞ टी.एस. इलियट के आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है— **द सेक्रेड वुड (1920-21 ई.), सेलेक्टेड एसेज (1917-32 ई.), एलिजाबेथेन एसेज (1934 ई.), एसेज : एन्सिएंट एण्ड मॉडर्न (1936 ई.)**

नोट : यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिये गये विकल्पों में से कोई भी विकल्प सही नहीं है। हालांकि यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में यह अनुक्रम सही माना है—द सेक्रेड वुड, एलिजाबेथेन एसेज, सेलेक्टेड एसेज, एसेज : एन्सिएंट एण्ड मॉर्डन।

☞ नाट्यशास्त्र से सम्बद्ध ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— **अभिनव भारती (10वीं शती), दशरूपक (974-995 ई.), नाट्यदर्पण (12वीं शती), भाव प्रकाशन (13वीं शती)**

☞ ग्रन्थों का सही कालानुक्रम है — **प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), जनांतिक (1981ई.), मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना (1998 ई.), कवि कह गया है (2000 ई.)**

☞ हिन्दी काव्यशास्त्र कृतियों का सही कालानुक्रम है

— **रसराज (1617-1736 ई.), शृंगारनिर्णय (1751ई.), रसिकानन्द (1847 ई.), रसकलस (1931 ई.)**

☞ नाटकों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है

— **डॉक्टर (1961 ई.), कर्फ्यू (1972 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1985 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)**

☞ निर्मल वर्मा के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशनकाल के अनुसार सही अनुक्रम है — **शब्द और स्मृति (1976 ई.), कला का जोखिम (1981 ई.), ढलान से उतरते हुए (1985 ई.), आदि, अंत और आरम्भ (2001 ई.)**

☞ प्रसाद की काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है — **उर्वशी (1909 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1926 ई.), लहर (1926 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

— **रश्मिरथी (1952 ई.), कनुप्रिया (1959 ई.), लोकायतन (1964 ई.), आत्मजयी (1965 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है

— **प्रगति और परम्परा (1948 ई.), अद्यतन (1977 ई.), अंगद की नियति (1984 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2006 ई.)**

☞ उपन्यासों का सही कालानुक्रम है

— **देशद्रोही (1943 ई.), नदी के द्वीप (1951 ई.), शहर में घूमता आईना (1963 ई.), तमस (1993 ई.)**

☞ जगदीश चन्द्र के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — **यादों का पहाड़ (1966 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), मुट्ठी भर कांकर (1982 ई.), नरक कुण्ड में वास (1994 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार ऐतिहासिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— **मृगनयनी (1950 ई.), एकदा नैमिषारण्ये (1972 ई.), अनामदास का पोथा (1976 ई.), अभिज्ञान (1981 ई.)**

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में, किसी न किसी रूप में पायी जाती है।

तर्क (R) : इसीलिए कविता की जरूरत मनुष्य जाति को हमेशा रहेगी।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** वैचारिक स्वतन्त्रता साहित्यकार को व्यापक सामाजिक सत्य और संवेदना से विमुख करती है।

तर्क (R) : क्योंकि विचारबद्धता उसकी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति को सर्वस्वीकृति सामाजिक विस्तार देती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** कवियों ने लोकरक्षा के विधान में करुणा को ही बीज भाव माना है। करुणा से रक्षा का विधान होता है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता में अभिव्यक्त अन्य भाषाओं में लोकरक्षा का विधान नहीं पाया जाता।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक सार्वकालिक और सार्वदेशिक होते हैं।

तर्क (R) : इसीलिए मिथक के माध्यम से किसी भी समय और समाज के अन्तर्विरोध और संवेदना की अभिव्यक्ति सम्भव है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** नाद सौन्दर्य से कविता की आयु नहीं बढ़ती।

तर्क (R) : क्योंकि नाद सौन्दर्य का योग कविता का पूर्ण स्वरूप खड़ा करने के लिए कुछ-न-कुछ आवश्यक होता है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **अभिकथन (A) :** मरणासन्न महाकाव्य के गर्भ से उपन्यास का जन्म हुआ है।

तर्क (R) : क्योंकि उपन्यास का उदय पश्चिम में मध्यवर्ग के उदय के साथ हुआ।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** साधारणीकरण की प्रमुख आधारशिला मानव सुलभ समानानुभूति है।

तर्क (R) : क्योंकि मानव सुलभ समानानुभूति, स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है, जिसे भारतीय दर्शन का बल भी प्राप्त है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** प्रसाद के नाटकों में रस और द्वन्द्व का आद्यन्त समन्वय हुआ है।

तर्क (R) : कारण कि यह केवल उन पर पश्चिमी नाट्य चिन्तन के प्रभाव से ही सम्भव हुआ।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** आदर्श नागरिक को आत्म विकास करते हुए सारी धरती के सुख में ही अपना सुख मानना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि प्रत्येक नागरिक के व्यवहार की, उसकी अच्छाई-बुराई की मूल कसौटी समाज-कल्याण की भावना है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** गोदान ग्रामीण जीवन का महाकाव्य है।

तर्क (R) : क्योंकि गोदान में समग्र युग-जीवन का चित्रण हुआ है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		**लेखक**
(a) सर्वंगी	–	रज्जब
(b) ज्ञानबोध	–	मलूकदास
(c) प्रेमप्रगास	–	धरणीदास
(d) शब्दसागर	–	बूला साहब

नोट—यूजीसी/सीबीएसई ने अपने प्रश्न-पत्र में ज्ञानबोध की जगह 'ग्यानबोध' दिया है।

☞ सही सुमेलित हैं–

रचनाकार		**रचना**
(a) भूषण	–	रस सारांश
(b) घनानन्द	–	इश्कलता
(c) सूरति मिश्र	–	रस रत्नाकर
(d) मतिराम	–	रसराज

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**लेखक**
(a) सूरासुरनिर्णय	–	मुंशी सदासुखलाल
(b) भाषायोग वशिष्ठ	–	रामप्रसाद निरंजनी
(c) भाषा पद्म पुराण	–	दौलतराम जैन
(d) चिद्विलास	–	दीपचन्द जैन

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**रचनाकार**
(a) निशा निमंत्रण	–	हरिवंशराय बच्चन
(b) प्रभात फेरी	–	नरेन्द्र शर्मा
(c) नींद के बादल	–	केदारनाथ अग्रवाल
(d) जीवन के गान	–	शिवमंगल सिंह सुमन

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		**रचनाकार**
(a) भारत दुर्दशा	–	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(b) मयंक मंजरी	–	किशोरी लाल गोस्वामी
(c) रुक्मिणी परिणय	–	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) सीता वनवास	–	ज्वाला प्रसाद मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		**रचनाकार**
(a) गुलबहार	–	किशोरी लाल गोस्वामी
(b) ग्यारह वर्ष का समय	–	रामचन्द्र शुक्ल
(c) पंडित और पंडितानी	–	गिरिजादत्त वाजपेयी
(d) कुम्भ में छोटी बहू	–	बंग महिला

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्ध संग्रह		**लेखक**
(a) साहित्य का श्रेय और प्रेम	–	जैनेन्द्र
(b) आलोक पर्व	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रेती के फूल	–	दिनकर
(d) आस्था और सौन्दर्य	–	रामविलास शर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		**लेखक**
(a) लिरिकल बैलड्स	–	वर्ड्सवर्थ
(b) बायोग्राफिया लिटरेरिया	–	कॉलरिज
(c) एस्थेटिक	–	क्रोचे
(d) दि फाउन्डेशन्स ऑफ एस्थेटिक्स	–	रिचर्ड्स

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		**लेखक**
(a) नया साहित्य : नये प्रश्न	–	नन्ददुलारे वाजपेयी
(b) रस सिद्धान्त	–	नगेन्द्र
(c) मार्क्सवादी साहित्य चिन्तन	–	शिवकुमार मिश्र
(d) रोमांटिक साहित्य शास्त्र	–	देवराज उपाध्याय

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ		**आचार्य**
(a) उज्जवल नीलमणि	–	रूप गोस्वामी
(b) कुवलयानन्द	–	अप्पय दीक्षित
(c) साहित्य दर्पण	–	विश्वनाथ
(d) रस गंगाधर	–	पंडितराज जगन्नाथ

सम-सामयिक घटना चक्र

दिसम्बर - 2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'प्रेमवाटिका' काव्यकृति है —**रसखान की**

☞ 'अनघ' नाटक लिखा है — **मैथिलीशरण गुप्त ने**

☞ 'घुमक्कड़शास्त्र' के लेखक हैं —**राहुल सांकृत्यायन**

☞ 'प्रेमसागर' के लेखक हैं —**लल्लूलाल जी**

☞ 'आत्म निरीक्षण' के लेखक हैं —**सेठ गोविन्ददास**

☞ 'पृथ्वी प्रदक्षिणा' के लेखक हैं —**शिवप्रसाद गुप्त**

☞ सुहाग के नूपुर, मानस का हंस, भूले बिसरे चित्र तथा बूँद और समुद्र में से अमृतलाल नागर का उपन्यास नहीं है —**भूले बिसरे चित्र**

☞ एक दूनी एक, मादा कैक्टस, सेतुबंध तथा कैद–ए–हयात में से सुरेन्द्र वर्मा का नाटक नहीं है —**मादा कैक्टस**

☞ सिंह सेनापति, जय यौधेय, दिवोदास तथा व्यतीत में से राहुल सांकृत्यायन का उपन्यास नहीं है —**व्यतीत**

☞ औ, ए, क तथा त में से कंठ्योष्ठ्य ध्वनि का उदाहरण है —**औ**

☞ बाँगरू, बघेली, ब्रजभाषा तथा भोजपुरी में से अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली है —**बघेली**

☞ ''ज्ञान दूर क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सकें
यह विडंबना है जीवन की।'' काव्य–पंक्तियों के रचनाकार हैं —**जयशंकर प्रसाद**

☞ पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म है—**खड़ीबोली—बुन्देली**

☞ शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे कहा जाता है —**पद**

☞ 'भाषा काव्य संग्रह' कृति है —**महेशदत्त शुक्ल की**

☞ वल्लभाचार्य का 'वेदांत सूत्र' पर लिखा प्रसिद्ध ग्रन्थ है —**अणु भाष्य**

☞ ''पानी परात को हाथ छुयौ नहिं
नैनन के जल सों पग धोए।'' पंक्तियाँ हैं —**नरोत्तमदास की**

☞ तुलसीदास के गुरु थे —**नरहर्यानन्द (नरहरिदास)**

☞ 'कवित्त रत्नाकर' कृति है —**सेनापति की**

☞ 'उत्तर कबीर' नामक कविता है —**केदारनाथ सिंह की**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार जीवनियों का सही अनुक्रम है—**प्रेमचन्द घर में (1944 ई.), आवारा मसीहा (1987 ई.), वटवृक्ष की छाया में (2004 ई.), व्योमकेश दरवेश (2011 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही क्रम है —**रंगभूमि (1925 ई.), निर्मला (1927 ई.), कर्मभूमि (1932 ई.), गोदान (1936 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार अमृतलाल नागर के उपन्यासों का सही क्रम है —**महाकाल (1947 ई.), बूँद और समुद्र (1956 ई.), मानस का हंस (1973 ई.), खंजन नयन (1981 ई.)**

☞ प्रकाशन के आरम्भ की दृष्टि से पत्रिकाओं का सही क्रम है —**माधुरी (1921 ई.), विशाल भारत (1928 ई.), जागरण (1932 ई.), साहित्य संदेश (1937 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार महादेवी वर्मा की गद्य कृतियों का सही क्रम है —**अतीत के चलचित्र (1941 ई.), शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), स्मृति की रेखाएँ (1943 ई.), पथ के साथी (1956 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के निबन्ध–संग्रहों का सही क्रम है —**आत्मनेपद (1960 ई.), लिखि कागद कोरे (1972 ई.), अद्यतन (1977 ई.), कहाँ है द्वारका (1982 ई.)**

☞ व्यंग्य रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —**भित्तिचित्र (1966 ई.), जीप पर सवार इल्लियाँ (1971 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2000 ई.), जो घर फूँके (2006 ई.)**

☞ उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है —**त्यागपत्र (1937 ई.), नदी के द्वीप (1952 ई.), मेरी तेरी उसकी बात (1975 ई.), खंजन नयन (1981 ई.)**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है —**बिहारी, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम**

☞ भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —**टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1946 ई.), भूले बिसरे चित्र (1959 ई.), सामर्थ्य और सीमा (1962 ई.), सीधी सच्ची बातें (1968 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

रचनाकार		**आत्मकथा**
(a) शिवपूजन सहाय	–	मेरा जीवन
(b) सुमित्रानन्दन पन्त	–	साठ वर्ष : एक रेखांकन
(c) हरिवंशराय बच्चन	–	दश द्वार से सोपान तक
(d) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	–	अपनी खबर

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचक		ग्रंथ
(a) नन्ददुलारे वाजपेयी	–	हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी
(b) लक्ष्मीकांत वर्मा	–	नई कविता के प्रतिमान
(c) रामविलास शर्मा	–	निराला
(d) विजयदेव नारायण साही	–	जायसी

☞ सही सुमेलित हैं–

संस्मरणात्मक रेखाचित्र		लेखक
(a) चेतना के बिम्ब	–	नगेन्द्र
(b) रेखाएँ बोल उठीं	–	देवेन्द्र सत्यार्थी
(c) जिन्दगी मुस्कराई	–	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(d) सिंहावलोकन	–	यशपाल

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		कहानी
(a) भगवतीचरण वर्मा	–	दो बाँके
(b) इलाचन्द्र जोशी	–	दीवाली और होली
(c) यशपाल	–	मक्रील
(d) उपेन्द्रनाथ अश्क	–	पिंजरा

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यासकार		उपन्यास
(a) राधाकृष्णदास	–	नि:सहाय हिन्दू
(b) किशोरीलाल गोस्वामी	–	तारा
(c) देवकीनन्दन खत्री	–	चन्द्रकान्ता
(d) श्रद्धाराम फिल्लौरी	–	भाग्यवती

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटककार		नाटक
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	अंधेर नगरी
(b) राधाचरण गोस्वामी	–	अमरसिंह राठौर
(c) प्रतापनारायण मिश्र	–	संगीत शाकुंतल
(d) बालकृष्ण भट्ट	–	नल दमयन्ती

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		रचनाकार
(a) आत्मा की आँखें	–	रामधारी सिंह दिनकर
(b) काठ का सपना	–	गजानन माधव मुक्तिबोध
(c) समय और हम	–	जैनेन्द्र कुमार
(d) मिलन यामिनी	–	हरिवंशराय बच्चन

☞ सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य-संग्रहों को उनके प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही सुमेलित हैं–

काव्य-संग्रह		प्रकाशन-वर्ष
(a) पल्लव	–	1926
(b) वीणा	–	1927
(c) गुंजन	–	1932
(d) स्वर्ण किरण	–	1947

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		प्रकाशन स्थान
(a) आनन्द कादम्बिनी	–	मिर्जापुर
(b) ब्राह्मण	–	कानपुर
(c) हिन्दी प्रदीप	–	प्रयाग
(d) उचित वक्ता	–	कलकत्ता

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्धकार		निबन्ध-संग्रह
(a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'	–	कछुआ धर्म
(b) वासुदेव शरण अग्रवाल	–	पृथ्वीपुत्र
(c) रामवृक्ष बेनीपुरी	–	वन्दे वाणी विनायकौ
(d) कुबेरनाथ राय	–	मराल

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का उत्कर्ष केवल प्रेमभाव की कोमल व्यंजना में ही माना जा सकता है।

तर्क (R) : क्रोध जैसे उग्र एवं प्रचंड भावों के विधान के साथ-साथ करुण-भाव की अभिव्यक्ति से काव्य में पूर्ण सौन्दर्य के साक्षात्कार होते हैं।

– (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** भूमंडलीकरण ने 'जन' की पुरानी धारणा बदल कर रख दी है। उसने 'जन' को 'मास' में बदल दिया है।

तर्क (R) : क्योंकि भूमंडलीकरण के 'मास' में वहीं लोग शामिल हैं। जिनके पास क्रयशक्ति है और जो जनसंचार साधनों के उपयोग में दक्ष हैं।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** शृंगार को रसराज माना जाता है। इसलिए वह सभी रसों में प्रधान है।

तर्क (R) : क्योंकि जीवन के आदि से लेकर अन्त तक उसी का प्रसार है और जीवन की सभी भावनाएँ उसी से नि:सृत हैं।

– (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि वह मध्यकालीन परम्पराओं का पूर्ण विरोधी है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** प्रतीक अमूर्त का मूर्तीकरण है, जिसमें अदृश्य सारतत्व की अभिव्यक्ति है।

तर्क (R) : क्योंकि जब किसी वस्तु का कोई एक भाग गोचर हो; और फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो, तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

दिसम्बर - 2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ क्य, च्च, ट एवं औ ध्वनियों में से संयुक्त व्यंजन है— **-क्य**

☞ डोगरी, मणिपुरी, मैथिली तथा छत्तीसगढ़ी भाषा में से संविधान की अष्टम सूची में सम्मिलित नहीं किया गया **—छत्तीसगढ़ी को**

☞ पुष्पदंत की प्रबंध की रचना है **—णयकुमार चरिउ की**

☞ मुसलमान अनुयायी कबीरदास को शिष्य मानते हैं **—शेख़ तक़ी का**

☞ फोर्ट विलियम कॉलेज के शिक्षक जिसने हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन आरंभ कराया **—गिल क्राइस्ट**

☞ 'संशयात्मा' रचना है **—ज्ञानेन्द्रपति की**

☞ एकांकी में अन्विति अथवा संकलनत्रय के अंतर्गत काल, स्थान के साथ निर्वाह की गणना की जाती है **—कार्य का**

☞ निर्वेद, व्रीड़ा, उन्माद तथा आहार्य में से अनुभव का एक भेद है **—आहार्य**

☞ शब्द में जहाँ मूल अर्थ नहीं, बल्कि उसका व्यंग्यार्थ अभिप्रेत होता है वहाँ शब्द शक्ति होती है **—व्यंजना**

☞ जयशंकर प्रसाद कृत 'उर्वशी' रचना है **—चम्पू काव्य की**

☞ दंडी, भामह, वामन तथा आनन्दवर्धन में से काव्यदोष की परिभाषा सबसे पहले दी **—वामन ने**

☞ ''पाय महावर दैन को नाइन बैठी आय।फिरि फिरि जानि महावरी एड़ी मीड़ति जाय।। काव्य पंक्तियों में अलंकार है **— भ्रांतिमान**

☞ 'यथार्थवाद और छायावाद' निबन्ध के रचयिता हैं**—जयशंकर प्रसाद**

☞ 'मिला तेज से तेज' रचना है **—जीवनी**

☞ 'छायावाद का पतन' पुस्तक के लेखक हैं **—देवराज**

☞ 'एक पत्नी के नोट्स' रचना है **—ममता कालिया की**

☞ निर्मल वर्मा का पहला कहानी—संग्रह है **—कव्वे और कालापानी**

☞ रस निष्पत्ति के सन्दर्भ में 'भुक्तिवाद' मत है **—भट्टनायक का**

☞ कायिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक में से स्वरभंग अनुभाव है **—सात्विक**

☞ जयशंकर प्रसाद के नाटक राज्यश्री, स्कन्दगुप्त,जनमेजय का नागयज्ञ तथा विशाख में से एक पात्र 'शर्वनाग' है **—स्कंदगुप्त का**

☞ अंधा कुआँ, चिंदियों की एक झालर, साँच कहूँ तो तथा नेपथ्य राग में से स्त्री—समस्या से सम्बन्धित नहीं है **—चिंदियों की एक झालर**

☞ 'अंत हाजिर हो' नाटक की महिला नाट्यकार हैं **—मीरा कांत**

☞ ''हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चले।'' काव्य—पंक्तियाँ हैं **—भगवतीचरण वर्मा की**

☞ ''बात बोलेगी/हम नहीं/भेद खोलेगी/बात ही'' काव्य—पंक्तियाँ हैं **—शमशेर बहादुर सिंह की**

☞ ''जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपति भेल।'' काव्य—पंक्तियों के रचयिता हैं **—विद्यापति**

☞ ''रूप की आराधना का मार्ग
आलिंगन नहीं तो और क्या है?''
काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं **— रामधारी सिंह दिनकर**

☞ ''लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम'' कथन है**—आचार्य भरत का**

☞ ''काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावत:।'' उक्ति है **—आचार्य भामह की**

☞ ''औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'' उक्ति है **—क्षेमेन्द्र की**

☞ ''कविता सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम विधान है'' पाश्चात्य आलोचक का मत है **— कॉलरिज का**

☞ ''कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।'' कथन है **—सुमित्रानन्दन पंत का**

☞ कारणमाला, माला दीपक, एकावली तथा काव्यलिंग में से शृंखलामूलक अलंकार नहीं है **—काव्यलिंग**

☞ खड़ी बोली, ब्रज, बुन्देली तथा कन्नौजी में से ओकार बहुला नहीं है **—खड़ी बोली**

☞ 'विज्ञान गीता' कृति है **—केशवदास की**

☞ 'गीत गुंज' रचना है **—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की**

☞ 'छाया' नामक एकांकी के लेखक हैं **—सुदर्शन**

☞ राजेन्द्र यादव की कहानी है **—जहाँ लक्ष्मी कैद है**

☞ 'साधारणीकरण' की व्याख्या की है **— नगेन्द्र ने**

☞ 'श्लेष' अलंकार के प्रकार हैं **—दो**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—अलका (1933 ई.), राम रहीम (1937 ई.), शेखर : एक जीवनी (प्रथम भाग) (1941 ई.), सिंह सेनापति (1944 ई.)

☞ फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही क्रम है
—मैला आँचल (1954 ई.), परती परिकथा (1957 ई.), दीर्घतपा, (1963ई.),पलटू बाबू रोड (1979 ई.)

☞ जयशंकर प्रसाद की कहानियों का सही अनुक्रम है

—प्रतिध्वनि (1926 ई.), आकाशदीप (1929 ई.), आँधी (1931 ई.), इन्द्रजाल (1933 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

—इतिहास तिमिर नाशक (1823-1895 ई.), शिवशंभू के चिट्ठे (1865-1907 ई.), साहित्य देवता (1957 ई.), सीढ़ियों पर धूप में (1960 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रामविलास शर्मा की कृतियों का सही अनुक्रम है **—भारतेन्दु युग (1951 ई.), भाषा साहित्य और संस्कृति (1964 ई.), परम्परा का मूल्यांकन (1981 ई.), बड़े भाई (1986 ई.)**

☞ भाषा—निर्माण की इकाइयों का सही अनुक्रम है

—ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य

☞ उच्चारण स्थान के आधार पर कंठ से लेकर मुख विवर में उच्चरित व्यंजन ध्वनियों का सही अनुक्रम है

—कंठ्य, तालव्य, वर्त्स्य, दंत्य, ओष्ठ्य

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है **—हानूश (1977 ई.), माधवी (1984 ई.), मुआवजे (1993 ई.), आलमगीर (1999 ई.)**

☞ विष्णु प्रभाकर के नाटकों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **—डॉक्टर (1961 ई.), युगे युगे क्रांति (1969 ई.), टूटते परिवेश (1974 ई.), सत्ता के आर—पार (1981 ई.)**

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

—केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000 ई.), त्रिलोचन (1917 -2007 ई.), धर्मवीर भारती (1926-1997 ई.), रघुवीर सहाय (1929-1990 ई.)

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.), बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

—मधुशाला (1935 ई.), मधुबाला (1936 ई.), मधुकलश (1937 ई.), निशा निमंत्रण (1938 ई.)

☞ जन्मकाल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है

—श्रीधर पाठक (1860-1928 ई.), जगन्नाथ दास रत्नाकर (1866-1932 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1881-1962 ई.), मुकुटधर पाण्डेय (1895-1988 ई.)

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है

—गुरुनानक (1469-1539 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.) मलूक दास (1574-1682 ई.), सुन्दरदास (1596-1686 ई.)

☞ **स्थापना (A) :** मनोविश्लेषणवाद में सबसे अधिक महत्व व्यक्ति के मन को दिया जाता है।

तर्क (R) : क्योंकि व्यक्ति का मन सामाजिक प्रतिबंधों में कैद होकर जड़ हो जाता है।

— (A) और (R) गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** ईश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का एक माध्यम धर्म है। धर्म साधना व्यक्तिनिष्ठ है।

तर्क (R) : क्योंकि साध्य और साधक का एकीकरण साधना के माध्यम से ही होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।

तर्क (R) : क्योंकि करुणा का व्यक्तिगत स्वार्थ से विरोध है। उसके लिए निजी हित छोड़ना पड़ता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** इतिहास का साहित्य कुछ बड़े-बड़े व्यक्तियों के उत्थान और पतन के लेखे-जोखे के नाम नहीं हैं।

तर्क (R) : क्योंकि इतिहासमूलक साहित्य मनुष्य के धारावाहिक जीवन के सारभूत रस का प्रवाह है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** जाति भेद और छुआ-छूत की प्रथाओं ने हमारे देश को अनेक स्तरों में बाँट रखा है।

तर्क (R) : क्योंकि लोकतंत्र के शक्ति-विकेन्द्रीकरण का सबसे सही मार्ग यही है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य विद्या है और कला उपविद्या। इसलिए चौंसठ कलाओं की सूची में काव्य समाविष्ट नहीं है।

तर्क (R) : क्योंकि कला, कौशल और शिल्प है जबकि काव्य ज्ञान और जीवन का एक व्यापक सर्जनात्मक विधान है, जिसमें सत् और असत् का विवेक रहता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** नाटक शुद्ध साहित्य है, जिसकी आलोचना काव्यालोचन के स्थापित प्रतिमानों द्वारा की जा सकती है।

तर्क (R) : लेकिन नाटक शुद्ध साहित्य नहीं है। यह केवल नट की क्रिया है।

— (A) गलत और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य की भूमि पर ले जाता है।

तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य सम्बन्धों का निर्वाह साहित्य से प्रेरित होकर केवल आत्म-संतोष के लिए करता है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य की रागात्मक प्रवृत्ति उसे सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिए प्रेरित करती है।

तर्क (R) : क्योंकि समाज मनुष्य की रागात्मकता को स्वीकार नहीं करता।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य में व्यक्तिवादी चेतना समाज के बहुमुखी को अवरुद्ध करती है।

तर्क (R) : क्योंकि व्यक्तिवाद से समाज में अराजकता फैलती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यास		**लेखक**
(a) वामाशिक्षक	–	ईश्वरी प्रसाद-कल्याण राय
(b) भाग्यवती	–	श्रद्धाराम फिल्लौरी
(c) निस्सहाय हिन्दू	–	राधाकृष्ण दास
(d) नूतन ब्रह्मचारी	–	बालकृष्ण भट्ट

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**उपन्यास (प्रेमचन्द)**
(a) अमृतराय	–	प्रेमा
(b) कृष्णचन्द्र	–	सेवासदन
(c) जानसेवक	–	रंगभूमि
(d) उदयभानु	–	निर्मला

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ (आई.ए.रिचर्ड्स)		**प्रथम संस्करण वर्ष**
(a) दि प्रिंसिपल्स ऑफ लिटररी क्रिटिसिज्म	–	सन् 1924
(b) दि फिलॉसफी ऑफ रेटॉरिक	–	सन् 1936
(c) साइंस एंड पोइट्री	–	सन् 1926
(d) प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म	–	सन् 1929

☞ सही सुमेलित हैं–

आचार्य		**सम्प्रदाय**
(a) भरत	–	रस
(b) दण्डी	–	अलंकार
(c) वामन	–	रीति
(d) आनन्दवर्धन	–	ध्वनि

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्धकार		**निबन्ध**
(a) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	–	माटी हो गयी सोना
(b) रामधारी सिंह 'दिनकर'	–	रेती के फूल
(c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'	–	आलबाल
(d) हजारीप्रसाद द्विवेदी	–	आलोक पर्व

☞ सही सुमेलित हैं–

संस्मरणात्मक कृति		**लेखक**
(a) आछे दिन पाछे गए	–	काशीनाथ सिंह
(b) नंगातलाई का गाँव	–	विश्वनाथ त्रिपाठी
(c) आँगन के वंदनवार	–	विवेकी राय
(d) वे देवता नहीं हैं	–	राजेन्द्र यादव

☞ सही सुमेलित हैं–

लेखक		**यात्रावृत्तांत**
(a) राहुल सांकृत्यायन	–	मेरी तिब्बत यात्रा
(b) रामवृक्ष बेनीपुरी	–	पैरों में पंख बाँधकर
(c) मोहन राकेश	–	आखिरी चट्टान
(d) निर्मल वर्मा	–	चीड़ों पर चाँदनी

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		**लेखक**
(a) ग्यारह वर्ष का समय	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) गुलबहार	–	किशोरी लाल गोस्वामी
(c) एक टोकरी भर मिट्टी	–	माधव राव सप्रे
(d) प्लेग की चुड़ैल	–	भगवान दास

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य संग्रह		**कवि**
(a) आत्महत्या के विरुद्ध	–	रघुवीर सहाय
(b) हाशिये का गवाह	–	कुँवर नारायण
(c) चाँद का मुँह टेढ़ा	–	गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
(d) स्वप्न भंग	–	प्रभाकर माचवे

सम-सामयिक घटना चक्र

जून - 2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ महाराष्ट्री, शौरसेनी, अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंश में से अवधी का विकास हुआ है —**अर्धमागधी से**

☞ डोगरी, मैथिली, ब्रज तथा असमिया में से संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है —**ब्रज को**

☞ विकास की दृष्टि से प्राकृत की पूर्वकालीन अवस्था का नाम है—**पालि**

☞ सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, सुख सागर तथा लाल चन्द्रिका में से लल्लूलाल की रचना नहीं है —**सुख सागर**

☞ सुनीता, मुक्ति पथ, सुखदा तथा तेरी मेरी उसकी बात में से इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास है —**मुक्ति पथ**

☞ जैनेन्द्र, चतुरसेन शास्त्री, इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय में से मनो-विश्लेषणवादी कथाकार नहीं हैं —**चतुरसेन शास्त्री**

☞ गोरक्ष विजय, कालिका मंगल, सरस्वती मंगल तथा विद्यासुन्दर में से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक है —**विद्यासुन्दर**

☞ भूमिजा, कामायनी, नीरजा तथा यशोधरा में से रामकथा पर आधारित काव्य है —**भूमिजा**

☞ धनुंजय, भट्टनायक, भरतमुनि तथा भानुदत्त में से नाटक को पंचम वेद कहा —**भरतमुनि**

☞ सज्जन, राज्यश्री, कामना तथा विशाख में से जयशंकर प्रसाद का सर्वप्रथम नाटक है

—**सज्जन (नाट्य कला की दृष्टि से अपरिपक्व रचना है)**

☞ गोकुलनाथ की रचना है —**चौरासी वैष्णवन की वार्ता**

☞ 'काव्यालंकार' रचना है —**भामह की**

☞ 'आगम—वेअ—पुराणेहि, पणिअ माण वहन्ति' पंक्ति है —**कण्हपा की**

☞ खड भाषा पुराणं च /कुरानं कथितं मया। —भाषा के सम्बन्ध में यह पंक्ति है —**चन्दबरदाई की**

☞ प्रेमचन्द के 'सेवासदन' उपन्यास का उर्दू शीर्षक है—**बाजार ए हुस्न**

☞ नाक, भौंह, पेट, दाँत, मूँछ आदि विषयों के निबन्धकार हैं

—**प्रतापनारायण मिश्र**

☞ शब्दों की पद—रचना पर आधारित भाषाओं के वर्गीकरण को कहा जाता है —**आकृतिमूलक वर्गीकरण**

☞ 'दूसरा दरवाजा' रचना है —**नाटक विधा की**

☞ आत्मकथा है —**मेरे सात जनम**

☞ 'रस गंगाधर' में पंडितराज जगन्नाथ ने प्रशंसा की है

—**शाहजहाँ की**

☞ रचनाकाल के अनुसार भारतेन्दु के नाटकों का सही क्रम है

—**भारत दुर्दशा (1880 ई.), नीलदेवी (1881 ई.), अंधेर नगरी (1881 ई.), सती प्रताप (1883 ई.)**

☞ पंत की काव्य—रचनाओं का सही क्रम है—**पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.), युगांत (1936 ई.), ग्राम्या (1940 ई.)**

☞ उपन्यासों का प्रकाशन काल के अनुसार सही क्रम है

—**मैला आँचल (1954 ई.), बूँद और समुद्र (1956 ई.), अमृत और विष (1966 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)**

☞ पत्रिकाओं का प्रकाशन काल के अनुसार सही क्रम है

—**ब्राह्मण (1883 ई.), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896 ई.), सरस्वती (1900 ई.), हंस (1930 ई.)**

☞ रचनाकाल के अनुसार काव्यों का सही क्रम है —**कानन कुसुम (1913 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.), कामायनी (1935 ई.)**

☞ जीवनकाल के आधार पर कवियों का सही क्रम है

—**अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), विद्यापति (1380-1460 ई.), रैदास (1398-1488 ई.), नानक (1469-1539 ई.)**

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है

—**सेवासदन (1918 ई.), वरदान (1921 ई.), रंगभूमि (1925 ई.), प्रतिज्ञा (1929 ई.)**

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से भीष्म साहनी के उपन्यासों का सही क्रम है

—**कड़िया (1970 ई.), तमस (1973 ई.), मय्यादास की माड़ी (1988 ई.), नीलू नीलिमा नीलोफर (2000)**

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से विष्णु प्रभाकर की रचनाओं का सही क्रम है

—**यादों की तीर्थयात्रा (1981 ई.), सृजन के सेतु (1990 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1992 ई.), हमसफर मिलते रहे (1996 ई.)**

नोट—यूजीसी ने इस प्रश्न का उत्तर का क्रम इस प्रकार दिया है-यादों की तीर्थयात्रा, सृजन के सेतु, हमसफर मिलते रहे, अर्द्धनारीश्वर, किन्तु उपर्युक्त क्रम सही है। अर्द्धनारीश्वर, विष्णु प्रभाकर का उपन्यास है, जबकि शेष संस्मरण हैं।

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना		रचनाकार
(a) यारों के यार तीन पहाड़	–	कृष्णा सोबती
(b) बिना दीवारों का घर	–	मन्नू भण्डारी
(c) अकेला पलाश	–	मेहरुन्निसा परवेज
(d) शेष यात्रा	–	उषा प्रियंवदा

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		कहानी
(a) शिवप्रसाद सिंह	–	दादी माँ
(b) यशपाल	–	पुलिस की सीटी
(c) जैनेन्द्र	–	पाजेब
(d) माधवराव सप्रे	–	एक टोकरी भर मिट्टी

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति (काव्यशास्त्रीय)		आचार्य
(a) भारतीय साहित्य शास्त्र	–	बलदेव उपाध्याय
(b) भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका	–	नगेन्द्र
(c) रस मीमांसा	–	रामचन्द्र शुक्ल
(d) काव्यानुशासन	–	हेमचन्द्र

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		प्रकाशन-स्थल
(a) नागरी प्रचारिणी पत्रिका	–	काशी
(b) सम्मेलन पत्रिका	–	इलाहाबाद
(c) पहल पत्रिका	–	जबलपुर
(d) नया प्रतीक	–	दिल्ली

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		रचना
(a) रेखा	–	नदी के द्वीप
(b) नीलिमा	–	अंधेरे बन्द कमरे
(c) कमला	–	मैला आँचल
(d) रायना	–	वे दिन

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		रचनाकार
(a) हानूश	–	भीष्म साहनी
(b) दशरथ नन्दन	–	जगदीशचन्द्र माथुर
(c) पैर तले की जमीन	–	मोहन राकेश
(d) तिलचट्टा	–	मुद्राराक्षस

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्प्रदाय		अनुयायी
(a) वल्लभ सम्प्रदाय	–	गोविन्द स्वामी
(b) निम्बार्क सम्प्रदाय	–	हरिव्यास देव
(c) राधावल्लभ सम्प्रदाय	–	दामोदर दास
(d) चैतन्य सम्प्रदाय	–	गदाधर भट्ट

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		विधा
(a) प्रेत की छाया	–	कहानी संग्रह
(b) कर्बला	–	नाटक
(c) छितवन की छाँह	–	निबन्ध
(d) अन्या से अनन्या	–	आत्मकथा

नोट–यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में प्रेत की छाया को उपन्यास माना गया है, जबकि यह कहानी संग्रह है। 'प्रेत और छाया' इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास है तथा 'प्रेत की छाया' ज्योतिन्द्रनाथ की कहानी है।

☞ सही सुमेलित हैं–

संस्था		संस्थापक
(a) ब्रह्म समाज	–	राजा राममोहन राय
(b) प्रार्थना समाज	–	केशवचन्द्र सेन
(c) आर्य समाज	–	दयानंद सरस्वती
(d) रामकृष्ण मिशन	–	विवेकानन्द

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्तियाँ		कवि
(a) जो बीत गयी सो बात गयी	–	बच्चन
(b) मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में	–	अज्ञेय
(c) दो पाटों के बीच पिस गया	–	मुक्तिबोध
(d) रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं तो और क्या है?	–	दिनकर

☞ **स्थापना (A) :** मनुष्य की श्रेष्ठ साधना ही संस्कृति है।

तर्क (R) : क्योंकि साधनाओं के माध्यम से मनुष्य अविरोधी-सत्य तक पहुँच सका है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** रस का निर्णायक सहृदय है।

तर्क (R) : क्योंकि सहृदय रस का समीक्षक होता है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के व्यक्ति की मानसिक उलझनों की सफल अभिव्यक्ति 'एकालाप' के रूप में होती है।

तर्क (R) : क्योंकि 'एकालाप' साहित्यकार की मनोरुग्णता का द्योतक है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** युग जीवन के परिवेश में साहित्य की विकास परम्परा का निरूपण करना ही साहित्य के इतिहासकार का कर्तव्य-कर्म है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य का इतिहासकार युग जीवन के परिवेश से इतर होता है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य में वस्तु और रूप एक-दूसरे से अभिन्न और परस्पर अनुस्यूत होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य में वस्तु और रूप की सत्ता एक-दूसरे पर निर्भर है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ 'कुवलयमाला कथा' के रचनाकार हैं — **उद्योतन सूरि**

☞ 'लालचन्द्रिका' के रचनाकार हैं — **लल्लूलाल जी**

☞ 'साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान।
भगति निसृपहिं अधम कवि निंदहिं वेद पुरान।।
पंक्तियाँ हैं — **तुलसीदास की**

☞ 'बीसलदेव रासो' के रचनाकार हैं — **नरपति नाल्ह**

☞ अद्दहमाण की रचना है — **संदेश रासक**

☞ 'काव्यालंकार संग्रह' के रचनाकार हैं — **उद्भट**

☞ 'एवं क्रमहेतुमभिधाय रसविषयं लक्षणसूत्रमाह'
रस सम्बन्धी सूत्र है — **भरतमुनि का**

☞ 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' ग्रन्थ का विषय है — **व्याकरण**

☞ 'मस्तीन सुखा डाहिबी। आसीम औरम थाहिबी।।
धी धी धुना नुप जाहिबी। फीफी फिना सत साहिबी।।
पंक्तियाँ भाषा का नमूना हैं — **पैशाची**

☞ रैदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, नन्ददास में से 'अष्टछाप' के कवि नहीं हैं — **रैदास**

☞ राधावल्लभी सम्प्रदाय के आचार्य हैं — **गोस्वामी हितहरिवंश**

☞ मधुमालती, अखरावट, आखिरी कलाम एवं पद्मावत में से मलिक मुहम्मद जायसी की रचना नहीं है — **मधुमालती**

☞ नायिका-भेद पर आधारित ग्रन्थ 'रसमंजरी' के रचनाकार हैं — **नन्ददास**

☞ कृपाराम द्वारा रचित नायिका-भेद की सबसे पुरानी पुस्तक है — **हित-तरंगिणी**

☞ 'कविकुल कल्पतरु' के रचनाकार हैं — **चिन्तामणि**

☞ सेनापति, द्विजदेव, आलम तथा ठाकुर में से रीति मुक्त शृंगारी कवि नहीं हैं — **सेनापति**

☞ अनुरागबाग, वैराग्य दिनेश, विश्वनाथ नवरत्न एवं छत्र प्रकाश में से नीति कवि 'दीनदयाल गिरि' की रचना नहीं है — **छत्र प्रकाश**

☞ सरहपा, हेमचन्द्र, शबरपा एवं स्वयंभू में से आठवीं शताब्दी के कवि नहीं हैं — **हेमचन्द्र (12वीं सदी)**

☞ सखी सम्प्रदाय को कहा जाता है — **हरिदास सम्प्रदाय**

☞ 'प्रयोगवाद' शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया है — **नन्ददुलारे वाजपेयी ने**

☞ 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना हुई — **1800 ई. में**

☞ 'देहरि भई विदेस' किस विधा की रचना है — **आत्मकथा (राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित)**

☞ केल्टिक, इतालिक, जर्मनिक तथा सियोयन में से 'भारोपीय परिवार' की भाषा नहीं है — **सियोयन**

☞ मैथिली का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है — **वर्णरत्नाकर (ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचित)**

☞ 'उत्तरायण' महाकाव्य के रचनाकार हैं — **रामकुमार वर्मा**

☞ उड़िया, मराठी, बिहारी तथा बंगला में से आधुनिक आर्य भाषाओं के वर्गीकरण के अनुसार पूर्वी समुदाय की भाषा नहीं है — **मराठी**

☞ 'हिन्दुस्तानी' शब्द यूरोप के लोगों की देन है। कथन है — **ग्रियर्सन का**

☞ बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली तथा बघेली में से पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं आती है — **बघेली (पूर्वी हिन्दी)**

☞ रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, शिवदानसिंह चौहान तथा विजयदेव नारायण साही में से मॉर्क्सवादी आलोचक नहीं हैं — **विजयदेव नारायण साही**

☞ 'काव्यादर्श' ग्रन्थ के रचनाकार हैं — **दण्डी**

☞ आचार्य कुन्तक काव्य-शास्त्र में प्रवर्तक माने जाते हैं? — **वक्रोक्ति सम्प्रदाय के**

☞ हिन्दी में 'लोकजागरण' की अवधारणा है — **रामविलास शर्मा की**

☞ ''भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की
सुधि ब्रज-गांवनि मैं पावन जबै लगीं।'' पंक्तियाँ हैं — **उद्धवशतक की (जगन्नाथ दास रत्नाकर)**

☞ जादुई यथार्थवाद (मैजिक रियल्जिम) शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया — **फ्रेन्ज रोह ने**

☞ 'बौद्धगान ओ दोहा' का सम्पादन किया — **हरप्रसाद शास्त्री ने**

☞ 'दोहा' या 'दूहा' लोकप्रिय छन्द रहा है — **अपभ्रंश भाषा का**

☞ 'शंकर शेष' द्वारा रचित नाटक नहीं है — **कोर्ट मार्शल**

☞ राजेन्द्र यादव, गंगा प्रसाद विमल, कमलेश्वर तथा मोहन राकेश में से 'नई कहानी' आन्दोलन चलाने वाले लेखक नहीं हैं — **गंगा प्रसाद विमल**

☞ 'प्रभा खेतान' की आत्मकथा है — **अन्या से अनन्या**

☞ 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लेखक हैं — **गिरिराज किशोर**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है — **इतिहास तिमिर नाशक (1823-1896 ई.), सच्ची समालोचना (1886 ई.), साकेत : एक अध्ययन (1960 ई.), सीढ़ियों पर धूप (1960 ई.)**

☞ भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है— **चित्रलेखा (1934 ई.), टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1948 ई.), भूले बिसरे चित्र (1959 ई.), सामर्थ्य और सीमा (1962 ई.)**

☞ रघुवीर सहाय की कृतियों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— आत्महत्या के विरुद्ध (1967 ई.), हँसो-हँसो जल्दी हँसो (1975 ई.), लोग भूल गए हैं (1982 ई.), कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989 ई.)**

☞ अज्ञेय के कहानी संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— विपथगा (1937 ई.), परम्परा (1940 ई.), शरणार्थी (1948 ई.), अमरवल्लरी (1955 ई.)**

☞ रामविलास शर्मा की कृतियों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— प्रगति और परम्परा (1948 ई.), भाषा, साहित्य और संस्कृति (1949 ई.) भाषा, युगबोध और कविता (1981 ई.), विराम चिह्न (1985 ई.)**

☞ विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है **— कदम की फूली डाल (1956 ई.), तुम चंदन हम पानी (1957 ई.), तमाल के झरोखे से (1981 ई.), शेफाली झर रही है (1987 ई.)**

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध संग्रह 'रोफाली झर रही है' दिया गया है, जबकि वास्तविक रचना 'शेफाली झर रही है' है।

☞ शरद जोशी के व्यंग्य निबन्धों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (1971 ई.), रहा किनारे बैठ (1972 ई.), तिलस्म (1973 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2000 ई.)**

☞ नेमिचन्द्र जैन की रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है **— अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), रंगदर्शन (1966 ई.), जनांतिक (1981 ई.), तीसरा पाठ (1998 ई.)**

☞ राही मासूम रजा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है **— आधा गाँव (1966 ई.), टोपी शुक्ला (1969 ई.), दिल एक सादा कागज (1973 ई.), असंतोष के दिन (1985 ई.)**

☞ ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— गढ़ कुंढ़ार (1924 ई.) मधुर स्वप्न (1950 ई.), वयं रक्षामः (1955 ई.), कुणाल की आँखें (1967 ई.)**

☞ महिला कथाकारों के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है**— पचपन खम्भे लाल दीवारें (1961 ई.), तत्सम (1983 ई.), दिलो दानिश (1993 ई.), आवाँ (1999 ई.)।**

☞ गीतिनाट्यों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है

— मत्स्य गंधा (1937 ई.), अंधायुग (1955 ई.), एक कंठ विषपायी (1963 ई.), अग्निलीक (1976 ई.)

☞ दलित लेखकों की आत्मकथाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **— जूठन (1997 ई.), तिरस्कृत (2002 ई.), हादसे (2005 ई.), मुर्दहिया (2010 ई.)**

☞ ज्ञानपीठ पाने वाले साहित्यकारों का वर्षों के अनुसार सही अनुक्रम है **— सुमित्रानन्दन पन्त (1968 ई.), रामधारी सिंह 'दिनकर' (1972 ई.), महादेवी वर्मा (1982 ई.), श्री नरेश मेहता (1992 ई.)**

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है। यही कारण है कि यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।

☞ महिला रचनाकारों के कहानी संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है**—यही सच है (1966 ई.), जोड़ बाकी (1981 ई.), एक स्त्री का विदागीत (1983 ई.), बोलने वाली औरत (2000 ई.)**

☞ **स्थापना (A) :** जैसे विश्व में विश्वात्मा की अभिव्यक्ति होती है, वैसे ही नाटक में रस की।

तर्क (R) : क्योंकि नाटक में रस की स्थिति आद्यन्त होती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** छायावाद के सम्बन्ध में मान्यता है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े, तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि छायावादी कविता अन्योक्ति से अधिक नहीं है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मनुष्य की चेतना को अनासक्त बनाती है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** शास्त्रीय सिद्धान्त परिवर्तनशील हैं, उनका युगानुकूल पुनराख्यान होना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि शास्त्रीय सिद्धान्तों का युगानुकूल पुनराख्यान न होने से उनका महत्व बना रहता है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** सर्वभूत को आत्मभूत करके अनुभव करना ही काव्य का चरम लक्ष्य है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्यकार लोकसत्ता को न स्वीकार करके सिर्फ व्यक्ति सत्ता को स्वीकार करता है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं होता।

तर्क (R) : क्योंकि लेन-देन का भाव स्वार्थ की जमीन पर प्रतिष्ठित होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

तर्क (R) : क्योंकि सुरुचि सम्पन्नता मात्र साहित्य तक ही सीमित है।

— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** रचना जीवन का अर्थ विस्तार करती है, तो भावक तथा आलोचक रचना का अर्थ विस्तार करता है।
तर्क (R) : क्योंकि रचना में जीवन का संचित अनुभव निहित होता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** विखण्डनवाद मार्क्सवाद का विस्थापन नहीं है, अपितु उसकी जड़ों तक पहुँचना है।
तर्क (R) : क्योंकि मार्क्सवाद से विखण्डनवाद का जन्म हुआ है।
— (A) सही (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक मनुष्य जाति के सांस्कृतिक इतिहास का आख्यान है।
तर्क (R) : क्योंकि मिथक के बिना इतिहास का लेखन असम्भव है।
— (A) सही (R) गलत है

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		**काव्य संग्रह**
(a) नरेन्द्र वर्मा	–	प्रवासी के गीत
(b) नागार्जुन	–	युगधारा
(c) केदारनाथ अग्रवाल	–	फूल नहीं रंग बोलते हैं
(d) भवानी प्रसाद मिश्र	–	बुनी हुई रस्सी

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्पादक		**पत्रिका**
(a) गणेश शंकर विद्यार्थी	–	प्रताप
(b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	–	समालोचक
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	कविवचनसुधा
(d) महादेवी वर्मा	–	चाँद

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यासकार		**उपन्यास**
(a) संजीव	–	सूत्रधार
(b) बदीउज्जमां	–	एक चूहे की मौत
(c) राही मासूम रजा	–	दिल एक सादा कागज
(d) अमृतराय	–	नागफनी का देश

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचना ग्रन्थ		**आलोचक**
(a) तुलसीदास	–	माताप्रसाद गुप्त
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	–	रामविलास शर्मा
(c) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	–	शिवदान सिंह चौहान
(d) भाषा और संवेदना	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**उपन्यास**
(a) बावनदास	–	मैला आँचल
(b) रंगनाथ	–	रागदरबारी
(c) मंदा	–	इदन्नमम्
(d) नमिता पाण्डे	–	आवाँ

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**काव्य**
(a) यशोदा	–	प्रिय प्रवास
(b) शची	–	विष्णुप्रिया
(c) अश्वत्थामा	–	अन्धायुग
(d) केशकम्बली	–	असाध्य वीणा

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धान्त		**विचारक**
(a) मनोविश्लेषणवाद	–	युंग
(b) अस्तित्ववाद	–	ज्याँ पाल सार्त्र
(c) उत्पत्तिवाद	–	भट्टलोल्लट
(d) अभिव्यक्तिवाद	–	अभिनव गुप्त

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		**कहानीकार**
(a) मवाली	–	मोहन राकेश
(b) पॉल गोमरा का स्कूटर	–	उदय प्रकाश
(c) गुल की बन्नो	–	धर्मवीर भारती
(d) राजा निरबंसिया	–	कमलेश्वर

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्ध		**निबन्धकार**
(a) ठिठुरता हुआ गणतंत्र	–	हरिशंकर परसाई
(b) बसंत आ गया है	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) प्रिया नीलकंठी	–	कुबेरनाथ राय
(d) काव्य में रहस्यवाद	–	रामचन्द्र शुक्ल

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		**कवि**
(a) विषम शिला संकुला पर्वतोभूता गंगा शशितारकहारा अभिद्रुता अतिशय पूता	–	त्रिलोचन
(b) अर्ध विवृत जघनों पर तरुण सत्य के सिर धर लेटी थी वह दामिनी-सी रुचि गौर कलेवर	–	सुमित्रानन्दन पन्त
(c) तुम मुझे प्रेम करो, जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं	–	शमशेर बहादुर सिंह
(d) अनंत विस्तार का अटूट मौन मुझे भयभीत करता है	–	कुँवर नारायण

सम-सामयिक घटना चक्र

दिसम्बर - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'कॉमरेड का कोट' रचना है —**सृंजय की**

☞ 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' के लेखक हैं —**दामोदर शर्मा**

☞ 'श्यामा स्वप्न' के लेखक हैं —**ठाकुर जगन्मोहन सिंह**

☞ 'मेरी तेरी उसकी बात' के लेखक हैं —**यशपाल**

☞ अवधी, ब्रज, बुन्देली तथा कन्नौजी में से पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है —**अवधी**

☞ मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य तथा ओष्ठ्य में से 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान है —**तालव्य**

☞ 'भाषा और समाज' के लेखक हैं —**रामविलास शर्मा**

☞ 'अनुमितिवाद' की अवधारणा है —**शंकुक की**

☞ उत्तर संरचनावाद के मुख्य विचारक हैं —**सास्यूर**

☞ 'अर्धकथानक' रचना है **ब्रज भाषा की**

☞ नागफनी, जूठन, अपनी खबर तथा मुर्दहिया में से दलित आत्मकथा नहीं है —**अपनी खबर**

☞ ''उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं।'' यह पंक्ति है —**कामायनी के लज्जा सर्ग से**

☞ ''सुनिहै कथा कौन निर्गुन की, रचि पचि बात बनावत
सगुन सुमेरु प्रगट देखियत, तुम तृन की ओट दुरावत।''
ये पंक्तियाँ हैं —**सूरदास की**

☞ ''कितना अनुभूतिपूर्ण था वह एक क्षण का आलिंगन?'' कथन है —**ध्रुवस्वामिनी से**

☞ 'आखिरी कलाम' काव्य का प्रतिपाद्य विषय है —**इस्लाम दर्शन**

☞ 'तद्भव' पत्रिका का प्रकाशन स्थल है —**लखनऊ**

☞ 'व्योमकेश दरवेश' के लेखक हैं —**विश्वनाथ त्रिपाठी**

☞ जगदीश गुप्त, सुमन राजे, नागार्जुन तथा शम्भुनाथ सिंह में से अज्ञेय सम्पादित ''चौथा सप्तक'' में समावेश किया गया है —**सुमन राजे का**

☞ 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' है —**यात्रा वृत्तांत**

☞ लेखकों का जन्म के अनुसार सही अनुक्रम है
—**राजा लक्ष्मण सिंह (1826-1896 ई.), बालकृष्ण भट्ट (1844-1914 ई.), प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894 ई.), बालमुकुन्द गुप्त (1932-1967 ई.)**

☞ कृतियों का काल के आधार पर सही अनुक्रम है
—**रसिकप्रिया (1591 ई.), शृंगार मंजरी (1630 ई.), षड्ऋतु वर्णन (1650 ई.), रस रहस्य (1671 ई.)**

☞ मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—**कल्याणी (1939 ई.), संन्यासी (1940 ई.), अजय की डायरी (1960 ई.), अपने अपने अजनबी (1961 ई.)**

☞ प्रकाशन के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है
—**द्रौपदी (1972 ई.), कथा एक कंस की (1976 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)**

☞ प्रकाशन के अनुसार इन पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है
—**हिन्दी प्रदीप (1877 ई.), ब्राह्मण (1883 ई.), चाँद (1922 ई.), हंस (1930 ई.)**

☞ काल के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है-
—**पउमचरिउ (8वीं शती), खुमाण रासो (9वीं शती), बीसलदेव रासो (12वीं शती), चन्दनबाला रास (13वीं शती)**

☞ काल के अनुसार आचार्यों का सही अनुक्रम है
वामन (8वीं शती), भोजराज (11वीं शती), रूय्यक (12वीं शती), विश्वनाथ (14वीं शती)

☞ ग्रंथों का काल के आधार पर सही अनुक्रम है
—**काव्यादर्श (6वीं शती), ध्वन्यालोक (9वीं शती), काव्यप्रकाश (11वीं शती), साहित्य दर्पण (14वीं शती)**

☞ चरण में मात्राओं की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर मात्रिक छंदों का सही अनुक्रम है
—**चौपाई (16), पीयूषवर्ष (19), रोला (24), गीतिका (26)**

☞ प्रकाशन के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—**भाग्यवती (1877 ई.), नदी के द्वीप (1952 ई.), अँधेरे बंद कमरे (1961 ई.), वे दिन (1964 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		सम्पादक
(a) कविवचनसुधा	–	बाबू हरिश्चन्द्र
(b) ब्राह्मण	–	प्रतापनारायण मिश्र
(c) हिन्दी प्रदीप	–	बालकृष्ण भट्ट
(d) विश्वभारती	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		रचनाकार
(a) मैंने स्मृति के दीप जलाए	–	रामनाथ सुमन
(b) यादों की तीर्थयात्रा	–	विष्णु प्रभाकर
(c) वे दिन वे लोग	–	शिवपूजन सहाय
(d) वन तुलसी की गंध	–	फणीश्वरनाथ रेणु

नोट–यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'भावों की तीर्थयात्रा' दिया गया है, जबकि वास्तव में 'यादों की तीर्थयात्रा' है।

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		विधा
(a) एक कंठ विषपायी	–	गीति नाट्य
(b) अन्या से अनन्या	–	आत्मकथा
(c) एक बूँद सहसा उछली	–	यात्रा-वृत्तांत
(d) उत्तरयोगी : श्री अरविंद	–	जीवनी

☞ सही सुमेलित हैं–

कविता		कवि
(a) हरिजन गाथा	–	नागार्जुन
(a) बाघ	–	केदारनाथ सिंह
(a) शिवाजी का पत्र	–	निराला
(a) प्रमथ्यु गाथा	–	धर्मवीर भारती

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		लेखक
(a) मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) नाद सौंदर्य से कविता की आयु बढ़ती है।	–	रामचन्द्र शुक्ल
(c) साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।	–	बालकृष्ण भट्ट
(d) आचरण की सभ्यता का यह देश ही निराला है।	–	सरदार पूर्णसिंह

☞ सही सुमेलित हैं–

निबंध संग्रह		निबंधकार
(a) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	–	विद्यानिवास मिश्र
(b) प्रिया नीलकंठी	–	कुबेरनाथ राय
(c) ठेले पर हिमालय	–	धर्मवीर भारती
(d) आलोक पर्व	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		पंक्ति
(a) अज्ञेय	–	रूपों में एक अरूप सदा खिलता है
(b) निराला	–	बाँधों न नाव इस ठाँव बंधु
(c) पंत	–	मुक्त करो नारी को मानव
(d) शमशेर बहादुर सिंह	–	बात बोलेगी हम नहीं, भेद खोलेगी बात ही

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		कवि
(a) केशव कहि न जाइ का कहिए।	–	तुलसी
(b) अविगत गति कछु कहत न आवै।	–	सूर
(c) राम भगति अनियारे तीर।	–	कबीर
(d) जोरी लाइ रकत कै लेई।	–	जायसी

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		कृति
(a) रस रहस्य	–	कुलपति मिश्र
(b) रससारांश	–	भिखारीदास
(c) कवि कुलकल्पतरु	–	चिंतामणि
(d) ललित ललाम	–	मतिराम

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		भाषा
(a) कवितावली	–	ब्रज
(b) पृथ्वीराज रासो	–	पिंगल
(c) बरवैनायिका भेद	–	अवधी
(d) अमीर खुसरो की मुकरिया	–	खड़ी बोली

☞ **स्थापना (A) :** उत्तर आधुनिकता वृद्धि पूँजीवाद है।

तर्क (R) : इसमें विश्व बाजार से प्रभावित तीसरी दुनिया का उपभोक्तावादी चिन्तन ज्यादा मुखर हुआ है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** अधिकतर मनोवेत्ताओं के मतानुसार, बुद्धिवादी पाठक का रचना के साथ पूर्ण तादात्म्य अथवा साधारणीकरण सहज सम्भव नहीं है।

तर्क (R) : आस्वादन के समय पाठक ''वेदान्तर शून्य'' हो जाता है, अतः मानसिक अन्तराल, के कारण उसका साधारणीकरण हो सकता है।

—(A) गलत (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** वक्रोक्ति स्वतंत्र सम्प्रदाय न होकर आचार्य कुन्तक का एकल मतवाद है।

तर्क (R) : सम्प्रदाय में एकाधिक विचारकों की सहभागिता अनिवार्य होती है। इसे अधिकतर आचार्यों ने अलंकार माना है, सम्प्रदाय नहीं।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** 'रमणीयार्थ प्रतिपादक' प्रत्येक ''शब्द'' काव्य नहीं होता।

तर्क (R) : जब सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में किसी वाक्य में सुगठित हो जाता है, तब वह काव्य का स्तर प्राप्त करता है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** प्रतीकवाद एक प्रकार का काव्यात्मक रहस्यवाद है।

तर्क (R) : इसमें केवल रहस्यपूर्ण और वक्रतापूर्ण सृजन किया जाता है।

—(A) सही (R) गलत है

दिसम्बर - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ 'कुवलयमाला कथा' के रचनाकार हैं **— उद्योतन सूरि**

☞ खुसरो की रचना 'खालिक बारी' वस्तुतः है **— फारसी-हिन्दी शब्दकोश**

☞ विद्यापति की पदावलियों को जीव और परमात्मा के सम्बन्ध का रूपक माना है **— आनन्दकुमार स्वामी ने**

☞ सिन्धी भाषा का विकास माना गया है **— ब्राचड से**

☞ डोगरी, संथाली, बोडो तथा भोजपुरी भाषाओं में से भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में नहीं है **— भोजपुरी**

☞ सबरस के रचनाकार हैं **— मुल्ला वजही**

☞ फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई **— 1800 ई. में**

☞ 'बेकसी का मजार' उपन्यास के लेखक हैं**— प्रतापनारायण श्रीवास्तव**

☞ 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक हैं **— बाबू श्यामसुन्दर दास**

☞ एडलर, फ्रायड, जुंग तथा सार्त्र में से मनोविश्लेषणवाद से जुड़े विचारक नहीं हैं **— सार्त्र**

☞ काव्य गुणों के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं **—वामन**

☞ 'वैदग्धाभंगी भणिति' सूत्र है **—कुन्तक का**

☞ स्वयंभू, घाघ भड्डुरी, गोरखनाथ तथा अद्दहमाण में से हठयोग का प्रभाव पड़ा है **— गोरखनाथ पर**

☞ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा स्थापित सिद्धान्त नहीं है**— विसंगति बोध**

☞ समय संकलन, स्थान संकलन, प्रभाव संकलन तथा कार्य संकलन में से संकलन-त्रय में गणना नहीं की जाती है **— प्रभाव संकलन की**

☞ 'हिन्दी जाति की अवधारणा' के पुरस्कर्ता हैं **— रामविलास शर्मा**

☞ 'भाषा और संवेदना' के लेखक हैं **— रामस्वरूप चतुर्वेदी**

☞ 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास के रचनाकार हैं **— बालकृष्ण भट्ट**

☞ 'अंगद का पाँव' के लेखक हैं **— श्रीलाल शुक्ल**

☞ 'कालीचरन' पात्र है **— मैला आँचल उपन्यास का**

☞ हिन्दी की महिला कथाकार नहीं हैं **— महाश्वेता देवी**

☞ तुलसीदास की रचना में संत-महंतों के लक्षण वर्णित हैं **— वैराग्य संदीपनी में**

☞ दृष्टकूट पदों की रचना की है **— सूरदास ने (साहित्य लहरी में)**

☞ 'सुखसागर' के रचनाकार हैं **—मुंशी सदासुखलाल 'नियाज'**

☞ 'बालबोधिनी' मासिक पत्रिका के सम्पादक थे **— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

☞ 'जयवर्द्धमान' नाटक के लेखक हैं **— डॉ. रामकुमार वर्मा**

☞ 'मुकुल' नामक कविता संग्रह के रचनाकार हैं**— सुभद्राकुमारी चौहान**

☞ 'चक्कर क्लब' के रचनाकार हैं **— यशपाल**

☞ 'एन्टन चैखव : एक इंटरव्यू' रचना है **— राजेन्द्र यादव की**

नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'चेखव : एक इंटरव्यू' दिया है जबकि 'एन्टन चैखव : एक इंटरव्यू' होना चाहिए।

☞ 'एही रूप सकती औ सीऊ।
एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ।।
काव्य पंक्ति है **— मंझन की**

नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का कोई भी विकल्प सही नहीं है। यही कारण है कि यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।

☞ ''जसोदा! कहा कहौं हौं बात?
तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहिं जात।।''
काव्य पंक्तियाँ हैं **— चतुर्भुजदास की**

☞ ''यह अभिनव मानव प्रजा सृष्टि।
द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि।''
काव्य पंक्तियाँ हैं **— जयशंकर प्रसाद की**

☞ कमलेश्वर रचित कहानी नहीं है **— एक और जिन्दगी (मोहन राकेश)**

☞ 'मित्र संवाद' पत्र साहित्य लिखे गये पत्रों का संग्रह है **— रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के बीच**

☞ वृन्दावनलाल वर्मा की कृति है **— भुवन विक्रम**

☞ जीवनीपरक उपन्यास नहीं है **— भूले बिसरे चित्र**

☞ इरावती, मंगलसूत्र, चोटी की पकड़ तथा रत्ना की बात में से अधूरा उपन्यास नहीं है **—रत्ना की बात**

☞ 'लगता नहीं है दिल मेरा' आत्मकथा की लेखिका हैं **— कृष्णा अग्निहोत्री**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है **— तुम चन्दन हम पानी (1957 ई.), मैंने सिल पहुँचाई (1966 ई.), तमाल के झरोखे से (1981 ई.), शिरीष की याद आई (1995 ई.)।**

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर अज्ञेय के निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है **— त्रिशंकु (1945 ई.), आत्मनेपद (1960 ई.), अन्तरा (1975 ई.), धार और किनारे (1982 ई.)**

☞ प्रकाशन के अनुसार इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का सही अनुक्रम है **— निर्वासित (1946 ई.), जिप्सी (1952 ई.), जहाज का पंछी (1954 ई.), कवि की प्रेयसी (1976 ई.)**

☞ प्रकाशन के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है

— अनामिका (1923 ई.), पल्लव (1926 ई.), लहर (1933 ई.), नीरजा (1935 ई.)

☞ प्रकाशन के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है

— मादा कैक्टस (1959 ई.), सूखा सरोवर (1960 ई.), मिस्टर अभिमन्यु (1971 ई.), कर्फ्यू (1972 ई.)

☞ प्रकाशन की दृष्टि से रामविलास शर्मा के ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— आस्था और सौन्दर्य (1961 ई.), भारत की भाषा समस्या (1965 ई.), निराला की साहित्य साधना भाग-1 (1969 ई.), नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से नाट्य रचनाओं का सही अनुक्रम है

— नहुष (1857 ई.), अन्धेर नगरी (1881 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.), रक्षाबंधन (1934 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से एकांकियों का सही अनुक्रम है

— एक घूँट, कारवाँ, एकादशी, नदी प्यासी थी

☞ प्रकाशन की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— बेघर (1971 ई.), जिन्दगीनामा (1979 ई.), आवाँ (1999 ई.), कुइयाँजान (2005 ई.)

☞ प्रकाशन के अनुसार वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— विराटा की पद्‌मिनी (1936 ई.), कचनार (1948 ई.), मृगनयनी (1950 ई.), रामगढ़ की रानी (1961 ई.)

☞ प्रकाशन की दृष्टि से पत्र-पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है

— जागरण (1932 ई.), प्रतीक (1947 ई.), नयी कविता (1954 ई.), कल्पना (1992 ई.)

☞ प्रकाशन की दृष्टि से प्रेमचन्द की कहानियों का सही अनुक्रम है

— रानी सारंगा (1910 ई.), नमक का दारोगा (1913 ई.), शतरंज के खिलाड़ी (1925 ई.), सद्‌गति (1931 ई.)

☞ प्रकाशन के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है

— मेरी तिब्बत यात्रा (1937 ई.), कलकत्ता से पेकिंग (1955 ई.), चीड़ों पर चाँदनी (1964 ई.), यात्रा चक्र (1995 ई.)

☞ प्रकाशन के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है

— गदल (1955), डिप्टी कलक्टरी (1956 ई.), वापसी (1961 ई.), फैंस के इधर-उधर (1968 ई.)

☞ निराला के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के आधार पर सही अनुक्रम है **— प्रबन्ध पद्‌म (1934 ई.), प्रबन्ध प्रतिमा (1940 ई.), चाबुक (1949 ई.), चयन (1957 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		**कृति**
(a) सत्यनारायण 'कविरत्न'	–	भ्रमरदूत
(b) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	–	गंगा लहरी
(c) रामचरित उपाध्याय	–	देवदूत
(d) वियोगी हरि	–	वीर सतसई

नोट-वीर सतसई कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की भी रचना है।

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		**पात्र**
(a) अन्धेर नगरी	–	नारायण दास
(b) कोर्ट मार्शल	–	रामचन्दर
(c) द्रौपदी	–	सुरेखा
(d) कौमुदी महोत्सव	–	चाणक्य

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		**रचनाकार**
(a) भरत मिलाप	–	ईश्वरदास
(b) ध्यानमंजरी	–	अग्रदास
(c) रामायण महानाटक	–	प्राणचन्द चौहान
(d) अवध-विलास	–	लालदास

☞ सही सुमेलित हैं–

रचनाकार		**कृति**
(a) नन्ददास	–	रूपमंजरी
(b) श्रीभट्ट	–	युगलशतक
(c) रसखान	–	प्रेम वाटिका
(d) हरिराम व्यास	–	रागमाला

☞ सही सुमेलित हैं–

उक्ति		**आचार्य**
(a) शब्दार्थ शरीरं ताबत् काव्यम्	–	दण्डी
(b) काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात्	–	वामन
(c) मुख्यार्थहतिर्दोष :	–	मम्मट
(d) करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्य निबन्धनम्	–	भामह

☞ सही सुमेलित हैं–

उदाहरण		**अलंकार**
(a) दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति। परति गाँठ दुरजन हिए, दई नई यह रीति।	–	असंगति
(b) चंचल अंचल सा नीलाम्बर	–	उपमा

(c) खिला हो ज्यों बिजली का फूल — उत्प्रेक्षा
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

(d) अम्बर-पनघट में डुबो रही — रूपक
तारा-घट ऊषा-नागरी

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		कवि
(a) कितना अकेला हूँ मैं, इस समाज में	–	रघुवीर सहाय
(b) पिस गया वह भीतरी औ बाहरी दो कठिन पाटों बीच	–	मुक्तिबोध
(c) वे पत्तर जोड़ रहे हैं, तुम सपने जोड़ रहे हो।	–	नागार्जुन
(d) मैं ही वसंत का अग्रदूत	–	निराला

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		जनपदीय भाषा
(a) जगदीश गुप्त	–	ब्रज
(b) बंशीधर शुक्ल	–	अवधी
(c) ईसुरी	–	बुंदेली
(d) सूर्यमल्ल मिश्रण	–	राजस्थानी

☞ सही सुमेलित हैं–

रचनाकार		सम्बद्ध जनसंचार माध्यम
(a) उदयशंकर भट्ट	–	फिल्म
(b) इलाचन्द्र जोशी	–	रेडियो
(c) मनोहरश्याम जोशी	–	दूरदर्शन
(d) अज्ञेय	–	समाचार-पत्रकारिता

सितम्बर - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ अपभ्रंश को 'प्राकृताभास' हिन्दी कहा है **— रामचन्द्र शुक्ल ने**

☞ 'हिन्दी काव्यधारा' के सम्पादक हैं **—राहुल सांकृत्यायन**

☞ 'हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा। धीरे धरिबा पाँव।' पंक्ति है **—गोरखनाथ की**

☞ 'अस्त्रीय जनम कांइ दीधउ महेस।
अवर जनम थारइ घणा रे नरेश'
पंक्ति का सम्बन्ध है **—बीसलदेव रासो से**

☞ 'कबीर की उक्तियों में कहीं–कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है।' कथन है **—रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'जेइ मुख देखा तेइ हँसा सुनि तेहि आयउ आँसु'
पंक्ति हैं **—जायसी के बारे में**

☞ 'कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयो' कथन है **—नाभादास का**

☞ 'अष्टछाप' के संस्थापक हैं **—विट्ठलनाथ**

☞ 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,
बलि बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी'
पंक्ति सम्बद्ध है **— तुलसी की कृति कवितावली से**

☞ जहाँगीर–जस–चन्द्रिका रचना है **—केशवदास की**

☞ 'ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो' कथन है **— रीतिकाल के कवि भिखारीदास का**

☞ 'देव की ध्वनि संवेदनशीलता समूचे रीतिकाल में अप्रतिम है'-कथन है **—रामस्वरूप चतुर्वेदी का**

☞ 'रस्मोरिवाज भाषा का दुनिया से उठ गया'
हिन्दी के बारे में कथन है **—मुंशी सदासुखलाल का**

☞ भारतेन्दु द्वारा अंग्रेजी से अनूदित नाटक है **—दुर्लभ बन्धु**

☞ 'उपन्यास' मासिक पुस्तक का प्रकाशन शुरू हुआ **—सन् 1901 में**

☞ 'सम्पत्तिशास्त्र की भूमिका' लेख छपा था **—सरस्वती पत्रिका में**

☞ 'भारत भारती' लिखने में प्रेरणा थी **— उर्दू की ग्रन्थ मुसद्दसे हाली की**

☞ 'छायावाद' स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है–इसकी स्थापना की है **—नगेन्द्र ने**

☞ 'प्रेम का पयोधि तो उमड़ता है। सदा ही निस्सीम भू पर' यह पंक्ति है **— छायावादी कवि निराला की**

☞ 'प्राचीन भारत के भाषा परिवार और हिन्दी 'आलोचक ग्रन्थ के लेखक हैं **—रामविलास शर्मा**

☞ नागार्जुन के उपन्यासों का सही कालानुक्रम है
—रतिनाथ की चाची (1948 ई.), बलचनमा (1952 ई.), वरुण के बेटे (1957 ई.), कुम्भीपाक (1960 ई.)

☞ जीवनकाल की दृष्टि से नाटककारों का सही क्रम है
—भुवनेश्वर (1910-1957 ई.), मोहन राकेश (1925 ई.-1972 ई.), सुरेन्द्र वर्मा (1941 ई.), मीराकांत (1958 ई.)

☞ हिन्दी के मार्क्सवादी आलोचकों का सही कालानुक्रम है
—शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, अमृतराय, नामवर सिंह

☞ आत्मकथाओं का सही कालानुक्रम है
—लगता नहीं है दिल मेरा (1997 ई.), कस्तूरी कुण्डल बसै (2002 ई.), हादसे (2005 ई.), शिकंजे का दर्द (2012 ई.)

☞ यात्रा-वृत्तांतों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है **—मेरी तिब्बत यात्रा (1934 ई.), पैरों में पंख बाँधकर (1952 ई.), एक बूँद सहसा उछली (1960 ई.), चीड़ों पर चाँदनी (1988 ई.)**

☞ संस्मरण-कृतियों का सही कालानुक्रम है

—लौट आ ओ धार (1965 ई.), हम हशमत (1977 ई.), काशी का अस्सी (2003 ई.), तुम्हारा परसाई (2004 ई.)

☞ उपन्यासों का सही कालानुक्रम है

—परीक्षागुरु, नूतन ब्रह्मचारी, चन्द्रकान्ता, निस्सहाय हिन्दू

☞ संस्कृत आचार्यों का सही कालानुक्रम है **—दण्डी (600 ई.), मम्मट (1100 ई.), जयदेव (12वीं शताब्दी), विश्वनाथ (14वीं शताब्दी)**

☞ हिन्दी काव्यशास्त्रीय कृतियों का सही अनुक्रम है

—काव्यविवेक (सं. 1666), भाषाभूषण (1683-1738 सं.), रसराज (1696-1773 सं.), काव्य रसायन (सं. 1760)

☞ सही सुमेलित हैं–

अलंकार		**वर्ग**
(a) उत्प्रेक्षा	–	सादृश्यमूलक
(b) वक्रोक्ति	–	गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक
(c) विशेषोक्ति	–	विरोध गर्भ
(d) श्लेष	–	साम्यमूलक

नोट— प्रश्न औपम्यगर्भ की जगह साम्यमूलक होना चाहिए।

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्पादक		**पत्रिका**
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	बालाबोधिनी
(b) धर्मवीर भारती	–	धर्मयुग
(c) प्रतापनारायण मिश्र	–	ब्राह्मण
(d) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	–	आनन्द कादम्बिनी

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यकृति		**रचनाकार**
(a) भूरी भूरी खाक धूल	–	मुक्तिबोध
(b) गंगातट	–	ज्ञानेन्द्रपति
(c) स्त्री मेरे भीतर	–	पवनकरण
(d) इस पौरुषपूर्ण समय में	–	कात्यायनी

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचनात्मक पुस्तक		**लेखक**
(a) कविता के नये प्रतिमान	–	नामवर सिंह
(b) आलोचना के मान	–	शिवदान सिंह चौहान
(c) नई कविता के प्रतिमान	–	लक्ष्मीकान्त वर्मा
(d) साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य	–	रघुवंश

☞ सही सुमेलित हैं–

इतिहास ग्रन्थ		**लेखक**
(a) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	–	बच्चन सिंह
(b) हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	–	रामकुमार वर्मा
(d) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	–	सुमन राजे

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्ध संग्रह		**लेखक**
(a) त्रिशंकु	–	अज्ञेय
(b) ठेले पर हिमालय	–	धर्मवीर भारती
(c) कस्तूरी मृग	–	शिवप्रसाद सिंह
(d) शब्द और स्मृति	–	निर्मल वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटककार		**नाट्यकृति**
(a) मीराकान्त	–	ईहामृग
(b) कुसुम कुमार	–	दिल्ली ऊँचा सुनती है
(c) मृणाल पाण्डेय	–	जो राम रचि राखा
(d) शान्ति महरोत्रा	–	ठहरा हुआ पानी

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यशास्त्री		**कृति**
(a) आई.ए.रिचर्ड्स	–	द फिलॉसफी ऑफ रेटरिक
(b) विलियम एम्पसन	–	सेवन टाइप्स ऑफ एंबिगुइटी
(c) जॉन क्रो रैंसम	–	गॉड विदाउट थंडर
(d) एलेन टेट	–	ऑन द लिमिट्स ऑफ पोएट्री

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यशास्त्री		**कृति**
(a) राजशेखर	–	काव्य मीमांसा
(b) अभिनव गुप्त	–	ध्वन्यालोकलोचन
(c) भोजराज	–	सरस्वती कण्ठाभरण
(d) रामचन्द्र गुणचन्द्र	–	नाट्यदर्पण

सितम्बर - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ 'आल्हा' गाये जाते हैं **—वर्षा ऋतु में**

☞ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना है **—प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से**

☞ नाट्य वृत्तियों की संख्या है **—चार**

☞ रस निष्पत्ति के संदर्भ में 'अनुमितिवाद' की स्थापना की **—शंकुक ने**

☞ 'साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है।' यह मान्यता है **—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की**

☞ 'रणमल्ल छंद' नामक काव्य के रचनाकार हैं **—श्रीधर**

☞ 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' यह उक्ति है **—तुलसीदास की**

☞ जयदेव से प्रभावित विद्यापति की रचना है **—पदावली**

☞ 'उज्ज्वलनीलमणि' के रचयिता हैं **—रूप गोस्वामी**

☞ आचार्य भरत के अनुसार नाट्य मंच के प्रकार हैं **—तीन**

☞ मीराबाई की उपासना थी **—माधुर्यभाव की**

☞ सुन्दरदास, मलूकदास, कबीरदास तथा कुंभनदास में से ज्ञानाश्रयी शाखा का कवि नहीं है **—कुंभनदास**

☞ मधुमालती नायिका है **—मंझन द्वारा रचित काव्य की**

☞ भ्रमरगीत प्रसंग की कथा का वर्णन है भागवत के **—दशम् स्कन्ध में**

☞ ''कर्म जोग पुनि ज्ञान उपासन सब ही भ्रम भरमायो।
श्री बल्लभ गुरु तत्व सुनायो लीला भेद बतायो।।''
काव्योक्ति है **—सूरदास की**

☞ 'रामाज्ञा प्रश्नावली' रचना है **—तुलसीदास की**

☞ मलिक मुहम्मद जायसी ने 'आखिरी कलाम' में प्रशंसा की है **—बादशाह बाबर की**

☞ सूरदास की रचना में अलंकारों और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले कूट पद हैं **—साहित्यलहरी में**

☞ रसखान शिष्य थे **—गोस्वामी विट्ठलनाथ के**

☞ 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' काव्य लक्षण के प्रणेता हैं **—भामह**

☞ बिहारीलाल आश्रित कवि थे **—महाराज जयसिंह के**

☞ 'अभिधा उत्तम काव्य है; मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।।''
उक्ति में अभिधा, लक्षणा आदि शब्द शक्तियों का निरूपण किया है **—कवि देव ने**

☞ ''अमिय, हलाहल, मदभरे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इकबार।।''
दोहा वर्णित है **—अंग दर्पण में**

☞ घनानंद थे **—वैष्णव सम्प्रदाय के निम्बार्क सम्प्रदाय शाखा से**

☞ ''अपनी कहानी का आरम्भ ही उन्होंने इस ढंग से किया है जैसे लखनऊ के भाँड घोड़ा कुदाते हुए महफिल में आते हैं।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है **—इंशा अल्ला खाँ के सन्दर्भ में**

☞ 'सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के' यह पंक्ति है **—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बारे में**

☞ कृष्णायन रचना है **—महाकाव्य विधा की**

☞ लाला सीताराम, हजारी प्रसाद द्विवेदी, मोहन राकेश तथा नागार्जुन में से कालिदास के मेघदूत का अनुवादक नहीं है **—मोहन राकेश**

☞ संयोगिता स्वयंवर, महाराणा प्रताप, तप्ता संवरण तथा रणधीर प्रेममोहिनी में से श्रीनिवासदास का नाटक नहीं है **—महाराणा प्रताप**

☞ 'भाग्यवती' उपन्यास है **—सामाजिक**

☞ खड़ी बोली में लिखित हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है **—प्रियप्रवास**

☞ 'भारत भारती' का रचनाकाल है **—सन् 1911**

नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर सन् 1912 दिया है, जो इसका प्रकाशन काल है।

☞ 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद' निबन्ध है **—रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती।'
काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं **—जयशंकर प्रसाद**

☞ रंगदर्शन के लेखक हैं **—नेमिचन्द जैन**

☞ 'हिन्दी जाति की अवधारणा' के प्रवर्तक हैं **—रामविलास शर्मा**

☞ उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रेमचन्द, विष्णु प्रभाकर तथा जैनेन्द्र में से गाँधीवादी साहित्यकार नहीं हैं **—उपेन्द्रनाथ अश्क**

☞ कुन्तक ने वक्रोक्ति के भेद माने हैं **—छह**

☞ प्रतीकवादी आन्दोलन का उदय हुआ है **—फ्रांस में**

☞ जीवनकाल के क्रमानुसार कवियों का सही अनुक्रम है **—जगन्नाथदास रत्नाकर (1866-1932 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1960 ई.), जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (1897-1962 ई.)**

☞ जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का प्रकाशन काल के क्रम से सही अनुक्रम है **—परख (1929 ई.), सुनीता (1935 ई.), कल्याणी (1939 ई.) दशार्क (1985 ई.)**

☞ जीवनकाल के क्रम से संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्यों का सही अनुक्रम है **—भरतमुनि (200 ई.पू.), भट्ट लोल्लट (8 वीं शताब्दी), शंकुक (850 ई.), भट्टनायक (900-1000 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आंचलिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है **—देहाती दुनिया (1925 ई.), बलचनमा (1952 ई.), मैला आँचल (1954 ई.), सागर लहरें और मनुष्य (1955 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्र-संग्रहों का सही अनुक्रम है **—चिट्ठी-पत्री (1962 ई.), फाइल प्रोफाइल (1970 ई.), दो सौ पत्र बच्चन के नाम (1971 ई.), प्रसाद के नाम पत्र (1976 ई.)**

☞ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **—जूही की कली (1916 ई.), अनामिका (1923 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), अपरा (1946 ई.)**

☞ उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार सही क्रम है **—सूरज का सातवाँ घोड़ा (1952 ई.), बहती गंगा (1952 ई.), सोया हुआ जल (1955 ई.), कंदील और कुहासे (1969 ई.)**

नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में विकल्प (A) सही बताया गया है, जबकि विकल्प (D) अर्थात् उपर्युक्त क्रम सही है।

☞ समाचार-पत्रों का प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार सही क्रम है **—उदंत मार्तंड (30 मई, 1826 ई.), प्रजामित्र (1834 ई.), प्रजा हितैषी (1855 ई.) आगरा अखबार (1870 ई.)**

☞ कुबेरनाथ राय के निबन्धों का प्रकाशन काल के क्रमानुसार सही अनुक्रम है **—रस आखेटक (1971 ई.), गंध मादन (1972 ई.), निषाद बांसुरी (1974 ई.), आगम की नाव (2008 ई.)**

☞ जीवनकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है **—महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई.), बाल मुकुंद गुप्त (1865-1907 ई.), सरदार पूर्ण सिंह (1881-1931 ई.), रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.)**

☞ हरिशंकर परसाई के निबन्ध-संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **—पगडंडियों का जमाना (1966 ई.), सदाचार का ताबीज (1967 ई.), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970 ई.), सुनो भाई साधो (1983 ई.)**

☞ निर्मल वर्मा के निबन्ध संकलनों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है **—शब्द और स्मृति (1976 ई.), कला का जोखिम (1981 ई.), शताब्दी के ढलते वर्षों में (1995 ई.), आदि अंत और प्रारम्भ (2001 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		**कविता**
(a) सुभद्राकुमारी चौहान	–	वीरों का कैसा हो वसन्त
(b) महादेवी वर्मा	–	रश्मि
(c) माखनलाल चतुर्वेदी	–	कैदी और कोकिला
(d) भगवतीचरण वर्मा	–	भैंसा गाड़ी

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		**सम्पादक**
(a) समालोचक	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(b) इंदु	–	अम्बिका प्रसाद गुप्त
(c) अभ्युदय	–	मदन मोहन मालवीय
(d) प्रताप	–	गणेश शंकर विद्यार्थी

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यासकार		**उपन्यास**
(a) मन्नू भण्डारी	–	महाभोज
(b) कृष्णा सोबती	–	सूरजमुखी अँधेरे में
(c) मृदुला गर्ग	–	चित्तकोबरा
(d) प्रभा खेतान	–	छिन्नमस्ता

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचना ग्रन्थ		**आलोचक**
(a) साहित्यालोचन	–	श्यामसुन्दर दास
(b) साहित्य समालोचना	–	रामकुमार वर्मा
(c) निराला की साहित्य साधना	–	रामविलास शर्मा
(d) आलोचनादर्श	–	रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**उपन्यास**
(a) जालपा	–	गबन
(b) वर्षा	–	मुझे चाँद चाहिए
(c) मृणालिनी	–	त्यागपत्र
(d) सेल्मा	–	अपने-अपने अजनबी

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		**कहानी**
(a) जैनेन्द्र कुमार	–	ग्रामोफोन का रिकॉर्ड
(b) अज्ञेय	–	रोज
(c) भीष्म साहनी	–	चीफ की दावत
(d) मोहन राकेश	–	मिसपाल

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'ग्रामोफोन' दिया है, जो कि गलत है 'ग्रामोफोन' कहानी हरि भटनागर द्वारा रचित है। जैनेन्द्र की कहानी 'ग्रामोफोन का रिकॉर्ड' है।

☞ सही सुमेलित हैं–

चरित्र		काव्य
(a) मानव	–	कामायनी
(b) पुरुरवा	–	उर्वशी
(c) युयुत्सु	–	अन्धायुग
(d) राधा	–	प्रियप्रवास

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धान्त		विचारक
(a) उदात्तत्व	–	लोंजाइनस
(b) संरचनावाद	–	सस्यूर
(c) विखण्डनवाद	–	जाक देरिदा
(d) निर्वैयक्तिकता	–	इलियट

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्ध		निबन्धकार
(a) कछुआ धर्म	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(b) आचरण की सभ्यता	–	सरदार पूर्ण सिंह
(c) तुम चन्दन हम पानी	–	विद्यानिवास मिश्र
(d) भारतीय संस्कृति की देन	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

रस		स्थायीभाव
(a) रौद्र	–	क्रोध
(b) वीभत्स	–	जुगुप्सा
(c) अद्‌भुत	–	विस्मय
(d) शान्त	–	निर्वेद

जून - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'वट पीपल' के लेखक हैं **— रामधारी सिंह दिनकर**

☞ 'समान्तर कहानी' के पुरस्कर्ता हैं **— कमलेश्वर**

☞ 'शेष यात्रा' की लेखिका हैं **— उषा प्रियंवदा**

☞ हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहासकार हैं **— गार्सा द तासी**

☞ 'कुमारपाल प्रतिबोध' के रचनाकार हैं **— सोमप्रभु सूरि**

☞ अजय की डायरी, एक साहित्यिक की डायरी, जयवर्धन तथा पहला गिरमिटिया रचनाओं में से उपन्यास नहीं है
— एक साहित्यिक की डायरी (निबन्ध-संग्रह, मुक्तिबोध)

☞ शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य तथा मध्वाचार्य में से वैष्णव भक्ति के आचार्य नहीं हैं **— शंकराचार्य**

☞ रामनारायण मिश्र, श्यामसुन्दर दास, रामचन्द्र शुक्ल तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह में से नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक नहीं हैं
— रामचन्द्र शुक्ल

☞ जगनिक की रचना कही जाती है **—परमाल रासो या आल्हखण्ड**
नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में परमाल रासो तथा आल्हखण्ड दोनों दिया गया है, जबकि परमाल रासो का ही दूसरा नाम आल्हखण्ड है। अतः यूजीसी ने विकल्प में दो उत्तर (b & d) सही माने हैं।

☞ 'झोपड़ी से राजभवन तक' के लेखक हैं **— माताप्रसाद**

☞ भारत भूषण अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे तथा गिरिजा कुमार माथुर में से 'तार सप्तक' के कवि नहीं हैं
— भवानी प्रसाद मिश्र (द्वितीय तार सप्तक)

☞ 'एक हथौड़ा वाला घर में और हुआ' पंक्ति है
— केदारनाथ अग्रवाल की

☞ प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले का धन्धा' कहा है**— नन्ददुलारे वाजपेयी ने**

☞ 'अगले जनम मोहि बिटिया न कीजो' की लेखिका हैं
— उर्दू लेखिका कुर्तल-एन-हैदर
नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई विकल्प सही नहीं है। अतः इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये गये हैं।

☞ 'अग्निपथ के पार चन्दन-चाँदनी का देश' पंक्ति है
— महादेवी वर्मा ('दीपमन' शीर्षक से)

☞ 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे **— बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1881 में मिर्जापुर से प्रकाशित)**

☞ 'गोबर गणेश' उपन्यास के लेखक हैं **— रमेशचन्द्र शाह**

☞ 'फादर कामिल बुल्के' को हिन्दी साहित्य में महत्व दिए जाने का कारण है
— कोश निर्माण, रामकथा लेखन तथा तुलसी साहित्य के विशेषज्ञ

☞ 'आत्माराम की टें-टें' निबन्ध में आत्माराम के प्रतीक हैं
— बालमुकुन्द गुप्त

☞ प्रकाशन के अनुसार इन आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
— हिन्दी नवरत्न (1910 ई.), प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष (1954 ई.), छायावाद (1955 ई.)

☞ जन्म के आधार पर निबन्धकारों का सही अनुक्रम है
— डॉ. सम्पूर्णानन्द (1891-1969 ई.), रामवृक्ष बेनीपुरी (1899-1968 ई.), वासुदेवशरण अग्रवाल (1904-1966 ई.), भगवतशरण उपाध्याय (1910-1982 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— रुकोगी नहीं राधिका (1967 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), सूरजमुखी अँधेरे के (1972 ई.), चित्तकोबरा (1975 ई.)

☞ प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है

— राज्यश्री (1915 ई.), विशाख (1921 ई.), अजातशत्रु (1922 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.)

☞ जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— सुनीता (1934 ई.), त्यागपत्र (1937 ई.), कल्याणी (1940 ई.), सुखदा (1952 ई.)

☞ काल के अनुसार आचार्यों का सही अनुक्रम है

— भामह (छठी शताब्दी), दण्डी (सातवीं शताब्दी), आनन्दवर्धन (नवीं शताब्दी के मध्य), अभिनव गुप्त (दसवीं शताब्दी के अन्त एवं ग्यारहवीं शताब्दी के शुरू में)

☞ चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर वार्णिक छन्दों का सही अनुक्रम है **— इन्द्रवज्रा (11 वर्ण), वसन्ततिलका (14 वर्ण), मन्दाक्रान्ता (17 वर्ण), शार्दूलविक्रीडित (19 वर्ण)**

☞ आदिकाल के रचनाकारों का सही अनुक्रम है **— सरहपा (769 ई.), गोरखनाथ (845 ई.), अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), विद्यापति (1350-1374 ई.)**

☞ स्थापना के आधार पर हिन्दी संस्थानों का सही अनुक्रम है

— काशी नागरी प्रचारिणी सभा (1893 ई.), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (1910 ई.), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा (1936 ई.),साहित्य अकादमी (1954 ई.)

☞ जन्म के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है

— कुंभनदास (1468-1582 ई.), सूरदास (1478 -1563 ई.), परमानंद दास (1493-1583 ई.), कृष्णदास (1495 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं–

भाषा रूप		**प्रयोक्ता**
(a) दक्खिनी	–	कुतुबशाह
(b) कोसली	–	दामोदर पंडित
(c) ब्रजबुलि	–	शंकर देव अवतरे
(d) संधाभाषा	–	सरहदपाद

☞ सही सुमेलित हैं–

इतिहास ग्रन्थ		**लेखक**
(a) हिन्दी साहित्य का अतीत	–	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(b) हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी
(c) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	–	गणपति चन्द्र गुप्त
(d) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	–	रामकुमार वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**कवि**
(a) बीजक	–	कबीर
(b) अखरावट	–	जायसी
(c) भक्तमाल	–	नाभादास
(d) श्याम सगाई	–	नन्ददास

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		**कवि**
(a) छत्रसाल दशक	–	भूषण
(b) कवि कुलकल्पतरु	–	चिन्तामणि
(c) भाव विलास	–	देव
(d) इश्कलता	–	घनानन्द

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य छन्द		**प्रयोक्ता**
(a) सॉनेट	–	त्रिलोचन
(b) हाइकू	–	अज्ञेय
(c) सवैया	–	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(d) कवित्त	–	अयेध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य पंक्ति		**कवि**
(a) चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना	–	महादेवी वर्मा
(b) रूपोद्यान प्रफुल्लप्राय कलिका राकेन्दु बिम्बानना	–	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) वेदने! तू भी भली बनी	–	मैथिलीशरण गुप्त
(d) सुरम्य रम्ये, रस राशि रंजिते	–	महावीर प्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		**नाटककार**
(a) बन्धन अपने-अपने	–	शंकर शेष
(b) सिन्दूर की होली	–	लक्ष्मी नारायण मिश्र
(c) अशोक का शोक	–	रामकुमार वर्मा
(d) नायक, खलनायक, विदूषक	–	सुरेन्द्र वर्मा

नोट—यूजीसी के इस प्रश्न में लक्ष्मीनारायण लाल दिया है, जो कि उपर्युक्त में से इनकी कोई रचना नहीं है, जबकि सिन्दूर की होली, लक्ष्मीनारायण मिश्र की रचना है। नायक, खलनायक, विदूषक-मन्नू भण्डारी का कहानी संग्रह भी है।

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		कहानीकार
(a) लाल पान की बेगम	–	फणीश्वरनाथ रेणु
(b) एक औरत की जिन्दगी	–	रामदरश मिश्र
(c) लन्दन की एक रात	–	निर्मल वर्मा
(d) शवयात्रा	–	श्रीकान्त वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		लेखक
(a) भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है।	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) श्रद्धेय बनने का मतलब है 'नान परसन' अव्यक्ति हो जाना	–	हरिशंकर परसाई
(c) काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है	–	जयशंकर प्रसाद
(d) पंडिताई भी एक बोझ है	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

अवधारणा		संस्थापक
(a) सहृदय	–	आनन्द वर्धन
(b) साधारणीकरण	–	भट्टनायक
(c) मधुमती भूमिका	–	केशवप्रसाद मिश्र
(d) अर्थ की लय	–	जगदीश गुप्त

☞ **स्थापना (A) :** उपमान को अप्रस्तुत विधान मानना हिन्दी का प्राचीन सिद्धान्त है।

तर्क (R) : यह स्थापना आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की है अर्थात् यह नवीन सिद्धान्त है।

– (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** अस्तित्ववाद विज्ञान विरोधी दर्शन है।

तर्क (R) : यह 'चयन' की अगाध छूट देता है और अराजकता, अनास्था तथा अतिस्वच्छन्दता को प्रश्रय देता है विज्ञान का भी यह अंध समर्थन नहीं करता है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का सर्वस्व है 'काव्यालंकार'। इसके रहते अन्य किसी की आवश्यकता नहीं।

तर्क (R) : काव्यालंकार में 'रसध्वनि', 'रसवदलंकार' आदि समस्त सम्प्रदायों का स्वत: सन्निवेश हो जाता है, वही सच्चे अर्थों में शोभाकारक धर्म है।

– (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** बिम्ब का मुख्य ध्येय होता है, वर्ण्य विषय का ऐन्द्रिय प्रतिबिम्बन।

तर्क (R) : बिम्ब-विधायक रचनाकार ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अपने भावों का सम्मूर्तन करके उनका सम्प्रेषण करता है और अपने बिम्ब से पाठक को जोड़ता है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** 'स्वच्छन्दवाद' न छायावाद है, न रहस्यवाद।

तर्क (R) : यह शास्त्रीय जड़ता की प्रतिक्रिया से उत्पन्न वैयक्तिक कल्पनातिरेक और निजी रहस्यानुभूति की उपज है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार, पूर्वी हिन्दी आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में आती है **–प्राच्य वर्ग में**

☞ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने वैदिक ध्वनियों की संख्या मानी है **–13 स्वर, 38 व्यंजन = 51**

☞ लल्लूजी लाल द्वारा रचित नहीं है **–चंद्रावती**

☞ अंगबधू रचना है **–कवि दादूदयाल की**

☞ शिवपूजन सहाय का एकमात्र उपन्यास हैं **–देहाती दुनिया**

☞ वक्रोक्ति सम्प्रदाय के विरोधी आचार्य है **–आचार्य विश्वनाथ**

☞ भावातिरेक को अनिष्टकर माना है **–आचार्य प्लेटो ने**

☞ रूद्रट, भामह, दण्डी, उद्भट में से अलंकार सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य हैं **–भामह**

☞ पश्चिम के आचार्यों ने भावदमन को अनिष्टकर माना है **–अरस्तू ने**

☞ कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा का विभाजन किया है **–आचार्य राजशेखर ने**

☞ ''कर्मठ कठमलिया कहें ज्ञानी ज्ञान-विहीन
तुलसी त्रिपथ बिहाय गो राम दुलारे दीन''
में त्रिपथ का अर्थ है **–कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और उपासना मार्ग**

☞ 'ढलमल-ढलमल चंचल अंतल, झलमल-झलमल तारा' पंक्ति में मुख्यत: वर्णन है **–नदी की धारा का**

☞ संतन को कहा सीकरी सों काम?
आबत जात पहनियाँ टूटी, बिसरि गयो हरि नाम।।
यह पंक्तियाँ हैं **–कुंभनदास की**

☞ बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि बिचारि कै बसि बृंदावन आय।।
यह पंक्तियाँ हैं **—ध्रुवदास का**

☞ छायावाद के समर्थन में सबसे पहला लेख लिखने वाले लेखक हैं **—मुकुटधर पाण्डेय**

☞ 'संशय की एक रात' आधारित रचना है **—राम के संशय पर**

☞ 'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा वृत्तांत है **—अज्ञेय का**

☞ पथ के साथी, हम हशमत, लौट आओ धार तथा मित्र संवाद में से संस्मरण विधा की कृति नहीं है **—मित्र संवाद**

☞ हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास जिसमें औपनिषधिक कथा का आधार लिया गया है **—अनामदास का पोथा**

☞ महाप्रस्थान, उर्वशी, कनुप्रिया तथा अमन का राग में से पौराणिक कथा पर आधारित रचना नहीं है **—अमन का राग**

☞ 'कर्मनाशा की हार' कहानी संग्रह है **—शिवप्रसाद सिंह की**

☞ रामवृक्ष बेनीपुरी का नाटक है **—आम्बपाली**

☞ 'शारदीया' गद्य काव्य-कृति के रचनाकार हैं **—सुमन राजे**

नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर सुमन राजे माना है, जबकि डॉ. नगेन्द्र की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में स्पष्ट उल्लेख है कि 'शारदीया' गद्य काव्य कृति दिनेश-नंदिनी चौरड्या (डालमिया) की है।

☞ फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब तथा अमरवल्लरी में से जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी नहीं है **—अमरवल्लरी**

☞ 'एक प्लेट सैलाब' कहानी की लेखिका हैं **—मन्नू भंडारी**

☞ 'रंग दे बसंती चोला' नाटक के रचनाकार हैं **—भीष्म साहनी**

☞ 'यह पथ बंधु था' उपन्यास के लेखक हैं **—नरेश मेहता**

☞ 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास की नायिका है **—निर्गुनिया**

☞ 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास के स्त्री पात्र हैं **—शशि-सरस्वती**

☞ झूठा सच, तमस, सीधी सच्ची बातें तथा आधा गाँव में से भारत-विभाजन पर आधारित उपन्यास नहीं है **—सीधी सच्ची बातें**

☞ रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना नहीं है **—अध्यात्म चिन्तन**

☞ भीष्म साहनी की रचना है **—कड़ियाँ**

☞ भगवती चरण वर्मा का उपन्यास नहीं है **—न आने वाला कल**

☞ 'देखिए मार्क्सवाद सिखाता है कि हर चीज पर डाउट करो'- यह कथन है आलोचक **—रामविलास शर्मा का**

☞ भारत भारती, बंदिनी, झाँसी की रानी तथा चिनगारियाँ में से प्रतिबंधित कृति रही है **—भारत भारती**

☞ 'लाल पसीना' उपन्यास के लेखक हैं **—अभिमन्यु अनत**

☞ 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी संग्रह है**— चित्रा मुद्गल का**

☞ 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास के लेखक हैं **—भीष्म साहनी**

☞ निर्मल वर्मा द्वारा रचित निबंधों का संग्रह नहीं है **—चिन्तन मुद्रा**

☞ 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' रचना है **—रघुवीर सहाय की**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
—मृगावती (1503 ई.), पद्मावत (1540 ई.), चित्रावली (1613 ई.), इन्द्रावती (1744 ई.)

☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
—आधा गाँव, धरती धन न अपना, मुरदाघर, किसनगढ़ के अहेरी

☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
—मछली मरी हुई, महाभोज, पहला गिरमिटिया, कितने पाकिस्तान

☞ प्रकाशन की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है
—दुलाईवाली, ग्राम, पंच परमेश्वर, पाज़ेब

☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
—बोलती प्रतिमा, अतीत के चलचित्र, समय के पाँव, दस तसवीरें

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निर्मल वर्मा के निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है **—शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए, शताब्दी के ढलते वर्षों में**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कुबेरनाथ राय के निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है
—रस आखेटक, विषाद योग, महाकवि की तर्जनी, दृष्टि अभिसार

☞ कवियों का काल क्रमानुसार सही अनुक्रम है
—नरेश मेहता, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, ऋतुराज, मदन कश्यप

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है
—अशोक के फूल (1948 ई.), विचार और वितर्क (1949 ई.), कुटज (1964 ई.), आलोक पर्व (1972 ई.)

☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
—बलचनमा, मैला आँचल, बहती गंगा, जल टूटता हुआ

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रेमचंद के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार महाकाव्यों का सही अनुक्रम है
—प्रियप्रवास, साकेत, कामायनी, उर्वशी

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है **—अर्धकथानक, टुकड़े टुकड़े दास्तान, आज के अतीत, मुड़ मुड़ कर देखता हूँ**

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार लल्लूजी लाल की कृतियों का सही अनुक्रम है
—सिंहासन बत्तीसी, शकुंतला नाटक, सभाविलास, लाल चन्द्रिका

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नन्ददुलारे वाजपेयी के आलोचना ग्रंथों का सही अनुक्रम है**—हिन्दी साहित्य-बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, रस सिद्धांत, रीति और शैली**

☞ **स्थापना (A) :** मानववाद नास्तिक दर्शन है और मानवतावाद आस्तिक दर्शन।
तर्क (R) : मानवतावाद मूलतः निर्गुण-निराकार का प्रतिपादन करता है।
—(A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** हिन्दी कवि-आचार्यों की मौलिक देन है-'रसरीति' की स्थापना।।

तर्क (R) : हिन्दी रीतिकाव्य में रस से ज्यादा रीति को महत्व दिया गया है

—(A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** लय शब्द मात्र में ही नहीं; अर्थ, भाव, विचार-सब में होती है।

तर्क (R) : शब्द-अर्थ अन्योन्याश्रित होते हैं। शब्द श्रव्य होते हैं और अर्थ बुद्धिग्राह्य। दोनों के अनुपात से ही श्रेष्ठ साहित्य का सृजन होता है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** ग्लानि से दुबला होने में देर लगती है और पानीदार ही दुबला होता है।

तर्क (R) : दुबला होना आदमी की निर्बलता की निशानी है।

—(A) सही, (R) गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का विषय सदा 'विशेष' होता है 'सामान्य' नहीं। वह 'व्यक्ति' सामने लाता है 'जाति' नहीं।

तर्क (R) : काव्य की संरचना सदैव 'जाति' पर आश्रित होकर 'व्यक्ति' केंद्रित हो जाती है।

—(A) सही, (R) गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है।

तर्क (R) : साहस के बिना वीरकर्म का सम्पादन नहीं होता है। अतः आनंद भी प्राप्त नहीं होता।

—(A) और (R) दोनों सही है

☞ सही सुमेलित हैं—

कहानी		**लेखक**
(a) एक और जिन्दगी	–	मोहन राकेश
(b) सर्पदंश	–	रामदरश मिश्र
(c) शरणागत	–	वृन्दावनलाल वर्मा
(d) विपात्र	–	मुक्तिबोध

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्ति		**छन्द**
(a) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।	–	दोहा
(b) राम को रूप निहारत जानकी कंकन के नग की परछाहीं।	–	सवैया
(c) जानत है वह सिरजन हारा, जो कछु है मन मरम हमारा।	–	चौपाई (अर्द्धाली)
(d) अधर लगे हैं आनि करिकै प्रयास-प्रान चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।	–	कवित्त

☞ सही सुमेलित हैं—

कृति		**रचनाकार**
(a) एसेज इन क्रिटिसिज्म	–	मैथ्यू ऑर्नाल्ड
(b) एस्थेटिका	–	क्रोचे
(c) फिलॉसफी ऑफ रिटोरिक	–	आई.ए. रिचर्ड्स
(d) ए हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न क्रिटिसिज्म	–	रेनेवेलेक

☞ सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रंथ		**लेखक**
(a) शृंगार प्रकाश	–	भोज
(b) व्यक्ति-विवेक	–	महिम भट्ट
(c) चित्र-मीमांसा	–	अप्पय दीक्षित
(d) रस मंजरी	–	भानुदत्त

☞ सही सुमेलित हैं—

सम्प्रदाय		**कवि**
(a) राधावल्लभ सम्प्रदाय	–	बिहारी
(b) खालसा सम्प्रदाय	–	गुरु गोविन्द सिंह
(c) सूफी सम्प्रदाय	–	शेख फरीद
(d) प्रणामी सम्प्रदाय	–	प्राणनाथ

☞ सही सुमेलित हैं—

हिन्दी सेवी		**मूल-स्थान**
(a) जॉर्ज ए. ग्रियर्सन	–	आयरलैंड
(b) फ्रेडरिक पिन्काट	–	इंग्लैंड
(c) वरान्निकोव	–	रूस
(d) अभिमन्यु अनत	–	मॉरीशस

☞ सही सुमेलित हैं—

पुरस्कार		**पुरस्कृत साहित्यकार**
(a) प्रथम देव पुरस्कार	–	दुलारे लाल भार्गव
(b) मंगला प्रसाद पारितोषिक	–	जयशंकर प्रसाद
(c) प्रथम भारत-भारती	–	महादेवी वर्मा
(d) व्यास पुरस्कार (2011)	–	अमरकांत

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना		**दुहरे शीर्षक**
(a) तीसरी कसम	–	मारे गए गुलफाम
(b) बिगाड़े का सुधार	–	सती सुख देवी
(c) रानी केतकी की कहानी	–	उदयभान चरित
(d) ठेठ हिन्दी का ठाट	–	देवबाला

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि		**आश्रयदाता**
(a) मतिराम	–	बूँदी राजा भावसिंह
(b) पद्माकर	–	नागपुर महाराज रघुनाथ राव
(c) रत्नाकर	–	अयोध्या नरेश प्रतापनारायण सिंह
(d) भिखारीदास	–	प्रतापगढ़ अधिपति हिन्दूपति सिंह

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्ति		**कृति**
(a) अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे, उठाने ही होंगे।	–	अँधेरे में
(b) हँस पड़ा गगन, वह शून्य लोक	–	कामायनी
(c) स्थिर समर्पण है हमारा	–	नदी के द्वीप
(d) आप अपने से उगा मैं	–	कुकुरमुत्ता

सम-सामयिक घटना चक्र

दिसम्बर - 2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'सरहपा' का सम्बन्ध है — **सिद्ध साहित्य से**

☞ सूरदास, कुंभनदास, नन्ददास तथा सुन्दरदास में से अष्टछाप के कवि नहीं है — **सुन्दरदास**

☞ बिहारी कवि हैं —**रीति सिद्ध के**

☞ प्रेमचन्द उपन्यासकार हैं —**आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृत्ति के**

☞ अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास 'खंजन नयन' में जीवन का चित्रण किया गया है —**सूरदास के**

☞ अंग्रेजी स्वच्छन्दतावादी काव्य का प्रभाव हिन्दी की काव्यधारा पर दिखाई देता है —**छायावाद के**

☞ ''दु:ख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।''
उपर्युक्त पंक्तियाँ उद्धृत हैं —**सरोज स्मृति से**

☞ 'रस आखेटक' के रचनाकार हैं —**कुबेरनाथ राय**

☞ हरिशंकर परसाई की रचना नहीं है — **जीप पर सवार इल्लियाँ**

☞ 'एक बूँद सहसा उछली' है —**यात्रा-वृत्तान्त**

☞ 'आलोचक के मुख से' व्याख्यानों का संकलन है— **नामवर सिंह का**

☞ 'समय देवता' कविता है — **नरेश मेहता की**

☞ 'ऑफ ग्रैमेटॉलोजी' के लेखक हैं — **जैक देरिदा**

☞ शिवदान सिंह चौहान, शिवकुमार मिश्र, प्रकाशचन्द गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी में से मार्क्सवादी आलोचक नहीं हैं — **रामस्वरूप चतुर्वेदी**

☞ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' रचना है — **विद्यानिवास मिश्र की**

☞ आलोचना कृति विजयदेव नारायण साही की है — **जायसी**

☞ खड़ी बोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज का विशिष्ट योगदान है, क्योंकि
(a) अंग्रेजों ने खड़ी बोली के विकास को प्रमुखता दी।
(b) खड़ी बोली के प्रशिक्षण से विविध साहित्यिक विधाओं में सृजन हुआ।
(c) खड़ी बोली में साहित्यिक लेखन युग की आवश्यकता थी।
— **(a) और (c) सही, (b) गलत है**

☞ (a) ब्रजभाषा में गीतात्मकता स्वाभाविक रूप से आ जाती है।
(b) ब्रजभाषा में परुष वर्णों का अभाव है।
— **(a) और (b) दोनों सही हैं**

☞ (a) नयी कविता में नये मनुष्य की प्रतिष्ठा हुई है।
(b) नयी कविता में व्यक्त मनुष्य का द्वन्द्व अंशतः आयातित है।
— **(a) और (b) दोनों सही हैं**

☞ छायावाद की विशेषताएँ हैं— **आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति, साम्राज्यवाद के प्रति विद्रोह, सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक आकर्षण तथा छायावाद रहस्यवाद का पर्याय है।**

☞ गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का सही क्रम है
— **गीतावली (1628 संवत्), रामचरित मानस (1631 संवत्), दोहावली (1640 संवत्),विनय पत्रिका (1639 संवत् लगभग),**

☞ जन्मतिथि की दृष्टि से द्विवेदी युगीन कवियों का सही क्रम है
— **श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)**

☞ आधुनिक हिन्दी की कृतियों का प्रकाशन काल की दृष्टि से सही अनुक्रम है — **यशोधरा (1932 ई.), कनुप्रिया (1959 ई.), उर्वशी (1961 ई.), आत्मजयी (1965 ई.)**

नोट-यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है। हालांकि यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न के उत्तर का अनुक्रम इस प्रकार माना है–यशोधरा, उर्वशी, कनुप्रिया, आत्मजयी।

☞ पाश्चात्य समीक्षकों का जन्म की दृष्टि से सही अनुक्रम है
— **अरस्तू (424 ई.पू.-347 ई.पू.), प्लेटो (384 ई.पू.-322 ई.पू.), लोंजाइनस (तीसरी शताब्दी), कॉलरिज (1772-1834 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से पत्रिकाओं का सही क्रम है
— **कविवचन सुधा (1867 ई.), सरस्वती (1903 ई.), चाँद (1928 ई.), हंस (1930 ई.)**

☞ उपन्यासों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है
— **झूठा सच (1958 ई.), आधा गाँव (1966 ई.), तमस (1973 ई.), सूखा बरगद (1986 ई.)**

☞ कवियों का सही क्रम है
— **चिन्तामणि (1509), केशवदास (1555-1617 ई.), बिहारी (1595-1663 ई.), पद्माकर (1753-1833 ई.)**

☞ काव्यों का सही अनुक्रम है
— **प्रियप्रवास (1914 ई.), झरना (1918 ई.), राम की शक्तिपूजा (1936 ई.), लोकायतन (1964 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्तियाँ	**कवि**
(a) घुन खाये शहतीरों पर –	नागार्जुन
(b) एक बीते के बराबर –	केदारनाथ अग्रवाल
(c) किन्तु हम हैं द्वीप –	अज्ञेय
(d) भूख से रिरियाती हुई –	धूमिल

☞ सही सुमेलित हैं–

सम्पादक		पत्रिका
(a) श्यामसुन्दर सेन	–	समाचार सुधावर्षण
(b) राजा लक्ष्मण सिंह	–	प्रजा हितैषी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	कविवचनसुधा
(d) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'	–	आनन्द कादम्बिनी

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		प्रकाशन वर्ष
(a) सार सुधा निधि	–	1879
(b) बंग दूत	–	1829
(c) भारत मित्र	–	1877
(d) हंस	–	1930

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचनात्मक कृति		लेखक
(a) दूसरी परम्परा की खोज	–	नामवर सिंह
(b) नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	–	गजानन माधव मुक्तिबोध
(c) हिन्दी साहित्य का आदिकाल	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) नया साहित्य नये प्रश्न	–	नन्ददुलारे वाजपेयी

☞ सही सुमेलित हैं–

कथन		लेखक
(a) करुणा दु:खात्मक वर्ग में आने वाला मनोविकार है	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति है।	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।	–	डॉ. नगेन्द्र
(d) भक्ति आन्दोलन एक जातीय और जनवादी आन्दोलन है।	–	रामविलास शर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

कृतियाँ		विधा
(a) लहरों के राजहंस	–	नाटक
(b) आधा गाँव	–	उपन्यास
(c) तुम चन्दन हम पानी	–	निबन्ध
(d) मुर्दहिया	–	आत्मकथा

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यास		पात्र
(a) गबन	–	जालपा
(b) नदी के द्वीप	–	भुवन
(c) मैला आँचल	–	डॉ. प्रशान्त
(d) बाणभट्ट की आत्मकथा	–	निपुणिका

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		नाटक
(a) सिंहरण	–	चन्द्रगुप्त
(b) युयुत्सु	–	अन्धायुग
(c) जुनेजा	–	आधे-अधूरे
(d) दक्ष	–	एक कंठ विषपायी

☞ सही सुमेलित हैं–

आचार्य		सिद्धान्त
(a) भट्ट लोल्लट	–	आरोपवाद
(b) शंकुक	–	अनुमितिवाद
(c) अभिनव गुप्त	–	अभिव्यक्तिवाद
(d) भट्ट नायक	–	भुक्तिवाद

☞ सही सुमेलित हैं–

आचार्य		कालखंड
(a) भामह	–	छठी सदी
(b) क्षेमेन्द्र	–	ग्यारहवीं सदी
(c) विश्वनाथ	–	चौदहवीं सदी
(d) पंडितराज जगन्नाथ	–	सत्रहवीं सदी

☞ **स्थापना (A) :** किसी व्यक्ति का लोभ उस व्यक्ति से केवल बाह्य सम्पर्क रखकर ही तुष्ट नहीं हो सकता, उसके हृदय का सम्पर्क भी चाहता है।

तर्क (R) : लोभ प्रेम का मूल है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** भरत मुनि के अनुसार, स्थायी भाव ही रस रूप में परिणत होता है।

तर्क (R) : उनके प्रसिद्ध रससूत्र में स्थायी भाव का स्पष्ट उल्लेख है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** ''बिनु पग चलै सुनै बिनु काना''–असंगति अलंकार का उदाहरण है।

तर्क (R) : असंगति अलंकार में कारण के बिना कार्य हो जाता है।

– (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** भाषा वैज्ञानिकों की दृष्टि में हिन्दी और उर्दू अलग-अलग भाषाएँ हैं।

तर्क (R) : उनका व्याकरण एक ही है।

– (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** मैथिली, संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा है।

तर्क (R) : इसके शामिल होने से हिन्दी भाषियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** ''हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी-न्यारी हैं।''-यह कथन राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' का है।

तर्क (R) : यह कथन ईस्ट इंडिया कंपनी की भाषा नीति के विरुद्ध है।

– (A) और (R) दोनों गलत हैं

सम-सामयिक घटना चक्र

दिसम्बर - 2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ दोहा, बरवै, कुंडलिया तथा सवैया में से अपभ्रंश का मुख्य छन्द है **—दोहा**

☞ अवधी, खड़ी बोली, ब्रज तथा छत्तीसगढ़ी में से आगरा का बोली-क्षेत्र है **—ब्रज**

☞ 'पंडिअ सअल सन्त बक्खाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणई' कथन है **—सरहपा का**

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई भी उत्तर सही नहीं है। यही कारण है कि यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।

☞ 'परमात्मप्रकाश' के रचनाकार हैं **—योगीन्द्र**

☞ 'गोरखबानी' के सम्पादक हैं **—पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल**

☞ 'आल्हाखंड' रचना का दूसरा नाम है **—परमाल रासो**

☞ 'सजन सकारे जाँयगें नैन मरेंगे रोय' उक्ति है **—अमीर खुसरो की**

☞ स्वामी हरिदास, हित हरिवंश, प्रियादास तथा कुम्भनदास में से 'अष्टछाप' के कवि हैं **— कुम्भनदास**

☞ 'हेरी म्हा तो दरद दिवाणी म्हारॉं दरद न जाण्यॉं कोय' उक्ति है **—मीराबाई की**

☞ 'मॉंगि के खैबो मसीत के सोइबो, लैबो को एक न दैबो को दोऊ।' पंक्ति का सम्बन्ध है **— तुलसीदास की रचना कवितावली से**

☞ मुल्ला वजही की रचना है **—कुतुब मुश्तरी**

☞ प्रतापसाहि की रचना नहीं है **—नवरस तरंग**

☞ 'छत्रप्रकाश' प्रबंध काव्य के रचनाकार हैं **—लालकवि**

☞ रहीमदास, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि तथा गिरिधरदास में से नीतिकार कवि नहीं है **—गिरिधरदास**

☞ 'फोर्ट विलियम कॉलेज' से सम्बन्ध था **—लल्लूलाल, सदल मिश्र का**

☞ 'गार्सा द तासी' ने 'हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' लिखा है **—फ्रांसीसी भाषा में**

☞ अंग्रेजी सरकार की ओर से अदालत का कामकाज देश की प्रचलित भाषाओं में करने का 'इश्तहारनामा' निकला **— 1836 सन् में**

☞ 'लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है'-उक्ति है **—ठाकुर की**

☞ तुलसीदास की रचना है **—कृष्णगीतावली**

☞ 'हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ। का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउ।' काव्य पंक्ति है **—नूर मुहम्मद की**

☞ 'कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दरसनी' कहा है **—नाभादास ने**

☞ कबीरदास, रैदास, धर्मदास तथा दादूदयाल में से सबसे पहले के कवि हैं **—रैदास (1377 ई.)**

☞ केशवदास, रहीमदास, घनानन्द तथा पद्माकर में से सबसे बाद के कवि हैं **—पद्माकर (1753-1833 ई.)**

☞ भारत जननी, भारत दुर्दशा, भारत सौभाग्य तथा अन्धेर नगरी में से भारतेन्दु का नाटक नहीं है **—भारत सौभाग्य**

☞ बालबोधिनी, हिन्दी प्रदीप, सरस्वती तथा नागरी प्रचारिणी में से मासिक पत्रिका नहीं थी **—नागरी प्रचारिणी**

☞ काशीनाथ सिंह का उपन्यास है **—रेहन पर रग्घू**

☞ साहित्यकारों का जन्म शताब्दी वर्ष 2011 था

—नागार्जुन (1911-1998 ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000 ई.), शमशेर (1911-1993 ई.)

☞ 'दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत' में अलंकार है **—असंगति**

☞ 'दस द्वारे का पिंजरा' उपन्यास के रचनाकार हैं **—अनामिका**

☞ 'कथासतीसर' की लेखिका हैं **—चन्द्रकांता**

☞ 'रससूत्र' के व्याख्याता हैं **—लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त**

☞ हिन्दी दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' के सम्पादक हैं **—श्यामसुंदर सेन**

☞ 'द न्यू क्रिटिसिज्म' पुस्तक के लेखक हैं **—जॉन क्रो रैंसम**

☞ 'राइटिंग एंड डिफरेंस' पुस्तक है **—जाक़ देरिदा की**

☞ ''साधारणीकरण' आलम्बनत्व धर्म का होता है'' कथन है **—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का**

☞ 'सूअरदान' के लेखक हैं **—रूपनारायण सोनकर**

☞ 'अन्न हैं मेरे शब्द' कृति है **—एकान्त श्रीवास्तव की**

☞ 'अनारो' उपन्यास है **—मंजुल भगत का**

☞ 'व्योमकेश दरवेश' रचना है **—जीवनी विधा की**

☞ 'सुचरिता' का सम्बन्ध है **—बाणभट्ट की आत्मकथा उपन्यास से**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से रचनाओं का सही अनुक्रम है **—कीर्तिपताका, रामचरितमानस, रामचन्द्रिका, कृष्णायन**

☞ रचनाकार के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है **—साकेत (1931 ई.), कामायनी (1936 ई.), कुरुक्षेत्र (1946 ई.), अन्धायुग (1954 ई.)**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

—मृगावती, ज्ञानदीप, इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी

☞ जीवनकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है

—महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई), रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979 ई.), विद्यानिवास मिश्र (1928-2005 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है

—शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), अशोक के फूल (1948 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1952 ई.), आत्मनेपद (1960 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है

—परीक्षा गुरु (1885 ई.), निस्सहाय हिन्दू (1889 ई.), ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899 ई.), देहाती दुनिया (1925 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का सही अनुक्रम है

—बाणभट्ट की आत्मकथा (1946 ई.), चारुचन्द्र लेख (1963 ई.), पुनर्नवा (1973 ई.), अनामदास का पोथा (1976 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

—ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई.), दुलाईवाली (1907 ई.), पंच परमेश्वर (1916 ई.), दोपहर का भोजन (1956 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर नाटकों का सही अनुक्रम है

—चन्द्रावली (1876 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.), झाँसी की रानी (1946 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है

—राज्यश्री (1915 ई.), अजातशत्रु (1922 ई.), चन्द्रगुप्त (1931 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)

☞ रचनाकाल की दृष्टि से आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है

—मेरी जीवन यात्रा (1956 ई.), क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), टुकड़े-टुकड़े दास्तान (1986 ई.), अर्धकथा (1988 ई.)

नोट-मेरी जीवन यात्रा (1946) राहुल सांकृत्यायन तथा मेरी जीवन यात्रा (1956) जानकी देवी बजाज की रचना है। ये रचनाएँ आत्मकथा विधा की हैं। यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का कोई विकल्प सही नहीं है। अतः यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।

☞ रचनाकाल के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है

—भारत भारती (1912 ई.), रस कलश (1931 ई.), उर्वशी (1953-1961 ई.), शम्बूक (1977 ई.)

नोट—'उर्वशी' (1909) रचना जयशंकर प्रसाद की भी है।

☞ रचनाकाल की दृष्टि से निराला की कृतियों का सही अनुक्रम है

—परिमल (1929 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), नये पत्ते (1946 ई.), आराधना (1953 ई.)

☞ रचनाकाल के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है

—राग दरबारी (1968 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), महाभोज (1979 ई.), झीनी झीनी बीनी चदरिया (1986 ई.)

☞ हिन्दी भाषा के विकास का सही क्रम है

—संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य सामूहिक अवचेतन का निषेध है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य में सिर्फ व्यक्ति मन की अभिव्यक्ति होती है।

—(A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** विषमता और दुख-सुख का द्वन्द्व विकास का मूलाधार है।

तर्क (R) : क्योंकि समता से विकास असंभव है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** कला सामाजिक अनुपयोगिता की अनुभूति के विरुद्ध अपने को प्रमाणित करने का प्रयत्न है।

तर्क (R) : क्योंकि कलाकार सामाजिक अभावों के खिलाफ संघर्ष करता है।

—(A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं, मन के भीतर की वस्तु है।

तर्क (R) : कारण कि सौन्दर्य की सत्ता मन के बाहर नहीं होती है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** नारीवाद का एक उद्देश्य पुरुष-सत्ता का निषेध है।

तर्क (R) : क्योंकि नारीवाद का एकमात्र उद्देश्य यही है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाय।

तर्क (R) : क्योंकि प्रेम दो कौड़ी का होता है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** स्थायी साहित्य जीवन की चिरन्तन समस्याओं का समाधान है।

तर्क (R) : क्योंकि स्थायी साहित्य का लोक जीवन की तात्कालिक समस्याओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** लोकहृदय में हृदय के लीन होने का नाम रसदशा है।

तर्क (R) : इसलिए साधारणीकरण के लिए कवि का लोकधर्मी होना आवश्यक नहीं है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन कविता में मध्यकालीन भावबोध का नितांत अभाव है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** रस ब्रह्मास्वाद सहोदर है।

तर्क (R) : क्योंकि रस में लौकिक विषयों का सर्वथा तिरोभाव होता है।

—(A) सही और (R) गलत है

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		**काव्य संग्रह**
(a) बालकृष्ण शर्मा नवीन	–	हम विषपायी जनम के
(b) राम नरेश त्रिपाठी	–	पथिक
(c) माखनलाल चतुर्वेदी	–	हिमतरंगिणी
(d) सोहनलाल द्विवेदी	–	भैरवी

☞ सही सुमेलित हैं–

साहित्यकार		**सम्पादित पत्रिका**
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	–	कविवचनसुधा
(b) अंबिकादत्त व्यास	–	पीयूष प्रवाह
(c) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	–	आनंद कादम्बिनी
(d) बालकृष्ण भट्ट	–	हिन्दी प्रदीप

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यासकार		**उपन्यास**
(a) भीष्म साहनी	–	तमस
(b) श्रीलाल शुक्ल	–	राग दरबारी
(c) राही मासूम रजा	–	कटरा बी आरजू
(d) शिवप्रसाद सिंह	–	अलग-अलग वैतरिणी

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचना ग्रंथ		**आलोचक**
(a) रस मीमांसा	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) नाथ सम्प्रदाय	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) आस्था और सौन्दर्य	–	रामविलास शर्मा
(d) हिन्दी सहित्य : बीसवीं शताब्दी	–	नन्ददुलारे वाजपेयी

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**उपन्यास**
(a) गोबर	–	गोदान
(b) भुवन	–	नदी के द्वीप
(c) महामाया	–	बाणभट्ट की आत्मकथा
(d) कुमारगिरि	–	चित्रलेखा

☞ सही सुमेलित हैं–

पात्र		**काव्य**
(a) प्रियंवद	–	असाध्यवीणा
(b) कमला	–	प्रलय की छाया
(c) औशीनरी	–	उर्वशी
(d) नचिकेता	–	आत्मजयी

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धांत		**विचारक**
(a) अभिव्यंजनावाद	–	क्रोचे
(b) आभिजात्यवाद	–	टी.एस. इलियट
(c) अस्तित्ववाद	–	सार्त्र
(d) विखण्डनवाद	–	जाक देरिदा

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		**कहानी**
(a) फणीश्वरनाथ रेणु	–	ठेस
(b) अमरकांत	–	दोपहर का भोजन
(c) उषा प्रियंवदा	–	वापसी
(d) यशपाल	–	परदा

☞ सही सुमेलित हैं–

निबन्ध		**निबन्धकार**
(a) मजदूरी और प्रेम	–	अध्यापक पूर्ण सिंह
(b) कुटज	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	–	विद्यानिवास मिश्र
(d) लोभ और प्रीति	–	रामचन्द्र शुक्ल

☞ सही सुमेलित हैं–

उक्ति		**लेखक**
(a) मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझता हूँ।	–	प्रेमचन्द
(b) अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है।	–	जयशंकर प्रसाद
(c) करुणा सेंत का सौदा नहीं है।	–	रामचन्द्र शुक्ल
(d) मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है।	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी

सम-सामयिक घटना चक्र

जून - 2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'पउमचरिउ' रचना है — **स्वयंभू की**

☞ गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' की भाषा है — **ब्रजभाषा**

☞ 'खड़ी बोली' के लिए सुनीतिकुमार चटर्जी ने प्रयोग किया है — **जनपदीय हिन्दुस्तानी शब्द का**

☞ सूफी प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा में 'आराध्य' को प्रायः देखा गया है — **प्रेमिका के रूप में**

☞ छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है — **डॉ. नगेन्द्र ने**

☞ 'मिश्र बन्धुओं' में नहीं हैं — **कृष्ण बिहारी मिश्र**

☞ 'रस गंगाधर' के रचयिता हैं — **पंडितराज जगन्नाथ**

☞ 'तार सप्तक' के कवि नहीं हैं — **शमशेर बहादुर सिंह**

☞ 'शिवपालगंज' सम्बन्धित है — **रागदरबारी उपन्यास से**

☞ भरत मुनि के अनुसार काव्य में गुण होते हैं — **दस**

☞ हिन्दी वर्णमाला में 'अं' और 'अः' हैं — **अयोगवाह**

☞ 'अन्धायुग' नाट्यविधा है — **गीतिनाट्य का**

☞ ''दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।''
उपर्युक्त पंक्तियाँ उद्धृत हैं— **रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता से**

☞ 'देवरानी जेठानी की कहानी' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना है — **गोपाल राय ने**

☞ 'समालोचनादर्श' के शीर्षक से 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' का अनुवाद किया — **जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने**

☞ 'शिखर से सागर तक' जीवनी है — **अज्ञेय की**

☞ (a) हिन्दी में भक्ति धारा का उदय बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है।
(b) यह भारतीय साधना परम्परा का स्वतः स्फूर्त विकास है।
— **(a) और (b) दोनों आंशिक सही हैं**

☞ (a) 'विभावन व्यापार' रस प्रक्रिया की सुदृढ़ भूमिका है।
(b) विभाव ही रस का हेतु है।
— **(a) सही और (b) आंशिक सही है**

☞ (a) 'छायावाद' और 'रहस्यवाद' में तात्विक भेद नहीं है।
(b) 'छायावाद' में अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता और 'रहस्यवाद' में अज्ञात के प्रति जिज्ञासा है।
— **(a) आंशिक सही और (b) सही है**

☞ (a) 'नयी कविता' में निरूपित मनुष्य मात्र द्वन्द्वग्रस्त है।
(b) 'नयी कविता' मात्र व्यक्ति-चेतना की कविता नहीं है।
— **(a) आंशिक सही और (b) सही है**

☞ इतिहास ग्रन्थों का कालक्रमानुसार सही क्रम है
— **इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदूस्तानी-शिवसिंह सरोज-मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान-मिश्रबन्धु विनोद**

☞ नवजागरण कालीन सुधारवादी संस्थाओं की शुरुआत का सही क्रम है
— **ब्रह्म समाज-प्रार्थना समाज-आर्य समाज-रामकृष्ण मिशन**

☞ छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भों का जन्मतिथि के आधार पर सही क्रम है
— **जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961 ई.), सुमित्रानन्दन पंत (1900-1977 ई.), महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.)**

☞ प्रकाशन की दृष्टि से निम्न काव्य कृतियों का सही क्रम है
— **युगवाणी, कुकुरमुत्ता, हरी घास पर क्षण भर, गीत फरोश**

☞ निराला के उपन्यासों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है
— **अप्सरा (1931 ई.), अलका (1933 ई.), निरूपमा (1936 ई.), प्रभावती (1936 ई.)**

☞ आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख आन्दोलनों का सही अनुक्रम है
— **प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता**

☞ भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख काव्य शास्त्रियों का सही क्रम है
— **भरतमुनि, आनन्दवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ**

☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— **रुकोगी नहीं राधिका (1967 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), चाक (1997 ई.), आवाँ (1999 ई.)**

☞ प्रेमाख्यान काव्य परम्परा की प्रमुख रचनाओं का सही क्रम है
— **चन्दायन (1379 ई.), मृगावती (1503 ई.), पद्मावत (1540 ई.), मधुमालती (1545 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं—

रचनाकार		**रचनाएँ**
(a) राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द'	–	भूगोल हस्तामलक
(b) लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	–	फोर्ट विलियम कॉलेज
(c) मिश्रबन्धु	–	हिन्दी नवरत्न
(d) रामविलास शर्मा	–	भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश

☞ सही सुमेलित हैं—

रचनाकार		**रचनाएँ**
(a) ज्योतिरीश्वर ठाकुर	–	वर्ण रत्नाकर
(b) दामोदर भट्ट	–	उक्ति व्यक्ति प्रकरण
(c) नरपति नाल्ह	–	बीसलदेव रासो
(d) रोड	–	राउलवेल

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		कृतियाँ
(a) सुमित्रानन्दन पंत	–	ग्राम्या
(b) घनानन्द	–	इश्कलता
(c) केशवदास	–	कविप्रिया
(d) कुतुबन	–	मृगावती

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		कृतियाँ
(a) रघुवीर सहाय	–	अनामिका
(b) श्रीकान्त वर्मा	–	माया दर्पण
(c) दिनकर	–	परशुराम की प्रतीक्षा
(d) केदारनाथ अग्रवाल	–	फूल नहीं रंग बोलते हैं

☞ सही सुमेलित हैं–

कवि		कृतियाँ
(a) नागार्जुन	–	युगधारा
(b) नरेश मेहता	–	संशय की एक रात
(c) भवानीप्रसाद मिश्र	–	सतपुड़ा के जंगल
(d) केदारनाथ सिंह	–	अकाल में सारस

☞ सही सुमेलित हैं–

कृतियाँ		लेखक
(a) साहित्यालोचन	–	श्यामसुन्दर दास
(b) रस मीमांसा	–	रामचन्द्र शुक्ल
(c) ठेले पर हिमालय	–	धर्मवीर भारती
(d) तमाल के झरोखे से	–	विद्यानिवास मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं–

कथाकार		कृतियाँ
(a) कृष्णा सोबती	–	समय सरगम
(b) श्रीलाल शुक्ल	–	विश्रामपुर का सन्त
(c) राही मासूम रज़ा	–	टोपी शुक्ला
(d) कमलेश्वर	–	कितने पाकिस्तान

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		कहानी
(a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	–	बुद्धू का काँटा
(b) रामचन्द्र शुक्ल	–	ग्यारह वर्ष का समय
(c) यशपाल	–	परदा
(d) अमरकान्त	–	दोपहर का भोजन

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		कहानी
(a) निर्मल वर्मा	–	लन्दन की एक रात
(b) मार्कण्डेय	–	हंसा जाइ अकेला
(c) शिवमूर्ति	–	कसाईबाड़ा
(d) शेखर जोशी	–	कोसी का घटवार

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्तियाँ		कवि
(a) ज्यों-ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि	–	मतिराम
(b) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी	–	भूषण
(c) नैन नचाई कह्यौ मुसकाइ	–	पद्माकर
(d) रावरे रूप की रीति अनूप	–	घनानन्द

☞ **स्थापना (A) :** शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक ही होती है।

तर्क (R) : भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति-निवृत्ति को जागृत रखने वाली शक्ति शासन में नहीं होती।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** कवि-वाणी के प्रसार से हम संसार के सुख-दुःख आनन्द-क्लेश आदि का शुद्ध स्वार्थमुक्त रूप में अनुभव करते हैं।

तर्क (R) : इस प्रकार के अनुभव के अभ्यास से हृदय का बन्धन नहीं खुलता है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रहता।

तर्क (R) : समर्पण भक्ति का मूल है।

– (A) सही और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** प्रिय के वियोग से जो दुःख होता है, उसमें कभी-कभी दया या करुणा का भी कुछ अंश मिला रहता है।

तर्क (R) : प्रिय के वियोग पर उत्पन्न करुणा का विषय प्रिय के सुख का निश्चय है।

– (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** दुष्कर्म के अनेक अप्रिय फलों में से एक अपमान है।

तर्क (R) : दुष्कर्म से उत्पन्न अपमान के प्रति स्वयं का चरित्रवान सिद्ध करना सदाचरण है।

– (A) सही और (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** प्रेम का समाजीकरण होता है, तो उसे भक्ति कहते हैं।

तर्क (R) : प्रेम सामाजिक भाव नहीं है।

– (A) सही और (R) गलत है

जून - 2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ ब्रजभाषा का विकास हुआ **— शौरसैनी से**

☞ अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था का नाम है **— अवहट्ट**

☞ अपभ्रंश में कुल स्वर थे **— आठ**

☞ 'मगही' बोली है **— बिहार की**

☞ भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार है **— इतिहास**

☞ पुष्पदंत कवि थे **— दसवीं शताब्दी के**

☞ 'दोहाकोश' रचना है **— सरहपा की**

☞ 'काव्य की रीति सिखी सुकबीन सों देखी सुनी बहुलोक की बातें' काव्योक्ति हैं **— भिखारीदास की**

☞ ''हरि रस पीया जानिए, जे कबहूं न जाय खुमार।
मैमंता घूमत फिरै, नाहीं तन की सार।।'' - इन काव्य पंक्तियों के कवि हैं **— कबीरदास**

☞ देवकवि की रचना है **— भावविलास**

☞ 'साहित्य लहरी' के रचनाकार हैं **— सूरदास**

☞ अष्टछाप की स्थापना की **— विट्ठलनाथ ने**

☞ सखी-सम्प्रदाय के संस्थापक हैं **— स्वामी हरिदास**

☞ गोस्वामी तुलसीदास की अन्तिम रचना है **— हनुमानबाहुक**

☞ मृगावती रचना है **— कुतुबन का**

☞ ''श्रुति सम्मत हरिभक्ति पथ संजुत विरति विवेक-रचना है''
— तुलसीदास के रामचरितमानस से

☞ शब्दशक्ति के विषय में कथन है
''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा हीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।।'' **— देवकवि का**

☞ रसराज, रसविलास, ललित ललाम तथा छंदसार में से मतिराम का ग्रन्थ नहीं है **— छंदसार**

☞ रीतिमुक्त कवि नहीं हैं **— पद्माकर**

☞ 'चंडी चरित्र' रचना है **— गुरु गोविन्द सिंह की**

☞ ''ज्यौं-ज्यौं बसे जात दूरि-दूरि प्रिय प्राण मूरि।
त्यौं-त्यौं धसे जात मन मुकुर हमारे मैं।।''
भ्रमरगीत प्रसंग से सम्बन्धित उपर्युक्त पंक्तियों के कवि हैं
— जगन्नाथदास रत्नाकर

☞ भाषा योग वाशिष्ट, भाषा पद्म पुराण, नासिकेतोपाख्यान, दृष्टान्त सागर में से गद्य कृति का निर्माण फोर्ट विलियम कॉलेज में हुआ था
— नासिकेतोपाख्यान का

☞ 'नि:सहाय हिन्दू' उपन्यास के लेखक हैं **— राधाकृष्ण दास**

☞ रणधीर प्रेममोहिनी, महारानी पद्मावती, तप्ता-संवरण तथा संयोगिता स्वयंवर में से श्रीनिवास दास का नाटक नहीं है**— महारानी पद्मावती**

☞ राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' का अनुवाद किया
— 1863 ई. में

☞ भारतेन्दु का नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' की प्रतीकात्मक शैली से प्रभावित है **— भारत दुर्दशा**

☞ बालकृष्ण भट्ट सम्पादन कर्म से जुड़े थे **— हिन्दी प्रदीप के**

☞ प्रियप्रवास, अग्निलीक, भ्रमरदूत तथा अंधायुग में से कृष्णकथा पर आधारित नहीं है **— अग्निलीक**

☞ 'शिवशंभू के चिट्ठे' के निबंधकार हैं **— बालमुकुन्द गुप्त**

☞ ''जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।''
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों के कवि हैं **— जयशंकर प्रसाद**

☞ ''धिक्! धाए तुम यों अनाहूत,
धो दिया श्रेष्ठ कुल - धर्म धूत,
राम के नहीं, काम के सूत कहलाए।''
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों का सम्बन्ध है **— तुलसीदास से**

☞ 'कविता दो शब्दों के बीच की नीरवता में रहती है।' काव्य-भाषा के सम्बन्ध में उपर्युक्त मत है **— अज्ञेय का**

☞ 'अनन्तदेवी' नाटक की पात्र है **— स्कन्दगुप्त**

☞ मिलन, पथिक, नहुष तथा स्वप्न में से रामनरेश त्रिपाठी का खण्डकाव्य नहीं है **— नहुष**

☞ 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास है **— प्रदीप सौरभ का**

☞ 'पिंजरे में मैना' आत्मकथा है **— चन्द्रकिरण सोनेरिक्सा की**

☞ 'मंगल का विधान करने वाले दो भाव हैं।' कथन है
— रामचन्द्र शुक्ल का

☞ 'आलोचना का विषय कवि नहीं, कविता है।' कथन है
— टी.एस. इलियट का

☞ ''सत्त्वोद्रेकाद खण्ड स्वप्रकाशानन्द चिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।
लोकोत्तर चमत्कार प्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवद भिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।''
रस के विषय में उपर्युक्त स्थापना की है **— आचार्य विश्वनाथ ने**

☞ आठवाँ सर्ग, कन्धे पर बैठा था शाप, शकुन्तला की अँगूठी तथा आषाढ़ का एक दिन में से कालिदास के चरित्र से सम्बन्धित नाटक नहीं है **— शकुन्तला की अँगूठी**

☞ साहित्यिक वादों का सही अनुक्रम है **— छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद**

☞ जीवनकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है **— सूरदास, केशवदास, जगन्नाथदास रत्नाकर, सोहनलाल द्विवेदी**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है **— कुवलयमालाकथा, राउलवेल, उक्तिव्यक्ति प्रकरण, वर्णरत्नाकर**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है **— प्रियप्रवास, साकेत, तुलसीदास, कृष्णायन**

☞ रचनाकाल के आधार पर दिनकर की कृतियों का सही अनुक्रम है **— मिट्टी की ओर, संस्कृति के चार अध्याय, वट पीपल, दिनकर की डायरी**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है **— विराटा की पद्मिनी, चित्रलेखा, बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है **— सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है **— बड़े भाई साहब, वापसी, डेफोडिल जल रहे हैं, पाल गोमरा का स्कूटर**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है **— द्रौपदी, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है **— पल्लव, कामायनी, दीपशिखा, कुकुरमुत्ता**

☞ रचनाकाल के आधार पर अज्ञेय की रचनाओं का सही अनुक्रम है **— भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार**

☞ जीवनकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है **— श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, अज्ञेय**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कविताओं का सही अनुक्रम है **— सरोज-स्मृति, असाध्यवीणा, अँधेरे में, पटकथा**

☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है **— युग की गंगा, सतरंगे पंखों वाली, फूल नहीं रंग बोलते हैं, मिट्टी की बारात**

☞ ब्राह्मी लिपि के विकास का अनुक्रम है **— ब्राह्मी लिपि, गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, देवनागरी लिपि**

☞ **स्थापना (A) :** बिम्ब में अर्थ की सम्भाव्यता निहित होती है।
तर्क (R) : क्योंकि अर्थ हमेशा निश्चित होता है।
— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।
तर्क (R) : क्योंकि कविता में कवि हृदय लोक-सामान्य की भूमि पर पहुँच जाता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** प्रेमचन्द यथार्थवाद से आदर्शवाद को श्रेष्ठ समझते थे।
तर्क (R) : क्योंकि आदर्शवाद उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि है।
— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** कलामात्र के लिए वही साहित्य हो सकता है, जो विचारशून्य हो।
तर्क (R) : क्योंकि कला विचारों से पलायन है।
— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** कहानी छोटे मुँह बड़ी बात करती है।
तर्क (R) : क्योंकि कहानी लघुजीवन खण्ड के माध्यम से एक सम्पूर्ण जीवनबोध या सत्य को प्रकाशित करती है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** नाटक केवल चाक्षुष यज्ञ है।
तर्क (R) : क्योंकि आधुनिक मान्यता है कि नाटक में दृश्य की तुलना में श्रव्य तत्व कम महत्वपूर्ण होता है।
— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य का लक्ष्य केवल मनुष्य का चरित्र निर्माण है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।

तर्क (R) : क्योंकि विज्ञान का सम्बन्ध संवेदना से नहीं होता।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** संस्कृति के विकास के लिए मानसिक स्वतंत्रता अनिवार्य है।

तर्क (R) : क्योंकि संस्कृति एक मानसिक व्यापार है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है।

तर्क (R) : क्योंकि समाज उसे जन्म से वही संस्कार प्रदान करता है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ निम्नलिखित पंक्तियों को उनके कवियों के साथ सुमेलित हैं-

(a) शलभ मैं शापमय वर हूँ — महादेवी वर्मा
(b) दुःख ही जीवन की कथा रही — निराला
(c) वियोगी होगा पहला कवि — सुमित्रानन्दन पन्त
(d) जो बीत गयी सो बात गयी — बच्चन

☞ निम्नलिखित पात्रों का उनके नाटकों के साथ सुमेलित हैं-

(a) मल्लिका — आषाढ़ का एक दिन
(b) देवसेना — स्कन्दगुप्त
(c) शीलवती — सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
(d) शर्मिष्ठा — देहान्तर

☞ निम्नलिखित आंचलिक उपन्यासों का उनके लेखकों के साथ सुमेलित हैं-

(a) रतिनाथ की चाची — नागार्जुन
(b) परती परिकथा — फणीश्वरनाथ रेणु
(c) कब तक पुकारूँ — रांगेय राघव
(d) पानी के प्राचीर — रामदरश मिश्र

☞ निम्नलिखित कवियों के साथ उनकी कृतियाँ सुमेलित हैं-

(a) चिन्तामणि — कवि कुलकल्पतरु
(b) मतिराम — वृत्त कौमुदी
(c) भूषण — छत्रसाल दशक
(d) बोधा — विरह वारीश

☞ निम्नलिखित आचार्यों को उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित हैं-

(a) वल्लभाचार्य — शुद्धाद्वैतवाद
(b) निम्बार्काचार्य — द्वैताद्वैतवाद
(c) रामानुजाचार्य — विशिष्टाद्वैतवाद
(d) मध्वाचार्य — द्वैतवाद

☞ निम्नलिखित कृतियों का उनके कवियों के साथ सुमेलित हैं-

(a) चंदायन — मुल्ला दाउद
(b) मृगावती — कुतुबन
(c) अखरावट — जायसी
(d) मधुमालती — मंझन

☞ निम्नलिखित कवियों का उनकी कृतियों के साथ सुमेलित हैं-

(a) स्वयंभू — पउम चरिउ
(b) पुष्पदंत — महापुराण
(c) अब्दुर्रहमान — संदेशरासक
(d) शबरपा — चर्यपद

☞ भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित सिद्धान्तों का उनके प्रतिपादकों के साथ सुमेलित हैं-

(a) धातु सिद्धान्त — हेज
(b) यो हे हो सिद्धान्त — न्वायर
(c) इंगित सिद्धान्त — राये
(d) सम्पर्क सिद्धान्त — रेवेज

☞ निम्नलिखित आचार्यों का उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित हैं-

(a) भट्ट लोल्लट — उत्पत्तिवाद
(b) शंकुक — अनुमितिवाद
(c) भट्टनायक — भुक्तिवाद
(d) अभिनव गुप्त — अभिव्यक्तिवाद

☞ निम्नलिखित पत्रिकाओं का उनके सम्पादकों के साथ सुमेलित हैं-

(a) प्रतीक — अज्ञेय
(b) विशाल भारत — बनारसीदास चतुर्वेदी
(c) कर्मवीर — माखनलाल चतुर्वेदी
(d) चाँद — महादेवी वर्मा

दिसम्बर - 2011 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि माना है **—सरहपाद को**

☞ ब्रजभाषा, बुन्देली, खड़ीबोली तथा अवधी में से पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है **—अवधी**

☞ बोडो, मैथिली, भोजपुरी तथा डोगरी में से संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं है **—भोजपुरी**

☞ बुन्देली, भोजपुरी, मगही तथा मैथिली में से बिहारी उपभाषा वर्ग के अन्तर्गत नहीं आती है **—बुन्देली**

☞ मलूकदास, सूरदास, परमानन्ददास तथा कुम्भनदास में से अष्टछाप के कवि नहीं हैं **—मलूकदास**

☞ अलंकार प्रकाश, रसराज, कवि कुलकल्पतरु तथा काव्य निर्णय में से चिन्तामणि की रचना है **—कवि कुलकल्पतरु**

☞ बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन',राधाकृष्णदास, जसवन्त सिंह तथा गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' में से द्विवेदी युग के कवि हैं

—गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

☞ केदारनाथ अग्रवाल, भवानीप्रसाद मिश्र, त्रिलोचन, शिवमंगल सिंह, 'सुमन' में प्रगतिवादी कवि नहीं हैं **—भवानीप्रसाद मिश्र**

☞ 'पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ' पंक्ति है **—अज्ञेय की**

☞ काठ की घंटियाँ, कुआनो नदी, आत्महत्या के विरुद्ध तथा लिपटा रजाई में से सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की रचना नहीं है

—आत्महत्या के विरुद्ध

☞ नरेन्द्र मोहिनी, भाग्यवती, चन्द्रकान्ता, कुसुमलता में से देवकीनन्दन खत्री का उपन्यास नहीं है **—भाग्यवती**

☞ मारकण्डेय, विवेकी राय, शिवप्रसाद सिंह एवं निर्मल वर्मा में से ग्रामीण चेतना कहानीकार नहीं हैं **—निर्मल वर्मा**

☞ 'इन्दु' पत्रिका के सम्पादक का नाम है **—अम्बिकाप्रसाद गुप्त**

☞ 'आवारा मसीहा' रचना आधारित है **—शरच्चन्द्र के जीवन पर**

☞ अग्निलीक, परशुराम की प्रतीक्षा, अंधायुग तथा एक कंठ विषपायी में से नाट्यकाव्य नहीं है **—परशुराम की प्रतीक्षा**

☞ अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह तथा वृत्त और विकास में से हजारी प्रसाद द्विवेदी का ग्रन्थ नहीं है **—वृत्त और विकास**

☞ 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ' नामक ग्रन्थ के लेखक का नाम है

—रामविलास शर्मा

☞ 'रसगंगाधर' ग्रन्थ है **—पंडितराज जगन्नाथ का**

☞ 'रससूत्र' के व्याख्याता नहीं हैं **—वामन**

☞ 'द प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' ग्रन्थ है

—आई.ए.रिचर्ड्स की

☞ रचनाओं का सही अनुक्रम है**—प्रियप्रवास (1914 ई.), साकेत, (1931 ई.), कामायनी, (1933 ई.), कुरुक्षेत्र, (1946 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से हिन्दी पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है

—आनन्द कादम्बिनी (1881 ई.), ब्राह्मण (1883 ई.), भारतोदय (1885 ई.), हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873 ई.)

☞ रचनाकारों का सही अनुक्रम है

—इलाचन्द्र जोशी, (1903-1982 ई.), उपेन्द्रनाथ अश्क, (1910 1996 ई.),मोहन राकेश, (1925-1972 ई.), नरेन्द्र कोहली (1940 ई.)।

☞ रामचरितमानस के काण्डों का सही अनुक्रम है

—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड।

☞ कवियों का सही अनुक्रम है

—विद्यापति (1352-1448 ई.), रसखान (1548-1628 ई.), केशवदास (1555-1617 ई.), द्विजदेव (1830-1871 ई.)

☞ नाटकों का सही अनुक्रम है

— भारत दुर्दशा, (1889 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), कहै कबीर सुनो भाई साधो (1987 ई.)

☞ उपन्यासों का सही अनुक्रम है **—झूठा सच (1958 ई.), आधा गाँव (1966 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), धार (1997 ई.)**

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

—पंच परमेश्वर (1905 ई.), परदा (1943 ई.), परिन्दे (1959 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.)

☞ निबन्धकारों का सही अनुक्रम है

— बालमुकुन्द गुप्त, (1865-1907 ई.), श्यामसुन्दर दास (1875-1945 ई.), सरदार पूर्णसिंह (1881-1931 ई.), बाबू गुलाबराय (1888-1963 ई.)

☞ आचार्यों का सही अनुक्रम है

—भरतमुनि, भामह, अभिनव गुप्त, विश्वनाथ

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		निबन्धकार
(a) पगडंडियों का जमाना	–	हरिशंकर परसाई
(b) अंगद का पाँव	–	श्रीलाल शुक्ल
(c) गन्ध मादन	–	कुबेरनाथ राय
(d) जीप पर सवार इल्लियाँ	–	शरद जोशी

☞ सही सुमेलित हैं–

आलोचक		कृतियाँ
(a) रामस्वरूप चतुर्वेदी	–	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास
(b) देवराज	–	छायावाद का पक्ष
(c) रामविलास शर्मा	–	आस्था और सौन्दर्य
(d) लक्ष्मीकांत वर्मा	–	नयी कविता के प्रतिमान

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		कहानीकार
(a) विराटा की पद्मिनी	–	वृन्दावनलाल वर्मा
(b) वैशाली की नगरवधू	–	चतुरसेन शास्त्री
(c) दिव्या	–	यशपाल
(d) चारुचन्द्र लेख	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		कहानीकार
(a) ग्यारह वर्ष का समय	–	रामचन्द्र शुक्ल
(b) दुलाईवाला	–	बंग महिला
(c) ग्राम	–	राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द
(d) रानी केतकी की कहानी	–	इंशा अल्ला खां

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यसंग्रह		रचनाकार
(a) हिम किरीटिनी	–	माखनलाल चतुर्वेदी
(b) अमोला	–	त्रिलोचन
(c) काल तुझसे होड़ है	–	शमशेर बहादुर सिंह
(d) गीत फरोश	–	भवानी प्रसाद मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं–

आत्मकथा		लेखिका
(a) एक कहानी यह भी	–	मन्नू भंडारी
(b) अन्या से अनन्या	–	प्रभा खेतान
(c) हादसे	–	रमणिका गुप्ता
(d) रसीदी टिकट	–	अमृता प्रीतम

☞ सही सुमेलित हैं–

कृतियाँ		लेखक
(a) ग्लोबल गाँव के देवता	–	रणेन्द्र
(b) जूठन	–	ओमप्रकाश वाल्मीकि
(c) मुक्तिपर्व	–	मोहनदास नैमिशराय
(d) छापर	–	जयप्रकाश कर्दम

☞ सही सुमेलित हैं–

उक्ति		रचनाकार
(a) गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।	–	तुलसी
(b) अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।	–	बिहारी
(c) अति सूधो सनेह को मारग है।	–	घनानन्द
(d) बसो मेरे नैनन में नंद लाल।	–	मीराबाई

☞ सही सुमेलित हैं–

उक्ति		ग्रन्थकार
(a) प्रददोषौ शब्दार्थौ सगुणावलंकृती पुनःक्वापि	–	मम्मट
(b) प्रज्ञानवनवोन्येषशालिनी– प्रतिभा मता	–	भट्टतौत
(c) न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिता मुखम्	–	भामह
(d) कीरति भनिति भूति भल– सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।	–	तुलसी

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		लेखक
(a) द कम्युनिस्ट मेनोफेस्टो	–	कार्ल मार्क्स
(b) द यूज ऑफ पोयट्री एंड यूज ऑफ क्रिटिसिज्म	–	टी.ए. इलिएट
(c) इल्यूजन एंड रिएलिटी	–	कॉडवेल
(d) द पोयटिक इमेज	–	सी.डे.लेविस

☞ **स्थापना (A) :** चिन्तन की अपेक्षा कर्म सत्य के अधिक समीप होता है।
तर्क (R): क्योंकि कर्म में सक्रियता और व्यावहारिकता होती है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** भाषा ही एकमात्र साधन है, जो अन्य पशुओं से मनुष्य को पृथक करती है।
तर्क (R): क्योंकि भाषा केवल मनुष्य की अर्जित सम्पत्ति है।

– (A) और (R) दोनों गलत हैं

सम-सामयिक घटना चक्र

☞ **स्थापना (A) :** सीखने का प्रत्यन किये बिना सिखाने की लालसा विफल होती है।

तर्क (R): क्योंकि सिखाने के लिए सीखने की आवश्यकता नहीं है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** लोभ चाहे जिस वस्तु का हो, जब बढ़ जाता है, तब उस वस्तु की प्राप्ति, सान्निध्य या उपभोग से जी नहीं भरता।

तर्क (R): क्योंकि मनुष्य नहीं चाहता है कि उसकी प्राप्ति बार-बार हो।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाती है।

तर्क (R): क्योंकि कविता मानव के हृदय को व्यापक नहीं बनाती।

— (A) सही, (R) गलत है

जून - 2011 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्यों का वृत्तांत है—**चौरासी वैष्णवन की वार्ता**

☞ 'काशी में हम प्रगट भए, रामानन्द चेताये।' पंक्ति है **—कबीर की**

☞ 'रासो' शब्द की उत्पत्ति 'रसायण' से मानी है **—रामचन्द्र शुक्ल**

☞ लक्षण ग्रंथ का अर्थ है **—काव्यांग विवेचन**

☞ बिहारी, घनानन्द, मतिराम तथा तोष में रीतिसिद्ध हैं **—बिहारी**

☞ 'अनुमितिवाद' के प्रतिष्ठाता हैं **—शंकुक**

☞ 'किंशुक कुसुम जानकर झपटा भौंरा शुक की लाल चोंच पर।
तोते ने निज ठोर चलाई जामुन का फल उसे सोचकर।।' में अलंकार है **— भ्रांतिमान**

☞ 'काव्यालंकार' के रचयिता हैं **—भामह**

☞ मराठी, गुजराती, मलयालम तथा हिंदी में से भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है **—मलयालम**

☞ ब्रज भाषा बोली जाती है **मथुरा—वृंदावन में**

☞ 'विश्वजन की अर्चना में नहीं बाधक था इस व्यष्टि का अभिमान'—पंक्ति है **—अज्ञेय की**

☞ 'मतवाला' के सम्पादक थे **—निराला**

☞ 'साखी' संकलन है **—विजयदेव नारायण साही का**

☞ 'जीवन—विवेक ही साहित्य विवेक है' कथन है **—मुक्तिबोध की**

☞ नन्ददुलारे वाजपेयी, शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा रामविलास शर्मा में से प्रगतिशील आलोचक नहीं हैं

—नन्ददुलारे वाजपेयी

☞ 'अल्मा कबूतरी' रचना है **—मैत्रेयी पुष्पा की**

☞ 'विलोम' पात्र है **—आषाढ़ का एक दिन नाटक का**

☞ हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुई है **—शौरसेनी अपभ्रंश से**

☞ आत्मकथा है **—अर्द्धकथानक**

☞ 'छितवन की छाँह' निबन्ध—संग्रह के रचयिता हैं **—विद्यानिवास मिश्र**

☞ कालक्रम के अनुसार चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों का सही अनुक्रम है **—हृदय की परख (1918 ई.), हृदय की प्यास (1932 ई.), अमर अभिलाषा (1932 ई.), आत्मदाह (1937 ई.)**

☞ कालखण्ड की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

—ग्राम (1911 ई.), कफन (1936 ई.), डिप्टी कलेक्टरी (1955 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.)

☞ नाटकों का सही अनुक्रम है

—भारत दुर्दशा (1880 ई.), राज्यश्री (1915 ई.), कोणार्क (1952 ई.), खजुराहो का शिल्पी (1972 ई.)

☞ कालक्रमानुसार ग्रंथों का सही अनुक्रम है

—नाट्यशास्त्र (ई.पू. द्वितीय शती), काव्यालंकार सूत्रवृत्ति (800 ई.), दशरूपक (974 ई.), काव्य प्रकाश (12 वीं शती)

☞ प्रकाशन काल के अनुसार यात्रा वर्णनों का सही अनुक्रम है–

—अरे यायावर रहेगा याद (1953 ई.), देश-विदेश (1957 ई.), हँसते निर्झर दहकती भट्ठी (1966 ई.), तंत्रलोक से यंत्रलोक तक (1968 ई.),

☞ रचनाकारों का सही अनुक्रम है

—भगवतीचरण वर्मा (1903-1981 ई.), बच्चन (1907-2003 ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), नरेन्द्र शर्मा (1913-1989 ई.)

☞ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रचनाकारों का सही क्रम है

— दिनकर (1972 ई.),अज्ञेय (1978 ई.), निर्मल वर्मा (1999 ई.), कुँवर नारायण (2005 ई.)

☞ आदिकालीन रचनाओं का सही अनुक्रम है

—भरतेश्वर बाहुबली रास (1184 ई.), स्थूलिभद्ररास (1209 ई.), नेमिनाथ रास (1213 ई.), संगीत रत्नाकर (1437-38 ई.)

☞ रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है

—इन्द्रधनु रौंदे हुए थे (1957 ई.), सीढ़ियों पर धूप (1960 ई.), नए इलाके में (1996 ई.), वाजश्रवा के बहाने (2008 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य लक्षण		**प्रतिष्ठापक**
(a) 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् ।'	–	भामह
(b) 'शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।'	–	दण्डी
(c) 'रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम् ।'	–	पण्डितराज जगन्नाथ
(d) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।'	–	विश्वनाथ

☞ सुमेलित हैं–

(a) अभिव्यंजनावाद	–	क्रोचे
(b) अंतश्चेतनावादी यथार्थवाद	–	डी.एच.लॉरेन्स
(c) स्वच्छंदतावाद	–	वर्ड्सवर्थ
(d) सम्प्रेषण	–	रिचर्ड्स

☞ सुमेलित हैं–

निबंधकार		**कृतियाँ**
(a) कुबेरनाथ राय	–	प्रिया नीलकंठी
(b) हजारी प्रसाद द्विवेदी	–	भीष्म को क्षमा नहीं किया
(c) विद्यानिवास मिश्र	–	मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
(d) रामचन्द्र शुक्ल	–	चिंतामणि

☞ सुमेलित हैं–

कहानीकार		**कहानी**
(a) उषा प्रियंवदा	–	वापसी
(b) मन्नू भंडारी	–	अकेली
(c) कृष्णा सोबती	–	सिक्का बदल गया
(d) निर्मल वर्मा	–	परिन्दे

☞ सुमेलित हैं-

उपन्यास		**उपन्यासकार**
(a) पुनर्नवा	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) कब तक पुकारूँ	–	रांगेय राघव
(c) भूले बिसरे चित्र	–	भगवती चरण वर्मा
(d) मनुष्य के रूप	–	यशपाल

☞ सुमेलित हैं–

पंक्तियाँ		**कवि**
(a) जिधर अन्याय, है उधर शक्ति	–	निराला
(b) नारी तुम केवल श्रद्धा हो	–	प्रसाद
(c) बहुत दिनों तक चक्की रोई, चूल्हा रहा उदास	–	नागार्जुन
(d) सिंहासन खाली करो कि जनता आती है	–	दिनकर

☞ सुमेलित हैं–

विधा		**रचना**
(a) कविता	–	अबूतर-कबूतर
(b) कहानी	–	शहादतनामा
(c) उपन्यास	–	पहला गिरमिटिया
(d) नाटक	–	देहान्तर

☞ सुमेलित हैं–

पात्र		**कृति**
(a) निउनिया	–	बाणभट्ट की आत्मकथा
(b) रायसाहब	–	मैला आँचल
(c) प्रशांत	–	महाभोज
(d) रेखा	–	गोदान

☞ सुमेलित हैं–

नाटक		**पात्र**
(a) चन्द्रगुप्त	–	सिंहरण
(b) आषाढ़ का एक दिन	–	विलोम
(c) सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक	–	ओक्काक
(d) देहान्तर	–	पुरू

दिसम्बर - 2010 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'अब लौं नसानी, अब न नसैहौं' उक्ति है — **तुलसीदास की**

☞ 'राउलवेल' रचना है — **रोड कवि की**

☞ रामचरितमानस, पद्मावत, विनयपत्रिका एवं चांदायन में से अवधी भाषा की रचना नहीं है — **विनयपत्रिका**

☞ 'उद्धवशतक' कृति है — **जगन्नाथदास रत्नाकर की**

☞ रामचन्द्रिका, कविप्रिया, ललितललाम एवं रसिकप्रिया में से केशवदास की रचना नहीं है — **ललितललाम**

☞ निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' की रचना का आधार-ग्रन्थ है — **कृत्तिवास रामायण**

☞ 'आत्मजयी' रचना है — **कुँवर नारायण की**

☞ नयी कहानी आन्दोलन के प्रारम्भकर्ताओं में से नहीं हैं — **ज्ञानरंजन**

☞ 'मैं बोरिशाइल्ला' रचना है — **महुआ माझी की**

☞ मेरी आत्मकहानी, मेरी असफलताएँ, मेरी जीवनयात्रा तथा माटी की मूरतें रचनाओं में आत्मकथा नहीं है — **माटी की मूरतें**

☞ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध है — **विद्यानिवास मिश्र का**

☞ शिवदानसिंह चौहान, नन्ददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा तथा नामवर सिंह में से मार्क्सवादी समालोचक नहीं हैं — **नन्ददुलारे वाजपेयी**

☞ सुरेन्द्र वर्मा कृत नाटक नहीं है — **बादशाह गुलाम बेगम**

☞ 'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रावृत्त है — **अज्ञेय का**

☞ साकेत, कामायनी, महाप्रस्थान तथा प्रियप्रवास में से महाकाव्य नहीं है — **महाप्रस्थान**

☞ 'काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते' उक्ति है — **दण्डी की**

☞ 'संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे' पंक्ति में अलंकार है — **रूपक**

☞ ब्रजभाषा विकसित है — **शौरसेनी से**

☞ डिंगल भाषा का सम्बन्ध है — **राजस्थानी साहित्य से**

☞ प्रकाशन काल के अनुसार हिन्दी पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है — **कविवचनसुधा (1867 ई.), हिन्दी प्रदीप (1896 ई.), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896 ई.), सरस्वती (1900 ई.)**

☞ काल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है — **लाला श्रीनिवास दास (1850-1907 ई.), प्रेमचन्द (1880-1936 ई.), अमृतलाल नागर (1916-1990 ई.), कमलेश्वर (1932-2007 ई.)**

☞ रचनाकारों का सही अनुक्रम है — **प्रसाद (1890-1937 ई.), निराला (1896-1961 ई.), पंत (1900-1977 ई.), महादेवी (1907-1987 ई.)**

☞ युग की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है — **चन्दबरदाई, (1149-1192 ई.), मीराबाई (1498-1557 ई.), सेनापति (17वीं शताब्दी), हरिऔध (1865 ई., 1947 ई.)**

☞ नाटकों का सही अनुक्रम है — **अन्धेर नगरी (1881 ई.), चन्द्रगुप्त (1931 ई.), आषाढ़ का एक दिन (1958 ई.), आठवां सर्ग (1976 ई.)**

☞ उपन्यासों का कालानुसार सही अनुक्रम है — **गोदान (1936 ई.), टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1948 ई.), मैला आँचल (1954 ई.), राग दरबारी (1968 ई.)**

☞ कहानियों का कालानुसार सही अनुक्रम है — **उसने कहा था (1915 ई.), कफन (1936 ई.), वापसी (1960 ई.), तिरिछ (1986 ई.)**

☞ साहित्येतिहासकारों का सही अनुक्रम है — **गार्सा द तासी, शिव सिंह सेंगर, रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी**

☞ सही सुमेलित हैं–

(a) आलोचना – अरुण कमल
(b) तद्भव – अखिलेश
(c) हंस – राजेन्द्र यादव
(d) वाक् – सुधीश पचौरी

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		रचनाकार
(a) कितने पाकिस्तान	–	कमलेश्वर
(b) तमस	–	भीष्म साहनी
(c) मृगनयनी	–	वृन्दावनलाल वर्मा
(d) नीला चाँद	–	शिवप्रसाद सिंह

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानीकार		कहानी
(a) उषा प्रियंवदा	–	वापसी
(b) अमरकांत	–	दोपहर का भोजन
(c) मोहन राकेश	–	परमात्मा का कुत्ता
(d) विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक	–	ताई

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		लेखक
(a) रक्षाबन्धन	–	हरिकृष्ण प्रेमी
(b) अन्धा कुआँ	–	लक्ष्मीनारायण लाल
(c) बकरी	–	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
(d) कोर्ट मार्शल	–	स्वदेश दीपक

☞ सही सुमेलित हैं–

पंक्ति		कवि
(a) साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय	–	कबीर
(b) देसिल बयना सबजन मिट्ठा	–	विद्यापति

(c) भूषन बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त – केशव
(d) नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी – पद्माकर

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		कृतिकार
(a) संसद से सड़क तक	–	धूमिल
(b) फूल नहीं रंग बोलते हैं	–	केदारनाथ अग्रवाल
(c) युगधारा	–	नागार्जुन
(d) साए में धूप	–	दुष्यन्त कुमार

☞ सही सुमेलित हैं–

उक्ति		ग्रन्थकार
(a) सौन्दर्यमलंकारः	–	वामन
(b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	–	विश्वनाथ
(c) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये	–	कालिदास
(d) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	–	पंडितराज जगन्नाथ

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		आचार्य
(a) ध्वन्यालोक	–	आनन्दवर्धन
(b) काव्यालंकार	–	भामह
(c) काव्यप्रकाश	–	मम्मट
(d) काव्यानुशासन	–	हेमचन्द्र

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		लेखक
(a) एस्से इन क्रिटिसिज्म	–	मैथ्यू आर्नाल्ड
(b) बायोग्राफिया लिटरेरिया	–	कॉलरिज
(c) एस्थेटिक्स	–	क्रोचे
(d) प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म	–	आई.ए.रिचर्ड्स

☞ सही सुमेलित हैं–

अंश		कवि
(a) जो घनीभूत पीड़ा थी	–	प्रसाद
(b) हेर प्यारे को सेज पास, नम्रमुख हँसी खिली।	–	निराला
(c) हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाय।	–	अज्ञेय
(d) जी हाँ हजूर, मैं गीत बेचता हूँ।	–	भवानी प्रसाद मिश्र

☞ **स्थापना (A) :** वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।
तर्क (R) : क्योंकि वीरता का सम्बन्ध मनोबल से है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** मानव जीवन की पूर्णता के लिए कर्म, ज्ञान और उपासना तीनों के मेल की आवश्यकता है।
तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य जीवन की पूर्णता में उपासना का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है।
— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** श्रद्धा का कारण निर्दिष्ट और ज्ञात होता है।
तर्क (R) : क्योंकि श्रद्धा में दृष्टि पहले कर्मों पर से होती हुई श्रद्धेय तक पहुँचती है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2010 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ अष्टछाप के कवियों में प्रथम नियुक्त कीर्तनकार कवि थे **—कुंभनदास**
☞ जायसीकृत 'पद्मावत' है **—रूपक काव्य**
☞ 'बसो मेरे नैनन में नन्दलाल' पंक्ति है **—मीराबाई की**
☞ अमिय हलाहल मदभरे श्वेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत एक बार।। –पंक्तियाँ हैं **–रसलीन की**
☞ 'बरवै रामायण' रचना है **—तुलसीदास की**
☞ भरतमुनि के रससूत्र में स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव में से उल्लेख नहीं है **—स्थायीभाव का**
☞ 'साधारणीकरण' संकल्पना के उद्गाता हैं **—भट्टनायक**
☞ शब्द की द्व्यर्थी योजना से अलंकार होता है **—वक्रोक्ति**
☞ 'काशिका' कहा गया है **—बनारस की बोली को**
☞ उड़िया, बंगला, असमिया तथा कन्नड़ में से द्रविड़ परिवार की भाषा है **—कन्नड़**
☞ 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के संपादक हैं **—बालकृष्ण भट्ट**
☞ 'तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब' पंक्ति है **—मुक्तिबोध की**
☞ 'आवारा मसीहा' रचना है **—विष्णु प्रभाकर की**
☞ पशु–पक्षियों पर लिखित महादेवी वर्मा का रेखाचित्र संकलन है **—मेरा परिवार**
☞ रामचन्द्र शुक्ल की आलोचनात्मक कृति है **—रसमीमांसा**
☞ मनोविश्लेषणात्मक शैली के उपन्यासकार हैं **—इलाचन्द्र जोशी**
☞ 'निउनिया' उपन्यास का पात्र है **—बाणभट्ट की आत्मकथा**

☞ देवनागरी लिपि की उत्पत्ति हुई है —**ब्राह्मी से**

☞ 'ठेले पर हिमालय' रचना है —**निबंध विधा की**

☞ 'वन्दे वाणी विनायकौ' निबंध संकलन के रचयिता हैं —**रामवृक्ष बेनीपुरी**

☞ कालखण्ड की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है —**रानी केतकी की कहानी (1803 ई.),उसने कहा था (1915 ई.),शरणागत (1918 ई.), तिरिछ (1986 ई.)**

☞ प्रकाशन काल के अनुसार रेखाचित्रों का सही अनुक्रम है —**अतीत के चलचित्र (1941 ई.), माटी की मूरतें (1946 ई.), अमिट रेखाएँ (1951 ई.), कुछ शब्द कुछ रेखाएँ (1965 ई.)**

☞ निराला की रचनाओं का सही अनुक्रम है —**अनामिका (1923 ई.), परिमल (1930 ई.), गीतिका (1936 ई.), कुकुरमुत्ता (1943 ई.)**

☞ आचार्यों और उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलन हैं–

(a) भट्ट लोल्लट	–	उत्पत्तिवाद
(b) शंकुक	–	अनुमितिवाद
(c) भट्ट नायक	–	भुक्तिवाद
(d) अभिनव गुप्त	–	अभिव्यक्तिवाद

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में मुक्तिवाद दिया है, जबकि प्रश्न विकल्प के अनुसार भुक्तिवाद होना चाहिए, जिसके प्रवर्तक भट्ट नायक हैं।

☞ सुमेलन हैं–

ग्रन्थकार		**ग्रन्थ**
(a) इलियट	–	दि वेस्ट लैंड
(b) वर्ड्सवर्थ	–	लिरिकल बैलड्स
(c) लोंगिनुस	–	पेरिइप्सुस
(d) अरस्तू	–	पेरिपोइतिकेस

☞ सुमेलन हैं–

रचनाकार		**रचना**
(a) अज्ञेय	–	संवत्सर
(b) किशन पटनायक	–	विकल्पहीन नहीं है दुनिया
(c) केदारनाथ सिंह	–	कब्रस्तान में पंचायत
(d) अनामिका	–	स्त्रीत्व मानचित्र

☞ सुमेलन हैं–

कवि		**कृति**
(a) केदारनाथ सिंह	–	अकाल में सारस
(b) ज्ञानेन्द्र पति	–	संशयात्मा
(c) भारतभूषण अग्रवाल	–	अग्निलीक
(d) कुँवर नारायण	–	आत्मजयी

☞ सुमेलन हैं–

सम्पादक		**पत्रिका**
(a) अखिलेश	–	तद्भव
(b) नमिता सिंह	–	वर्तमान साहित्य
(c) राजेन्द्र कुमार (वर्तमान में अशोक मिश्र)	–	बहुवचन
(d) प्रभाकर श्रोत्रिय	–	पूर्वग्रह

नोट—प्रश्नकाल में राजेन्द्र कुमार बहुवचन पत्रिका के सम्पादक थे। वर्तमान में इस पत्रिका के सम्पादक अशोक मिश्र हैं।

☞ सुमेलन हैं–

कहानी		**कहानीकार**
(a) सद्गति	–	प्रेमचन्द
(b) बिसाती	–	प्रसाद
(c) दो बाँके	–	भगवतीचरण वर्मा
(d) पाजेब	–	जैनेन्द्र

☞ सुमेलन हैं–

पंक्तियाँ		**कवि**
(a) सेस महेस गनेस दिनेस	–	रसखान
(b) मन लेत पै देत छटाँक नहीं	–	घनानन्द
(c) जैसे उड़ि जहाज को पंछी	–	सूरदास
(d) गिरा अनयन नयन बिनु बानी	–	तुलसीदास

☞ सुमेलन हैं–

रचना		**विधा**
(a) शब्द और मनुष्य	–	आलोचना
(b) काशी का अस्सी	–	उपन्यास
(c) इला	–	नाटक
(d) पैरों में पंख बाँधकर	–	यात्रा-वर्णन

☞ उपन्यासों का उनके पात्रों के साथ सुमेलन हैं–

उपन्यास		**पात्र**
(a) रंगभूमि	–	सोफिया
(b) झूठा-सच	–	तारा
(c) त्यागपत्र	–	मृणाल
(d) अँधेरे बंद कमरे	–	नीलिमा

☞ सुमेलन हैं–

पात्र		**नाटक**
(a) देवसेना	–	स्कंदगुप्त
(b) विशु	–	कोणार्क
(c) गांधारी	–	अंधायुग
(d) सावित्री	–	आधे-अधूरे

दिसम्बर - 2009 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ अकारादि क्रम, लेखकों का कालक्रम, रचनाओं का कालक्रम तथा परिस्थिति-प्रवृत्ति मूलक क्रम में से साहित्येतिहास लेखन की विधि नहीं है **— अकारादि क्रम**

☞ 'शब्दानुशासन' के लेखक हैं **— हेमचंद्र**

☞ 'खालिकबारी' रचना है **— अमीर खुसरो की**

☞ सूफीकाव्य का उद्देश्य है **— प्रेम निरूपण**

☞ घनानन्द, बोधा, जसवन्त सिंह तथा ठाकुर में से रीतिमुक्त कवि नहीं हैं **—जसवन्त सिंह**

☞ 'जूही की कली' कविता के कवि हैं **— सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**

☞ 'हालावाद' के प्रवर्तक हैं **—हरिवंशराय बच्चन**

☞ 'तुम विद्युत बन आओ पाहुन, मेरे नयनों पर पग धर-धर'-पंक्ति है **— महादेवी वर्मा की**

☞ अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' कहा है **— चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने**

☞ संचार माध्यमों में प्रयोग होता है **— हिन्दी का व्यावहारिक रूप**

☞ संचारी भावों की संख्या है **— 33**

☞ 'विखंडनवाद' के प्रवर्तक हैं **— देरिदा**

☞ 'कविवचनसुधा' के सम्पादक थे **— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

☞ नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष है **— 1893 ई.**

☞ 'शिवशम्भु के चिट्ठे' के लेखक हैं **— बालमुकुन्द गुप्त**

☞ 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' निबन्ध के लेखक हैं **— महावीर प्रसाद द्विवेदी**

☞ 'अधिकार-सुख कितना मादक किन्तु सारहीन है'- पंक्ति प्रसाद के नाटक से है **— स्कन्दगुप्त से**

☞ य, प, क्ष तथा ज्ञ में से अर्द्ध स्वर है **— य**

☞ अवधी, बिहारी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी बोलियों में से पूर्वी हिन्दी की नहीं है **— बिहारी**

☞ बोली का लघुत्तम रूप है **— वर्ण**

☞ **स्थापना (A) :** नाद सौन्दर्य का योग कविता की पूर्णता के लिए आवश्यक है।

तर्क (R) : नाद सौन्दर्य से कविता की आयु बढ़ती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** व्यक्तिवाद का एक रूप अहंवाद है

तर्क (R) : अहंवादी व्यक्ति समाज का तिरस्कार करता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** सिद्धान्ततः प्रजातंत्र को सर्वोत्तम शासन व्यवस्था कहा जा सकता है।

तर्क (R) : शासन प्रायः प्रजा के हित में समर्पित होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** कला की सर्जना आध्यात्मिक क्रिया है।

तर्क (R) : आध्यात्मिकता और कला अन्योन्याश्रित हैं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** बड़े-बड़े राज्य उत्पाद की बिक्री के लिए सौदागर हो गये हैं।

तर्क (R) : क्योंकि व्यापार नीति राजनीति का प्रधान अंग हो गयी है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** ध्वनि काव्य चित्रकाव्य से श्रेष्ठ है।

तर्क (R) : क्योंकि चित्रकाव्य रस की सृष्टि नहीं कर पाता है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक की सामान्य भावभूमि पर ले जाती है।

तर्क (R) : क्योंकि इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ कालक्रम की दृष्टि से आलोचकों का सही अनुक्रम है–

— रामचन्द्र शुक्ल (4 अक्टूबर, 1884-2 फरवरी, 1941 ई.), नन्द दुलारे वाजपेयी (27 अगस्त, 1906 - 21 अगस्त, 1967 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (19 अगस्त, 1907 - 19 मई, 1979 ई.), रामविलास शर्मा (10 अक्टूबर, 1912 - 30 मई, 2000 ई.)

☞ पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है**— कविवचनसुधा (1867 ई.), सरस्वती (1900 ई.), इन्दु (1909 ई.), हंस (1930 ई.)**

☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

— दुलाई वाली (1907 ई.) आँधी (1931 ई.), पाजेब (1942 ई.), यारों के यार (1968 ई.)

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में यारों के यार कृष्णा सोबती का उपन्यास है, जबकि अन्य सभी कहानियाँ हैं।

☞ कालक्रम की दृष्टि से निबन्ध-संग्रहों का सही अनुक्रम है

— शिवशम्भु के चिट्ठे (1877 ई.), आत्माराम की टेंटें (1903 ई.), शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), विषादयोग (1974 ई.)

☞ कालक्रम की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— भूतनाथ (1907 ई.), डूबते मस्तूल (1954 ई.), कब तक पुकारूँ (1957 ई.), अन्तिम अरण्य (2000 ई.)

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिये गये विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ युग्म संगत हैं–

(a) बीसलदेव रासो	–	नरपति नाल्ह
(b) खुमाणरासो	–	दलपति विजय
(c) विजयपाल रासो	–	नाल्ह सिंह भाट
(d) परमाल रासो	–	जगनिक

☞ युग्म संगत हैं–

(a) भारत दुर्दशा	–	भारतेन्दु
(b) प्रायश्चित	–	जयशंकर प्रसाद
(c) दशरथ नन्दन	–	जगदीशचन्द्र माथुर
(d) कबिरा खड़ा बाजार में	–	भीष्म साहनी

☞ युग्म संगत हैं–

(a) कौन तुम मेरे हृदय में	–	महादेवी वर्मा
(b) न जाने नक्षत्रों से कौन	–	सुमित्रानन्दन पन्त
(c) जो घनीभूत पीड़ा थी	–	जयशंकर प्रसाद
(d) सखि, वे मुझसे कहकर जाते	–	मैथिलीशरण गुप्त

☞ सही सुमेलित हैं–

कहानी		**कहानीकार**
(a) यही सच है	–	मन्नू भण्डारी
(b) परिंदे	–	निर्मल वर्मा
(c) फूलों का कुरता	–	यशपाल
(d) जिन्दगी और जोंक	–	अमरकांत

☞ सही सुमेलित हैं–

कृति		**कृतिकार**
(a) ईश्वर की अध्यक्षता में	–	लीलाधर जगूड़ी
(b) अबूतर कबूतर	–	उदय प्रकाश
(c) आत्महत्या के विरुद्ध	–	रघुवीर सहाय
(d) जलसाघर	–	श्रीकांत वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य पंक्ति		**कवि**
(a) अति सूधौ सनेह कौ मारग है	–	घनानन्द
(b) अब लौं नसानी अब न नसैहों	–	तुलसीदास
(c) सटपटाति-सी ससि मुखी मुख घूँघट पर ढाँकि	–	बिहारी
(d) ऊधौ मन न भए दस-बीस	–	सूरदास

☞ सही सुमेलित हैं–

रेखाचित्र		**रचनाकार**
(a) पदम पराग	–	पद्म सिंह शर्मा
(b) बोलती प्रतिमा	–	श्रीराम शर्मा
(c) माटी की मूरतें	–	रामवृक्ष बेनीपुरी
(d) रेखाएँ बोल उठीं	–	देवेन्द्र सत्यार्थी

☞ सही सुमेलित हैं–

आत्मकथा		**लेखक**
(a) अन्या से अनन्या	–	प्रभा खेतान
(b) बसेरे से दूर	–	हरिवंशराय बच्चन
(c) जूठन	–	ओमप्रकाश वाल्मीकि
(d) एक कहानी यह भी	–	मन्नू भण्डारी

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्रिका		**सम्पादक**
(a) हंस	–	राजेन्द्र यादव
(b) संचेतना	–	महीप सिंह
(c) आलोचना	–	अरुण कमल
(d) दस्तावेज	–	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्यपंक्ति		**कवि**
(a) रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर	–	निराला
(b) शैया सैकत पर दुग्धधवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विकल	–	सुमित्रानन्दन पन्त
(c) सखि, वे मुझसे कहकर जाते	–	मैथिलीशरण गुप्त
(d) शशि मुख पर घूँघट डाले	–	जयशंकर प्रसाद

☞ सही सुमेलित हैं–

नाट्यकृति		**पात्र**
(a) चन्द्रगुप्त	–	चाणक्य
(b) आधे-अधूरे	–	महेन्द्रनाथ
(c) कोणार्क	–	विशु
(d) अन्धायुग	–	अश्वत्थामा

☞ सही सुमेलित हैं–

नाटक		**नाटककार**
(a) कोर्ट मार्शल	–	स्वदेश दीपक
(b) इतिहास चक्र	–	दयाप्रकाश सिन्हा
(c) अन्वेषक	–	प्रताप सहगल
(d) कबिरा खड़ा बाजार में	–	भीष्म साहनी

☞ सही सुमेलित हैं–

सिद्धान्त		**चिन्तक**
(a) अनुमतिवाद	–	भट्ट शंकुक
(b) उत्पत्तिवाद	–	भट्ट लोल्लट
(c) साधारणीकरण	–	भट्टनायक
(d) अभिव्यक्तिवाद	–	अभिनव गुप्त

समसामयिक घटना चक्र

जून - 2009 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

☞ 'हिन्दुस्तानी' भाषा का रूप है — **हिन्दी-उर्दू मिश्रित**

☞ पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है — **छत्तीसगढ़ी**

☞ वर्तमान समय में संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं की संख्या है — **बाइस (22)**

☞ 'ग्रिम नियम' का सम्बन्ध है — **स्वनिम् विज्ञान से**

☞ नन्ददास की रचना जिसका सम्बन्ध नायक-नायिका भेद से है — **रसमंजरी**

☞ 'आनन्द कादम्बिनी' के संस्थापक थे— **बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**

☞ 'दीदी' पत्रिका के सम्पादक थे — **ठाकुर श्रीनाथ सिंह**

☞ पथिक, बाजश्रवा के बहाने, मगध तथा पहाड़ पर लालटेन में से कुँवर नारायण की रचना है — **बाजश्रवा के बहाने**

☞ 'लड़ाई' के नाटककार हैं — **सर्वेश्वरदयाल सक्सेना**

☞ 'कब्बो और कालापानी' के कहानीकार हैं — **निर्मल वर्मा**

☞ 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द : काव्यम्' कथन है — **पंडितराज जगन्नाथ का**

☞ बुल्ला साहेब, बुलाल साहेब, पलटू साहेब तथा सत साहेब में से बावरी पंथ से सम्बन्धित नहीं हैं — **सत साहेब**

☞ 'कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय!
तुम हू लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय!' इस दोहे में कवि — **शिकायत करता है**

☞ जन गण मन अधिनायक जय हे, प्रजा विचित्र तुम्हारी है, भूख-भूख चिल्लाने वाली अशुभ अमंगलकारी है' इन पंक्तियों के लेखक हैं — **नागार्जुन**

☞ 'सवंगी' रचना है — **रज्जब की**

☞ प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना भारतवर्ष में हुई थी — **1936 ई. में**

☞ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख्यालय है — **मद्रास में**

☞ 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया — **हिन्दुस्तानी अकादमी ने**

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिए गए विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ 'शेष स्मृतियाँ' संस्मरण के लेखक हैं — **रघुवीर सिंह**

☞ झाँकियाँ निकलती हैं ढोंग अविश्वास की
बदबू आती है मरी हुई बात की
इस हवा में अब नहीं डोलूँगा
नहीं, नहीं, मैं यह खिड़की नहीं खोलूँगा।
ये पंक्तियाँ हैं — **सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की**

☞ रचनाओं का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है
— **बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह, 12वीं सदी), आखिरी कलाम (जायसी, 1492-1542 ई.), वैराग्य संदीपनी (तुलसीदास, 1532-1623 ई.), बरवै नायिकाभेद (रहीम, 1556-1626 ई.)**

☞ हिन्दी समाचार पत्रों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है
— **कर्मवीर (1919 ई.), आज (1920 ई.), विशाल भारत (1928 ई.), जनसत्ता (1980 ई.)**

☞ दिनकर की रचनाओं का सही अनुक्रम है
— **रेणुका (1935 ई.), हुंकार (1939 ई.), रसवंती (1940 ई.), उर्वशी (1961 ई.),**

नोट-यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का अनुक्रम दिये गये विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ नाटकों का रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है
— **भारत दुर्दशा (1880 ई.), प्रायश्चित (1913 ई.), अंधायुग (1955 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)**

☞ आलोचकों का कालानुसार सही अनुक्रम है
— **डॉ. देवराज (1917-1999 ई.), लक्ष्मीकांत वर्मा (1922-2002 ई.), विजयदेव नारायण साही (1924-1986 ई.), रामस्वरूप चतुर्वेदी (1939-2003 ई.)**

☞ उपन्यासों का रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है
— **चन्द्रकान्ता (1891 ई.), तितली (1934 ई.), नदी के द्वीप (1951 ई.), कसप (1982 ई.)**

☞ काव्य संग्रहों का काल क्रमानुसार सही अनुक्रम है
— **भग्नदूत (1933 ई.), मँजीर (1941 ई.), चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964 ई.), साखी (1983 ई.)**

☞ सही अनुक्रम है
— **संरचनावाद (1725 ई.), अस्तित्ववाद (1813 ई.), फ्रायडवाद (1856 ई.), उत्तरसंरचनावाद (1970 ई.)**

☞ निबन्ध संग्रहों का रचनाकाल के अनुसार सही क्रम है
— **चाबुक (1951 ई.), नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध (1964 ई.), परम्परा का मूल्यांकन (1981 ई.), आत्मपरक (1983 ई.)**

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिए गए विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ काव्यान्दोलनों का सही कालानुक्रम है
— **नयी कविता (1951 ई.), नकेनवाद (1956 ई.), अकविता (1963-64 ई.), युयुत्सावाद (1968 ई.)**

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यास		नारीपात्र
(a) परख	–	कट्टो
(b) गबन	–	जालपा
(c) त्यागपत्र	–	मृणालिनी
(d) शेखर एक जीवनी	–	शशि

☞ सही सुमेलित हैं–

आत्मकथा		लेखक
(a) दस द्वार से सोपान तक	–	हरिवंशराय बच्चन
(b) मेरी आत्म कहानी	–	श्यामसुन्दर दास
(c) अपनी कहानी	–	वृन्दावनलाल वर्मा
(d) मेरी जीवन यात्रा	–	राहुल सांकृत्यायन

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		कवि
(a) बात बोलेगी	–	शमशेर बहादुर सिंह
(b) साम्राज्ञी का नैवेद्य दान	–	अज्ञेय
(c) यमुना के प्रति	–	केदारनाथ अग्रवाल
(d) अकाल में सारस	–	केदारनाथ सिंह

☞ सही सुमेलित हैं–

रचना		कवि
(a) हंसावली	–	कवि असाइत
(b) चन्दायन	–	मुल्ला दाउद
(c) सत्यवती	–	ईश्वरदास
(d) मृगावती	–	कुतुबन

☞ सही सुमेलित हैं–

उपन्यास		लेखक
(a) अप्सरा	–	निराला
(b) मृगनयनी	–	वृन्दावनलाल वर्मा
(c) कर्मभूमि	–	प्रेमचन्द
(d) मित्रो मरजानी	–	कृष्णा सोबती

☞ सही सुमेलित हैं–

ग्रन्थ		ग्रन्थकार
(a) रस गंगाधर	–	पण्डित राज जगन्नाथ
(b) साहित्य दर्पण	–	विश्वनाथ
(c) काव्य प्रकाश	–	मम्मट
(d) वक्रोक्ति जीवितम्	–	कुन्तक

☞ सही सुमेलित हैं–

काव्य पंक्तियाँ		कवि
(a) राष्ट्रगीत में भला कौन यह भारत भाग्य विधाता है	–	रघुवीर सहाय
(b) क्या करूँ जो शंभुधनु टूटा तुम्हारा	–	गिरिजा कुमार माथुर
(c) अब मैं कवि नहीं रहा, काला झंडा हूँ	–	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
(d) साधो आज मेरे सत की परीक्षा है	–	विजय देव नारायण साही

☞ सही सुमेलित हैं–

यात्रा साहित्य		लेखक
(a) ठेले पर हिमालय	–	धर्मवीर भारती
(b) आखिरी चट्टान	–	मोहन राकेश
(c) सुबह के रंग	–	अमृत राय
(d) पैरो में पंख बाँधकर	–	रामवृक्ष बेनीपुरी

☞ सही सुमेलित हैं–

साहित्यक वाद		लेखक
(a) प्रगतिवाद	–	त्रिलोचन
(b) हालावाद	–	बच्चन
(c) अकविता	–	जगदीश चतुर्वेदी
(d) प्रयोगवाद	–	अज्ञेय

☞ सही सुमेलित हैं–

पत्र-पत्रिका		सम्पादक
(a) भारतेन्दु	–	राधाचरण गोस्वामी
(b) ब्राह्मण	–	प्रतापनारायण मिश्र
(c) विशाल भारत	–	बनारसीदास चतुर्वेदी
(d) आज	–	शिव प्रसाद गुप्त

☞ **अभिकथन (A) :** नाट्य का अपनी समग्रता में परिचय देना ही नट-कर्म के आगे-पीछे जो मूल प्रयोजन है वहाँ तक जाना पड़ेगा।
कारण (R) : क्योंकि नटकर्म या प्रयोग में कवि रचित काव्य प्रस्तुत किया जाता है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** करुणा ही लोगों की श्रद्धा को अपनी ओर अधिक खींचती है।
कारण (R) : क्योंकि करुणा का विषय दूसरों का दु:ख नहीं है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं का मूल स्वर देश भक्ति नहीं है।
कारण (R) : क्योंकि देश प्रेम की भावना तत्कालीन भारतीय समाज में नहीं है।

– (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है।
कारण (R) : क्योंकि उसमें अपने मंगल और लोकमंगल का संगम दिखाई पड़ता है।

– (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **अभिकथन (A) :** निराला की कल्पनाएँ उनके भावों की सहचरी नहीं हैं।
कारण (R) : क्योंकि उनकी कल्पनाएँ सुशील स्त्रियों की भाँति पति के पीछे-पीछे चलती नहीं हैं।

– (A) और (R) दोनों गलत हैं

समसामयिक घटना चक्र